* ओ३म् *

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

सार्वदेशिक

'महर्षि के चरणों में

"ऋषिवर ! आपकी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पट पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन सत्यधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते गिरते आपके स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। आपने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना जिनकी पवित्र गोद में आप इस समय विचर रहे हो कौन कह सकता है कि आपके उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रज्वलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है। परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि आपके सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

मैं क्या था, क्या बन गया और क्या हूं, यह सब आपकी कृपा का ही परिणाम है।

आप वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्ववेत्ता ही न थे किन्तु जिन सच्चाइयों का आप संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी आपका ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह आपके लिए भी तीनों लोकों में कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रह गया था परन्तु आपने भी मानव-संसार को सीधा मार्ग दिखलाने के लिए कर्म की उपेक्षा न की।

भगवन् ! मैं आपका ऋणी हूं। उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमात्मा की असीम गोद में आप परमानन्द का अनुभव करते हैं उसी से प्रार्थना कर रहा हूं कि मुझे आपका सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

—श्रद्धानन्द

[illegible]

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीनतम प्रकाशन

वेद सन्देश—यह पुस्तक वेदों के चुने हुए ३०० मन्त्रों का अर्थ सहित उत्कृष्ट संग्रह है। विषयों का चुनाव बहुत अच्छा है। मूल्य ७५ पैसे।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक में वेदों की ५०० सूक्तियां अर्थ सहित प्रस्तुत की गई हैं इन सूक्तियों को पढ़ने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लड़कों और लड़कियों का अमित लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है। मूल्य ३० पैसा।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक में विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनों का संग्रह उपस्थित किया गया है। मूल्य ३० पैसा।

❀ सम्पादक
रामगोपाल शाल वाले सभा मन्त्री

❀ सहायक सम्पादक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७४७७१

❀ मुद्रक
सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली

ओ३म्

सार्वदेशिक

एक वेद मन्त्र और बल महिमा

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥

ऋग्वेद १ । ११ । २

(१) अर्थात् हे इन्द्र (ऐश्वर्यवान) वाजिन् (शक्तिमान्) शवसस्पति (बलों के स्वामी) और हे (जेतारम् अपराजितम्) सबके विजेता और किसी से भी पराजित न होने वाले प्रभो ! हम आपका सख्य मित्रता प्राप्त करके निर्भीक हो जावें। इसी उद्देश्य से हम आपको नमस्कार करते हैं।

(२) संसार में नास्तिकता सदैव से चली आती है और अनेक बार वह बलवती भी हुई, परन्तु आस्तिकता को नष्ट नहीं कर सकी। हमारी पृथिवी दो अरब वर्ष से है और सदैव मनुष्यों से आबाद रही है। परन्तु आस्तिकता आज भी उस पर फूल फल रही है। उसका कोई बाल बांका नहीं कर सका। कारण स्पष्ट है कि जगद् रचयिता सब का विजेता है, किसी से पराजित नहीं हो सकता। इसलिये अब भी उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। हम उसके सखा कब बन सकते हैं जब हम भी बलवान् हों, क्योंकि निर्बल और बलवान् की मित्रता नहीं हो सकती। इसीलिये इस देश में सदैव बल का मान रहा और स्त्री-पुरुष सभी अपने को बलवान् बनाते रहे, इस सम्बन्ध में कुछ बातें, मनन करने के लिये यहां अंकित की जाती हैं :—

(क) महाभारत में देवी विदुला की शिक्षायें, जो उसने अपने पुत्र संजय को दी थीं, प्रसिद्ध हैं। उसमें एक जगह उसने पुत्र को कहा था "मुहूर्त्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्।" अर्थात् थोड़ी देर ही के लिये क्यों न हो, चिरकाल तक धुवां देने वाली की अपेक्षा, धधक कर जलने वाली अग्नि श्रेयस्कर समझी जाती है। भाव इसका यह है कि कायरता के साथ चिरकाल तक जीने की अपेक्षा, वीरता के साथ थोड़े दिन भी जीना श्रेयस्कर है।

(ख) एक उपनिषद् में कहा गया है :—

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः। (मुण्डक ३ । २ । ४)

अर्थात् आत्म-बलहीन पुरुष परमात्मा को नहीं प्राप्त कर सकते। फिर एक जगह कहा गया है कि 'तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितम्।' वह सत्य बल में प्रतिष्ठित है, अर्थात् बल ही से सत्य की रक्षा की जा सकती है। इस प्रकार बल की महिमा-गान से वैदिक साहित्य ओत-प्रोत है।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है

यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन की २ वर्षीय रिपोर्ट पर लोकसभा में बहस हुई। शिक्षा मन्त्री श्री छागलाने ११ दिसम्बर को बहस का उत्तर देते हुए इस बात से इन्कार किया कि भारत सरकार हिन्दी वा लोक भाषा को विश्व विद्यालय की शिक्षा का माध्यम बनाए जाने की अपनी नीति से विमुख हो रही है। परन्तु वे देश की एकता के लिए उस समय तक अंग्रेजी का प्रचलन आवश्यक समझते हैं जब तक हिन्दी अंग्रेजी का स्थान ग्रहण करने के योग्य न हो जाय।

निस्सन्देह देश की एकता को दृढ़ करने का यत्न होना ही चाहिए परन्तु प्रश्न यह है कि देश की एकता का दृढ़ीकरण अंग्रेजी से हो सकता है या हिन्दी से जो अत्यन्त सुगम होने के साथ-साथ समूचे देश की सांस्कृतिक परम्पराओं और विशिष्टताओं से युक्त है। अंग्रेजी विदेशी भाषा है। भाषा के रूप में इसका महत्त्व है। परन्तु देश की सांस्कृतिक भावनाओं और प्रेरणाओं से इसका कोई सम्बन्ध न होने से यह भावात्मक एकता उत्पन्न करनेमें असमर्थ है। इस एकता का दृढ़ीकरण देर-सवेर में हिन्दी द्वारा ही संभव हो सकता है। जो लोग यह समझते हैं कि अंग्रेजी के हटते और उसका स्थान हिन्दी के लेते ही देश की एकता को खतरा उत्पन्न हो जायगा वे बड़े भारी भ्रम में हैं या दूसरों को भ्रम में रखने का दुष्प्रयास करते हैं। यह मनोवृत्ति अथवा सोचने का यह प्रकार हमारी राष्ट्रीय भावना का अपमान नहीं तो और क्या है ?

शिक्षा मन्त्री महोदय ने यह भी कहा कि अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों पर हिन्दी को बलात लादने में वे भागीदार न बनेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अंग्रेजी को जन सामान्य पर जो न उस भाषा में सोचते, न उस भाषा में बोलते और न उसे समझते ही हैं अनिश्चित काल तक लादे रखना चाहते हैं। उन्हें इस बात की अनुभूति होती प्रतीत नहीं होती कि इस भाषा को सीखने और उसमें ठीक प्रकार से अभिव्यक्ति न कर सकने के कारण असंख्य लड़कों और लड़कियों का जीवन नष्ट हो रहा है।

कालेज के विद्यार्थियों का बहुसंख्यामें परीक्षाओं में अंग्रेजीमें अनुत्तीर्ण होने तथा अन्य विषयों में अच्छे नम्बर प्राप्त करके उत्तीर्ण हो जाने का कारण अंग्रेजी माध्यम ही है। हमारे विद्यार्थी कब तक इस त्रुटि वा वाध्यता का शिकार बने रहेंगे ? अंग्रेजी को बलात् लादे रखने का अर्थ यही हुआ कि हमारे थोड़े से अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त बड़े लोग अनपढ़, निर्धन और भोले-भाले लोगों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते हैं।

विश्वविद्यालयो में शिक्षा कर माध्यम विशुद्ध शैक्षणिक विषय है और यह इसी रूप में लिया जाना चाहिए। अन्य विचार अप्रासंगिक हैं। हमारे शिक्षाशास्त्रियों और शिक्षाप्रशासन को ठंडे दिल से हजारों लाखों लड़कों और लड़कियों के हित को सामने रखकर इस विषय पर विचार करना चाहिए जो अंग्रेजी भाषा के खर्चीले एवं बोझिल माध्यम से उच्च शिक्षा से लाभान्वित होने में असमर्थ रहने के कारण चमक नहीं सकते। भारत ने अपनी भाषा के माध्यम से ही संसार की विचार धारा को समुन्नत और उसका पथ-प्रदर्शन किया था। इसी भाषा के द्वारा राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और बौद्धिक योग क्षेम सुरक्षित किया जा सकता है।

—रामगोपाल

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

महत्त्वपूर्ण परामर्श

अफ्रीका और एशिया के महाद्वीपों मे इस समय जन संख्या को कम करने का अभियान राजकीय स्तर पर संगठित रूप मे चल रहा है। ब्रिटेन और अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों के लेखकों और कृत्रिम उपकरणों को व्यापारिक लाभ का साधन बनाने वाले व्यापारिक संस्थानों एवं उनके प्रच्छन्न एजेन्टों पर इस अभियान को प्रेरणा देने का सन्देह विज्ञ समाज मे घर करता जा रहा है। जहां तक लेखकों का सम्बन्ध है इस सन्देह की पुष्टि बम्बई के २८ नवम्बर के समाचार से जो टाइम्स आफ इंडिया (देहली) के २९-११-६४ के अंक मे प्रकाशित हुआ है, हो जाती है। समाचार इस प्रकार है .—

"ब्रिटेन और अमेरिका के बहुत से लेखक जिस उतावलेपन से एशिया और अफ्रीका में जन संख्या को नियन्त्रित करने की मांग कर रहेहै उसमे नस्ल की भावना का प्रबल तत्त्व कार्य रत है और संभवत अनजाने मे ऐसा किया जा रहा है।

एग्रीकल्चरल इकानामिक्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट, आक्सफोर्डके डाइरेक्टर श्री कोलिन का भी ऐसा मत है। उनकी धारणा है कि नस्ल की भावना आज का सबसे अधिक प्रभावशाली जहर है।

ये लेखक यह अनुभव करते हैं कि एशिया और अफ्रीका मे जिस द्रुत गति से आबादी बढ़ रही है उसके फलस्वरूप इन महाद्वीपों के निवासी राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से समस्त संसार पर अपना प्रभाव जमाने मे समर्थ हो जायेंगे और उन लेखकों को यह स्थिति सह्य नहीं है।

कृषि और गैरकृषि दोनों क्षेत्रों में बढ़ी और और बढ़ती हुई आबादी आर्थिक दृष्टि से लाभ प्रद है परन्तु आबादी को सीमित किया जाना राजनैतिक दृष्टि से कुछ अर्थ रखता है। हम चाहे इस बात को पसन्द करें या न करें। संसार में बड़ी आबादी वाले देशों यथा चीन, भारत, रूस और अमेरिका का ही विशेष महत्त्व है।

इन्डियन सोशल इन्स्टीट्यूट नई दिल्ली के श्रीयुत एन्थोनी का मत है कि जनसंख्या को कृत्रिम उपकरणों से सीमित कर देना ही उन्नति की कुंजी नहीं है, अपितु देश के आर्थिक पिछड़ेपन के शीघ्र से शीघ्र समाधान से ही उन्नति का होना संभव है। जो लोग आबादी की कमी करके इस समस्या का हल करना चाहते हैं उनका दृष्टिकोण निषेधात्मक है।

कृत्रिम उपकरणों से भ्रष्ट सन्तति-नियमन का प्रयास करने वाले लोगों और भारत सरकार को उपर्युक्त परामर्श पर समुचित ध्यान देना चाहिए और उपकरणों एवं बन्ध्यकरण आदि के अनीति युक्त साधनों का आश्रय लेने और उनका प्रचार करके आबादी को कम करने का कुत्सित उपाय करने के स्थान मे खेती की उपज बढ़ाने और वितरण की त्रुटिपूर्ण व्यवस्था को सुव्यवस्था में परिणत करने का यत्न करना चाहिए। भारत में अन्न की कमी जितनी कृत्रिम है उतनी वास्तविक नहीं है। यदि भारत के नैसर्गिक साधनों का वैज्ञानिक ढंग से पूर्ण दोहन किया जाय तो खेती की उपज ७० करोड़ व्यक्तियों के लिए पर्याप्त हो सकती है ऐसा अर्थ शास्त्रियों का मत है। इस मत से भी पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए खेती की उपज बढ़ानी चाहिए।

—०—

विचारणीय सुझाव

श्री आदित्यपाल सिंह जी वैदिक शिक्षा-संस्थान होशंगाबाद ने अपने एक पत्र में सुझाव दिया है कि महर्षि दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थ एकमात्र परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा ही प्रकाशित होने चाहिए', और वे ही ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाने चाहियें। यदि स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों के छपने पर जो विविध प्रकाशकों द्वारा छपाए जा रहे हैं, प्रतिबन्ध न लगा तो कालान्तर में उनमें गड़बड़ होने की आशंका है। इसी आशंका की ओर हमने इन स्तम्भों में इससे पूर्व भी आर्य जनता का ध्यान आकृष्ट किया था। स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों में गड़बड़ होने से जहां जनता में भ्रम उत्पन्न होगा वहां शास्त्रार्थ करने वालों के मार्ग में भी रुकावटें पैदा हो जायंगी। उन ग्रन्थों के एकमात्र परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित होने से श्री स्वामी जी महाराज की वसीयत की पूर्ति भी पूर्णतः होती रहेगी। परोपकारिणी सभा को तत्काल इस ओर ध्यान देकर व्यवस्था करनी चाहिए।

चीन में मुसलमान

इण्डियन रिव्यू, मद्रास (दिसम्बर १६६४) पृष्ठ ४६० पर 'मुस्लिम इन चाइना' अर्थात् चीन में मुसलमान शीर्षक से निम्न प्रकार छपा है:—

"इस्लाम को समाप्त करने के चीन सरकार के निरन्तर प्रयत्नों के कारण अनेक प्रान्तों में जहां मुसलमानों का बाहुल्य है, अशान्ति व्याप्त हो गई है।

कान्सू प्रान्त के स्थानीय मुसलमानों ने चीन सरकार की इस्लाम विरोधिनी नीतियों का घोर विरोध किया है, जिसने जुम्मे की नमाज पर प्रतिबन्ध लगा दिया है इस आधार पर कि यह प्रथा धर्म को राज्य से ऊंचा स्थान प्रदान करती है।

मुसलमानों के विरोध को दबाने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टी ने उस प्रान्त में कार्यकर्त्ताओं, गरीब और निम्न मध्यम वर्ग के किसानों को मिला कर क्रान्तिकारी दलों का निर्माण करने के लिए अपने सदस्यों को आदेश दिया है जिससे कि वे जमीन्दारों, समृद्ध किसानों और क्रान्ति विरोधियों के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन कर सकें।

इसके परिणाम स्वरूप कान्सू प्रान्त के दो उपगवर्नरों की पुनः नियुक्ति न हो सकी।

अनेक स्थानों पर पुरानी मस्जिदें फौजी बैरकों में परिवर्तित करदी गई हैं और मस्जिदों की नई इमारत बनने नहीं दी जाती। वकी (वक्फ) की जमीनें जब्त कर ली गई हैं और समूहों के सुपुर्द कर दी गई हैं।

स्कूलों और कालेजों में अरबी की पढ़ाई का सख्त निषेध कर दिया गया है और इस्लाम का अध्ययन जीवित धर्म की अपेक्षा ऐतिहासिक जिज्ञासा का विषय माना जाता है। मुसलमान युवकों को नास्तिकता की शिक्षा दी जाती है और माओ के ग्रन्थों का संग्रह उनके नियमित अध्ययन का अंग है।

धार्मिक भावना की विकृति

फलित ज्योतिष पर विश्वास करने वाले जन सामान्य ही नहीं अपितु बड़े २ शिक्षित एवं उच्च पदस्थ जन भी हैं और वे न केवल इस देश में ही अपितु सर्वत्र पाये जाते हैं।

श्री लंका की प्रधान मन्त्री श्रीमती माओ भंडारनायके की सरकार की पराजय लंका की धारा सभा में ३ नवम्बर को हुई थीं और विधान के अनुसार उन्हें उसके तत्काल बाद नये चुनाव के लिए धारा सभा को भंग कर देना चाहिए था परन्तु ऐसा १७ नवम्बर को हुआ। १४ दिन की इस देरी का जो कारण प्रकाश में आया है वह बड़ा मनोरंजक और आश्चर्यजनक है।

श्रीमती जी ने ज्योतिषियों से परामर्श करने में इतना समय लगा दिया। कहा जाता है कि उन्होंने १७ नवम्बर का दिन ५० ज्योतिषियों के साथ परामर्श करने के बाद नियत किया है जो उनकी दृष्टि मे भावी चुनाव में सफलता की दृष्टि से शुभ बताया गया है।

जब धारा सभा भंग न करने के कारण ऊल जलूल अफवाहें फैलीं और उन्हें तानाशाह कहा गया तो उन्होंने अपने विरोधियों को सार्वजनिक रूप में फटकार लगाते हुए अपनी पराजय और धारा सभाको भंगकरनेमे विलम्ब का कारण मूहूर्त्त की प्रतिकूलता बताया। उन्होंने यह कहा बताते हैं कि ग्रहों की मार के कारण ही वे पराजित हुईं। ३ नवम्बर के दिन उनका वित्त-मंत्री लन्दन के एक हस्पताल में बीमार पड़ा था। उस दिन उनके मन्त्रिमण्डल का एक दूसरा सदस्य हवाई जहाज में यात्रा कर रहा था। एक दूसरे सदस्य की कार का टायर फट गया था। उनके विरोधी भी ग्रहों की सहायता लेने मे पीछे न रहे थे। एक विरोधी सदस्य ने ३ नवम्बर के दिन जिस दिन सरकार पराजित हुई थी एक मन्दिर मे जाकर श्रीमती माओ की पराजय के लिए देवता की मनौती की थी और २०० नारियल तोड़कर देवता की भेंट चढ़ाए थे।

आम चुनावों की तारीख निश्चित करने मे भी ज्योतिषियों की सलाह ली गई है। श्रीमती माओ को अपनी विजय का विश्वास है। यदि वे अपनी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता के कारण विजयी हो गईं तो इसका कारण ग्रहों की अनुकूलता बताया जायगा जिस पर विज्ञ समाज विश्वास न करेगा। यदि वे पराजित हो गईं तो इसका कारण ग्रहों की प्रतिकूलता बताया जायगा जो अपढ़ और भोले भाले लोगों को पथ-भ्रष्ट करने में सहायक होगा भले ही इसका कारण राजनैतिक हो या अन्य कोई हो। जिस दिन उन्होंने अपनी पार्टी का झण्डा फहराया उस दिन संयोग से वर्षा हो गई। उन्होंने इस शुभ संकेत को देवताओं के आशीर्वाद की संज्ञा दी। इस पर उनके एक विरोधी ने युक्ति देते हुए कहा कि यह वर्षा इस बात का संकेत है कि यह वर्षा उन्हें चुनाव में बहा ले जायगी अर्थात वे पराजित हो जायंगी।

फलित ज्योतिष मे विश्वास और ग्रहों की सन्तुष्टिका प्रयास करना धार्मिक भावनाकी विकृति का सूचक होताहै। विशुद्ध सेवा के भावसे प्रेरित होकर किसी पद की इच्छा करना और पद ग्रहण करना तो वरेण्य है, परन्तु देवी देवताओं की मनौती करते हुए अपने को दूसरों पर बलात् थोपने का प्रयास करना हास्यास्पद होता है।

बधाई

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार को राष्ट्रपति महोदय ने राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया है। इस प्रकार लोक सभा और राज्य सभा के आर्य सदस्यों मे एक उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिस पर आर्यजनों का प्रसन्न होना स्वाभाविक है। इस नियुक्ति पर हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। आशा है, वे अपने पद और आर्य समाज के यश को बढ़ाने में सचेष्ट रहेंगे।

सम्मानित अतिथि

इस मास सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में मौरीशस निवासी श्री गौतम तिलक, जो इन दिनों लण्डन मे निवास करते हैं, सपत्नीक पधारे।

श्री तिलक जी मौरीशस के सम्भ्रान्त भूमिधर हैं। प्रतिष्ठा की दृष्टि से इनका परिवार मोरीशस में प्रथम कोटि का है।

श्री तिलक जी गत ५ वर्ष से लण्डन में

निवास कर रहे हैं।

उन्हें आर्य समाज से विशेष प्रेम है। वे आर्यप्रतिनिधि सभा मौरीशस के आजीवन सदस्य हैं। मोरीशस की दोनों सभाओं को एक कराने में उनका प्रमुख हाथ था।

श्री तिलक जी बड़े उदार हैं। सार्वजनिक कार्य्यों के संपादन में अपना समय और धन लगाते हैं। ८-११-६४ को आर्य समाज दीवान-हाल द्वारा उनका स्वागत किया गया।

आचार्य मेधाव्रत जी

श्रीयुत आचार्य मेधाव्रत जी के निधन का समाचार अंकित करते हुए बड़ा दुःख होता है। उनके निधन से आर्य समाज अपने संस्कृत के एक प्रौढ़ विद्वान् और उत्कृष्ट कवि से वंचित हो गया है।

श्री पं० आचार्य मेधाव्रत येवला (नासिक) के निवासी और एक प्रतिष्ठित धनी एवं गुजराती आर्य परिवार से सम्बद्ध थे। उनकी शिक्षा दीक्षा आर्य आदर्शों के अनुसार हुई और उन्होंने अपना जीवन उन आदर्शों के अनुरूप बनाए रक्खा।

उनकी शिक्षा गुरुकुल वृन्दावन में हुई थी। जब स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी (श्री नारायणप्रसाद) गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता थे और जब यह गुरुकुल अपने उत्थान की सोपान पर चढ़ रहा था। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी साहित्यिक प्रतिभा और कवित्व शक्ति प्रस्फुटित हो गई थी।

उन्होंने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा को अपने सुप्रसिद्ध काव्य दयानन्द दिग्विजय और दयानन्द लहरी (मथुरा शताब्दी के अवसर पर प्रथम प्रकाशित) आदि ग्रन्थों में मूर्त्त रूप देकर ऋषि ऋण से उऋण होने का अमर प्रयास किया था।

उन्होंने अनेक आर्य सामाजिक शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत अध्यापन का कार्य करके भुलाई न जाने वाली सेवा की। वर्षों पर्यन्त वे कन्या महाविद्यालय बड़ौदा से सम्बद्ध रहे। मृत्यु के समय वे गुरुकुल चित्तौड़ में अवैतनिक रूप में अध्यापन का कार्य कर रहे थे। कन्या गुरुकुल नरेला और गुरुकुल चित्तौड़ इन दोनों संस्थानों को वे वर्ष में कई २ महीने संस्कृत शिक्षा के लिए अवैतनिक रूप में दिया करते थे। शेष समय महाराष्ट्र आदि में प्रचार यात्राओं और दिव्य कुंज (येवला के निकट निर्मित साधना स्थल) में साधना के अर्पित रहते थे।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिजनों को इस वियोग को धैर्य-पूर्वक सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

अध्यापक जहूरबख्श

अध्यापक जहूरबख्श का निधन हिन्दी जगत की महती क्षति है। मुसलमान होते हुए भी उन्होंने हिन्दी साहित्य की मूल्यवान् सेवा की। वे हिन्दी के विख्यात और प्रौढ़ लेखक थे। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखकर हिन्दी के साहित्य को समृद्ध बनाया। हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में तो प्रायः उनके लेख इत्यादि छपते रहते थे। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति उनके हृदय में बड़ी श्रद्धा और आदर के भाव थे जिन्हें वे समय २ पर व्यक्त करते रहते थे। यह था उनका विशाल दृष्टिकोण जिसको अभिव्यक्ति से उनकी कृतियां परिपूर्ण हैं।

एक कर्मठ आर्य का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के उपमन्त्री सामरखा (खेड़ा) निवासी श्रीयुत बलदेव भाई आर्य के निधन का समाचार देते हुए बड़ा दुःख होता है। श्री बलदेव भाई बड़े उत्साही प्रसिद्ध एवं कर्मठ आर्य थे। उन्होंने आर्य समाज की

उल्लेखनीय सेवा की। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति और उनके परिजनों एवं मित्रों को इस वियोग को धैर्य पूर्वक सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

इंग्लैंड में मुस्लिम विवाह कानून की स्थिति

ग्लौचेस्टर (इंग्लैंड) का रूटर द्वारा प्रसारित १६ दिसम्बर का समाचार है कि वहां एक भारतीय मुसलमान पर इस अपराध पर अभियोग चलाया गया है कि उसने इंग्लैण्ड के राज्य चर्च के कानूनों की अवज्ञा पूर्वक एक प्राइवेट घर मे मुस्लिम रीति के अनुसार विवाह सम्पन्न कराया है।

इंग्लैण्ड के चर्च वा रजिस्ट्री आफिस की विवाह प्रथा के अनुसार कोई भी विवाह चर्च वा निर्दिष्ट मकान के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता। युसुफ आरिफ भाम पर इस कानून का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया है। उसने पाकिस्तानी दिलवार सीदत का मिस मर्सिया बेयर्ड नामक एक अंग्रेज लडकी के साथ दिलवार के घर पर विवाह करा दिया था।

दिलवार ने कहा है कि मैने रजिस्ट्री के आफिस मे यह दावा प्रस्तुत किया था कि मै टैक्स के उद्देश्य से विवाह करना चाहता हूँ परन्तु रजिस्ट्री के आफिस ने विवाह का लाइसैंस देने से इन्कार कर दिया था। ऐसा हो जाने पर मैं भाम के पास गया जो ग्लौचेस्टर मे मुस्लिम सम्प्रदाय का नेता और काजी माना जाता है।

इसके कुछ दिन बाद उसने बताया कि हम दोनों का विवाह भाम के घर पर मुस्लिम शरीयत के अनुसार हुआ है।

कोर्ट में भामने कहा है कि हमारे (मुस्लिम) कानून के अनुसार दो गवाहों के समक्ष किसी स्थान पर भी विवाह हो सकता है।

(ट्रिब्यून १७-१२-६४)

स्वार्थपरता ही आज का धर्म है

श्री वीरसिंहम 'संयम का सिद्धान्त' शीर्षक के अन्तर्गत दिसम्बर की इण्डियन रिव्यू में लिखते हैं:—

"समस्त धर्म स्वार्थपरता का खण्डन करते है, चीन और भारत ये दो देश ही ऐसे हैं जो निःस्वार्थ भावना और संयम पर आश्रित अपनी संस्कृतियों पर गर्व कर सकते है जिनका अस्तित्व अपेक्षा कृत अधिक काल तक रहा और अब भी विद्यमान है। स्व० पं० जवाहरलाल नेहरू यह कहते नहीं थकते थे कि भारत के जनसाधारण शिक्षितों की तुलना मे अधिक संस्कृत हैं। चीन मे समाजवाद के प्रसार से वहां के लोगों का ध्यान संयम की अपनी प्राचीन संस्कृति से हट गया है। भारत मे इस संस्कृति का प्रभाव बना हुआ है परन्तु पश्चिम के भौतिक वाद के अन्धानुसरण के कारण खतरा मुंह बाए खड़ा है।

भारत मे वर्ण व्यवस्था जिसका विकृत रूप वर्तमान जात-पांत है, स्वार्थपरता के दमन पर अवलम्बित थी। ब्राह्मण वर्ण उच्चतम वर्ण माना जाता था। क्योंकि वह अपने निम्नस्तर से ऊंचा उठ कर उच्च स्तर पर पहुंचा हुआ होता था। वह अपनी आजीविका के लिए अन्य वर्णों पर निर्भर रहता था और इसके बदले में वह बिना कुछ लिए उन वर्णों की आध्यात्मिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। दूसरा वर्ण क्षत्रिय था जो अपने देश की रक्षा और शान्ति के लिए अपनी जान देने के लिए उद्यत रहता था। तीसरा वर्ण वैश्य था जो देश को धन-धान्यसे पूर्ण रखता था। चौथा वर्ण शूद्र था जिसमें स्वयं पहल करने की क्षमता न थी और जो अन्य तीनों वर्णों की सेवा करता था। उसमें अनियन्त्रित इच्छाओं से युक्त अधिक पशुत्व

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

सम्पादक की डाक

प्रिय (रामनाथ) भल्ला जी ! मैंने २० पौष सं० २०२१ के आर्योदय में पृष्ठ ४ पर वीरेन्द्र को लक्ष्य रखके आपका एक लेख पढ़ा। मैं इस सम्बन्ध में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों की सेवामें "आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब संकट में" शीर्षक से एक लेख पूर्व भी लिख चुका हूँ। अब पुन: आपकी सेवा में निवेदन करूंगा कि जैसा आपने वीरेन्द्र को उत्तर दिया है, वह पंजाब के आर्यों के टुकड़े करने के काम आयेगा। मुझे पता नहीं वीरेन्द्र ने क्या लिखा है किन्तु यह तो ध्रुव सत्य है कि एक दिन सभा के वे अधिकारी थे जिन्होंने गुरुकुल खोले थे और अनेक वर्षों तक चलाये तथा इनके साथ सम्पत्तियां संयुक्त की। आज के अधिकारी वे हैं जिन्होंने गुरुकुल तोड़ दिये हैं तथा सम्पत्ति को येन केन प्रकारेण नष्ट कर रहे हैं। क्या मैं आप से पूछ सकता हूँ कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का जो भाग किराये पर दिया है उसके किरायेदार कौन कौन हैं। जिन महानुभावों ने भूमि का अर्जन कर गुरुकुल खोला था क्या वह किराये पर चढ़ाने के लिये। क्या ही अच्छा हो कि आप सभी समाज मन्दिरों को भी किराये पर चढ़ा कर लाखों रुपये की आय करें।

श्री भल्ला जी ! आनी चाहिए थी लज्जा। गुरुकुल को तोड़कर उसकी भूमि किराये पर दे दी और उससे उसके अधिकारी वायुयानों की यात्रा करें तथा बिल बना कर दे दें सभा को।

आपने कहा है कि प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्त्तमान अधिकारी सर्वप्रिय बन रहे हैं। क्या यह सत्य है यदि हाँ तो आपके कथनानुकूल जिन समाजों का दशांश और वेद प्रचार फंड का धन आ गया था उन समाजों के प्रतिनिधियों ने २७, २८, नवम्बर के चर्खी दादरी के अधिवेशन में भाग क्यों नहीं लिया ? क्या उनका आप पर यही विश्वास है।

मैं स्वयं यह कई वर्षों से अनुभव करता आ रहा हूँ कि सभा के अधिकारी अति स्वार्थी और मदोन्मत्त हैं ! वे सभा पर अवैधानिक रूप से इसीलिए छा रहे हैं कि उनका स्वार्थ पूरा होता है। यदि ये मेरे शब्द अनुचित हैं तो मेरी एक माँग है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी समाजों के प्रतिनिधियों की पंजाब सभा की वैधता के निर्णयार्थ सार्वदेशिक सभा के आदेश से एक न्याय सभा बननी चाहिए।

क्योंकि सार्वदेशिक सभा समस्त भारत और विदेशों की आर्य समाजों का प्रतिनिधित्व करती है। इसके सम्बन्ध में आपके उक्त विचार सारे आर्य जगत् का अपमान है। क्या आप सार्वदेशिक सभा से विद्रोह करके और उसको अवैध बता के पंजाब के आर्य समाजियों की प्रतिनिधि सभा तथा वर्त्तमान अधिकारियों से विद्रोह का मार्ग नहीं प्रदर्शित कर रहे हैं। जब आप सार्वदेशिक का आदेश नहीं मान रहे हैं तो आपके आदेश को कौन मानेगा? जब सार्वदेशिक से आप को न्याय की आशा नहीं है तो आप की न्याय सभा से किसको न्याय की आशा हो सकती है ? विधान तो यह है कि स्थानीय समाज के विवादों को प्रतिनिधि सभा और प्रतिनिधि सभाओं के विवाद को सार्वदेशिक सभा निपटाये, जैसे आप सार्वदेशिक पर विश्वास नहीं करते वैसे हमें भी आप पर कोई विश्वास नहीं हो सकता—अतः श्री वीरेन्द्र, लाला रामगोपाल जी, डाक्टर हरिप्रकाश जी, राजा रामसिंह जी, आदि का प्रश्न नहीं, अपितु यह तो बहुसंख्यक आर्य समाजियों का प्रश्न है। करनाल जिले में पच्चासों समाज हैं जिनमें प्रतिवर्ष उत्सव होते हैं, और प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचार, दशांश भी भेजते हैं। किन्तु आपने आज तक उनको स्वीकृति नहीं दी इसके क्या कारण हैं। क्या यही नहीं कि आपका अवैध रूपसे सभा पर अधिकार बना रहे। आप जिन अवैध समाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं क्या उनके ८, ८, १०, १० और ११, ११ प्रतिनिधि नहीं हैं ? ये प्रतिनिधि ग्राम समाज के हैं या ग्राम संख्या के। क्या इनमें सबको संध्या हवन नित्यकर्म आता है ? क्या इन ग्रामों के समाज मन्दिरों में कोई नियमित कार्य-क्रम होता है ? क्या इन सदस्यों में बहुधा बीड़ी, सिगरेट हुक्का आदि पीने वाले नहीं हैं ? यदि उक्त दोषों के दोषी होते हुए भी वे आर्यसमाजी हैं तब तो सभी आर्य हैं। मैं आशा करूंगा कि आप मेरे इस लेख को शान्तिपूर्वक पढ़कर विवाद को निपटाने की कृपा करेंगे।

भवदीय

स्वा० रामेश्वरानन्द सरस्वती संसत्सदस्य

गुरुकुल घरौंडा, करनाल

पापों से छुटकारा

[श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की डायरी से]

यद्विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम्।
यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः॥

(अथर्ववेद ६-११५-१)

मन्त्र का भाव इस प्रकार है (यत्, विद्वास) जो जानकर और (यत् अविद्वास) जो अनजान से (एनासि, चकृमा, वयम्) हमने पाप किये हैं (विश्वे देवा) हे समस्त विद्वानों (यूय तस्मात न मुञ्चत) आप उनसे हमे छुडावें सजोषस) प्रेम के साथ।

संसार मे मनुष्यों से भूलें हुआ करती है। कुछ भूलें तो हम जानकर किया करते हैं और कुछ अनजान से हो जाया करती है। उन सबको दूर करने की हमारी इच्छा होनी चाहिये। साथ ही देश के अग्रणी विद्वानों की भी। वेद मे कर्तव्य ठहराया गया है कि वे प्रेम के साथ हमको उन पापों से छुडावे।

देश के नेताओं और उनके अनुगामियों को कैसा होना चाहिये इसका संकेत इस वेद मन्त्र मे किया गया है। नेताओं के लिए वेद मन्त्र मे देव शब्द प्रयुक्त हुआ है। मनुष्यों के तीन भेद होते है (१) मनुष्य जो अच्छे कर्म भी करते है बुरे भी, (२) पितर जो कर्म तो प्राय सभी अच्छे करते है परन्तु उन कर्मों के साथ अपना स्वार्थ भी रक्खा करते हैं अर्थात् वे सकामता से कर्म किया करते है परन्तु देश और समाज की रक्षा करना उनका भी धर्म होता है और इसी लिए वे पितर कहे जाते है। मौर्य साम्राज्य मे पितर शब्द नगर रक्षक (कोतवाल) के लिए प्रयुक्त हुआ करता था। (३) देव तो उच्च श्रेणी के विद्वान् और निष्कामता के साथ कर्म करने वाले होते है। उनका जीवन देश और जाति का जीवन हुआ करता है। ऐसे ही व्यक्तियों का अधिकार हुआ करता है कि देश और जाति का नेतृत्व करे।

अनुगामियों को कैसा होना चाहिए, इसके लिए उनके दो कर्तव्य ठहराये गये है। (१) उन्हें अपने को अच्छा बनाना चाहिये और जानना चाहिये कि उनके भीतर क्या २ दोष है और किस प्रकार वे दूर किये जा सकते हैं। (२) उन्हें सच्चे अर्थों मे अनुगामी बनने के योग्य अपने को बनाते हुए, नेताओं से आशा रखनी चाहिये कि वे उनके अच्छे सहायक सिद्ध होंगे।

अपने को अच्छा बनाने और अपने दोष और गुणों को जानने के लिए मनुष्य का कर्तव्य है कि आत्मनिरीक्षण(self introspection)के नियम को अपनावे। मनुष्य जब इस नियम को अपनाता है तो आरम्भ मे तो अनेक अपने किए कृत्य उसकी दृष्टि से ओझल रहते है परन्तु वो सप्ताह के अभ्यास के बाद ही अपना किया हुआ कृत्य मानों चित्र बनकर सामने आ जाता है। असफलता को सफलता मे परिवर्तित करने के लिए यही अचूक औषधि है कि आदमी अपना दोष ढूंढे कि क्यों असफलता हुई है। ऋषि दयानन्द का जीवन इस शिक्षा का क्रियात्मक उदाहरण है। जब हरिद्वार के अवसर पर उन्होंने पाखंड खण्डनी पताका फहराई थी उस समय लगभग दो मास उन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया था। इसबीचमे अनेक शास्त्रार्थकिएप्रश्नोंके उत्तर दिये। लोगों को समझाने का यत्न किया,

यह सब कार्य हो चुका। यात्री अपने अपने घरों को वापिस चले गये। तब शान्ति के साथ बैठ कर ऋषि दयानन्द ने अपने अन्तरात्मा से प्रश्न किया कि उनके प्रचार का जितना फल होना चाहिये था हुआ या नहीं? उत्तर निषेधात्मक मिलने, पर जब कारण जानने की इच्छा प्रगट की तो उत्तर मिला कि अभी तुम्हारे भीतर तपस्या की कमी है। ऋषि दयानन्द हृदय की बात सुनने वाले थे। उन्होंने हृदय के निर्णय को सुना और वहीं उनके पास जो कुछ था उसका सर्वमेध यज्ञ किया। अपने पास गिनती की एक लंगोटी के सिवा कुछ नहीं रक्खा और हरद्वार तीर्थ से गंगा के किनारे-किनारे विचरना शुरू किया। गर्मी, वर्षा और शीत प्रत्येक वर्ष आई और चली गई परन्तु उनके शरीर के नग्न रखने में कोई अन्तर नहीं। उनके एक ही लंगोटी थी इसलिये प्रत्येक दिन का, प्रत्येक ऋतु मे, यह नियम सा बन गया था कि कि वे तीन बजे रात को स्नान करके लंगोटी को बाहर सूखने डालकर स्वयं गंगा में बैठकर अभ्यास और ईश्वर चिंतन किया करते थे। उनमे इस तप से कितनी सहनशीलता आ गई थी उसका एक उदाहरण दिया जाता है। जब वे कर्णवास के समीप गंगा तट पर रहा करते थे तो एक गंगा पुत्र का नियम था वह उनके पास जाकर दस-बीस गालियां उन्हें दे आता था और तब वह अपना काम शुरू करता था। इस वीच में स्वामी जी का नियम था कि जो कोई पहले उनके लिये भोजन ले आता था तो उसे वे अपने काम में ले आया करते थे। उसके बाद कोई कुछ भी लाता था उसे बंटवा दिया करते थे। एक दिन की बात है कि उनके भोजन कर लेने के बाद एक सज्जन एक थाल में मिठाई रखकर स्वामी जी के लिए लाए। उस समय उनके पास और कोई सज्जन नहीं थे इसलिए उन्होंने वह मिठाई का थाल उसी गाली देने वाले गंगा-पुत्र के पास भेज दिया। पहले तो उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह मिठाई का थाल स्वामीजी ने उसी के लिए भेजा है, परन्तु जब विश्वास हो गया तब वह लज्जित अश्रुपूर्ण नेत्र के साथ स्वामी जी के पास आकर पांवों पर पड़ गया और अपने अपराध की क्षमा मांगी। उन्होंने उसे सान्त्वना देकर लौटा दिया। इस प्रकार नौ वर्ष तप करते हुए उन्होंने व्यतीत किये उसके पश्चात् उन्होंने आर्य समाज की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया। अस्तु, यह आत्म-निरीक्षण का सुनहरी नियम प्रत्येक आत्मोन्नति के इच्छुक को अपनाना चाहिये।

पाप, जिससे बचने की शिक्षा इस मन्त्र में दी गई है यह दो प्रकार का होता है—एक व्यक्तिगत, दूसरा समाजगत। व्यक्तिगत पाप अपने को रोगी बनाना है। अथर्ववेद के तीसरे काण्ड का ३१ वां सूक्त इन्हीं पापों की निवृत्ति से संबन्धित है, उसमें रोगी होने को पाप बतलाया गया है। इस सूक्त के प्रत्येक मन्त्र का भाग इस प्रकार है:—व्यतं सर्व्वेण पाप्मना वियक्ष्मेण समायुषा। जिसके अर्थ हैं कि मैं समस्त यक्ष्मा (रोग रूपी) पापों से दूर रहूँ और पूर्ण आयु से संयुक्त होऊं। उसी प्रकार समाजगत पाप चोरी करना आदि है, इनसे भी बचना आवश्यक है। इससे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक नियमों का भंग होता है, वे सभी धर्म शास्त्र के रूप से पाप कहे गये हैं। उदाहरण के लिए देखिये:—

वैद्यक शास्त्र

(१) नशे के प्रयोग से फेफड़े खराब होते हैं कमजोर होते हैं और समस्त शरीर के आन्तरिक कार्य खराब होते हैं।

(२) व्यभिचार से वीर्य नाश होता है, मस्तिष्क कमजोर होता है और तमाम शरीर निर्बल हो जाता है।

(३) स्नान न करने से शरीर स्वच्छ नहीं होता और रोम कूपों का द्वार बन्द हो जाने से शरीर के भीतर का उत्पन्न मल नहीं निकलता और भीतर विजातीय द्रव्य Foreign Matter रूप रह कर रोगोत्पत्ति का कारण बनता है।

धर्म शास्त्र

(१) इसलिये नशों का खाना-पीना पाप है।

(२) इसलिये व्यभिचार पाप है।

(३) इसलिये स्नान न करना पाप है।

समाजशास्त्र

(४) असत्य व्यवहार से जहां व्यक्तिगत पतन होता है वहां समाज में अविश्वास फैलकर समाज का संगठन नहीं होने पाता और समाज की मानहानि होती है।

(५) चोरी करने, डाका डालने से समाज की हानि होती है और व्यक्तियों का व्यक्तिगत और समाजगत दोनों जीवन का पतन होता है।

धर्म-शास्त्र

(४) इसलिए झूठ बोलना पाप है।

(५) इसलिए चोरी करना, डाका डालना पाप है।

अस्तु, पापी बनने से मनुष्य या मनुष्य समाज संसारकी नियामतों से भी वंचित होजाता है। जर्मन केपुराण शास्त्र Mythology में एक पापी नेबलूस की गाथा है कि वह पानी में तो खड़ा था और शिर पर फलदार डालियां लटक रही थीं परन्तु वह पानी और भोजन दोनों से वंचित था। ऋग्वेद में एक जगह कहा गया है:- "अपां मध्ये तस्थिवां संतृष्णाविदज्जरितारम्। मृडा सुक्षत्र मृडये" अर्थात् जलों के भीतर खड़े हुए मुझे प्यास ने घेर रक्खा है। हे शक्तिशाली प्रभु! दया करो, दया करो। सचमुच जगत में सब कुछ होते हुए पापी उनसे वंचित रहा करते हैं।

मन्त्रान्त में नेताओं का यह भी कर्त्तव्य ठहराया गया है कि वे अपने अनुगामियों के पाप छुड़ावें परन्तु प्रेम के साथ, उन्हें चिढ़ाकर अथवा अन्य प्रकार के कष्ट देकर नहीं। किस प्रकार प्रेम के साथ पाप छुड़ाए जाते हैं इसका एक बड़ा सुन्दर और शिक्षाप्रद उदाहरण चैतन्य के जीवन में मिलता है। भक्ति मार्ग के प्रचारक चैतन्य बंगाल के एक नगर में अपने साथियों के साथ जाकर एक वाटिका में ठहरे। वहां उनसे जो भी मिलने आया उन्होंने उनसे एक प्रश्न करना शुरू किया कि तुम्हारे नगर में सबसे बड़ा पापी कौन है? सब ने एक स्वर से मघाई की ओर संकेत किया। चैतन्य ने मघाई को बुलाया उसके न आने पर उसे जबरन पकड़ कर बुलवाया गया। मघाई को तो स्वभावतः बार-बार यह बात ध्यान में आ रही थी कि आज्ञा का पालन न करना और सन्देशवाहक के साथ बुरा बर्ताव करने के अपराधों के दण्ड के लिए वह वाटिका में बुलाया गया है। चैतन्य ने उसके लिए आराम से लेटने के लिए अच्छा गुदगुदा बिस्तर बिछवाया हुआ था। मघाई उस पर लिटा दिया गया परन्तु उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। वह सोच रहा था कि पता नहीं, आज किस प्रकार का और किस प्रकार से दण्ड मिलेगा जिसके लिए वह यहाँ लिटाया गया है। देखता क्या है कि श्री चैतन्य देव उसके पांव की ओर आकर बैठ गये और अपना हाथ उसके पांव पर इस प्रकार रखा कि जैसे कोई किसी के पांव दाबना चाहता है। इस प्रक्रिया को देखते ही मघाई का हृदय उलट-पुलट हो गया। अब वह पहले वाला मघाई नहीं रह गया। वह घबड़ा कर एक साथ उठ बैठा और चैतन्य के हाथों को पकड़ कर अपने पांवों से हटा दिया कि मैं बड़ा पापी हूँ, मैने यह अपराध किया, वह अपराध किया। आपने क्यों अपने पवित्र हाथों को मेरे

अपवित्र शरीर पर रख कर अपवित्र किया। अब उसकी यह हालत है कि जो किसी भी व्यक्ति की होती है जिसमें आत्म-ग्लानि की भावना जागृत हो उठती है। मनुष्य जब आत्म-निरीक्षण करता है और बहुमात्रा में उसके अवगुण उसके सामने आने लगते हैं तो फिर उसे अपने ही से घृणा होनी आरम्भ हो जाती है। फल इस आत्म ग्लानि का यह होता है कि अब वे अवगुण उसके भीतर नहीं रहने पाते। वह सचमुच बड़ा सौभाग्यवान् होता है जिसके भीतर यह आत्मग्लानि की भावना जागृत होती है। अब मघाई का हाल यह है कि वह अपने १-१ अवगुण को प्रकट कर रहा है और आंखों से अश्रु-धारा प्रवाहित है। चैतन्य महोदय ने उसे सान्त्वना देने के लिए कहा कि मघाई! अब तुम क्यों दुखी हो रहे हो। तुमने तो अपना प्रायश्चित्त कर लिया। प्रायश्चित्त वास्तव में एक बड़ा सुनहरी नियम है और प्रत्येक व्यक्ति को भूल करने पर उसका कुछ न कुछ प्रायश्चित्त अवश्य कर लेना चाहिए। यहाँ यह बात याद रखनी चाहिए कि प्रायश्चित्त से यह नहीं होता कि किये हुए कर्मों का फल न मिले। फिर यह प्रश्न है कि प्रायश्चित क्यों करना चाहिये? मनुष्य जब किसी कामना के साथ कोई भी कर्म करता है तो कर्म से जहाँ कर्म का फल मिला करता है उसके साथ ही उस कर्म की एक वासना बना करती है। वह उस कर्म को फिर दुहराने की प्रेरणा भीतर से करती रहती है। प्रायश्चित्त से यह वासना नष्ट हो जाती है और उस कर्म के फिर दुहराने को प्रेरणा करने वाली कोई शक्ति भीतर नहीं रहा करती है। सबसे अच्छा प्रायश्चित्त यह है कि प्रायश्चित्त करने वाला अपना अपराध जनता के सम्मुख स्वीकार कर लेवे। इसी को पापों की स्वीकृति confession कहते हैं। चैतन्य ने मघाई से इसी प्रायश्चित के कर लेने की बात कही थी। अर्थात् उसने जनता के सम्मुख अपने पापों को स्वीकार कर लिया था। जरूरत नहीं कि इस मघाई की आख्यायिका का और अधिक विस्तार किया जाय, संक्षेपतः यह है कि चैतन्य के जीवनचरित्र के पढ़ने से पताचलता है कि उनके जिस शिष्य ने, उनके सम्प्रदाय का सब से अधिक प्रचार किया था यह वही मघाई था। चैतन्य ने जिस प्रकार प्रेम से मघाई से उसके पापों को छुड़ा दिया, वेद मन्त्र में संकेत है कि इसी प्रकार समाज के अनुगन्ताओं का काम है कि अपने अनुगामियों से पापों और बुराइयों को छुड़ाते रहा करें। वेद की इस शिक्षा के अनुसार विद्वानों को नियम कर लेना चाहिये जैसा इस नीति के वाक्य में कहा गया है: –

न त्वहं कामयेस्वर्गं न च राज्यं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनां आर्तिनाशनम्॥

अर्थात् मेरी कामना राज्य, स्वर्ग की प्राप्ति अथवा पुनर्जन्म की नहीं होनी चाहिये, मेरी कामना यह होनी चाहिये कि दुःखी प्राणियों के दुःखों का नाश किया जावे।

महर्षि दयानन्द की विचार-धारा

(१)

आकाश और ब्रह्म दोनों एक स्थान में क्योंकर रह सकते हैं ?

हुतात्मा श्री प० लेखराम जी ने सम्वत् १९३८ की ज्येष्ठ वदि ४ को अजमेर में महर्षि दयानन्द के दर्शन करके उनसे प्रश्न किया —

'महाराज ! आकाश और ब्रह्म दोनों पदार्थ व्यापक हैं। ये दोनों एक स्थान में एकत्र क्योंकर रह सकते हैं ?

महाराज ने एक पास का बड़ा पत्थर उठाकर पूछा कि इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं ? पंडित जी ने कहा—हां अवश्यमेव है। फिर महाराज ने उसी पाषाण खण्ड में वायु, जल, मिट्टी आकाश और परमात्मा की व्यापकता पूछी। पण्डित जी ने सबकी व्यापकता स्वीकार कर ली। तब स्वामी जी ने कहा—भद्र ! आपने समझ लिया कि एक पत्थर में सब पदार्थ व्याप्त हो रहे हैं इस व्यापकता का सरल सिद्धान्त यह है कि जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह उसमें व्याप्त हो सकता है। परमात्मदेव परम सूक्ष्म हैं इसलिए वे सब पदार्थों में परिपूर्ण हो रहे हैं।

श्री पण्डित जी ने पूछा—भगवन् ! जीव और ब्रह्म के भिन्न २ होने में कोई प्रमाण दीजिए।

उत्तर—यजुर्वेद का सारा चालीसवां अध्याय जीव और ब्रह्म का भेद वर्णन करता है।

प्रश्न—मुसलमान और ईसाई आदि मतों के मनुष्यों को क्या शुद्ध कर लेना चाहिए ?

उत्तर—अवश्यमेव शुद्ध कर लेना चाहिए।

प्रश्न—बिजली क्या वस्तु है और किस प्रकार उत्पन्न होती है ?

उत्तर—बिजली सर्वत्र है। रगड़ से अभिव्यक्त होती है बादलों की बिजली भी वायु और बादलों के संघर्षण से प्रकट होती है।

दयानन्द प्रकाश
वे प्र म सस्करण पृ
४७०-४७१

(२)

जीव ब्रह्म से पृथक है

बनेड़ा (राजस्थान) के महाराज ने श्री स्वामी जी से जीव-ब्रह्म के विषय में प्रश्न किया जिसके उत्तर में स्वामी जी ने कहा कि जीवात्मा ब्रह्म से न्यारा है। जैसे आकाश सारे मन्दिर के भीतर बाहर परिपूर्ण है, परन्तु मन्दिर आकाश से भिन्न ही बना रहता है ऐसे ही परमात्मा जीवात्मा में रमा हुआ है परन्तु जीव उससे न्यारे ही रहते हैं।

(द० प्र० पृ० ४८६)

(३)

परमात्मा ने पुरुषार्थ के लिए प्रत्येक को पर्याप्त साधन दिए हैं

अंग्रेजी का एक विद्वान् एक पंजाबी स्वामी जी के दर्शनार्थ बम्बई गया। महाराज के आदेशानुसार उसके खान पान और निवास का उत्तम प्रबन्ध उनके डेरे पर ही कर दिया गया। कई दिन तक वह महाशय सुखपूर्वक वहां रहा। उसका दैनिक काम छड़ी घुमाते नगर में चक्कर लगाना अथवा थककर खाट पर पड़े खर्राटे लेना ही था। एक दिन महाराजने उसे बुलाकरकहा—

"भद्र ! जो पदार्थ जितना अधिक उपयोगी है उतना ही अधिक अच्छा है। मनुष्य भी उतना ही अधिक अच्छा है जितना वह उपयोगी हो।

अब आप सोचिए कि व्यर्थ में समय खोकर आप कितनी उपयोगिता नष्ट कर रहे हैं। देखिए मैं भी परान्न भोजी हूँ परन्तु प्रातः से सायं तक परार्थ कार्य करता हूँ। आलसी और निष्क्रिय होकर किसी की कमाई पर ताकते रहना मेरे सिद्धान्त के सर्वथा विरुद्ध है। परमात्मा ने पुरुषार्थ के लिए प्रत्येक को पर्याप्त साधन दिए हैं उन्हीं के आधार पर प्राण यात्रा चलाना उचित है। आप भी मेरे मत के अनुयायी बन जाइए। इस कार्य भूमि में कर्म-योग को प्रधान मानिए। (द० प्र० पृ० ५१६)

(४)

युरोप वासियों में इन विचारों का प्रचार होना चाहिए

पश्चिम के सुप्रसिद्ध पण्डित मोनियर विलियम्स ने बम्बई में श्री स्वामी जी से भेंट की! बड़े लम्बे कथनोपकथन के अनन्तर मोनियर महाशय ने महाराज के मंगल-मिलाप के लिए अति प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा:—

'आपके विचार परिमार्जित और अत्युच्च हैं। युरोप वासियों में भी इनका प्रचार होनाचाहिए। यदि आप उस महाद्वीप की यात्रा करना स्वीकार करें तो मैं आपके व्ययादि का भार अपने ऊपर लेता हूँ।"

स्वामी जी ने अतिथि की इस उदारता के लिए धन्यवाद देकर कहा—

'जिस भारत भूखंड में मैं रहता हूं वहाँ अविद्यान्धकार घोरतम रूप धारण किए बैठा है। इस देश के वासी दिन पर दिन दुःखी और दरिद्र होते चले जाते हैं। यहां के समाज में कुरीतियों का कोई भी पारावार नहीं है। ऐसे ही कारणों से इस देश का सुधार करना मैं अपना मुख्य कर्त्तव्य मानता हूं। दूसरे विदेश जाने के लिए वहा की भाषा सीखना आवश्यक है। जितना समय विदेश की भाषा सीखने में लगता है उसमें मैं यही अधिक कार्य कर सकूंगा तीसरे, जिस देह के इतने विरोधी है उसका भी अधिक भरोसा नहीं है। थोड़े से समय में, यदि इससे देश का कल्याण कार्य बन सके तो बहुत अच्छा है।"

(द० प्र०, ४९७-४९८

(५)

भारत का पूर्ण हित कब होगा ?

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल जी ने निवेदन किया—

भगवन्! भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहां जातीय उन्नति कब होगी?

महाराज ने उत्तर दिया—एक धर्म्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियों का केन्द्र-स्थान ऐक्य है। जहा भाषा भाव और भावना में एकता आ जाय वहीं सागर में नदियों की भांति, सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं।"

फिर श्री पण्ड्या जी ने प्रार्थना की—'जब अपना उद्देश्य और आदर्श एकता सम्पादन करना है तो आप मत-मतान्तरों का कठोर खंडन क्यों करते है? इससे तो उल्टा वैर-विरोध और वैमनस्य बढ़ता है?"

महाराज ने उत्तर दिया—'एक तो मेरा धार्मिक लक्ष्य सार्वजनिक है। उसे संकुचित नहीं किया जा सकता। दूसरे भारतवासी लम्बी तान कर ऐसी गहरी नींद में सो रहे हैं कि मीठे शब्दों से तो आँख तक खोलने को भी समुद्यत नहीं होते। सुधार का तो ये नाम तक नहीं लेते। कुरीतियों और कुनीतियों के खंडन रूप कोड़े की तड़ातड़ ध्वनि से भी यदि ये जग जायें तो ईश्वर

पादरियों की खतरनाक करतूतें

[श्री चतुरसेन गुप्त, शामली]

स्वतन्त्रता के बाद से भारत में विदेशी पादरियों का आगमन और भारत सरकार द्वारा उनका स्वागत वैसा ही भारत के लिए खतरा है जैसा कि चीन और जापान में पादरियों ने किया था। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय नेहरू जी के शब्द ध्यान देने योग्य हैं। ता० १४-१०-३२ को एक पत्र में नेहरू जी ने अपनी पुत्री को चीन के सम्बन्ध में पादरियों के कारनामों की घटना इन शब्दों में लिखी थी—

"पश्चिम की साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ चीन की—मुसीबतों की यह शुरुआत थी। उसकी एकान्तता खातमे पर थी। उसे विदेशी तिजारत मजूर करनी पड़ी, और साथ ही मंजूर करने पड़े ईसाई मिशनरी, पादरी या प्रचारक। इन ईसाई प्रचारकों ने साम्राज्य-वाद के "अग्रदूत" के रूप में, चीन मे जबर्दस्त काम किया। बाद में चीन पर जो-जो मुसीबतें आयी उनका कुछ न कुछ कारण ये मिशनरी लोग ही थे। इनका बर्ताव निहायत गुस्ताखाना और भड़काने वाला था। चीनी अदालतों में उन पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था। मिशनरियों ने जिन चीनियों को ईसाई बनाया वे भी "अन्य देशिकता" के अधिकार की मांग करने लगे। वे किसी भी तरह से इसके हकदार न थे, लेकिन इस बात की कुछ परवाह न की गई; क्योंकि एक जबर्दस्त मिशनरी, एक ताकतवर साम्राज्यवादीराष्ट्र का प्रतिनिधि उसकी पीठ पर था।

यह तो हुआ चीन के सम्बन्ध मे। अब जरा जापान के सम्बन्ध मे नेहरूजी के २३जुलाई १९३२ के पत्र की निम्न पंक्तियों पर ध्यान दे, जो जापान के सबसे काबिल राजनीतिज्ञ हिदेयीशी के लिए लिखी थी:—

"हिदेयीशी जापान के सबसे काबिल राजनीतिज्ञों मे से एक हुआ है। लेकिन कहते हैं कि वह बहुत बदसूरत था—छोटे कद और चपटे मुंह का बनमानुष जैसा।"

"सेंट फ्रांसिस जेवियर ने १५४९ ई० में इस

का कोटि २ धन्यवाद करूंगा।

पण्ड्या जी! कोई देश जनशून्य नहीं हो जाया करता। लोग तो बने ही रहा करते हैं। परन्तु धर्म्म-गुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भावना भाव और भाषादि एकता के चिह्न बदल जाते हैं। रहन-सहन के ढंग में भेद आ जाता है। ठीक ऐसा ही समय इस देश पर उपस्थित है। यदि संभाला न गया तो आर्यजाति परिवर्तन के चंचल चक्र पर चढ़कर अतिशय उतावली से अपने पूर्व पवित्र शरीर को परिवर्तित कर डालेगी, इसके पिछले प्रमाद के कारण करोड़ों मनुष्य मुसलमान बन गए। अब प्रतिदिन सैकड़ो ईसाई बनते चले जा रहे हैं। ऐसे समय में तो अपने सधर्म्म बन्धुओं को कडे हाथ से उनकी चोटियाँ पकड़ कर भी जगाना होगा। भाई! यह कटु कर्त्तव्य मैं कोई अपने स्वार्थ के लिए तो पालन नहीं कर रहा हूँ मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईंट-पत्थर और विष ही स्थान स्थान पर मिलता है परन्तु बन्धु वात्सल्य की भावना मुझे विपत्तियों के विकट और जटिल जाल में भी समाज-सुधार के लिए प्रोत्साहित कर रही है।"

(द० प्र० ५१०, ५११)

The views of some world famous thinkers

ON

CHRISTIAN DOGMAS

[Compiled by Pandit Dharam Deva Vidyamartanda.]

Count Tolstoi—the sage of Russia wrote in "What is Religion" :—

Really no religion has ever preached things so evidently incompatible with contemporary knowledge or so immoral, as the doctrines preached by Church Christianity, Not to speak of all the absurdities of the Old Testament. such as the creation of light before the sun, the creation of the world six thousand years ago, the housing of all the animals in the Ark ; or of the many immoral horrors, such as injunctions to massacre children and whole populations at God's command, not

देश में ईसाई धर्म की शुरुआत की। ...

लेकिन बहुत जापानियों ने यह अनुभव कर लिया कि वे (ईसाई) उपदेशक खतरनाक हैं। फौरन ही उन्होंने अपनी नीति बदल दी और इनको बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। १५८७ ई० में ईसाइयों के खिलाफ एक राजाज्ञा निकाली गई, जिसमें इस बात का एलान किया गया कि जो ईसाई उपदेशक २० दिन के अन्दर जापान से बाहर नहीं चला जायगा, उसको फांसी की सजा दी जायगी वह राजाज्ञा शुद्ध राजनैतिक कारणों से ही जारी की गई थी। हिदेयीशी को सन्देह हो गया था कि खतरा आने वाला है। उसने समझा कि मुमकिन है ये ईसाई उपदेशक और उनके जरिये ईसाई बने हुए दूसरे लोग राजनैतिक दृष्टि से खतरनाक हो जांय, और उसका ख्याल गलत नहीं था।"

इस घटना पर नेहरू जी एक बड़े ही मार्के की बात लिखते हैं जो आज के प्रधान मन्त्री तथा अन्य राज्याधिकारियों की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त है :—

"जापानियों की इस प्रतिक्रिया को हम समझ सकते हैं। हमें यह बात आश्चर्य में डाल देती है कि जापानी लोग इतने कुशाग्र बुद्धि थे कि उन्होंने साम्राज्यवाद के भेड़िये को मजहब की भेड़ की खाल में भी पहचान लिया।"

चीन और जापान की घटना और आज भारत में घटित घटनाओं पर ध्यान देने से पता चलता है कि जापानी कुशाग्र बुद्धि थे जो उन्होंने इन मजहबी खाल ओढ़े हुए भेड़ियों को जल्दी पहचान लिया था किन्तु यह अभागा भारत है जिसके शासक नागालैंड, नियोगी कमेटी की रिपोर्ट तथा अन्य पादरियों की करतूतों को आज तक समझ नहीं पाये। भारत की अनेक संस्थाओं नेताओं का विरोध भी भारत सरकार के कानों और आंखों पर कुछ असर नहीं कर रहा है। क्या भारत की तथाकथित धर्म-निरपेक्ष सरकार भारत को विदेशी प्रभुत्व के जाल में फंसाते हुए जापान के हिदेयीशी और स्व० पं० नेहरू के विचारों से अपनी आंखें नहीं खोलेगी ?

to speak even of the absurd sacrament of which voltaire used to say, that though there have been and are many absurd religious doctrines there never before was in which the chief act of Religion consisted in eating one's own God, not to dwell onall that,what can be more absurd than that the mother and a virgin, that the sky opened and a voice spoke from up there:that Christflew into the sky and sits some where up there at the right hand of his father? or that God is both one and Three, one and yet Three ? **And what can be more immoral than** the terrible doctrine that an angry and revengeful God punishes all men for Adam's sin and sent his son on earth to save them knowing bef rehand that men would kill him and would therefore be damned ; and that salvation from sin con ists in being baptised or in believing that all these things really happened, and that the son of God was killed by men that men might be saved, and that God will punish with eternal torments those who do not believe this ? ... .

The very foundations of this religion (Christianity) admitted by all and formulated in the Nicene creed, are so **absurd and immoral**, and **run so counter to right feeling and to commonsense**, that men cannot believe in them. Men may repeat any form of words with their lips, but they can not believe things that have no meaning. It is possible to say with one's lips I believe the world was created six thousand years ago, or I believe Christ flew up into the Sky and sat down next to his Father's, or "God is one and at the same time three" **but no one can believe these things** for the words have no sense. And therefore men of our modern world who profess this perverted form of **Christianity really believe in nothing at all**

(What is Religion,

"By Count Tolstoi)

Published by Tagore & Co. Madras

P 19

Bernard Shaw on Christianity:—

Bernard Shaw—a thinker of world wide reputation wrote thus in his well-known work entitled as "Every body's Political. What is What" in Chapter XVIII. Under the Caption of "Religious summary :—

It is time to tell our Fundamentalists **bluntly that they are the worst enemies of religion today;** that Jehovah is no God, but a barbarous tribal idol ; that the English Bible, though a masterpiece of literary art

its readable parts, rich in notable poem, proverbs, precepts and entertaining if not always edifying stories, is yet a fumble of superstition, obsolete cosmology and a theology presented in such an unbalanced one-sided way that the first Christian Catholic Church forbade the laity to read the Bible without special permission.' P. 357.

The Bible in its canonical aspect is not helping us ; it is obstructing us and making us dangerously irreligious. Rousseau said in the eighteenth century, 'Get rid of your miracles and the whole world will fall at the feet of Christ, "and this was reasonably said at the moment ; but he was wrong, the whole world has become indifferent to the Bible miracles, and instead of falling at the feet of Christ has fallen at the feet of Pastour and Pavlov." P. 358.

Yet it has not discarded its old fundamentalist superstitions and taboos and mental habits. No longer ago than the end of the Nineteenth Century Steward Headlam, a clergyman, got into trouble with his ecclesiastical superiors by saying that what the Church needs is to bury the Bible for a hundred years, and let it then be discovered for what it really is. I cannot agree that we should bury the Bible only, We should burn the Prayer Book also. It is saturated with blood sacrifice beyond all possible revisions, and its constant reiteration of "through Jesus Christ our Lord" Grows more and more unbearable its essential falsehood as more people realise that what is true in the Prayer Book would be equally true if Jesus had never existed, and that his martyrdom does not relieve us of a jot of our responsibility for our sins. For instance, though a thief can redeem himself becoming honest, until he does so he remains none the less a thief, and damned one at that, though Jesus had died a thousand times Jesus never said "Sin as much as you like". My blood will wash it off", he said "Sin no more". The Prayer Book, by incessantly holding him up as a scape goat, discredits him and undoes the Civilising Value of the Church". P. 359

The best brain among our Church dignitaries has given it to us in writing that if the Thirtynine Articles (the subject of the lie) were taken seriously the Church would be staffed exclusively by fools, bigots and liars. Until we have a Church and a Government righteous enough and strong enough to

discard the Articles, rewrite the Prayer Book, and put the Bible in its proper place, we shall not get our Civilisation out of the murderous mess in which it is at present staggering".

(Everybody's political "What's What" by Bernard Shaw
Published by Constable and Company Ltd., London 1944).

Beranard Shaw wrote thus in the "Adventures of the Black Girl in her search for God"

The Bible's notions of starry Universe are childish, its history is legendary, it is the Bible educated human who is now the ignoramus If you doubt it, try to pass any practical employment by giving Bible answers to the Examiner's Questions. You will be fortunate if you are merely plucked and not certified as a lunatic. Throughout the whole range of Science, which the Bible was formerly supposed to cover with an infallible authority, it is now hopelessly superseded".

(Adventures of the Black Girl in her Search for God by Bernard Shaw Introduction. P. 68).

Nietzsche a distinguished German Philosopher wrote about Christianity in "Anti Christ" .

I call Christianity the one Great Curse, the one enormous and innermost perversion the one great instinct of revenge, for which no meat are too venomous, too underhand, too underground and too petty—I call it the one immortal blemish of mankind "

(Quoted here from "The Pocket Book of Quotations" Edited by Henry Davidoff, published by :—
Pocket Books Inc. New York 1942, P. 35).

The Tragedy of Modern Times

By :—J. EDGAR HOOVER

Mr. J Edgar Hoover, till recently Director of the U. S Federal Bureau of Investigation, the world's most powerful federal investigating agency, is a man who has seen much more than an ordinary man's share of violence and intrigue. Here he outlines the cause, the effect and the cure.

The modern age has achieved miracles—jet planes thunder through the sky at hundreds of miles an hour, rockets are probing the outer recesses of space, and energy of the atom is being harnessed by the human mind. Twentieth century man is the beneficiary of a world so marvellous, staggering, and overwhelming that it would have been unbelievable just 50 years ago.

If man's needs could be measured in terms of physical well-being alone, modern-day civilisation might be characterised as successful. Unfortunately, this is not true. Man does not live by bread alone He has much deeper needs He is, more than a physical creature with bones and flesh ; he has spiritual needs which must be filled.

A spiritual underpinning of life—this is today the crying need of society. Everywhere, in all walks of life, we see giant fissures of immorality, criminal deeds, and evil temptations. Men are committing acts which are wrong, bringing shame upon themselves, their families, and their friends. These are men of little faith men who trust their own abilities not the guidance of a Supreme Being.

"Our Empires"

Time after time, in my 38 years as Director of the Federal Bureau of Investigation I have seen men and women disregard law and order They sought, through force and violence, to create their own empires.

Murder, kidnapping, extortion, and burglary—these were their weapons of attack ; the gun, blackjack, and knife, their tools of operation.

They were thinking only of themselves, how they coud at least temporarily, satisfy their own physical desires.

Too often in this age of hurry and bustle, we all are inclined to press forward the selfish "I." The vast, over-all panorama of society, of God's great creation, becomes distorted. We become, as it were

विजयदशमी और दीपावली के सम्बन्ध में एक भ्रांत धारणा

[श्री पं० राजेन्द्र जी अतरौली]

विजयदशमी और दीपावली जैसे प्राचीन आर्य पर्व भी पौराणिक हिन्दू सम्प्रदायों के कुप्रभावों से अन्य पर्वों की भांति न बच सके और कालांतर में उनका कुछ से कुछ रूप हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने पर्व पद्धति आर्य समाज के पथ-प्रदर्शन के लिए निर्धारित और प्रकाशित की है। पद्धति के लेखक ने इसमें पद्धति के साथ साथ इन पर्वों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व पर भी प्रकाश डाला है। विजयदशमी पर इसमें जो ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है उससे स्पष्ट है कि इस पर्व का रावण-वध से कोई सम्बन्ध नहीं है— जैसी कि वैष्णव सम्प्रदायों ने हिन्दुओं में भ्रांति आजकल फैला रखी है। इस अवसर पर खेले जाने वाले रामलीला नाटक और विजयदशमी के दिन रावण का पुतला बनाकर उसे जलाने से

---

tiny islands, thinking—far too exclusively—of their own tasks, needs and ambitions.

Modern man, in many instances. has attempted to push G)d aside to ignore and even scorn Him, and to usurp His authority. This is the tragedy of modern civilisation : the principles of religion, the teaching of the holy saints and the supremacy of God have been disregarded.

Our job as dedicated citizens is to return to God, to pay homage to Him, and underpin our great civilisation with spiritual strength.

Strength & Weakness

Throughout many year of active life and the observation of many kinds of people, I have found that the wisest, strongest and most reliable man is also the first to admit his inadequacy. Contradictory though it may sound, he is strong because he is humble and remembers always that man is the creation of God.

When man leans on his own judgement alone, when he lives by his own strength, when he boasts of probing the mysteries of the atom, the depths of the sea or the secrets of Space, then he forgets God and claims he is his own master. The resultis untold suffering for man and for nations.

Even though one's position is maintained, even though material wealth increases, success quickly turns to failure when God is forgotten. There is no force of mind, no personal satisfaction, no experience of inward joy.

Tribune 20-12-64

—

तो यह भ्रांति सर्वसाधारण में और भी बद्धमूल हो गई है।

दुर्भाग्य यह है कि कभी-कभी आर्य पत्र-पत्रिकाओं में भी ऐसे परस्पर विरोधी लेख प्रकाशित होते रहते हैं जिनसे विजयदशमी को रावण वध से सम्बद्ध बताया जाता है। आज आर्य समाज पौराणिक हिन्दू परम्पराओं के प्रभावों में बहा जा रहा है। वह शनैः शनैः एक हिन्दू सम्प्रदाय का रूप धारण करने और अपने अस्तित्व को समन्वय तथा सहिष्णुता की वेदी पर बलिदान करने को अग्रसर है। क्या हमारे कर्णधार इस ओर सजग होकर उसकी रक्षा करेंगे?

आर्य पर्व पद्धति में विजय दशमी और दीपावली के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। अभी एक लेख श्री बाबूलाल जी, भूतपूर्व संचालक शिक्षा विभाग, मध्य भारत का टंकारा पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। उक्त विद्वान् लेखक ने वाल्मीकीय रामायण का गहन अध्ययन किया है। उसी के आधार पर अनेक प्रमाण प्रस्तुत करके उन्होंने सिद्ध किया है कि विजयदशमी और दीपावली का रावण वध और रामाभिषेक से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। उसे ही यहां संक्षिप्त में प्रस्तुत किया जा रहा है!

राजा दशरथ ने चैत्र मास में राम के राज्याभिषेक करने का निश्चय किया।

"चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्पताम्।।
अयोध्या कां० श्लो० २५

अर्थात् शोभा वाला चैत्र मास फूले हुए वनों वाला है। राम के यौवराज्य के लिए सब सामग्री इकट्ठी की जाय।

परन्तु कैकेयी के दुराग्रह के कारण राम को चौदह वर्ष के लिए वन जाना पड़ा। राम ने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करके उसी दिन वन जाने का निश्चय किया और पिता के आग्रह करने पर भी उन्होंने एकरात भी न रुकने की क्षमा चाही। (अयो० कां० सर्ग ३८ श्लो० ३३, ३८, ४०) रामके वनगमनके पश्चात् भरत उनके पास चित्रकूट गये और अयोध्या लौटने का आग्रह किया। उसे अस्वीकार करने पर भरत ने राम से कहा कि चौदह वर्ष तक आपकी प्रतीक्षा करूंगा। चौदह वर्ष के अन्तिम दिन समाप्त होने पर यदि आपको नहीं देखूंगा तो अग्नि में प्रवेश करके जीवित ही जल मरूंगा। राम ने इसे स्वीकार कर लिया। (अयो० कां० सर्ग ११२ श्लो० १३–२६)

वनवास के तेरहवें वर्ष की समाप्ति पर रावण ने सीता हरण किया और सीता को खोजते हुए उनकी सुग्रीव, हनुमानादि से भेंट हुई। बालिवध और सुग्रीव के राज्याभिषेक के पश्चात् श्रावण से कार्तिक तक वर्षा ऋतु की समाप्ति की प्रतीक्षा की गई। तत्पश्चात् हनुमान सीता की खोज करने लंका गये। किष्कंधा कां० १ सर्ग श्लो० २७, २९, ५७, ६१ से यह भी सिद्ध है कि सीता-हरण हेमन्त ऋतु के अन्त में हुआ अथवा वसंत ऋतु के प्रारम्भ में ही हुआ।

सीता हरण के पश्चात् रावण ने सीता को अपनी कामवासना तृप्तिमें बाधक पाया तो उसने कहा—हे मैथिली! मेरी बात सुन, बारह मास के समय में, हे सुन्दरी यदि तू मुझे नहीं चाहेगी तो मेरे रसोइये मेरे प्रातराश के लिये टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। इस प्रकार वनवास के चौदहवें वर्ष में वर्षा की समाप्ति पर सीता की खोज प्रारम्भ हुई और हनुमान जब सीता से लंका में मिले उस समय रावण द्वारा सीता को दिये गये एक वर्ष की अवधि में दो मास शेष थे और दशमास व्यतीत हो चुके थे।

रावण ने सीता से कहा जो समय मैंने तुझे

दिया था उसमें अब केवल दो मास शेष हैं, उसके पश्चात् तुझे मेरी शय्या पर सोना होगा। अन्यथा मेरे रसोइये तेरे टुकड़े करके मेरा प्रातराश बना देंगे।(सुन्दर कां०सर्ग २२, श्लो०८-९) सीता ने हनुमान से कहा कि राम से कहो कि शीघ्रता करें। जब तक यह वर्ष समाप्त नहीं होता मेरा जीवन है। यह दसवां मास चल रहा है। केवल दो मास शेष हैं -जो दुर्जन रावण ने मेरी अवधि नियत की है। सुन्दर कां० सर्ग ३७ श्लो० ७-८)

हनुमान ने लंका से लौटकर यह सब वृतान्त राम को सुना दिया। राम ने कहा कि यदि सीता एक मास तक और जीवित रही तो वीरो! वह चिरकाल तक जीवित रहेगी (सुन्दर कां० सर्ग ६६२ श्लोक १०)। तत्पश्चात् राम ने लंका पर आक्रमण किया और रावण से युद्ध किया। जब मेघनाद युद्ध में मारा गया तो रावण को बड़ा क्रोध आया और वह सीता को मारने के लिये उद्यत हो गया परन्तु उसके मन्त्री सुपार्श्व ने ऐसा न करने का परमर्श देते हुए उससे कहा :—

अभ्युत्थानं त्वमद्यैव कृष्णपक्ष चतुर्दशी।
कृत्वा निर्याह्यमावस्यां विजयाय बलैर्वृतः॥
शूरो धीमान् रथी खड्गी रथप्रवरमस्थितः।
हत्वा दाशरथिं रामं भवान् प्राप्स्यति मैथिलीम्॥

(लंका कां० सर्ग ९२ श्लो० ६७, ६३)

अर्थात् आज कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी है, आज तैयारी करके कल अमावस्यामें सेना सहित विजय हेतु चढ़ाई कर। आप दशरथ पुत्र रावण को मारकर सीता को प्राप्त करलें। इससे स्पष्ट है कि रावण और राम का अन्तिम युद्ध अमावस्या को हुआ और रावण मारा गया।

युद्ध की समाप्ति पर विभीषण ने राम से प्रार्थना की आप कुछ दिन यहां ठहरें। किन्तु राम ने इसे अस्वीकार करते हुए कहा कि भरत से मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि चौदह वर्ष समाप्त होने पर अयोध्या लौट आऊंगा। अतः तुम पुष्पक विमान अभी मंगाओ। मैं रुक नहीं सकता और राम ने लक्ष्मण और सीता सहित अयोध्या को तुरन्त प्रस्थान किया। जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है। राम का राज्याभिषेक न होकर वनगमन चैत्र मास में हुआ था। अतएव चौदह वर्ष की समाप्ति इसी चैत्र मास में हो रही थी और भरत और राम दोनों की परस्पर प्रतिज्ञानुसार राम को इस अवधि में ही अयोध्या लौटना था। इससे यह स्पष्ट है कि रावण वध की अमावस्या चैत्र मास की ही थी अन्य नहीं। विभीषण का उपर्युक्त आग्रह और राम द्वारा उसकी अस्वीकृति इसकी सम्पुष्टि करता है कि चैत्र मास की समाप्ति को दृष्टि में रखते हुए उन्होंने वायुयान द्वारा अयोध्या लौटनेकी शीघ्रता की। इन समस्त प्रमाणों से जो राम की अधिकृत जीवनी वाल्मीकीय रामायण के हैं, यह निर्विवाद रूप से सिद्ध है कि रावणवध की तिथि विजयदशमी आश्विन मास न होकर चैत्र की अमावस्या है। यह सिद्ध हो जाने पर कार्तिकीय दीपावली का राम के वन से लौटने अथवा राज्याभिषेक का दिवस मनाने का कोई आधार ही नहीं रहता। राम की समस्त जीवन गाथाओं का आधार वाल्मीकीय रामायण है. इसमें किसी का विवाद नहीं हो सकता, तब अन्य ग्रन्थों की उसके विरुद्ध कल्पित गाथाओं और किंवदंतियों का क्या मूल्य? परन्तु यह सब होते हुए भी दुःख इस बात का है कि हमारे आर्य लेखक इन पौराणिक मिथ्या ग्रन्थों के आधार पर अब भी विजय दशमी को ही रावणवध की तिथि मान रहे हैं और 'हरिभक्ति' विलास जैसे कल्पित ग्रन्थों पर विश्वास करके उसके प्रमाण अपनी सम्पुष्टि में देते हैं।

वाल्मीकीय रामायणसे इस विजयदशमी की राम से पूर्व प्रचलित पर्व परम्परा का एक अन्य

(शेष पृष्ठ २९ पर)

क्या महर्षि दयानन्द आक्रामक थे ?

लेखकः—
श्री जगदीश प्रसाद सिन्हा,
आर्य सिद्धान्त रत्न,

+

श्री रामनाथ "सुमन" हिन्दी साहित्य के माने-जाने लेखक हैं। आपके विचार काफी सुलझे एवं प्रौढ़ होते हैं। आप गांधीवाद के मर्मज्ञ हैं। आज से लगभग १८-१९ वर्ष पूर्व मुझे लेखक की पुस्तक "गांधीवाद की रूपरेखा" पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था। मैं उस पुस्तक से बहुत ही प्रभावित हुआ। मैं मन ही मन लेखक के प्रति श्रद्धा का भाव रखने लगा और भी उनके कई फुटकर निबन्धों को पढ़ा है। सदा कुछ न कुछ प्रेरणा मिलती रही है। इधर लगभग एक वर्ष पूर्व लेखक की एक पुस्तक "जीवन यज्ञ" बड़े ही संयोग से हाथ लगी। पुस्तक एक बनिये की दुकान में रद्दी कागजों के बण्डल में पड़ी हुई थी। रद्दी कागजों के नाम पर उसने इस पुस्तक को भी खरीद लिया था। मेरी दृष्टि लेखक के नाम पर पड़ी और दुकानदार से मैंने उस पुस्तक को ले लिया। पुस्तक को यत्र-तत्र पढ़ा, बहुत ही सुन्दर लगा। पुस्तक खोलते ही लेखक का निवेदन पढ़ने को मिला। उसे मैं अक्षरशः दे रहा हूं।

"विरोध और खण्डन करने के लिए इसे मत पढ़ो, न इस पर विश्वास करके ज्यों का त्यों मान लेने के लिए इसे पढ़ो, विवाद के लिए भी इसे मत पढ़ो, केवल तोलने और गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए इसे पढ़ो।" इस पुस्तक में २१ निबन्ध हैं। १९५३ में साधना सदन, लूकरगंज, इलाहाबाद से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का अन्तिम निबन्ध "भारतीय संस्कृति के कुछ आधुनिक भारतीय उन्नायक" एक सप्ताह पूर्व पढ़ा। महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में लेखक के कुछ विचार पढ़ कर मुझे बहुत धक्का लगा। जो विचार प्रकट किया गया है उसमें कतिपय अंश सत्य से बहुत दूर तथा महर्षि के चित्र को विकृत कर देता है। नवीन पाठक जो स्वामी जी को नहीं जानते हैं, वे महर्षि को कुछ का कुछ समझ जायेंगे। आपत्तिपूर्ण स्थल ये हैं:—

'दयानन्द ने इसके विरुद्ध भारतीय संस्कृति के आक्रामक रूप को रखा। उन्होंने न केवल वैदिक विचारधारा का प्रचलित अर्थ से भिन्न एक अर्थ किया और उसे अन्य सब विचार धाराओं, सभ्यताओं, धर्मों और संस्कृतियों पर प्रधानता दी बल्कि अन्य सब प्रचलित मतों के खण्डन में भी विशेष उत्साह प्रदर्शित किया।"

पाठकों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए मैं उस अंश को भी लिख रहा हूं जिसका सम्बन्ध ऊपर के वाक्य से है। दयानन्द से पूर्व लेखक "थियोसोफी" पर लिखता है:—

"थियोसफी भी प्राचीन भारतीय संस्कृति की मूल प्रेरणाओं को लेकर अन्य धर्मों के प्रति सामंजस्य रखने की भावना की एक प्रवृत्ति के रूप में आई। सर्व-धर्म समभाव तथा धार्मिक सहिष्णुता का भाव बढ़ाने में इसने बड़ा काम किया। वह खण्डन की अपेक्षा प्रत्येक धर्म से श्रेष्ठ तत्व ग्रहण करने की प्रवृत्ति लाने में सहायक हुई। उपनिषद् के विचारों को लेकर उनको आधुनिक जीवन में जोड़ने की चेष्टा की। सब धर्मों का मूल तत्व तथा प्रवाह एक ही दिशा में है, यह भी उसने प्रतिपादन किया।" इससे लेखक ने स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों से अधिक महत्त्व 'थियोसफी' के सिद्धान्तों को दिखलाया है। दयानन्द के सिद्धान्त (जो वास्तविक मे पूर्ण वैदिक है) को हेय दिखलाने का प्रयास किया है।

दूसरा आपत्तिपूर्ण स्थल यह है:-आर्य समाज के दस नियमों के सम्बन्ध में वे लिखते हैं कि उनमें कहीं सनातन हिन्दू धर्म के विरुद्ध कोई बात नहीं है। "फिर भी आर्य समाज सनातन परम्परा से भिन्न अस्तित्व रखता है।" दयानन्द का मुख्य कार्य शिथिल हिन्दू संस्कृति को,जो दब्बू हो रही थी,आक्रामक और ओजस्वी बनाना था। "भारतीय जीवन में उनके आर्य समाज के कारण कई समस्याएं और कठिनाइयां भी पैदा हुईं।"

आश्चर्य है, सुमन जी जैसे विद्वान् एवं विचारक दयानन्द और आर्य समाज के सम्बन्ध में गलत धारणा रखते है। उन्हें न तो स्वामी जी के कार्यों से और न ही आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिचय है। हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने स्वामी दयानन्द के प्रति घोर उपेक्षा की भावना प्रकट की है। स्वयं गांधी जी ने १९२१ में 'नवजीवन" और "यंग इण्डिया" में दयानन्द एवं सत्यार्थ प्रकाश पर कीचड़ उछाला था। रामनाथ सुमन जी ने उस कड़ी में अपने को भी जोड़ा है।

स्वामी दयानन्द को अगर इसलिए आक्रामक कहा जाता हो कि उन्होंने वेद विरुद्ध मतों का खण्डन किया तो मैं लेखक से या उन महानुभावों से पूछना चाहता हूं जो ऐसा विचार रखने हों कि, क्या स्वामी दयानन्द के पूर्व किसी ने दूसरे मत का खण्डन नहीं किया था? क्या आचार्य शंकर ने बौद्ध, जैन एवं वाममार्ग का खण्डन नहीं किया? क्या वे आक्रामक कहे जाते हैं? क्या आचार्य रामानुज ने शंकर मत का खण्डन नहीं किया? क्या माधव ने आचार्य रामानुज के सिद्धान्त की धज्जियां नहीं उड़ाईं? क्या उन्हे आक्रामक कहा जायगा? क्या कबीर ने प्रचलित पाखण्डों का खण्डन नहीं किया है। उपनिषत् काल में [illegible] की सभा में महर्षि याज्ञवल्क्य के विचारों का खण्डन अश्वल और गार्गी ने नहीं किया था? भारतीय संस्कृति का इतिहास देखा जाय तो हमेशा से खण्डन-मण्डन होता आया है? स्वयं लेखक ने ही गांधीवाद की रूप रेखा में समाजवाद का खण्डन नहीं किया है? क्या वे स्वयं अपने को आक्रामक की स्थिति में रखते है? सच बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द के विचारों को न सहन कर ये लोग अनाप-शनाप बकने लगते हैं। स्वामीजी के ग्रन्थों को देखा जाय तो खण्डन ग्रन्थों की संख्या मण्डनात्मक ग्रन्थों की अपेक्षा कम है। स्वामीजीने एक कुशल शल्य चिकित्सक का काम किया है। समाज एवं राष्ट्र रूपी शरीर में अनेकों व्रण हो गये थे, जिनसे सारा राष्ट्र ही सड़ रहा था। उन्होंने तर्क के तेज अस्त्र से चीर फाड़ की। इसमें उनकी नेक नियत ही काम कर रही है। डाक्टर रोगी का अहित नहीं चाहता। फिर इस पर दूसरी दृष्टि से भी विचार करें। स्वामी जी ने हिन्दू समाज की जो स्थिति देखी वह दयनीय थी। विरोधी हिन्दू धर्म पर आक्रमण कर रहे थे। उसकी दुर्बल दीवारों पर

विधर्मियों के आक्रमण तीव्र हो रहे थे। सुधारक लोग उन जर्जर दीवारों के भग्न स्थानों की मरम्मत ही केवल करते थे। विरोधियों के हमले का जवाब देने की न शक्ति थी, न सूझ। अपनी रक्षात्मक कार्यवाही भी ठीक से नहीं कर पा रहे थे। दयानन्द ने इस स्थितिको देखा। उन्होंने उन जर्जर खोखली दीवारों को गिरा दिया। मजबूत ईंटों से दीवार बनाना आरम्भ किया। विरोधियों को खुले मैदान में ललकारने योग्य बनाया। हिन्दू राष्ट्र को ओजस्वी बनाया। क्या इससे उन्हें आक्रामक कहा जायगा। स्वामी दयानन्द केवल सुधारक ही नहीं थे। उनकी हिन्दी सेवा, गोरक्षा का प्रयत्न, राष्ट्र-भक्ति, स्वराज्य के लिए बेचैनी इन सभी कार्यों को लेखक ने ओझल कर दिया है। वेदों का हिन्दी में भाष्य करके उन्होंने हिंदी साहित्य की महती सेवा की है। राष्ट्र भाषा हिंदी हो और वह देवनागरी लिपि में लिखी जाय। इसके लिए मेमोरेण्डम भिजवाना उन्हीं का काम था। राष्ट्र निर्माण से पहले व्यक्ति का निर्माण होना चाहिये, इसके लिए उन्होंने संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु आदि ग्रन्थों को लिखा। यह उनका विधायक पक्ष है। लेखक ने इस पर कुछ भी प्रकाश नहीं डाला है। सत्यार्थप्रकाश के दश अध्याय विधायक हैं केवल चार ही अध्याय खण्डनात्मक हैं।

आर्य समाज जो सनातन परम्परा है, वर्तमान सनातन धर्म से मिल नहीं जाती है। बल्कि सनातन परम्परा के नाम पर जो अवैदिक परम्परा कायम है, उसका विरोध किया है। वेद सनातन हैं। उसके सिद्धान्त सनातन हैं। जो भी सिद्धांत वेद के सिद्धांत से भिन्न हैं चाहे वह कितना आकर्षक क्यों न हो, वह त्याज्य है। आर्य समाज का मूलाधार वेद है। वेद उसके लिए स्वतः प्रमाण है। अन्य ग्रन्थ वेदानुकूल होने से ही मान्य हैं चूंकि वेद सनातन हैं इस लिए आर्यसमाज का सिद्धान्त (जो कोई नहीं है) ही सनातन सिद्धांत है। लेखक ने आर्यसमाज के सम्बन्ध में ऐसा लिखकर अपनी अज्ञता का ही परिचय दिया है। आर्यसमाज के चलते भारतीय जीवन में कई नई समस्याएं एवं कठिनाइयां पैदा हुईं ऐसा सुमन जी लिखते हैं। परन्तु एक भी उदाहरण नहीं दिया है। पर मैं दावे के साथ कहता हूं आर्यसमाज ने देश की प्रायः सभी समस्याओं को सुलझाया है। दलितोद्धार, नारी शिक्षा मद्य-निषेध, स्वदेशी के प्रति प्रेम, हिंदी राष्ट्र भाषा हो, आदि कई प्रश्न हैं जिनका समाधान का रास्ता सबसे प्रथम आर्य समाज ने ही देश को दिया और आज के नेता उसी मार्ग को अपना रहे हैं। स्व० पं० जवाहरलाल नेहरू, स्व० राजेन्द्र प्रसाद, श्री पटेल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द आदि भारतीय नेताओं ने आर्य समाज के इन कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

श्री सुमन जी को यह भी पता नहीं है कि स्वामी दयानन्द के पिता का नाम क्या है? खोजों से यह प्रमाणित हो गया है कि उनके पिता का नाम कर्षनलाल जी तिवाड़ी था न कि अम्बाशंकर जी।

बात ऐसी है कि भारत के १९ वीं सदी की चर्चा करते समय स्वामी दयानन्द को छोड़कर आगे बढ़ा नहीं जा सकता। अगर इन लोगों का वश चले तो स्वामी जी का नाम भी मिटा देते। पर ये करें क्या स्वामी जी की चर्चा किये बिना १९ वीं सदी का वर्णन पूरा नहीं हो सकता। अतः ये लोग विवश होकर उनकी चर्चा तो करते हैं परन्तु बहुत ही संक्षेप में और वह भी गलत ढंग से।

—०—

मनुष्य जीवन का उद्देश्य

(श्री स्वामी गंगागिरि जी, रायकोट लुधियाना)

मनुष्य जीवन के लिए ब्रह्मचर्य पूर्वक वेद का पढ़ना आवश्यक है। वेद का पढ़ना और स्वाध्याय के बन्द हो जाने से वाजपेय विद्या जो ब्रह्मचर्य का आधार थी, जिससे मनुष्य ज्ञान योग को प्राप्त करके शांति लाभ करते थे। वैदिक स्वाध्याय के न होने से विमर्ष की प्रणाली का इस युग में बहुत लोप हो गया जब से लोगों ने वेद के शब्दों पर विचार करना छोड़ दिया, तब से उनके विचार रूढ़ियों के मुंहताज हो गये। जिस देश में निरुक्त का अध्ययन रहता है वहां विचारों की पराधीनता नहीं आ सकती। जब हम शब्द के मूल स्वरूप को देखते हैं तो हमारी कल्पना तुरन्त व्यापक रूप धारण कर लेती है। उदाहरण के लिए वैदिक 'वृष' शब्द को लीजिए। मूल शब्द वर्षण क्रिया का भाव है, जहां सृष्टि में वृष्टि कर्म पाया जाता है, वही 'वृष' धातु किसी न किसी रूप में जा सकती है।

'वर्षण, रेतसि, निषिञ्चन'' आदि कर्म सब 'वृष' धातु किसी न किसी रूप में सम्बन्धित हैं। मूल में यही अवस्था थी, इसीलिए वृष' के अर्थ भी अनेक हैं। जिन पदार्थों में वर्षण सामर्थ्य प्रचुर मात्रा में पाया जाये वहीं 'वृष' शब्द का प्रयोग होने लगा, उसके अर्थ वीर्य सम्पन्न पुरुष के हैं। बैल को भी 'वृष' कहते हैं। इसी तरह काम मेघ इनकी भी 'वृष' संज्ञा हुई परन्तु कालान्तर में वृष' बैल के लिए रूढ़ हो गया। अब वैदिक काल से सहस्रों वर्ष दूर पड़े हुए हम लोग 'वृष' शब्द सुनते हैं तो हमारे मन में बैल का ध्यान आता है। कुछ विद्वान् शब्द शास्त्र और भाषा विज्ञान की खोज तो करते हैं, परन्तु वैदिक अर्थों में उससे लाभ नहीं उठाते। वे सारे शब्द गत अर्थ के विकास को भूल जाते हैं 'वृष' शब्द का जो अर्थ वेद के समय में उपलब्ध होता है उसकी उपेक्षा करके आधुनिक शब्दों में बैठ 'बैल' रूप लौकिक अर्थ को लेते हैं।

यही कारण है कि-पश्चिमी प्रख्यात वैदिक पंडितों ने भी इन्द्र के लिये "वृषभो रोरवीति" पद का अर्थ लगाया है-इन्द्र बहुत रंभाने वाला बैल है। वैदिक पंडित की ऐतिहासिक भूल शायद इतनी दूसरी न हो। इसी प्रकार अन्य वैदिक शब्दों का विस्मरण हो रहा है। न हम ब्राह्मण ग्रन्थों को देखते हैं और न उसके प्रतिपादित अर्थ का ध्यान करते हैं। न वैदिक मन्त्रों की तुलना करते हैं और न कभी हम सोचते हैं कि अमुक शब्दों के जो लोक रूढ़ अर्थ हमने मान लिए हैं उनके अतिरिक्त और भी कुछ अर्थ हो सकते हैं या नहीं। वैदिक शब्द वाजपेय को लीजिए. वाज को एक पेय पदार्थ कहा है यह क्या चीज है? कैसे वाज पिया जाता है? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर देना वाजपेय विद्या के रहस्य को समझने के लिए आवश्यक है। वस्तुतः पूर्व काल में वाजपेयी परिवार या गोत्र वे ही थे जिनके पूर्वजों में वाज विद्या के महत्त्व को आविष्कृत किया था और जिनमें वाज पाने के रहस्य और विधियाँ परम्परा से लोग बराबर जानते आते हैं। प्रत्येक देश में वाजपेयी होते थे। जिस समाज में वाज' पीने के कर्म को जानने व युवकों को बताने वाले पुरुषों का अभाव हो जाता है उस समाज में निर्बलता आ जाती है। वहीं ब्रह्मचर्य का अभाव हो जाता है। ऐसा ही इस समय भारत वर्ष में हो रहा है क्योंकि 'वाजपेय' के रहस्य को जानने वालों का यहां

अभाव हो गया है। इसीलिए यहां किशोर अवस्था को प्राप्त युवा निस्तेज होते जाते हैं। क्योंकि उचित समय पर उन्हें 'वाज' वीर्य या शक्ति को भीतर ही भीतर पान करने की शिक्षा देने वाला कोई नहीं है। न माता न पिता, न आचार्य और ना ही योग्य पुरोहित रहे हैं। न योग्य शिक्षक ही रहे हैं जो वाजपान की शिक्षा देवें। न ही वैद्य इस विधि को नवयुवकों को बताते हैं। आयुर्वेद का प्रमुख सिद्धान्त है कि रोग दूर करने को अपेक्षा उसे पास न आने देना ही उत्तम है।

आयुर्वेद में जिस 'वाजीकरण' की चर्चा है वह उनके लिए हैं जो शक्ति को नाश कर चुके हैं। 'वाजीकरण' सुश्रुत के अन्दर आठवां तन्त्र है। जहां 'वाज' नहीं रहता वहां 'वाज' को पुनः पैदा करना 'वाजीकरण' है। व्याकरण जानने वाले, "अभूततद्भावेच्विः" के अर्थ को जानते हैं। जहां 'वाज' नहीं रहा वहां औषधियों द्वारा वाज को पैदा करना, उसको 'वाजीकरण' कहते हैं। जो औषधि पाक और रस में सहायक होते हैं वे सब 'वाजीकरण प्रयोग कहलाते हैं। वाज, वृष, काम का घनिष्ट सम्बन्ध है। 'वाज' का अर्थ है स्फूर्तिमय, वेग शक्ति, प्राण, वीर्य आदि। 'व्रज' धातु का अक्षर विपर्यय से 'जव' हो जाता है। 'जव का अर्थ भी वेग है।

लोग घोड़े को 'वाजीकरण' कहते हैं। क्योंकि उसमें बल और वेग है। चिड़ियों के पंख को तथा तीर को भी 'वाज' कहते हैं क्योंकि इन दोनो में भी स्फूर्ति पाई जाती है जैसे 'वृष' या 'वृषभ' शब्द बैल के लिए रूढ़ हो गया है वैसे ही 'वाजी' घोड़े के अर्थ में रूढ़ हो गया है। यहां भी योरोपीय विद्वान् इन्द्र को बैल बताने कीसी भूल करते हैं! उषा सूक्त में पहले ही यों कहा है:—"उषा वाजेन वाजिनी" अर्थात् उषा वाज से वाजिनी है। इसका अंग्रेज पंडितों ने अर्थ किया है=“उषा तेज घोड़ों वाली है।" यहां उषा को वाजिनी वाली कहा है वहां अर्थ हो जाता है उषा तेज घोड़ियों वाली है। पर ऐसा कहने से पूर्व सोचना चाहिए 'वाजी' के और भी कुछ अर्थ होते हैं? क्या मूलतः 'वाजी' शब्द घोड़ों के लिए रूढ़ हो गया है? सत्य यह है—जिस ऋषि ने 'उषा' को वाज से वाजिनी वती कहा है उसने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व की ओर संकेत किया है। वह उषा के अन्दर भरा हुआ अमित प्राण है। सभी को वह प्राण जीवन देने वाला है। उषा के अन्दर इतना वाज है, इतनी प्राण शक्ति है और प्रेरणा है कि—सहस्रों लोग उसके आगमन से चैतन्य लाभ प्राप्त करते हैं। इसीलिए विश्व कवि ने उषा को सम्बोधित करते हुए कहा है—प्रेरणा देवि युवति पुरन्धि।" सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक कौन जानता है वह कितनी पुरानी है। उषा को आयु में वृद्धावस्था प्रतीत नहीं होती। वह सदा ही युवति रहती है। इसका कारण उसका प्रचेत होना है। वह हर समय जागती रहती है। तन्द्रा अस्वास्थ्य का लक्षण है और जागना स्वास्थ्य का चिह्न है अर्थात् सोते समय भी जो जागरूक रहता है वही सचमुच स्वस्थ है।

वेद भी इसी बात को बलपूर्वक मनुष्यों के कल्याण के लिए उपदेश देता है:—

"उषा वाजेन वाजिनी प्रचेता सोमें युवस्य गृणतो मघोनि" ऋ० ३।६१।१ अर्थात् हे अत्यन्त तेज वाली उषा! तुम वाज से वाजिनी हो क्योंकि तुम प्रचेत हो। इसलिए मैं जिस गीत को गाता हूँ तुम उसको सुनो। जो मनुष्य प्रचेत रहते हैं, जिनका मन ही जागता रहता है वे ही अपने किये हुए संकल्पों को पूरी तरह सुनते हैं। एक बार सुनकर फिर नहीं भूलते। तन्द्रा में भरे हुए मनुष्य दिन रात में न जाने कितने संकल्प करते हैं परन्तु अपनी कही हुई बात को नहीं सुनते।

क्योंकि वे अपने 'वाज' को खो चुके हैं। वाज के अन्दर सब प्रकार की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रेरणा और शक्ति आ जाती है। अध्यात्म वाजपेय उस कृत्य का नाम है जिसमें मनुष्य वाजपेय अपना कल्पित करता है किशोर अवस्था के आरम्भमें देह के भीतर एक विलक्षण प्रकार का रस बनने लगता है। इसी का नाम 'वीर्य' है। इसे ही 'वाज' कहते हैं। यथा वीर्यं वै वाजः" शतपथ। ३। ३। ४। ७ इसे भीतर ही भीतर पचाने का नाम 'वाजपेय' है प्रत्येक ब्रह्मचारी को वाजपेयी होना चाहिए। पिया हुआ वाज अमृत बनकर अमरत्व देता है। अर्थात् शरीर के प्रत्येक घटक कोष मे अमृत बहने लगता है वाजपेयी की चेतना असीम हो जाती है। शरीर के अन्दर जो भौतिक सामर्थ्य है वह सब अन्न से प्राप्त होता है। 'अन्नाद् रेतः रेतसः पुरुष। तै०। २ ब्रह्म १ यह क्रम उपनिषदों में भी आया है। इसलिए कितनी ही जगह अन्न को भी 'वाज' कहा जाता है। यथा—"अन्नं वै वाजः" शत ५ १ ४-३—"औषधं खलु वै वाजः" तै०—ब्रा०-१-४-७ १। इसी प्रकार व्यापक दृष्टि से अग्नि, वायु, सूर्य सोम, इन्द्र, ऋतु, पशु इनको भी वाजी कहा जाता है। वाजपेय यज्ञ में केन शुद्धि और मनुमति वाक्य की बड़ी आवश्यकता है। "रश्मयो वै वाजिनः" कौ—ब्रा० ५ २ आदि। इन सब इन्द्र पशु आदि में अपने अपने प्राकृतिक तेज से संरक्षण की सामर्थ्य है। इससे 'वाजी' कहे जा सकते हैं। केन नाम ज्ञान का या बुद्धि का है। 'कित ज्ञाने" धातु से 'केन' शब्द बना है।

मनुष्य जीवन की सफलता ज्ञान को और योग को प्राप्त करने से है। जिसका कारण ब्रह्मचर्य पूर्वक वेद का पढ़ना है।

(पृष्ठ ७३ का शेष)

प्रमाण मिलता है जिसे आर्य समाज भी स्वीकार करता है। वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर राम ने लक्ष्मण को सीता की खोज के लिए सुग्रीव को प्रेरित करने पम्पापुर भेजते हुए कहा :—

अन्योन्यबद्ध वैराणां जिगीषूणां नृपात्मज।
उद्योग-समयः सौम्य पार्थिवानामुपस्थितः॥

६०, किष्किंधा कां० सर्ग ३०।

अर्थात हे नृपात्मज! परस्पर वैरबद्ध जय के अभिलाषी राजाओं के उद्योग का समय उपस्थित हुआ है।

इससे यह सिद्ध होता है कि परस्पर वैरबद्ध राजा विजयदशमी के दिन युद्ध के लिए यात्रा करते थे और यह पर्व राम से पूर्व क्षत्रियों द्वारा इस रूप मे मनाया जाता था।

इसी प्रकार दीपावली का शारदीय नवसस्येष्टियज्ञ के अतिरिक्त वैश्य वर्ग द्वारा व्यापार के लिए विदेश गमन हो सकता है। विजयदशमी को निरीह पशुओं की लाखों की संख्या में देवी-देवताओं पर बलि और दीपावली की रात्रि लक्ष्मी आदि की मूर्ति पूजा और जुआ खेलने की प्रथा पौराणिक ग्रन्थों की देन है। उनका पुराणों मे धार्मिक महत्त्व है और स्पष्ट आदेश है।

गोरक्षा का महत्व

[श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती]

गौ हमारी संस्कृति का प्रतीक और आर्थिक व्यवस्था का मेरुदण्ड है। गोरक्षा का अभिप्राय है आर्य संस्कृति की रक्षा। इसीलिए भारत वासियों ने गौ को अपने परिवार का एक आवश्यक अंग मानकर उसको आदर और सम्मान का पद दिया और उसका सम्यक् पालन-पोषण और रक्षण समाज और राज्य का एक आवश्यक दायित्व ठहराया गया। भारतीयों ने इस दायित्व की प्राण-पण से रक्षा की और गौओं की रक्षा के पुनीत कार्य में अपने प्राणों की भी बलि चढ़ाने में आगा पीछा नहीं किया।

मुसलमानों और अंग्रेजों आदि विदेशियों के हाथ में राजनैतिक प्रभुत्व आ जाने पर गोवध को खुली छुट्टी दी गई। मुसलमानों ने मजहब के नाम पर कुर्बानी की आड़ में गोवध आवश्यक समझा। अंग्रेजों ने गौ के चमड़े, हड्डी, मांस आदि को व्यापार का साधन बनाया। गोमांस भक्षण तो उनके आहार का अंग रहा ही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्यों और हिन्दुओं को यह आशा थी कि गोहत्या का कलंक भारत के उज्ज्वल भाल से मिट जायगा। स्वयं महात्मा गान्धी स्वराज्य की लड़ाई और स्वराज्य व्यवस्था का एक प्रमुख ध्येय गोरक्षा प्रगट किया करते थे। परन्तु खेद है कि गोहत्या निषेध के लिए अभी तक केन्द्रीय सरकार कानून नहीं बना पाई। अवश्य कुछ राज्यों में व्यवस्था हुई है परन्तु वह बेमन से की गई है और उन कानूनों के प्रचलन में जान में या अनजान में बड़ी ढिलाई वर्त्ती जा रही है जिसके फलस्वरूप गोहत्या में उल्लेखनीय कमी नहीं हुई है। केन्द्रीय सरकार को और उन राज्यों को जहां अभी तक कानून नहीं बने हैं, अविलम्ब कानून बनाना चाहिए और सर्वत्र कानून का कड़ाई के साथ प्रचलन होना चाहिए।

गोवध को व्यापार का विषय बनाना वा बनाए रखना उचित नहीं है। चमड़ा, हड्डी एवं मांस के लिए गोवध पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है और इसके लिए बड़े २ नगरों में प्रतिदिन छोटे २ बछड़ों, बछडियों और जवान दुधारु गायों का सहस्रों की संख्या में वध होता है। यह स्थिति बड़ी शोचनीय है। इसका जितनी जल्दी अन्त हो उतना ही श्रेयस्कर है।

गोमांस स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकर है यह स्थापना आर्य चिकित्सकों की ही नहीं अपितु मुस्लिम चिकित्साशास्त्रियों की भी है। गोमांस भक्षियों को यह बात अंकित कर लेनी चाहिए।

गौ का दूध सर्व श्रेष्ठ पोषक तत्व है। गौ का गोबर बड़ा लाभप्रद खाद है। इसकी तुलना में चमड़े, हड्डी और मांस की आय नगण्य है। इस दृष्टि से भी गोवध घाटे का सौदा है।

कुर्बानी के लिए गोवध का किसी भी मुस्लिम धर्म्म ग्रन्थ में विधान नहीं बताया जाता अतः मुसलमानों की धार्मिक भावना की रक्षा का प्रश्न नहीं उठता

गाय की कुर्बानी हिन्दुओं की भावना को भड़काने के लिए निहित मान ली गई है यदि यह कह दिया जाय तो शायद इसमें अत्युक्ति न होगी। इसके कारण जो अशान्ति व्याप्त होती और उपद्रव होते हैं वे सर्व विदित हैं।

बहुत से अज्ञानी और स्वार्थी लोग गोहत्या को वेद प्रतिपादित मानते कहते और इस आधार पर गोहत्या के जारी रहने का औचित्य

आर्य समाज की शिक्षा का ध्येय

[श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय]

शिक्षा के विषय में आजकल बहुत कुछ ऊहापोह हो रही है। कुछ लोग शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य पर बल देते हैं। कुछ लोग उसे औद्योगिक रूप देना चाहते हैं। परन्तु हैं ये सब गर्म दल वाले एकान्तिक और एकांगी। वे भूल जाते हैं कि शिक्षा पूर्ण मनुष्य बनाने के लिए है। पूर्ण मनुष्य न तो हाड़ मांस का पुंज है न शरीर रहित जीव है। पूर्ण मनुष्य में तो हाड़ मांस से लेकर अहङ्कार युक्त आत्मा तक सभी सम्मिलित हैं।

जो शिक्षा रोटी के प्रश्न को त्याग देती है वह तो आरम्भिक भूल करती है परन्तु जो शिक्षा रोटी के प्रश्न तक ही सीमित रहती है वह भी न केवल अधूरी किन्तु भयानक है। आधुनिक

प्रतिपादित करते हैं। यज्ञों के लिए गोवध और प्राचीन काल में अतिथियों को गोमांस खिलाए जाने का वेद से प्रमाण देकर वे इस दुष्कृत्य का समर्थन करते हुए नहीं हिचकिचाते। परन्तु वेद में कहीं पर भी गोवध विहित नहीं माना गया है। वेद में स्थान २ पर गौ को अघ्न्या कहा गया है। अतः वेद में गोवध को प्रश्रय दिया जाना अशुद्ध एवं अचिन्त्य है।

भैंस गौ का काल बताई जाती है। यह बात ठीक है। भैंस का दूध सिवाय भारत के बाहर प्रायः कहीं पर भी प्रयोग में नहीं लाया जाता। वहाँ गोदुग्ध ही प्रयुक्त होता है जो अमृत है। अतः मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के योग-क्षेम के लिए गो दुग्ध और गो-घृत का ही अधिकाधिक प्रयोग होने से गोरक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा।

यह तथ्य है कि मुसल्मानों की अपेक्षा हिन्दुओं में मांस भक्षण का अधिक प्रचार है। हिन्दु लोग मांस भक्षण का परित्याग कर दें तो मांस के लिए गोहत्या बहुत कम हो जाय और गोरक्षा की समस्या स्वतः ही बहुत बड़ी सीमा तक हल हो जाय। इस पर प्रत्येक हिन्दू को गंभीरता-पूर्वक विचार करना चाहिए और मांसभक्षी हिन्दुओं को इस का परित्याग कर देना चाहिए।

गोपालन, गो संरक्षण और गोनस्ल सुधार की सबसे बड़ी उत्तरदायिता सरकार पर और हिन्दुओं पर है अतएव उन्हें क्रियात्मक उदाहरण प्रस्तुत करते रहना चाहिए। यदि आर्थिक विवशता के कारण वे ऐसा करने में असमर्थ हों तो मांसभक्षी हिन्दुओं को मांस न खाने और बूढ़ी एवं निरम्मी गायों को किसी भी मूल्य पर कसाई के हाथ न बेचने का प्रण करना चाहिए।

युग—द्रष्टा महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने गोरक्षा की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए ही गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना की थी। वस्तुतः वे प्रथम आचार्य है जिन्होंने गोकरुणानिधि पुस्तक लिखकर और गोहत्या के विरुद्ध उस समय के गण्य मान्य लोगों के हस्ताक्षर लेकर एक आन्दोलन का सूत्र पात किया।

गोरक्षा धार्मिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से आवश्यक और अनिवार्य है। इसका पूरा दिग्दर्शन हमें स्वामी जी महाराज की पुस्तक में मिलता है। सहसा दृष्टि में आ जाता है कि ७०० वर्ष पूर्व जिस देश मे कृषि और गौ की आय बराबर रही हो और प्रत्येक व्यक्ति को न्यूनातिन्यून ८० छटांक दूध मिलता रहा हो आज ८० बून्द भी असंभव हो रहा है।

—

पाश्चात्य भाषा का प्रयोग किया जाय तो हम कह सकते हैं कि मनुष्य में स्थूल शरीर है फिर इसके पश्चात् बात संस्थान है फिर इसके पश्चात् मस्तिष्क है और इसके पीछे मन या माइंड है। मस्तिष्क या माइंड के बीच कोई बड़ी दीवार नहीं है अतः जो शिक्षा हड्डियों और मांस पिंडों का विकास तो करती है परन्तु बात संस्थान या मस्तिष्क के विकास पर बल नहीं देती वह निरर्थक है। पाश्चात्य शिक्षा माइंड तक समाप्त हो जाती है। वे आगे बढ़ना नहीं चाहते। इस मनोवृत्ति ने पाश्चात्य देशों की उन्नति को एक विचित्र अधूरा रंग दे रखा है और संसार का वर्तमान अशान्ति पूर्ण वातावरण उसी का फल है। वे शरीर को पालते समय शरीरी को भूल जाते हैं। उनको देशों को बचाने की चिन्ता है देशवासियों को बचाने की नहीं। कारखानों की अधिक परवाह है कारखाने वालों की नहीं। इसी को तो भौतिक दृष्टिकोण कहते हैं। असली भौतिक वाद यही है। आज से ७० वर्ष पूर्व ड्रमंड ने क्या अच्छा कहा था –

The whole mistake of naturalism has been to interpret nature from the stand point of atom - to study the machinery which drives this great moving world simply as machinery forgetting that this ship has any passengers or the passengers any captain or the captain any Course. (The Ascent of Man by Henry Drummond page 12)

भौतिक वादियों का एक मात्र दोष यह है कि उन्होंने संसार को परमाणु की दृष्टि से देखा है। जो मशीन इस विशाल जगत् को चला रही है उसका उन्होंने केवल मशीन के रूप में अवलोकन किया है। वे भूल जाते हैं कि जहाज में कोई यात्री भी है या यात्रियों में कोई कप्तान भी है और उस कप्तान के सामने एक उद्देश्य भी है। (हेनरी ड्रमण्ड कृत मनुष्योत्थान, पृ० १२)

वैदिक भाषा में हम मनुष्य को अन्नमय कोष का एक समिश्रित पुंज कह सकते हैं। इसलिए वैदिक शिक्षा का आरम्भ अन्नमय कोष से होकर आनन्दमय कोष पर उसका अन्त होता है। हम रोटी को भूलते नहीं परन्तु उसको किसी बड़े उद्देश्य का साधन मानते हैं। जो साधन साध्य की प्राप्ति नहीं कराता वह दूषित और त्याज्य साधन है। उस मार्ग से क्या लाभ जो निर्दिष्ट स्थान पर न पहुँचा सके। जो लोग रोटी के पीछे रोटी के खाने वाले आत्मा की अवहेलना करते हैं उनको याद रखना चाहिए कि रोटी केवल खाई नहीं जाती वह खाने वाले को भी खा जाती है। इसीलिए तो भर्तृहरि ने कहा था :—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः

हमने रोटी नहीं खाई,रोटी ने हमको खा लिया।

आज पाश्चात्य देशों की ओर गम्भीर दृष्टि डालो। वहां रोटी पर इतना बल दिया जा रहा है कि रोटी देशों को खाए जा रही है। हमारे देश में भी रोटी ने हमको खाना आरम्भ कर दिया है। हमने लोगों में रोटी रोटी की दुहाई देकर उन पाशविक प्रवृत्तियों को उत्तेजित कर दिया है जिनके कारण न रोटी वालों को चैन है और न बिना रोटी वालों को। शिक्षा-विशारदों को इस बात पर अवश्य ही विचार करना चाहिए। ऐसा न हो कि रोग-नाश के उपाय रोगी का भी नाश कर दें।

सांस्कृतिक शिक्षा के गर्म दल वालों को भी एक बात नोट कर लेनी चाहिए। बृहदारण्यक हमको उस समय तक लाभ नहीं पहुँचा सकती जब तक हममें मैत्रेयी की वह स्प्रिट न हो जिससे प्रेरित होकर उसने कहा था :—

"येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्"

जिससे मुझे अमृत की प्राप्ति नहीं होती उसका मैं क्या करूंगी।

आर्यसमाज की शिक्षा के ध्येय में अन्नमय कोष से लेकर आनन्दमय कोष तक सभी का समावेश है। आर्यसमाज और गुरुकुलों को यही ध्येय सामने रखना चाहिए।

आर्य विश्वास के तीन बिन्दु

[आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री]

शतपथ ब्राह्मण में प्रार्थना रूप में निम्न वाक्य पाये जाते हैं—

असतो मा सद् गमय।
हे प्रभो मुझे असत् से सत् की ओर लेजा।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
तमस् से ज्योति की ओर ले जा।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।
मृत्यु से अमृत की ओर लेजा।

इन तीनों वाक्यों में जो अभिधेय वस्तु है वह बड़ी महत्वपूर्ण है। वस्तुतः तीनों ही वस्तुयें आर्यों के विश्वास के मुख्य बिन्दु हैं। आर्य इन तीनों को मानकर ही चलता है और ये ही आर्यत्व की भावना के मुख्य केन्द्र हैं। अनार्यत्व की भावना जहां असत्, तमस् और मृत्यु को आलिङ्गन करती है वहां आर्यत्व की भावना में सत्, ज्योतिः, और अमृत की प्रधानता है।

सत्-असत् का प्रयोग साधारणतः लोग सत्य और असत्य के अर्थ में किया करते हैं। परन्तु दार्शनिक संसार में सदसत् से भाव और अभाव अथवा अस्तित्व और अनस्तित्व अभिप्रेत हैं। सत्य कभी ऐसे रूप में नहीं रह सकता है कि जिसकी पृष्ठभूमि में अस्तित्व न हो। असत् की पृष्ठभूमि में अनस्तित्व है। अतः जब सत्य और असत्य का विचार किया जाता है तो यथार्थता और अयथार्थता को दृष्टि में रखा जाता है। यथार्थता बिना अर्थ के अस्तित्व के नहीं रह सकती है। अयथार्थता तो है ही वह जिसका कि अर्थ से विपरीत भाव हो। यद्यपि सत्य का भाव वाणी और मन की यथार्थता में समझा जाता है परन्तु यह किसी भी अवस्था में सत्ता को बिना लिए हुए नहीं रहता है। सत्य वही होता है जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के विपरीत न हो, जो सृष्टि नियम के विपरीत न हो, जो वेद के विरुद्ध न हो, प्रमाण प्रमेय व्यवहार पर जो आधारित हो और जो आत्मा के प्रतिकूल न हो। सत्य के इस व्यापक अर्थ को देखते हुए मनु ने कहा है कि वाणी को विपरीत करने वाला अर्थात् झूठ बोलने वाला सब पदार्थों का चोर है। मनु का कथन है कि वाणी में सब अर्थ निहित हैं, वेदवाणी रूपी मूल से ही वाणी निःसृत है। अतः झूठ बोलकर वाणी की चोरी करने वाला सर्व स्तेन अर्थात् सभी पदार्थों का चोर है।

वस्तुतः संसार में जागरूक एवं ज्ञान वाला वह है जो सत् और असत् का विवेक रखता है। सत्य और असत्य को भी सत् और असत् के विश्वास पर ही तौला जा सकता है। अतः इस ब्राह्मण वाक्य में यह बताया गया है कि प्रभो! मुझे असत्ता से हटा कर सत्ता का विश्वासी बना। सत्ता में विश्वास रखना आर्यत्व का एक मूल तत्व है। यह सत्ता ईश्वर, जीव प्रकृति—रूपों में है।

दूसरी बात आर्य-विश्वास बिन्दु की है ज्योति—प्रकाश अथवा ज्ञान। तमस् का आर्य सदा विरोधी है। वह अपने पास अज्ञान को फटकने नहीं देता है। ज्ञान का उसके साथ सदा सम्बन्ध है। अनार्य, राक्षस, निशाचर अन्धकार का प्रेमी है परन्तु आर्य सदा प्रकाश और ज्ञान का प्रेमी है। जिसमें यह भावना नहीं है वह आर्यत्व से च्युत होता जाता है। अन्धविश्वास, संशय, सन्देह आदि इस तामस भाव से ही आते हैं। अतः प्रार्थना के इस दूसरे वाक्य में कहा गया है कि 'प्रभो मुझे अन्धकार से प्रकाश

ईसाई गतिविधियां अराष्ट्रिय हैं

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् अनेकों समस्यायें जटिल रूप में उत्पन्न हुईं। इनमें बहुत-सी ऐसी भी रहीं और हैं कि जिनका निपटारा किये बिना किसी समय भारतीय स्वतन्त्र्य को भी संकट पड़ सकता है। ईसाइयों के प्रचार की जो गतिविधि वर्तमान में प्रबलता के साथ चल रही है वह सर्वथा ही अराष्ट्रिय है और देश के लिए खतरा है। इसका जहां धार्मिक पहलू है वहां राजनैतिक अञ्चल भी है। हम इसे धार्मिक प्रचार न समझें - इसमें अराष्ट्रियपना भरा पड़ा है।

ईसाई पादरी रुपये, वस्त्र, नौकरी स्वास्थ्य-सुविधाओं के प्रलोभनों और अपने विविध जाल फरेबों से भोले-भाले वन्यजाति के भाइयों आदि को ईसाई बनाते हैं। यह धर्मपरिवर्त्तन एक प्रकार का बल एवं छल से पूर्ण धर्मपरिवर्त्तन है। इसके अन्तरात्मा में अराष्ट्रिय भावनां पदे-पदे कार्य कर रही है। अपने देश के इन वन्य-प्रदेशों, सीमान्तों और नागालैण्ड आदि में जो गतिविधियां इन ईसाई पादरियों ने दिखलाई और उनका जो परिणाम वर्तमान में दिखाई पड़ रहा है—किसी से छिपा नहीं है। इन गति-विधियों का प्रभाव केवल धर्म पर अथवा किसी एक धर्म के लोगों पर ही पड़ेगा—यह समझना नितान्त भूल होगी। इसका प्रभाव सीधे हमारी राष्ट्रियता और स्वतन्त्रता पर पड़ेगा और नागा-लैण्ड का उदाहरण सामने है। नियोगी रिपोर्ट को पढ़ने पर यही परिणाम कोई भी समझदार व्यक्ति निकालेगा। अतः समय रहते सचेत होने की आवश्यकता है।

कुछ लोग कभी-कभी यह कहते सुने जाते हैं कि ईसाई लोग अस्पताल खोलते हैं, स्कूल खोलते हैं, सेवा का कार्य करते हैं और पिछड़ों को सहायता देते हैं आदि-आदि। परन्तु वे यह

अर्थात् अज्ञान से हटाकर ज्ञान की ओर ले चल।

तीसरी बात जो ब्राह्मण वाक्य में कही गई है वह मृत्यु से हटकर अमृतत्व की प्राप्ति। मृत्यु एक महाद् दुःख है, परन्तु है शिक्षाप्रद। यह समस्त दुःखों का एक उपलक्षण है। इससे हट कर अमृत अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति आर्य जीवन का एक मुख्य लक्ष्य है। जीवन का चरमोद्देश्य यही है। मृत्यु शरीर से आत्मा के वियोग को कहा जाता है। यह वियोग शरीर धारी के लिए ध्रुव है। परन्तु इस मृत्यु को देखते हुए और इस पर विचार करते हुये जहां मोक्षरूपी अमृत का ज्ञान होता है वहां यह भी ज्ञात हो जाता है कि आत्मा रूपी कोई अमृत सत्ता है। यह सत्ता शरीर और इन्द्रियों आदि से भिन्न है और अमर है। यह अमरत्व ही वस्तुतः समस्त कर्त्तव्य मीमांसाओं और कर्मफल की धारणा का मूल है। यदि अमर आत्मा कोई चीज न होती तो फिर मोक्ष, कर्त्तव्य, और कर्म फल की कोई व्यवस्था ही क्या बनती? आत्मा अमर है अतः वह किये का उत्तरदायी है और मोक्ष की प्राप्ति उसका प्रयत्न है। अतः तीसरे वाक्य में यह कहा गया कि मृत्यु से अमरत्व की ओर मुझे ले जा। सत्ता में विश्वास, ज्ञान की स्वीकारी और अमरत्व की भावना आर्य के लिए आवश्यक हैं। आर्य विश्वास के ये तीनों ही मुख्य बिन्दु हैं।

भूल जाते हैं कि इन कार्यों में इन ईसाई पादरियों को पैसा कहां से आता है और उनका निहित स्वार्थ या उद्देश्य क्या है? थोड़ी देर के लिए इनकी ही युक्तियों को मान लिया जावे और यही समझ लिया जावे कि ईसाई मिशनरी शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा एवं साहाय्य का कार्य करते हैं और उनकी गतिविधि का सम्बन्ध धार्मिक मात्र है। परन्तु इससे सन्तुष्ट होकर बैठना क्या खतरे से खाली है? किसी देश के नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजी का उत्तरदायित्व सरकार वा शासन पर है। यदि इन तीनों वस्तुओं के लिए किसी नागरिक को अपना प्यारा धर्म परिवर्तित करना पड़े और सत्तारूढ़ व्यक्ति इसे सुधार बताते फिरें तो क्या यह खेद, चिन्ता और दुर्भाग्य की बात नहीं। इसका तात्पर्य तो फिर यह है कि शासन अपने उत्तरदायित्व को दूसरे पर डालकर सुख की नींद सोना चाहता है जो परिणाम में किसी समय राष्ट्र के लिए महंगा पड़ेगा।

ईसाई मत का स्वरूप

यहां यह कहना आवश्यक है कि ईसाई मत की विशेषता के कारण कोई इसमें प्रविष्ट हो जाता है—सुतराम् अयुक्त है। यदि ईसाई धर्म की ऐसी ही विशेषता है तो फिर ये ईसाई-पादरी उन पढ़े लिखों में क्यों नहीं प्रचार करते जो सारासारता को समझने के योग्य हैं। किसी बात को न समझने वाले वन्य जातियों के उन गरीब और अशिक्षित लोगों में ही क्या इस धर्म की विशेषता प्रकट होती है जिन्हें इस विषय की कुछ समझ ही नहीं है।

वस्तुतः ईसाई-धर्म युक्ति और तर्क संगत धर्म नहीं है। बाइबिल की शिक्षा ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। कोई भी ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर की सृष्टि के नियमों के विरुद्ध नहीं हो सकता है। बाइबिल इस कसौटी पर ठीक नहीं उतरती है। यहां पर मैं "एज आफ रीजन" पुस्तक के लेखक श्री थामस पैन के विचार को उद्धृत कर इस बात की पुष्टि करना उचित समझता हूं। श्री थामस पैन महाशय कहते हैं—(१) पृथिवी पर ऐसी की गई किसी वस्तु को ईश्वरीय प्रेरणा नहीं कहा जा सकता है कि जिसका एक्टर मनुष्य स्वयं ही हो अथवा वही उसका साक्षी भी हो। अतः बाइबिल का सभी ऐतिहासिक एवं चुटकुलेदार कहानियों सम्बन्धी भाग जो कि बहुधा समस्त बाइबिल ही है—ईश्वरीय प्रेरणा के अभिप्राय और सीमा में नहीं आता है। अतः यह परमेश्वर का शब्द नहीं है।"

पुन वही विद्वान् एक और तथ्य पर प्रकाश डालते हैं—(२) आजकल के पादरी उपदेशक

---

1. Revelation, therefore can not be applied to any thing done upon earth of which man is himself the actor or the witness, and consequently all the historical and ancedotal part of the Bible, which is almost the whole of it, is not within the meaning and compass of the word revelation and therefore, is not the word of God. The Age of Reason.
Page 12, 1938 Ed.
2. The priests of the present day profess to believe it. They gain their living by it, and they exclaim against something, they call infidelity. I will define what it is—He that believes in the story of Christ is an infidel to God. Ibid.

इस पर विश्वास करने के लिए उपदेश करते हैं। वे इसके द्वारा अपनी जीविका अर्जित करते हैं और वे उस वस्तु के खिलाफ जिसे कि नास्तिकता कहते हैं—शोर मचाते हैं। मैं इसकी परिभाषा करूंगा कि यह (नास्तिकता) क्या है ? वह जो हजरत ईसा की कहानी में विश्वास करता है ईश्वर के प्रति अविश्वस्त एवं नास्तिक है।"

मैं यहां पर अधिक प्रमाणों को देकर समय को नहीं व्यतीत करना चाहता और न तथ्य ही मुझे ऐसी आज्ञा देते हैं। परन्तु इन उपर्युक्त दो प्रमाणों से प्रभूत एवं प्रचुर मात्रा में स्पष्ट हो गया कि बाइबिल किस्से कहानियों की पुस्तक है ईश्वरीय ज्ञान नहीं। साथ ही लेखक ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि हजरत ईसा की कहानी में विश्वास करना वस्तुतः ईश्वर के प्रति अविश्वास करना है।

जहां पर ईसाइयत का ही प्रचार था और पादरी शासक थे उन्होंने वहां पर क्या-क्या अत्याचार किये हैं इसके दो एक उदाहरण यहां भारत के भूतपूर्व स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल की पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलक' से प्रस्तुत करता हूँ--

१--येरुशलम में खून का दरिया

आखिर में बुइलों के गादफ्रे नामक एक नार्मन के नेतृत्व में ये जिहादी फिलस्तीन पहुंच गए। येरुशलम जीत लिया और फिर वहां इन्होंने एक हफ्ते तक मारकाट मची। हजारों लोग क़त्ल कर दिए गए। इस घटना की अपनी आंखों से देखने वाले एक फ्रांसीसी ने लिखा है कि "मस्जिद की बरसाती के नीचे घुटने तक खून था और घोड़ों की लगाम तक पहुंच जाता था। गादफ्रे येरुशलम का बादशाह बन गया।

विश्व इतिहास की झलक, पृ० २७४

२--महान् विनाश

इन ईसाई योद्धाओं ने ईसाई कुस्तुन्तुनियां को जितना नुकसान पहुंचाया उतना किसी काफिर ने नहीं पहुँचाया। इस महान् आफत की मार से साम्राज्य और कुस्तुन्तुनियां का शहर फिर कभी न पनप सका।" वही, पृ० २८४

३—पुरुषों और स्त्रियों का जलाया जाना

"१२३३ ई० में इनक्विजिशन कायम करके ईसाई-संघ ने बाकायदा और सरकारी तौर पर मजहब में हिंसा का राज्य कायम कर दिया। यह एक किस्म की अदालत होती थी जो लोगों के ईमान के कट्टरपन की जांच करती थी और अगर इसकी राय में वे जांच में पूरे नहीं उतरते तो मामूली तौर पर उन्हें जिन्दा जला दिये जाने की सजा दी जाती थी। काफिरों को बाकायदा ढूंढ-ढूंढकर पकड़ा और उनमें से सैकड़ों को जिन्दा जला दिया गया। जिन्दा जलाने से भी ज्यादा बुरी बात यह थी कि लोगों से प्रायश्चित्त कराने के लिए उन्हें यातनाएँ दी जाती थीं। बहुत-सी गरीब अभागी औरतों पर डाकनें होने का अपराध लगाया जाता था और वे जला दी जाती थीं।" पृष्ठ ३२३

४—साइंस का खण्डन

"पोप ने एक फतवा जारी किया जिसमें हरेक आदमी को मुखबिर बनने का हुक्म दिया गया। पोप ने रसायन के खिलाफ फतवा दे दिया और उसे शैतानी हुनर करार दिया और मजा यह कि ये तमाम अत्याचार और आतंक सच्चे विश्वास के साथ किये जाते थे। इनका विश्वास था कि किसी आदमी को जिन्दा जला कर वे उसकी आत्मा को या दूसरों की आत्माओं को पापों से बचा रहे हैं। (पृष्ठ ३२३)

५ - विचित्र घटना

"१५६८में इनक्विजिशन ने तो कुछ इने-गिने

आदमियों को छोड़कर नीदरलैण्ड के सारे निवासियों को एक ही फैसला में काफिर करार देकर मौत की सजा दे डाली। यह हैरत भरा फैसला इतिहास में बेमिसाल है, जिसने तीन चार लाइनों में ही तीस लाख आदमियों को सजा दे दी।" पृष्ठ ४०७

ये हैं कुछ फुटकर उद्धरण विश्व के एक महान् राजनैतिक नेता के विचार के जो उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में ईसाइयों के अत्याचारों और विज्ञान-शत्रुता के सम्बन्ध में दिये हैं। इनसे इनकी असलियत का पता चल जाता है। मैं अधिक विस्तार में यहां नहीं जाना चाहता। इस सम्बन्ध में पर्याप्त साहित्य सार्वदेशिक सभा से प्राप्त हो सकता है। मैं तो यहां इतना ही बतलाना चाहता हूँ कि धर्म की दृष्टि से ईसाइयत समुचित तुलना पर नहीं उतरती और इस धर्म के प्रसार में बहुत घोर अत्याचार मानव जाति पर इसके अनुयायियों द्वारा किए गए हैं।

विश्व-ईसाई सम्मेलन

अभी हालमें बम्बईमें विश्व-ईसाई सम्मेलन हुआ है जिसमें विश्व भर के ईसाई-पादरी बहुत बड़ी संख्या में भाग लेने आए। इसकी बड़े ही जोर-शोर से तैयारियां हुईं। इसका भारत की राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा—भविष्य स्वयं बतलाएगा। इस सम्मेलन में भी कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें दृष्टि से ओझल नहीं किया जा सकता है।

(१) भारत के रहने वाले भारतीय ईसाइयों को अन्य भारतीय नागरिकों की भांति अपने सम्मेलन आदि करने का पूर्ण अधिकार विधानतः प्राप्त है। परन्तु विदेशी मिशनरी आकर भारत में विशेष सम्मेलन करें और ऐसी परिस्थिति में जब नागालैण्ड और अन्य प्रदेशों एवं सीमाओं की भयंकर स्थिति सामने है—कितनी औचिती इसमें हो सकती थी, अत्यन्त ही विचारणीय है।

(२) इन आने वाले विदेशी मिशनरियों और व्यक्तियों की भोजन व्यवस्था में कितनी गायों का वध और कितनी विदेशी शराब आदि की व्यवस्था की गई और यह किस सीमा तक भारतीय जन मानस और धार्मिक सहिष्णुता के प्रतिकूल पड़ी—इसका ध्यान न रखा जाना ठीक नहीं है।

(३) पोप के आने पर कई लाख रुपयों की वस्तुएँ भारतके गरीबों में बांटी जाने वाली थी। यह वस्तुतः भारत की दीनता का उपहास है और धर्म परिवर्तन के लिए एक प्रलोभन है।

(४) इससे भारत में पहले से चल रही ईसाई पादरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलने की पूरी सम्भावना है।

ये बातें हैं जो वस्तुतः इस सम्मेलन के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न करने की उत्तरदायी हैं। इनका निराकरण होना आवश्यक भी है।

अब आवश्यकता है कि इस दिशा में कुछ कार्य करने का। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस कार्य को अपने हाथ में ले रखा है। कार्य चल रहा है। यथाशक्ति और यथायुक्ति जहां पर ईसाइयों का प्रचार जोरों पर है वहां पर बड़े बल के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार का सामना करने के लिए हमें शिक्षा, औषधि आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। गरीबी को भी दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस कार्य के लिए प्रभूत धन, सुयोग्य कार्यकर्ताओं और साधन की आवश्यकता है। आप सबका सब प्रकार का सहयोग इसके लिए अपेक्षित है।

२८-११-६४ से ६-१२-६४ तक बम्बई में हुए विश्व ईसाई सम्मेलन के अवसर पर

आर्यसमाज का शानदार प्रचार-कार्य

विश्व ईसाई सम्मेलन के अवसर पर आर्य समाज के साहित्य वितरण और अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके नेतृत्वमें आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने किया था। इस अवसर पर प्रचार करने और आवश्यक होने पर शास्त्रार्थ करने के लिए अनेक आर्य विद्वान् और महोपदेशक महानुभाव वहां पहुंच गए थे। सार्वदेशिक सभा के आदेश पर आर्य समाजों के द्वारा भेजे हुए अनेक सुलझे हुए योग्य कार्यकर्ता भी साहित्य वितरण के लिए वहां जा पहुँचे।

ईसाई पादरियों तथा ईसाइयों में बांटने के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से लाखों की संख्या में ट्रैक्ट बम्बई भेज दिये गये थे। भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति ने भी इस अवसर पर कई बढ़िया ट्रैक्ट हजारों की संख्या में फ्री वितरण के लिए छपवाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट देश और विदेश की समस्त समाजों के अतिरिक्त केन्द्रीय मंत्री मंडल, राज्यों के मंत्रीमंडलों यथा (उत्तरप्रदेश,पंजाब,महाराष्ट्र, राजस्थान,बिहार, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा आदि आदि मुख्य न्यायाधीशों, विधान सभाओं के अध्यक्षों, एवं देशके मुख्य-मुख्य पत्रोंके सम्पादकों और विशिष्ट गण्यमान्य व्यक्तियों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेज दिये गये थे। इन ट्रैक्टों की प्रशंसा में अनेक पत्र सभा कार्यालय में नित्य प्रति प्राप्त हो रहे हैं। प्रसन्नता है कि इस साहित्यकी सहायतार्थ आर्य समाजें, दिल खोलकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को धन भेज रही हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मन्त्री श्री बेणीभाई जी आर्य सम्मेलन से कई दिन पूर्व प्रबन्ध के लिए बम्बई पहुंच गये थे। समस्त प्रबन्ध भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के अधीन था जिसमें ९९ प्रतिशत आर्य जन थे। और जिसका मार्ग दर्शन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास और आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई कर रहे थे। बम्बई समाके प्रधान, मन्त्री,उपप्रधान, उपमन्त्री, अन्तरंग सदस्य, और अनेक समाजों के मन्त्री, और अन्तरंग सदस्य प्रबन्ध में हाथ बटा रहे थे।

वहां के कार्य की रिपोर्ट जो सभा कार्यालय में प्राप्त हुई है उत्साहवर्द्धक है। रिपोर्ट के अनुसार सार्वदेशिक सभा और प्रान्तों के आर्य जनों के सहयोग से बड़ी शान्ति और गौरव पूर्ण ढंग से ईसाई विश्व सम्मेलन के अवसर पर आर्य समाज का कार्य हुआ। बाहर से जो आर्य कार्यकर्ता आये थे उन्होंने तथा बम्बई नगर की आर्य संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने मिलकर पादरियों, बिशपों और विदेश से आये हुए ईसाई प्रतिनिधियों को उनके निवास स्थान पर जा-जाकर साहित्य दिया। हजारों गैर ईसाइयो ने भी उस साहित्य को बड़ी उत्सुकता के साथ मांगकर पढ़ा।

रिपोर्ट में कहा गया है कि जो शिष्टमण्डल २३-११-६४ को प्रधान मन्त्री जी को मिला था उसका ईसाई सम्मेलन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा पर और अनुमति से आर्य समाजों द्वारा बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र, मध्यभारत, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, देहली, पंजाब,

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाओं का परिणाम

आर्य सिद्धान्त भूषण

आर्य समाज दयानन्द गंज, इन्दौर

प्रथम श्रेणी

१३ हरिकिशन लाल वर्मा

आर्य सिद्धान्त विशारद

आर्य समाज दयानन्द गंज, इन्दौर

द्वितीय श्रेणी

१७ शिवनारायण, १८ इन्द्रा कुमारी गौड़, २१ सुभाष।

तृतीय श्रेणी

१४ राजेन्द्रकुमार, १५ विजय प्रकाश, १६ गुरु प्रकाश. २३ राजेन्द्र प्रसाद।

आर्य समाज, जालना

द्वितीय श्रेणी

२४ शंकरलाल, २५ मोहनदास, २६ बाबूलाल, २८ मदनलाल, २९ गोकुल प्रसाद।

आर्य गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल

चावड़ी बाजार, दिल्ली

प्रथम श्रेणी

६८ सरिता, ६९ अशोक।

द्वितीय श्रेणी

६३ राजेश, ७१ शशी, ७२ प्रेम, ७७ सन्तोष, ८३ राकेश, १२४ निशा।

तृतीय श्रेणी

३१ उषा रानी, ३२ मधु, ३६ इन्द्रा, ३७ सुभद्रा, ३९ सुषमा, ४० सुमन, ४३ मधु, ४४ भारत बाला निगम, ४६ मधु, ४७ राजरानी, ४८ सुशीला, ५० ऊषा, ५१ मन्जू प्रभा, ५५ उर्मिला, ५६ उर्मिला निगम, ५८ कुसुम, ५९ उर्मिला, ६० स्नेह, ६२ विनोद, ६४ उर्मिला, ६५ कमलेश, ६६ मंजुला, ६७ रानी, ७३ बीना, ७४ विजय-लक्ष्मी, ७८ बीना, ७९ बानू, ८० मधु, ८१ अनुराधा, ८२ मधु, ८४ आशा, ८५ चित्रा, ८७ शशिप्रभा, ८९ गार्गी, ९१ विजयमाला, १०० मधु, १०४ उषा रानी, १०५ पुष्पा देवी, १०६ माया, १०७ शशी, ११० निर्मला, १११ मधु, ११२ शशी, ११३ बीना, ११४ इन्द्रा रानी, ११५ निर्मल, ११७ अंजू, ११९ मधु, १२० श्यामलता, १२५ निर्मल, १२६ मंजू, १२७ उषा, १३१ आशा, १३२ दौलती, १३४ शकुन्तला, १३५ विमला, १३६ उषा, १३७ लक्ष्मी, १३८ चित्रा, १३९ कुमकुम, १४० स्वर्णलता, १४२ निर्मल, १४३ शशी, १४४ उर्मिल, १४६ मधु, १४८ अरुण, १५० उषा, १५४ आशा, १५६ सरोज, १५७ रेखा,

---

आदि आदि से सुयोग्य कार्यकर्ता बम्बई भेजे गए।

मध्यभारत से श्री स्वा. दिव्यानन्दजीसरस्वती, राजस्थान से श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के छोटे भाई जियालाल जी जो ईसाई साहित्य के बड़े मर्मज्ञ है, पंजाब से श्री नन्दलाल जी, श्री देवराज जी, श्री पं० मुरारीलाल जी शास्त्री, उत्तर प्रदेश से श्री विश्वनाथजी त्यागी, शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० ओ३म्प्रकाश जी (खातौली), श्री पं० रुचिराम जी आर्योपदेशक श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक, आदि महानुभाव वहां पहुँच गये थे। चौपाटी के विशाल मैदान में प्रतिदिन सार्वजनिक भाषण होते रहे। इसके अतिरिक्त बम्बई के आर्य समाजों ने भी अपने प्रबन्ध में प्रचार कार्य कराय।।

उपदेशक महानुभावों और कार्यकर्ताओं के ठहरने और भोजन की समुचित व्यवस्था सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी के साधना आश्रम, विले पारले, आर्य समाज शान्ता क्रुंज, माटुंगा, चैम्बूर और विशेष रूप से काकड़वाड़ी समाज में की गई थी।

❀

१५८ विनीता, १५९ निशा।

श्री श्रद्धानन्द वैदिक आश्रम,
पतारा कलां, कमलापुर (सीतापुर उ.प्र.)

प्रथम श्रेणी

१६० गोविन्दशरण उपाध्याय, १६१ विपिन बिहारी आर्य।

आर्य समाज लक्सर, सहारनपुर

प्रथम श्रेणी

१६७ सुषमा रानी।

द्वितीय श्रेणी

१६३ सूबाराम. १६८ राम भजन।

तृतीय श्रेणी

१६२ मोहनलाल, १६५ जयसिंह,
१७० हरिश्चन्द्र।

डी. ए. वी. हायर सैकेण्डी स्कूल, बेयर रोड,
नई दिल्ली।

द्वितीय श्रेणी

१७१ जितेन्द्र कुमार, १७२ विजय कुमार, १७३ अशोक कुमार, १७४ रमेशसिंह।

श्री सार्वदेशिक साधु आश्रम, अलीगढ़ (उ. प्र.)

प्रथम श्रेणी

१७५ सुरेन्द्र कुमार, १८० रविकुमार, १८१ वीरपाल आर्य, १८२ वीरेन्द्र कुमार, १८८ मंगलदेव आर्य।

द्वितीय श्रेणी

१८९ देवराज आर्य।

तृतीय श्रेणी

१७६ गोपाल दास अग्रवाल, ७७ अनिलकुमार, १७८ हर्ष कुमार, १७९ लक्ष्मण देव आर्य १८३ छविकृष्ण आर्य, १८४ सुभाषचन्द्र, १८५ नैपालसिंह, १८६ राजेन्द्र कुमार, १८७ राजेन्द्र प्रसाद आर्य।

सतभावां गर्ल्स हा० से० स्कूल नई दिल्ली

Group 'A'

प्रथम श्रेणी

१९८ मधु कपूर, १९९ प्रतिभा।

द्वितीय श्रेणी

२१५ मंजू वाला जैन, २१७ वीणा शर्मा, २१९ शशी सबरवाल, २२१ रजनी गुलाठी।

तृतीय श्रेणी

१९० विमला, १९१ मंजू आर्य, १९२ मधुवाला, १९३ कमलेश गोयल, १९४ रमा खुराना, १९५ रेनू सरोज, १९६ कुसुम, १९७ तृप्ता, २०० मधुरिमा धवन, २०१ प्रभा, २०२ शशी बाला, २०३ परमजीत, २०४ सुनीता, २०५ किरण दीप, २०६ सन्तोष गुलाठी, २०७ जनक लता, २०८ इन्दु कोहली, २०९ सुधा, २१० राकेश कुमारी, २११ ऊषा खन्ना, २१२ उर्मिला ग्रोवर, २१३ सरोज मलिक, २१४ किरन ग्रोवर, २१६ रेखा सेठी २२० उर्मिल कुमारी, २२२ ऊषा बाला, २२३ शशी बाला, २२४ मधु बाला, २२५ लीलावती, २२६ नीना, २२७ निर्मल गुप्ता, २२८ चन्द्रकान्ता, २२९ अनीता, २३० सुदेश।

Group 'B'

प्रथम श्रेणी

२३७ राजा गुप्ता, २३८ रमा, २५६ किरण बाला, २५७ मीना विज, २५८ चम्पा रानी, २५९ सन्तोष शर्मा, २६० सुधा चौपड़ा।

द्वितीय श्रेणी

२५० चन्द्र कान्ता भाटिया, २६१ हरीन्द्र खेड़ा।

तृतीय श्रेणी

२३१ डौली, २३२ रेनु भसीन, २३३ मालती शर्मा २३४ उषा किरण शर्मा, २३५ बेबी आनन्द, २३६ निर्मल, २३९ रेखा, २४० आशा कपिल, २४१ विजय, २४२ रंजु बाला. २४३ वीना गुप्ता, २४४ नीना, २४५ परमजीत, २४६ वीरेन्द्र,

२४७ रजना, २४८ रीटा दुआ, २४९ नीलू सहगल, २५१ मधु सिंहल, २५२ मधु सहगल, २५३ सन्तोष कुमारी, २५४ सुचेता पाटिल, २५५ वैशाना जग्गी।

Group 'C'

प्रथम श्रेणी

२६६ सुशीला कुमारी, २७६ शशी तनेजा, २७७ रमा तिवाडी।

द्वितीय श्रेणी

२६५ हरविन्द कौर।

तृतीय श्रेणी

२६२ सरोज चावला, २६३ ईशा मलिक, २६४ उर्मिल, २६५ रीटा वर्मा, २६७ फूलवती, २६८ बीना रानी, २६९ सुषमा कुमारी, २७० निर्मल कपूर, २७१ मीरा देवी, २७२ सुरिन्द्रा कौर बम्बारा, ४७३ प्रतिमा गुप्ता, २७४ कचन आहूजा, २७५ लक्ष्मी रानी, २७८ सुरविन्द्र कौर, २७९ मजु जैन, २८० रीटा साहनी, २८१ नरेश अरोडा, २८२ गार्गी चौपडा, २८३ शशी कपूर, २८४ शशी बाला २८५ ओम्प्राणा, १८६ आशा सेठ, २८७ जगजीत कौर, २८८ सुधा गुप्ता, २८९ निशा देवालिया, २९० कृष्णा रसवती, २९१ सन्तोष कुमारी, २९२ मधु जैन, २९३ प्रेमलता जैन, २९४ मधु, २९५ निशा बाला, २९६ सुधा गुप्ता, २९७ रीना रानी, २९८ प्रेम लता गुप्ता।

Group 'D'

तृतीय श्रेणी

२९९ रमा, ३०० सुधा मलिक, ३०१ रजना, ३०२ रेणु चौधरी, ३०३ ऊषा, ३०४ नीना कुमारी, ३९५ बृज बाला बृज, ३०६ शशी प्रभा, ३०७ स्नेह लता, ३०८ सन्तोष, ३०९ सुरेश, ३१० किरण, ३११ उर्मिला रानी. ३१२ आशा, ३१३ रीटा खौसले, ३१४ प्रमोद, ३१५ नीरजा लूथरा, ३१६ रीटा उप्पल, ३१७ बीना नागपाल, ३१८ राज कुमारी, ३१९ प्रौमिला बर्म्मा, ३२० कविता कुमारी, ३२१ इन्दू बाला, ३२२ सुषमा, ३२३ सुदेश कुमारी।

Group 'E'

द्वितीय श्रेणी

३३३ बीना महाजन, ३३७ हीरू, ३३८ उमा महता, ३५५ प्रेम लता, ३५६ देवी रानी, ३५७ प्रोमिला रानी, ३५८ पुष्पा कुमारी, ३५९ सरोज गुप्ता, ३६० अनुराधा, ३६१ रमा सेठ, ३६३ पुष्प लता, ३६४ नीलम खन्ना।

तृतीय श्रेणी

३२४ अरुण, ३२५ शशी मदान, ३२६ ब्रज बाला, ३२७ शुभा सिन्हा, ३२८ विजय, ३२९ जसपाल, ३३० बीना पाली, ३३१ सुषमा भाटिया, ३३२ विमला, ३३४ सुषमा, ३३५ नीलम, ३३६ ललिता आहूजा, ३३९ मीना, ३४० दर्शन, ३४१ विनोद, ३४३ कवल, ३४४ सरोज कुमारी ३४५ चन्द्र प्रभा, ३४६ वीरमाला, ३४७ नरेश कुमारी, ३४८ उमा भाटिया, ३४९ दर्शन कुमारी आर्य, ३५० चचल, ३५१ नीलम नरूला, ३५२ मधु कपूर ३५३ रानी कौर, ३५४ निर्मल।

(पृष्ठ ७ का शेष)

होता था और वह बाहरी शक्तियों के अधीन रहता था। उसे आत्म-संयम सीखने के कम अवसर उपलब्ध होते थे।

आश्रम व्यवस्था भी बड़ी उपयोगी थी। वर्णाश्रम व्यवस्था और योग साधना से मानव-जीवन का निर्माण होता और उनमें एकता बनी रहती थी।

बाह्य कारणों से उत्पन्न घोर स्वार्थपरता के कारण आश्रम व्यवस्था आधुनिक काल के साथ समन्वय स्थापित करने मे असफल हो रही है।

विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन के साथ दैवीय उद्देश्य जुड़ा होता है और उसे उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने जीवन को ढालना होता है; इस सत्य के अंकित हो जाने से मनुष्य बहुत सी चिन्ताओं और परेशानियों से मुक्त हो जाता है।

मनुष्य की इच्छायें बड़ी शक्तिशालिनी होती हैं। मनुष्य के हृदय में जब यह बात जम जाती है कि उसके जीवन का उद्देश्य दिव्य शक्ति द्वारा नियत एवं संचालित होता है तब वे इच्छाएं दब जाती हैं।

पौर्वात्य देशों के शास्त्र कहते हैं:—"कार्य करो परन्तु फल के लिए परेशान मत होओ।' आज की अशान्ति के प्रसार की रोक-थाम इसी से हो सकेगी। आत्म-समर्पण से ही शान्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। आज स्वार्थपरता मनुष्य का धर्म बन गया है। इसका उपचार धर्म भावना का विकास और स्वार्थपरता का दमन ही है।"

श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु

श्रीयुत पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के निधन का समाचार अंकित करते हुए बड़ा दुःख होता है। ११ दिसम्बर को ७३ वर्ष की आयु में वे हम सबसे वियुक्त हो गए। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

श्री पं० जी आर्य समाज के गिने चुने संस्कृत के विद्वानों में से थे जिनके संस्कृत पांडित्य पर आर्य समाज को गर्व था। संस्कृत के ऐसे विद्वान् का हमारे मध्य में से उठ जाना आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति है।

विभाजन से पूर्व उनका कार्यक्षेत्र पंजाब था और वे ब्राह्म महाविद्यालय आदि संस्थाओं के साथ सम्बद्ध रहे। उन्होंने वैदिक और संस्कृत वाङ्मय की उल्लेखनीय सेवा की। विभाजन के पश्चात् उन्होंने वाराणसी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वहां से ही 'वेद-वाणी' मासिक पत्रिकाका संचालक एवं सम्पादन करते रहे। रामलाल कपूर ट्रस्ट के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा और उस ट्रस्ट के द्वारा उनके अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए।

पाणिनी कृत अष्टाध्यायी की शैली पर उन्होंने संस्कृत शिक्षण की सुगम प्रणाली को अपनाकर थोड़े समय में ही संस्कृत की विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्तियों की तय्यारी का श्रेय प्राप्त किया। काशीकी संस्कृत मंडलीएवंविशिष्ट साहित्य सेवियों मे उन्हें प्रेम और आदर प्राप्त रहा। राष्ट्रपति महोदय ने एक विशेष समारोह में उन्हें संस्कृत के पांडित्य का प्रमाण-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया था और १५००) वार्षिक की आजीवन सहायता स्वीकार की थी।

इन शब्दों के साथ हम समस्त सार्वदेशिक परिवार की ओर से श्री पं० जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

—०—

आर्य समाज नैरोबी (ईस्ट अफ्रीका)

का १९६३-६४ का कार्य-विवरण

ओम् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रम-साविव। पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि।

करुणामय भगवान की अनुकम्पा तथा आर्य जनों के सहयोग से १९६३-१९६४ के वर्ष आर्य समाज का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। इस वर्ष का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

अन्तरंग सभा की बैठकें:—वर्ष भर में अन्तरंग सभा की ९ बैठकें हुईं जिनमें समाज को उन्नत करने के लिये अनेक विचार किये गये और उनको कार्यरूप में परिणत करने के लिये प्रयत्न किया गया।

साप्ताहिक सत्संगः—पिछले कई वर्षों से लगातार यह अनुभव किया जाता रहा है कि हवन के प्रारम्भ के समय उपस्थिति बहुत थोड़ी होती है और उपदेश व प्रवचन के समय उपस्थिति यद्यपि अपेक्षाकृत अधिक होती है पर वह भी हमारी सदस्य संख्या के विचार से सन्तोषजनक नहीं है। इस अवस्था मे इस को सुधारने के दो ही उपाय हैं, या तो सदस्य समय पर उपस्थित होने की कृपा करें अथवा सत्सग के समय में परिवर्तन किया जावे।

प्रचारः—श्री ओंप्रकाश जी त्यागी तथा प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री ज्ञानचन्द्र जी साप्ताहिक सत्संगों में अपने प्रवचनों से आर्य परिवार को लाभ पहुंचाते रहे उनकी अनुपस्थिति में तथा आवश्यकतानुसार सर्वश्री धर्मेन्द्रनाथ जी, सहदेव जी, विनयकुमार जी, देवनाथ जी, अक्षरादास जी ने भी इस कार्य में निष्काम सहायता दी। वयोवृद्ध श्री म० चरणदास जी आर्य ने साप्ताहिक यज्ञ के प्रबन्ध कार्य को सुचारु रूप से चलाया। संगीताध्यापक श्री मा० मुतलाशी तथा आर्य संगीत शाला की छात्राओं ने समय समय पर अपने मधुर गीतों से जनता को लाभान्वित किया। आर्य कन्या शालाओं के प्रिंसिपलों, अध्यापक वर्ग, छात्राओं, तथा आर्य स्त्री समाज का भी सहयोग मिलता रहा। श्री जयदेव जी खन्ना भी जब तक यहा रहे वे अपने सुरीले कंठ से समय समय भजनों द्वारा सत्संगों को रोचक बनाते रहे।

पर्वः—इस वर्ष विजयादशमी, दीपमाला, ऋषिबोधोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना दिवस सभी आर्य संस्थाओं के सहयोग से विशेष समारोह से मनाये गये। दीपमाला के उपलक्ष्य में नगर के भिन्न भिन्न भागों में पारिवारिक यज्ञों का आयोजन किया गया। नूतन वर्षाभिनन्दन पत्र श्री अक्षरादास जी (प्रधान), श्री धर्मेन्द्रनाथ जी (उपप्रधान) तथा श्री रामदास जी पाठक (कार्यालयाध्यक्ष) ने वितरित किया।

कीनिया १२ दिसम्बर १९६३ को स्वतन्त्र हुआ इस शुभ तथा ऐतिहासिक प्रसंग पर प्रार्थना समारोह का आयोजन किया गया। महात्मागांधी जी के जन्म दिवस के उपलक्ष में भी २ अक्टूबर को एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें भिन्न भिन्न वक्ताओं ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण की २० अक्टोबर १९५३ को हमारे देश के प्रधान मन्त्री श्री जोमो केनियाटा देश के लिये हंसते हंसते जेल के लिये गये, इस राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय कमिश्नर श्री टंडन जी की अध्यक्षतामें सभाका आयोजन किया गया। इसी प्रकार श्री नेहरू जी के निधन पर भी प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

१९६४ का विजयादशमी पर्व श्री सनातन धर्म सभा के साथ सम्मिलित रूप से मनाया गया

यह हिन्दू संगठन की दिशा में सराहनीय प्रयत्न था।

कार्यालयः—इस वर्ष भी श्री रामदास जी पाठक इस कार्य को करते रहे। श्री अछरादास जी (प्रधान) नियमपूर्वक उपस्थित होते रहे और कार्यालय के काम को व्यवस्थित करने में विशेष रूप से सहायता देते रहे मन्त्री के कार्य का सारा बोझा भी श्री अछरादास जी ने अपने कन्धों पर उठाया और यह कहना अधिक ठीक होगा कि मन्त्री और प्रधान दोनों अछरादास जी ही थे। वैसे प्रधान जी की जिसमानी हालत के लिये यह बहुत अधिक भार उन पर लादा गया।

इस वर्ष नूतनवर्षाभिनन्दन पत्र श्री रामजी दास जी पाठक, सोहनलाल जी भंडारी, लाजपत राय सूद, श्री रामरक्खा वेदी ने वितरित किये यह सर्व साधारण के संपर्क में आने का और साधारण जनता तक अपनी शुभ इच्छाओं व समृद्धि की आकांक्षा पहुंचाने का बहुत अच्छा रास्ता है, इसे कायम रखना चाहिये।

आर्यवीर दलः—आर्य वीर दल और आर्यवीरांगना दल को पुनः गति में लाने के लिये श्री त्यागी जी ने दो कैंपों का एक वीरदल का पार्कलैंड में और दूसरा वीरांगना दल का पार्क रोड पर आयोजन किया प्रारम्भ में तो भाग लेने वाले लड़के और लड़कियों ने अच्छा जोश दिखाया पर त्यागी जी के नैरोबी से बाहिर चले जाने के बाद दूसरे अधिकारीवर्ग के पास समयाभाव से इस काम में शिथिलता आ गई। कोशिश होनी चाहिये कि वीर एवं वीरांगना दल पूर्ण प्रगति से आगे बढ़े। इस काम के लिये यदि श्री त्यागी जी को अधिक समय नैरोबी में ठहरना पड़े तो ऐसा प्रयत्न अवश्य होना चाहिये।

वैदिक हाउसः—इस वर्ष इसके प्रबन्ध के लिये निम्न उपसमिति बनाई गई—सर्वश्री अछरादास जी (प्रधान), बलराज जी कपिला, ए० एन० फक्के, जे० जे० खोसला, डी० डी० पुरी, हरवंश साही, चन्द्रप्रकाश जी गुप्ता। श्री जे० के० चतरथ पुनः वैदिक हाउस के मैनेजर के पद पर नियुक्त किये गये. उन्होंने सबके सहयोग से सुचारु रूपेण कार्य किया।

भंडार :—श्री ब्रह्मदेव जी भारद्वाज ने गत वर्षों की भांति भंडाराध्यक्ष का काम सभाला। उनके भारत जाने पर यह कार्य श्री रामजी दासपाठक ने संभाला। श्री ब्रह्मदेवजी को अपने खुद के काम में अधिक व्यस्त रहने के कारण यदि उन्हें भंडाराध्यक्ष के निरीक्षक के रूप में रखा जाय एवं भंडार सामग्री के वितरण तथा वापिस लिये जाने का कार्य श्री पाठक जी पर छोड़ दिया जाय तो अधिक अच्छा होगा क्योंकि उनका निवास स्थान भी समीप ही है।

आर्य कन्या पाठशालायेंः—इस वर्ष सीनियर मैनेजर श्री बलराज कपिला रहे तथा श्री जसवन्त राय खोसला फोर्टहाल रोड की कन्यापाठशालाओं के प्रबन्धक रहे। श्री काश्मीरी लाल जी आर्य गर्ल्स सीनियर स्कूल पार्क लैंड के प्रबन्धक रहे थे किन्तु शिक्षा विभाग द्वारा आपत्ति उठाये जाने पर विवश होकर उन्हें इस कार्य से त्याग पत्र देना पड़ा इस समय स्कूल की स्थिति इस प्रकार है—

आर्य गर्ल्स प्रा० स्कूल

छात्राएँ	११००
शिक्षक	३५
लेखक	१
सेवक	१०

आर्य गर्ल्स सी० स्कूल

छात्राएँ	२६३
शिक्षक	१३
लेखक	१
सेवक	६

आर्य (सेकन्डरी)

छात्राएँ	२५५
शिक्षक	१७
लेखक	—
सेवक	१

इस वर्ष कीनिया प्रिलिमारी परीक्षा का परिणाम ५० प्रतिशत रहा और आर्य गर्ल्स सीनियर स्कूल का स्कूल सर्टिफिकेट का परिणाम ६६ प्रतिशत रहा। जी० सी० ई० मिलाकर ८५ प्रतिशत रहा जिसके लिये दोनों स्कूलों के मुख्याध्यापक श्री शान्तिसागर जी गुप्ता और श्रीमती मानु बहिन जया तथा दोनों स्कूलों के अध्यापक वर्ग बधाई के पात्र है, साथ ही छात्रायें जिन्होंने अपने प्रयत्नों द्वारा आर्य स्कूलों के नाम को उज्ज्वल किया। भगवान से प्रार्थना है कि यह प्रगति बनी रहे।

हर्ष की बात है कि पार्कलैंड स्थित सीनियर स्कूल में साइन्स की छात्राओं के लिये पढ़ाई का सुन्दरतम आयोजन किया गया है। यथासंभव इस दिशा में अच्छा ज्ञान देने के लिये शि० १५०००/ की लागत का सामान मंगाया गया है मुझे पूर्ण आशा है कि इस प्रयत्न से हमारी छात्राओं का प्रैक्टिल ज्ञान अधूरा न रहेगा।

इस साल पार्कलैंड की ५६ छात्राए पूर्वी आफ्रिका का अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये ज्ञान यात्रा पर दारसलाम गई थीं। उनकी यह यात्रा संतोषजनक रही। दारसलाममेंआर्य समाज के अधिकारी वर्ग ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया—वे सब बधाई के पात्र हैं।

पार्कलैंड स्कूल की ३ छात्राओं को "क्वींस गाइड" के पदक मिले, अभी तक एक ही समय मे इतने पदक प्राप्त करने का किसी भी स्कूल को गौरव प्राप्त नहीं हुआ। इस दिशा मे हमारे स्कूल का यह प्रयत्न सराहनीय एवं गौरवशील है। भगवान् करे कि इसी प्रकार हमारे स्कूलों की दिन दूनी रात चौगनी उन्नति होती रहे।

तीनों स्कूलों में भिन्न-भिन्न समयों पर स्वतन्त्रता दिवस, कीनियाटा दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस, ऋषि बोधोत्सव, दशहरा आदि पर्वों को सुचारु रूप से मनाया गया।

शिक्षापटल:—सर्वश्री बलराज (सीनियर मैनेजर), जसवन्त खोसला (प्रबन्धक), काश्मीरी लाल (प्रबन्धक), सहदेव मलहोत्रा (कोषाध्यक्ष) इन्द्रराज हाडा, सुरेन्द्र विनायक श्रीमती सुशीला गौतमा, डी० डी० सूद।

श्री सहदेव जी तथा इन्द्रराज हाडा ने अपनी विवशता के कारण कोषाध्यक्ष के पद से त्याग पत्र दे दिया। उनके स्थान पर श्री धर्मेन्द्र कपिला को यह कार्य सौंपा गया।

६१ वां वार्षिकोत्सव:—इस उत्सव को सफल बनाने का श्रेय समस्त आर्य परिवार को है। यजुर्वेद पारायण यज्ञ, राशन संग्रह में आर्य स्त्री समाज का सहयोग विशेष वर्णनीय है। भोजन पकाने और वितरण करने में बहिन-भाइयों ने अपनी सेवाएं अर्पण कीं—उन सब मूक सेवकों का अलग अलग धन्यवाद करने में मेरी लेखनी शब्द नहीं पा सकती पर स्त्री समाज एवं पुरुष समाज दोनों को आर्य समाज रूपी वृक्ष के अंग समझ कर समाज की प्रगतियों को आगे ले जाने में प्रयत्नशील रहना चाहिये।

इस उत्सव पर हिन्दुओं मेंसामाजिक सुधारों के सम्बन्ध में एक सम्मेलन रखा गया था। सुझावों को क्रियात्मिक रूप देने के लिये एक उप समिति का निर्माण किया गया था जिसके संयोजक श्री शिवाभाई अमीन तथा सहायक संयोजक श्री धर्मेन्द्र नाथ जी नियत किये गये यह उप समिति ठोस कार्य कर सके—यही प्रभु से प्रार्थना है।

धन संग्रह:—श्री अछरादास जी (प्रधान)

ने इस कठिन कार्य को श्री जुगल किशोर मल्ला, श्री रामजी दास पाठक, श्री लाजपतराय सूद, तथा श्री सोहनलाल भंडारी की सहायता से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। यह कार्य आर्य समाज की सेवाओं में सबसे कठिन है, पर श्री प्रधान जी ने अपनी सेहत का ख्याल न रखते हुए भी इसे सुचारु रूप से सम्पन्न किया।

पुस्तकालयः--हमारा पुस्तकालय पिछले कई वर्षों से अव्यवस्थित था। इस वर्ष श्री सोहन लाल जी भण्डारी ने स्वेच्छया अपनी सेवाएं दीं और पुस्तकालय को व्यवस्थित रूप प्राप्त हो गया। कई पुस्तकें फट सी गई थीं उनकी यथोचित सुरक्षा का श्रेय भी उन्हीं को है। श्री भण्डारी जी इसके लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

हिन्दी श्रेणियांः--श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी शास्त्री के शुभ प्रयत्नों से हिन्दी शिक्षा के दो केन्द्र अन्सवर्थ स्ट्रीट प्राइमरी स्कूल तथा आर्य सीनियर स्कूल पार्कलैंड में सुचारु रूप से चल रहे हैं। सप्ताह में दो दिन एक एक घण्टे के लिये हिन्दी पढ़ाने का कार्य अति शुभ है, इन दोनों केन्द्रों में लगभग २५० विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं। दोनों केन्द्रों के संचालन में स्कूलों के मुख्याध्यापकों का सहयोग मिल रहा है, वे धन्यवाद के पात्र हैं इसी प्रकार श्री शास्त्रीजी के पथ प्रदर्शन में "वेद पाठ मंडली" भी समय समय पर वेद पाठ का आयोजन करती है, दोनों प्रगतियां आर्य समाज के मिशन को पूरा करने में अतीव उपयोगी हैं। इन दोनों शुभ कार्यों के लिये श्री शास्त्री जी की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। इस दिशा में यह सुझाव देना उचित समझता हूं कि ऐसी सभी लोक-प्रवृत्तियां आर्य समाज अथवा आर्य स्त्री समाज की अध्यक्षता में ही चलाई जानी चाहिएं जिससे सुचारु रूप से और सुव्यवस्थित रूप से चलें तथा हमारा आन्तरिक संगठन सुदृढ़ हो।

इन दोनों प्रगतियों में जिन जिन बहिनों का अध्यापन तथा वेद पाठ के लिए सहयोग प्राप्त हो रहा है उन्हें धन्यवाद न दूं तो अकृतज्ञता होगी।

सामाजिक हॉलः--श्री मन्हेन्द्रपाल जी चड्ढा के उदार दान से "श्रद्धानन्द आश्रम पार्क· लैंड" में यह भवन बन रहा है। इस पर डेढ़ लाख शिलिंग का व्यय होगा। इस भवन की आधार शिला बहिन मायावती जी महेन्द्रपाल ने अपने करकमलों से २६ जनवरी के शुभ दिन रखी। इस भवन के बन जाने से आर्य परिवारों को तथा सामान्य जनता को विवाह संस्कार तथा अन्य सामाजिक प्रसंगों के आयोजन में अमूल्य सहायता प्राप्त होगी। इस पुण्य कार्य के लिये इस धर्म प्रेमी युगल का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

साउथ सी का प्लाटः--चिरकाल से आर्य बन्धु यह स्वप्न ले रहे थे कि साउथ सी में हमारी जो भूमि है उस पर मकान बनाया जावे जिससे आर्य समाज का सन्देश फैलाने में अधिक सहायता प्राप्त हो सके। इस वर्ष इस प्लाट पर साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया गया तथा प्रीति भोज भी हुआ। श्री ब्रह्मदेव जी भारद्वाज ने इस कार्य के लिये अत्यधिक प्रयत्न किया इसके लिये उनका धन्यवाद करता हूं और आशा करता हूँ कि इस प्लाट पर मकान बनाने के लिये धन संग्रह का कार्य शीघ्र ही हाथ में लिया जायेगा तथा हमारे कोष से इस पर धन व्यय करने की आवश्यकता न होगी।

उपदेशकः--कई उपदेशकों से पत्र व्यवहार चल रहा है जिनमें श्री उषर्बुध जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है कुछ भजोपदेशकों को भी बुलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री दिलीपकुमार जी एम० ए० वेदालंकार प्रचार कार्य के लिये इस देश में आने वाले हैं। वे दिसम्बर के प्रथम

सप्ताह में इस देश में पहुँच जायेंगे।

प्रतिष्ठित अतिथि वक्ताः—इस वर्ष श्री अगेहानन्द जी भारती, दीवान चमनलाल जी, डा० बी० बी० मलिक, दीनदयाल जी उपाध्याय, तथा डा० नटेश—जो कीनिया आकाशवाणी के लिये सुझाव देने के लिये आये थे, ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए साप्ताहिक सत्संगों में हमें अपने अमूल्य विचारों से लाभ पहुँचाया। इन सभी वक्ताओं का आभारी हूँ।

महात्मा बद्रीनाथ जीः—वृद्धावस्था होते हुए भी आप वैदिक धर्म के प्रचार के लिये हमेशा तत्पर रहते हैं। समय पर वे हमें अपने प्रवचनों से लाभ पहुँचाते रहे हैं जिस के लिये उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलि समर्पण करता हूं। हमारे इस आर्य पितामह को स्वास्थ्य पूर्ण दीर्घायु प्राप्त हो, यही परम पिता प्रभु से प्रार्थना है।

अधिकारी वर्गः—इस वर्ष के अधिकारी निम्न थे—सर्वश्री अछरादास जी (प्रधान), हरबंश राय साही (सीनियर वाइस प्रेसिडेन्ट), धर्मेन्द्र नाथ (उपप्रधान), रामदेव (मन्त्री), खेतराम शर्मा (उपमन्त्री), मूलराज सेठी (उपमन्त्री), अमरनाथ (कोषाध्यक्ष), धर्मेन्द्र कपिला (उपकोषाध्यक्ष), ब्रह्मदेव भारद्वाज (भंडाराध्यक्ष), देवव्रत, रामरक्खा (भवननिरीक्षक। सत्यव्रत भारद्वाज (पुस्तकालयाध्यक्ष), चन्द्र-प्रकाश गुप्ता (वेल्फेर आफिसर)।

सदस्य—सर्वश्री बलदेव कपिला, बलराज कपिला, जसवन्त खोसला, सहदेव मलहोत्रा, जुगल किशोर चतरथ, जुगल किशोर मल्ला, केवलकृष्ण सेठी, केवलकृष्ण आहुलवालिया, सुरेन्द्र विनायक, डी० डी० सूद, ब्रह्मप्रकाश पुरी।

जनकल्याण समितिः—इस समिति की अध्यक्षता में और प्रधान जी के नेतृत्व में इस समिति का कामकाज सुचारु रूप से चलता रहा। विशेष रूप से आफ्रिकन तथा हिन्दू गरीब भाइयों की सारे साल ही राशन द्वारा, कपड़ों द्वारा, तथा धन द्वारा सहायता की जाती रही। इसी प्रकार न्यांजा में बाढ़ आने पर वहां के लोगों की सहायता के लिये धन लगभग शि० ५००/ भिजवाये गये और पर्याप्त तादाद में कपडे भी भिजवाये गये। कई गरीब परिवारों को डाक्टरों द्वारा उनकी परिस्थिति बताकर राहत दिलवाई गई। पालटेक्स मे भी राहत के लिये लिखा-पढ़ी की गई। रायल कालिज में प्रविष्ट विद्यार्थियों के लिये भी बात चीत की गई, इसके सिवाय परदेश में जाने वालों के लिये भी पत्र व्यवहार किया गया, अर्ध सरकारी संस्था कीनिया नेशनल सोशियल सर्विस के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया है, संभवतः उसका फल आगे जाकर मिले। इसी प्रकार बाय स्काउट के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त दुःखी आर्य बन्धुओं के लिये हास्पिटल में सान्त्वना देने का काम तो चालू ही रहा।

आर्यन क्लबः—यह क्लब श्री बी० जमनादास जी के निरीक्षण में अच्छी प्रगति करती रही है। हमें आशा करनी चाहिये, क्लब के सदस्य जहां अपनी शारीरिक उन्नति में रस लेंगे वहां अपनी मानसिक रुचि को परिष्कृत व संस्कारवान् बनाने में भी उतना ही रस लेंगे, भगवान् करे कि यह क्लब खूब उन्नति करे।

स्वा० देवीदास जी पुरीः—

२३ दिसम्बर को जब किरणों ने धरती पर कदम रखा तो किसे पता था कि हमारे "पुरी" जी आज हम से सदा के लिये विदाई ले लेंगे। नैरोबी में रविवार के दिन पुरी जी होते तो वे साप्ताहिक सत्संगों में अवश्य ही उपस्थित होते थे, अन्तरंग सभा के सदस्य न होते हुए और कोई पदाधिकारी न होते हुए भी उन्होंने अपनी

सूझ-बूझ, अनुभव व परामर्श से सदा आर्य समाज व आर्य प्रतिनिधि सभा की जो सेवा की वह सदा गौरव से स्मरण की जावेगी। स्व० पुरी जी ने समय समय पर आर्थिक सहायता भी उदारता से दी वे इण्डियन ऐसोशियेशन और इण्डियन कांग्रेस के भी निष्काम सेवक रहे। स्व० पुरी जी की पुण्य स्मृति में एक शोक सभा का भी आयोजन किया गया था जिसमें नेरोबी की प्रायः सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पण की। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि बहिन सरस्वती जी पुरी और उनकी सन्तानें उनके चरण चिन्हों पर चल रही हैं।

आगामी कार्यकर्ताओं की सेवा में दो शब्द–

१—अन्तरंग सभा के लिये वार्ड प्रणाली के आधार पर सदस्य चुने जाने चाहिये और उन्हें अपने वार्ड के सदस्यों को आर्य समाज की प्रगति में उत्साह पूर्वक भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने का काम सौंपा जाय।

२—अफ्रिकनों में आर्य समाज की ओर से लोक सेवा सम्बन्धी प्रगति प्रारम्भ की जानी चाहिये। इस दिशा में सार्वजनिक अस्पताल की स्थापना विशेष उपयोगी हो सकेगी।

३—भारत में हमारा जो भी धन जमा है उसका ब्याज योग्य अफ्रिकन तथा भारतीय विद्यार्थियों को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा के लिये उपयोग में लाना चाहिये इससे विद्या प्राप्ति के साथ उन्हें वैदिक विचार धारा का परिचय प्राप्त हो सकेगा।

४—स्वाहिली भाषा में वैदिक विचार धारा सम्बन्धी ट्रैक्ट छपवाये जाने चाहिये।

संस्कारों को अधिक सस्ता बनाने के संबन्ध में भी विचार और यत्न करने की जरूरत है।

६—संस्कारों के लिये पुरोहित का प्रबन्ध करवाने के लिये आर्य समाज के कार्यालय वैदिक हाउस में यथोचित सूचना दे दी जानी चाहिये। इस दिशा में आर्य परिवार तथा जन सामान्य से सहयोग की विशेष अपेक्षा है।

७—आगामी अधिकारी वर्ग वस्तु भण्डार से चीजों के लेन देन को अधिक नियमित एवं व्यवस्थित बनाने के लिए अन्तरंग सभा के निश्चयों को क्रियात्मक रूप दें तो अधिक अच्छा होगा।

हमें अपने पुराने कार्यकर्ताओं व सेवकों को भुला न देना चाहिये। कभी कभी उनके यहां जाकर उनके एकाकीपन को भी दूर करना चाहिये और उन्हें अपना बनाना चाहिये।

८—आर्य समाज की मुख्यप्रवृत्ति विद्या-दान है। हमें चाहिये कि हमारे स्कूलों का परिणाम इससे भी अच्छा रहे और दूसरे स्कूलों के मुकाबले में किसी भी बात में कम न रहें, ऐसी कोशिश की जाय।

धन्यवादः—सार्वजनिक कार्य को बृहद् यज्ञ से उपमा दूं तो अनुचित न होगा। प्रतिदिन किया जाने वाला अग्निहोत्र जीवन यज्ञ का प्रतीक है अतः आर्य समाज के सभी कार्य यज्ञ—भावना से ही प्रेरित होकर ही किये जाते हैं। इन सभी यज्ञमयी प्रवत्तियों में "जनता जनार्दन" का सहयोग प्राप्त होता है इसके लिये मैं सभी का धन्यवाद करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

वैसे तो सभी भाइयों ने किसी ने शरीर से, किसी ने मन से और किसी ने धन से और किसी ने सलाह या सूचना द्वारा भी मदद दी है, उन सब का भूरि-भूरि धन्यवाद।

क्षमा याचना

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः॥

भूल करना मनुष्य के लिये संभव है इसी नाते यदि अधिकारी वर्ग से परिवार के किसी

साहित्य समीक्षा

श्रीमद्दयानन्दप्रकाश (सस्ता संस्करण)
प्रणेता श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज।
प्रकाशक—वेद प्रचारक मण्डल
६०/१३ रोहतक रोड, दिल्ली ५
२०×३०/१६ पृष्ठ सं० ५६८ मूल्य २)२५
सजिल्द ३)२५
प्राप्ति स्थान—गुप्ता एण्ड, कम्पनी,
खारी बावली, दिल्ली ६

पाठकों को इस ग्रन्थ का विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। श्री स्वामी जी महाराज का यह लोक प्रिय जीवन चरित्र है जिसे स्वर्गीय ग्रन्थकार ने अपनी श्रद्धा एवं भक्ति की काव्यमय अभिव्यक्ति के लिए लिखा प्रतीत होता है। इस ग्रन्थ के छोटे और बड़े साइज में अनेक संस्करण छप चुके हैं।

प्रकाशक संस्थान ने मंहगाई के इस युग में इसे कम से कम मूल्य पर बढ़िया गैटअप छपाई और विविध चित्रों से युक्त करके जन-सामान्य के लिए सुलभ बनाने का यत्न किया है जिसका समुचित आदर होना चाहिए।

श्री स्वामी जी महाराज के और साधारणतः आर्य समाज के ग्रन्थों में इण्डैक्स (Index) प्रायः नहीं दिए जाते। यह बहुत बड़ी त्रुटि है। जिज्ञासु पाठक को श्री स्वामी जी महाराज और आर्य समाज के किसी विशेष मन्तव्य और संदर्भ को एक ही दृष्टि में जान लेने की कठिनाई होती है।

यदि स्वामी जी महाराज की इस जीवनी के प्रकाशक नए संस्करण में इस त्रुटि को दूर कर सकें तो यह बहुत बड़ा कार्य होगा।

आर्य समाज क्या है—उसने क्या किया ?
अर्थात्
आर्यसमाज की सफलता का बैलेंस शीट
(हिसाब)
लेखक—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट
प्रकाशक आर्यसमाज आगरा नगर
२०×३०/१६ पृ० ३० प्रथम संस्करण
मूल्य)५० पैसे

यह ट्रैक्ट डा० राम पालसिंह प्रकाशन निधि के धन से छपा है।

आर्यसमाज के उद्देश्य और उसके कार्यों का ठीक २ परिचय प्राप्त करने में इस ट्रैक्ट से पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

ट्रैक्ट प्रचारित किए जाने योग्य है।

सदस्य के प्रति असन्तोषजनक बात हो गई हो तो उसके लिये क्षमा प्रार्थी हूं। यह भी नम्रता पूर्वक कहना चाहता हूं कि कोई भी अधिकारी या लोक सेवक किसी का दिल-दुखाना नहीं चाहता पर लोक हित और अनुशासन के लिये कभी कभी अप्रिय कदम भी उठाना पड़ता है। जन सेवक का काम तो तलवार की धार पर चलना होता है विशेष कर लोक तन्त्र में। आशा है आप सब लोक सेवकों के प्रति कभी पैदा हुई कटुता को भुला देंगे।

रामदेव
मन्त्री आर्य समाज नैरोबी

राजधानी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती की धूम, श्रद्धानन्द बलिदान भवन से विशाल शोभा यात्रा और गांधी मैदान में सार्वजनिक सभा

स्वतन्त्रता-संग्राम के वीर सेनानी, शुद्धि आन्दोलन के अग्रदूत तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के संस्थापक अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की ३८वीं बलिदान जयन्ती बड़े समारोह से राजधानी दिल्ली में २५ दिसम्बर को मनाई गई। इसका आयोजन दिल्ली राज्य की सवा सौ आर्य समाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा ने किया था।

ठीक १२ बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन से तीन मील लम्बा विशाल जलूस आरम्भ हुआ। उसमें लगभग १०० मण्डलियों ने भाग लिया। जलूस के आगे-आगे दर्जनों स्कूटर 'ओ३म्' ध्वज लगाये जा रहे थे। फिर केसरी बाना पहने घुड़ सवार जलूस की शोभा बढ़ा रहे थे। उनके पीछे

"वैदिक विज्ञान विमर्श"

लेखक—आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, एम. ए., अध्यक्ष वैदिक अनुसन्धान विभाग (सार्वदेशिक सभान्तर्गत) देहली। मूल्य)७५ पैसे

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आर्य जगत् के एक सुप्रसिद्ध सुयोग्य विद्वान् हैं जो आर्य सिद्धान्त सागर, वैदिक ज्योति, कर्म मीमांसा, वैदिक इतिहास विमर्श, दयानन्द सिद्धान्त विमर्श इत्यादि विद्वत्ता पूर्ण पुस्तकों के लेखक के रूप में भी उत्तम ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने यह वैदिक विज्ञान-विमर्श, नामक पुस्तक सुप्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा जी चतुर्वेदी द्वारा लिखित "वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति" में किये गये महर्षि दयानन्द जी की वेद भाष्य शैली विषयक कुछ आक्षेपों तथा अवतारवाद, जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था, शालिग्राम पूजा, श्राद्धादि के समर्थन में लिखे अंशों के उत्तर में लिखी है। यद्यपि महामहोपाध्याय जी ने महर्षिदयानन्द के लिये आदर का भाव प्रकट किया और यह स्वीकार किया था कि "वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हैं। इन्होंने वेदों के गौरव की ओर आर्य जाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की है। इस कारण से उनका भी उपकार विशेष माननीय है। वैज्ञानिक अर्थ प्रकट करने का इन्होंने यत्न भी किया। (वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति पृष्ठ १८) तथापि, 'किन्तु दुर्भाग्य से वैज्ञानिक अर्थों का कोई क्रम तब भी हाथ न लगा। किसी किसी मन्त्र में प्रकरण के अन्वय की बात तो दूर है, उस मन्त्र के पूर्वापर सम्बन्ध की भी परवाह न कर खास पदों से कोई वैज्ञानिक संकेत निकाल देने से या तार, रेल, मोटर, वायुयान बैलून आदि के नाम मन्त्रों में दिखा देने से वैज्ञानिकों को सन्तोष नहीं हो सकता।"

इत्यादि कई गम्भीर आक्षेप भी कर दिये थे जिन से विद्वानों में भ्रम फैलने की संभावना थी। अतः आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने ऐसे स्थलों का सप्रमाण युक्ति युक्त उत्तर देने का सफल प्रयास किया तथा वेदों में विज्ञान को भी अच्छी तरह से इस ग्रन्थ में दिखाया है जिस के लिये वे प्रशंसा और साधुवाद के पात्र हैं। विज्ञान के नाम पर किये मूर्ति पूजा, श्राद्ध, अवतार वाद आदि के समर्थन का भी सुयोग्य लेखक ने सप्रमाण बड़ा उत्तम निराकरण किया है। ब्राह्मणों के वेदत्व, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, जन्मना वर्ण व्यवस्था, शालिग्राम पूजा, राधा कृष्ण पूजा तथा शिवोपासना की तथा कथित वैज्ञानिकता का मान्य शास्त्री जी ने इस पुस्तक को १० अध्यायों में विभक्त करके उत्तम निराकरण किया तथा आक्षेपों का युक्ति प्रमाण संगत समाधान किया है। सब विद्वानों को निष्पक्षपात भाव से यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये। हम इसका विद्वानों में विशेष प्रचार चाहते हैं। सार्वदेशिक सभा के वैदिक अनुसन्धान विभाग ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके प्रशंसनीय कार्य किया है।

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

एक जीप में ओ३म् ध्वज विराजमान था। तत्पश्चात् आर्य नेताओं की मण्डली जलूस का नेतृत्व कर रही थी और बैण्ड की धुन में अपने गीतों का राग मिला रही थी। फूलों से सजी हुई ट्राली में श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी हवन-यज्ञ करवा रहे थे जो इस वर्ष के जलूस का विशेष आकर्षण था। पीछे सहस्रों की संख्या में केसरी पगड़ी, टोपी, साड़ी-दुपट्टा पहने आर्य नर-नारी, बाल-वृद्ध मण्डलियों में गाते-बजाते इस प्रकार चल रहे थे कि मानो उत्साह का ठाठे मारता समुद्र उमड़ पड़ा हो।

वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय के नारों से आकाश गूंज रहा था और 'आर्यसमाज के हुतात्मा अमर रहे', 'चीनी और पाकिस्तानी गुण्डों को मार भगायेंगे', आदि नारे आर्य युवकों के उत्साह का प्रकटीकरण कर रहे थे। आर्य विद्यालयों के बैण्ड जलूस को शोभायमान कर रहे थे और ट्रकों की पंक्ति आर्यों के वीर संन्यासी के प्रति प्रेम व श्रद्धा का परिचय दे रही थी। जलूस का संचालन श्री लाला रामगोपाल जी शाल वाले प्रधान, श्री नारायणदास जी कपूर प्रधानमन्त्री तथा अन्य अधिकारी कर रहे थे और उसमें सर्वश्री विद्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ, प्रो० रामसिंह जी, चौ० देशराज जी, पं० रघुवीर सिंह शास्त्री, ठाकुर अमरसिंह जी, ला० गणपत राय जी तलवार, बहन पुष्पावती जी वाराणसी' प्रो० उत्तमचन्द जी शरर पानीपत इत्यादि नेता सम्मिलित थे।

जलूस नयाबांस, लालकुआं, नई सड़क, चान्दनी चौक, दरीबा होता हुआ गान्धी मैदान में ४ बजे पहुँचा जहां श्री कर्नल सत्यव्रत जी, उप कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय व संसत्सदस्य की अध्यक्षता में एक विराट् सार्वजनिक सभा हुई। उसमें सर्वश्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ, राजा रणंजयसिंहजी संसत्सदस्य, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, पं० वेदव्रत जी विद्यालंकार तथा श्री करतारसिंह जी 'गुलशन' ने स्वामी जी के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्हें ऐसी मौत मिली जिसके लिये लोग तरसते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी सच्चे अर्थों में राष्ट्र-नायक तथा जाति के सभी रोगों के महान् चिकित्सक थे उनके जीवन में ब्राह्मणत्व व क्षत्रियत्व और धर्म व राजनीति का सुन्दर समन्वय हुआ था। उन्होंने अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए शिक्षा-क्षेत्र में एक नई दिशा दिखाई और आज से ६० वर्ष पूर्व यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दी माध्यम से शिक्षा दी जा सकती है। शुद्धि का अमृत पिला कर उन्होंने हजारों भूले-भटकों को सच्ची राह दिखाई। आर्यसमाजी अपने भाइयों को ईसाई स्कूलों में न भेजने की आज प्रतिज्ञा करें और ठोस कार्य करने में जुट जायं, यह उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

अध्यक्ष श्री कर्नल सत्यव्रत जी ने उस बलिदान के देवता के चरणों में भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे दूसरे के लिये जिये, अतः अमर हो गये। उनके जीवन में आत्म-त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी थी, वकील मुन्शीराम से वे महात्मा मुन्शीराम बने और स्वामी श्रद्धानन्द बन कर उन्होंने अपना सर्वस्व धर्म, जाति व देश के अर्पण कर दिया। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय जी पर जब ब्रिटिश साम्राज्य की दृष्टि पड़ी और उनके साथियों ने उनको छोड़ दिया, तो स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हें अपना कर अपनी निर्भीकता व सच्चे आर्यत्व का प्रमाण दिया।

सभा के आरम्भ में श्री ला० रामगोपाल जी ने आर्यसमाज के महान् लेखक, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् बाल ब्रह्मचारी श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के निधन पर हार्दिक संवेदना प्रगट करते हुए शोक प्रस्ताव रखा जिसे सभी ने खड़े होकर पारित किया।

ओम्प्रकाश
मंत्री

[illegible]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

श्रीयुत मन्त्री जी, आर्य समाज .. ..
श्रीमन्नमस्ते ।

स्वामी विद्यानन्द विदेह के प्रवचनों व्याख्यानों, और वैयक्तिक वार्त्तालाप की प्रवृत्ति और सामग्री के महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व, आर्यसमाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रमाणित हो जाने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १९५५ से आर्य समाज की वेदी उनके लिए बंद की हुई है। उनकी यह मान्यता रही है कि वे जो कुछ कहते या लिखते हैं उसमें कोई आक्षेपयोग्य अवैदिक बात नहीं होती। उनका व्यवहार भी इस भावना और मान्यता के अन्तर्गत एक प्रकार की चुनौती का रहा है। उनके नित्य बदलते हुए व्यवहार से सभा आश्वस्त न हो सकी कि वे अपनी गति-विधि में इस प्रकार का सुधार कर लेंगे कि जिससे प्रतिबन्ध को बनाए रखने की आवश्यकता न रहे।

हर्ष है कि आर्यसमाजों ने सार्वदेशिक सभा के आदेश का भली भांति पालन किया और वे अपनी अनुशासनप्रियता का भव्य परिचय दे रहे हैं।

सभा का आदेश यह भी है कि न केवल आर्यसमाजें उन्हें अपनी वेदी ही न दें अपितु आर्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उनके प्रवचनों, व्याख्यानों आदि का अन्यत्र न तो प्रबन्ध करें और न उनमें भाग लें। इस आदेश के परिपालन में कहीं २ से व्यवधान हो जाने की शिकायतें सभा कार्यालय में पहुंचीं जिनका सभा ने कड़ा नोटिस लिया और आदेश का अतिक्रमण करने वालों पर स्पष्ट किया कि सभा इस प्रकार के व्यवधान पर सम्बद्ध समाजों और व्यक्तियों के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही कर सकती है अतः सभा को इस पग के उठाने के लिए विवश न किया जाय। इस दिशा में आर्य समाजें और आर्य जन बड़े सजग देख पड़ते हैं।

स्वामी विद्यानन्द विदेह का अजमेर से प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक 'न्याय' अनर्गल प्रलाप करता रहता है। उसकी आलोचना का स्तर इतना असत्यपूर्ण एवं गिरा हुआ है कि उसके कारण उसके संपादक को देहली के सरकारी न्यायालय में क्षमा मांगनी पड़ी। आश्चर्य यह है कि पश्चात्ताप की भावना व्यक्त करने के बजाय उसने निर्लज्जतापूर्वक लिख मारा कि अधिक गन्दगी की अभिव्यक्ति और दुर्गन्धि के प्रसार को रोकने के लिए उसने क्षमा याचना कर ली थी आर्य समाज का शायद ही कोई उल्लेखनीय व्यक्ति या संस्थान बचा हो जिसके ऊपर उसने कीचड़ न फेंकी हो।

अतः आर्य समाजों और आर्य जनों को सावधान किया जाता है कि वे 'न्याय' के असत्य पूर्ण और अनर्गल लेखों पर जरा भी ध्यान न दें क्योंकि वे स्वामी विद्यानन्द विदेह के लिए वेदी बन्द रखे जाने के कारण विद्वेष जनित होते हैं। साथ ही स्वामी विद्यानन्द जी विदेह को आर्य समाज की वेदी न देने और उनके प्रवचनों एवं व्याख्यानों आदि का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रबन्ध करने कराने और उनमें भाग न लेने में सावधान रहें। सभा का यह भी आदेश है कि जिन उत्सवों और समारोहों में स्वामी विद्यानन्द विदेह को आमंत्रित किया जाय उनमें आर्य समाज के उपदेशक भाग न लें। इस आदेश का भी पूर्णतया पालन होना चाहिए।

इस विज्ञप्ति में 'न्याय' पत्र का उल्लेख होने से यह न समझा जाना चाहिए कि न्याय को कोई महत्त्व प्राप्त है। सभा और समझदार जनता की दृष्टि में उसका कोई महत्व नहीं है। सर्व-साधारण जनता को वस्तुस्थिति से अवगत करना सभा का कर्तव्य है। इसी के कारण विज्ञप्ति में प्रसंग वशात 'न्याय' का उल्लेख करना पड़ा है।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

श्रीयुत मन्त्री जी, आर्य समाज ....

श्रीमन्नमस्ते ।

स्वामी विद्यानन्द विदेह के प्रवचनों व्याख्यानों, और वैयक्तिक वार्त्तालाप की प्रवृत्ति और सामग्री के महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व, आर्यसमाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रमाणित हो जाने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १६५५ से आर्य समाज की वेदी उनके लिए बंद की हुई है। उनकी यह मान्यता रही है कि वे जो कुछ कहते या लिखते हैं उसमें कोई आक्षेपयोग्य अवैदिक बात नहीं होती। उनका व्यवहार भी इस भावना और मान्यता के अन्तर्गत एक प्रकार की चुनौती का रहा है। उनके नित्य बदलते हुए व्यवहार से सभा आश्वास्त न हो सकी कि वे अपनी गति-विधि में इस प्रकार का सुधार कर लेंगे कि जिससे प्रतिबन्ध को बनाए रखने की आवश्यकता न रहे।

हर्ष है कि आर्यसमाजों ने सार्वदेशिक सभा के आदेश का भली भांति पालन किया और वे अपनी अनुशासनप्रियता का भव्य परिचय दे रहे हैं।

सभा का आदेश यह भी है कि न केवल आर्यसमाजें उन्हें अपनी वेदी ही न दें अपितु आर्य जन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उनके प्रवचनों, व्याख्यानों आदि का अन्यत्र न तो प्रबन्ध करें और न उनमें भाग लें। इस आदेश के परिपालन में कहीं २ से व्यवधान हो जाने की शिकायतें सभा कार्यालय में पहुंचीं जिनका सभा ने कड़ा नोटिस लिया और आदेश का अतिक्रमण करने वालों पर स्पष्ट किया कि सभा इस प्रकार के व्यवधान पर सम्बद्ध समाजों और व्यक्तियों के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही कर सकती है अतः सभा को इस पग के उठाने के लिए विवश न किया जाय। इस दिशा में आर्य समाजें और आर्य जन बड़े सजग देख पड़ते हैं।

स्वामी विद्यानन्द विदेह का अजमेर से प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक 'न्याय' अनर्गल प्रलाप करता रहता है। उसकी आलोचना का स्तर इतना असत्यपूर्ण एवं गिरा हुआ है कि उसके कारण उसके संपादक को देहली के सरकारी न्यायालय में क्षमा मांगनी पड़ी। आश्चर्य यह है कि पश्चात्ताप की भावना व्यक्त करने के बजाय उसने निर्लज्जतापूर्वक लिख मारा कि अधिक गन्दगी की अभिव्यक्ति और दुर्गन्धि के प्रसार को रोकने के लिए उसने क्षमा याचना कर ली थी आर्य समाज का शायद ही कोई उल्लेखनीय व्यक्ति या संस्थान बचा हो जिसके ऊपर उसने कीचड़ न फेंकी हो।

अतः आर्य समाजों और आर्य जनों को सावधान किया जाता है कि वे 'न्याय' के असत्य पूर्ण और अनर्गल लेखों पर जरा भी ध्यान न दें क्योंकि वे स्वामी विद्यानन्द विदेह के लिए वेदी बन्द रखे जाने के कारण विद्वेष जनित होते हैं। साथ ही स्वामी विद्यानन्द जी विदेह को आर्य समाज की वेदी न देने और उनके प्रवचनों एवं व्याख्यानों आदि का प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में प्रबन्ध करने कराने और उनमें भाग न लेने में सावधान रहें। सभा का यह भी आदेश है कि जिन उत्सवों और समारोहों में स्वामी विद्यानन्द विदेह को आमंत्रित किया जाय उनमें आर्य समाज के उपदेशक भाग न लें। इस आदेश का भी पूर्णतया पालन होना चाहिए।

इस विज्ञप्ति में 'न्याय' पत्र का उल्लेख होने से यह न समझा जाना चाहिए कि न्याय को कोई महत्त्व प्राप्त है। सभा और समझदार जनता की दृष्टि में उसका कोई महत्व नहीं है। सर्व-साधारण जनता को वस्तुस्थिति से अवगत करना सभा का कर्तव्य है। इसी के कारण विज्ञप्ति में प्रसंग वशात 'न्याय' का उल्लेख करना पड़ा है।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

ओ३म्

कार्यालय—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१

आर्य पर्व सूची

(सम्वत् २०२१-२०२२ सन् १९६५)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजों की सूचना के लिए प्रतिवर्ष स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् १९६५ की सूची निम्न प्रकार है :—

क्रम सं०	नाम पर्व	सौर तिथि	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तिथि	दिन
१	मकर संक्रान्ति	१-१०-२०२१	पौष शु० १२ सं० २०२१	१४-१-६५	गुरुवार
२	वसन्त पंचमी	२४-१०-२०२१	माघ शु० ५ सं० २०२१	६-२-६५	शनिवार
३	सीताष्टमी	१२-११-२०२१	फा० कृ० ८ सं० २०२१	२३-२-६५	मंगलवार
४	दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि)	१८-११-२०२१	फा० कृ० १४ सं० २०२१	१-३-६५	सोमवार
५	लेखराम तृतीया	२३-११-२०२१	फा० शु० ३ सं० २०२१	६-३-६५	शनिवार
६	वसन्त नवसस्येष्टि (होली)	३-१२-२०२१	फा० शु० १५ सं० २०२१	१६-३-६५	मंगलवार
७	नवसम्वत्सरोत्सव एवं आ० स० स्था० दिवस	२०-१२-२०२१	चै० शु० १ सं० २०२२	२-४-६५	शुक्रवार
८	रामनवमी	२८-१२-२०२१	चै० शु० ९ सं० २०२२	१०-४-६५	शनिवार
९	हरितृतीया	१५-४-२०२२	श्रा० शु० ३ सं० २०२२	३०-७-६५	शुक्रवार
१०	श्रावणी उपाकर्म सत्या० बलिदान दिवस	२८-४-२०२२	श्रा० शु० १५ सं० २०२२	१२-८-६५	गुरुवार
११	कृष्ण जन्माष्टमी	५-५-२०२२	भाद्रपद कृ० ८ सं० २०२२	२०-८-६५	शुक्रवार
१२	विजयदशमी	२०-६-२०२२	आ० शु० १० सं० २०२२	५-१०-६५	मंगलवार
१३	ऋषि निर्वाणोत्सव (दीपावली)	८-७-२०२२	का० कृ० ३० सं० २०२२	२४-१०-६५	रविवार
१४	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	९-९-२०२२		२४-१२-६५	शुक्रवार

इन पर्वों को उत्साह पूर्वक ससमारोह मना कर इन्हें आर्य समाज के प्रसार और वैदिक धर्म के प्रचार का महान् साधन बनाना चाहिए।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

दिनांक २८-१२-१९६४

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१	ऋग्वेद संहिता सजिल्द	१०)
२	अथर्ववेद संहिता सजिल्द	८)
३.	यजुर्वेद संहिता सजिल्द	४)
४.	सामवेद संहिता सजिल्द	३)
५	सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७	संस्कार विधि	१।)
८.	आर्याभिविनय	।॥)
९.	कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश	३।)
१०.	मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।≈)
११.	वैदिक ज्योति	५)२५
१२.	पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१३.	शिक्षण तरंगिणी	४)
१४.	वेदविरुद्ध मत खण्डन	)३५
१५.	सत्य धर्म विचार	)२५
१६.	शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण	)२५
१७.	भ्रमोच्छेदन	)२०
१८.	काशी शास्त्रार्थ	)२०
१९	भ्रान्ति निवारण	)२५
२०.	स० प्र० आन्दोलन का इतिहास	)२५
२१.	विवाह पद्धति	)५०
२२	गोकरुणानिधि	)१६
२३.	आर्य वीर दल बैजज	)३१ जोड़ी
२४.	आर्य समाज प्रवेश पत्र	१) सै०

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा ।

१०) से २५) रु० तक २॥ प्रतिशत
२५) से ऊपर २५०) तक २० प्रतिशत
२५०) से ऊपर १०००) तक २५ प्रतिशत
१०००) से ऊपर २०००) तक ३० प्रतिशत
२०००) से ऊपर ३३½ प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

२५.	यम पितृ परिचय	२)
२६	वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
२७.	वैदिक राष्ट्रीयता	।)
२८.	अभ्यास और वैराग्य	१)६५
२९.	बाल संस्कृति सुधा	)५०
३०.	वैदिक ईशवन्दना	।≈)॥
३१.	वैदिक योगामृत	॥≈)
३२.	दयानन्द दिग्दर्शन	॥।)
३३.	वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	।।)
३४.	निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
	निज जीवनवृत्त वनिका सजिल्द	)७५
३५.	वृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
३६.	बालजीवन सोपान	१।।
३७.	छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
३८.	दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥)
३९.	वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत में)	३)
४०.	वैदिक वन्दन	५)
४१.	भ्रम निवारण	)३०
४२.	वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द	२)
४३	वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द	२)५०

ओ३म् ध्वज नैट मूल्य पर

४७.	ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०॥ इंच मूल्य	२)५०
४८.	ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच ,,	४)२५
४९.	ओ३म् ध्वज४५ इंच × ६७॥ इंच ,,	६)५०

मगाने की दशा में १) अगाऊ भेज देवें ।

आर्यसमाजों को अविलम्ब आर्डर भेज कर प्रतियां सुरक्षित करा लेनी चाहिए जिससे बादमें उन्हें पुस्तके न मिलने की शिकायत का अवसर न रहे ।

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

५०	कर्मव्यवस्था	४)
५१.	मन मन्दिर	१)
५२	दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।-।
५३.	चरित्र निर्माण	)१५
५४	ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
५५	.वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
५६.	दौलत की मार	।)
५७.	अनुशासन का विधान	।)
५८.	धर्म और धन	।)

विविध

५९.	सत्यार्थप्रकाश (उर्दू) मूल्य	३)५०
६०.	उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में	
	ऋषि दयानन्द अजिल्द	)६२
	,, ,, सजिल्द	)७५

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

४४.	योग रहस्य	१।)
४५.	मृत्यु और परलोक	१)
४६.	विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥≈)

३४ उपनिषदें —
ईश ।≈) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।=) मुण्डक ।=)
माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)
३५ बृहदारण्यकोपनिषद् ३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

३६ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १॥)
आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध १॥)
३७ वैदिक संस्कृति १)
३८ मुक्ति से पुनरावृत्ति ।≈)
३९ आर्यसमाज और सनातनधर्म ।≈)
४० आर्यसमाज की नीति ।)

श्री प० इन्द्रजी द्वारा लिखित

४१ आर्यसमाज का इतिहास पहला भाग २)
४२ „ दूसरा भाग दर ३)
४३ आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण -)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

४४ आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥=)
४५ कथा माला ॥)
४६ सन्तति निग्रह १)
४७ नया संसार ≡)
४८ आदर्श गुरु शिष्य ।)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

४९ स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १)
५० भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥)
५१ हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)
५२ महापुरुष कीर्तनम् ≈)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

५३ आर्यसमाज के महाधन २॥)
५४ वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

५५ धर्म और उसकी आवश्यकता १)
५६ वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप १॥)
५७ इजहारे हकीकत (उर्दू में) ।॥≈)
५८ सत्य निर्णय १।)

पं० मदनमोहन विद्यासागर कृत

५९ जन कल्याण का मूल मन्त्र ।)
६०. संस्कार महत्त्व ॥)
६१. वेदों की अन्त साक्षी का महत्त्व ॥≈)
६२. आर्य घोष (परिवर्द्धित संस्करण)) ६० पै०
६३ आर्य स्तोत्र ॥)

अन्य विद्वानों कृत

६४ विरजानन्द प्रकाश (प भीमसेन शास्त्री) २)
६५ स्वराज्य दर्शन (श्रीप० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
६६ राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
६८ भूमिका प्रकाश (संस्कृत में)
(उ० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)
६९ एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥।)
७० दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १।)
७१ भजन भास्कर
(सग्रहकर्त्ता डा०हरिशंकर शर्मा कविरत्न) १।)
७२ सनातन शुद्धिशास्त्र आर्योंका चक्रवर्ती राज्य २)
७३ आर्य डायरेक्टरी (पुरानी) १।)
७४ सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य
विवरण अजिल्द ≈)
७५ आर्य पर्व पद्धति (प० भवानीप्रसाद कृत) १।)
७६ वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त))३७
७७ दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश
(ले० आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) २)५०
७८ सन्ध्या पद्धति)१≈
७९ सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास ७५
८० सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
८१ आर्य महासम्मेलनो के प्रस्ताव)६०
८२ आर्य महासम्मेलनो के अध्यक्षीय भाषण १)
८३ आर्यसमाज का परिचय १)
८४ पाथ आव परफेक्शन (अंगरेजी))४०
८५ महर्षि दयानन्द सरस्वती का यात्रा चित्र)५०

श्री प० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

८६ गीता विमर्श ॥।)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

८७ ईसाई षड्यन्त्र ।)
८८ ईसाई पादरी उत्तर दे दर २) सैकड़ा

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

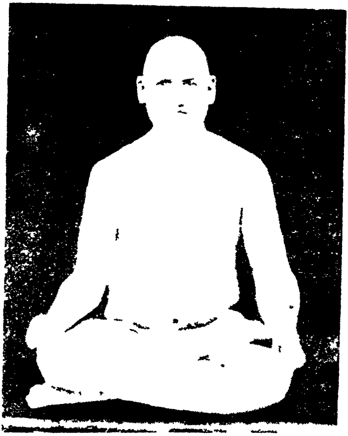
सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली-७में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित

गुरुकुल कांगड़ी

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



महर्षि दयानन्द सरस्वती

(जिनका बोध दिवस १ मार्च १९६५ को मनाया जायगा।)

वार्षिक मूल्य ६)   सृष्टिसम्वत्   दयानन्दाब्द   विदेश से वार्षिक ८) या १२ शि०
वर्ष ४०   १९७२९४९०६५   १४०   फरवरी १९६५   माघ २०२१   अंक १२

—: विषय सूची :—

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीनतम प्रकाशन

वेद सन्देश—यह पुस्तक वेदों के चुने हुए ३०० मन्त्रों का अर्थ सहित उत्कृष्ट संग्रह है। विषयों का चुनाव बहुत अच्छा है। मूल्य ७५ पैसे।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक में वेदों की ५०० सूक्तियां अर्थ सहित प्रस्तुत की गई हैं इन सूक्तियों को पढ़ने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लड़कों और लड़कियों का अमित लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है। मूल्य ३० पैसा।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक में विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनों का संग्रह उपस्थित किया गया है। मूल्य ३० पैसा।

❀ सम्पादक
रामगोपाल शाल वाले सभा मन्त्री

❀ सहायक सम्पादक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७४७७१

❀ मुद्रक
सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली

❁ ओ३म् ❁

सार्वदेशिक

अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने योग्य बन जाओ

ईश्वर कृपा से सब कुछ होगा परन्तु मैं न देख सकूंगा। —महर्षि दयानन्द

"मुझे लोग कहते हैं जो कोई आता है आप उसे ही भरती कर लेते हैं।" मेरा इस विषय में स्पष्ट उत्तर है कि मै वेद ही को सर्वोपरि मानता हूं। वेद ही ऐसी पुस्तक है जिसके झण्डे तले सारे आर्य आ सकते हैं। इसलिए जो मनुष्य, कह दे कि मैं वेदों को मानता हूँ और आर्य हूँ उसे आर्य समाज में सम्मिलित कर लो। ऐसे विश्वासी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। लोग भिन्नता पर अधिक दृष्टिपात करते हैं परन्तु आप लोग परस्पर भेद-मूलक बातों की अपेक्षा मेल-मूलक बातों पर अधिक ध्यान दो। तुच्छ भेदों और विरोधों को त्याग कर मेल-जोल की बातों में मिलाप सम्पादन करो। आपस में मिलती बातों में मिल जाने से विरोध और भेद स्वयमेव मिट जाते हैं।

अब आपको अपना कर्त्तव्य आप पालन करना चाहिये। **अपने जीवन को ऊंचा बनाओ और अपनी आवश्यकताओं को आप पूर्ण करो।** इस समय तो अवस्था यह है कि जब कोई प्रबल प्रतिपक्षी आ जाता है तो आप तार पर तार देकर मुझे ही बुलाते हैं। किसी संशय के उत्पन्न होने पर मुझ पर ही अवलम्बित रहते हो, उपदेश कराने हों तो मुझ पर ही निर्भर करते हो। जब कभी आप में परस्पर की फूट, फूट निकलती है, वैमनस्य बढ़ जाता है, अनबन बढ़ने लगनी है और वैर विरोध बढ़ जाता है तो उसे मिटाने की चिन्ता मुझे ही करनी पड़ती है। मै ही आकर आप में शान्ति स्थापन करता हूं। आपके अन्तःकरणों में अवनतिकारी अन्तर नहीं पड़ने देता। आपके पारस्परिक स्नेह के सुकोमल सूत्र को छीजने नहीं देता **परन्तु महाशयो! मैं कोई सदा नहीं बना रहूंगा। विधाता के नियम न्याय में मेरा शरीर भी क्षण-भंगुर है। काल अपने कराल पेट में सबको पचा डालता है। अन्त में इस देह के कच्चे घड़े को भी उसके हाथ टूटना है।**

"सोचो! यदि अपने पांव पर खड़ा होना नहीं सीखोगे तो मेरे आँख मीचने के पीछे क्याकरोगे? अभी से अपने को सुसज्जित कर लो। स्वावलम्बन के सिद्धान्त का अवलम्बन करो। अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के योग्य बन जाओ। किसी दूसरे के सहारे की अपेक्षा अपने पर ही निर्भर करो।

मुझे विश्वास है कि आप में ऐसे अनेक सज्जन उत्पन्न होंगे जो उत्तमोत्तम कार्य कर दिखाओगे। प्राणपण से अपने पवित्र प्रणों की पालना करेंगे। आर्य समाज का बड़ा विस्तार हो जायगा। कालान्तर में ये वाटिकाएं हरी-भरी फूली-फली और लहलहाती दिखाई देंगी। ईश्वर कृपा से यह सब कुछ होगा परन्तु मैं नहीं देख सकूंगा।"

(आर्य समाज मेरठ के उत्सव पर दिये गये महर्षि के भाषण का अवतरण)

सम्पादकीय

हमारे गणतंत्र की रक्षा कैसे हो ?

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि महाभारत से पूर्व न केवल भारत में ही अपितु समस्त भूमण्डल में वैदिक धर्म व्याप्त था और चक्रवर्ती राज्य कायम था। वह युग मानव-जाति का स्वर्णिम युग था, सर्वत्र सुख-शांति व्याप्त थी। प्रजा धन-धान्य और ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण सदाचारी थी। न उसे खाने पीने की और न सुरक्षा की ही चिन्ता थी। प्रजा और शासन दोनों ही निश्चिन्त होकर उन्नति की दिशा में अग्रसर रहते थे। उस समय मानव-जाति की वैयक्तिक सामाजिक और राजनैतिक उन्नति का सूर्य अपनी प्रखरतम आभा के साथ देदीप्यमान था।

समय ने पलटा खाया। महाभारत से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व ह्रास की प्रक्रिया आरम्भ हुई जिसकी विकृति महाभारत के रूप मे संसार के सामने अत्यन्त स्थूल रूप मे आई महाभारत से न केवल वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति को ही धक्का लगा अपितु भारत वर्ष के आध्यात्मिक और लौकिक वर्चस्व की भी क्षति हुई।

महाभारत के पश्चात् आर्यों का चक्रवर्ती राज्य छिन्न-भिन्न हुआ और संसार खण्ड राज्यों में बटकर कलह-फूट और अशान्ति का सदैव के लिए घर बन गया। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि वैदिक धर्म सिकुड़ कर भारत में ही अवशिष्ट रह गया।

महाभारत के पश्चात् हम धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से पतित बलहीन बनते चले गये। इस प्रकार की अवांछनीय स्थिति, हिंसा तथा सामाजिक अन्याय की प्रबलता की प्रतिक्रिया स्वरूप बौद्धमत का प्रादुर्भाव हुआ। उसके कारण जो खराबियां समाप्त हुई उनसे अधिक भयानक खराबियां उसके कारण उत्पन्न हुईं। निस्सन्देह देश-देशान्तर मे उसने आर्य-संस्कृति का सन्देश प्रसारित किया। परन्तु एक बड़ी हानि यह हुई कि इसने देशवासियों को अहिंसा का गलत दृष्टिकोण देकर उन्हे निकम्मा और बलहीन भी बना दिया। यह सत्य है कि यदि बौद्धमत की अहिंसा के प्रचार से देश बलहीन न बनता तो हम सहज ही विदेशियों के पादाक्रान्त न होते।

बौद्ध धर्म ने जहां 'सब्ब खणिकं सब्ब दुःखम्, कह कर संसार के प्रति लोगों मे उदासीनता पैदा कर दी वहां शंकराचार्य के 'ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या' के विचार ने जीवन को निराशावादी बना दिया। व्यक्तिवाद को इस विचार ने परमात्मा पर पहुँचा दिया और समष्टि का भावना को समाप्त कर दिया। व्यक्ति और समाज का संतुलन समाप्त होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ता का साम्राज्य स्थापित हो गया।

यह स्थिति भी चिरकाल तक कायम न रह सकी और न रह सकती थी। देश की राजनैतिक प्रभुता विक्रमादित्य आदि उन राजाओं के हाथ मे आई जिन्होंने देश को वैदिक आदर्शों के आधार पर राज्य-प्रशासन देने का यत्न किया। छत्रबल पुन. प्रतिष्ठित हुआ और देश मे भौतिक योग-क्षेम और राजनैतिक सुरक्षा की दृष्टि से स्वर्ण युग की झांकी दिखाई पड़ी। परन्तु वे शासक भी देश की धार्मिक और सामाजिक अव्यवस्था को दूर न कर सके। इतना ही नहीं वे स्वयं भी इसके प्रवाह में बह गये।

इस उदासीनता का फल यह हुआ कि भारत वर्ष विदेशियों मुसलमानों और ईसाइयों

की राजनैतिक पराधीनता के बन्धन में बन्ध गया।

परमात्मा की कृपा और देशवासियों के उद्योग, तप-त्याग और बलिदान से एक हजार वर्ष के बाद हम विदेशियों की राजनैतिक दासता के जुवे को उतार फेंकने में समर्थ हुए।

हमें स्वतन्त्र हुए लगभग १८ वर्ष हो रहे हैं। इन वर्षों में प्रजा को सुराज्य की प्रसन्नता की अनुभूति नहीं हुई है। हमारा नैतिक पतन सीमा को लांघ गया है और बाहरी शत्रुओं से देश की सुरक्षा को खतरा बढ़ गया है। एक ओर चीन का खतरा बना हुआ है दूसरी ओर पाकिस्तान का खतरा भी मुंह बाये खड़ा है। देश के अन्दर चीन समर्थक कम्युनिस्ट, विदेशी ईसाई पादरी और पाकिस्तान के प्रच्छन्न एजेन्ट खतरा बने हुए हैं।

प्रसन्नता है कि भारत सरकार ने चीन समर्थक कम्युनिस्टों को नजरबन्द करके देश की आन्तरिक सुरक्षा की दिशा में सही कदम उठाया है। देश की सुरक्षा के लिए भारत सरकार को उचित है कि पाकिस्तानी एजेन्टों और विदेशी ईसाई पादरियों को भी नियंत्रण में रखें।

इस समय देश की सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार का उन्मूलन, खाद्य समस्या का सन्तोषजनक समाधान और आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों से देश की सुरक्षा बनाये रखना है। हमारे प्रशासन को इस दिशामें सतर्क और सक्रिय होना चाहिए और जनता के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने पर भी समान रूप से ध्यान देना चाहिए।

परमात्मा हमें देश के गणतन्त्र की रक्षा करने का बल दें।

रामगोपाल

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

शेख अब्दुल्ला की उछल-कूद

पहिया अपने पूरे चक्कर में आ गया है। शेख अब्दुल्ला ने मुस्लिम हितों के उपासक के रूप में अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया था। महात्मा गाधी और नेहरू जी के सम्पर्क में आजाने पर वे साम्प्रदायिकता से मुक्त हो गए थे और उनके नेतृत्वमें बनी मुस्लिम कान्फ्रेंसकी काया पलट होकर उसने नेशनल कान्फ्रेंस का रूप ले लिया था। देश के विभाजन के समय नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं ने मुस्लिम लीग और मि० जिन्ना की चुनौतीका डटकर मुकाबला किया था। शेख अब्दुल्ला ने कहा था कि मैं कश्मीर को भारतीय धर्म निरपेक्ष वाद की रसायनशाला बनाना चाहता हूं, उसके बाद अनेक घटनायें हुई जो शेख महोदय के लिए बड़ी परेशानी का कारण हुई। अत्यन्त परेशानी की अवस्था में भी ऐसा आभास नहीं हुआ कि शेख साहब राष्ट्रवादी नहीं रहे हैं।

श्रीयुत नेहरू के देहावसान के समय उन्होंने जो भाव प्रकट किए थे उनसे प्रकट था कि हिन्दू-मुस्लिम एकता और भारत पाकिस्तान की मित्रता सम्बन्धी उनकी मूल्यवान आस्थाओं में कोई कमी नहीं हुई है। परन्तु नेहरू जी के प्रभाव के हट जाने पर शेख धीरे २ परन्तु दृढ़ता के साथ उसी टाइप के बनते गए जो वे प्रारम्भ में थे।

यद्यपि वह इण्डियन नेशनल कांग्रेस के प्रबल प्रशंसक कभी नहीं रहे तथापि वे कभी उसके विरोधमें भी खड़ेनहीं हुएथे। कांग्रेसके दुर्गापुरके अधिवेशन में हुए इस निश्चय से कि—जम्मू और कश्मीर में भी कांग्रेस का कार्य विस्तृत

किया जाय, शेख के हृदय पर गहरी चोट लगी प्रतीत होती है। उन्हें स्पष्टत यह भय है कि कशमीर राज्य मे कांग्रेस का कार्य प्रारभ हो जाने से उनका रहा सहा प्रभाव जाता रहेगा। उनके इस फतवे का कि—कशमीर के मुसलमानों को कांग्रेस का पूर्णत बायकाट करना चाहिए और जो मुसलमान कांग्रेस का सदस्य बनेगा वह मुसलमान न रहेगा कारण उपर्युक्त भय ही देख पडता है। भारतीय सविधान की धारा ३५६ और ३५७ कशमीर और जम्मू मे भी लागू करने का भारत सरकार ने निश्चय किया है। इस निश्चय का प्रतिवाद करने के लिए श्रीनगर मे विरोध दिवस मनाया गया। उस दिवस पर आयोजित सार्वजनिक सभा मे शेखने जो भाषण दिया उसकी भावना और भाषा साम्प्रदायिक है। उसमे यह पुराना राग अलापा गया है कि भारतसे इस्लाम और मुसलमानोंको खतरा है इस प्रलाप का यही बुद्धि सगत आधार है कि उनकी लोकप्रियता का ह्रास हो रहा है और वह उस चाल का प्रयोग करके जो पाकिस्तानी चाल समझी जाती है अपनी लोकप्रियता के ह्रास को रोकने का प्रयास कर रहे है। शेख साहब मे हानि पहुचाने की कितनी क्षमता है इसका अदाजा राज्य सरकार को लगाकर उचित कार्य वाही करनी चाहिए। शेख की मनोभावना का जो दिग्दर्शन अभी हुआ है उसकी लदन के इकनामिस्ट समाचार पत्र के सवाददाता की इस खोज से सगति नहीं बैठती कि शेख मे कोई कटुआपन नहीं है और वे धर्म निरपेक्षता पर दृढ है। उनका ताजा भाषण जिसमे साम्प्रदायिकता का विष उगला गया है, उन दिनों की याद ताजा कर देता है जबकि वे कट्टर साम्प्रदायिक थे।

(ट्रिब्यून १६ १ ६५)

त्रिभाषायी फारमूला

केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री छागला ने शिकायत की है कि हिन्दी भाषा भाषी राज्य त्रिभाषा के फारमूले का उस भावना के साथ पालन नहीं कर रहे है जिस भावना को सामने रखकर यह बनाया गया था। यह भावना यह थी कि हिन्दी भाषा भाषी राज्यों की तीसरी भाषा दक्षिण की कोई एक भाषा होगी। हिन्दी भाषा भाषी राज्यों मे तीसरी भाषा दक्षिण की कोई भाषा ही क्यों न हो और बगाली गुजराती आदि मे से कोई क्यों न हों। तीसरी भाषा की पढाई की भावना देश की एकता की भावना से सम्बद्ध है। यदि सस्कृत के द्वारा इस उद्देश्य की सिद्धि अधिक उत्तम रीति से होती हो तो फिर दक्षिण की किसी एक भाषा वा बगाली गुजराती आदि के अध्ययन की आवश्यकता ही क्या रह जाती है। और सस्कृत ही सबके लिए ग्राह्य क्यों न हो? सस्कृत के साथ समूचे देश की सास्कृतिक विशद परम्पराए जुडी हैं अत इससे अधिक उपयुक्त कौन भाषा है जो राष्ट्रीय एकता के सूत्र मे देश वासियों को बाध सके इसका साहित्य ससार की सभी भाषाओं से अधिक समृद्ध और ऊचा उठाने वाला है, इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं।

जो विद्यार्थी तीसरी भाषा के रूप मे सस्कृत को पढे गे उनको विद्यार्थी जीवन की समाप्ति के पश्चात भी सस्कृत से अमित लाभ पहुँच सकता है जबकि दक्षिण की एक भाषा का अध्ययन बाद के जीवन मे उनके लिए किसी विशेष उपयोग का सिद्ध न होगा क्योंकि वह एक क्षेत्रीय भाषा है। उसका सम्पर्क दक्षिण की उस भाषा को बोलने वालों के साथ भी प्राय नहीं के बराबर रहेगा। विविध लोक भाषाओं के अध्यापन के लिए अध्यापकों की व्यवस्था करना भी सरल कार्य न होगा।

यदि दाक्षिणात्यों की यह भावना हो कि यदि हिन्दी भाषा भाषी राज्य सस्कृत का पढाना

आरम्भ कर दें तो उन राज्यों के विद्यार्थियों की स्थिति दक्षिणी राज्यों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अच्छी और सुदृढ़ हो जायगी तो यह उन का भ्रम ही है। संस्कृत भाषा को सभी प्रान्तों में मान्यता प्राप्त है और उसकी प्रेरणाओं के समक्ष सभी नतमस्तक हैं। इसलिए यदि हिन्दी भाषा भाषी राज्यों के विद्यार्थी इसका अध्ययन करना पसन्द करें तो इसमें हानि ही क्या है और दाक्षिणात्य इसके लिए बुरा क्यों मनाएं। अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में विद्यार्थियों को हिन्दी का पढ़ाया जाना इसलिए आवश्यक समझा गया है कि हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है। एक मात्र इसी से भावात्मक एकता उत्पन्न हो सकती है। हिन्दी समृद्ध है या नहीं यह भावना सर्वोपरि नहीं है। सर्वोपरि है देश की भावात्मक एकता की भावना। देश की किसी न किसी भाषा को आपस में मिलाने वाली भाषा के रूप में स्वीकार करना ही होगा। अतः अहिन्दी भाषा भाषी राज्यों का यह गिला करना कि वे ही लोक भाषाओं के अतिरिक्त हिन्दी पढ़ने के लिए बाध्य क्यों किए जाएं व्यर्थ है और औचित्य से रहित है।

समान व्यवहार संहिता

भारतीय संविधान की धारा ४३ में राज्य का यह कर्त्तव्य निर्धारित किया गया है कि वह राज्य के समस्त नागरिकों के लिए एक जैसी व्यवहार-संहिता बनाए। इसका अर्थ यह है कि कोई भी नागरिक धर्म्म, जाति और लिंग भेद के आधार पर कानूनी अधिकारों से वंचित न हो और उनपर आश्रित असमर्थताओं से पीड़ित न हो।

श्रीयुत जस्टिस सुब्बाराव ने राजस्थान विश्वविद्यालय में हिन्दू कानून विषय पर आयोजित सेमीनार में उपर्युक्त तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राज्य की विविध जातियों में प्रचलित विवाह एवं सम्पत्ति सम्बन्धी कानून में अधिकाधिक एकरूपता आनी चाहिए।

जहांतक हिन्दुओं का सम्बन्ध है उनके विवाह और सम्पत्ति सम्बन्धी कानूनों में एक-रूपता लाने के प्रयत्न में बहुत बड़ी प्रगति हुई समझी जा रही है। मुसलमानों के शरीयत कानून को छुआ तक नहीं गया और यह अपवाद अत्यन्त पक्षपातपूर्ण और हिन्दू समाज के लिए घातक है।

मुसलमानों को दबी जुबान से यह सुझाव दिया जा रहा है कि इस प्रकार के परिवर्तन की मांग उनकी ओर से ही उठनी चाहिए। शरियत कानून की अनर्गलता और समय की प्रगति के साथ चल सकने की उसकी असमर्थता के कारण समझदार लोगों के मन में, जिनमें मुसलमान भी शामिल हैं, इसके प्रति विरोध की जो भावना उठती है उसकी वे अभिव्यक्ति करने का साहस भी कर बैठते और कहते हैं कि हमारी सरकार राजनैतिक कारणों से इस दायित्व की पूर्ति की उसी प्रकार उपेक्षा कर रही है जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार किया करती थी। हमारे कुछ पत्रकार और नेता यह सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि सरकार को इस प्रकार के सुधार की पहल नहीं करनी चाहिए अपितु लोक-सभा का कोई मुस्लिम सदस्य उदारचेता मुसलमानों की सम्मति ज्ञात करके प्राइवेट बिल प्रस्तुत करे। क्या सरकारी दायित्व की पूर्ति इस प्रकार संभव हो सकेगी? सरकार को इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। समान व्यवहार संहिता के निर्माण के लिए हिन्दुओं को ही बलि का बकरा बनाया जाना सरासर अन्याय एवं पक्षपात है। जिसकी प्रतिक्रिया बड़ी भयावह हो सकती है। सरकार को समय रहते सजग होकर इसका प्रतिकार करने का साहस दिखाना चाहिए।

अंग्रेजी के साथ-साथ राजकाज में हिन्दी का प्रयोग

राज्यों के मुख्य मन्त्रियों ने भारत सरकार की नीति का स्वागत किया है कि राज्य कार्य के साथ २ अंग्रेजी का प्रयोग उस समय तक जारी रहेगा जब तक अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र एक मात्र हिन्दी के प्रयोग के लिए राजी न होंगे।

गत वर्ष लोक सभा में पारित सरकारी भाषा के ऐक्ट की धाराओं को दृष्टि में रखते हुए १२ दिसम्बर को नई दिल्ली मे हुए मुख्यमन्त्रियों के सम्मेलन में यह कहा गया था कि केन्द्र अथवा अन्य राज्यों के साथ होने वाले पत्र-व्यवहार में अंग्रेजी के प्रयोग पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता।

इस सम्मेलन मे २६ जनवरी १९६५ से राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग प्रारम्भ करने के विषय पर भी विचार हुआ था। अखिल भारतीय और केन्द्र की उच्चतम परीक्षाओं के लिए सितम्बर ६५ से वैकल्पिक माध्यमके रूप मे हिन्दी को मान्यता देने के सरकारी निश्चय की सूचना भी सम्मेलन को दी गई।

केन्द्रीय गृह मन्त्री श्रीयुत गुलजारी लाल नन्दा ने जिन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की थी कहा कि २६ जनवरी १९६५ से समस्त महत्वपूर्ण परिपत्र और स्थायी आदेश अंग्रेजी के साथ २ हिन्दी में भी जारी किए जाया करेंगे।

सरकारी बजट भी सामान्यतः हिन्दी और अंग्रेजी मे छपा करेंगे। जिन राज्यों ने हिन्दी को राजकाज की भाषा बनाया है उनके साथ केन्द्रीय सरकार अधिकाधिक हिन्दी में ही पत्र-व्यवहार किया करेगी और अन्य राज्यों के साथ अंग्रेजी में ही पत्र-व्यवहार किया जायगा जैसा कि आजकल होता है।

सम्मेलन ने यह बात भी मान ली कि हिन्दी भाषा-भाषी राज्य परस्पर में हिन्दी में ही पत्र-व्यवहार किया करेंगे। फिर भी अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के साथ अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करने की प्रथा इन राज्यों द्वारा कायम की जानी चाहिए। यदि मूल पत्र हिन्दी में हुआ तो उसके साथ उसका प्रामाणिक अंग्रेजी अनुवाद नत्थी किया जाया करेगा।

इस बात पर भी प्राय. सभी सहमत थे कि अहिन्दी भाषा भाषी राज्योंको अपने प्रशासकीय स्टाफ को हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने का प्रोत्साहन देना चाहिए और स्कूलों और कालेजों में हिन्दी के शिक्षण की वर्तमान व्यवस्था में सुधार कर देना चाहिए।

केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री एम. सी. छागला ने आश्वासन दिया कि अहिन्दी भाषा भाषी राज्यों में हिन्दी प्रचार की योजनाओं का समस्त व्यय केन्द्र वहन करेगा।

श्रीयुत नन्दा जी ने बताया कि वर्तमान साल मे हिन्दी प्रचार के निमित्त अतिरिक्त धन की पूर्व से ही व्यवस्था कर दी गई है और धन की कमी के कारण इस प्रकार की किसी योजना को मूर्तरूप धारण करने से रुकने न दिया जायगा।

समस्त देश में प्रशासकीय कानूनी और औद्योगिक शब्दावलि एक जैसी रहे। इस आवश्यकता पर सम्मेलन ने बल दिया इस दिशा में एक रूपता बनाए रखने के कार्य को आगे बढ़ाने का यत्न होना चाहिए।

हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों में बिलों, कानूनों आदि २ के लिए हिन्दी का पहले से ही प्रयोग हो रहा है। फिर भी अनेक कठिनाइयां सामने आती हैं क्योंकि अभी तक प्रामाणिक कानूनी शब्दावली तैयार नहीं हुई है। राज्यों के बहुत से कानून प्रामाणिक हिन्दी में उपलब्ध नहीं हैं।

इस सम्बन्ध में विविध समितियां बनाने का निश्चय हुआ।

गणतंत्र को किस प्रकार वरदान बनाया जा सकता है ?

हम इस समय राजनैतिक दृष्टि से स्वतंत्र हैं। हमें अपने भाग्य का निर्माण करने की स्वतंत्रता है। यदि हम अपने भाग्य का सुन्दर निर्माण न कर सके और स्वतंत्रता की पवित्र थाती को आने वाली पीढ़ी को सौंप कर न जा सके तो यह हमारे इतिहास की बड़ी दुःखद घटना होगी।

स्वराज्य की उपलब्धि आदर्श समाज के निर्माण और आदर्श राज्य के विकास के लिए की गई थी। परन्तु हमारी आशाएं धूल में मिलती देख पड़ रही हैं। जनता का नैतिक स्तर बहुत नीचा हो जाने और लोगों के हृदयों से राज्य और परमात्मा का भय निकल जाने से अराजकता की सी स्थिति व्याप्त हो गई है। जन साधारण में स्वतंत्रता के प्रति उत्साह की उमंगें तिरोहित देख पड़ती हैं। इतना ही नहीं वह उनके लिए अभिशाप बनी देख पड़ती है। समाज विरोधी तत्त्वों की प्रवलता और विघटन-कारी प्रवृत्तियों की उग्रता ने समाज की शान्ति और एकता को चुनौती दी हुई है। स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्त के साथ स्वार्थपरता जुड़ जाने से मनुष्य दानव बनगया है। उसे बुराई के साथ गठ बंधन करने और जाति तथा देश के हितों के साथ खिलवाड़ करने की बात ही नहीं सूझती। जहां जन-सामान्य जीवन निर्वाह के साधनों से वंचित हो, जहां पैसा रखते हुए भी खान-पान की सामग्री और वस्त्रआदि की प्राप्ति से वंचित रहते हों, जहां शुद्ध वस्तुओं के दर्शन दुर्लभ हों, जहां लोगों को अपनी जान-माल और बहू बेटियों की रक्षा की चिन्ता आए दिन सताती हो, जहां बिना सिफारिश और रिश्वत के सरकारी दफ्तरों में प्रजा का काम होना सम्भव न हो, जहां कत्ल, अपहरण, आक्रमण, लूटमार, चोरी, डकैती, बलात्कार तथा अन्यान्य अपराध दिन प्रतिदिन की घटनाएं बन गई हों, जहां राजवर्ग दुष्ट तत्त्वों का साथ ही नहीं देता हो अपितु उनकी रक्षा में तत्पर रहता हो, जहां समाज सेवा और देश सेवा पेशा बन गई हों, वहां अराजकता का व्याप्त होना आश्चर्यजनक नहीं समझा जा सकता। बुरे व्यक्ति अच्छा समाज नहीं बना सकते और न अपना शासन स्वयं संभाल सकते हैं। इस बात की सत्यता के दर्शन हमें अपने देश में पग २ पर हो रहे हैं।

इस दुरवस्था के लिए हमारी जीवन पद्धति और राज्य पद्धति दोनों ही जिम्मेवार हैं। भोगवाद की जीवन-पद्धति और संसदीय प्रशासन की राज्य पद्धति भारतीय प्रतिभा और परम्परा के अनुकल नहीं हैं और न अनुकूल हो सकती हैं। भोगवाद की जीवन पद्धति के कारण हमारे जीवन कृत्रिम और खर्चीले बनकर हमे परतंत्रता के बन्धन में जकड़ते और नाना प्रकार की बुराइयों और स्पर्धाओं को जन्म देते हैं जिससे हमारी वैयक्तिक उन्नति कुंठित होती और निराशा का वातावरण व्याप्त होता है। संसदीय शासन पद्धति के अवलम्बन से हमारी देश-निष्ठा को बड़ा धक्का लगता है पदों की भूख और उनके लिए दौड-धूप के कारण बुराई से समझौता करने और देश के हितो की अव हेलना करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है जो समाज और राज्य को अच्छा बनाने के कार्य में व्यवधान उपस्थित करती और राजनीति को धर्म्म नीति से पृथक् करके उसे जुए का रूप दे देती है। कुशल एवं ईमानदार प्रशासन प्रदान करने का कार्य जटिल हो जाता है। यही जटिलता संसदीय शासन प्रणाली के प्रति अनास्था को जन्म देकर इसमें आमूल चूल परिवर्तन की प्रेरणा दे रही है। भोगवाद की

(शेष पृष्ठ ६४ पर)

महर्षि की बोध-रात्रि

[श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री]

हर वर्षों की भाति इस वर्ष भी शिवरात्रि १ मार्च सन् ६५ को आ रही है। वस्तुत यह वह रात्रि है जिसमे बालक मूलशकर ने सच्चे शिव की खोज का व्रत लिया था। इसी प्रसग मे घटी घटनाओं ने आगे चलकर बालक मूल शकर को महर्षि दयानन्द सरस्वती बना दिया। इस रात्रि का जागरण क्या था मानो भारत क सोये भाग्य का, नहीं नही समस्त विश्व की सुप्त मानवता का, जागरण था।

ससार मे ऐसी अनेक घटनाय प्रतिदिन घटती है जो बालक मूलशकर के सामने घटी थीं। परन्तु ये सभी को अपना पाठ नही पढा पातीं। सब इन पर वास्तविक दृष्टि से विचार नहीं कर पाते। परन्तु महापुरुषों के लिए इति हास साक्षी है कि ये घटनाये ही उन्हे महा पुरुषत्व की प्राप्ति की साधन बनी है।

कभी कभी लोग पूछ बैठते है कि आचार्य प्रवर ऋषि दयानन्द सरस्वती ऋषि कब से बने? लोगों के मस्तिष्क मे यह प्रश्न कुतूहल के साथ उठता है। ऋषि का अर्थ साक्षात्कृद्धर्मा है। गुरवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती से शिक्षा प्राप्त कर वेदादि सत्यविद्या सम्पन्न आचार्य ने वेदप्रचार का व्रत लिया। तप पूत उस महान् आत्मा ने वेद के ज्ञान को ससार मे फैलाने का घोर प्रयत्न किया। वेद भाष्य किये, अनेकों ग्रन्थ लिखे जो आज अमर है। ऋग्वेद भाष्य करने से पूर्व महर्षि ने नमूने के रूप मे ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का भाष्य किया और उसे प्रचारित किया। इस सूक्त के 'अग्नि' पद के जहा अनेक अर्थ उन्होंने किये वहा 'परमात्मा' अर्थ करके लोगों को वेदविद्या का मार्ग दर्शन किया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त इस प्रकार के वेदार्थ करने की परम्परा अक्षुण्ण रही। परन्तु बाद को इस परम्परा का लोप होने लगा था। यास्क जो महाभारत कालिक है निरुक्त मे लिखते है-अथैतं महान्तमात्मानमेषगणेण प्रवदति 'इन्द्र मित्र' वरुणमग्निम्' अथैष महान् आत्मा आत्म-जिज्ञासयात्मान प्रोवाच 'अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा' अर्थात् इस महान् आत्मा परमेश्वर का ये ऋगगण वर्णन करते हैं—इन्द्र मित्रम् आदि। उस महान् आत्मा ने अपने को जताने की इच्छा से स्वय कहा कि मै "अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा "अर्थात् मै अग्नि और जात वेदा हूँ।

इसी प्रकार पुन निरुक्त ७। १७ पर यास्क कहते हैं—इममेवाग्नि महान्तमात्मानमेकमात्मान बहुधा मेधाविनो वदन्ति इन्द्र मित्रम्—अर्थात् इस अग्नि—एक महान् आत्मा परमेश्वर को मेधावी जन इन्द्र, मित्र आदि नामों से कहते है। इस मन्त्र मे जहा इन्द्र, वरुण आदि पद एक ही वार है वहा 'अग्नि' पद का दो बार आना बतलाता है कि प्रत्येक पद को विशेष और विशेष्य बना कर अर्थ किया जा सकता है। यह बात किसी अनृषि भाष्यकार को सूझी ही नहीं।

दूसरी बात यह है कि इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के दूसरे मन्त्र मे 'ऋषिभि' पद पडा है। जिसका अर्थ आज तक महर्षि के अतिरिक्त किसी ने तर्क' नहीं किया है। परन्तु यदि 'तर्क' अर्थ न किया जावे तो जैमिनि और यास्क पर्यन्त चली आई वेदार्थ प्रक्रिया सुलझ नहीं सकती है। यास्क स्वय ही ऋषि का अर्थ तर्क-मानता है। वस्तुत साक्षाद् द्रष्टा ऋषि की बात को ऋषि ही पूर्णत समझ सकता है। यह साक्षात्कृद्धर्मता इस सूक्त का अर्थ करते समय स्पष्ट महर्षि मे प्रकट हो रही है अत उस समय वे ऋषि हो चुके थे। यही उनके ऋषित्व का

(शेष पृष्ठ ६४ पर)

लाला लाजपतराय का प्रेरक मूल-मन्त्र
महर्षि दयानन्द की शिक्षा

स्वर्गीय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के महत्त्वपूर्ण जीवन का रहस्य फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान रोमां रोला ने निम्नलिखित शब्दों में प्रगट किया था

"I have always thought that if Dayanand Saraswati had lived in our time he would have thrilled wtih joy at recog nising in Lajpat rai the highest type of the Arya samaj, the warrior, the knight 'without fear and without reproach' who devotes his life to the defence of Justice. I read again the lines of Dayanand. –

"To strive to combat to humiliate to destroy the wicked though they be powerful, the sovereigns of the whole of earth. To strive constantly to undermine the power of the unjust and to strengthen that of the just–though one self must undergo terrible suffering even death. Let no attempt be made to avert it."

मै यह समझता हूं कि यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती आज हमारे बीच मे जीवित होते तो वह लाला लाजपत राय के जीवन में आर्य समाज के जीवित जाग्रत चित्र को देख कर अत्यन्त प्रसन्न होते। लाला लाजपतराय वीर थे। उन्होंने न्याय और सत्य की रक्षा मे अपना जीवन अर्पण किया हुआ था। मै फिर ऋषि दयानन्द का निम्न वह वाक्य पढ़ता हूं जिसमें आर्य समाज के मनुष्य धर्म का वर्णन किया गया है—

"मनुष्य उसी को कहना जो अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे

स्वनामधन्य—

लाला लाजपतराय जी की आर्य समाज के प्रति श्रद्धाञ्जलि



स्वामी दयानन्द मेरे गुरु और आर्यसमाज मेरी माता है।

मेरे जीवन में जो हिस्सा खराब है वह मेरा अपना है। वह या तो मुझको विरासत में मिला है या मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन **मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रशंसा योग्य है वह सब आर्यसमाज की बदौलत है।**

आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखलाया, आर्य समाज ने मुझे प्राचीन आर्य सभ्यता का मान रखना सिखाया। आर्यसमाज ने मुझे प्राचीन आर्यों से मेरा सम्बन्ध जोड़ा और मुझे उनका सेवक बनाया। आर्य समाज ने मुझे जाति से प्यार करना सिखलाया आर्य समाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखलाया। आर्य समाज ने मेरे अन्दर सत्य, धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी। आर्य समाज ने मुझे संगठन का पाठ पढ़ाया। आर्य समाज ने मुझे शिक्षा दी कि समाज, धर्म और देश की सेवा करनी चाहिए और उनकी सेवा में जो मनुष्य बलिदान करता और दुःख उठाता है उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है।

मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज में रहते हुए आर्यसमाज से सीखे। आर्यसमाज के क्षेत्र में मैंने अपने प्यारे मित्र बनाए आर्य समाज के क्षेत्र में ही मैंने सार्वजनिक जीवन की पवित्रता के नमूने देखे।

आर्यसमाज के उपकार मेरे ऊपर अनगिनत और असीम हैं।

अगर मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर निछावर हो जाय तो भी मैं इन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता।

यदि मैं आर्यसमाज में दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूं वह न होता।"

—लाजपतराय
(आत्म-कथा से)

जन्म—	२८-१-१८६५
मृत्यु	१७-११-१९२८

जिनकी जन्म शताब्दी २८-१-१९६५ को देश भर में धूमधाम से मनाई गई।

आत्म-साक्षात्कार का मार्ग

[श्री रघुवीर 'मुमुक्षु' व्याकरणाचार्य]

संसार में व्यस्त मानव को बृहदारण्यक उपनिषद् के ऋषि ने चेतावनी देते हुए कहा है—

आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः………।

अर्थात् आत्मा को देखना तथा सुनना चाहिए तथा साक्षात्कार भी करना चाहिए। आत्म साक्षात्कार की बात तो ऋषि ने कह दी किन्तु वह (ईश्वर) आत्मा कैसे मिले, यह प्रश्न है। साथ ही साथ उपनिषद् मे ही दूसरी जगह पर उत्तर देते हुए कहा है -

"नाऽयमात्माबलहीनेन लभ्यः"

अर्थात् यह आत्मा बल हीन व्यक्ति से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

किन्तु संसार में बल भी कई प्रकार के हैं यथा—आत्मबल, धनबल, विद्याबल राज्यबल इत्यादि। इनमे से विद्याबल को ही लीजिए। सूक्ष्मतया देखने से विदित होता है कि केवल विद्याबल के आधार पर उस देव की प्राप्ति सर्वथा असम्भव हो है। प्राचीन काल से अब तक अनेकों विद्वान् वसुन्धरा माता की गोद में आये किन्तु 'नेति' 'नेति' की घोषणा करते हुए चले गये। आजकल हमारी क्या विद्या रह गयी है। यदि विद्या का प्रमाण लेना है तो उपनिषद् काल की ओर लौटिये तथा देखिये कि समग्र वेद शास्त्र पढ़ने के उपरान्त भी नारद कितना अधीर है। सनत्कुमार मुनि के पास अपनी दशा का वर्णन करते हुए नारद बोला—

ऋग्वेदं भगवो ऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणम्……।

अर्थात् हे भगवन्! मैंने ऋग्वेदादि चारों वेद, पुराण, इतिहास, सर्पविद्या, भूत विद्या इत्यादि का अध्ययन किया है। किन्तु फिर भी-

"सोऽहं भगवो मन्त्रविदेवास्मि नात्मवित्। श्रुतं हि मे भगवद्दृशेभ्यस्तरति शोकमात्मवित्। सोऽहं भगवः शोचामि। तं मां शोकस्य पारं तारयत्विति।"

हे भगवन! मै तो इतना पढ़ लेने पर भी शोक में मग्न हूँ। मुझे शोक के पार लगाओ। अहा! क्या ही विकल अवस्था है नारद जी की? सब कुछ पढ़ लेने पर भी शोक में मग्न हैं। इसीलिए तो उपनिषद् ने कहा है—

नाऽयमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन……।

[२]

अब धन बल को भी लीजिए। किन्तु जैसे भूतनाथ वैसे प्रेतनाथ अर्थात् धन बल के द्वारा भी प्रभु दर्शन नितान्त असम्भव है। धनके सम्बन्ध मे बृहदारण्यक में एक सुन्दर कथानक आया है—सन्यास लेते समय ऋषि याज्ञवल्क्य मैत्रेयी से बोले—हे मैत्रेयी! मै संन्यास लेने वाला हूं। आओ तुम दोनों में सम्पत्ति को बराबर बाट दू। उस समय मैत्रेयी धन से भयभीत होती हुई बोली—

"किमनेन धनेनाहममृतास्याम्।"

अर्थात् क्या मै इस धन से अमरत्व को प्राप्त कर लूंगी? इस प्रश्न को सुनकर महर्षि ने जो उत्तर दिया वह हृदयङ्गम करने योग्य है। ऋषि बोले—

यथा ऽन्येषां भूतानां जीवितं तथैव ते जीवितं स्यात्। अमृतत्वस्य तु नाऽऽशाऽस्ति वित्तेन।

हे मैत्रेयी ! इस धन के द्वारा अमरपद प्राप्त नहीं हो सकता। नहीं हो सकता।

दूसरा उदाहरण नचिकेता का लीजिए। नचिकेता यमाचार्य के द्वार पर पहुँचता है तथा आत्मविषयक प्रश्न करता है। उसके धैर्य को डिगाने के लिए यमाचार्य। बोले—

"वृणीष्व वित्तं चिरजीवितञ्च"

नचिकेता ! तू प्रभूत धन राशि तथा लम्बा जीवन ले ले किन्तु आत्म विषयक प्रश्न न पूछ। नचिकेता ने भी धन के तत्व को भली-भांति समझा हुआ था। वह बोला—

"न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः"

आचार्य ! आप मुझे क्या प्रलोभन दे रहे हैं। मनुष्य की तृप्ति तो धन से हो ही नहीं सकती। मेरे लिए तो—

"वरस्तु मे वरणीयः स एव"

मेरे लिए तो वही (आत्मविषयक) वर चाहिए।

पाठक वृन्द ! जरा विचार तो कीजिए कि यदि धन से प्रभु दर्शन हो पाते तो मैत्रेयी तथा नचिकेता धन को ठोकर क्यों लगाते। किन्तु वर्तमान काल में मानव धन के पीछे ही भूल गया है अपने आपको तथा भूल गया है परमात्मा को। आज तो 'यस्यास्ति वित्त स नरः कुलीनः ·····का उद्घोष सुनाई दे रहा है। फिर प्रभु प्राप्ति कहां ? यह तो अधःपतन का मार्ग खुला पड़ा है।

[३]

इसके पश्चात् राज्यबल पर भी दृष्टिपात कीजिए। कौन नहीं जानता कि इस भूमण्डल पर आदि काल से ही अनेकों छत्रपति तथा चक्रवर्ती सम्राट् हुए। यह तो सम्भव है कि बड़े से बड़े सम्राट् ने अपने राज्य के बल पर संसार को कंपा दिया हो किन्तु किन्तु क्या कभी कोई शासक राज्य के बल पर प्रभु को प्राप्त करने का यत्न कर सका है ? नहीं। कदापि नहीं।

हिटलर राज्य बल के नशे में चूर होकर एक हाथ में बम्ब तथा दूसरे में हथकड़ी लेकर कहा करता था "ऐ संसार के लोगो या तो मेरी अधीनता स्वीकार कर लो नहीं तो मैं तुम्हें बम्ब से फूंक दूंगा।" अहा ! कैसी विडम्बना थी वह ? कैसा नशा था वह ? किन्तु क्या उस देव के सामने कोई इस प्रकार कर सकता है ? कदापि नहीं।

यदि राज्य के आधार पर ही प्रभु प्राप्ति हो सकती तो भगवान् बुद्ध, महाराज भर्तृहरि, गोपीचन्द जैसे सम्राट् राज्य को ठोकर लगाकर, लंगोटी बांध कर फकीर न बन जाते। किन्तु क्या कारण था कि इन लोगों ने ससार को छोड़ा। बन्धु बान्धवों से नाता तोड़ा विषयों से मुख मोड़ा परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ा। इसका कारण यही है कि इन सभी ने देख लिया था कि उस देव के दर्शन राज्य के आधार पर असम्भव है। इसी लिए राज्य को ठोकर लगा कर संन्यासी बने।

इसके उपरान्त जनबल को लीजिए। यह सम्भव है कि हम कुछ व्यक्तियों को अपनी ओर खींचकर उनकी शक्ति के आधार पर तथा मित्र आदि के द्वारा संसार में सफलता प्राप्त कर लें किन्तु उस प्रभु की प्राप्ति में यह सब कुछ नहीं हो सकता। इस विषय में वेद भगवान् सावधान करते हुए कहता है—

"न यन्मित्रैः समान एति"

अथर्व० १३। ३। ८

महर्षि के चरण चिन्हों पर

[श्रीयुत स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती]

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के जीवन में अनेकों ऐसी घटनायें पाई जाती हैं कि यदि आर्य जन एक निष्ठा और ईमानदारी से उन पर चलें तो उनका और आर्य समाज दोनों का ही भला हो। यहां पर कुछ घटनाओं को अंकित कर आर्यों के मुख्य कर्त्तव्य की ओर कुछ आवश्यक संकेत देना अभीष्ट है। नीचे की पंक्तियों में उसी का प्रयास किया जा रहा है।

श्री पं० घासीराम जी द्वारा संपादित बृहद् जीवन चरित्र भाग १ पृष्ठ २०१ पर महाराज के जीवन की यह घटना अंकित है कि एक ब्राह्मण ने महाराज को पान में विष दे दिया था। महाराज के एक परमभक्त मुसलमान तहसीलदार श्री सैयद मुहम्मद अपराधी को दण्ड देकर महाराज को प्रसन्न करने की दृष्टि से उनके पास आये। परन्तु महाराज ने कहा - मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें। तहसीलदार ने उस अपराधी को अपील करा कर छुड़वा दिया।

इसी प्रकार जगन्नाथ रसोइये द्वारा दूध में कांच दे देने की घटना भी अति प्रसिद्ध है। महर्षि ने जगन्नाथ को अपने पास से पैसा देकर

अर्थात् मित्रों के आधार पर गति नहीं कर सकता, संसार से छुटकारा नहीं पा सकता।

क्रमशः विद्या, धन, राज्य तथा जन बल का वर्णन हो चुका अब शेष रहा शारीरिक बल। शारीरिक बल के आधार पर तो प्रभु प्राप्ति की अभिलाषा आकाश पुष्प के समान ही है। यह शारीरिक बल उस देव के दर्शन करा देने में सर्वथा असमर्थ ही है।

ऊपर की पंक्तियों से सिद्ध हुआ कि वह देव विद्या-धन आदि किसी भी बल से प्राप्त नहीं हो सकता। विचारणीय है कि वह कौनसा बल है जिसके लिए उपनिषद् कह रही है—

नाऽयमात्मा बलहीनेन लभ्यः।

घबराओ नहीं, अब भी एक बल शेष है। क्या कहा, एक बल और शेष है। कौनसा बल है वह? हां! एक बल अन्य है और वह है आत्म बल। इस बल के द्वारा ही उस देव के दर्शन सम्भव हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि दूसरे बलों की आवश्यकता नहीं। दूसरे बल भी चाहियें किन्तु आत्म बल ही मुख्य है। महर्षि दयानन्द भगवान् राम आदि अनेकों महापुरुषों के नाम आज भी हमारे कर्ण-कुहरों में गूंज रहे हैं जिनमें कि आत्म बल भरा था। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे निर्भीक व्यक्ति आत्मबल के आधार पर ही संगीनों के सामने छाती खोलकर कह देते थे 'गोली छोड़ दो'?

आत्म बल से प्रभु प्राप्ति की बात तो कह दी किन्तु प्रश्न है कि यह आत्मबल कहां मिलेगा। इस विषय में भगवती श्रुति हमारा मार्ग प्रदर्शन करते हुए कहती है—

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं······।

वह भगवान् ही आत्मबल का देने वाला है, शारीरिक बल देने वाला है। मानव! यदि तू प्रभु दर्शन करना चाहता है तो आ प्रभु की उपासना कर। वह देव तुझे आत्म बल से भरपूर कर देगा, अन्य बलों के साथ ही आत्म बल के द्वारा ही तू उस प्रभु के दर्शन कर सकेगा अन्यथा नहीं।

"नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय"

रक्षार्थ बाहर चले जाने का आदेश दिया।

इसके अतिरिक्त जीवन चरित्र भाग २ पृष्ठ ६३४-६३५ पर एक घटना का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है—मुंशी बख्तावर सिंह वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता थे। उन्होंने यन्त्रालय के हिसाब में बड़ी गड़बड़ी की। उन्हें १८८८ में वैदिक यन्त्रालय से पृथक् कर दिया गया। महाराज ने लाला कालीचरण रईस फर्रुखाबाद को पत्र लिखा कि प्रथम तो पंचायत से यदि निपट जावे तो अच्छा है। नहीं तो उस पर हिसाब फहमी की नालिश और तब भी न माने तो फौजदारी व दीवानी में दावा दायर किया जावे। बख्तावर सिंह गये परन्तु महाराज ने यह उत्तर दिया कि मेरा निजी मामला नहीं है। मैं तो चुप हो जाता पर दूसरों की ही संपत्ति है। मैं चुप नहीं रह सकता।

यहां पर विष देने वाले को छुड़वा देना अपने हत्यारे जगन्नाथ को बाहर भाग जाने के लिए अपने पास से रुपये भी देना और मुंशी बख्तावर सिंह पर फौजदारी वा दीवानी का मुकदमा चलाने को कहना इन दो प्रकार की बातों में परस्पर विरोध दिखाई पड़ता है। परन्तु ऐसा है नहीं। विषदाताओं का अपराध महाराज के अपने व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखता था अतः अपराध होने पर भी अपराधी को नादान समझ कर उस पर दया दिखाई। परन्तु वैदिक यन्त्रालय का गबन का मामला सामाजिक और पब्लिक लाभ और हानि का था अतः उसको क्षमा न करके दण्ड दिलाने का निर्देश किया। ठीक ही है—'सामाजिक हितकारी नियमों के पालन में सब को परतंत्र रहना चाहिए परन्तु प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र हैं।'

जीवन चरित्र भाग १ पृष्ठ १५६ पर एक घटना आई है कि महाराज कानपुर में गंगातट पर वेद पाठ कर रहे थे। लोग लाठी और ढेले लिए हुए आये और महाराज पर ढेले फेंकने लगे। एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर लाठी चलाई। महाराज ने उसकी लाठी पकड़ ली और गंगा में ढकेल दिया और पास के एक वृक्ष की एक शाखा तोड़कर इन प्रहारोद्यत मनुष्यों को हटाते हुए कहने लगे कि मित्र गए। आओ और कई मनुष्यों को मारा और बोले कि मैं निरा साधु ही नहीं हूं।

यद्यपि महाराज उस समय अर्ध निमीलित चक्षु होकर बैठे थे और सामगान कर रहे थे। परन्तु गुण्डों की गुण्डागर्दी का जवाब साधुपने से नहीं हो सकता था अतः ऐसा किया। भाव यह है कि गुण्डागर्दी और आततायियों को देखकर केवल साधु बन कर नहीं बैठ जाना चाहिए बल्कि उसका उचित प्रतीकार करना चाहिए।

एक वर्णन जीवन चरित्र भाग २ पृष्ठ ४६४ पर इस प्रकार आता है कि सर सय्यद अहमदखां ने बम्बई के सज्जनों के साथ महाराज को अपने घर पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि भोज में गए परन्तु महाराज जी स्वयं नहीं गए। यद्यपि मुसलमानों के यहां भोजन में सम्मिलित होने में कोई दोष नहीं पर ऐसा करने से देशवासियों की श्रद्धा में कमी होगी और उद्देश्यों की सिद्धि में बाधा होगी इस लिए नहीं सम्मिलित हुए।

इसका तात्पर्य यह है कि समुचित उद्देश्य की पूर्ति में यदि साधारण व्यवहार से बाधा पड़ती हो तो किसी बड़े व्यक्ति की प्रसन्नता वा अप्रसन्नता का ध्यान करके भी उद्देश्य का ध्यान रखना चाहिए।

जीवन चरित्र भाग २ पृष्ठ ४६० पर ऐसा वर्णन दयानन्द प्रकाश में लिखा है कि जिस कोठी में महाराज ठहरे हुए थे उसी के

एक कमरे में आर्य समाज की अन्तरंग सभा हो रही थी। सभासद् अभी कार्य संचालन में प्रवीण न थे, अतः उन्होंने महाराज से सम्मति देने की प्रार्थना की। परन्तु उन्होंने कहा कि मै अन्तरंग सभा का सदस्य नहीं हूं अतः सम्मति नहीं दे सकता। तब महाराज को प्रतिष्ठित सभासद् बनाया गया। महाराज ने सदस्यो को बहुमूल्य उपदेश भी दिया कि सभा में बैठ कर हठ और दुराग्रह नहीं करना चाहिए। बहुमतानुसार जो निश्चित हो, उसके अनुसार चलना चाहिए और सभा की बातों को गुप्त रखना चाहिए।

यहां नियम की दृढ़ता, सभ्य की योग्यता, बहुमत का मान और अन्तरंग निर्णय की गोपनीयता की शिक्षा मिलती है।

आज के इस पावन पर्व पर महर्षि स्वामी श्री दयानन्द जी सरस्वती के चरण चिन्हों पर चलने का हमें व्रत लेना चाहिए। इसी में वस्तुतः हमारा और आर्य समाज का कल्याण निहित है।

महाराज का आदर्श यह प्रेरणा देता है कि सामाजिक हितों की प्रत्येक आर्य बड़ी कड़ाई से दृढ़ता पूर्वक रक्षा करे। आज आर्यों को इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

जीवन चरित्र भाग १ पृष्ठ १८० पर यह घटना आती है कि महाराज ने काशी मे मुसलमानों का खण्डन किया। इससे मुसलमान चिढ़ गए। एक दिन महाराज गंगातट पर बैठे थे। कुछ मुसलमानों ने, जो घूमने जा रहे थे, महाराज को पहचान लिया। दो ने महाराज की दोनों बगलों में हाथ डालकर उन को गंगा मे फेंकना चाहा। महाराज उनकी मनशा को समझकर अपनी दोनों बाहों को चिपका कर गंगा में कूद पड़े। अपने आप जल के नीचे बैठ गए। ये दोनों डुबकी लगाते लगाते जान बचाकर बाहर निकले। महाराज चाहते तो इन्हें डुबा देते परन्तु दयाकर इन्हें छोड़कर स्वयं जल में बैठ गए।

यहां पर यह स्पष्ट है कि बुराई का प्रतीकार करना चाहिए परन्तु बुरा करने वाले को नाबूद नहीं कर देना चाहिए। पाठ पढ़ा देने से वह बुराई करने वाला सुधर जावेगा। जीवन चरित्र भाग प्रथम पृष्ठ १०७ पर यह घटना आती है कि महाराज जिला बुलन्दशहर में जहांगीराबाद के आस पास नवीन वेदान्त का खण्डन कर रहे थे। एक दिन खन्दोई ग्राम का एक जाट छत्रसिंह नवीन वेदान्त पर वार्तालाप करने लगा। महाराज ने उसके गाल पर एक चपत लगाया। जब महाराज की युक्तियों का उत्तर देने में वह सर्वथा असमर्थ रहा तो बोल पड़ा कि महाराज आप चाहे जो कहें परन्तु सत्य तो यही कि जगत् मिथ्या है। इस पर महाराज ने पूछा जब ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं तो फिर वह कौन है जिसने आप के चपत लगाया। जाट जी ने चरण पकड़ कर कहा— महाराज! आपने मेरी आंख खोल दीं।

यहां पर चपत लगाकर यह बतला दिया कि वस्तुत नवीन वेदान्त युक्ति, व्यवहार और तर्क के विरुद्ध है। वस्तुतःवस्तु में प्रतीत होने वाला और चोट आदि विकार ब्रह्म के गुण नहीं हैं।

जीवन चरित्र भाग २ पृष्ठ ५७६ पर यह वर्णन आया है कि फर्रुखाबाद के बाजार में सड़क पर एक मठिया थी जहां पर लोग धूपदीप दिया करते थे। बा० मदन मोहन जी ने उसे हटाने के लिए महाराज से कहा कि स्काट साहब आप को बहुत मानते हैं उनसे कह कर आप इसे हटवा दें। महाराज ने उत्तर दिया कि मेरा काम मनोमन्दिर से मूर्तियों को निकलवाना है ईंट पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना फोड़ना नहीं।

यहां पर यह स्पष्ट है कि मूर्तियों और मन्दिरों को जबर्दस्ती तोड़कर मूर्तिपूजा नहीं हटाई जा सकती है। युक्ति, तर्क और विचार से उसे मानस में जमा देने पर मूर्ति पूजा हटाई जा सकेगी।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा

(१)

फलित ज्योतिष मिथ्या है

सहारनपुर रेलवे स्टेशन पर लक्ष्मीदत्त नाम के एक ज्योतिषी ने महाराज को कहा कि मैं ज्योतिष के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दिया करता हूं। वे उत्तर सच्चे होते हैं। इस प्रकार महाराज ने कहा—

"ऐसे उत्तर निरे अटकल पच्चू हुआ करते हैं जैसे एक कौआ उड़ता हुआ जब आम के पेड़ के नीचे से निकला तो अचानक उस पर ऊपर से एक आम टूट पड़ा। उस फल की चोट से कौआ गिरकर मर गया। आम के लगने का ज्ञान न तो कौवे को था और न ही आम जानता था कि मुझसे वह मर जायगा। ऐसी बातें दैवयोग से हो जाया करती हैं। आपके उत्तर कभी दैवयोग से सच्चे हो जाते होंगे। यदि गणना से सच्चे होते मानो तो गणित में तो कोई भूल नहीं होती। उसके सारे नियम शुद्ध हैं परन्तु आपके सारे प्रश्न पूर्ण नहीं होते। गणित नियम से फलित होता तो उसमें भूल कदापि न होती। फलित ज्योतिष को 'काकतालीय न्याय' के तुल्य ही समझना चाहिए।

(२)

सूतक शास्त्रानुकूल नहीं है

एक भक्त ने पूछा—भगवन्! जन्म के समय जो दस दिन का सूतक माना जाता है क्या वह शास्त्रानुकूल है? महाराज ने उत्तर दिया कि मनुस्मृति के अनुसार तो केवल नव-जात बालक की माता ही को एक रात का सूतक होता है बच्चे के पिता तक को भी नहीं होता। यह सूतक पातक का झमेला वैसे भी ठीक नहीं है। कोई असत्य भाषण और चोर कर्म आदि बुराइयों को तो नहीं छोड़ता। ऐसी रीतियों को मानकर क्या करना जिससे शुभ तो दूर हो जाय और अशुभ धड़ाधड़ होता रहे।

(३)

जातीय जीवन की मात्रा घटा देना हमारा उद्देश्य नहीं है

काशी में श्री रामाधारजी ने एक दिन कहा - भगवन्! आप इतना पुरुषार्थ करते हो परंतु लोग पौराणिक लीलाएं छोड़ते ही नहीं। उन्हीं लोगों में रहकर सुधार कैसे होगा? वे कहीं हमें भी तो न ले डूबेंगे? स्वामी जी ने कहा ब्राह्म-समाजियों और ईसाइयों की भांति पृथक होकर सामूहिक जातीय जीवन की मात्रा को घटा देना हमारा उद्देश्य नहीं है। इन्हीं लोगों में रहते हुए अपने कर्तव्य कर्म को करते जाओ, वैदिक धर्म का प्रचार करो, ये लोग यदि आपका विकट विरोध करें और घृणा करें तो भी इनको अपनाने का यत्न करो अपनी धर्म-धारणा से एक अंगुली भर भी इधर-उधर नहीं झुकना चाहिए। अन्त में ये सब आपका रूप बन जायेंगे। उतावली में कुछ मनुष्य आगे निकल सकते हैं परन्तु शोभा सबको साथ लेकर आगे बढ़ने में है।

(४)

हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए

कुछ उद्दण्ड लोगों ने मिलकर फर्रूखाबाद में एक आर्य सभासद् को मारा पीटा था और अभियोग चलने पर स्काट महाशय के न्यायालय से दण्ड मिला था। जब स्वामी जी वहां पधारे तो आर्य पुरुषों ने अपनी विजय का समाचार बड़े हर्ष से उन्हें सुनाया। स्वामी जी ने कहा :—

"हमने लोगों के कठोर हृदय को कोमल

समाजकल्याण कार्य के प्रथम शिल्पी—लाला लाजपतराय

[श्रीयुत ब्रह्मदत्त जी स्नातक]

आज के समाज सेवी कल्पना भी न कर सकेंगे कि अब से पौन शताब्दी पहले समाज सेवा या समाज कल्याण के कार्य की रूपरेखा इतनी विशद होते हुए भी उसको चलाना कठिन था। धार्मिक अन्धविश्वास, पूर्वाग्रह तथा प्रतिगामिता के साथ जाति-बिरादरी, मजहब की संकीर्णता, उदार एवं विशाल दृष्टिकोण की न्यूनता, सरकारी संरक्षण और प्रोत्साहन का अभाव तथा उसके साथ ही समाजोत्थान के लिए आवश्यक और प्रभावशाली प्रचार साधनों की कमी समाज कल्याण के कार्य के कार्यों में रोड़ा बनकर आ रही थी। वह काल १९ वीं सदी का उत्तरार्ध था १८५७ के भारतीय जनजागरण को जिस प्रकार अंग्रेज शासकों ने बुरी तरह कुचल मारा था और देश को न केवल राजनीतिक और आर्थिक गुलामी में अपितु सांस्कृतिक और मानसिक दृष्टि से सर्वथा पराधीन बनाने के लिए नित नये षडयन्त्र और योजनाएं बना

बनाना है। दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखकर हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है।"

(५)

अपने ही किए कर्म का फल मिलता है

मेरठ में श्री निहालचन्द ने प्रश्न किया—भगवन्! एक मनुष्य ने अपने जीवन काल में बहुत धन एकत्रित किया। वह काल-वश मरकर ऐसे वैसे जन्म में चला गया है। उसके एकत्र किए धन को यदि उसके पुत्र-पौत्र शुभ कर्मों में लगाते हैं तो उस कर्म का उसको लाभ क्यों नहीं होना चाहिए?

महाराज ने उत्तर दिया—"अपने ही किए कर्म का फल मिलता है। यदि पीछे छोड़े अपने धन से शुभ कर्मों का फल मानो तो पितामह की सम्पत्ति को पाकर पुत्र-पौत्र जो घृणित दुष्कर्म करते हैं उनका पाप भी मृतक की आत्मा को ही लगना चाहिए। अपने पुरुखाओं की सम्पत्ति पाने से पुण्य थोड़े जन ही करते हैं। अधिकांश तो पाप ही किया जाता है।"

(६)

विद्याजन्य सुख ही सच्चा सुख है

एक भक्त ने पूछा—महाराज! क्या अज्ञान की निवृत्ति और ज्ञान की प्राप्ति से ही सुख होता है?

महाराज ने उत्तर दिया—सुख दो प्रकार का होता है—एक विद्या जन्य और दूसरा अविद्या जन्य।

विद्याजन्य सुख ही सच्चा सुख है। यह सुख अज्ञान की निवृत्ति और ज्ञान की प्राप्ति से होता है। अविद्या-जन्य सुख तो पशु आदि जीवों में पाया जाता है। जीव एकदेशी होने से अल्पज्ञ है। इसीलिए अज्ञानी हो जाता है। परमात्मा देश-काल से ऊपर और सर्वज्ञ है। उसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। वह परमानन्दमय, आनन्दमय पर ब्रह्म है।

कर चलायी जा रही थीं, उसने भारतीय जन-मानस को सामाजिक परिवर्तनों के साथ साथ समाज कल्याण के प्रति अधिकाधिक शंकालु बना दिया था।

लाजपतराय के आविर्भाव के समय आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का देहान्त हो चुका था, और उत्तर भारत में आगे चलकर होने वाले महान् आन्दोलन की रूपरेखा इसी काल में पंजाब में तैयार की जा रही थी। इस पृष्ठभूमि में लाजपतराय सार्वजनिक क्षेत्र में आगे आए। आज के धर्म निरपेक्ष वातावरण में चाहे सम्प्रदाय विशेष और वर्ग विशेष मे किये गये सामाजिक आन्दोलनों का हम भले ही यथोचित मूल्यांकन न कर सके, परन्तु निस्सन्देह इन पृथक् पृथक् आन्दोलनों का समष्टिगत परिणाम भारतीय समाज और राष्ट्रीयता के उभरते हुए स्वरूप में शीघ्र ही दृष्टिगोचर होने लगा।

समाज कल्याण के नाम पर यहां हम लालाजी द्वारा स्थापित किएगए डी. ए. वी. कालेज लाहौर तिलक राजनैतिक विद्यालय, नेशनल कालेज लाहौर और सबसे महत्वपूर्ण देन लोकसेवक मंडल की यहां हम चर्चा नहीं करेंगे, जिसके द्वारा देश को सहस्रों सामाजिक कार्यकर्त्ता, निस्वार्थ देश-सेवक और सेवा-भावी मूक युवक मिले।

अछूतोद्धार के प्रवर्तक

अछूतोद्धार के लिए सन् १९१३ में ही लाला जी ने अपनी ओर से ४० हजार रुपये दान देकर लाहौर में रावी के पास दलित परिवारों की एक आदर्श बस्ती बना कर उनके शैक्षणिक और आर्थिक सुधार का श्री गणेश किया, तथा इसी काम के लिए जालंधर जिले में कुछ केन्द्र और स्कूल खोले गए। देहली षड्यन्त्र के क्रान्तिकारी नेता भाई बालमुकुन्द को, जिन्हें मृत्यु दंड मिला था, इसका निरीक्षक लाला जी ने नियत किया था। उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर में हरिजन विद्यार्थियों के लिए कुमार आश्रम को स्थापित करके यह कार्य शुरू किया था जो अब तक चल रहा है। राज्य के भूतपूर्व मंत्री श्री अलगूराय शास्त्री इसके मुख्य व्यवस्थापक रहे हैं।

राजनीतिक दृष्टि से इस आन्दोलन को चलाने की प्रेरणा लाला जी को १९२४ की काकिनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद अली के भाषण से मिली जिसमें उन्होंने अछूतों को हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बांट देने का प्रस्ताव किया था। उन्होंने एक कमेटी अखिल स्तर पर बना कर अछूतोद्धार का काम वेगपूर्वक शुरू किया और लोक सेवक मण्डल के सदस्य पंजाब, यू० पी० और दिल्ली के आस-पास केन्द्र बना कर उसमें जुट पड़े। १९३४ में कांग्रेस के अन्तर्गत इसके बाद ही गांधी जी ने देश में हरिजन सेवा का काम शुरू किया था। इस दृष्टि से लाला जी इस कार्य के प्रवर्तक कहे जा सकते हैं।

उन्नीसवीं शती के अन्तिम वर्षों में भारतवर्ष पर प्राकृतिक कोप एक के बाद एक अनावृष्टि दुर्भिक्ष महामारी के रूप में हुआ। बम्बई में प्लेग की महामारी फैली तो उसके बाद पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में दुर्भिक्ष और अनावृष्टि ने अपना पंजा फैलाया। कीड़े मकोड़े की तरह शिशु युवक, महिलाएं और वृद्ध मौत के मुंह में जाने लगे। यही छप्पनियां का मशहूर अकाल था जिसकी भीषणता अब भी इन प्रदेशों के लोकगीतों में सुनी जा सकती है। सन् १९०६ मे फिर ताऊन का जोर रहा और अकाल ने देश पर दूसरा जोरदार आक्रमण किया। उन दिनों के राजनीतिज्ञ अधिकांशतः आराम पसन्द थे और राजनीति में रचनात्मक कार्य को कोई स्थान था ही नहीं। अकाल निवारण का सरकार

का काम अफसरशाही तरीके से चलता था और शेष काम ईसाई स्वयंसेवी संस्थायें चला रही थीं।

लाला लाजपतराय तो जन्मना सेवा की मूर्ति थे ही वे कूद पड़े तन मन धन से और कार्यकर्ताओं की सेना लेकर इस दानव का सामना करने लगे। राजनीति लाला जी को प्रिय अवश्य थी, परन्तु सेवा का मूल्यांकन उनके लिए उससे कहीं ऊंचा था। सेवा उनके लिए नीति नहीं धर्म था। नेविन्सन ने ठीक ही उनके बारे में लिखा था--

'लाजपतराय. जिनका कि जीवन तपस्या और उदारता से पूर्ण था, जिन्होंने निर्धनों तथा अशिक्षितों की सेवा के लिए भारी सांसारिक सफलता का जीवन त्याग दिया था, उन पुरुषों मे से थे जिनकी आत्मा में सहज ही अपने देशवासियों के दुखड़े प्रवेश कर जाते हैं। स्वभाव से राजनीति से दूर रहने वाले होने के कारण उन्होंने अपना जीवन उन गूढ़ प्रयत्नों में लगा दिया जो अच्छी अथवा बुरी सरकारों की पहुंच से बहुत दूर हैं।"

लाला जी के ही शब्दों में उस अकाल के भीषण रूप और सहायता कार्यक्रम का चित्र देखिये-"उनमें से अधिकांश तो मृतप्राय दिखाई पड़ते थे। हम तो कुछ इने गिने लोगों को सहायता देना चाहते थे और अभी हमने थोड़ी सी सहायता ही दी थी कि बालकों तथा अन्य विपतिग्रस्त लोगों का भारी समूह हम पर टूट पड़ा और सहायतार्थ पुकारने लगा--इस पर जो हृदयविदारक दृश्य देखने को मिले वे वर्णनातीत हैं। सच्ची बात यह है कि मेरे मन में यह विचार आया कि क्या इन लोगों को मत्युका ग्रास बननेदेनाउनकेप्रति अधिक दयालुता नहीं होगी। क्योंकि उनमें से अधिकांश तो निश्चित रूप से ही काल के गाल में चले जाएंगे।"

अकाल निवारण के इस काम में महामना मालवीय जी, श्री पुरुषोत्तम दास ठंडन और श्री देवधर जैसे लोग उनके सहायक हो गए। जन-सेवा की इस पुकार में नींव रखने वाले सर्वप्रथम व्यक्ति लाला जी ही थे। आत्मनिर्भरता का यह प्रथम सफल प्रयोग था।

राष्ट्र की पौध के माली—लालाजी

ऐसी भयानक स्थितियों में सहायता कार्य करते हुए सरकारी लोगों की कार्य प्रणाली और ईसाई मिशनरियों के हथकण्डों से उनको बड़ी पीड़ा पहुँची और उन्होंने तुरन्त निश्चय किया कि राष्ट्र की आशा -इन लालों को हर कीमत पर बचाया जाय और जुट पड़े प्राणपण से इस काम में। उस काल तक स्वयंसेवी संगठनों की नींव भी देश में नहीं पड़ी थी। कुल मिलाकर २०८० अनाथों की प्राण-रक्षा हुई। लाहौर लाये जाने वाले अनाथों के दल को उन्होंने अपनी कोठी पर ही ठहराया बाद में शिशु आश्रम खोल कर २५० ३०० अनाथ स्थायी रूप से रखे गये। फिरोजपुर में आर्य अनाथालय और मेरठ में वैश्य अनाथालय उन्होंने ही खुलवाये और उनकी देखा-देखी और स्थानों पर बाद में खुले।

लाला जी के शब्दों मे इस कार्य से सबसे बड़ा लाभ भिन्न-भिन्न प्रान्तों के हिन्दुओं में भ्रातृत्व की वृद्धि होने के साथ यह हुआ कि सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस प्रकार के कल्याण कार्य करने और चलाने की व्यावहारिक ट्रेनिंग मिल गयी।

महिला कल्याण

अपनी माता गुलाब देवी जी के नाम पर लाला जी ने मत्यु से पूर्व एक लाख रुपये दान देकर और एक लाख रुपये चन्दा जमा करके

(शेष पृष्ठ २५ पर)

एक मधुर संस्मरण

[श्री पंडित रामचन्द्र जी देहलवी]

स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज आर्यसमाज के एक अनुपम रत्न थे। शारीरिक रूप में जिस तरह बड़े और प्रभावशाली थे, वैसे ही अपने कामों में भी थे। जब तक जीवित रहे, आर्य समाज को बहुत बडे नेता के होने का अभिमान रहा। उनके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकी और समय समय पर उनके अभाव को समाज बड़े उत्कट रूप मे अनुभव करता रहा है। स्वामी जी आर्य समाज को कोई समुदाय नहीं समझते थे। उनकी दृष्टि विशाल थी। प्रत्येक धर्म की भली बात को भली समझते थे और आपत्ति आने पर उनकी सहायता के लिये उद्यत हो जाते थे। परन्तु धर्म और सचाई के मामले मे किसी से भी समझौता करना नहीं चाहते थे। हमेशा देश-काल के अनुकूल उनका व्यवहार रहा और कभी भी उन्होने किसी ऐसे मौके को जिससे आर्य समाज को या सर्व साधारण को लाभ हो, खाली नहीं जाने दिया। वे बडे कर्मण्य थे। अपने जीवन में आयु भर आर्य समाज के सिद्धान्तानुकूल कार्य करके दिखलाते रहे। उनके जीवन की तरह उनकी मृत्यु ने भी सारे भारतवर्ष मे बडा प्रभाव डाला। वे लोग जो आर्य समाज से कम सहानुभूति रखते थे या बिल्कुल नहीं रखते थे, उनके दिल मे भी नजदीकी सहानुभूति उत्पन्न कर दी थी। हिन्दू धर्म के तमाम सम्प्रदायों मे आर्य समाज के प्रति एक प्रेम की लहर पैदा कर दी। हमें चाहिये कि ऐसे नेताओं की याद उसी तरह करें जैसे कि उन्होंने ऋषि दयानन्द की की थी। अर्थात् अपने जीवन को वेदों के उपदेश और ऋषि दयानन्द के आदेशानुकूल बना दे।

एक बार किसी अपने व्याख्यान मे उन्होंने अन्य धर्मों के साथ आर्य समाज के शास्त्रार्थ पर कुछ टीका की। मुझे उसकी सूचना मेरे मित्रों ने दी। मै इस बात को सहन न कर सका और मैने आर्य समाज सीताराम बाजार के वार्षिकोत्सव के समय, जो नजदीक ही होने वाला था, एक इश्तिहार द्वारा स्वामी जी को चैलेञ्ज दे दिया कि वे शास्त्रार्थ करने को शास्त्र या युक्ति के विरुद्ध सिद्ध करें। तारीख समय व स्थान इश्तिहार मे दे दिया गया था। श्री स्वामी जी महाराज दिये हुए समय पर नहीं पधारे, तो मैने न्याय शास्त्रानुकूल व युक्ति से शास्त्रार्थ की उपयोगिता जनता के सामने व्याख्यान द्वारा कह सुनाई। पहले तो जनता ने यह समझा कि शायद मै स्वामी जी के विरुद्ध उल्टा-सीधा बोलूंगा। परन्तु जब उन्होंने मेरा व्याख्यान सुना तो सब प्रसन्न हुए कि मैने स्वामी को अपने व्याख्यान मे बडे आदर से याद किया और कोई बदनीयती का दोष तो उन पर नहीं लगाया। यह चीज तो खत्म हो गई, परन्तु कुछ दिनों बाद जब कि मलकानों की शुद्धि का दौर दौरा चल रहा था, तो स्वामी जी महाराज घर पर पधारे। मेरे दिल को उन्होंने इस तरह आकर मोह लिया और मुझ से कहने लगे कि "आप शास्त्रार्थ के लिए आगरा जाये। वहां आपको वह ग्राम बता दिया जायगा, जहाँ शास्त्रार्थ होना है।" मैने स्वामी जी से कहा कि "आप तो शास्त्रार्थ के विरुद्ध हैं। फिर मुझे क्यों शास्त्रार्थ के लिए भेज रहे हैं?" स्वामी जी ने हंस कर कहा "आपके शास्त्रार्थ के विरुद्ध नहीं हू। मै तो उनके विरुद्ध हू, जो शास्त्रार्थ करना नहीं जानते। उन लोगों से लाभ के स्थान पर हानि होती है।"

संक्षिप्त जीवन परिचय –

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, काशी

[हम शिष्य लोग तथा आचार्य पाद के अनन्य भक्त आपसे जन्म स्थान आदि के विषय में बराबर पूछते रहे, परन्तु आपने कभी भी नहीं बताया। यह भी एक संयोग की बात है कि राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित होने के अवसर पर उन्होंने आपका परिचय मांगा और आपने न चाहते हुए भी लिखकर उन्हें भेजा। उसी की प्रतिलिपि आपके स्वर्गवास के पश्चात् उनके कागजों में मिली। यदि राष्ट्रपति द्वारा परिचय न मांगा गया होता तो आर्य जनता इस संक्षिप्त पूर्ववृत्त से भी अज्ञात रहती। हम यह संक्षिप्त परिचय आचार्यपाद के शब्दों में ही उपस्थित कर रहे हैं। एक दो स्थान पर वाक्य-विन्यास मात्र ठीक किया गया है। इसी के साथ दो तीन हस्तलिखित पत्र और भी मिले हैं, जिनमें इससे विस्तृत घटनाओं वा घटनास्थलों का संकेत मात्र ही है। उसके आधार पर अगस्त सन् १९२१ के पश्चात् की घटनाओं का वर्णन तो मैं कर सकता हूँ क्योंकि तब से मैं उनके साथ रहा हूँ। परन्तु उससे पूर्व की घटना संकेतों का विशदीकरण होना कठिन ही नहीं असम्भव सा है, फिर भी एक विचार आता है कि उन्हें भी उन्हीं संकेत रूपों में ही छाप दें। सम्भव है उस समय के सम्पर्क में आये कोई व्यक्ति उनपर कोई प्रकाश डाल सके। इस प्रकार एक वृहद् जीवन चरित्र लिखने में सहायता मिल सकती है।]

यु० मी०

जन्म—१४ अक्टूबर सन् १८९२ ई०

जन्म स्थान—मल्लूपोता—थाना बंगा, जिला जालन्धर, पंजाब।

पितृनाम—रामदास, माता का नाम—परमेश्वरी। सारस्वत ब्राह्मण, पाठक गोत्र, पट्टी जिला होशियारपुर से निकास, माता का गोत्र सहजपाल।

पूर्वनाम—पिता का प्यार का नाम मौज गोविन्द, प्रचलित नाम लब्भूराम, गुरुद्वारा दिया नाम—ब्रह्मदत्त जिज्ञासु।

अध्ययन—माता पिता दोनों अनपढ़ थे। नाना संस्कृत के महाविद्वान् थे। महतपुर लदनी (बलाचौर) के निवासी थे। पिता गुरुमुखी में हस्ताक्षर करना जानते थे। चक नं० ९६ बंगा जिला लायलपुर (पाकिस्तान) में ठेकेदार के मुंशी थे। उक्त ग्राम में निवास करते हुए चक नं० ९७ जौहल जिला लायलपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में प्राइमरी स्कूल की प्रथम श्रेणी में उर्दू पढ़ना आरम्भ किया। बालकपन में खरबूजे को सूंघकर बता देता था कि कौन सा मीठा निकलेगा। दूसरी-तीसरी श्रेणी में गुरुदासपुर (पंजाब) में गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में पढ़ने लगा। ९ वर्ष की आयु में माता पिता दोनों का देहान्त हो चुका था। अनाथ अवस्था में सरदार बहादुर जवाहरसिंह जी ठेकेदार ने १९०३ ई० तक पालन किया और पढ़ाया। १९०३ से १९१२ ई० तक जन्मभूमि के ग्राम में परिवार वालों ने गुरुदासपुर से बुलाकर मल्लूपोता में पढ़ाना और पालन आरम्भ किया। श्री छन्नूराम जी (ग्राम में सबसे बड़े धनी, रिश्ते में बाबा तथा उनकी विधवा पुत्री श्रीमती रली देवी (बुआजी) ने अत्यन्त प्यार से पाला और पढ़ाया। गांव के प्राइमरी स्कूल में उर्दू ५ श्रेणी १९०५ में और वरनेकुलर

मिडिल स्कूल बंगा में मार्च १९०९ में उर्दू मिडिल पास किया तत्पश्चात अनाथ होने से आगे पढ़ाई का कोई प्रबन्ध न था कि अकस्मात् द्वाबा हाई स्कूल जालन्धर (जिसमें महात्मा मुंशीराम) पीछे स्वामी श्रद्धानन्द जी मैनेजर थे। मैं मास्टर शिवदयाल जी की असीम कृपा से आर्य बोर्डिङ्ग हाऊस कोट किशनचन्द में भोजन व्यय निःशुल्क हो जाने से तथा मास्टर सुन्दरसिंह जी हैडमास्टर द्वारा द्वाबा (आर्य) हाई स्कूल जालन्धर में निःशुल्क कर देने से जूनियर स्पेशल में पढ़ने लगा। सीनियर स्पेशल में विशेष प्रार्थना करके संस्कृत पढ़ने लगा। ६-१० श्रेणी में भी संस्कृत पढ़ी। जौहल गुरुदासपुर तथा गांव में तो श्रेणी में प्रायः प्रथम रहा। पढ़ाई और व्यायाम का भी सदा मानीटर रहा मिडिल में भी योग्यतम छात्रों में था। जूनियर सीनियर में भी अच्छा रहा। ९-१० श्रेणी में प्रायः समो विषयों में सदा प्रथम रहा संस्कृत में भी अंग्रेजी में भी। जितने भी अध्यापक रहे--जिनमें मौलवी, पंडित एवं मास्टर थे, प्रायः सबका ही अत्यन्त प्रेम तथा कृपा पात्र रहा। मिडिल के पश्चात् हिन्दी का प्रारम्भ अपनी बड़ी विधवा चचेरी बहिन कर्मदेवी (मेलादेवी) शांकर से किया जो 'शन्नो देवी' की सन्ध्या करती थी जो मै नहीं जानता था, जिसने बाल्यकाल में गोदी में खेलाया भी था। घर वाले सन्ध्यादि से सर्वथा शून्य थे। पुरोहिताई थी पर जाता न था, न इसका ज्ञान ही था। घर के पीछे मस्जिद में बांग होती थी और याद हो गई थी। पीछे भजनों द्वारा आर्य समाज का पता लगा जो आर्य स्कूल में दृढ़ हो गया। सत्यार्थ प्रकाश हाथ लगा जिसने अलौकिक प्रभाव किया।

गृहत्याग -सन् १९१२ में आर्य समाज, ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि की गहरी छाप पड़ी और श्रेणी में प्रायः प्रथम रहने तथा अच्छी संगति के कारण संस्कृत पढ़ने विशेषतया आर्ष ग्रन्थों (अष्टाध्यायी महाभाष्य) तथा वेदादि के अध्ययन तथा ईश्वर प्राप्ति का दृढ़ संकल्प ले कर ५ जून १९१२ की रात्रि में ही जालन्धर से गृह त्याग दिया। ५० वर्ष गुम रहा। बीच में लाहौर स्टेशन पर १८ वर्ष पीछे ग्राम के एक सज्जनने गाड़ी में पहिचान लिया। गांव जाने का विशेष आग्रह किया। पर उसे पूरा पता नहीं बताया। चचेरे भाई बीरबल जी हरिद्वार घाट पर दीखे तो मुख पर कपड़ा कर लिया जो पहिचान न सके। सो बच गया। माता पिता थे नहीं पीछा करता भी कौन? करता भी तो । प्रभु ने पूरी कृपा की नहीं तो वैनकौवर (अमेरिका) में चचेरे भाई के साथ सोना वा रुपया कमाता होता।

संस्कृत अध्ययन—स्वर्गीय पूज्य स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती (भूतपूर्व मास्टर सुखदयाल जी) के पास ला० बेनीप्रसाद के यहाँ कनखल में पहुंचा। स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी के अध्ययन काल में अष्टाध्यायी आदि ग्रंथ काशी के बड़े विद्वान पं० काशीनाथ जी से पढ़े थे। यह बड़े योग्य त्यागी, तपस्वी, तीव्रबुद्धि, बालब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द तथा आर्ष ग्रन्थों के परम भक्त थे। गुरुकुल बदायूं तथा काशी में पढ़े थे। अष्टाध्यायी के १०० सूत्र प्रतिदिन पेड़ पर चढ़ कर याद किया करते थे। उन्होंने अपनी बहिन सुनीति देवी का विवाह स्वामी श्रद्धानन्द जी के धर्मपुत्र धर्मपाल (अब्दुल ग़फूर) के साथ करने का निश्चय किया था और उनके आचारहीन पता लगने पर नहीं किया था। इन स्वा०पूर्णानन्दजीसे संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया। वेदांगप्रकाश, उपनिषद्, अष्टाध्यायी आदि पढ़ने लगा। महाविद्यालय ज्वालापुर वालों के अत्यन्त निराश करने पर भी कि अष्टाध्यायी से व्याकरण नहीं आता--अष्टाध्यायी नहीं हो सकती--यह कहने पर भी अष्टाध्यायी में पूर्ण निष्ठावान् था।

उन्हें उत्तर दिया कि "अष्टाध्यायी" के आठ अध्यायों में ३२ पाद हैं यदि सारे जीवन मे एक पाद भी पढ़ लिया तो सफल समझूंगा। शेष अगले जन्म में करूंगा। इतने दृढ़ संकल्प से आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने का उद्देश्य लेकर उक्त स्वामी जी महाराज के चरणों मे कनखल, मुरादाबाद, वृन्दावन, लखनऊ, राय बरेली, अमेठी, डलमऊ, मसूरी, देहरादून, काश्मीर, सुजानपुर, पठानकोट, लखनौती, गंगोह, मुलतान, रघुराजगंज आदि नगरों-पहाड़ों की पैदल एवं रेलादि यात्रा में भिक्षावृत्ति से रह कर तथा अन्त में लगभग ३ वर्ष डलमऊ (जि० राय बरेली) गंगा तट पर एकान्त वास में रह कर उक्त स्वामी जी से अष्टाध्यायी-महाभाष्य निरुक्तादि पढ़ता रहा। अष्टाध्यायी एक दिन मे एक पाद कण्ठस्थ कर लेता था। ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों का गहरा अध्ययन एवं अनुशीलन उक्त स्वामी जी से किया। "मेरे में जो अवगुण हैं वे मेरे हैं, यदि कोई गुण हैं वा जो ऋषि दयानन्द और आर्ष ग्रन्थों में गहरी भक्ति है, यह सब उक्त स्वामी जी की ही देन है।" इस प्रकार जून १९१२ से सितम्बर १९१८ तक लगभग ६ वर्ष उक्त स्वामी जी के चरणों में उत्तर भारत में रहा।

अज्ञातवास—सितम्बर १९१८ से विशेष घटनावश ज्वरावस्था में ही खुर्जा जि० बुलन्दशहर से उक्त स्वामी जी से पृथक् होकर ग्राम अरनियां जिला बुलन्दशहर में ठाकुर हरज्ञान सिंह जी चौहान राजपूत के चौपाल तथा बगीचे (जंगल में) भिक्षावृत्ति से बीमार रहा। उन्होंने मेरी बड़ी सेवा की। ब्रह्म जिज्ञासु के नाम से अज्ञातवास में रहा। उस समय में तथा पीछे भी योगियों महात्माओं की खोज में गंगा तट पर विचरता रहा। कई मिले भी—उनसे लाभ उठाया। यह भूमि बहुत ही उपयुक्त प्रतीत हुई।

कार्यकाल १९२० से १९४७ तक—

अध्यापन तथा अध्ययन

सन् १९२० ई० में साधु आश्रम (पुल काली नदी) हरदुआगंज जि० अलीगढ़ में स्वर्गीय वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से एक घटना घटी जिसे जीवन की विशेष घटना कहा जा सकता है। उक्त आश्रम से लघुकौमुदी-सिद्धान्त कौमुदी का सर्वथा बहिष्कार हुआ। महाराज द्वारा अष्टाध्यायी की स्थापना होनेसे वहां अध्यापन आरम्भ किया,वीतरागस्वामीसर्वदानन्द जी महाराज से उपनिषत् पढ़ी और एक वर्ष पीछे धन की कमी के कारण गण्डासिंहवाला (अमृतसर) में विरजानन्द आश्रम में महाविद्वान् श्री पं० शंकर देव जी के साथ अष्टाध्यायी का अध्यापन कार्य किया। स्वयं भी आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करता रहा। लगभग ४ वर्ष वहां काम किया। बीच मे लगभग १० मास भरतपुर-मथुरा-आगरा आदि में स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में १९२३ ई० में मलकानों की शुद्धि का कार्य अपने सहपाठी श्री पं० अखिलानन्द जी झरिया के साथ बड़ी सफलता से किया। दूसरी बार सन् २६ से २८ तक स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान पर पूज्य गुरुवर तिवारी जी की प्रेरणा एवं माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी की पांच सौ रुपये मासिक की सहायता से काशी के पण्डितों एवं संन्यासियों की अन्तरंग सभा द्वारा काशी हिन्दू शुद्धि सभा के मन्त्री रूप में पं० केदारनाथ सारस्वत,स्वामी रामानन्द, म०म० पं० देवीप्रसाद कवि चक्रवर्ती आदि के सहयोग से कार्य किया। जब कि पं० गोपाल शास्त्री जी जेल में थे। इन सब में तथा आगे काशी में आचार्य श्री पं० शंकरदेव जी मेरे साथी रहे। काशी में पहली बार हम लोग कुछ छात्रों सहित जनवरी सन् १९२६ से अप्रैल,

१९२८ तक रहे। क्षेत्रों में भोजन करते हुए अपने छात्रों को भोलाशाह के बगीचे करण घण्टा में पढ़ाते थे और स्वयं व्याकरण के सूर्य श्री पं० देवनारायण तिवारी जी से सम्पूर्ण महाभाष्यादि पढ़ते रहे। श्री पं० ढुण्ढिराज जी शास्त्री, पं० श्री गिरीश जी शुक्ल तथा गोस्वामी दामोदर लाल जी आदि से प्राचीन दर्शनों का पूरा अध्ययन किया। सन् २८ से ३१ तक राम भवन, अमृतसर में युधिष्ठिरादि छात्रों को सम्पूर्ण महाभाष्य तथा निरुक्तादि पढ़ाता रहा। वैदिक वाङ्मय तथा प्राचीन इतिहास के मर्मज्ञ पं० भगवद्दत्त जी से रिसर्च का ज्ञान हुआ। सन् १९३१ में महात्मा हंसराज जी की विशेष प्रेरणा से उनके सभापतित्व में पं० विश्वबन्धु शास्त्री एम. ए., पं० राजाराम शास्त्री तथा पं० चारुदेव जी शास्त्री से "निरुक्तवाद और वेद में इतिहास" विषय पर लाहौर में ५ दिन शास्त्रार्थ किया। जिसमें समाधान पक्ष में मुख्य नाम ब्रह्मदत्त का था। दुबारा काशी में सन् १९३१ से ३५ तक शीतला घाट पर विरजानन्द आश्रम, राज मन्दिर में पूर्ववत् छात्रों को महाभाष्यादि पढ़ाते हुए स्वयं भारत में अद्वितीय मीमांसक म० म० पं० चिन्न स्वामी शास्त्री जी से तथा उनके शिष्य पं० पट्टाभिराम शास्त्री जी से सम्पूर्ण मीमांसा के सब ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हुआ। महान् वैदिक विद्वान् पं० रामभट्ट रटाटे जी से श्रौत तथा अन्य विद्वानों से शेष सब दर्शन साहित्य में मूल ग्रन्थों तथा वाक्यपदीप आदि का अध्ययन अनेक विद्वानों से काशी में किया। संसार में एक ही हस्तलेख वह भी फोटू में भर्तृहरि महाभाष्य की टीका छपनी आरम्भ हुई, उसका सम्पादन किया।

लाहौर रावी तट पर

सन् १९३६ से सन् १९४७ तक रावी तट (शाहदरा) लाहौर विरजानन्द आश्रम में छात्रों को अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, दर्शन तथा वेदों के अध्यापन के साथ २ ब्राह्मण ग्रन्थों का विशेष अनुशीलन यजुर्वेदभाष्य विवरण प्रथम भाग की तैयारी तथा छपना - परोपकारिणी सभा अजमेर सम्बन्धी अनेक कार्य-देवतावाद विषय पर पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी के साथ कई मास तक लिखित शास्त्रार्थ हुआ। रामलाल कपूर द्वारा विविध प्रकाशन कार्य हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह में हमारे छात्र गये थे कई मास तक आश्रम बन्द रहा। मार्च १९४७ से २३ अगस्त १९४७ तक रावी तट पर जब कि (हिन्दू) लाहौर समाप्त हो चुका था। हम सब रावी तट पर रहे, अन्त में हिन्दू सैनिकों द्वारा ट्रकों मे भर कर लाहौर कैम्प में लाये गये और २८ अगस्त १९४७ को देवयोग से बचकर अमृतसर पहुँचे। ५०-६० मन पुस्तकें जिनमें सैकड़ों हस्तलेख भी थे, जला दिये गये। लगभग ९० मन पुस्तकें हम लोग ले आये थे।

१५ वर्ष से काशी में

सन् १९७५ से १९२८ ई० तक पहिले काशी में रहे तथा सन् १९३१ से १९३४ तक दूसरी बार काशी में रहे। तीसरी बार १९५७ से ३१ अगस्त सन् १९६४ ई० तक काशी मोतीझील में हूँ, कल का पता नहीं। पाकिस्तान से निकलने को बाधित किये जाने पर अनेक स्थानों (गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल चित्तौड़, सरस्वती भवन अजमेर आदि में) स्थान मांगने पर भी सहयोग न मिलने पर मार्च सन् १९५० में पूरी तरह काशी में डेरा डाला। अक्तूबर सन् ४७ से फरवरी १९५० तक शुद्धि आदि कार्यों में समय लगाया। अन्त में मार्च १९५० में मोती झील काशी में डेरा डाला गया कि जब तक अन्यत्र कोई स्थिर प्रबन्ध न हो यहीं रहा जाये। यहां अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, मीमांसा, श्रौत, ब्राह्मण, वेदादि का अध्ययन-अध्यापन विरजानन्द आश्रम

के रूप में ५०) मासिक किराये के मकान में चलता रहा। तत्पश्चात् अगस्त १९५३ से पाणिनि महाविद्यालय के रूप में पूर्ववत् चल रहा है, जिसमें भारत के प्रायः सभी प्रान्तों से संस्कृत के एम० ए०, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, शास्त्री, बी०ए०, मैट्रिकादि तथा डाक्टरेट, व्यापारी आदि बहुत संख्या में शिविरों में तथा विद्यालय में पढ़ते रहे तथा इस समय भी पढ़ते हैं, जिनमें कोरिया, अमेरिकादि विदेशियों के अतिरिक्त मुसलमान आदि भी आकर निःशुल्क संस्कृत पढ़ते रहते हैं। जाति या आयु का कोई प्रतिबन्ध नहीं। इस समय प्रौढ़ पठनार्थी बिना रटे अष्टाध्यायी पद्धति से संस्कृत तथा उसके व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कररहेहैं। कमसेकम ४० दिन में वा ६ मास में गीता-रामायणादि के समझने वा साहित्य-दर्शनादि के पढ़ने की सामर्थ्य हो जाती है। (द्वादशसु वर्षेषु व्याकरणं श्रूयते) १२ वर्ष में व्याकरण पूरा होता है, के स्थान में (चतुर्षु वर्षेषु व्याकरणं श्रूयते) चार वर्ष में व्याकरण पूरा होता है, कराया जाता है। काशी के प्रमुख विद्वान् म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी आदि विद्वान् अष्टाध्यायी पद्धति पर मुग्ध हैं। काशी के विद्वान् चकित हैं और कहते हैं कि जिज्ञासु जी ने कोई देवी सिद्ध की हुई है। वह देवी 'अष्टाध्यायी' तो है। साथ में महाभाष्य, निरुक्त, श्रौत, मीमांसा, दर्शनादि के पाठ भी चलते रहते हैं।

योग्यता—लोग योग्यता पूछते हैं। योग्यता क्या बताईजाये। परीक्षा तो कोई पास कीनहीं। न ही किसी छात्र को (पढ़ाने पर भी) अपने नाम से परीक्षा देने दी। हां, दयानन्द विद्यापीठ की परीक्षायें दिलाते हैं और महायज्ञ एवं आर्ष गुरुकुल एटा के संचालक स्वामी ब्रह्मानन्द जी आदि के सहयोग से उसका संचालन १९४८ से बराबर कर रहे हैं जिनमें अष्टाध्यायी, महाभाष्य निरुक्त, दर्शन एवं साहित्य आदि की परीक्षाएं होती हैं। हां, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में जहां तक प्रतिकूल ग्रन्थ नहीं, वहां तक की परीक्षा देने की (वह भी बाहिर) अनुमति अष्टाध्यायी समाप्त कर लेने पर दी जाने लगी है जो पूर्णतया सम्मत नहीं।

कोई परीक्षा पास न होने पर भी लगभग ३० वर्ष से गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस, वर्तमान वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की व्याकरण,वेद आदि परीक्षाओंके आचार्य,शास्त्री, मध्यमादि के परीक्षक रहते आ रहे हैं। काशी के कार्य में संस्कृत वाङ्मय के सुयोग्य विद्वान् डा० मंगलदेव शास्त्री जी का अत्यन्त सहयोग सदा रहा। पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री के कई विषयों के परीक्षक रहे। गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन आदि अनेक संस्थाओं के विविध विषय के परीक्षक रहे। एम० ए० तथा आचार्यों को डाक्टरेट कराने में मार्ग-प्रदर्शन एवं पढ़ाना—पाणिनि महाविद्यालय द्वारा सैकड़ों प्रौढ़ पठनार्थियों को बिना रटे संस्कृत तथा संस्कृत व्याकरण का अष्टाध्यायी पद्धति द्वारा तय्यार करना, निःशुल्क पढ़ाना आदि कार्य वर्षों से कर रहे हैं।

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषत् (अकैडमिक कौंसिल) के निर्वाचित सदस्य, शिष्ट परिषत् (सैनिट) के सदस्य—कार्यकारिणी परिषत् (एक्जीक्यूटिव) के सदस्य हैं। ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी (परोपकारिणी) सभा अजमेर के १९३६ ई० से सदस्य—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के अन्तर्गत धर्मार्य सभा के सदस्य हैं। काशी विद्वन्मण्डल के सदस्य हैं। रामलाल कपूर ट्रस्ट के प्रधान हैं। मासिक पत्रिका 'वेदवाणी' के सम्पादक हैं। अखिल भारतवर्षीय वेद सम्मेलन तथा विद्वत् सम्मेलन लाहौर, मेरठ, कलकत्ता,

मथुरा, गुरुकुल वृन्दावन तथा गुरुकुल कांगड़ी, खुरजा, गोरखपुर आदि वेद सम्मेलनों के अध्यक्ष रहे। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा श्री बदरी नारायण संस्कृत महाविद्यालय जोशी-मठ (गढ़वाल) के अध्यापकों की नियुक्ति के लिए कमीशन के सदस्य रहे। आर्य समाज के प्रायः सभी प्रमुख विद्वानों नेताओं के आदर तथा प्रेम के पात्र रहे है। मेरे द्वारा बनाये वा सम्पादन किये ग्रन्थों मे यजुर्वेद भाष्य विवरण प्रथम भाग—अष्टाध्यायी भाष्य अजमेर तीसरा अध्याय का सम्पादन संस्कृत सरलतम विधि—तथा रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अनेक रिसर्च ग्रन्थ हैं। मेरा तथा मेरे शिष्यों का सामान्य परिज्ञान जनवरी १९६३ की मासिक टंकारा पत्रिका में मिल सकता है।

ये सब कार्य पाणिनि महाविद्यालय (मोती झील) वाराणसी नं० ६ से रामलाल कपूर रिसर्च विभाग द्वारा हो रहे हैं। जहां लगभग ४० अलमारी (लगभग १८ हजार पुस्तकें) पाकिस्तान लाहौर मे ५०-६० मन नष्ट हो जाने पर भी) एक निजी तथा ट्रस्ट का बृहत् पुस्तकालय है। जिनमें अलभ्य पुस्तकें भारी संख्या में हैं। पाणिनि महाविद्यालय बिना किसी सहायता—अपील वा धन मांगने के चल रहा है। जिसे देख कर सब चकित है। जिसमे अनेक पठनार्थी भी तैयार हुए हैं और हो रहे है। ऋषि दयानन्द प्रदर्शित आर्ष पाठविधि के विद्वान् भी तैयार हो रहे हैं। कुछ पुत्रियां भी तैयार हुई जो महाभाष्य आदि पढ़ाती है। राजकीय सहायता कुछ नहीं।

यह अति संक्षिप्त परिचय गत ५० वर्ष से छिपा ही रहा। महामान्य राष्टपति द्वारा सम्मान दिये जाने पर सरकार द्वारा परिचय मांगा गया तब न चाहते हुए भी यह सब भेद खुल गया। दैवेच्छा बलीयसी।

(पृष्ठ १७ का शेष)

एक ट्रस्ट स्थापित किया जिसके अन्तर्गत लाहौर मे महात्मा गांधी के हाथों एक महिला अस्पताल की स्थापना हुई। विभाजन के बाद अब यह जालंधर में सुचारुरूप से चलाया जा रहा है। कुल मिलाकर २५० रोगिशय्या इस अस्पताल मे हैं। ट्रस्ट की स्थापना के समय लाला जी ने इन शब्दों में अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया था—"मेरा विश्वास है कि हमने अपनी स्त्रियों के कल्याण के लिए बहुत कम काम किया है।"

लाला जी अपनी एक पुत्री पार्वती देवी के असमय में विधवा हो जाने पर सारे जीवन दुखी रहे। उसकी पीड़ा उनके अनेक पत्रों से स्पष्ट होती है। यावज्जीवन उसकी सहायता-संरक्षा तो एक स्नेहमय कर्तव्य परायण पिता की भांति वे करते ही रहे, परन्तु इस विषय मे मांडले की नजरबन्दी में अपने पुत्र को लिखी कुछ पंक्तियां इस प्रकार की आर्य स्त्रियों के प्रति लाला जी के करुणापूर्ण भावों को चित्रित करती हैं। वे लिखतेहैं "मुझे खुशीहै कि तुमने अपनी बहन को पढ़ाने का प्रबन्ध कर दिया है। मैं इसे अत्यन्त आवश्यक मानता हूँ। अच्छी शिक्षा से इस अभागी लड़की का वैधव्य दुख तथा निरन्तर शोक बहुत हद तक कम होजायगा। अच्छे ग्रन्थ, पत्र तथा पत्रिकाये उसे सदा पहुंचाते रहना।"

सन् १९२६ मे ५ हजार रुपये लाहौर की हिन्दू महिलाओं के कल्याणार्थ शारीरिक उन्नति के लिए लाला जी ने दान दिये। इस सम्बन्ध मे उनके पुनीत उद्देश्यों की बानगी उनके पत्र की इन पंक्तियों में देखिए—"मेरा विचार है कि पुरुषो की अपेक्षा उनकी आवश्यकता कहीं अधिक है।. यह धन मुझे अपनी पुस्तक 'अनहैपी इण्डिया" की रायल्टी के रूप में प्राप्त हुआ है। अतः यही उचित है कि मै उस पुस्तक की कमाई हिन्दू बहनों के कल्याणार्थ ही खर्च करूं।"

इस प्रकार भारतीय क्षितिज पर समाज-कल्याण कार्य की मूर्त कल्पना और आयोजित ढंग से चलाने का श्रीगणेश लाला जी के हाथों ही आज से ७० वर्ष पहले हुआ था। भावी सन्ततियां सदैव उनके आदर्श जीवन और कार्यों से प्रकाश और प्रेरणा प्राप्त करती रहेंगी।

मेरी जनसंख्या की लूट और उसका निदान

[श्री रामेश्वर दयाल बी० एम० सी०]

मैं देश को अपना क्यों कहता हूं ? हरेक हिन्दू इस देश को अपना क्यों कहता है ? देश के सच्चे नागरिक की परिभाषा आदिग्रन्थ वेद में स्वयं स्वयंभू ने की है। वेद के आविर्भाव के समय अन्य धर्म नहीं थे, अतः वे सच्चे धर्म-निरपेक्ष "सिक्यूलर" ग्रन्थ हैं. अथर्व वेद के पृथिवी सूक्त में हरेक व्यक्ति के अपनी पृथिवी माता के प्रति क्या विचार होने चाहिये, यह वर्णन किया है —

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे, यस्या देवा असुरानभ्यवर्तयन्। गवामश्वानां वयसाश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवीनो दधातु ॥५॥

जिस पर हमारे पूर्व-पुरुषों ने विविधकार्य किये, जिस पर देवताओं ने असुरों को हराया; जो पशु-पक्षियों का विश्राम स्थल है, वह पृथिवी माता हमें सदा तेज और वर्चस्व दे।

सो हम हिन्दुओं के पुरखाओं की यह भूमि है। इसके इतिहास पर हमें गर्व है। इसलिये उससे हमें मोह है।

यदि कोई विपत्ति आवे तो कोई पूर्व, पश्चिम या दक्षिण के देशों को पलायन कर जावेगा, परन्तु हम इसी भूमि के साथ भस्मसात् हो जावेंगे। यह हमारी पुण्य तथा पवित्र भूमि है। जब मनुष्य हिन्दू धर्म छोड़ देता है तो इस देश के इतिहास तथा पूर्व पुरुषों पर गर्व करना छोड़ देता है। उसे पृथ्वीराज की पराजय पर दुख नहीं होता, भारतीय स्वातन्त्र्य महत्त्वशील नहीं लगता, भारतीय भाषा नहीं सुहाती, अतः जितनी-जितनी हिन्दू की जन संख्या कम होती जाती है उतनी ही भारत की आत्मा कमजोर और शरीर कृश होता जाता है।

जब हम पराधीन रहे, परकीयों ने राज्य-सत्ता, तलवार का डर तथा धनवैभव के लालच में हमारी आबादी के बहुत बड़े भाग को हम से छीन लिया। परन्तु स्वतन्त्र भारत में भी वही क्रम उसी अबाध गति से पनपते देख यह सोचने पर विवश होना पड़ता है कि इसका क्या कारण है। और क्या निदान इस बढ़ोतरी का हो सकता है। आइये पहिले बढ़ोतरी पर दृष्टि डालें:—

	नाम धर्म—	इनकी जनसंख्या कुल भारत की जनसंख्या में कितने प्रतिशत है :— १९५१	१९६१
I	अ-मुस्लिम	९.९१ प्रतिशत	—१०.६९ प्रतिशत
	ब-ईसाई	२.३५ ,,	—२.४४ ,,
	स-बौद्ध	०.०५ ,,	—०.७४ ,,
	द-सिक्ख	१.७४ ,,	—१.७९ ,,
II	जैन	०.४५ ,,	—०.४४ ,,
	अन्य	०.५२ ,,	—०.३७ ,,
	हिन्दू	८४.९८ ,,	—८३.५१ ,,

	नाम धर्म—	कुल भारत में कितने प्रतिशत बढ़ी है।	प्रत्येक की अपनी पुरानी जनसंख्या से १० वर्ष में कितनी प्रतिशत बढ़ी है ?
I	अ-मुस्लिम	+०.७८ प्रतिशत	+२५.६१ प्रतिशत
	ब-ईसाई	+०.०९ ,,	+२७.३८ ,,
	स-बौद्ध	+०.६९ ,,	+१६७०.७१ ,,
	द-सिक्ख	+०.०५ ,,	+२५.१३ ,,
II	जैन	—०.०१ ,,	+२५.१७ ,,
	अन्य	—०.१५ ,,	—१३.०७ ,,
	हिन्दू	—१.४४ ,,	—२०.२९ ,,

उपरोक्त तालिका से कई बातें स्पष्ट हैं। आबादी का स्वाभाविक बढ़ाव हिन्दू बढ़ोतरी से जाना जा सकता है क्योंकि हिन्दू अपनी संख्या बढ़ाता ही नहीं है।

(१) जब कि स्वाभाविक बढ़ाव २० प्रतिशत है ग्रुप नं० १ के सब धर्मों की जो संख्या बढ़ी है वह २५ से २७ प्रतिशत तक है। बौद्ध तो पहिले से १७०० गुने अधिक बढ़े हैं। अन्य लोग जिनमें आदि वासी आदि आते हैं, घट गये हैं।

(२) ग्रुप नं० १ में सब लोग अर्थात् मुस्लिम-ईसाई-बौद्ध सिक्ख तो भारतीय-औसत में बढ़े हैं तथा ग्रुप नं० २ में जैन अन्य (आदि वासी आदि) तथा हिन्दू अत्यधिक घटे हैं।

(३) १६५१में हिन्दू ८४.६८ प्रतिशत था और अहिन्दू १५.१२ प्रतिशत था। अब १६६१ में हिन्दू ८३.५ प्रतिशत है और अहिन्दू १६.५० प्रतिशत अर्थात् कोई १॥ प्रतिशत अहिन्दू की आबादी बढ़ी हैं। अब कोई ७.३ करोड़ अहिन्दू इस देश में है जबकि हिन्दू ३६.६ करोड़ हैं।

यह त्रैराशिक स्पष्ट है। यह बढ़ोतरी अरिथमेटिकल प्रोग्रेशन से न होकर ज्योमेट्रीकल प्रोग्रेशन से हो रही है। ८३.५ प्रतिशत में बहुमत केवल ३३.५ प्रतिशत का है। १॥ प्रतिशत प्रति दशाब्दी में G.P. से कम होने पर यह ३३ प्रतिशत बहुमत लगभग ४ मर्दमशुमारियों में समाप्त हो जावेगा फिर यह ध्यान रहे कि अल्पमत के वोट इकट्ठे पड़ने से उसका पासंग के सिद्धान्तानुसार दोहरा प्रभाव पड़ता है। प्रश्न यह है कि जो ४० वर्ष में अवश्यम्भावी दीखता है उसका प्रबन्ध सोचना चाहिये या नहीं। यों ही अधिक विवेकशील होने से हिन्दू वोट अनेक पार्टियों में विभाजित हैं।

एक व्यक्ति का एक वोट के सिद्धांत में होता यह है कि जो पार्टी बहुमत प्राप्त करना चाहती है या प्राप्त करके उसे बनाये रखना चाहती है, वह वोटों के लिये अल्पमत से समझौता करती हैं। उन्हें संरक्षण, स्वतन्त्रता, नौकरियां तथा आर्थिक प्रलोभन देती है। अल्पमत सोचते हैं ऐसी ही पार्टी को सपोर्ट करना चाहिये। उन्हें जो कुछ विशेषाधिकार मिलता है, वह बहुमत के हिस्से में से ही मिलता है। भारत की विभिन्नता पर अधिक जोर, भारत की संस्कृति को मिली जुली संस्कृति बताना, इकाइयों की अर्धस्वतन्त्रता (Provincial Autonomy), धर्म निरपेक्षता आदि उसी नीति के परिणाम हैं। अल्पमत के संगठित वोट प्राप्त करते रहने की तरकीबे हैं। इस प्रकार भारत में १६.५ प्रतिशत वोट तो ऐसे प्रलोभन देने वाली पार्टी की जेब में हैं। इनका दो गुना अर्थात् ३३ प्रतिशत प्रभाव पड़ता है। शेष बहुमतीय जनसंख्या में आर्थिक प्रोग्राम पर कई पार्टियां बन कर विभेद हो जाते हैं। अतः प्रजातन्त्र की इस पद्धति में जो हमने अपनाई है, राज्य सत्ता उनके हाथ में है जिनका मुख्य साहाय्य यह १६ प्रतिशत अल्पमत वाले हैं। देश तो हमारा है, पर हमारा भाग धीरे-धीरे गद्दी बनाये रखने को औरों को बांटा जा रहा है। यह प्रत्यक्ष गणित है। पता नहीं लोग इसे समझ क्यों नहीं पा रहे। अस्तु कोई भी देशीय समस्या हो, हम आसानी से भविष्य वाणी कर सकते हैं कि शासक पार्टी का अमुक समस्या पर क्या रुख होगा? उनका रुख वही होगा जो अल्पमत को लाभदायक है। उन्हें संरक्षण दिये जावेंगे। उनके निजी कानून, शिक्षा संस्थाओं में हस्तक्षेप, राष्ट्रीयकरण में उनका पृथक् रक्खा जाना आदि ऐसी बातें हैं जो विधान में वर्णित हैं। बहुमत के साथ यह सब किया जा सकता है, अल्पमत के लिये नहीं।

अपनी इस (Vantage) लाभ की स्थिति को अल्पमतों ने समझा है और वे इसका लाभ उठा रहे हैं। लगातार योजनायें बना रहे हैं कि उनकी संख्या इस देश में कैसे बढ़े। १९६१ में प्रोटैस्टैन्टों ने विश्व सम्मेलन किया, १९६४ में बौद्ध तथा कैथोलिक के विश्व सम्मेलन यहां हुए हैं। सब का उद्देश्य यही है कि यहां लूट हो रही है। लूटा जावे सो लूट लो। विश्व के और किसी भाग में धर्म परिवर्तन राजनैतिक कारणों से नहीं करने दिया जाता। भारत में यह मार्ग यहां के विधान ने ही आसान बना दिया है। अतः सब धर्म वाले यहां पिल पड़े हैं। आबादी घटाने के लिये परिवार-नियोजन जैसी स्कीमों का भी वे विरोध कर रहे हैं। हिन्दुओं में पढ़े लिखे विचार सम्पन्न लोग सन्तानें घटा रहे हैं। अहिन्दू परिवार नियोजन के कार्यकर्त्ताओं से बात भी नहीं करते। हमने एक-पत्नी का कानून बनाया है। मुसलमान ऐसा कानून अपने पर नहीं लादने देना चाहते और एक साथ ४ बीबी रखना अपना धार्मिक अधिकार समझते हैं जिसमें यहां धर्म-निरपेक्ष सरकार दखल नहीं दे सकती। आइये संख्या विस्तार के दूरस्थ परिणामों पर विचार करें।

संख्या विस्तार से अल्पमत तुरन्त तो आर्थिक लाभ शासन से प्राप्त करते ही रहते हैं, इसके दूरगामी परिणाम भी होते हैं। १९६४ में भारत की आबादी (मय पाकिस्तान वाले भाग की) ३९ करोड़ थी जिसमें ६॥ करोड़ मुसलमान थे। अर्थात् कुल आबादी का १५ प्रतिशत। उन्होंने कहना प्रारम्भ किया कि वे प्रथम राष्ट्र हैं और अपने लिये पृथक् होम लैण्ड चाहते हैं। उन्हें ३० प्रतिशत तक प्रतिनिधित्व और नौकरियां आफर की गईं। अंग्रेज ने ३३½ प्रतिशत दे भी दी थीं। वे भारत में बने रहने का मूल्य ५० प्रतिशत संरक्षण चाहते थे। फलतः देश विभाजित करना पड़ा।

नतीजा यह निकला कि १५ प्रतिशत तक पहुंचते-पहुंचते अल्पमत राष्ट्र बनने लगते हैं और राष्ट्र के लिये देश चाहिये। अब स्वतन्त्र भारत में सूबों का महत्व बढ़ा है। अल्प मतों ने अपने लिये सूबे चुन लिये हैं। वे वहां अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं। फिर सूबों की सीमा में हेर फेर की प्रार्थना की जाती है ताकि नवनिर्मित सीमा के घेरे मे वे ५० प्रतिशत तक हो जावें। बस उसी को वे अपना होमलैण्ड कहते रहते हैं। सिक्खों का पंजाबी सूबा आन्दोलन इसका उदाहरण है। सारे पंजाब में वे ३० प्रतिशत थे। पंजाब के इस प्रकार टुकड़े किये गये कि एक भाग में वे ५१ प्रतिशत हो गये, बस वह उनका इलाका हो गया। प्रारम्भ में या यों कहो जब तक केन्द्रीय सरकार पुष्ट है वे कहते हैं हम केन्द्र के अन्दर रहेंगे। परन्तु भूतकाल का इतिहास गवाह है कि केन्द्र के शक्तिहीन होते ही मनसबदार और सूबेदार स्वतन्त्र हो बैठे। मुसलमानों ने आसाम, बंगाल तथा मलाबार को चुना है, ईसाइयों ने केरल, गोवा, झारखण्ड, नागालैण्ड और मध्यप्रदेश को चुना है, सिक्खों ने पंजाब और दिल्ली को तथा बौद्धों ने, महाराष्ट्र को। धीरे २ चमत्कार होगा और हम हिन्दू सारे भारत को अपना कहते रह जावेंगे और देश छिन्न-भिन्न हो जावेगा। आइये, धर्म वार और सूबा वार विश्लेषण करें। (क्रमशः)

Light that is needed to lead Mankind

By

Acharya Vaidyanath Shastri.

In the domain of material universe supremacy is attached with man. He is master and most rati onal among all the creatures. His mind is the seat of intelligence and discriminations by nature. In the play with matter he has penetrated the deep material mystery. He is not merely satisfied with eating food and drinking water, seeing beautiful sights and letting them pass on. He observes the world around him and carefully examines it. By this investigation and examination he reaches at many decisive and final conclusions which are the real background of sciences and philosophies. In this era of light and science human mind has reduced the temporal and spatial distances and has attained mastery over the nature. His mastery now has made him victorious over the difficulties which were treated in the past as insurmountable. The man is not only master over earth, mountains, sea and air but he is starting and preparing to cleave the space and reach the unaccessible planets through scientifi means. All these scientific attainments have made the human mind to soar up high though the humanity has lost the value and is loaded with increasing burdensome necessities, To overcome these necessities mankind is tending to depend on technology It is playing a good role in human life of present age.

It is no doubt that technology is necessary to fulfil the necessities but at the same time it is not out of danger to depend wholly on it. Human needs can be fulfilled by the plundering of matter Every individual of mankind should try to rob the nature skilfully. By this he can solve the problems of life's needs But the robbery of nature does not imply that humanity should be robbed of its own existence. Technology make us competent. in robbing nature but it does not make us able to avoid of being robbed and swept out of our own selves. In the age of lofty scientific achievements and technological means man attempted to make addition to his knowledge

but in this hard struggle and headlong knocking he lost the contact of his own self

He launched sputniks, missiles and rockets in the immeasurable vast outer space but could not dive into his own internal space of one inch where the mysteries are more intangible and insoluble If they are penetrated by the man, they can yield the panacea for all kind of diseases victimizing the whole mankind To save the humanity from the danger of destruction it is necessary that science should not be left loose It should be synthesised with the religion which can bring out peace and tranquillity and the Eternal light to lead mankind to its goal Religion is not the bulwork of feelings of superstitions and hypocricy It is pure theol gy where science and philosophy meet together Principles taught by religion are verified by science So science is the verification of the ideas which are given rise by religion Science checks the blind faiths that time and practices make to enter therein Religion, on its part, make the science constructive and Productive

Rigveda gives a very remarkable elucidation of the thought headlined and inspires as how can we gain the light The verse reads —

न विजानामि यदिवेदमस्मि
निण्य सन्नद्धो मनसा चरामि ।
यदा मागन् प्रथमजा
ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्या ॥

Rig 1 164,XXXVII

Translation—

I know rot exactly what I am and know not what this universe really is seating myself in the recess of heart I move and observe everything through mind When eternal ray of divine light and truth dawns on me I attain the end which is aimed at by the words of prayer and worship

In this verse three things are remarkably described The first of them is that the man absorbed in the world, does not see his self and the world He cannot discriminate his existence from the existence of the world He always thinks of the worldly lustres and becomes entangled with them

He is unable to cross the boundary of matter, therefore, he cannot realise his self He makes many somersaults and jumping but he instead of getting out plunges in its deep and unfathomable sea Sometimes his mind soars up high and high, reaches at the summit of matter's structure but he cannot search out his self

In this condition neither he can view the world in its true perspective nor he can grasp the light of his own self Why is it so ? Because he sees every thing through mind. Mind does not cross the boundary of matter and is totally unable to see the self which is immaterial. A man's mind may reach the highest achievements of matter but it cannot see the soul, the seat of all good qualities of human and the field of fabrics of all culture, Philosophies and sciences. Through this spectacle of mind man may peep into the mind and some play of matter. But these are not the all to form the goal of human life.

The second thing made known by the verse is that light comes from some eternal centre of light. All lights cease but the light of this centre never ceases. It is eternal and self-effulgent. Here is no shadow that may cause a bit of darkness. All the worldly centres of light derive their resplendence from this centre, but this is self-resplendent and needs not derive light from any other quarter. This everlit centre is divine. When his co nmunion is truely sought, he inspires light in the heart of his devotee. This ray of light of all lights, knowledge of all knowledge and highest of all achievements. But it should l e borne in mind that this stage of man comes after great devotion, renunciation and spiritual introspection.

Third thing described in the verse makesus know that all prayers and observations of austerity aims at the attainment of divine self. which is the aim of human life. Without attaining him one cannot get peace and tranquillity of self. If this divine self is realised, devotee may reach the abode of eternal peace. The verse emphasises that a devotee can attain his aim after enlightening him by the divine light. The present world is far away from this light. But this light is needed mostly to lead the humanity towards its goal.

पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखिये।

—व्यवस्थापक

स्त्रियों का पृष्ठ

अश्लील साहित्य का उन्मूलन हो

भारतीय नारी संघ मद्रास ने १३ दिसम्बर को अपने वार्षिक अधिवेशन में यह मांग की है कि गन्दे एवं अश्लील पोस्टरों और साहित्य से नगर की शुद्धि की जाय। क्योंकि इनसे लोगों का नैतिक स्तर गिर रहा है। एक प्रस्ताव में यह भी मांग की गई है कि शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था की जाय और पाठ्य-क्रम में 'काय शुद्धि' की पढ़ाई भी रखी जाय।

श्रीमती राजम रामास्वामी ने कहा कि फैशन के नाम पर लज्जाशीलता जैसी पवित्र वस्तु के साथ खिलवाड की जा रही है।

श्री पी० चन्द्र कार्यवाहक गवर्नर मद्रास ने अध्यक्ष के आसन से भाषण देते हुए स्कूलों में नैतिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करने पर बल दिया।

तलाक का देवियों का अधिकार

११ दिसम्बर को राज्य सभा में हिन्दू विवाह ऐक्ट संशोधन के बिल पर बहस के समय भारतीय स्त्रीत्व की गौरव गरिमा पर बड़ा बल दिया गया। यह संशोधन स्वीकृत हो गया है और इससे पूर्व लोक सभा में भी स्वीकृत हो चुका था।

यह बिल पति और पत्नी दोनों को विशेष परिस्थितियों में तलाक के लिए प्रार्थना करने का समान अधिकार प्रदान करता है।

बिल श्री एम० पी० भार्गव (कांग्रेस) ने प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा कि सच्ची भारतीय नारी किसी भी अवस्था में अपने पति को छोड़ना नहीं चाहेगी। फिर भी इस बिल के द्वारा तलाक के मामलों में भारतीय नारी को न्याय प्राप्ति में सुविधा हो जायगी।

(तलाक किसी दशा में भी प्रशस्त नहीं है।
—संपादक)

श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने जो अभी हाल में फूल पुर निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा की सदस्य चुनी गई हैं, १३ दिसम्बर को पत्रकारों से वार्त्तालाप करते हुए नई दिल्ली में कहा कि मैं अपने निर्वाचन क्षेत्र मे अपने लिए एक कच्चा झोंपड़ा बनाऊंगी जिससे कि मैं अपने मतदाताओं से सम्पर्क बनाए रखने में समर्थ हो सकूं। श्रीमती पण्डित के सम्मान में नई दिल्ली कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री दलजीत सिंह द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। उसी गोष्ठी में श्रीमती पंडित ने यह बात कही थी।

स्त्रियां और भ्रष्टाचार

आंध्र प्रदेश की कांग्रेस सदस्य श्रीमती सी० अम्मन राजा ने ८ दिसम्बर को राज्य सभा में भ्रष्टाचार विरोधी कानून के संशोधक बिल पर बोलते हुए कहा कि पुरुष प्रायः अपनी पत्नियों के कारण भ्रष्टाचार का आश्रय लेते हैं। उन्होंने सम्मति प्रकट की कि अपनी पत्नियों की फिजूल खर्चियों के कारण ही पुरुष भ्रष्टाचारी बनता है। उन्होंने स्त्रियों को प्रेरणा की कि वे धन-सम्पदा और थोथी शान और आराम के जीवन के पीछे पागल न बनें अपितु अपने पतियों और बच्चों के सदाचरण पर अभिमान करने में सुख का अनुभव करें।

कानून सम्मत हत्या

गर्भ स्राव के लिए आपरेशन करना स्त्रियों के लिए भयावह और हानिकारक है। इसके साथ ही धार्मिक भावना पर गहरा प्रहार है। यह बड़े शर्म की बात है कि हमारे बड़े २ बुद्धिजीवी लोग सदाचार की भावना को त्याग कर इस घृणित कार्य को कानून का रूप देने का

सम्पादक की डाक

"एक कैदी ....से लिखते हैं:—

"मैं आर्य समाज को स्वीकार कर चुका हूं परन्तु मेरे पास आर्य समाज की पुस्तक नहीं है। मुझे २० साल की सजा है। मेरा अन्तर्यामी के सिवा कोई नहीं है। इसलिए मैं कर जोड़कर आप से प्रार्थना करता हूँ कि आर्य समाज की पुस्तक श्री वैदिक दयानन्द स्वामी जी ने बनाई हुई सत्यार्थप्रकाश और कर्त्तव्य दर्पण बिला मूल्य भेजें तो मैं उसका पारायण करके सत्य मार्ग पर आ सकता हूँ और मेरा आने वाला भविष्य उज्ज्वल कर सकता हूं।"

इन्हें सत्यार्थ प्रकाश तथा कर्त्तव्य दर्पण फ्री भेज दिए गए हैं। —सम्पादक

❀

दत्न कर रहे हैं।

गर्भावस्था में आपरेशन किया जाता है। गर्भ स्थित बच्चे में भी जान होती है। उसे नष्ट करने का किसी को भी अधिकार नहीं है चाहे वह कितना ही बड़े से बड़ा व्यक्ति क्यों न हो। केन्द्रीय समिति को यह अनुभव करना चाहिए कि गर्भ पात को कानून सम्मत बनाने से वे निर्दोष अनुत्पन्न जीवनों की और अनेक अवस्थाओं में आपरेशन कराने वाली देवियों की हत्या को कानून सम्मत बनायेंगे।

देश में बहुत बुराई फैली हुई है। केन्द्रीय परिवार नियोजन बोर्ड आपरेशनों को कानूनी रूप देकर बुराइयों में वृद्धि करने के अपराध का भागीदार होगा।

खुदा को प्रसन्न करने के लिए बालिका की हत्या

कानपुर की मीरा नामक आठ वर्षीय कन्या शाम को घर लौट कर न आई। दुःखी माता-पिता ने उसकी बहुत खोज की। पर वह न मिली।

पुलिस की खोज से विदित हुआ कि मीरा अपनी सहेली के साथ जो उसी उम्र की थी खेल रही थी। वह लड़की मीरा को अपने रिश्तेदार के यहां ले गई परन्तु फिर लौट कर न आई।

यह रिश्तेदार जकीरुन्निसा थी और उस सहेली लड़की की मौसी थी। उस लड़की ने पुलिस को बताया कि मैंने मौसी को मीरा को मारते देखा था। उसी बच्ची ने कहा :—

मौसी ने कहा अल्लाह-अल्लाह और मीरा को छुरा मार दिया।

जब खूनी स्त्री के घर की तलाशी ली गई तो खून से भरा एक प्याला, मीरा के फ्राक के टुकड़े उसके शरीर की बोटियां मिलीं। जकीरुन्निसा निर्दय हत्या के अपराध में गिरफ्तार कर ली गई। कातिल स्त्री ने पुलीस को बताया :—

"मैं निपूती हूँ। मैं मुल्ला के पास गई। उसने मुझे कहा कि यदि तू बच्चा चाहती है तो पहले किसी बच्चे को मारकर उसके खून में नहा, खुदा की यही मर्जी है।"

इस खबर से नगर में सनसनी फैली परन्तु मुल्ला जी का नाम गुप्त रखा जा रहा है।

भ्रम का निराकरण

श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, संयोजक, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा देहली

कई महीनों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पत्र आर्योदय और उसके संपादकों का कार्य सार्वदेशिक सभा और उसके अधिकारियों पर कीचड़ उछालना मात्र रह गया है। जब से आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा ने पंजाब सभा के पाकस्मा में हुए गत वार्षिक चुनाव को अवैधानिक घोषित कर दिया है तब से यह प्रवृत्ति और भी उग्र हो गई है। आर्योदय के अंक में सार्वदेशिक सभा और उसके मान्य प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास और मन्त्री पर अनेक प्रकार के मिथ्या आक्षेप किये जा रहे हैं और आर्य जनता की दृष्टि मे उन्हें गिराने का प्रत्येक अवांछनीय उपाय प्रयुक्त किया जा रहा है। १० जनवरी और १७ जनवरी सन् ६५ के अंक इसके उदाहरण हैं। सभा इस प्रकार के निम्न स्तर पर उतर कर जैसा का तैसा उत्तर देना उचित नहीं समझती परन्तु इस दिशा मे वास्तविक स्थिति को स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है अतः ये पंक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं।

विश्व ईसाई सम्मेलन और सार्वदेशिक सभा

१० जनवरी के अंक में "बीते हुए दस सप्ताह की कहानी" शीर्षक मे एक व्यर्थ का विस्तृत लेख छपा है इसमें पृष्ठ ७ पर लिखा गया है कि "यदि किसी ने इस पुण्य यज्ञ में भाग लेने में आनाकानी की तो वह आर्य समाज की सार्वदेशिक सभा ही थी। ऐसा करके उसने एक ऐसा कलंक का टीका अपने माथे पर लगा लिया है जो बहुत कुर्बानी देने पर ही अब धुल सकेगा।" इन वाक्यों में लेखक ने जो भावना व्यक्त की है वह कितनी ओछी है और श्वेत झूठ है—यह प्रत्येक आर्य और जनता को स्वयं विदित है। सार्वदेशिक सभा ने इस विश्व ईसाई सम्मेलन का विरोध अपने बम्बई के चुनाव के उपरान्त ही प्रारम्भ कर दिया था। समाचार पत्रों में अनेकों वक्तव्य दिए गए। समाजों को विज्ञप्तियां भेजी गई। सभा का शिष्टमण्डल भारत के प्रधान मन्त्री से मिला, सभा के उपदेशक बम्बई में प्रचार करते रहे, लाखों की संख्या मे साहित्य बांटने का कार्य सभा की तरफ से किया गया और जनमत को तैयार किया गया - यह कार्य आर्यजनों से छिपा नहीं है। समय-समय पर समाचार पत्रों आदि द्वारा इसकी सूचना आर्य जनता को मिलती रही है।

इस सम्मेलन पर सभा ने सबसे बड़ा कार्य इस सम्मेलन के बल को प्रभावहीन करने के लिए साहित्य का किया। लाखों की संख्या में ट्रैक्ट प्रकाशित कराये और बंटवाया। यह साहित्य देश-विदेश, सभी दूतवास', लोकसभा के सदस्यों, महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्यों, सभी प्रान्त के गवर्नरों, मुख्य मन्त्रियों, मुख्य न्यायाधीशों और केन्द्रिय मन्त्रियों तथा विदेश से आने वाले पादरियों और जनता में मुफ्त बांटा गया। एकपाई भी इन ट्रैक्टों का मूल्य नहीं रखा गया। सभा ने इस अवसर पर निम्न ट्रैक्ट निम्न संख्या मे छापे थे :—

Arya Samaj At A Glance—	75000
Some Questions on Bible—	50000
Christianity in the Eyes of Jawaharlal Nehru	50000
	175000

ये ट्रैक्ट इतने सुन्दर छपे और इतने उपयोगी माने गए कि इनकी समाजों से हुई मांग पूरी करना हमारे लिए कठिन हो गया। इनके सम्बन्ध

में इतनी सुन्दर सम्मतियां सभा को प्राप्त हुई हैं कि यदि उन सबको छपवाया जाय तो एक पृथक् पुस्तक तैयार हो जावेगी। आर्य जगत् के मान्य शास्त्रार्थमहारथी सिद्धान्त धुरन्धर श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने ट्रैक्टों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और Arya Samaj at a Glance पर लिखा है कि-"यह बेमिसाल है"। इसी प्रकार अन्य सम्मतियां सभा कार्यालय में अभी तक आती जा रही है। Arya Samaj at a Glance की इतनी प्रशंसा हुई है कि वह उसकी दिनोंदिन बढ़ती मांगसे कूती जा रही है। रांची समाज ने कई हजार की संख्या में हमसे आज्ञा लेकर छापा, मद्रास समाज की तरफ से यह कई सहस्रकी संख्या मे छापा गया। विदेशों से भी इसे छापने की मांग चल रही है। श्री पं० विद्याधर जी ने फोन पर २०० प्रतियां मांगी और इसे डी. ए. वी. कालेज को मैगजीन में पांच सहस्र की संख्या में छापने की आज्ञा मांगी जो दी गई, और इसके मराठी भाषा में अनुवाद की भी आज्ञा मांगी गई है जो प्रदान की गई और भविष्य में यह कार्य हो जावेगा। इन ट्रैक्टों की सर्वप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब आर्योदय के लेखक से पूछना चाहिए कि इतने महान् कार्य को करते हुए भी क्या यह सभा की आनाकानी कहा जावेगा यदि आपकी परिभाषा में यह कलंक है तो कलंकाभाव और सराहना एवं प्रशस्ति की परिभाषा और ही ढूंढनी पड़ेगी।

सार्वदेशिक सभा के ट्रैक्टों पर एक दृष्टि

इन ट्रैक्टों के विषय में पूर्व कुछ कहा जा चुका है। इनकी कितनी प्रशंसा है यह भी संकेत किया जा चुका है। आर्योदय के पृष्ठ १० पर ट्रैक्टों के सम्बन्ध में लिखते हैं कि-"ऐसा नहीं कि सार्वदेशिक सभा ने बम्बई में कोई साहित्य वितरण नहीं किया। सार्वदेशिक ने अंग्रेजी भाषा में तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं। उनके नाम हैं— ..यह साहित्य समय और अवसर की गम्भीरता को देखते हुए व्यर्थ साबित हुआ" आदि। यह है कितना गलत प्रचार सार्वदेशिक सभा के साहित्य के विषय में और है कितना असत्य कथन इसे पाठक स्वयं समझें। जिसने कुछ कार्य न किया हो वह दूसरे के कार्य पर अपनी दृष्टि में पानी फेरने में ही अपने को कृतकार्य समझने लगता है। यही स्थिति आर्योदय के इस लेखक की है। पहले तो आर्योदय वाले लोगों को यह कहकर आंख में धूल झोंकते रहे कि सार्वदेशिक सभा ने कोई साहित्य प्रकाशित ही नहीं किया। परन्तु इस झूठ में सुधार कर यह मान लिया है कि सभा ने साहित्य छपाया और आर्योदय की उपर्युक्त पंक्तियां उसके प्रमाण हैं। अब तनिक विचार इनके 'असामयिक' शब्द पर भी करना है। इनके 'असामयिक' की परिभाषा यह मालूम पड़ती है कि जो भी गलत वा सही पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने छापा है और उक्त लेखक का अपना हो, (हो वह क्यों न भले ही निकम्मा, व्यर्थ और सिद्धान्तविरुद्ध) वह तो सामयिक है परन्तु कितनी भी उत्तम वस्तु हो परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने छापी हो तो वह इनकी दृष्टि में असामयिक है। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा छापे गये ट्रैक्टों में 'A challenge to the Christian faith श्री हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा' लिखित और "पादरियों को चुनौती" श्री तर्कशिरोमणि स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज द्वारा लिखित—ट्रैक्ट भी हैं। ये दोनों ही ट्रैक्ट पुराने हैं और क्रमशः इन दोनों महात्माओं द्वारा लिखे और प्रकाशित किये जा चुके हैं। इन पुराने ट्रैक्टों को छापने वाली पंजाब सभा और उक्त पंक्तियों के लेखक इन्हें तो सामयिक कहते हैं

परन्तु सार्वदेशिक सभा द्वारा उसी स्थिति और उसी रूप में छापे गये—"Some questions on Bible" श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी लिखित औरChristianity in the eyes of Jawahar lal Nehru श्री पं० नेहरू द्वारा लिखित विश्व इतिहास की झलक से संगृहीत—ट्रैक्टों को असामयिक कह रहेहैं। यह तो इनका 'सामयिक' 'असामयिक' का विवेक है। इन से पूछना चाहिए कि ऐसी झूठी और ओछी धारणा का क्या परिणाम है। पंजाब सभा के ट्रैक्टों के विषय में इसलिए कुछ कहना हम नहीं चाहते थे कि हमारे इस कथन को लेकर विपक्षी उस सभा पर उन ट्रैक्टों पर प्रहार करेंगे परन्तु हमें कहने पर बाध्य किया जा रहा है तो फिर क्या किया जावे कहना ही पडेगा।

पंजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट सिद्धान्त-विरुद्ध हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कई ट्रैक्ट छापे हैं जो कुछ हजार की संख्या में ही छपे हैं। उन पर मूल्य भी रखा गया है। उन ट्रैक्टों को लेकर वे जनता में बड़ा शोर मचा रहे हैं कि उन की सभा ने बड़ा भारी कार्य कर डाला है। परन्तु यह सब बात तथ्य से बहुत परे है। इन ट्रैक्टों में अनेकों बाते वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं और ये ट्रैक्ट गलत ज्ञातव्यों से भरे पड़े हैं। साथ ही बम्बई भारतीय संस्कृति-संरक्षण समिति द्वारा प्रचारित एवं प्रसारित ट्रैक्टों की जिन बातों को लेकर आर्योदय में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी के खिलाफ गलत प्रचार किया जा रहा है वे सभी इन ट्रैक्टों में भी पाई जाती हैं। नीचे कुछ बातें नमूने के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं :—

१—पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का एक ट्रैक्ट छपा है। "A challenge to the Christian Faith।" इसके लेखक स्वनाम-धन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हैं। इस ट्रैक्ट की भूमिका स्वरूप ('An Apology)' शीर्षक से पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री ने कुछ शब्द लिखे हैं। उसमें ये पंक्तियां हैं—

In Shri Ananthasayanam Aiyangar's words 'If Mahatma Gandhi was Pita (Father) of the nation. Swami Shradhananda was the Pitamah (Grandfather)'

अर्थात् श्री अनन्त शयनम के शब्दों में "यदि महात्मा गांधी राष्ट्र के पिता थे तो स्वामी श्रद्धानन्द जी पितामह थे।" यह बात इतनी प्रसिद्ध है कि सभी जानते हैं और पता नहीं कितने पत्रों में छप चुकी होगी और दो-दो चार की भांति सिद्ध है कि श्री अनन्तशयनम आयंगर ने ये बातें टंकारा आदि में महर्षि दयानन्द के प्रति कही थीं—स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति नहीं। उन्होंने कहा था कि, "यदि महात्मा गान्धी राष्ट्र पिता है तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामहहैं"। परन्तु कितने खेद की बात है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री को इतनी भी सूचना नहीं और अपनी इस गलत बात को विदेश से आये ईसाई पादरियों को दे रहा है और अपनी तारीफ भी कर रहा है।

२—पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने दो ट्रैक्ट—'The Conflict Between Science and Christianity' तथा Christianity Unmasked" जिनके लेखक ब्रह्मदत्त भारती हैं—छापे हैं। ये दोनों ही ट्रैक्ट नाम तो बड़ा भारी लिए हुए हैं परन्तु इन में उन नामों के अनुसार कोई भी वस्तु नहीं है। ये ट्रैक्ट देखने से ज्ञात होते हैं कि किसी आर्य सामाजिक लेखक के लिखे हुए नहीं हैं।

इनका ढंग ही ऐसा है कि इनसे आर्य समाज के लाभ की कोई बात सिद्ध नहीं होती है। The Conflict Between Science And Christianity" में केवल इधर उधर की बातें लिखी गई हैं। Science और Christianity के Conflict के उदाहरण भी नहीं दिये हैं। ईसाइयत से विज्ञान की कोई बात देनी चाहिए थी जिस का कि विज्ञान से मेल न खाता। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। यह ट्रैक्ट आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने छापा तो परन्तु यह नहीं देखा कि इस पुस्तक की युक्तियां आप के खण्डन में भी समान रूप से लगती है। 'साइंस' का अर्थ इस पुस्तक के अनुसार वह विज्ञान है जो सृष्टि नियम आदि के अनुकूल है अथवा वर्तमान में माना जाने वाला परिवर्त्तनशील (Shaky) और कल्पित विज्ञान ? यदि वास्तविक विज्ञान अभिप्रेत है तो इसका कोई भी उदाहरण इस ट्रैक्ट में है नहीं। यदि वर्त्तमान विज्ञान से अभिप्राय है तो क्या वर्तमान विज्ञान के सारे निर्णय आर्यसमाज स्वीकार करता है। क्या फिर विज्ञान के साथ आर्यसमाज का कानफ्लिक्ट (Conflict) नहीं है ? बताइये तो इस ट्रैक्ट से आप क्या सिद्ध कर रहे हैं ? दूसरों का खण्डन करते हुए अपना भी खण्डन कर बैठे। इस ट्रैक्ट के पृष्ठ ४, ५ पर ईसाइयों द्वारा माने गए सृष्टि काल का वर्णन है जो ईसा के जन्म से पूर्व ४००४ वर्ष का माना गया है। इसके खण्डन में ट्रैक्ट में डार्विन की 'Origin of Species' का तर्क देकर खण्डन किया गया है। शब्द इस प्रकार हैं—

According to this Biblical story man came into being 4004 years before Jesus Christ and thus he is not older than 5968 years (4004 years B,c. + 1964 A. D.) But we know from the "Origin of Species" (1859) and "The Descent of Man" (1871) both by Charles Robert Darwin that "Man is descended from the lower animals." This is a scientific truth which despite the Biblical fable is being taught in all Christian schools and colleges. Page 4.

अर्थात् बाइबिल सम्बन्धी कहानी के अनुसार मनुष्य जीसस क्राइस्ट के जन्म से ४००४ वर्ष पूर्व वजूद मे आया और वह ५९६८ वर्ष (४००४ वर्ष बी. सी.+१९६४ ए. डी.) से अधिक काल का नहीं। परन्तु हम जानते हैं The Origin of Species (1859) और 'The Descent of Man" (1871) पुस्तकों से (जो कि चार्ल्स रॉबर्टडार्विन द्वारा लिखित हैं) कि "आदमी निचली श्रेणीके जीवों से आया।" यह एक वैज्ञानिक सत्य है जो बाइबिल की कहानी के बावजूद भी ईसाइयों के स्कूलों और कालेजों में विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है। पृष्ठ ४।

यहां पर इस ट्रैक्ट के लेखक और इसको छापने वाली आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब बतलावे कि क्या वह डार्विन द्वारा प्रचारित विकासवाद और मनुष्य का अभीवा से बन्दर से होकर हुए विकास को स्वीकार करते हैं। क्या आदमी का बन्दर आदि के क्रम से विकसित होना—यह विज्ञान आर्य समाज और वेद के सिद्धान्तानुकूल है। इस ट्रैक्ट में तो इसे स्वीकार किया जा रहा है और वैज्ञानिक सत्य कहा जा रहा है। क्या ऐसे विज्ञान का ईसाइयत से ही विरोध है वेद से नहीं। फिर ऐसी सिद्धान्तविरुद्ध बात का आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लिखा जाना क्या अपने ही सिद्धान्तों की हत्या नहीं है ?

३—पुनः इसी ट्रैक्ट के पृष्ठ ५ पर निम्न

शब्द है :—

All students of Anthropology, ethnology, geology and Archeology know it very well that the age of man is much more than 5969 as very erroneously given in the Bible. Page 5.

क्या आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इन उपर दिये गए विज्ञानों के द्वारा निर्णीत मानवउत्पत्ति काल को मानती है। यदि मानती है तो मालूम होकि यह वैदिक धर्मसे मेल नहींखाते। यदि नहीं मानती है तो फिर इन्हें यहां देकर यह भ्रम क्यों उत्पन्न किया। यहां तो स्पष्ट है कि इन्हें वह प्रामाणिक विज्ञान मान रही है।

ऐसी अनेक सिद्धान्त विरुद्ध बातें इन दोनों ट्रैक्टों में हैं जिन्हें इसलिए नहीं लिखा जा रहा है कि विरोधी इसका उल्टा लाभ उठावेंगे। अगर जानना हो तो लेखक सभा भवन में आकर किसी समय जान सकते हैं। इन दोनों ट्रैक्टों को तो नष्ट कर देना चाहिए अन्यथा आर्य समाज के इतिहास मे आर्य प्रतिनिधि सभा पर ये अमिट, अक्षम्य और शाश्वत कंलक सिद्ध होंगे।

बम्बई भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के ट्रैक्ट

विश्व ईसाई सम्मेलन का विरोध करने के लिए और उसके पूर्व से भारतीय संस्कृति संरक्षण के साधारण कार्य (Common cause) को लेकर एक भारतीय संरक्षण समिति बम्बई में कार्य कर रही है। उसमे आर्य सामाजिक और गैर आर्य समाजी हिन्दू भी सदस्य हैं। आर्य सामाजिक जनों में ये व्यक्ति उस समिति में हैं:—

१—श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास।

२—श्री डा० मेहरचन्द महाजन, अवकाश-प्राप्त मुख्य न्यायाधीश भारत।

३—श्री लाला हंसराज जी गुप्त, दिल्ली।

४—श्री डा० गोकुलचन्द जी नारंग।

५—श्री कृष्णलाल जी पोद्दार, कलकत्ता।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज के अभिभावकों का भी उसमें सहयोग है, जो ये हैं—

१—श्री अमीर चन्द जी गुप्त।

२—श्री गजाधर जी सोमानी।

३—श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला।

४ श्री धर्म सी भाई मूलराज खटाऊ।

५ —श्री सदाजीवन लाल।

सर्वश्री जगद् गुरु शंकराचार्य द्वारिका पीठ, स्वामी चिन्मयानन्द जी, मुनि श्री चन्द्रप्रभा सागरजी (चित्रभानुजी) महाराज, पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज, स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज,स्वामी गोस्वामी दीक्षित जी महाराज (मोटा मन्दिर) आदि महानुभावों का इस समिति को आशीर्वाद प्राप्त है।

इससे यह भली प्रकार विदित है कि उक्त समिति आर्य समाज की समिति नहीं है। इसमें हिन्दू धर्म के अन्य सम्प्रदायों के लोग भी हैं। इस समिनि का कार्य भारतीय संस्कृति जो सभी हिन्दुओं का सामान्य कार्य (Common cause) है उसकी रक्षा करना है। किसी धर्म का प्रचार तथा प्रसार करना नहीं। इस समिति के संयोजक श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास हैं। इस समिति ने भी विश्व ईसाई सम्मेलन के अवसर पर ट्रैक्ट छपवाये और वितरित किये। इन ट्रैक्टों को लेकर १० जनवरी और १७ जनवरी के 'आर्योदय' में श्री सेठ प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास के खिलाफ बहुत वावेला मचाया गया है। लिखा गया है कि इन ट्रैक्टों में पौराणिक विचार धारा है अतः श्री सेठ प्रताप-

सिंह शूरजी वल्लभदास को सार्वदेशिक सभा से त्याग पत्र देना चाहिए, आदि, आदि।

समिति की क्या स्थिति है, यह ऊपर स्पष्ट कर दिया गया है। वह आर्य समाज की समिति नहीं—सभी हिन्दू धर्मियों की है। अतः उसके ट्रैक्टों में यदि हिन्दू धर्म की कोई बात है तो क्या उस बात को लेकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान से त्यागपत्र मांगने का यह दुस्साहस किया जाना चाहिये। फिर सेठ प्रतापसिंह तो क्यों, अन्य ऊपर दिखलाये गये आर्य नेताओं से भी ये लोग यही अपेक्षा रखते होंगे। पता नहीं उनमें से किसी और को लिखने का साहस इन्होंने क्यों नहीं किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पर ही क्यों टूट पड़े। इससे ज्ञात होता है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान के प्रति इनकी विशेष दुर्भावना है और जिसका कारण पंजाब सभा के खिलाफ पड़ने वाला प्रधान का फैसला है।

एक बात और भी सोचने की है कि पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व ईसाई सम्मेलन के अवसर पर हिन्दू महासभा की कठपुतली बनी रही। पंजाब सभा के प्रधान स्वय भी हिन्दू सभा के अधिकारी हैं। हिन्दू सभा में पौराणिक हिन्दू भी सदस्य हैं। कोई भी विचारशील यह पूछ सकता है कि हिन्दू सभा में अधिकार स्वीकार करने वाले पंजाब सभा के प्रधान का समाज और पंजाब प्रतिनिधि सभा से त्याग पत्र क्यों नहीं मांगा और भारतीय संरक्षण समिति का संयोजक होने मात्र से श्री सेठ प्रतापसिंह से सार्वदेशिक सभा से त्याग पत्र मांगा। यह कितनी बड़ी विचित्रता है। यह स्पष्ट प्रकट करता है कि श्री सेठ जी के प्रति इनकी कितनी कुत्सित भावना है।

(२) अब रही भारतीय संस्कृति संरक्षण के ट्रैक्टोंकी बात। यह स्पष्ट रहे कि इन ट्रैक्टों का आर्य समाज अथवा सार्वदेशिक सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है, तथा इनकी जिम्मेवारी भी आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा पर नहीं है। परन्तु 'आर्योदय' में जो बातें आपत्ति की इन ट्रैक्टों में बतलाई गई हैं वे लगभग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा छापे गये ट्रैक्टों में भी हैं। आर्योदय १० जनवरी के पृष्ठ पर 'वेदों का सन्देश' (Message of the Vedas) नामक संस्कृति समिति बम्बई के ट्रैक्ट पर—यह आपत्ति दिखलाई गई है:—The Vedas are the revelation of Hindus." अर्थात् "चारों वेद हिन्दुओं के आविष्कार हैं"

यहां पर लेखक ने गलत धारणा लोगों को दी है। उसने रिवलेशन (Revelation) का अर्थ भी गलत दिया है। Revelation का अर्थ 'ईश्वर प्रेरित ज्ञान' भी है। अतः अर्थ यह होगा कि 'वेद हिन्दुओं के ईश्वर प्रेरित ज्ञान' है। हिन्दुओं के ये आविष्कार हैं—यह अर्थ तो साधारण व्यक्ति भी नहीं लगा सकता है। इस बात पर जो आपत्ति की गई है यदि वह आपत्ति पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को स्वीकार है, जैसा कि वह कह रही है तो फिर उसके अपने ट्रैक्टों में भी ऐसी बाते और ये ही बातें हैं और जिसने इस लेख को लिखा है उसी लेखक के अपने द्वारा लिखे ट्रैक्ट में हैं।

The Conflict Between Science and Christianity' पंजाब सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट के अन्तिम कवर पृष्ठ पर लिखा है—Astonishing fact ! The Hindu Revelation(Veda)is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with Modern Science(L Jacolliot a French Savant)

यहां पर "Hindu Revelation" पद पढ़े हैं। पुनः "Christianity Unmasked"

पंजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट के पृष्ठ २ पर लिखा है।

Of all the creeds of Europe and Asia, that of Brahmanistic India seems to me the one which embraces the most of universe" Romain Rolland Nobel Laurete.

यहां पर 'Brahmanistic शब्द पड़ा है जिसका अर्थ ब्राह्मण सम्बन्धी है। इसी ट्रैक्ट के पृ० ६ पर "The Vedic religion of the Hindus" शब्द पड़े हैं।

ईसाइयों की प्रचार प्रणाली पंजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट पृ० ४ पर "वैदिक (हिन्दू) धर्म" पद पड़े हैं।

२—आर्योदय १० जनवरी पृ० ६ पर यह आपत्तियां उठाई गई हैं :—

क—प्रयत्न पूर्वक स्वामी दयानन्द का नाम छोड़ दिया गया है।

ख—विदेशियों के नाम दिए गए हैं तथा विदेशी प्रमाण पत्र दिए गए हैं।

यहां पर कहना यह है कि Conflict between Science and Christianity" ट्रैक्ट में महर्षि दयानन्द का नाम कितनी बार आया है क्या आपने देखने का कष्ट किया तथा Christianity Unmasked" में महर्षिदयानन्द का नाम कितनी बार लिया गया है ? साथ ही इन दोनों ट्रैक्टों में पंजाब सभा ने भी जैसा ऊपर दिखलाया गया है विदेशीय विद्वानों के ही प्रमाणपत्र प्रस्तुत किये हैं।

३—१० जनवरी आर्योदय पृ० ६ पर बम्बई भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति द्वारा प्रचारित ट्रैक्ट का हवाला देकर पुनः लिखा गया है "In fact, Hindu medicine is the foundation upon which the building of the European medical science has been constructed".

यह "हिन्दू मैडिसिन" किस बला का नाम है और यह कौन विज्ञान है विरले ही समझ पायेंगे" आदि आदि। यहां यह बात तो ठीक ही है कि यह आर्योदय के इस लेखक की समझ के बाहरकी बातहै। उसने अपने ट्रैक्टों में स्वयं भी ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है —यह पूर्व पंक्तियों में दिखाया गया है। फिर उसे यहां पर आपत्ति क्यों ? 'Hindu medicine" आदि जिस शब्द पर उसे आपत्ति हो रही है उसे पता नहीं कि यह सर विलियम हन्टर के उस वाक्य से लिया गया है जिसमें "The Hindu medicine is an independent development .—यह वाक्य है। इस शब्द पर आपत्ति करने से पूर्व देखना भी तो चाहिए था कि समालोचक लेखक का ही अज्ञान इससे न टपकने लगे। इस प्रकार के प्रयोग के साक्षीभूत प्रमाण और बम्बई भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति की वह ट्रैक्ट सामग्री बहुधा श्री हरविलास शारदा की पुस्तक "Hindu Superiority" और श्री डाक्टर गोकुलचन्दनारंग की पुस्तक Real Hinduism' में पाये जाते हैं और वहीं से संगृहीत हैं। स्वनाम धन्य शारदाजी का त्यागपत्र तो आर्योदय और पंजाब सभा परमेश्वर से मांगें और श्री डा० नारंग जी के पास अपना ऐसा ही फतवा भेजदें। विद्वान विचार करें कि यह कितनी उल्टी बात है—बम्बई भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति आर्य समाज की नहीं हैं, श्री प्रतापसिंह शूरजी केवल उसके संयोजक हैं। अतः उक्त समिति द्वारा छपे ट्रैक्ट की उन बातों को जोकि प्रमाण पूर्वक दिखलाया गया कि पंजाब प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्टों में भी वैसी है, लेकर श्री प्रतापसिंह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा से त्याग पत्र मांगा जा रहा है परन्तु ऐसा करने वाले पंजाब प्रतिनिधि सभा के अधिकारी जिन्होंने

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

साहित्य-समीक्षा

संध्या सुमन

लेखक श्रीकृष्ण गुप्त सिद्धान्तरत्न
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश
विदर्भ नागपुर
प्रकाशक—वेदप्रिय, सिद्धान्तरत्न
गुप्ता बिल्डिंग न्यू कालोनी
नागपुर
मूल्य : ३० पैसे

इस पुस्तक में संध्या मंत्रों के पद्यानुवाद के साथ २ आर्याभिविनय और सामवेद के कुछ चुने हुए मंत्रों का पद्यानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक का आकार-प्रकार, छपाई व सफाई आकर्षक एवं उत्कृष्ट है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

वैदिक ब्रह्मचर्य विज्ञान

अथर्ववेदीय ब्रह्मचर्य सूक्तम्
भाष्य रचयिता एव प्रकाशक
स्वामी ब्रह्ममुनिः परिव्राजक विद्यामार्त्तण्ड
पुस्तक मिलने का पताः—
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान
साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)
मूल्य २५ पसे

इस पुस्तक मे अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त (का० ११ सूक्त ५) का संस्कृत मे भाष्य प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत भाषा भाषी व्यक्ति एवं विद्यार्थी इससे पर्याप्त लाभ उठा सकते है।

वैदिक धर्म (बालोपयोगी)

लेखक— श्री स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
प्रकाशक—आर्य कुमार सभा, किंग्जवे, दिल्ली
$\frac{२० \times ३०}{१६}$ पृ. ५२
मूल्य ३५ पैसे

इस पुस्तक में धर्म क्या वस्तु है? वेद किन्हें कहते हैं? ईश्वर कौन है? ईश्वर दयालु है। संध्या, क्या ईश्वर का भी शरीर है? वह हमारे कर्मों को देखता है? धर्म से सुख मिलता है, शरीर से आत्मा भिन्न है, आत्मा को शुद्ध रखो, मनुष्यों के सामान्य धर्म, धर्म के दश लक्षणों की व्याख्या, पांच महायज्ञ, आश्रमधर्म ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास; वर्ण विभाग, राजा, प्रजा आदि २ पैंतीस पाठों में वह सभी सामग्री प्रस्तुत कर दी गई है जिसका प्रारम्भिक ज्ञान आर्य कुमारों के लिए अत्यावश्यक है।

आर्य समाज के लोकोपकारी कार्य

लेखक—श्री मित्रसेन आर्य शास्त्री
साहित्याचार्य
प्रकाशक—आर्य कुमार सभा, किंग्जवे, दिल्ली
मूल्य २५ नया पैसा पृ० ३२

इस पुस्तक में समाज सुधार शिक्षा आदि आर्य समाज के लोकोपकारी कार्यों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

जीवन की राहें (सजिल्द)

लेखक—श्री नित्यानन्द पटेल, एम०ए०
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
गार्डी कालेज नवसारी
प्रस्तावना लेखक पद्म विभूषण
श्री काका साहेब कालेलकर
प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क, देहली
$\frac{२० \times ३०}{१६}$ पृ० २६५ मूल्य ४)

यह ग्रन्थ लेखक के २८ निबन्धों का संग्रह है। इन निबन्धों में व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। भाषा, शैली और भाव तीनों ही दृष्टि से ग्रन्थ उपादेय है।

❀

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाजों के नाम परिपत्र—

कार्यालय—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-१
दिनांक ५-१-१९६५

आर्यसमाजें और आर्य जनता कुत्सित प्रचार से सावधान रहें !

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रवक्ता श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के कई लेखों से जो उक्त सभा के मुख पत्र आर्योदय में प्रकाशित हुए हैं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में आर्य जनता में भ्रान्ति फैलने की आशंका है अतः उनके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा की स्थिति का स्पष्ट किया जाना आवश्यक हो गया है।

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री के आरोप मुख्यत इस प्रकार हैं :—

आक्षेप

(१) सार्वदेशिक सभा की नियमावली की धारा २१ के अनुसार उसके अधिवेशनों का दिल्ली से बाहर किया जाना अवैधानिक है और सार्वदेशिक न्याय सभा के निर्णय के विरुद्ध है।

(२) यदि ये अधिवेशन पहले कभी दिल्ली से बाहर हुए हों तो ऐसा करना अवैधानिक था और यह गलती थी।

(३) सार्वदेशिक सभा का १९६४ का अधिवेशन बम्बई में इसलिए किया गया कि जिससे पंजाब के प्रतिनिधि उसमें भाग न ले सकें और विरोधियों के हाथ में खुला मैदान आ जाय।

(४) १९६३ के पंजाब सभा के वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृत पंजाब सभा के ४२ प्रतिनिधियों की नई सूची सार्वदेशिक सभा में भेजी गई। उसे सार्वदेशिक सभा ने स्वीकार नहीं किया और पुराने ३८ सदस्यों की ही, अवैध रूप में मान्यता बनाए रखी और इन्हें ही १९६४ के बम्बई अधिवेशन के लिए विज्ञापन भेजा गया।

(५) बम्बई के अधिवेशन में सार्वदेशिक सभा के नियमों में संशोधन किये गए। वे संशोधन पंजाब सभा को अमान्य हैं क्योंकि इस अधिवेशन में पंजाब सभा का प्रतिनिधित्व न था अतः कोरम ठीक न बनता था। शास्त्री जी का यह भी आक्षेप है कि सार्वदेशिक सभा में प्रतिनिधियों की अधिक से अधिक संख्या १५ नियत किया जाना अनियमित है, इससे छोटी और बड़ी सभाओं को एक स्तर पर रखा जाना बड़ी सभाओं के प्रति अन्याय भी है। शास्त्री जी की यह भी शिकायत है कि यह संशोधन १९६३ के सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में अस्वीकृत हो चुका था फिर भी मनमाने ढंग से इस नियम को पारित करा लिया गया।

४—सार्वदेशिक सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के १९६३ के पाकसभा (रोहतक)

में हुए चुनाव और वार्षिक अधिवेशन को अवैध घोषित किया है जब कि पंजाब सभा की मॉग यह थी कि पंजाब सभा के सदस्यों के पारस्परिक विवाद का निर्णय पंजाब सभा की न्याय सभा कर सकती है। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग को इस विवाद का निर्णय करने का वैधानिक अधिकार नहीं है।

इतना होने पर भी बाद में स्वयं पंजाब सभा ने यह मांग की कि यह विवाद निर्णयार्थ सार्वदेशिक की न्याय सभा को भेज दिया जाय। उन्होंने यह भी लिखा है कि जब कि आपत्तिकर्त्ताओं ने अपनी आपत्तियां सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग में वापस ले ली थीं तब पंजाब सभा के १९६३ के अधिवेशन को अवैध घोषित करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

५—यतः सार्वदेशिक सभा के बम्बई अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रतिनिधित्व न था अतः वह अवैध है।

(१) क्रमिक उत्तर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की नियमावली की धारा २१ इस प्रकार है --

"सभा के कार्यालय का मुख्य स्थान देहली होगा और सभा के अधिवेशन इसी स्थान पर होंगे परन्तु विशेष हेतुओं से अन्य स्थान पर भी अधिवेशन हो सकते हैं (नियमावली की धारा २१)।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने १९६१ में सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन बम्बई में बुलाए जाने का निमन्त्रण दिया। उक्त सभा ने १९६२ में पुनः अपने निमन्त्रण को दुहराया। जो सदस्य सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन बाहर बुलाए जाने के पक्ष में न थे उनका मत था कि नियम धारा २१ के अनुसार सभा के अधिवेशन बाहर न होने चाहिए। उनके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किये गये कि इससे पूर्व सार्वदेशिक सभा के अनेक अधिवेशन दिल्ली से बाहर हो चुके हैं। अतः यह नियम दिल्ली से बाहर अधिवेशन बुलाए जाने के मार्ग में बाधक नहीं है। बाहर हुए अधिवेशनों की तालिका इस प्रकार है:—

(१) प्रयाग

२७-१२-१९१० वार्षिक साधारण अधिवेशन।

(२) गुरुकुल कांगड़ी

७-४-१२, ३-४-१५, ७-४-१७ वार्षिक साधारण अधिवेशन।

१२-३-२२ नैमित्तिक अधिवेशन।

२३-७-२२ वार्षिक साधारण अधिवेशन।

५-४-२६, २-३-२७, ६-८-२८ वार्षिक साधारण अधिवेशन।

(३) मथुरा

१८-२-२५ वार्षिक साधारण अधिवेशन।

(४) कानपुर

२७-१२-२५ नैमित्तिक अधिवेशन।

(५) गुरुकुल वृन्दावन

२६-१२-२७ नैमित्तिक अधिवेशन

(६) अजमेर

१३-१०-३३ नैमित्तिक अधिवेशन।

अधिवेशन के बाहर बुलाए जाने के विरोधी सदस्यों ने नियम में आए विशेष हेतु के अन्तर्गत किसी प्रान्तीय सभा के निमन्त्रण की प्राप्ति स्वीकार न की। फलतः विशेष हेतु के स्पष्टीकरण का विषय ९-६-६२ की अन्तरंग में विचारार्थ रखा गया।

अन्तरंग का निश्चय

परिशिष्ट विज्ञापन का विषय सं० १ निय-

मावली की धारा सं० २१ का स्पष्टीकरण करना कि सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन दिल्ली से बाहर हो सकते हैं या नहीं प्रस्तुत होकर विशेष हेतु का निश्चय इस प्रकार हुआ:—

"किसी सम्बद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा का सार्वदेशिक सभा के वार्षिक वा नैमित्तिक अधिवेशन का निमन्त्रण देना भी विशेष हेतु है।"

सार्वदेशिक सभा के १०-६-६२ के नैमित्तिक अधिवेशन ने अन्तरंग के इस स्पष्टीकरण को बहुमत से स्वीकार कर लिया। इस अधिवेशन में पंजाब सभा का भी प्रतिनिधित्व था।

श्री रामनाथ भल्ला ने जो उस समय सार्वदेशिक सभा के आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधि सदस्य थे सार्वदेशिक न्याय सभा मे नैमित्तिक अधिवेशन के उपर्युक्त स्पष्टीकरण के विरुद्ध अपील भेजी और निम्नलिखित आधार पर इसे अस्वीकृत घोषित करने की मांग की :—

१ विशेष हेतु का स्पष्टीकरण, स्पष्टीकरण नहीं अपितु नियम का संशोधन था।

२—सभा प्रधान ने अपनी व्यवस्था द्वारा स्पष्टीकरण उद्घोषित किया।

३ सभा की नियमावली की धारा ७६ के अनुसार स्पष्टीकरण वा नियम का संशोधन तभी स्वीकृत समझा जा सकता है जब कि उसके पक्ष मे ¾ उपस्थित सदस्य राय दें। अन्तरंग का स्पष्टीकरण ७२ विरुद्ध ४६ के मत से पारित हुआ है। यह ७२ की संख्या उपस्थित सदस्यों की संख्या का ¾ न थी, अतः साधारण सभा द्वारा पारित नहीं माना जा सकता।

४—इस स्पष्टीकरण के लिए १ मास पूर्व का विज्ञापन होना चाहिए था। यह विज्ञापन केवल १० दिन का था अतः इस अधिवेशन मे इस स्पष्टीकरण पर विचार भी नहीं हो सकता था। परन्तु प्रधान जी की इस व्यवस्था के आधार पर कि यह नियमों का सशोधन नहीं अपितु स्पष्टीकरण था, इसके लिए १ मास पूर्व के विज्ञापन की आवश्यकता नहीं थी, इस पर साधारण सभा में विचार हुआ और सं० ३ के अन्तर्गत इसे स्वीकार कर लेना अवैधानिक था।

इन आपत्तियों के सम्बन्ध मे सभा का पक्ष यह था कि यतः यह नियम का संशोधन नहीं अपितु स्पष्टीकरण था यह सभा के नियम सं० ७६ की परिधि मे नहीं आता अतः १ मास के विज्ञापन और ¾ मत की बात इस पर लागू नहीं होती।

सार्वदेशिक न्याय सभा के मान्य प्रधान श्री रतनलाल जी ने २०-११-६२ को अपील स्वीकार करके १०-६-६२ के नैमित्तिक अधिवेशन के उपर्युक्त निश्चय को रद्द कर दिया परन्तु लिखा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग को (नैमित्तिक अधिवेशन को नहीं) यह अधिकार है कि वह सार्वदेशिक सभा की नियमावली की धारा २१ के अन्तर्गत अपनी सुविधानुसार जिस ढंग से चाहे कोई स्पष्टीकरण वा कार्यवाही करे।

२१-४-६३ को अन्तरंग मे आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई का निमंत्रण स्वीकृत्यर्थ प्रस्तुत हुआ। श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ने आपत्ति की कि न्याय सभा के निर्णय के अनुसार दिल्ली के बाहर अधिवेशन नहीं हो सकता, न्याय सभा ने ६-६-६२ की अन्तरंग के निश्चय को अपील में खारिज कर दिया था। इस पर अन्तरंग सभा ने सभा प्रधान को अधिकार दिया कि न्याय सभा के प्रधान जी से पूछा जाय कि किसी प्रांतीय सभा के निमंत्रण पर देहली से बाहर अधिवेशन हो सकता है या नहीं?

सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान जी से

पूछा गया और उन्होंने २७-४-६३ के पत्र द्वारा लिखा कि अन्तरंग सभा को दिल्ली के बाहर अधिवेशन बुलाने का पूर्ण अधिकार है।

इस स्पष्टीकरण के प्रकाश मे सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के निमन्त्रण को अपनी २९-३-६४ की बैठक मे स्वीकृत कर सन् १९६४ का अधिवेशन बम्बई मे करने का निर्णय किया।

स्पष्ट है कि बम्बई मे अधिवेशन किया जाना न तो अवैधानिक था और न सभा की पुरानी परम्परा के विरुद्ध था।

दूसरा आक्षेप

२—श्री रघुवीर सिंह शास्त्री का दूसरा आक्षेप यह है कि बम्बई का अधिवेशन अवैध था क्योंकि इसमे पंजाब सभा का प्रतिनिधित्व नहीं था अतः चुनाव एवं नियमों मे संशोधन आदि की कार्यवाही अवैध थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने नवम्बर १९६३ में पाकसभा (रोहतक) में हुए अपने वार्षिक अधिवेशन में जो स्वयं ही अवैध था, अपने समस्त ३८ प्रतिनिधि सदस्यों को बदलकर ४२ सदस्यों की नई सूची भेज दी। सार्वदेशिक सभा के लिए प्रान्तीय सभाओं के सदस्य ३ वर्ष के लिए चुने जाते है। नए सदस्य १९६३ मे चुने गए थे और ये सदस्य सार्वदेशिक सभा के ६३-६४ और ६५ के अधिवेशन म बैठने के अधिकारी थे। प्रान्तीय सभा सार्वदेशिक सभा की नियमावली की धारा ८ के अनुसार मृत्यु, पागलपन, पद त्याग आदि की अवस्था मे किसी सदस्य के स्थान की पूर्ति तो कर सकती है परन्तु समस्त चुनाव को नहीं बदल सकती और यदि नियम भंग वा किन्हीं घोर अपराधों के कारण सभी प्रतिनिधियों पर अनुशासन की कार्यवाही कर उन्हे हटाती है तो फिर उन अपराधी हटाए गए प्रतिनिधियों को वा कुछ को छोड़ कर पुनः सभी को नए प्रतिनिधि के रूप में नहीं ले सकती है। यह बात पंजाब सभा के ध्यान मे लाई गई। इस की पुष्टि मे सार्वदेशिक सभा का श्री नारायण स्वामी जी के समय का रिकार्ड और उनकी व्यवस्था भी प्रस्तुत किए गए। परन्तु चू कि पंजाब सभा के अधिकारी उन सदस्यों को निकालने पर तुले प्रतीत होते थे जो उनकी अनियमित कार्यवाहियों मे भागीदार बनना पसन्द नहीं करते थे अत. उन्होंने सार्वदेशिक सभा की इस बात को स्वीकार न किया और अपनी नई सूची को स्वीकार करने का आग्रह किया। सार्वदेशिक सभा उस सूची को स्वीकार करके न तो अनियमित कार्यवाही कर सकती थी और न गलत परम्परा डाल सकती थी। फलतः सार्वदेशिक सभा ने पुराने ३८ सदस्यों की मान्यता बनाए रखी और उन्हे ही बम्बई मे होने वाले अधिवेशन का विज्ञापन भेजा गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने ३८ सदस्यों को लिखित रूप मे सूचना दे दी कि उनकी सदस्यता समाप्त करके ४२ सदस्यों की नई सूची सार्वदेशिक सभा को भेजी गई है। यह कार्यवाही इसलिए की गई कि जिससे ३८ सदस्यों मे से उनके गलत कार्यों का विरोध करने वाले सदस्य सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन मे भाग न ले सके। इतना ही नहीं बार-बार लिखे जाने और मौखिक कहने पर भी उक्त सभा ने अपना पंचमांश न भेजा।

इस प्रकार सार्वदेशिक सभा के बम्बई अधिवेशन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रतिनिधित्व न होने का दायित्व स्वयं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर है। ऐसी स्थिति और किन्हीं अन्य परिस्थितियों में भी किसी सभा के सार्वदेशिक सभाके वार्षिक अधिवेशन में प्रतिनिधित्व न होने मात्र से अधिवेशन की कार्यवाही अवैध नहीं हो सकती है और न सार्वदेशिक सभा के

संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था है।

तीसरा आक्षेप

३—श्री रघुवीर सिंह शास्त्री का तीसरा आक्षेप यह है कि सार्वदेशिक सभा के बम्बई के अधिवेशन में प्रान्तीय सभाओं के सदस्यों की अधिक से अधिक १५ की संख्या नियत करना बड़ी सभाओं के साथ अन्याय है और ऐसा सार्वदेशिक सभाके इतिहास में कभी नहीं हुआ। यह भी अवास्तविक है।

सार्वदेशिक सभा की स्थापना १६०८ में हुई थी। १६०८ से लेकर १६५५ तक प्रतिनिधियों की संख्या पर प्रतिबन्ध लगा रहा और यह व्यवस्था सार्वदेशिक सभा के लिए उपयोगी सिद्ध हुई।

पहले अनेक वर्षों तक बड़ी सभाओं को अधिक से अधिक ७ सदस्यों का प्रतिनिधित्व प्राप्त रहा। १६३०-३१ तक नियम इस प्रकार रहा :—

"प्रत्येक प्रतिनिधि सभा का अधिकार होगा कि प्रतिनिधियों मे से ५ प्रतिशत प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक सभा मे भेजे परन्तु उनकी संख्या ७ से अधिक और २ से न्यून न होगी।" पंचमांश की राशि प्राप्त दशांश का पचमांश रहा जो किसी भी अवस्था में १००, से कम न हो सकता था।

१६४६ में पंचमांश वाले नियम का संशोधन करके इस प्रकार रखा गया:—

३ से ५ तक प्रतिनिधियों की संख्या के लिए कम से कम	१००)
६ प्रतिनिधियों के लिये कम से कम	१५०)
७ ,, ,,	२००)
८ ,, ,,	२५०)
९ ,, ,,	३००)
१० ,, ,,	३५०)

परन्तु यदि वार्षिक दशांश का पंचमांश इन राशियों से अधिक होतो पूरा पंचमांश देना होगा इसके साथ ही सदस्यों की ७ के स्थान में अधिक से अधिक संख्या १० नियत की गई। १६५४-५५ में इस नियम में संशोधन करके यह इस प्रकार रखा गया:—

"प्रत्येक प्रतिनिधि सभा को अधिकार होगा कि अपने प्रतिनिधियों में से ५ प्रतिशत सार्वदेशिक सभा में भेजे।"

पंचमांश के लिए व्यवस्था की गई कि प्रत्येक प्रतिनिधि सभा प्रति प्रतिनिधि १००) सार्वदेशिक सभा को देगी।

प्रति प्रतिनिधि १००) की व्यवस्था कठोर जानकर संशोधन कराने की ठानी गई और सदस्यों की संख्या को परिमित करने के प्रतिबन्ध के हटने पर प्रतिनिधियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि का अभियान प्रारम्भ हो गया जिसके फलस्वरूप पंजाब सभा ने अपने बहुमत के बल पर पंचमांश की राशि १००) प्रति प्रतिनिधि से हटाकर प्राप्त दशांश का दशांश करा दी जिसके कारण सार्वदेशिक सभा की आय बहुत घटगई।

कार्यालय के सुझाव पर पंचमांश की धारा में १६६१ की वार्षिक साधारण सभा ने संशोधन कर दिया और प्राप्त दशांश का पंचमांश वाली पुरानी धारा रहने दी गई जिसका परिमाण पूर्ववत् कम से कम १००) नियत किया गया। कार्यालय ने यह भी सुझाव दिया कि सार्वदेशिक सभा के हित की रक्षा के लिए सदस्यों की संख्या पर पूर्ववत् प्रतिबन्धका रखा जाना आवश्यक है।

सार्वदेशिक सभा के नियमों के संशोधन की आवश्यकता देर से अनुभव की जा रही थी और संशोधन का विषय अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार विधान समिति के सुपुर्द किया गया। विधान समिति ने जिसके अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त थे, समिति की प्रेरणा पर संशोधन का ड्राफ्ट बनाया।

इसी ड्राफ्ट में १५ सदस्यों वाली धारा सम्मिलित थी। यह ड्राफ्ट अन्तरंगने स्वीकार कर नैमित्तिक साधारण सभा को भेजा जिसे अन्तिम रूप से १९५४ के बम्बई के अधिवेशन ने स्वीकार किया, अतः १५ की संख्या का नियत किया जाना नई बात नहीं है।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री ने यहभी लिखाहै कि १९६३ के सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में जो दिल्ली में हुआ था, जब यह नियम स्वीकृत्यर्थ प्रस्तुत किया गया था तब कई सदस्यों ने इसे अनावश्यक और अन्यायपूर्ण बताकर इसका घोर विरोध किया था। इस विरोध के फलस्वरूप यह नियम पारित न हो सका था। पुनः इस नियम को पारित कराने के लिए क्यों पेश किया गया? बात यह न थी। अवश्य कुछ सदस्यों ने इसका विरोध किया था। उनकी मान्यता थी कि सार्वदेशिक सभा की सदस्य संख्या घटाने के बजाय बढ़ानी चाहिए। दूसरा पक्ष यह था कि यदि सार्वदेशिक की प्रतिष्ठा बनाए रखनी अभीष्ट हो और आर्य जगत का समुचित मार्ग-प्रदर्शन करने में इसे समर्थ बनाए रखना हो तो इसकी संख्या पर प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक है जैसा कि पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, महात्मा नारायण स्वामी जी प्रभृति सभा के जन्मदाताओं और पृष्ठपोषकों ने आवश्यक समझा था परन्तु बहस चल ही रही थी कि उस समय कोरम की ओर ध्यानाकृष्ट किये जाने पर आगे के लिए स्थगित कर दिया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का १९६३ का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सदस्य श्री वीरेन्द्र जी तथा अन्य कुछ प्रतिनिधि सदस्यों के संयुक्त हस्ताक्षरों से युक्त सार्वदेशिक सभा में दिसम्बर ६३ में कई आवेदन पत्र प्राप्त हुए जिनमें मांग की गई थी कि उक्त सभा का १९६३ का चुनाव जो नवम्बर १९६३ में पाकसभा (रोहतक) में हुआ था अवैध घोषित किया जाय क्योंकि चुनाव के आरम्भ में प्रधान द्वारा ६१५ प्रतिनिधियों की उपस्थिति की घोषणा की गई थी परन्तु मतगणना होने पर मतदान करने वाले सदस्यों की संख्या ६३१ निकली। जब कुछ सदस्यों ने इस अनियमितता की ओर प्रधान का ध्यान आकर्षित करके इस चुनाव की वैधता को चुनौती दी तो प्रधान ने कोई कार्यवाही न की और चुनाव को ठीक उद्घोषित कर दिया। इस पर आपत्तिकर्त्ता सभा से उठकर चले गए।

यह विषय सार्वदेशिक सभा की २९-१२ ६३ की अन्तरंग बैठक में रखा गया। अन्तरंग ने आपत्तियों का उत्तर पंजाब सभा से मांगने का निश्चय किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अन्तरंग के निश्चय की सूचना दी गई और आपत्तिकर्ताओं के आवेदन पत्रों की प्रतिलिपियां उत्तर के लिए भेज दी गईं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्कालीन अधिकारियों ने अपने १६-१-६४ के पत्र द्वारा उत्तर दिया कि यह विषय प्रांतीय न्याय सभा में जाना चाहिए, सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग को इस पर विचार करने का अधिकार नहीं। **यदि सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग का यह अधिकार माना जाय तो पंजाब सभा के अन्तरंग सदस्यों को पंजाब सभा का पक्ष रखने का पूरा अवसर दिया जाय।**

पंजाब सभा की इस वैधानिक आपत्ति का समाधान किया गया कि चूंकि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित न्याय सभाओं के नियमो के अनुसार प्रान्तीय न्याय सभा बनी हुई नहीं है और पंजाब सभा में

में उनके नियमों के अनुसार भी कोई न्याय सभा बनी हुई नहीं है, अतः यह विषय सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में ही निर्णीत होगा और पंजाब सभा को अपना पक्ष रखने का पूरा पूरा अवसर दिया जायगा।

इस प्रसंग में यह लिख देना भी आवश्यक है कि १९६१ में जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित न्याय सभाओं के नियमों के अनुसार प्रान्तीय न्याय सभा बनाने के लिए सार्वदेशिक सभा से लिखा गया तो उक्त सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी इसके लिए तैयार नहीं हुए।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा में जब २९-३-६४ को यह विषय आया तो पंजाब सभा के प्रतिनिधि सदस्यों ने पैंतरा बदलकर आग्रह किया कि यह विषय सार्वदेशिक न्याय सभा को भेज दिया जाय और कहा कि अन्तरंग सभा को इसका निर्णय करने का अधिकार नहीं है। सार्वदेशिक सभा की ओर से सभा के उद्देश्य ३ और ६* की ओर ध्यान आकर्षित करके अन्तरंग सभा के अधिकार की पुष्टि की गई। अन्तरंग सभा ने इस विवाद के निर्णय का अधिकार सभा प्रधान को दे दिया।

सभा प्रधान ने अपना निर्णय देने से पूर्व दोनों पक्षों में सद्भावना का वातावरण उत्पन्न करने के लिए यत्न किया। २८-६-६४ की अन्तरंग बैठक में पंजाब सभा के प्रतिनिधि सदस्यों के साथ हुए परामर्श और उनकी सहमति से निश्चय हुआ कि आर्योदय में सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में अपमानजनक और भ्रांतिपूर्ण जो लेख लिखा गया है पंजाब सभा उसका समाधान कर देगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा ३८ प्रतिनिधि सदस्यों को लिखित रूप में सूचित कर दिया जायगा कि वे सार्वदेशिक सभा के बम्बई अधिवेशन में भाग ले सकते हैं। इसके साथ ही आर्योदय में ३८ प्रतिनिधि सदस्यों की सूची छाप दी जायगी।

श्री वीरेन्द्र जी ने जो आपत्तिकर्त्ताओं में से थे आर्य समाज के गौरव की रक्षा और सद्भावना के वातावरण में वृद्धि करने के लिए सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग को आश्वासन दे दिया कि यदि इस निश्चय का पंजाब सभा ने पालन किया और उन लोगों को बम्बई अधिवेशन में भाग लेने की लिखित अनुमति पंजाब सभा से प्राप्त हो गई तो वे अपनी आपत्तियों को वापस ले लेंगे।

खेद है कि पंजाब सभा ने इनमें से कोई कार्य न किया। आर्योदय में जो वक्तव्य निकाला वह अधूरा था और पूर्णतः समाधानकारक न था।

३८ प्रतिनिधि सदस्यों को बम्बई अधिवेशन में भाग लेने के लिए न तो पंजाब सभा ने लिखित रूप में अनुमति ही दी और न ही आर्योदय में उनकी सूची प्रकाशित की। न पत्रमांश ही भेजा। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने विवश होकर अपनी ६-८-६४ की बम्बई की बैठक में सभा प्रधान को निर्णय देने का अधिकार देकर घोषणा कर देने की प्रेरणा की।

---

* उद्देश्य ३—प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के कार्यों को संगठित एवं नियन्त्रित करना और उनका निरीक्षण करना।

उद्देश्य ६—प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों के पारस्परिक वाद विवादों और झगड़ों का निर्णय करना तथा न्याय सभाओं का संगठन करना।

१ ८-६४ की अन्तरंग का निश्चय पंजाब सभा को भेजकर आपत्तियों का उत्तर भेजने की प्रेरणा की गई। २१-१०-६४ को एक स्मरण पत्र भी भेजा गया। किसी भी प्रकार का उत्तर न आने पर सभा प्रधान ने अपना निर्णय देकर १९६३ के पंजाब सभा के चुनाव को अवैध करार दिया।

सार्वदेशिक सभा की ८-११-६४ की अन्तरंग ने इस निर्णय की सम्पुष्टि करके उसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा आपत्ति-कर्त्ताओं के पास भेजने का आदेश दिया जिसकी पूर्ति हो गई है।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री ने सार्वदेशिक सभा और उसके अधिकारियों की स्थिति को गलत रूप में पेश करके जनता को पथ-भ्रष्ट करने का जो असफल यत्न किया है आशा है वह इस स्पष्टीकरण से सर्वथा ही विफल होगा और वास्तविकता सामने आ जावेगी।

आर्य समाजों और आर्य जनों को उनके कुत्सित प्रचार से सावधान रहना चाहिए। इसी में सार्वदेशिक सभा, आर्य समाजों और आर्यों का हित है।

रामगोपाल
मन्त्री

(पृष्ठ ३९ का शेष)

वही चीजें अपने ट्रैक्टों मे आर्य समाज की सभा से छापी है अपना त्याग पत्र सभा से देकर क्यों प्रायश्चित्त नहीं करते ?

इसके अतिरिक्त पहले दिखाया जा चुका है कि 'Christianity Unmasked' और Conflict between Science and Christianity मे आर्यसमाज और वेद के सिद्धान्तों के विरुद्ध विचार पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने छापे हैं अतः समस्त पंजाब प्रतिनिधि सभा को उसके बताये तरीके पर ही त्यागपत्र देकर और इन ट्रैक्टों को विनष्ट करके और अक्षम्य अपराध की घोषणा करके अपने इस अपराध का प्रायश्चित करना चाहिए। अपने महान् अपराध को छिपाकर उल्टा प्रधान सार्वदेशिक सभा से त्याग पत्र देने का आन्दोलन करना सर्वथा ही असत्य, अवांछनीय और अनुशासन हीनता एवं उच्छृङ्खलता है। परमेश्वर सबको सद्बुद्धि दे।

भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति बम्बई के मन्त्री का आर्योदय सम्पादक के नाम पत्र

आर्योदय के पिछले अङ्कों में आप बम्बई में हुए ईसाई सम्मेलन के बारे में लिखते रहे हैं। पिछले एक अङ्क में आपने भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के सम्बन्ध में जो भी कुछ लिखा वह यथार्थता से बहुत दूर है अतः मैंने स्थिति को स्पष्ट करने के लिए यह पत्र आपको लिखना आवश्यक समझा। यदि इस पत्र को आप प्रकाशित करेंगे तो कृपा होगी।

भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति को सर्वथा आर्य समाज की एक संस्था समझना गलत है। यद्यपि इसमें आर्य समाज के बहुत से कार्यकर्ताओं ने सहयोग दिया है फिर भी इसमें हिन्दू समाज के सभी वर्गों को सम्मिलित किया गया है और इसके प्रमुख सहयोगियों में से लगभग ५० प्रतिशत सज्जन गैर आर्य समाजी हैं।

भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति ने ईसाई सम्मेलन की प्रतिक्रिया के रूप में जन्म लिया हो यह मान बैठना भी भूल है। यह एक स्थायी संस्था के रूप में जनता के सम्मुख आई है और इसके उद्देश्यों में हिन्दू जाति के पुनरुत्थान के कार्य के लिए विशाल और दीर्घकालीन योजनाएं प्रतिष्ठित हैं। इस पत्र के साथ मैं भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति का एक छोटा सा परिचय पत्र भी भेज रहा हूँ जिसे आप इस पत्र के साथ छाप सकें तो कृपा होगी।

हमारी समिति उद्दण्ड प्रदर्शन और खोखली नारेबाजी के सर्वथा विरोध में थी और अब भी है अतः ईसाई सम्मेलन के सामने हमने ऐसा कोई प्रदर्शन का कार्य नहीं किया। और फिर क्या आप नहीं जानते कि इस सम्मेलन की तैयारियां गत एक वर्ष से अधिक समय से हो रही थीं और हिन्दू समाज ने विरोध की एक आवाज भी नहीं उठाई और जब कि सब तैयारियां पूर्ण हो गई, सम्मेलन का समय सिर पर आ गया तब हम लोग सम्मेलन को बन्द कराने के विफल प्रयत्न करने लगे। भारतीय संस्कृति संरक्षण ने हर पहलू पर सोच समझ कर यह निश्चय किया कि यदि हम भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म के उच्च आदर्शों का संदेश यहां की जनता और ईसाई सम्मेलन में भाग लेने वाले हजारों विदेशी पादरियों तक पहुँचा सकेंगे तो कुछ ठोस कार्य होगा। हमने 'भारत का प्राचीन गौरव' नामक शीर्षक के अन्तर्गत १० पुस्तिकाओं का प्रकाशन कराया। यह पुस्तिकायें हजारों की संख्या में छपीं और हमारे कार्यकर्ताओं ने स्वयं इन पुस्तिकाओं को विदेश से आए हुए पादरियों और अन्य प्रतिनिधियों को दिया। इस प्रकार हमने इन पुस्तिकाओं के ५००० से अधिक सेट उन विदेशियों तक पहुंचाए। हजारों की संख्या में इन पुस्तिकाओं का मुफ्त वितरण यहां की पढ़ी लिखी जनता में किया गया है और किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त हमने सार्वजनिक सभाओं का आयोजन भी किया जिसमें आर्य समाज के विद्वान् वक्ताओं के अलावा श्री स्वामी चिन्मयानन्द जी और जैन मुनि श्री चित्रभानु जी महाराज के व्याख्यान हुए। इन सब व्याख्यानों में भारत में ईसाईयत के प्रचार और प्रसार का विरोध हुआ और ईसाई सम्मेलन से होने वाले दुष्परिणामों के प्रति जनता को जागरूक रहने को प्रेरणा दी गई। हमारी समिति के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास अपने अत्यधिक व्यस्त

38th International Eucharistic Congress बम्बई

२८ नवम्बर से ६ दिसम्बर १६६४ के जलसे में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्य

मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान मन्त्री माननीय लाला रामगोपाल जी की आज्ञानुसार विश्व ईसाई सम्मेलन बम्बई में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्मित साहित्य तथा अखिल भारतीय आर्य धर्म सेवा संघ, दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बांटने के लिए तथा प्रचारार्थ आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई में २१-११-६४ शाम को पहुंच गया, वहां पर बम्बई के आर्यों तथा वहां के हिन्दुओं के प्रत्येक सम्प्रदायों के बड़े-बड़े नेताओं की मीटिंग हो रही थी, वे यह चाहते थे, कि आर्य समाज विश्व ईसाई सम्मेलन मे जो प्रचार कार्य करे, तो हम सबको अपने सहयोग में रखे, बम्बई के महामान्य श्री गोस्वामी दीक्षित जी महाराज बड़े मन्दिर वाले जो देश, धर्म तथा जाति के रक्षक हैं, वे भी इस मीटिंग में बैठे हुए थे, और भी कितने माननीय महानुभाव उस सभा में सम्मिलित हुए थे, वे कहते थे, कि सब संस्थाओं द्वारा निर्मित साहित्य भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई द्वारा ईसाइयों में बांटा जाये, मुझे माननीय राजा नारायण लाल जी पित्ती के भी दर्शन हुए, जो आर्य संस्थाओं को लाखों रुपया का दान देते रहे हैं, वे कहने लगे, मैं वैदिक धर्म प्रचार करने के लिए संन्यास

जीवन में से अपना समय निकालकर दिल्ली पहुंचे और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विशिष्ट कार्यकर्ताओं के साथ प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री से मिले। इस प्रतिनिधित्व के जो सुपरिणाम निकले उनसे आप स्वयं परिचित होकर भी स्वीकार नहीं करना चाहते यह समझ में नहीं आता हमारी समिति के प्रधान यदि सार्वदेशिक सभा के प्रधान होने के नाते और वंश-परम्परागत आर्य समाज के भक्त होने के नाते दीवान हाल के उत्सव में पधारे तो आपने उसे उत्तरदायित्व से विमुख होना कैसे मान लिया ? क्या यह उनके आर्य-समाज के प्रति श्रद्धा और अपनी भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के कार्यकर्ताओं में अडिग विश्वास का द्योतक नहीं ?

आपके मार्तेन्द्रनाथ जी का मुझसे निरंतर व्यवहार चलता रहा है फिर भी आपने स्थिति को गलत समझा और गलत रूप में अपने पत्र में पेश किया इसका मुझे दुःख है। मैंने हर पत्र मे उनसे हमारी सार्वजनिक सभाओं के लिए, विद्वान् वक्ताओं को भेजने की प्रार्थना की. लेकिन अन्त समय तक किसी को भेजने का प्रबन्ध नहीं किया गया। आप तो "समस्त विश्व को हिला देने" का प्रयत्न कर रहे थे। अतः आपके द्वारा क्या कार्य बम्बई मे हुआ। इस पर मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता क्योंकि मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं हुआ। हां, आर्य समाज काकड़वाड़ी में हमारा कार्यालय होने से मुझे इतना अवश्य ज्ञात है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बीसियों हजार ट्रैक्ट यहां मुफ्त वितरण के लिए भेजे और उनका उत्तम वितरण यहां हुआ। आपने भी मुझे आश्वासन दिया था कि आप हजारों ट्रैक्ट वितरणार्थ हमें मुफ्त भेजेंगे। उनमे से केवल दो प्रतियां नमूने के तौर पर मुझे मिली थी जिनके लिए धन्यवाद। — विश्व बन्धु

मन्त्री

लेने को तैयार हूं. लोगों में वैदिक धर्म प्रचार के लिए बड़ा जोश पाया जाता था. मैंने भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा निम्न स्थानों पर जहां ईसाइयों के जलसे होते थे, वहाँ पर मैंने अपना साहित्य बांटा, oval के मैदान में तो केवल ५ बजे शाम से ईसाइयों का बड़ा जलसा होता था, परन्तु दिन भर बम्बई के विभिन्न स्थानों पर ईसाइयों के जलसे होते थे, इसलिए वहां की पब्लिक में हम लोग अपना साहित्य बांटते थे, इसके अतिरिक्त ईसाई तथा पादरी आदि लोग जो विभिन्न स्थानों में बैठे हुए थे, उनमें भी हम ने अपना साहित्य बांटा। तीन जहाज समुद्र में खड़े थे, उनमें भी हमने अपना साहित्य बांटा, oval मैदान तथा उन स्थानों के नाम जहां ईसाइयों के जलसे होते थे, जहां पर हमने अपना साहित्य बांटा, लिख रहा हूं।

(1) Fort Convent School (2) Holy Name Cathedral (3) Taj Mahal Hotel Crystal Room) (4) Congress site Coperage (5) Cawas jee Jahangir Hall (6) Jahangir Art gallery (7) Cama Hall 8) Congress site oval (9) University Convocation Hall 10) Brabourne Stadium 11) Cross Maidan (12 St X Avier's Inst of Edn Hall) (13 Syden Ham College of Com. & Fins B Road Bombay-1. (14) University Sports Grounds (15) St X Avier's College (16) St. X Avier's High School (17) Teresa's Ch, National Col (18) Vila Theresa Cumbala (19) St. Mary's High School. (20) St. Paul's High School (Hall) (21) St. X Avier's College Gymkhana Ground (22) Antonio D' Souza High School (Hall) (23) Sbrine of our Lady' Help of Christains (24) St. Peter's Church Bandra (25) St Andrews High School Bandra (26) St Pius X College, Goregaon. (27) Mount Poinsur. Borivli.

उपरोक्त स्थानों पर ईसाइयों के उत्सव के समय जब ईसाई लोग इकट्ठे होते थे, तो हम भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति के सुन्दर लिफाफों में अपना साहित्य ईसाइयों को देतेथे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से पूज्य पं० रामचन्द्रजी शास्त्रार्थमहारथी की लिखी हुई पुस्तक (1) "Some questions on Bible. (2) Arya Samaj at a Glance. (3) Christianity in the Eyes of Pt Jawahar Lal Nehru. यह साहित्य सार्वदेशिक सभा की ओर से लाखों की संख्या में एक बोगी भर कर बम्बई भेजा गया था, तथा भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति की ओर से निम्न पुस्तकें ईसाइयों में प्रचारार्थ बांटी गईं—

(1) Message of the vadas (2) An Assessment of India Art. (3) India and Her Glorious Past, India and Her People (4) Vadic Dharm universal (5) Teaching of Upanishads. (6) India a World Power (7) Glory of Indian Language and Literature. (8) Scientific Contributions of Ancient India (9) Divine Light Guide us (Selection of Vedic Hymns (10) Conversion, Dr. Radha Krishnan Speaks out,

यह पुस्तक भी हजारों की तादाद में छपवाई गई थीं, जब हमारा साहित्य विश्व ईसाई सम्मे- में बांटा गया, देश, विदेश के पादरी घबरा उठे, Some questions on Bible पुस्तक का उत्तर वे व दे सके, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य के कारण आर्यों की धाक बैठ गई, भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति की ओर से कई टैक्सियां आर्य समाज काकड़वाड़ी के बाहर खड़ी रहती थीं, जिनमें हम अपना साहित्य ईसाइयों में बांटने जाते थे, समिति के बहुत से महानुभावों ने मेरे साथ आर्य साहित्य बांटने का कार्य किया, जिन महानुभावों के नाम मुझे याद रह गए हैं. उनके नाम भी लिख रहा हूँ, (१) श्री विश्व बन्धु जी (२) श्री नवीन चन्द्र जी (३) श्री गुलजारी लाल जी आर्य श्री सदा जीविन लाल जी मशहूर फर्म पंजाबी चन्दू हलवाई (५) श्री भगवती प्रसाद जी गुप्त श्री Girich Babu Rao Chemburkar (७) श्री धर्म प्रकाश वंगानृसिंहतथा समिति के कई एक कर्मचारी भी साथ होते थे. तथा समिति के अनेक कार्यकर्ताओं के नाम याद नहीं रहे, साहित्य बांटने का कार्य अनेक महानुभावों ने किया साढ़े सात सौ बम्बई के स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थी हमारे साथ साहित्य बांट रहे थे, इस के इलावा विहार मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश, हैदराबाद. गुजरात महाराष्ट्र आदि सभी प्रान्तों के सैकड़ों कार्यकर्ता सार्वदेशिक के आदेश पर बम्बई पहुंचे हुए थे। उनसे हमें बहुत सहयोग मिला। सारा दिन रात टैकसियां साहित्य बांटने के लिये चल रही थीं, कैथोलिक ईसाईयों तक जो देश विदेश से आये थे, हमने अपना साहित्य पहुंचाया, इसके अलावा जो विभिन्न संस्थाओं द्वारा साहित्य निर्मित हुआ था, वह भी ईसाइयों को पहुँचाया गया, कुछ पुस्तकों के नाम यह हैं।

(1 Report of Christian Missionary Acti vities Enquiry Committee, Findings and Recommendations, इस पुस्तक को ईसाइयों ने बहुत मांगा, यह नियोगी रिपोर्ट का सारांश था, भारत के प्रसिद्ध लेखक माननीय जनार्दन भट्ट संयुक्त सैक्रटरी अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, सब्जी मन्डी, दिल्ली ने इस पुस्तक को लिखा है, तथा ईसाइयों की मांग पर समिति ने ३० हजार पुस्तक भेजने के लिये माननीय भट्ट जी को तार दिया। An Appeal to His Holiness The pope भी बांटा गया।

इसके अलावा महामान्य श्री गोस्वामी दीक्षित जी महाराज द्वारा बहुत सा साहित्य निर्मित किया गया था, कुछ पुस्तकों के नाम यह हैं (1) His Holiness Pope Paul VI visit to India and Eucharistie Congress. यह पुस्तक अंग्रेजी, हिन्दी गुजराती आदि मे छापी गई थी, (2) The Vatican Against India By Dr Tristan De Bragang cunha (3) Some Reasons why the Eucharistic Congress should be opposed.

श्रीमान ब्रह्मचारी दत्त मूर्ति जी मसूर आश्रम गौर गांव द्वारा भी कुछ साहित्य निमित हुआ था, श्री ब्रह्मचारी जी ने मेरे साथ मिलकर बहुत कार्य किया, इस के इलावा हिन्दू जागरण समिति के प्रधान श्री पुरुषोतम प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित पुस्तक भी बांटी गई, बम्बई में कुछ हिन्दू सभाई कार्यकर्ताओं की गिफ्तारी हुई, जो सर्वथा अन्याय पूर्ण थी, ये गिरफतारियां पोप पाल को प्रसन्न करने के लिये की गई थीं। भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति ने विभिन्न संस्थाओं को अपना सहयोग दिया।

पोप पाल VI जब बम्बई आ चुके थे, तो

उनके प्रोग्राम में ऐसा समय भी था जब कि वे Civil Authorities बम्बई को मिले तथा Nonchristian and Catholic groups को भी मिले, मुझे भी अपना साहित्य पोप पाल के हाथों में देने का अवसर प्राप्त हो गया। मैं अंग्रेजी में सत्यार्थ प्रकाश Light of Truth तथा Some questions on Bible, सार्वदेशिक सभा का साहित्य तथा भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति का साहित्य पहुंचाने में सफल हुआ, इसके अतिरिक्त एक पुस्तक Crimes of Popes भी मैंने उनको भेंट की थी, यह पुस्तक लन्दन में एक अंग्रेज ईसाई कैथोलिक-हिस्टोरियन ने लिखी है। मुझे विश्व ईसाई सम्मेलन के अधिकारियों से एक मैडल तथा एक पास 38th Inter National Eucharistic Congress Bombay, Oval venue Reserved Seat का पोपसाहब के आदेशसे मिला था जो कि आज तक मेरे पास है, अब विश्व ईसाई सम्मेलन के अधिकारियों से मिलने का अच्छा अवसर मिला Pass पास मिल जाने के कारण मैं Oval के मैदान में पोप साहब के साथ वाली Reserved Seat के थोड़ी दूरी पर वरिष्ठ कार्य-कर्ताओं में बैठा करता था। वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को भी मैंने अपना सारा साहित्य पहुंचा दिया, पोप साहब तथा वहां के अधिकारियों से मिलने में अच्छा अवसर मिलता रहा मैंने आर्य समाज काकड़वाड़ी के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के लिये कई एक पास Pass लाकर दिये थे, इसके इलावा एक पास श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज तथा एक पास श्रीमान महात्मा देवराज जी दयानन्द सालवेशन मिशन होशयारपुर वालों को भी ला दिया था, पास के कारण बहुत से आर्य महानुभाव ईसाइयों के जलसे में आने-जाने लग गये; विश्व ईसाई सम्मेलन में जो प्रोग्राम जाहिर तथा खुफिया हुए हैं, मुझे मालूम है मैं ईसाइयों का कुछ साहित्य भी साथ लाया हूँ।

पोप साहब तथा देश, विदेश के बारह हजार पादरी तथा आर्क बिशप, आदि कार्डीनल लोग आदि ईसाईयों को पता चल गया है, कि आर्यसमाज ही कैथोलिक मिशन के प्रचार में एक बड़ी बाधा है. वे लोग कहते थे, यदि आर्य समाज न हो, तो सारे भारत में कैथोलिक मिशन आसानी से फैल सकता है।

भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति द्वारा प्रचार के लिए चौपाटी पर एक सुन्दर पण्डाल बनाया गया था। जहां शाम के चार बजे से ७ बजे तक प्रचार कार्य होता था। इस पण्डाल में ३० नवम्बर से ६ दिसम्बर तक प्रचार कार्य होता रहा। कुछ वक्ताओं के नाम जो सार्वदेशिक सभा द्वारा बम्बई प्रचारार्थ भेजे गए थे। लिख रहा हूँ, जो उस पण्डाल में भाषण देते रहे हैं :—

(१) श्री पं० ओ३म्प्रकाश जी शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी, (२) श्री पं० विश्वनाथ जी त्यागी, वकील, उत्तरप्रदेश, (३) श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक, दिल्ली, (४) श्री पं० मुरारीलाल जी शास्त्री, हिसार तथा इसके अतिरिक्त महात्मा देवराज जी तथा (५) श्री नन्दलाल जी भजनोपदेशक दयानन्द सालवेशन मिशन, होशियारपुर (पंजाब) तथा स्थानीय वक्ताओंमें पं०श्रीकृष्ण शर्मा आर्य मिशनरी सम्पादक 'जन जागरण' राजकोट, पूज्यपाद श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज, श्री पं० दयाशंकर जी महोपदेशक, श्री पं० राजेन्द्र जी। माननीय वेणी भाई मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, उपरोक्त वक्ताओं तथा अपनी गुजरात सभा के उपदेशकों और स्थानीय उपदेशकों तथा अपने दल बल के साथ चौपाटी पण्डाल में लेकर चल देते थे। काकड़वाड़ी आर्य समाज के मन्त्री माननीय सभाजित मिश्र जी तथा स्वर्गीय पं० विजयशङ्कर के भाई श्री जयन्तीलाल जी महोदय तथा पुरोहित आर्य

समाज काकड़वाड़ी ने बड़ा कार्य किया। सब स्थानीय आर्यों ने बहुत कार्य किया, विभिन्न प्रांतों के आर्य काफी संख्या में आये हुए थे। सर्व स्थानीय आर्यों में बड़ा उत्साह था। भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति बम्बई के आधीन यह सब प्रचार कार्य हुआ, जिसके प्रधान माननीय प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास हैं, तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भी आप प्रधान हैं। आपके नेतृत्वमें यह काम हुआ, आपका कार्य सराहनीय है, आपने तन, मन, धन से वैदिक धर्म प्रचार में सहायता दी। आपके साधना आश्रम विल्ले पार्ले में उपरोक्त विद्वानों के ठहरने दूध, भोजन, आदि का प्रबन्ध था। आपके नेतृत्व में आर्य समाज को सफलता प्राप्त हुई।

महान् आश्चर्य और दुःख

जिस अवैधानिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी श्री रघुवीरसिंह शास्त्री और श्री भारतेन्द्रनाथ जिन्होंने पदलोलुपता, फूट और स्वार्थके वशीभूत होकर पंजाब में आर्यसमाज को रसातल में पहुंचा दिया है, किस मुंह से सार्वदेशिक सभा के महान् कार्यक्रम और उसके पूज्य प्रधान श्री प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास पर कीचड़ उछाल रहे हैं, जब कि उनका एक भी आदमी बम्बई नहीं गया। मैं रघुवीरसिंह शास्त्री को चैलेन्ज देता हूँ, कि भगवान देव गुरुकुलीय जिस पर वर्षों से अनेक प्रकार के इल्जाम लग रहे हैं, और जिसे दिल्ली की टंकारा साहित्य समिति के बार २ अनुरोध करने पर टंकारा ट्रस्ट ने अलग कर दिया है, उसके अतिरिक्त पंजाब सभा का कौन सा आदमी था, जिसने बम्बई में धूम मचा दी। प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से बम्बई में न कोई पोस्टर लगा, न ही इन्होंने *कोई साहित्य बांटा, न इन्होंने कोई प्रचार कार्य* किया। इन को शर्म आनी चाहिये, कि इन्होंने इतना बड़ा झूठ का पुलन्दा प्रकाशित करके आर्य जनता में हीन भावना पैदा की है। यही लोग हैं, जिन्होंने दिल्ली के गांधी ग्राउण्ड में २१ नवम्बर को ईसाइयों के विरुद्ध की जा रही सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा मन्त्री के विरुद्ध झूठा प्रोपेगेण्डा किया। सभा थी ईसाइयों के विरोध में और प्रचार किया जा रहा था आर्य समाज के नेताओं के विरुद्ध, हिन्दू सभा के मंच से खड़े होकर बोलना आर्य समाज जैसी महान् संस्था को हिन्दू सभा की पूंछ में बांधने वाली बात थी। मैं रघुवीर सिंह तथा भारतेन्द्र नाथ से पूछता हूं, कि जब बम्बई में विश्व ईसाई सम्मेलन हो रहा था, आप चर्खी दादरी में अवैधानिक चुनाव करने में संलग्न थे, और चुनाव के एजन्डा में दो दिन का प्रोग्राम आपने छापा था, पहिले दिन शनिवार को केवल एक घण्टे में चुनाव की घोषणा करके बिस्तरे बांध कर दिल्ली वापस आ गये। न गुरुकुल कांगड़ी का बजट पेश हुआ, न कन्या गुरुकुल का, न आर्य कालेज नवां शहर और अनेकों सैकड़ों संस्थाओं के बजट सुनाकर न पास कराये, और न बाकायदा कोई कार्रवाई हुई। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की भूमि २० और ३५ पैसे गज में श्री रघुवीरसिंह शास्त्री और श्री रामनाथ भल्ला के साथियों ने अपने नाम रजिस्टरी करा ली। उसमें अब आप लोगों की कोठियां तैयार हो रही हैं। मैं श्री भल्ला से केवल एक ही प्रश्न पूछता हूँ, कि ९९ साल की लीज पर देने का नाम क्या किराये पर देना है? आर्य समाज की यह जायदादें स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा सेठ श्री रघुमल जी ने खरीद कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दी थीं। आप लोगों के टोले को क्या अधिकार था कि २० नये पैसे गज के *हिसाब से अपने नाम रजिस्टरी करा लेते।* कोई

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की उत्तर प्रदेश राज्य को बधाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी ने उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री श्रीमती सुचेता कृपलानी को एक विशेष पत्र भेजकर २६ जनवरी ६५ से राज्य का समस्त काय हिन्दी में किये जाने के उक्त राज्य के निश्चय पर बधाई दी है। पत्र नीचे अंकित किया जाता है:—

मान्या बहिन जी, सादर नमस्ते !

आपके नेतृत्व और मार्ग दर्शन में उत्तरप्रदेश राज्य ने २६ जनवरी ६५ से राज्य का समस्त कार्य हिन्दी में किये जाने का जो निर्णय किया है वह स्तुत्य है। इसके लिए मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और समस्त आर्य जगत् की ओर से आपको और आपके मन्त्री मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूं।

देश के कतिपय वरिष्ठतम नेताओं का यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रयत्न रहा है और है कि हिन्दी को राज्य कार्य में उपयुक्त एवं अधिकृत स्थान लेने से वंचित रखा जाय और उसकी अशक्यता का राग अलापते और उसे शक्य बनाने का हृदय से कोई प्रयास न करते हुए, उसके ऊपर अंग्रेजी की वरिष्ठता बनाए रखी जाय। इस प्रकार के कुचक्र और प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष विरोध के सक्रिय होते हुए भी आपने जो पग उठाया है वह पग साहसिक और दूरवर्ती सुपरिणामों से युक्त है। आपके इस पग से जहां हिन्दी को उपयुक्त एवं अधिकृत सम्मानित स्थान प्राप्त होगा वहां इससे इस आक्षेप का निराकरण भी हो जायगा कि हिन्दी भाषा भाषी राज्य राजकार्य में हिन्दी को वह स्थान नहीं देते जिसके दिए जाने की उनसे आशा की जाती है अथवा जिसे उपयुक्त स्थान देना उनका दायित्व है।

जहां तक शिक्षा में त्रिभाषायी फार्मूले को क्रियान्वित किये जाने का प्रश्न है, उसमें हिन्दी और अंग्रेजी के साथ संस्कृत का अनिवार्य विषय बनाया जाना भी उपयुक्त है। यह ठीक है कि दक्षिण के कई राज्यों में हिन्दी अनिवार्य विषय नहीं अपितु वैकल्पिक विषय है। ऐसी अवस्था में दक्षिण राज्यों के पृष्ठपोषक हिन्दी राज्यों से यह कैसे आशा रख सकते हैं कि वे अपने यहां दक्षिण की एक भाषा को त्रिभाषायी फार्मूले के अन्तर्गत अनिवार्य विषय बनाएं। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के विद्यार्थियों को दक्षिण की एक भाषा बलात् पढ़ाने से क्या लाभ ? यह भाषा उनके लिए आगे चल कर लाभदायक सिद्ध न हो सकेगी।

भाषा को समझौते और राजनैतिक चश्मे में से देखा जाना हानिकर है। यह तो रुचि और उपयोगिता का विषय है। यदि उत्तर के लोग किसी दक्षिणी भाषा की वरिष्ठता और उपयोगिता की दृष्टि से पढ़ें और उसमें निष्णात बनें तो यह स्वागत योग्य है। इसी प्रकार यदि दक्षिण के लोग इस दृष्टिकोण से हिन्दी को अपनाएं और ये लोग द्रुत गति से हिन्दी को अपना भी रहे हैं, तो यह वरेण्य है।

भारत की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक एकता आवश्यक है। वह हिन्दी-संस्कृत से कायम रह चुकी है, कायम है और आगे भी रह सकती है।

भवदीय
रामगोपाल
सभा मन्त्री

दान-सूची

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

(गतांक से आगे)

पूर्वी बंगाल हिन्दू पीड़ित सहायता निधि

१२५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज हजूरी बाग श्रीनगर
११) श्री रामनारायण जी मलोत्रा दिल्ली श्री बालमुकन्द जी अहूजा सभा कोषाध्यक्ष द्वारा
३०) श्री देशबन्धु जी द्वारा श्री कुंवर चन्द्र जी बंगला ८६ अम्बाला कैन्ट
२१) श्री मन्त्री जी आर्य समाज नाला बाजार अजमेर
१००) मन्त्री जी आर्य समाज खुर्जा (बुलन्दशहर)
१०००) मन्त्री जी आर्य समाज नया बांस दिल्ली श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को भेंट रूप में
१२५) श्री डा० कुलभूषण जी सुब्बर बाग श्रीनगर
१०१) मन्त्री आर्य समाज सब्जी मण्डी आर्यपुरा दिल्ली
२६१) श्रीमती जमुना बाई नरसिंह जी द्वारा श्री चतुरभुज नरसिंह जी विले पारले बम्बई श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी द्वारा
१२३) श्री मन्त्री जी आर्य समाज हिंगोली (महाराष्ट्र)
२५) मंत्रिणी जी स्त्री आर्य समाज कटरा इलाहाबाद
१०) मन्त्री जी आर्य समाज गंगोह सहारनपुर)
३)२३ मन्त्री जी आर्य समाज रुड़की (सहारनपुर)
१०) मन्त्री जी आर्य समाज देवरिया (उ० प्र०)
१०) मन्त्रिणी जी प्रान्तीय आर्य महिला सभा दीवान हाल दिल्ली
७५) श्री बिहारीलाल जी भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज बाराबंकी
२५) श्री मन्त्री जी आर्य समाज मंगलौर (दक्षिण भारत)
२३)२५ श्री मन्त्री जी आर्यसमाज जौनपुर (उ.प्र.)

(पृष्ठ ५४ का शेष)

भी आर्य वीर खड़ा हो गया, तो आपके इस पाप के कर्म का भांडा चौराहे में फूट जायेगा। आप लोगों ने चले चलाये गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को बन्द करके महान् पाप किया है। ब्रह्मचारियों, कर्मचारियों, अध्यापकों आदि को भगा कर गुरुकुल की सारी भूमि को हथियाना चाहते हो। इसका उत्तर आर्य जनता आप से पूछेगी। 'आर्योदय' जो कि आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए प्रकाशित किया जाता है, उसमें व्यक्तिगत, कुत्सित झूठा प्रचार करने से आर्य जनता अत्यन्त विक्षुब्ध है और ऐसे गन्दे परचे का बायकाट आर्य समाजें जल्दी ही करेंगी, बहुत देर तक यह अधार्मिक बकवास सुनी नहीं जा सकती।

आप ईसाइयों के विश्व ईसाई सम्मेलन से कुछ सीख लेते। संसार भर के कैथोलिक ईसाई एक लड़ी पिरो गये। परन्तु आप आर्यों को लड़ाने मे लगे हुए हैं, आपने स्वयं आर्यों की व्यवस्था मे न रह कर आर्यजगत् के साथ गद्दारी की है शीशे के महल में बैठ कर आप पत्थर मार रहे हैं। आर्य जनता आपका यह तमाशा ज्यादा देर न देख सकेगी। आर्यों के साथ मिल कर कार्य करो, जिससे हम सारे संसार में वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें।

रुचिराम
आर्योपदेशक

—०—

१०) श्री रामकिशोर जी शर्मा आर्य ग्राम पंचायत महापुरा वाया जयपुर (राजस्थान)
५०) श्री मन्त्री जी आर्य समाज आजमगढ़ (उ० प्र०)
११०) श्री मन्त्री आर्य समाज प्रतापगढ़ (अवध) (श्रीपूज्य स्वा० ध्रुवानन्द जी सरस्वती को भेंट रूप में)
५) श्री ऐस० टी० वाहेकर तेल्हरा (अकोला)
८७)६५ श्री सत्यनारायण जी सालवन जि० करनाल
५) मन्त्री जी आर्य समाज नगरा (झांसी)
२५) श्री केदारनाथजी सुपुत्र श्री गोविन्दसहायजी शालामार रोड, जम्मू तवी (श्री रामरखाजी चौपड़ा श्रीनगर द्वारा)
२५) श्री ला० गुरसहाईमल जी सहगल हरीसिंह सरीर श्रीनगर (श्री रामरखाजी चौपड़ा श्रीनगर द्वारा)
५) श्री ईश्वरदास जी अहलूवालिया अम्बाला शहर
११) मन्त्री जी आर्य समाज लदूघाटी पहाड़गंज नई दिल्ली
३४)५० मन्त्री जी आर्य समाज पटियाला
१४)५० श्री ज्योति प्रसाद जी बजाज नजीबाबाद (बिजनौर) (श्री सुशीलकुमार जी आर्य की उन्तीसवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में)
२) श्री श्योनारायण जी आर्य कोसली (रोहतक)
५०) आर्य समाज खरड़ जिला अम्बाला
४२५६)२० श्री मन्त्री जी केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर
५) श्री कोषाध्यक्ष जी आर्य समाज पथ्रोट (अमरावती)
११) मन्त्री जी आर्य समाज आसफपुर (बदायूं)
३५००) श्रीयुत के० नरेन्द्र जी मालिक 'दैनिक 'प्रताप' व 'वीर अर्जुन' नई दिल्ली
३४) श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती आर्य समाज जितरयौना व स्याना (बुलन्दशहर)
१०८)८० श्री कोषाध्यक्ष जी केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर
१६) श्री मन्त्री आर्य समाज नया बास दिल्ली (स्वर्ण मुद्रिका के)
२१) श्री बनवारीलाल ब्रजकिशोर जी बजाज सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)
१००) श्री दिलूरामजी कालड़ा १८।७४ मोतीनगर, सराय रोहिल्ला दिल्ली

१०६२५ ११ योग
११६१६६)५० गतयोग
१२६७६४)६१ सर्वयोग

दान अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध प्रचारार्थ एवं साहित्य प्रकाशनार्थ

२५) श्री डा० ऐस. जी. मुडे जी अध्यक्ष आर्य समाज चांदा
१००) मन्त्री जी आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर
१०१) मन्त्री जी आर्य समाज जौनपुर (उ.प्र.)
१००) मन्त्री जी आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार, रांची
५०) मन्त्री जी आर्य समाज फतुहा (पटना)
१०) मन्त्री जी आर्य समाज नाहन (हि० प्र०)
४१) मन्त्री जी आर्य समाज नगीना (गुड़गांव)
१००) मन्त्री जी आर्य समाज रायबरेली
५०) मन्त्री जी आर्य समाज हिंडौन सिटी (राजस्थान)
२५) मन्त्री जी आर्य समाज लखीमपुर (खीरी)
२००) मन्त्री आर्य सभा संघ पाटनागढ़ जि० बलोंगिर (उड़ीसा)
५१) मन्त्री जी आर्य समाज गया, (द्वारा देशबन्धु खादी भण्डार, गया)

११) श्रीमती देवनविदेवी जी (द्वारा श्री लक्ष्मणप्रसाद जी मनीव आर्य) पुरानी बाजार नरकटिया गज (चम्पारन)
१०) मन्त्रीजी आर्यसमाज पीरो (शाहाबाद बिहार)
१) श्रीरामजीप्रसाद श्यामबिहारी प्रसादजी आर्य पुरानी बाजार नरकटिया गज चम्पारन)
११) श्री ला० हरिश्चन्द्र जी नारग (द्वारा आर्यसमाज लक्ष्मीबाई नगर नई दिल्ली)
५) श्री चरणलाल जी शर्मा (द्वारा आर्यसमाज लक्ष्मीबाई नगर नई दिल्ली)
५१) मन्त्री जी आर्य समाज धौलड़ी (मेरठ)
२५) मन्त्री जी आर्यसमाज बरेटा मंडी (भटिंडा)
१०) श्री श्याम जी आर्य प्रधान आर्यसमाज मरथना (इटावा)
१००) श्रीयुत मोहनलालजी मोहित मौरीशस
१५) मन्त्री जी आर्यसमाज रामनगर चम्पारन (बिहार)

१०)	,,	,	अकोला
११)	,	,,	सिकटा चम्पारन
३०)	,,	,,	इटारसी (म०प्र०)
१०१)	,	,	दयालपुरा (करनाल)
५०)	,,	,,	मंडी (हि०प्र०)
३१)	,	,,	बेतिया (चम्पारन)
१०)	,,	,,	छोटी सादड़ी (राजस्थान)
१०)	,,	,,	राजपुर बनेड़ी जि० भीलवाड़ा (राजस्थान)
२१)	,,	,,	मलाही (चम्पारन)
२१)	,	,	साम्बा जम्मू (काश्मीर)
२०)	,	,	जटपुरा महावतपुर पो० जटपुरा (बिजनौर)
१०)	,,	,	पालीगंज (पटना)
१०)	,,	,,	चनपटिया (चम्पारन)
५१)	,	,,	गनकैरिज फैक्टरी क्वार्टर्स ६५७ ईस्ट धामापुर जबलपुर
३०)	,,	,,	गोंडा (उ०प्र०)
१५)	,,	,,	अमरावती
५०)	,,	,,	कोड़ा जहानाबाद (फतेहपुर हस्वा)

११) मन्त्री जी आर्यसमाज उमीरपुर (बांदा)
११) ,, ,, टमकोर पो० बिशनगढ़ (झुंझुनू) राजस्थान
६१) मन्त्री जी आर्य समाज धूतपेठ पो० कारवाग साहू हैदराबाद (आ० प्र०)
१०) मन्त्रिणीजी स्त्री आर्यसमाज गोंडा) द्वारा श्री जगदेवसिंह जी मन्त्री आर्य समाज गोंडा उ० प्र०)
१०) श्री धर्मपाल जी, (द्वारा श्री शेषराम जी ड० भुवारमा तहसील पालपुर जि० कांगड़ा)
२०) मन्त्री जी आर्य समाज इटारसी (म० प्र०)
२०) श्री स्वामी अनन्तानन्द जी आर्य समाज दनकौर (बुलन्दशहर)
४००) मन्त्री श्री अ० भा० आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, दिल्ली सहायता मास नवम्बर व दिसम्बर ६४
५०१) मन्त्री जी आर्य समाज बजाजा बाजार अलवर (राजस्थान) (श्रीयुत ला० ठाकुरदास जी द्वारा)
२५) श्री मोहनलाल जी गुप्त मन्त्री हंसराज आर्य ट्रस्ट जालल मण्डी
६६०) श्री प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका पो० बा० ११५५२ नैरोबी (कीनिया)
२५) श्रीमती मन्त्रिणी जी स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना
१०१) मन्त्री जी आर्यसमाज मेरठ कैन्ट (उ०प्र०)
२३) प्रधान जी आर्यसमाज आसनसोल (पू० रे०)
७०) श्री महात्मा आनन्दभिक्षु जी वा० प्र० आर्य समाज नयाबास दिल्ली (नोटों की बिक्री से)
५) श्री बी० धर्मराज जी आर्य कनकपुर (बंगलौर)

१४८६) योग

६०३६)५० योग

१५७२२)५० सर्वयोग

दान वेद प्रचारार्थ

१५) मन्त्रीजी आर्यसमाज मन्दसौर (म० प्र०)
२) श्री सरदारसिंह जी चौहान अध्यापक ककरडा, पो० रेहटी (सीहोर)
१६) मन्त्री जी आर्यसमाज निजामाबाद (आ.प्र.)
२३) मन्त्री जी आर्यसमाज हिंगोली (महा०)
५) मन्त्री जी आर्य समाज डाल्टनगंज (पलामू)
१०१) श्रीमती चन्द्रकान्ता जी गुप्त मुख्याध्यापिका गवर्नमेंट टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल फार लेडीज जम्मू तवी काश्मीर (द्वारा मन्त्री जी आर्यसमाज श्रीनगर)
४) मन्त्री जी आर्यसमाज थाना भवन (मुजफ्फर नगर)
५) श्री रामरक्षक जी उपप्रधान आर्यसमाज, दाल बाजार, लुधियाना
४) श्री सत्यदेवजी भंडारी सुजानपुर (गुरुदासपुर) (अपने स्व० पिता ठाकुरदास भंडारी की स्मृतिमे)
४) श्री सरदारसिंहजी चौहान अध्यापक रा० पा० ककरडा, पो. रेहटी (सीहोर)
५०) श्री ला तीर्थराम इन्द्रप्रकाश जी मौगडायन थाना भवन (जिला मुजफ्फर नगर) (अपने पूज्य पिताजी के स्वर्गवास पर)
२५) श्री हकीम सरदारी लाल राजपाल फिल्लोर जालन्धर)अपनी पूज्या माताजी की स्मृतिमे
५) श्री वजायतीरामजी असि० इंजीनियर सिंचाई पो० केशोराम पाटन जि० बून्दी (राजस्थान)
२) श्री सतीशचन्द्रजी ५५१ प्रह्लाद वटिया नगर निगम सिनेमा के पीछे, मेरठ सिटी
११) श्री मन्त्री जी आर्यसमाज सूरत, श्रीकान्त भगत जी ८।५०१ चादलावाड, सूरत

२७२) योग
३८७) गत योग
६५९) सर्व योग

दान आर्यसमाज स्थापना दिवस

५०) मन्त्री जी आर्यसमाज जौनपुर (उ प्र.)
२५) मन्त्रीजी आर्यसमाज नई मंडी मुजफ्फरनगर

७५) योग
४९४)५० गत योग
५७१)५० सर्व योग

दान आर्यवीर दल संगठन

५०) श्री उत्तमचन्द्र जी शरर प्रान्तीय अध्यक्ष आर्यवीर दल पंजाब आर्य कालेज पानीपत

दान विधवाओं की सहायतार्थ

१२५) श्रीयुत डा कुलभूषण जी, श्रीनगर

दान अनाथ बच्चों की सहायतार्थ

१२५) श्रीयुत डा कुलभूषण जी, श्रीनगर

दान अन्धे स्त्री पुरुषों की सहायतार्थ

१२५) श्रीयुत डा कुलभूषण जी, श्रीनगर

दान खेड़ा आश्रम के लिए

६० श्री प्रधान जी, श्रीमती सतभ्रावां ट्रस्ट नई दिल्ली

दान दाताओं को धन्यवाद —रामगोपाल, मन्त्री

भूल सुधार

'सार्वदेशिक' नवम्बर १९६४ के अंक मे पृष्ठ ४० पर दान वेद प्रचार मे १०) श्री लक्ष्मण-राव जी गायकवाड द्वारा आर्य समाज गुंजोटी (उस्मानाबाद) छपा है । उसे पाठक निम्न प्रकार पढ़ें:- १०) श्री लक्ष्मण राव जी गायकवाड द्वारा आर्यसमाज औराद (उस्मानाबाद) ।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

विविध समाचार

अजमेर

हीरक जयन्ती समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान, का हीरक जयन्ती समारोह दिनांक २९, ३० व ३१ मई सन् १९६५, को ऋषि निर्वाण स्थली, अजमेर, में पूर्ण सफलता केसाथ मनाने का निश्चय किया गया है। इस समारोह को महत्वपूर्ण और उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयास किया जा रहा है । इस अवसर पर कई सम्मेलन होंगे । यथा – वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, संस्कृति संरक्षण सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और राष्ट्र भाषा सम्मेलन आदि।

इसे सर्वांगपूर्ण सफल एवं महत्वपूर्ण बनाने के लिए भद्रजनों की शुभ सम्मति, सुझाव तथा सहयोग का धन्यवाद सहित हार्दिक स्वागत किया जाएगा।

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान।

शोक प्रस्ताव

वेदों के प्रकांड विद्वान, देववाणी संस्कृत के अनन्य भक्त और अनथक प्रचारक एवं प्रसारक, परोपकारिणी सभा के सम्मानीय सदस्य राज्य मान्य श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के वाराणसी में निधन पर परोपकारिणी सभा के अधिकारी तथा इसके अन्तर्गत संस्थाओं, वैदिक यन्त्रालय, वैदिक पुस्तकालय के समस्त कर्मचारियों तथा दयानन्द विद्यालय (हाई स्कूल) के अध्यापक और छात्रों की यह सभा हार्दिक शोक प्रकट करती है और अनुभव करती है कि आपके निधन से आर्य संसार तथा संस्कृत विद्वन्मण्डल की महान् क्षति हुई है जिसकी पूर्ति कठिन है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे।

भगवान स्वरूप न्यायभूषण

बीड (महाराष्ट्र)

ईसाई परिवार की शुद्धि

बीड (महाराष्ट्र) दि० २५, स्थानीय आर्य समाज की बृहद् शुद्धि सभा श्री पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति जी महोपदेशक आ. प्र. सभा हैदराबाद की अध्यक्षता में हुई। इस शुद्धि सम्मेलन में पंडित जी ने एक ईसाई परिवार की शास्त्रीय विधिवत् शुद्धि की। इस परिवार में ६ आदमी थे, परिवार का नायक श्री भानुदास किसी कारणवश १० वर्ष पूर्व परिवार सहित ईसाई बन गया था।

यह समाचार जब पं० देशबन्धु जी विद्यावाचस्पति जी ने सुना तो बड़े ही दुःखित हुए और उनको शुद्ध करने का निश्चय किया। श्री भानुदास जी गिरजाघर में ही रहा करते थे, स्थानीय श्री भिक्कम सेठ और पंडित जी ने उनसे सम्पर्क रखा, कुछ समय के पश्चात् यह ईसाई परिवार शुद्ध हुआ। गिरजाघर से पृथक् होकर किराणा दुकान लगायी, और बड़े आनन्द से रहने लगा है।

टंकारा

महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय टंकारा सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के प्रथम सत्र की परीक्षा दिनांक २६ तथा २७-९-६४ को सम्पादित हुई। इस परीक्षा का परिणाम भी प्रकाशित हो चुका है। यह परीक्षा भारत के प्रत्येक प्रान्तों में चलाई गई और संस्कृतानुरागियों ने अदम्य उत्साह से इस परीक्षा में भाग लिया।

आगामी परीक्षा फरवरी १९६५ के अन्त में

होगी। प्रत्येक आर्यजन, संस्कृतानुरागियों से निवेदन है कि समस्त भाषाओं की जननी वेद-वाङ्मयी स्पर्शशून्या परात्मिका सुरभारतीके प्रचार एवं प्रसारार्थ परीक्षाओं को सफल बनाकर राष्ट्रोद्धार कार्य में यथासम्भव सक्रिय सहयोग देने का प्रयास करें।

प्रस्तोता कार्यालय टंकारा से पत्राचार करने का कष्ट करें।

निवेदक :—
आनन्दप्रिय पण्डित
मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

बड़ौदा

आर्य विश्वविद्यालय बड़ौदा द्वारा दिनांक १२-१२-६४ को स्नातिका परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। निम्न छात्राएं 'भारती समलंकृता" तथा व्यायामाचार्या घोषित की गईं उनका क्रमानुसार नाम :—

(१) कु० शीला शामराव प्रथम श्रेणी
,, आशालता बाबूराव द्वितीय श्रेणी
(३) ,, दयावती शामजी भाई ,, ,,
(४) ,, सविता शामजी भाई ,, ,,
(५) ,, शशि शामजी भाई ,, ,,

शान्तिप्रिय
प्रस्तोता

खंडवा

आर्य समाज खंडवा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष एवं उत्साही कार्यकर्ता सेठ रामनिवास जी अग्रवाल का दिनांक ४-१२-६४ को अचानक देहावसान हो गया। आर्य समाज खंडवा का एक बहुत बड़ा सहयोगी तथा कर्मठ कार्यकर्ता इस संसार से उठ गया। उनके निधन से हम सब आर्यगण दुखी हैं।

हम सब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं उनके दुःखी परिवार को शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हम सब आर्यगण अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—कैलाशचन्द पालीवाल

गुरुकुल कांगड़ी

"गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों से निवेदन है कि वह अपने पते गुरुकुल कांगड़ी को लिख भेजें। आर्य विद्या सभा में गुरुकुल कांगड़ी के २ स्नातक सदस्य होते हैं। सभा के आदेशानुसार इसके लिये आवश्यक है कि सब स्नातक महोदय अपने पते लिख भेजें।

धर्म्मपाल विद्यालंकार
स० मुख्याधिष्ठाता

मेरठ

दिनांक २६ व २७ अक्टूबर सन् ६४ को भारत के ऐतिहासिक नगर मेरठ में प्रान्तीय आर्य महिला सम्मेलन केन्द्रीय आर्य समिति के विशाल मण्डप में श्रीमती विद्यावती जी आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून की अध्यक्षता में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में लगभग १५०० स्त्रियों के अतिरिक्त पुरुषों ने भी भाग लिया। मेरठ के बाहर की ५० से अधिक बहनें प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित हुई।

इस सम्मेलन में आर्य जगत् की प्रसिद्ध व विदुषी बहिनों ने सहयोग दिया। मेरठ नगर की विभिन्न आर्य समाजों की महिलाओं ने इसे सफल बनाने के लिये अनथक परिश्रम किया। सम्मेलन की संयोजिका श्रीमती शकुन्तला गोयल थीं जिनके विशेष परिश्रम से यह सम्मेलन सफल हुआ। आर्य स्त्री समाजों का प्रान्त में सुदृढ़ संगठन बनाने, पाश्चात्य वेश, भूषा तथा फैशन का निराकरण करने, बालक बालिकाओं की शिक्षा में धार्मिक एवं नैतिक पाठ्य क्रम निर्धारित कराने, भ्रष्टाचार तथा दहेज प्रथा को निर्मूल करने सम्बन्धी प्रस्ताव इस सम्मेलन

में पारित किये गये।

निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुए।

१. बालक बालिकाओं की शिक्षा में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण को अनिवार्य बनाया जाय।

२. प्रान्त में आर्य स्त्री समाजों का संगठन दृढ़ बनाया जाय।

३. पाश्चात्य वेश भूषा तथा फैशन का निराकरण।

४. भ्रष्टाचार विरोध।

५. दहेज प्रथा का बहिष्कार।

फुलेरा

श्री पं० छोटेलाल की ३२ वीं जयन्ती सम्पन्न

सदैव की भांति इस वर्ष भी, गत १३ दिसम्बर ६४ को हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल भवन के पुस्तकालय कक्ष में मण्डल संस्थापक श्री पं० छोटेलाल जी शर्मा M. R. A S पुरातत्त्व विशारद (लंडन), व्याख्यान साहित्य भूषण की, ३२ वीं जयन्ती धूमधाम से मनाई गई।

श्री पं०छगनलाल शर्मा एम. ए. ने अध्यक्षता की। प्रातः काल वेद मन्त्रों से प्रार्थना और गीता पाठ हुआ। पश्चात् दोपहर में यज्ञ व प्रीति-भोज सम्पन्न हुआ।

तदनन्तर मध्याह्नोत्तर में २॥ बजे से ४॥ बजे तक, स्थानीय स्कूलों के छात्र-छात्राओं के मध्य अन्त्याक्षरी के जूनियर-सीनियर टूर्नामेंट हुए। श्री पं० छोटेलालात्मज, श्री पं० ओ३मृदत्त शर्मा गौड़ "विफल" ने जूनियर के लिए, "नई शील्ड" (चलित उपहार) और सीनियर के लिये, 'बड़ा कप' लाकर दिया।

राष्ट्र के अनन्य सेवक श्री पं० छोटेलाल जी के चित्र को अध्यक्ष ने जब सामूहिक श्रद्धांजलि का 'पुष्पहार' अर्पित किया तो बड़ी करतल ध्वनि हुई एवं श्री पं० छोटेलाल की जय जयकार हुई।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त के देहान्त पर अध्यक्ष जी का शोक प्रस्ताव सभा ने खड़े होकर पारित किया और दो मिनिट का मौन रक्खा।

इस प्रकार ३२ वीं श्री पं० छोटेलाल की जयन्ती का कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

आर्य वीर दल गाजियाबाद

आर्य वीर दल गाजियाबाद का १० वां वार्षिकोत्सव दिनांक ३ जनवरी १९६५ वार रविवार को सांय काल ४ बजे से आर्य समाज मन्दिर गाजियाबाद में श्री डा० मूलराज जी अरोड़ा की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिस में श्री सुख देव जी शास्त्री का ओजस्वी एवं प्रभावशाली भाषण हुआ। 'वर्तमान समय में आर्य वीर दल की आवश्यकता' विषय पर आर्य वीरों की भाषण प्रतियोगिता हुई तथा पुरस्कार वितरण किये गये।

वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री

आर्य समाज मौडल बस्ती

आर्य युवक परिषद् दिल्ली की सत्यार्थ-प्रकाश परीक्षाओं में इस वर्ष निम्न विद्यार्थी क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर पुरस्कार के भागी बनेः—

सत्यार्थ शास्त्री-श्री चरणलाल (नई दिल्ली)

सत्यार्थ विशारद-कु० मंजुला (रुड़की), श्री ज्ञान प्रकाश (दिल्ली),श्री जनार्दनप्रसाद (बेतिया)

सत्यार्थ-भूषण-कु० आशालता (रामपुर), श्री अशोककुमार (नाभा), कु० आशा रानी (रामपुर)

सत्यार्थ-रत्न-कु० उषा (रुड़की), श्री गुलाब चन्द (लाखेरी) तथा श्री प्रवीण (दिल्ली)।

देवव्रत धर्मेंदु
प्रधान

बिजनौर

समाचार यह है कि नजीबाबाद जि० बिजनौर

लक्ष्मी कत्था फैक्ट्री में १६-२० दिसम्बर सन १९६४ ई० को श्री सेवाराम जी संचालक कत्था फैक्ट्री के तत्वावधान में यजुर्वेद आंशिक यज्ञ अनेक विद्वानों के द्वारा समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। साथ ही सहभोज भी हरिजनों के साथ किया गया।

श्री बालकराम आर्य
अवैतनिक उपदेशक
आर्य प्रतिनिधि सभा (उत्तर प्रदेश)

आवश्यक सूचना

भारत में ईसाई लोग किस प्रकार प्रलोभन देकर गरीब जनता को ईसाई बना रहे हैं तथा आर्य समाज उनका किस प्रकार मुकाबला कर रहा है यह सब चित्र पर्दे पर फिल्म की भाति देखने के लिए इस पते पर जवाबी पत्र लिखें।

आशानन्द भजनीक
आर्य समाज-नया बांस
दिल्ली-६

इटारसी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार दिनांक २९-११ से ६-१२ तक विश्व ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन लाऊडस्पीकर द्वारा रोमन कैथोलिक ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां और प्रचार प्रणाली पर प्रकाश डाला गया। उनके धर्म और मिशनरियों की कार्यप्रणाली से सम्बन्धित साहित्य (हजारों ट्रैक्ट्स) हिन्दी और अंग्रेजी के जनता मे मुफ्त बांटे गए। १००) एक सौ रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा को प्रचार निरोधार्थ भेजे गये। इस कार्य में विजय आयल मिल के मालिकों और श्रीगोविन्दराम श्यामकुमार (पंजाबी फर्म) का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

दिनांक २८-१२-६४ को साप्ताहिक सतसंग के बाद वीर अर्जुन के यशस्वी सम्पादक श्री के. नरेन्द्रजी की माताजी के निधन पर शोक मनाया गया और श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं तथा ईश्वर से उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई।

इसी दिन २१-१२-६४ को राष्टकवि श्रीमान् मैथिलीशरण गुप्तजी के स्वर्गगामी हो जाने के लिये शोक सभा मनाया गया।

दिनांक २३-१२-६४ को आर्य कन्याशाला में बड़े ही समारोह के साथ स्वामी श्रद्धानन्दजी का बलिदान दिवस मनाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् पंडित इन्द्रदत्त शर्मा और चन्द्र भूषण शर्मा ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

चन्द्रभूषण शर्मा
उपमन्त्री

आर्यसमाज लश्कर (गवालियर)

अराष्ट्रीय तत्वों से भारतीय संस्कृतिकी रक्षा

सम्मेलन के प्रस्ताव

ऐसे सभी तत्व जो इस देश मे रहते हुए भी इस देश को अपनी मातृ भूमि नहीं मानते हैं उनसे सावधान रहने की अत्यन्त आवश्यकता है तथा प्रत्येक देश प्रेमी का यह कर्त्तव्य है कि उनके प्रति सजग रहे जिससे कि न केधल देश की रक्षा हो किन्तु भारतीय संस्कृति का संरक्षण हो सके। मुख्यतः विदेश से आये हुए ईसाई पादरी तथा बहाई लोग जो इस देश की गरीब और अनपढ़ जनता को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर षडयन्त्र चला रहे हैं, इनसे जनता का संरक्षण किया जाये जिससे भारतीय संस्कृति जीवित रहे।

अतः इस सम्मेलन का मत है कि जहां तक सम्भव हो ईसाई और बहाई स्कूलों मे बच्चे न पढ़ाये जावें और ऐसी सस्थाओं से सचेत रहें जो अराष्ट्रीयता के माध्यम हों। साथ ही शासन

से प्रार्थना है कि नियोगी कमीशन की रिपोर्ट पर शीघ्र ही उचित कार्यवाही करे।

मद्य निषेध

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने मदिरा पान को एक भयंकरतम दुर्व्यसन कहा तथा उसे हटाने का प्रयत्न किया। तत्पश्चात राष्ट्रपिता बापू ने जीवन भर मद्य निषेध आन्दोलन को अपने कार्यक्रम में महत्व पूर्ण स्थान दिया और आशा यह थी कि स्वतन्त्र भारत में गो हत्या तथा मदिरा पान समाप्त हो जावेगी। किन्तु लज्जा की बात है कि अभी तक शासन ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और ये दूषण पहिले से भी अधिक होते जा रहे हैं। इस सम्मेलन का यह अनुरोध है कि शीघ्र से शीघ्र मदिरा पान निषेध तथा गोवध बन्द करने के सम्बन्ध में आज्ञाएं शीघ्र प्रसारित की जावें, और प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि मद्य निषेध तथा गो-हत्या समाप्ति के सम्बन्ध में हर प्रकार का आन्दोलन उठाया जाये।

देश की खाद्य समस्या

आज खाद्य समस्या ने जो भीषण रूप धारण कर रहा है तथा जनता जिस प्रकार बढ़ती हुई महंगाई से पीड़ित है, उसको ज्वलन्त समस्या समझकर शासन प्राथमिकता दे। मुनाफाखोरी के विरुद्ध सभी सक्रिय कदम उठावें तथा उत्पादन वृद्धि के प्रति जन भावनाओं को प्रेरित किया जावे साथ ही वितरण का ठीक-ठीक प्रबन्ध हो। समाज के जो शोषक तत्व हैं उनको उचित दण्ड दिलाने में सभी प्रयत्नशील हों।

यह सम्मेलन उस अध्यादेश का जो खाद्य पदार्थों में गोल-माल करने वालों को कठोर दण्ड देने के लिए जारी किया है पूर्ण रूपेण समर्थन करता है और शासन से प्रार्थना करता है कि इससे भी अधिक कठोर दण्ड की व्यवस्था का विधेयक स्वीकार करें।

जनता भी प्रयत्न करे कि मुनाफाखोरी तथा रिश्वत खोरों को उचित दण्ड दिलाने में सहायक हो।

यह सम्मेलन यह भी अनुभव करता है कि उपभोग की हर वस्तु उचित मूल्य पर उपलब्ध हो सके।

(पृष्ठ ७ का शेष)

जीवन पद्धति को त्यागवाद की पद्धति का रूप देने और संसदीय शासन पद्धति को भारतीय आदर्शों के अनुसार राजतंत्र का रूप देने से ही हम अपने गणतंत्र को वरदान बना सकते हैं। ऐसे राजतंत्र का जिसमें लोगों को भलाई करना सुगम और बुराई करना कठिन हो, जिसमें अपराधी अपराध के दण्ड से बच न सके। जो प्रजा में भय मिश्रित प्रेम उत्पन्न कर सके और जो एक मात्र प्रजा के हित के लिए हो। शासन का स्वरूप गौण और सर्वोत्तम प्रशासन मुख्य तत्व होता है। जिस पद्धति से सर्वोत्तम प्रशासन प्राप्त हो सके उसका अवलम्बन करने में भूल और देरी न होनी चाहिए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पृष्ठ ८ का शेष)

समय और उसकी पहिचान है।

आर्यजन जहां महर्षि की बोध रात्रि मनावें वहां इस तथ्य का ध्यान रखें। महर्षि का बोध संसारको बोधदेनेवाला था। अतःअब हम उनके अनुयायी प्रयत्न शील रहें कि इस महान् बोध के भागी बनकर संसार को उनके बोध का भाग प्रदान कर सकें। ऐसे पवित्र अवसर पर हमें महर्षि के जीवन और कार्यों से विशेष शिक्षा लेनी चाहिए और वेद के रहस्य को जानने और दूसरों तक पहुंचाने के लिए व्रत लेना चाहिए।

भगवान् हम सबका मार्ग प्रशस्त करें।

महर्षि दयानन्द के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में भारी रियायत

सेवा में,

श्री मन्त्री जी,

आर्य समाज .. . .

श्रीमन्नमस्ते !

इस सभा ने वैदिक धर्म के साहित्य के प्रचारार्थ अपना बिक्री का पुस्तकालय स्थापित किया हुआ है। इसमें लगभग ७५ हजार रुपये की लागत की पुस्तकें हैं।

सभा की प्रबल इच्छा है कि आर्य समाजे आर्य पर्वो को ससमारोह मनाएं और उन पर्वों पर जनता मे छोटे छोटे ट्रैक्ट हजारों की संख्या में प्रचारार्थ निःशुल्क वितरण करे। सभा के पास इस प्रकार के कुछेक ट्रैक्ट है जिनको आप ऐसे अवसरों पर उपयोग में ला सकते हैं।

इस वर्ष सभा ने दयानन्दबोधोत्सव (शिवरात्रि) के उपलक्ष्य मे अपनी पुस्तकों को भारी संख्या मे निकालने का निश्चय किया है। यतः सभा ने अपने प्रकाशनों पर निम्न प्रकार कमीशन देना स्वीकार किया है,—

१०) तक २० प्रतिशत, १०) से २५) तक २५ प्रतिशत, २५) से अधिक पर ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत।

अतः अपनी समाज की ओर से इस सुअवसर पर शीघ्र से शीघ्र आर्य साहित्य भारी संख्या मे मंगाएं।

यह रियायत ७-२-६५ से प्रारम्भ होकर ३०-४-६५ तक चलेगी।

रामगोपाल

मन्त्री

धर्म प्रेमी स्वाध्याय शील नर-नारियों के लिये शुभ सूचना

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

अब तक लगभग १२ संस्करणों में निकली हुई अत्यन्त लोक प्रिय

कर्त्तव्य दर्पण

आर्य समाज के मन्तव्यों, उद्देश्यों, कार्यों, धार्मिक अनुष्ठानों, पर्वों तथा व्यक्ति और समाज को ऊंचा उठाने वाली मूल्यवान सामग्री से परिपूर्ण

का नया सस्ता संस्करण साईज $\frac{20 \times 30}{32}$ पृष्ठ सं० ३८४ सजिल्द

प्रचारार्थ मूल्य ५० पैसे प्रति नैट

आर्य समाज का इतिहास (सजिल्द)

श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति कृत

प्रथम भाग	मूल्य ४)	रियायती मल्य ३)
द्वितीय भाग	मूल्य ५)	रियायती मूल्य ३)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१ ऋग्वेद संहिता सजिल्द	१०)
२ अथर्ववेद संहिता सजिल्द	८)
३. यजुर्वेद संहिता सजिल्द	४)
४. सामवेद संहिता सजिल्द	३)
५ सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७ संस्कार विधि	१।)
८. आर्याभिविनय	।॥)
९. कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश	३।)
१० मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।≈)
११. पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१२. वेदविरुद्ध मत खंडन	)३५
१३. सत्य धर्म विचार	)०५
१४. शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण	)२५
१५. भ्रमोच्छेदन	)२०
१६. काशी शास्त्रार्थ	)२०
१७. भ्रान्ति निवारण	)२५
१८. सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास	)२५
१९. विवाह पद्धति	)५०
२०. गोकरुणानिधि	)१६
२१ आर्य वीर दल बैजज	)३१ जोड़ी
२२. आर्य समाज प्रवेश पत्र	१) सै०
२३. Life of Swami Dayanand (by Harvilash Sharda)	१२

ओ३म् ध्वज नैट मूल्य पर

२४. ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०॥ इंच मूल्य २)५०
२५. ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच ,, ४)२५
२६. ओ३म् ध्वज४५ इंच × ६७॥ इंच ,, ६)५०

निम्न प्रकाशन २० नैट प्रतिशत कमीशन पर दिए जायेंगे।

१. सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	३)५०
२. वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)	७)
३. शिक्षण तरंगिणी ,, ,,	५)
४. मसाबीहुल इस्लाम (उर्दू) ,, मूल्य	५)
५ Wisdom of the Rishis (GuruduttaM.A.)	४)

निम्न पुस्तकों पर इस प्रकार कमीशन दिया जायगा

१०) तक की पुस्तकों पर २०प्रतिशत, १०) से २५) तक२५ प्रतिशत, २५) से अधिक पर ३३⅓ प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय	२)
२ वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४. अभ्यास और वैराग्य	१)६५
५. बाल संस्कृति सुधा	)५०
६. वैदिक ईशवन्दना	।≈)॥
७. वैदिक योगामृत	॥≈)
८. दयानन्द दिग्दर्शन	।॥)
९. वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	।॥)
१०. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
निज जीवनवृत्त व० का सजिल्द	)७५
११. बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१२. बालजीवन सोपान	१।)
१३. छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
१४. दार्शनिक आध्यात्म तत्व	१॥)
१५. वेदान्त दर्शन (संस्कृत में)	३)
१६. वेदान्त दर्शन भाषा भाष्य	३)५०
१७. वैदिक वन्दन	५)
१८. भ्रम निवारण	)३०
१९. वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द	२)
२०. वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द	२)५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१ कर्मव्यवस्था	४)
२ दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।-)
३. चरित्र निर्माण	१)१५
४ ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
५ .वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
६. दौलत की मार	।)
७. अनुशासन का विधान	।)
८ धर्म और धन	।)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१. योग रहस्य	१।)
२. मृत्यु और परलोक	१)
३. विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥≈)

४. उपनिषदें :—
ईश ।≈) केन ।।) कठ ।।) प्रश्न ।≈) मुण्डक ।≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)
५. बृहदारण्यकोपनिषद्

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

१ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१॥)
आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध	१॥)
२. वैदिक संस्कृति	१।)
३ मुक्ति से पुनरावृत्ति	।≈)
४. आर्यसमाज और सनातनधर्म	।≈)
५. आर्यसमाज की नीति	।)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

१ दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
२. वैदिक युग और आदि मानव	४)
३ वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

१. आर्य जीवन गृहस्थ धर्म	॥=)
२ कथा माला	॥)
३ सन्तति निग्रह	१।)
४. नया संसार	≡)
५. आदर्श गुरु शिष्य	।)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

१. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार	१।)
२ भक्ति कुसुमाञ्जलि	॥)
३ हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि	।-)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

१. आर्यसमाज के महाधन	२॥)
२ वेद की इयत्ता	१॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

१ धर्म और उसकी आवश्यकता	१)
२. वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप	१॥)
३. इजहारे हकीकत (उर्दू में)	॥≈)
४. सत्य निर्णय	१॥)

पं मदनमोहन विद्यासागर कृत

१. जन कल्याण का मूल मन्त्र	॥)
२. संस्कार महत्व	॥)
३. वेदों की अन्त:साक्षी का महत्व	॥≈)
४. आर्य स्तोत्र	॥)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

१. वेद संदेश	)७५
२ वैदिक सूक्ति सुधा	)३०
३. दयानन्द वचनामृत	)३०

श्री पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

१. गीता विमर्श	।॥)
२. गीता समीक्षा	१)
३. गीता की पृष्ठ भूमि	)४०
४. ऋषि दयानन्द और गीता	)१५
५. आर्यसमाज का नवनिर्माण	)१२

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी कृत

१, कांग्रेस का सिर दर्द	॥)
२. आर्य समाज और साम्प्रदायिकता	।-)
३. आर्य वीर दल शिक्षण शिविर	।≈)
४. आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना	≶)
५. आर्यवीरदल लेख माला	१॥)

अन्य विद्वानों कृत

१. विरजानन्द प्रकाश (पं. भीमसेन शास्त्री)	२)
२. स्वराज्य दर्शन (श्रीपं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित)	१)
३. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	॥)
४. भूमिका प्रकाश (संस्कृत में) (पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री)	१॥)
५. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द)	।॥)
६. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (कृष्णचन्द्र विरमानी)	१॥)
७. भजन भास्कर (संग्रहकर्त्ता डा०हरिशंकर शर्मा कविरत्न)	१।॥)
८. सनातन शुद्धिशास्त्र आर्यों का चक्रवर्ती राज्य	२)
९. आर्य डायरेक्टरी (पुरानी)	१।)
१०. सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण-अजिल्द	२)
११. आर्य पर्व पद्धति (प० भवानीप्रसाद कृत)	१।)
१२. वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त)	)३७
१३. सन्ध्या पद्धति	)१२
१४ सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास	)७५
१५. सार्वदेशिक सभा के निर्णय	)४५
१६. आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०
१७. आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण	१)
१८ आर्यसमाज का परिचय	१)
१९ साम संगीत	)५०
२०. उत्तरा खंड के बन पर्वतों में ऋषि दयानन्द	अजिल्द)६२ सजिल्द)७५
२१. भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप (श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, सजिल्द मूल्य २)	
२२. दस अवतारों की कल्पना कैसे ? (श्री हंसराज जी रिसर्च स्कालर)	१)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

१. ईसाई षड्यन्त्र	।)
२. ईसाई पादरी उत्तर दे	)०३

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

१. आर्य समाज के मन्तव्य)१२
२. शंकासमाधान)०६
३. पूजा किसकी)०४
४. आर्यसमाज)०५
५. ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा)०६
६. गोहत्या क्यों ?)१२
७. चमड़े के लिए गोवध)१८
८. मांसाहार घोर पाप)१५
९. दशनियम व्याख्या)०९
१०. तीर्थ और मोक्ष)०९
११. ग्रहण और दान)०९
१२. भारतवर्ष में जाति भेद)०९
१३. वैदिक राष्ट्र धर्म)२०
१४. आर्य समाज के नियम उपनियम)१०
१५. प्रजापालन)०५
१६. नारायणस्वामीजी की संक्षिप्त जीवनी)०६
१७. सत्यार्थप्रकाश की रक्षा मे)०६
१८. मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए)०६
१९. भारत का एक ऋषि)१२
२०. कैथोलिक चर्च क्या है ?)१०
२१. गोरक्षा गान)०३
२२. राजनैतिक षड्यन्त्र)०५ बढ़िया संस्करण)१०
२३. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)०३
२४. स्वामी दयानन्द और गोरक्षा)०६
२५. साप्ताहिक सत्संगों का २ घंटे का कार्यक्रम)१०
२६. अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार एवं मास—शब्द विवेचन)२०
२७. सन्ध्या पद्धति)१२
२८. मद्य निषेध की आवश्यकता)०८
२९. वेद और गोमेध)१२

ENGLISH PUBLICATIONS

(1) Introduction to the Commentary on Vedas. 2-50
(2) Kenopanishat (Translation by Pt. Ganga Prasad ji M. A. Rtd Chief Judge) 0-25
(3) Kathopanishat (Pt. Ganga Prasad M. A. Rtd. Chief Judge) 1-25
(4) The Universality of the Satyarth Prakash 0-06
(5) Punishment Prescribed for The Unbelievers in the Quran 0-19
(6) A Case of Satyarth Prakash in Sind (S. Chandra) 1-50
(7) In Defence of Satyarth Prakash (Prof. Sudhakar M. A.) 0-12
(8) Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) 0-50
(9) Political Science Bound 2-50
(10) Elementary Teachings of Hinduism (Ganga Prasad Upadhyaya M A) 0-50
(11) Life after Death ,, ,, 1-25
(12) Vedic Viwaha Sanskar Mantra 0-37
(13) Agnihotra (Dr Satya Prakash) 2-50
(14) Daily Prayer of an Arya (Shri Narain Swami) 0-50
(15) The Constitution of Arya Samaj 0-20
(16) Crucifixion by an Eye Witness 1-00
(17) Principles of Arya Samaj (Chamu Pati M. A) 1-50
(18) Science in the Vedas (by Hans Raj ji) 1.75

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

नोट: - (१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से आना चाहिये।
(४) जिन पुस्तकों का नैट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रकांड विद्वान् श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की नवीनतम कृति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन

वैदिक-युग और आदि मानव

इस पुस्तक में 'वैदिक एज' तथा इस प्रकार की अब तक देशीय और विदेशीय विद्वानों द्वारा लिखी गई विविध पुस्तकों की युक्तियों, तर्कों और मान्यताओं का निराकरण कर प्रचुर अनुसन्धान पूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है।

(१) काल के आकलन की मिथ्या कल्पना
(२) हिम, कांस्य आदि युगों की धारणा
(३) विकासवाद के आधार
(४) भाषा-विज्ञान और उसपर आधारित तर्क
(५) भूगर्भशास्त्र और उस पर आधारित तर्क
(६) वेद का विभिन्न समयों में बनना और वेदों से पूर्व भाषा-संस्कृति, धर्म का संसार में होना।
(७) उप जातिवाद (Race movement)
(८) विदेशी भाषा के शब्दों का वेद में होना
(९) भारत में अथवा धरा पर आर्यों से पूर्व आदिवासी का होना
(१०) मोहेंजो-दारो आदि की साक्षियां
(११) अन्य ऐसी मान्यताएं

इन उपर्युक्त सभी मान्यताओं का खण्डन और निराकरण कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के तत्सम्बन्धी विचारों का पूर्ण मण्डन किया गया है। वस्तुतः इस दिशा में यह प्रस्तुत पुस्तक एक नवीन अपूर्व देन है। प्रत्येक आर्यसमाज, संस्था और आर्य को इसे मंगाकर अवश्य पढ़ना और इसका संग्रह करना चाहिये। पुस्तक का मूल्य ५) है। छपाई, सफाई, गेटअप आदि बड़ा भव्य है।

इससे पूर्व श्री आचार्य जी की २ अपूर्व पुस्तकें सभा द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :—

वैदिक-विज्ञान-विमर्श

इस पुस्तक में महामहोपाध्याय श्री पण्डित गिरिधर शर्मा द्वारा लिखित "वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति" पुस्तक में महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य पर किये गये आक्षेपों का विद्वत्तापूर्ण समुचित उत्तर दिया गया है तथा अवतारवाद, रासलीला मृतक श्राद्ध आदि को वैदिक एवं वैज्ञानिक सिद्ध करने के लेखक के प्रयत्न का युक्तियुक्त निराकरण किया गया है। लागत मात्र मू० ७५ पैसे

"दयानन्द सिद्धान्तप्रकाश" पौराणिक ग्रन्थ "दयानन्द रहस्य" का खण्डन

पौराणिक उपदेशक रामचन्द्र वक्ता गाजियाबाद (मेरठ) के नाम से 'दयानन्द रहस्य'' नामक एक पुस्तक प्रचारित की गई है, जिसमें महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व, उनकी विद्वत्ता, उनके सिद्धान्तों, उनके ग्रन्थों और आर्य समाज पर अनर्गल, मिथ्या और भ्रमजनक आक्षेप किये गये हैं। पौराणिकों को अपने इस ग्रन्थ पर बड़ा गर्व है। सार्वदेशिक सभा की विशेष प्रार्थना पर श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने जिन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा पुरस्कृत 'वैदिक ज्योति' आदि कई मूल्यवान् ग्रन्थ देकर आर्यसमाज के साहित्य-भण्डार को समृद्ध किया है, इस पुस्तक का उत्तर लिखा है, जिसमें आक्षेपों का युक्ति और प्रमाणों से खण्डन किया गया है।

पुस्तक में लगभग ३०० पृष्ठ हैं। बढ़िया कागज और छपाई. मू० २।) है।

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

आर्य जाति को नवीन सन्देश

त्याग ! तप !! बलिदान !!!

"सार्वदेशिक" मासिक पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
विविध विषय विभूषित सचित्र मासिक पत्र

य दि आ प

( ) वैदिक [illegible] के समस्त [illegible] प्रतिष्ठित आर्य [illegible] पढ़ना चाहते हैं

(२) देश के भिन्न [illegible] मासिक [illegible] चाहते हैं

( ) भूमण्डल की [illegible] चाहते हैं

(४) देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर में [illegible] आर्यसमाज की [illegible] कितकारी संस्थाओं का परिचय प्राप्त करना चाहते [illegible]

तो

आप [illegible] पते पर पत्र डालकर सचित्र सार्वदेशिक के ग्राहक [illegible]

विज्ञापन का सर्वोत्तम साधन

भारतवर्ष से वार्षिक मूल्य ६) विदेशों से ८) या १२ शिलिंग

रामगोपाल मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान
नई दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली ७में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १ से प्रकाशित ।

॥ ओ३म् ॥

* कृण्वन्तो विश्वमार्यम् *

सार्वदेशिक

+: दयानन्द ऋषिराज :+

(डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार, एम ए डी. लिट्, अजमेर)

समय था जब यह भारतवर्ष, बना भूमण्डल का सिरमौर।
अनुपम अद्भुत था उत्कर्ष, न समता का था कोई और।
गरजता गौरव-गरिमा गान, गगन मण्डल में गुरुतर ज्ञान।
मान महिमा में मुख्य महान्, प्रवर प्रज्ञों में पूज्य प्रधान॥१॥

विश्व को विद्या बुद्धि विवेक, दान करता था बन आचार्य।
अनोखा अतुल अकेल एक, रहा जगती में जिसका कार्य॥
हुआ क्यों भारत जगत् प्रसिद्ध, विश्व में फैला जिसका नाम?
जगद्गुरु बना किस तरह सिद्ध, विशद विद्याबल, धी धनधाम?।२।

सकल वैभव का कारण एक, किया जिसने भास्वत भूखण्ड।
हुए भारत में रत्न अनेक, प्रखरतम जिनका तेज प्रचण्ड॥
उन्हीं रत्नों में "शंकर मूल", बना जो दयानन्द ऋषिराज।
रहा जो सदा वेद अनुकूल, सजाया जिसने श्रुति का साज॥३॥

वेद विद्या वारिधि के बीच, विन्ध्यवत् बढ़ा विलोडन हेतु।
रत्न ला धरे अनेकों खींच, बना अध्ययन साधना सेतु॥
ब्रह्मर्षि वर वैदिक वागीश, अनूपम अद्वितीय असमान।
झुके जिसके सम्मुख शतशीश, पराविद्या में परम प्रमान॥४॥

धन्य, "सत्यार्थ" विधाता, धन्य, वेद के वर व्याख्याता धन्य!
निगम आगम के ज्ञाता धन्य, अगम श्रुति के उद्गाता धन्य!
भव्य भारत के भर्ता धन्य, सत्य साहित्य समर्थक धन्य!
राष्ट्र-स्वातन्त्र्य सुकर्ता धन्य, पुण्य पीयूष प्रवर्तक धन्य!॥५॥

विश्व में जब तक 'सूर्य' प्रकाश, गगन में जब तक उडुगण राज।
भूमि है जब तक है आकाश, सृष्टि का जब तक सारा साज॥
रहेगा तब तक उसका नाम, बनाया जिसने आर्य समाज।
अमर है उसकी कीर्ति ललाम, वही था "दयानन्द ऋषिराज"॥६॥

वार्षिक मूल्य ६)	सृष्टिसम्वत्	दयानन्दाब्द	विदेश से वार्षिक ८ या १२ शि०
वर्ष ४१	१९७२९४९०६५	१४० मार्च १९६५	फाल्गुन २०२१ अंक १

-: विषय सूची :-

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीनतम प्रकाशन

वेद सन्देश—यह पुस्तक वेदों ० चुने हुए ३०० मन्त्रों का अर्थ सहित उत्कृष्ट संग्रह है ! विषयों का चुनाव बहुत अच्छा है । मूल्य ७५ पैसे ।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक में वेदों की ४०० सूक्तियां अर्थ सहित प्रस्तुत की गई हैं इन सूक्तियों को पढ़ने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लड़कों और लड़कियों का अमित लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है । मूल्य ३० पैसा ।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक में विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनों का संग्रह उपस्थित किया गया है । मूल्य ३० पैसा ।

❀ सम्पादक
रामगोपाल शाल वाले सभा मन्त्री

❀ सहायक सम्पादक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७४७७१

❀ मुद्रक
सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली



सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमर हुतात्मा
रामप्रसाद 'बिस्मिल'
आर्यसमाज की देन थे

सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव

"देव-मन्दिर में स्तुति पूजा करने की प्रवृत्ति देखकर श्रीयुत मुंशी इन्द्रजीत (शाहजहांपुर) जी ने मुझे सन्ध्या करने का उपदेश दिया। आप उसी मन्दिर में रहने वाले किसी महाशय के पास आया करते थे। मैंने जानना चाहा कि सन्ध्या क्या वस्तु है? मुंशी जी ने आर्य समाज सम्बन्धी कुछ उपदेश दिए। **इसके बाद मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे तख्ता ही पलट गया। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नवीन पृष्ठ खोल दिया।"**

परमात्मा की पवित्र वाणी 'वेदवाणी' का अनुपम घोष

"आज १६ दिसम्बर १६२७ ई० को ये पंक्तियां लिख रहा हूँ जब कि १६ दिसम्बर को ६॥ बजे प्रातःकाल इस शरीर को फांसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी है अतएव नियत समय पर यह लीला संवरण करनी ही होगी। यह सर्व शक्तिमान प्रभु की लीला है। सब कार्य उसी की इच्छानुसार होते हैं। जब तक कर्म क्षय नहीं होता आत्मा को जन्म-मरण के बन्धन में पड़ना ही होता है।

अपने लिए मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर नवीन शक्तियों सहित अति शीघ्र ही पुनः भारत में जन्म लूंगा। मेरा जन्म-जन्मान्तर यही उद्देश्य रहेगा कि सारे संसार में जनतन्त्र की स्थापना हो।

परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे **ताकि मैं उसकी पवित्र वाणी 'वेदवाणी' का अनुपम घोष मनुष्य मात्र के कानों तक पहुंचाने में समर्थ हो सकूं।"**

— (आत्म कथा)

आर्य समाज न छोड़ा, घर छोड़ दिया

"सनातनियों और आर्यों के मध्य शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज की ओर से पंडित अखिलानन्द जी ने शास्त्रार्थ किया जो संस्कृत में हुआ। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा. मेरे कामों को देख कर मुहल्ले वालों ने पिताजी से मेरी शिकायत की। पिता जी ने मुझ से कहा कि आर्य समाजी हार गए। अब तुम आर्यसमाज से अपना नाम कटवा दो। मैंने पिता जी से कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्त सार्वभौम हैं। उन्हें कौन हरा सकता है। पिताजी जिद पकड़ गये कि आर्यसमाज से त्याग पत्र न दोगे तो मैं 'तुम्हें रात को सोते समय मार दूंगा, या तो आर्य समाज से त्याग पत्र दो या घर छोड़ दो।" मैंने भी विचारा कि पिताजी का क्रोध अधिक चढ़ गया और उन्होंने मुझे कोई वस्तु ऐसी दे मारी कि जिससे बुरा परिणाम हुआ तो अच्छा न होगा। अतः घर त्याग देना ही उचित है। मैं केवल एक कमीज पहने खड़ा था और पाजामा उतार कर धोती पहन रहा था। पाजामे के नीचे लंगोट बंधा था। पिता जी ने हाथ से धोती छीन ली और कहा घर से निकल। मुझे भी क्रोध आ गया। मैं पिताजी के पैर छूकर गृह त्यागकर चला गया।

बहिन के विवाह में सम्मिलित न हुआ

मेरी माता मेरे धर्म कार्यों में तथा शिक्षादि में बड़ी सहायता करती थीं। वे प्रात: ४ बजे ही मुझे जगा दिया करती थीं। मैं नित्य नियम से हवन भी किया करता था। मेरी छोटी बहिन का विवाह करने के लिए माता जी तथा पिताजी ग्वालियर गये। वार्षिक परीक्षा समाप्त करके मैं भी बहिन के विवाह में सम्मिलित होने के लिये गया। बारात आ चुकी थी। मुझे ग्राम के बाहर ही मालूम हो गया कि बारातमें वेश्या आई है। मैं घर न गया और न विवाहमें सम्मिलित ही हुआ।

मैं सत्य का आचरण करता था

१८ वर्ष की आयु तक मैं आर्य समाज की वेदी पर न चढ़ा था। मैं दृढ़ सत्य वक्ता बन गया था। एक बार रेल में तीसरे दर्जे का टिकट खरीद कर इन्टर क्लास में दूसरे साथियों के साथ रेल में सफर किया। इस पाप से मुझे बड़ा खेद हुआ। मैंने अपने साथियों से अनुरोध किया कि यह तो एक प्रकार की चोरी है। सब को मिलकर इण्टर क्लास का भाड़ा स्टेशन मास्टर को देना चाहिए। मेरे अनुरोध पर सब ने ऐसा ही किया।

एक बार मेरे पिता जी दीवानी में किसी पर दावा करके कह गये थे कि जो काम हो मुझ से करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिता जी के हस्ताक्षर वकालत नामे पर कर दूं। मैंने तुरन्त उत्तर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा। इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। वकील साहब ने बहुत कुछ समझाया कि मुकदमा खारिज हो जायगा किन्तु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा।

* ओ३म् *

सार्वदेशिक

वेद-व्याख्या

नयसीद्वति द्विषः कृणोऽयुक्थशंमिनः।

नृभिः सुवीर उच्यसे ॥ ऋग्वेद ६ । ४५ । ६ ॥

विनय—'सुवीर'—सर्वश्रेष्ठ वीर किसे कहना चाहिए? अन्त में तो प्रत्येक ही गुण की पराकाष्ठा भगवान् में है, परिपूर्ण वीरता का निवासी भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का निवास भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का अनुकरण करने वाले मनुष्य, नर लोग, सच्चे पुरुष उन भगवान् को ही 'सुवीर' नाम से पुकारते हैं। पर उनकी वीरता कैसी है? अज्ञानी लोग समझते हैं कि अपने शत्रु, द्वेषी का नुकसान पहुंचाने मे सफल हो जाना ही बहादुरी है। यह निरा अज्ञान है। क्रोध के वश मे आ जाना तो हार जाना है। क्रोधवश होकर मनुष्य केवल अपने को विषयुक्त करता है और जलाता है। एवं क्रोधी अपने शत्रु का नाश क्या करेगा वह तो अपना पहिले कर लेता है। ज्यों-ज्यों हम अपने द्वेषी के लिए अनिष्ट-चिन्तन करते हैं, त्यों त्यों उसमे हमारे प्रति द्वेष और बढ़ता जाता है, उसका द्वेष उसका शत्रुपन बढ़ता जाता है। उसे हानि पहुँचा लेने पर, उसके शरीर पर चोट दे लेने पर, यहां तक कि उसे मार डालने तक पर भी उसकी शत्रुता नष्ट नहीं होती, वह तो और बढ़ती जाती है। शत्रु के शरीर का, धन का, मान का एवं उसकी अन्य सब चीजों का हम बेशक नाश करने में सफल हो जाएं पर उतना ही उतना वह शत्रु (असली शत्रु) बढ़ता जाता है, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। यह क्या हुआ? अतः वीरता (परमात्म देव से अनुकरणीय सच्ची वीरता) इसमें है कि हम उसकी बाहरी किसी चीज का नाश न करें (और क्रोध से हम अपना भी नाश न करें) किन्तु किसी तरह उसका—उसकी शत्रुता का नाश कर दें। उसके अन्दर हम ऐसे घुसें कि वह हमारा शत्रु न रहे, वह मित्र हो जाय। बहादुरी इसमे है कि हम क्रोध को जीत कर, धैर्य रख कर अपने द्वेषी के द्वेष भाव को बिल्कुल निकाल डाले, ऐसा निकाल डाले कि वह हमारी निन्दा करना तो दूर रहे वह हमारी प्रशंसा के गीत गाने लगे। यह है शत्रु पर विजय पाना। दर असलमेंऐसी विजय पाने केलिए अपने में बड़ा भारी बल चाहिए-अपनेमें बलिदानकी न खतम होने वाली शक्ति चाहिए, बड़ा धैर्य चाहिये, बड़ी भारी वीरता चाहिए। हम भी परिमित अर्थ में बोला करते हैं कि वीर वह है जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करे, पर हमें तो अपरिमित अर्थ में उस भगवान् की सुवीरता का आदर्श अपने सामने रखना चाहिए जिनके विषय में भक्त लोग समझते कि आज संसार में जो लोग बिल्कुल उल्टे रास्ते जा रहे हैं वे भी एक दिन लौट कर भगवद् भक्त—भगवान् के प्रशंसक—बनेंगे और भक्त होंगे। भगवान् की उस अपरिमित वीरता मे से, हृदय-परिवर्तन करने की उनकी इस अनन्त शक्ति में से उनके अनन्त धैर्य में से हम भी कुछ ले लेवें, हम भी वीर बनें। —(वैदिक विनय)

सम्पादकीय

दयानन्द बोधरात्रि

१ मार्च को हम दयानन्द बोध दिवस मनायेंगे। शिवरात्रि की रात भारत वासियों के लिए सौभाग्य की रात थी। इस रात्रि के प्रभाव सेएक बार ज्वलन्त दैवी प्रकाश हुआ जो न केवल भारत का ही अपितु सारे संसार के अन्धकार और दुःख के नाश करने का कारण बना।

इस बोध रात्रि ने भारत तथा विश्व मे महर्षि दयानन्द द्वारा जो जागृति उत्पन्न की वह किसी से छिपी नहीं है। यह जागृति सत्य की जागृति थी। इस रात्रि ने सब से बड़ा पाठ यह पढ़ाया कि अन्धविश्वासों को छोड़ कर अपनी बुद्धि और ज्ञान से प्रत्येक नर नारी को काम करना चाहिए। यदि समस्त देशवासी तथा संसार के लोग यह निश्चय कर लेवें कि जो बात सत्य है उसी को हम मानेंगे और जो बात बुद्धि, ज्ञान और सृष्टि नियमों के विपरीत है उसको नहीं मानेंगे तो संसार का दुःख और वैमनस्य बहुत कम हो जाय।

महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक समझा कि सब के धार्मिक विचार एक से होवें और वे विचार सृष्टि नियम, बुद्धि तथा वेद ज्ञान के अनुकूल होवे। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि किसी जाति की राजनैतिक व्यवस्था, उसके धार्मिक विचार एवं पारस्परिक व्यवहार के गठन पर निर्भर रहती है। जिस जाति के धार्मिक विचार ऊंचे हों, जिसका आचार-विचार उत्तम और जिसके पारस्परिक व्यवहार में सचाई और प्रेम हो उसकी राजनैतिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ होगी और किसी अन्य जाति को उस पर राज करने का साहस न होगा। भारत को उन्च बनाने का उन्होंने आर्य समाज को साधन बनाया और उच्च बनाने के प्राग सभी साधनों का प्रचार किया।

स्वराज्य मिल जाने पर आर्य समाज को देश की राजनैतिक व्यवस्था को दृढ़ एवं उत्तम रखने के लिये लोगों के आचार-विचार और पारस्परिक व्यवहार को सही दिशा में बनाये रखने का विशेष काम करना है। महर्षि द्वारा प्रदर्शित वेद-मार्ग ही एक मात्र मार्ग है जो मानव मात्र को एक जगह एकत्र कर सकता है और एक दूसरे के वैमनस्य को दूर कर सकता है। ऐसे महान् गुरु की शिक्षा को कभी न भुलाना चाहिए और जिन लोगों के हृदय मे सत्य को जानने और परोपकार करने की लगन है उनको तो अनिवार्यतः स्वामी जी के जीवन और साहित्य का अध्ययन और मनन करना चाहिए।

शिव रात्रि की रात को हिन्दू लोग तो पवित्र मानते ही हैं परन्तु उन सब के तथा उन लोगों के लिए भी जो स्वामी जी को अपना शिक्षक मानते हैं यह आवश्यक है कि वे इस रात्रि को स्वामीजी महाराज के सिद्धान्तों पर विचार करें, सत्य और ईश्वर में आस्था रखते हुए आत्मा को बलवान् बनाएं और अन्ध विश्वास और असत्य की लहरों से बचें। इस दिन प्रत्येक आर्य को शान्त भाव से आत्म-निरीक्षण करके अपनी त्रुटियों को दूर करने और आर्य समाज की उन्नति में योग देने का संकल्प करना चाहिये।

आज देश और संसार को स्वामी दयानन्द जैसे महान् पुरुषों की आवश्यकता है जो समाज का ठीक मार्ग-प्रदर्शन करके उसे सुखधाम बना देवें।

धार्मिक और सामाजिक उत्थान के बिना

राजनैतिक उत्थान संभव नहीं होता। महर्षि की दिव्य दृष्टि ने इस तथ्य को भली भांति देख लिया था। तभी तो जब उनसे प्रश्न किया गया कि भारत का उद्धार किन उपायों से हो सकता है तो उन्होंने कहा था कि जबतक देश और समाज के लोगों का एक धर्म, एक भाषा, एक हानि-लाभ और सुख-दुःख की समान अनुभूति नहीं होती तब तक समाज की उन्नति और उसका योगक्षेम भली भांति सिद्ध नहीं हो सकता। वे सबसे बड़े समन्वयकारी थे। वे देश की राजनैतिक एकताके लिए विदेशी शासन का अन्त और स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहे। धार्मिक एकता के लिए वे भूमण्डल में वैदिक धर्म का प्रसार और प्रभुत्व देखना चाहते थे। इसी लिए उन्होंने संसार को वेदों की ओर चलने का आह्वान किया और मत-मतान्तरों पर प्रबल प्रहार किया। सामाजिक एकता के लिए उन्होंने कुरीतियों और विविध बुराइयों का खण्डन करके समाज सुधार का स्तुत्य कार्य किया।

सामाजिक एकता के मार्ग में जन्मना जात-पांत का बड़ा भयंकर रोड़ा है। इसके रहते सामाजिक और राजनैतिक अभ्युत्थान के कार्य में आशानुरूप प्रगति का होना सम्भव नहीं है। उन्होंने जात-पात की भावना को मिटाने और गुणकर्मानुसार मानव की योग्यता का निरूपण करने की भावना भरने और उसे मूर्त्तरूप देने में कोई प्रयत्न उठा न रखा। सांस्कृतिक सामाजिक और राजनैतिक एकता के लिए देश भरमें समान भाषा का प्रचलन अत्यावश्यक होता है इसके लिए उन्होंने आर्य भाषा के प्रचार और लोगों के आर्थिक अभ्युत्थान के लिए गोरक्षा पर विशेष बल दिया। यदि हमारे देश के कर्णधार तुष्टीकरण की दुर्नीति का अवलम्बन किये बिना आर्य भाषा हिन्दी के प्रचलन और गोहत्या निषेध के लिए कटिबद्ध हो जाते तो देश का अमित कल्याण होता और देश की एकता के सम्पादन का कार्य बड़ा सुगम हो जाता।

हमारे कर्णधारों के लिये अपनी भूलों का परिमार्जन करने का अब भी समय है। यदि वे दृढ़ नीति का अवलम्बन कर देश की एकता की साधक हिन्दी को समस्त देश की राजभाषा बनाए रखने के लिए कटिबद्ध हो जायें और विरोधी एवं अराजक तत्वों के समक्ष घुटने टेक नीति का त्याग कर दें तो देश की एकता का सम्पादन और स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी के स्वप्नों के भारत का निर्माण करने की दिशा में मूल्यवान योग और अपने नेतृत्व की वरिष्ठता का कुछ परिचय दे सकते हैं।

—रामगोपाल

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

भारत के दुःखों के शमन का उपाय

आजकल के विश्व-विद्यालय छात्रों को बेचलर की डिग्रियों के लिये तैयार करते हैं। छात्रों को ईसाई चर्च के संघों एवं मठों की सेवा के लिये तैयार करना इन डिग्रियों का वास्तविक एवं मूलभूत उद्देश्य था। यह महत्त्व पूर्ण तथ्य है कि पूर्व और पश्चिम दोनों ही विद्यार्थियों के ब्रह्मचर्य जीवन पर बल देते थे।

पश्चिम में ब्रह्मचारियों के पाठ्यक्रम का लक्ष्य उन्हें भिक्षु या उपदेशक बनाने की तैयारी पर केन्द्रित था। भारतीय ब्रह्मचर्य आश्रम विद्यार्थियों को मुख्यतः श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन व्यतीत में समर्थ बनाता था।

आज के पूर्व और पश्चिम के विश्वविद्यालय बेचलर्स के कोर्स तो नियत करते हैं परन्तु ब्रह्म-

चर्याश्रम के सयम एवं अनुशासन के जीवन पर बल नहीं देते।

भारत और लंका मे ब्रह्मचर्य का खंडन या इस प्रकार का सन्देह अब भी एक कलंक माना जाता है यद्यपि विश्वविद्यालय के छात्र इस कार्य को बहादुरी का कार्य समझकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं और यह उनके लिये एक फैशन सा बन गया है।

पश्चिम में जवान लड़के और लड़की की पारस्परिक भेंट का आनन्द लेने के विशेष आयोजनों को माता-पिता सामाजिक आवश्यकता मानने लग गये हैं

गर्भ निरोध के कृत्रिम प्रसाधनों और दवाइयों ने विवाह से पूर्व विद्यार्थियों के लिये काम वासना की तृप्ति सुगम बना दी है।

कामवासना का बलात् दमन स्वास्थ्य का विघातक है इस अनर्गत सिद्धांत के प्रचार ने रही सही कमी को पूरा कर दिया है। हमारे ऋषियों ने शरीर के स्वास्थ्य, उसकी कांति और मानसिक शक्ति के सम्पादन के लिये वीर्य की रक्षा आवश्यक कर्त्तव्य ठहराया है। इतना ही नहीं उन्होंने अमोघ वीर्यत्व को जीवन के ने परम श्रेष्ठ वरदान की संज्ञा प्रदान की है।

पश्चिम के विज्ञान-वेत्ताओं को उचित है कि वे कामवासना के दमन और कृत्रिम साधनों-के द्वारा गर्भ निरोध की हानियों पर गम्भीरता पूर्वक अनुसन्धान करें।

यह सौभाग्य की बात है कि कामवासना की उच्छृङ्खल तृप्ति और गर्भ निरोध की औषधियों के अधिकाधिक प्रयोग के दुष्परिणाम विकलाङ्ग बच्चों के जन्म के रूप में सामने आने लगे हैं और युग-युगान्तरों से प्रचलित ब्रह्मचर्य की सुनीति में परिवर्तन करने में विशेषज्ञ झिझकने लगे हैं। वे यह मानने के लिए विवश हो गए देख पड़ते हैं कि मानव जाति के बल-वीर्य और उसके बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास को सुरक्षित बनाने के लिए ब्रह्मचर्य के द्वारा काम वासना का दमन आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। वे इस शिक्षा की वरिष्ठता को भी अंगीकार करने लग गए है कि विद्यार्थी को अपनी वासना पर अंकुश रखने के लिए कोई यत्न उठा न रखना चाहिए क्योंकि काम वासना भोग से कभी शान्त नहीं होती।

यह ठीक है कि उद्देश्य को सामने रखे बिना इच्छाओं का दमन करना प्रभावशाली नहीं होता। यह प्रभावशाली तभी होना है जबकि मन उत्तम और वांछनीय कार्यों में व्यस्त रहे।

ब्रह्मचर्याश्रम का कठोर एवं संयत जीवन, बिताना एवं काम वासना पर अंकुश रखना निरुद्देश्य नहीं है। यह तो विवाह और गृहस्थ जीवन की तय्यारी ही है। काम वासना उद्देश्य विहीन नहीं होती।

शरीर में स्वतः सामंजस्य की सामर्थ्य होती है। उसमें पश्चिम के माता पिताओं की अपेक्षा अधिक बुद्धि होती है जो उत्तेजना को स्वयं ही स्वाभाविक रूप सेस्वास्थ्यप्रद ढंग से नियंत्रित कर देती है।

व्यक्तियों और राष्ट्रों के स्वास्थ्य के लिए काम वासना का दमन और वीर्य रक्षा एक अपरिहार्य आवश्यकता है।

युवकों और युवतियों को सुन्दरता बड़ी प्रिय होती है स्वास्थ्य ही सुन्दरता होती और यही आंखों की भाषा होती है। सुन्दरता आंखों में से झांकती है, चमकती और मुंह पर छाई रहती है। वही सुन्दरता सुन्दरता होती है जो देर तक स्थिर रहे और जिसे बाह्य सौन्दर्य प्रसाधन की आवश्यकता न हो।

मूर्ख व्यक्ति अपनी शक्ति, समय और धन को बनावटी सुन्दरता पर नष्ट करते हैं जिसका

अन्त तलाक, अदालत और जीवन भर के दुखों में होता है।

कामवासना की अन्धाधुन्ध तृप्ति से न केवल व्यक्तियों का ही अपितु राष्ट्रों का भी विनाश हो जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है।

स्वस्थ सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के निर्माण का वास्तविक उपाय ब्रह्मचर्य का परिपालन ही है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिनके आश्चर्यजनक शारीरिक बल, वैदिक प्रतिभा एवं महानता का मुख्यकारण ब्रह्मचर्य व्रत ही था इसी उपाय का संकेत किया और भारतके दुःखोंके शमनका यही सर्वोपरि उपाय बताया था।

भाषा विधेयक में संशोधन सहन न होगा

२३ फरवरी १९६५ को हिन्दी के समर्थकों ने जिसमें अनेक संसद सदस्य, विद्यार्थी, अध्यापक, प्राध्यापक, हिन्दी एवं सामाजिक संस्थानों के प्रतिनिधि तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित थे, प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री की कोठी के सामने मूक प्रदर्शन किया। ये लोग प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन देने गए थे। मान्य प्रधान मन्त्री की अनुपस्थिति में उनके निजी सचिव श्रीयुत ललितमोहन जी ने यह ज्ञापन प्राप्त किया। संसद् सदस्य श्रीयुत पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने यह ज्ञापन दिया। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शालवाले इस मूक प्रदर्शन में सम्मिलित थे। इस अवसर पर श्री सेठ गोविंद-दास जी, श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री, और श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रदर्शन-कारियों के समक्ष भाषण भी दिए। इस ज्ञापन की प्रतिलिपियां विभिन्न राज्यों के मुख्य मन्त्रियों को भी दी गई हैं। ज्ञापन इस प्रकार है :—

'राजभाषा' हिन्दी को भारत के संविधान में जो स्थान प्राप्त है उसके अनुसार २६ जनवरी १९६५ से उसे राजकाज में समुचित स्थान मिलना आवश्यक हो गया है। आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व संविधान सभा ने सर्वसम्मति से जो निर्णय किया था उसी को कार्यरूप में परिणत करने का यह अवसर है। किन्तु दक्षिण प्रदेश में—विशेषतः तामिलनाड में—हुए कुछ हिंसात्मक तथा राष्ट्र विरोधी उपद्रवों ने हिन्दी के सम्बन्ध में कुछ भ्रामक वातावरण उत्पन्न कर दिया है। अतः राजधानी के सभी वर्गों और कार्यक्षेत्रों के प्रतिनिधि नागरिक समवेत रूप से चाहते हैं कि :—

१—हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को पूरी तरह अक्षुण्ण रखा जाय।

२ भारत को अंग्रेजी भाषा की दासता से अविलम्ब मुक्त किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोई भी विकल्प देश की जनता को स्वीकार्य होगा।

३—हिन्दी भाषी प्रदेशों में समस्त प्रादेशिक एवं केन्द्रीय कार्यों के लिए हिन्दी को ही प्रयोग में लाया जाय। जो अहिन्दी भाषी प्रदेश केन्द्रीय कार्यों के लिए हिन्दी का प्रयोग करना चाहें उन्हें पूरी सुविधा प्रदान की जाय। हिन्दी का प्रयोग करने वाले प्रदेशों में अंग्रेजी के सहभाषा रूप को समाप्त कर दिया जाय।

४ यद्यपि राजभाषा विधेयक संविधान की भावना के विपरीत है किन्तु राष्ट्र विरोधी हिंसात्मक उत्पातों के दबाव में आकर यदि विधेयक में कोई भी संशोधन किया गया तो देश की जनता अब उसे सहन नहीं करेगी।

५—हिन्दी के साथ साथ सभी प्रादेशिक भाषाओं को समृद्ध और समुन्नत करने के लिए अधिक से अधिक धनराशि प्रदान की जाय।

६—केन्द्रीय लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी के साथ उन सभी भारतीय भाषाओं को भी बनाया जाय जो शिक्षा के

उच्च स्तर तक माध्यम रूप में स्वीकृत हो चुकी हैं। अहिन्दी भाषी प्रदेशों के नागरिकों को नौकरियों के सम्बन्ध में आश्वस्त करने के लिए यदि कोई और उपयुक्त पग उठाये जाने आवश्यक हों तो वे भी उठाये जावें।

७ राजभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय भारतीय संसद् द्वारा ही किया जाय।

हिन्दी हाराकीरी

मद्रास में अभी हाल में हिन्दी विरोधी आंदोलन के प्रसंग में आग लगाकर जल जाने की जो आत्महत्याएं की गई हैं उनका अमेरिका में बहुत प्रचार हुआ है। अमेरिका में इन दुर्घटनाओं पर बड़ा दुःख मनाया और इन्हें दुर्भाग्य पूर्ण बताया गया है। इस जटिल समस्या के समाधान के लिए भारत सरकार के प्रयत्नों के प्रति अमेरिका में बड़ी सहानुभूति पाई जाती है।

इस प्रकार की आत्महत्याओं पर जो दक्षिण वियतनाम में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा आरम्भ की गई आत्म हत्याओं से मिलती जुलती हैं, खेद तो प्रकट किया जा रहा है परन्तु उनके द्वारा जो राजनैतिक प्रदर्शन हुआ है उसको अत्यन्त निंदनीय बताया गया है।

अमेरिका के लोगों का विश्वास है कि दक्षिण वियतनाम में भी उनका औचित्य प्रतिपादित न हो सका था। भारत जैसे प्रजातंत्र समाज में तो इन आत्महत्याओं का औचित्य बहुत कम सिद्ध हो सकता है।

'न्यूयार्क टाइम्स' ने अपने सम्पादकीय लेख में कहा है कि भारत सरकार इस बात की व्यवस्था कर रही थी कि अहिंदी भाषा भाषी लोग सरकारी नौकरियों की दृष्टि से घाटे में न रहें।

इस हुल्लड़ बाजी का एक कारण द्रविडियन प्रोग्रैसिव पार्टी है जो भाषा के प्रश्न को प्रशासक कांग्रेस दल के विरुद्ध हथियार के रूप में प्रयुक्त कर रही है। दूसरा कारण हिंदुओं की यह पुरानी अधपरम्परा और मान्यता होसकती है कि कोई व्यक्ति अपने शत्रु को निकृष्टतम जो दण्ड दे सकता है वह है अपने को क्षति पहुँचाना या आत्महत्या कर लेना।

भारत के भाषायी उपद्रवों से जो व्यक्ति एक मात्र प्रसन्न जान पड़ते हैं वे पाकिस्तानी हैं जिसकी किन्चित् अभिव्यक्ति राष्ट्र संघ में उनके स्थायी प्रतिनिधि श्री अमजदअली के उद्‌गारों से हुई है। इस पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने प्रसन्नता के भावों का स्पष्ट प्रदर्शन करते हुए कहा "जिन लोगों ने आज प्रातःकाल का न्यूयार्क टाइम्स पढ़ा होगा उन्होंने मद्रास में जो कुछ हो रहा है वह भी अवश्य पढ़ा होगा। क्या इसका अर्थ यह लिया जाय कि मद्रासियों को भारत में रहने के लिए मद्रास प्रान्त में जन मत संग्रह किया जाय।"

उन्होंने द्रविड़ मुन्नेतरम कजगम की गतिविधियों के सम्बन्ध में एकपक्षीय और असत्य युक्तियां देने का यत्न किया। हमारे स्थायी प्रतिनिधि श्रीयुत चक्रवर्ती ने उत्तर देते हुए ठीक ही कहा कि पाकिस्तान को चाहिए कि कशमीर में आत्म निर्णय का राग अलापने से पूर्व पाकिस्तान बलूचिस्तान और पख्तूनिस्तान के लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करे।

अद्‌भुत प्रकाश-स्तम्भ

विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश का एक मुख्य नगर है। यह लिखते हुए हर्ष होता है कि वहां आर्य समाज मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। उसकी आधार शिला रख दी गई है। आशा है ३-४ मास में मन्दिर बनकर तैयार हो जाएगा।

इसका सारा श्रेय श्रीकिशनलालजी (सिंधिया

नेवीगेशन कम्पनी) को है। ये सज्जन दृढ़ आर्य हैं। उन्होंने पौन एकड़ भूमि फ्री दिलाई और स्वयं १०००) दान दिया है। स्व० ग्रन्थि मंगराजू पूर्णा पिक्चर्स के सुपुत्रों श्री कामराज तथा श्री ब्रह्मा जी ने क्रमशः ५०००) व १०००) की राशि भेंट की है तथा और भी अधिक देने का वचन दिया है। एक अन्य आर्य सज्जन ने १० हजार रुपएके गुप्तदान का वचन दियाहै। कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है।

वस्तुतः श्री किशनलाल जी का परिश्रम और आर्यसमाज के प्रति उनकी हितचिन्ता प्रशंसनीय हैं। जिन महानुभावों ने इस कार्य के लिए दान दिया है वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

इस प्रसंग में श्री पं० गोपदेव जी का जो मूल्यवान सहयोग मिला और मिल रहा है वह भी स्तुत्य है।

विशाखापत्तनम् में आर्य समाज के मन्दिर का होना अपना विशेष महत्व रखता है। वह एक औद्योगिक नगर है और उसका महत्व दिन पर दिन बढ़ेगा। यहां भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोग पहुँचे हुएहैं। आंध्र प्रांतके इस एक मुख्य नगर में आर्य सामाजिक प्रगतियों का दृढ़ केन्द्र होना अत्यावश्यक है। यहां से आर्यसमाज के विस्तार की अधिकाधिक सम्भावना है।

श्री किशनलाल जी बड़े उत्साही सज्जन हैं और आर्यसमाज केलिए उनके हृदय में बड़ीतड़पहै। पिछले दिनोंसभा कार्यालय में उनसे भेंट हुई थी और उन्होंने कार्य की जो योजना प्रस्तुत की थी वह बड़ी महत्वपूर्ण थी। उनके उधर रहते हुए आर्यसमाज के कार्य के विस्तार में उनसे अधिक से अधिक जितना लाभ उठाया जा सके उठाना चाहिए और उन्हें अधिक से अधिक सहयोग मिलना चाहिए। वे अपने पास से बड़ी राशि खर्च करते रहते हैं। सैंकड़ों रुपये का साहित्य क्रय करके फ्री बंटवा चुके हैं।

वहां आर्यसमाज का भव्य मन्दिर तो शीघ्र बन ही जाएगा। आवश्यकता इस बात की है कि वहां स्थिर रूप से कोई महानुभाव प्रचारार्थ बैठ जायं। इस कार्य को कोई वानप्रस्थ वा संन्यासी महानुभाव सम्भाल लें तो बड़ा अच्छा हो। इस सम्बन्ध में श्री किशनलाल जी (४ शिपयार्ड कालौनी पो० गांधी ग्राम, विशाखा पत्तनम्) से पत्र व्यवहार करना चाहिए।

आशा है श्री भाई किशनलालजी विशाखा-पत्तनम् के विशाल समुद्र-तट पर आर्य समाज के जिस अद्भुत प्रकाश-स्तम्भ का निर्माण करा रहे हैं, उसका प्रकाश दूर २ तक प्रसारित होता रहेगा और उसके निर्माण में जिन लोगों का क्रियात्मक सहयोग मिल रहा है अथवा आगे मिलेगा वह उनकी कीर्ति का विस्तार करता रहेगा।

राजनैतिक दूरदर्शिता का दिवालियापन

पिछले दिनों मोगादिशू (Mogdidshu) में विश्व मुस्लिम कांग्रेस का छठा अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में जो ७ जनवरी ६५ को समाप्त हुआ एक प्रस्ताव इस आशय का भी पारित किया गया कि मुस्लिम देशों को अनाथों की रक्षार्थ अपने अनाथालय स्वयं खोलने चाहिएं और उन्हें दूसरों की मुख्यतः ईसाई पादरियों की दया पर नहीं छोड़ देना चाहिए। इस प्रस्ताव में मुस्लिम देशों को यह भी प्रेरणा की गई है कि मुस्लिम बच्चों को पादरियों के मठों और स्कूलों से बचाने के लिए वे अपने यहां अनाथा-लयों की इमारतों का निर्माण भी करें।

इसी प्रस्ताव में ईसाई पादरियों पर यह आरोप लगाया गया है कि समस्त ईसाई मिशनरी अपने स्कूलों, हस्पतालों, क्लीनिकों और अन्य जनोपरकारक संस्थानों के पर्दे

के पीछे अपने विष का प्रसार करते और मुसलमानों को ईसाई बनाने का यत्न करते हैं।

अन्त में मुस्लिम राज्यों को आह्वान किया गया है कि वे अपने देशों मे अधिकाधिक स्कूलों और हस्पतालों की व्यवस्था करें जिससे ईसाई पादरियों के कार्य को निरुत्साहित किया जा सके।

इस समाचार पर कोई टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। समझा यह जाता था कि मुस्लिम देशों में ईसाइयों की अवाञ्छनीय प्रगतियों का विस्तार नहीं है और यदि है तो नाम मात्र का है।

परन्तु इस प्रस्ताव से स्पष्ट है कि मुस्लिम प्रदेशों में भी उनकी अवांछनीय प्रगतियां फैली हुई हैं और मुस्लिम प्रदेशों को वे प्रगतियां बहुत बड़ा खतरा देख पड़ती हैं। मुस्लिम प्रदेशों के कर्णधार तो इस खतरे को अनुभव करके खुले तौर पर इसके निराकरण के लिए आवाज उठाते हैं परन्तु हमारी सरकार इस खतरे के प्रति आंखें बन्द किए पड़ी है। इतना ही नहीं राज्य के कई कर्णधार तो ईसाई मिशनारियों की प्रगतियों को देश के लिए वरदान कहकर उनकी प्रामाणिकता का सर्टिफिकेट देने में भी आगा-पीछा नहीं सोचते। यह उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता के दिवालियेपन का द्योतक नहीं तो और क्या है?

नमस्ते का महत्त्व

मास्को का प्रेस ट्रस्ट द्वारा प्रचारित १० फरवरी का समाचार है कि रूस के राष्ट्रपति मिकोयान का विश्वास है कि यदि रूसी नागरिक नमस्ते करने लगें तो उन्हें फसली बुखार न आए।

श्री मिकोयान से मिलने के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह रहस्य खोला। राष्ट्रपति को हाल में बुखार आया था। उन्होंने बताया कि हाथ जोड़ कर अभिवादन करने से हाथ ... के ... से ... नहीं ... ।

एक पत्र

वारंगल जेल के एक आजन्म कैदी लिखते हैं:—

"आपकी भेजी हुई सत्यार्थप्रकाश तथा कर्त्तव्य-दर्पण पुस्तकें मुझे प्राप्त हुईं। अब निशिदिन उनका पारायण करके लाभ उठाऊंगा। आपने मेरे मन की आशा पुराई। यह उपकार मेरे जीवन भर तक नहीं भूलूंगा। आपने मुझे असत्य की दुनिया से बचाया तथा सत्य मार्ग में लगाया। बन्दी गृह से मुक्त होते ही आपके दर्शन करने की मुझे इच्छा है।

रोम निवासी विद्वान् का आर्य साहित्य एवं संस्कृत प्रेम

रोम निवासी श्रीयुत प्रिन्स एलेक्जंडर आर्य समाज के साहित्य के अध्ययन मे विशेष रुचि रखते हैं। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के साथ उनका पत्र व्यवहार होता रहता है। अभी हाल में उनकी मांग पर उन्हें सभा की ओर से उपहार स्वरूप आर्यसमाज का कुछ अंग्रेजी साहित्य भेजा गया था। उसकी प्राप्ति उन्होंने संस्कृत भाषा मे पत्र लिखकर स्वीकार की है। उनका पत्र इस प्रकार है:—

रोमात, २८-१-१९६५ क्री०-संवत्सरे

स्वस्ति

आयुष्मन्

यावद्प्रेषितानाम् ग्रन्थानाम्।

1—Ganga Prasad Upadhyaya-The Origin scope and mission of the Arya Samaj.

2—Introduction to the Commentary on the Vedas

3—Arya Samajataglance(two copies)

4 - Dayanand and Arya Samaj (two copies)

इति, येषाम् पाठनं अस्मद्विज्ञानवर्धनहेतुः भविष्यति, आवृत्तत्वं विज्ञापयामि अनुगृहीतोऽस्मि।

शमिह भावकं भव्यमनु दिनमेधमानमाशास्महे।

इन्हें शीघ्र ही और साहित्य भेजा जायगा।

—...

श्रुति-सुधा

[विद्याभूषण श्री शिवकुमार जी शास्त्री, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार]

इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तोऽराव्णः ॥ ऋक् ७ । १ । ३०

शब्दार्थ—हे (अप्तुरः) संसार की कल्याण कामना करने वालो ! (इन्द्रं वर्धन्तः) परमैश्वर्य शालियों को बढ़ाते हुए (अराव्णः) दुष्टों का (अपघ्नतः) विनाश करते हुए (विश्वम्) संसार को (आर्यम्) श्रेष्ठ (कृण्वन्तः) बनाओ ।

व्याख्या—हमारी दृढ़ धारणा है कि जब तक संसार वैदिक धर्म को स्वीकार करके आर्य नहीं बन जाता अर्थात् वैदिक शिक्षाओं को अपने आचरण में नहीं ले आता तब तक, ईर्ष्या, द्वेष व अशान्ति और क्षोभ का संसार से नष्ट होना कठिन ही नहीं असम्भव है। क्योंकि इन संपूर्ण संकीर्णताओं का निर्वासन उदात्त उपदेश और निर्मल ज्ञान के बिना नहीं हो सकता ।

जब हम अपनी मति को किसी मत की परिधि में बन्दी बना देते हैं तो हमारी दशा में और एक कुए के मेंढक की दशा में कोई अन्तर नहीं होता। एक बार एक तालाब का मेंढक उछलता कूदता किसी कुए में गिर गया। कुए में रहने वाले उसके एक भाई मेंढक ने उससे पूछा जहां से आप आये हैं वह जलाशय कितना बड़ा था ? आगन्तुक ने उत्तर दिया वह तो बहुत बड़ा था। कुए वाले ने ठीक अनुभव लगाने के लिए एक छलांग लगाई और कहा "इतना बड़ा था ?" बाहर से आने वाले ने उत्तर दिया नहीं इससे बहुत बड़ा था। उसने फिर दूसरी छलांग लगाई और पूछा इतना था। बाहर से आने वाले ने कहा नहीं बड़ा था। कुए वाले ने तीसरी छलांग लगाते हुए कुए के दूसरे किनारे पर पहुंचकर कहा इतना था। आने वाले ने फिर वैसा ही उत्तर दिया और कहा कि नहीं इससे बड़ा था। यह उत्तर सुनकर कूप मण्डूक बहुत बिगड़ा और झुंझलाकर कहने लगा मूर्ख इससे बड़ा तो संसार में कोई जलाशय है ही नहीं। फिर तू कैसे कहता है कि इससे भी बड़ा है।

ठीक यही अवस्था संसार के मत-मतान्तरों की है। तुलनात्मक अध्ययन करके इन मतों की छान-बीन की जावे तो आप देखेंगे कि, हल्दी की एक एक गांठ के ऊपर कितनों ही ने पंसारी की दूकान खोली हुई है और वह गांठ भी कहीं से उधार मांगी हुई है।

ईसाई लोग उन्नत भाल करके बड़ी अकड़ से कहते हैं कि हमने, "भगवान् हमारा पिता है और हम मनुष्य परस्पर भाई हैं।" (Fatherhood of God and brotherhood of man) यह स्वर्णिम संदेश संसार को दिया है। पहले तो यह संदेश ही उन्होंने वेद से उधार लिया है। वेद में सैकड़ों स्थानों पर प्रभु को पिता, न केवल पिता अपितु माता शब्द से भी पुकारा है। किन्तु देखना यह है कि पितृत्व और मातृत्व की दिव्य औषध वितरण करने वालों का अपना आचरण क्या है ? क्या इसी मन्तव्य के उपासकों ने संसार के एक बड़े भाग को रक्त रंजित नहीं कर दिया ?

इन सब बातों की ओर दृष्टिपात करते हुए यही विचार होता है कि वैदिक धर्म में मनुष्य मात्र के दीक्षित होने की भारी आवश्यकता है। निःसन्देह उनके भाग्य खुल जाते हैं और उनका कल्याण हो जाता है जो वस्तुतः आर्य बन जाते हैं। वे भगवान् के सच्चे पुत्र बन जाते हैं। पुत्र की शोभा इसमें है कि वह पिता के अनुव्रत हो। यह न होना चाहिए कि पिता बनावे और पुत्र

बिगाड़े। पिता सज्जनों की रक्षा करे तो पुत्र की दुष्टों से मैत्री हो और सज्जनों का उच्छेद करे। प्रभु ने विधान किया है कि "अहं भूमि मददामार्याय "मैं इस पृथिवी को आर्यों को देता हूं और "आर्यः ईश्वर पुत्रः" आर्य ही ईश्वर पुत्र है। सच है इस पृथिवी पर आधिपत्य आर्यों का ही होना चाहिए। जब तक आर्यों का आधिपत्य इस भूमण्डल पर रहा संसार में आनन्द की लहरियों की परम्परा भंग न हुई। क्यों न हो ऐसा ? जब कि उनका दृष्टिकोण ही इतना विशाल और औदार्यपूर्ण था कि सब प्राणियों में हमारे समान ही सुख दुःख की अनुभूति है। मै चाहता हूँ कि मुझे कोई दुःख न दे तो मै किसी को क्यों दूं ? जब मुझे मेरा भाग छिन जाने पर दुःख होता है तो मै किसी का क्यों छीनूँ ?

यह है आर्यों का निर्मित शान्ति का राज-मार्ग। योरप ज्यों-ज्यों उन्नति करता गया त्यों-त्यों शान्ति भंग होती गई। इस निर्बलता को उन्होंने स्वयं ही स्वीकार किया है।

Yes we are taught to fly in the air like birds and to swim in the water like fish, but how to live on the earth peacefully we do not know. अर्थात् इस शिक्षा ने हमें पक्षियों के समान हवा में उड़ना सिखाया है और मछलियों के समान पानी में तैरना सिखाया है किन्तु इस पृथिवी पर शान्ति से कैसे रहा जाता है —यह हम नहीं जानते।

हमारा विचार है कि आर्य बिना बने यह बात उनके मस्तिष्क में आ भी नहीं सकती। आर्यों का आर्यत्व नष्ट हुआ और संसार अशान्त हो गया। अब यह शान्ति बिना पतवार की नाव के समान है। पता नहीं कब और किस किनारे पर लगे ? किन्तु हमारी दृढ़ धारणा है कि अब भी लगेगी, लगेगी आर्यों के तीर पर

अतएव वेद ने आदेश दिया, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" संसार को आर्य बनाओ। प्रश्न होता है कि आर्य कैसे बनावें ? और आर्य कौन होते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर इसी मन्त्र के पूर्व और उत्तर भाग में दे दिये गये हैं कि "इन्द्रं वर्धन्तः" इन्द्र को बढ़ाओ और "अराव्णः अपघ्नन्तः" कृपण अदानी, अनुदार ईर्ष्यालु और स्वार्थियों का विनाश करो। अर्थात् जो इन्द्र हैं वे आर्य हैं और जो अदानो आदि दुर्गणों से युक्त हैं वे दस्यु हैं—अनार्य हैं। संसार में शांति स्थापित करने के लिए आर्यों की वृद्धि और दस्युओं के विनाश की भारी आवश्यकता है।

इस मन्त्र में इन्द्र शब्द अधिक ध्यान देने योग्य है।' वैदिक वाङ्मय के अनुसार इस शब्द का पेट बहुत बड़ा है। प्रत्येक प्रकार की उत्तम विशेष शक्ति रखने वाले जड़-जङ्गम को हम इस नाम से पुकार सकते हैं।

'इदि परमैश्वर्ये' धातु से यह शब्द बनताहै। अतः इसका सीधा-सादा अर्थ हुआ परमैश्वर्य युक्त। इन्द्र को बढ़ाने का भी यही तात्पर्य हुआ कि परमैश्वर्यशालियों को बढ़ाओ।

सांसारिक धन-धान्य को परमैश्वर्य नहीं कह सकते। इसका स्थान तो परमैश्वर्यों में सबसे पीछे हैं। अतः इस शब्द का जचाऊ मुख्यार्थ यहां आत्मज्ञानी है "इन्द्र आत्मा" यह काशिका में आता भी है। कोष में भी इसके 'अर्थों में विद्यैश्वर्ययुक्तम्" लिखा हुआ है।

पौराणिकों ने कल्पना कर रखी है कि इन्द्र के एक हजार आंखें हैं। इसकी संगति चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में इस प्रकार लगाई है। "इन्द्रस्य हि मन्त्रिपरिषद् ऋषीणां सहस्रम्। सा तच्चक्षुः। तस्मादिन्द्रं द्वयक्षं सहस्राक्षमाहुः। कौ० अर्थशास्त्र अधि० १। अध्याय ५। अर्थात् इन्द्र के मन्त्रिमण्डल में एक हजार ऋषि थे। वे ही

उनकी आंखे थीं। इसी लिए दो आंखों वाले इन्द्र को एक हजार आंखों वाला कहते हैं। पर मैं तो समझता हूं, इन्द्र उस आत्मज्ञानी का नाम है जिसके कथन में एक हजार ऋषियों से विचारे गये अर्थ के समान सन्देह को कोई स्थान नहीं। आत्मज्ञान से बढ़कर कोई ऐश्वर्य नहीं। जितात्मा सर्वार्थैः संयुज्यते" (चाणक्य सूत्र) वशी को कोई वस्तु अलभ्य नहीं। राज्य करने का अधिकार भी शास्त्रों ने आत्मज्ञ वशी को ही दिया है। आचार्य शुक्र के निम्न शब्द सोने के अक्षरों में लिखने योग्य हैं। "एकस्यैव योऽशक्तः मनसः सन्निवर्हणे। महीं सागरपर्यन्तां स कथं ह्यवजेष्यति ॥"जो राजा अपने अकेले मन को ही वश में नहीं कर सकता वह सागर पर्यन्त पृथिवी को अपने वश में कैसे रख सकता है ?

अतः सबसे पूर्व संसार में सुखशान्ति के विस्तार केलिए 'आत्मज्ञानियों' (आर्यों) की वृद्धि होनी चाहिए। क्योंकि आत्मज्ञ सारी वसुधा को कुटुम्ब कहते हैं और समझते हैं। उनके समीप अपने-पराये का प्रश्न ही नहीं होता। वे पाप से घृणा करते हैं और पापी से नहीं। इस प्रकार के आर्य प्रथम कोटि के अर्थात् ब्राह्मण आर्य हैं।

आत्मज्ञान से दूसरे नम्बर पर इन्द्र शब्द शारीरिक बल रखने वालों के लिये प्रयुक्त होता है। बल भी बहुत बड़ा ऐश्वर्य है। छान्दोग्य ७।८ में लिखा है"बलं वाव विज्ञानाद् भूयः। अपि ह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते।" अर्थात् १०० कोरे ज्ञानियों से एक बलवान् श्रेष्ठ है। क्योंकि वह अपने बल से उन सैकड़ों को कंपा देता है।

किन्तु वह बल "आर्त त्राणाय वः शस्त्रन्न प्रहर्तुमनागसि।" अर्थात् क्षत्रियों का शस्त्र दुखियों का दुःख दूर करने के लिए है निरपराध और निर्बलों को सताने के लिए नहीं। जैसा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने भी कहा है— क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्तशब्दो भवेदिति।" क्षत्रिय इस लिए धनुष को धारण करते हैं कि दुःखी की करुणा पुकार उनके कानोंमें न पड़े। निर्बल और असहायों को सताने से शक्ति का क्षय होता है। दीनों की करुणा पुकार में अग्नि जैसी भस्म करने की शक्ति है। ठीक ही लिखा है रहीम ने :—

निर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय।
मुई खालकी सांस सों सार भसम हुइजाय॥

अतः लोक व्यवस्था के लिये इन इन्द्रों का बढ़ाना भी परमावश्यक है।

तीसरे क्रम पर यह शब्द सांसारिक ऐश्वर्य वालों पर लागू होता है किन्तु उस धनी को इन्द्र कहा जा सकता है कि जिसकी दानसरिता का स्रोत दीनपात्रों के लिये कभी मन्द नहीं होता। जिसकी सम्पत्ति किसी भले कार्य में आती ही नही वे तो अनिन्द्र हैं, इन्द्र नहीं। प्रभु का आदेश तो यह है कि कमाने के समय से देने के समय अधिक उदारता होनी चाहिए। कमाते १०० हाथों से हो तो दो १००० हाथों से। "अपृणन् मर्डितारन्न विन्दते बिना दिये अपने शुभचिन्तक नहीं बना सकते। वेद में स्थान-स्थान पर ऐसे धन की प्रार्थना है जो सब के काम आवे। जो केवल अपने ही काम आता है उसे तो "केवलाघो भवति केवलादी" कहकर पापी बताया गया है। अतः अपने ऐश्वर्य से संसार का पालन करने वाले इन्द्रों की आवश्यकता भी सुतरां सिद्ध है।

इन तीनों प्रकार के इन्द्रों की वृद्धि कैसे होगी ? 'अराव्णः" कृपण, अदाता, ईर्ष्यालु और स्वार्थियों को" अपघ्नन्तः मारो। जहां इन्द्रों के बढ़ने से संसार में सुख और समृद्धि होगी वहां दस्युओं के नाश से शान्ति की स्थापना होगी।

दूसरे शब्दों में सार यह निकला कि संसार में उच्च कोटि के ब्राह्मण, उच्च कोटि के क्षत्रिय

और उच्च कोटि के वैश्य बढ़ाओ और शुभ कर्म में रोड़ा अटकाने वाले दस्युओं का नाश करो। मन्त्र में "वर्धन्तः" शब्द से यह ध्वनित होता है कि शूद्रों की संख्या बहुत कम होनी चाहिए। शूद्रों को योग्यतानुसार अपने से उच्चवर्ण में सम्मिलित होने का अवसर मिलना चाहिए। तभी शूद्रों की संख्या कम रह सकती है। मनु ने स्पष्ट कहा है। 'यद्राष्ट्रं शूद्रभूयिष्ठं नास्तिकाक्रान्तमद्विजम्। विनश्यत्याशु तत् सर्वं दुर्भिक्ष-व्याधिपीडितम् ॥"अर्थात् जिस राष्ट्र में शूद्र और नास्तिक अधिक हो जाते हैं, उसका सर्वनाश हो जाता है और उसमें दुर्भिक्ष और व्याधि भी बढ़ जाती है।

अतः वेद ने आज्ञा दी कि संसार में ज्ञान-विज्ञान का विस्तार करने के लिए, दीनों के आर्तनाद शमन तथा कुटिल कलह का अन्त करने के लिए अपने श्रमार्जित द्रव्य को बांट कर खाने के लिए तथा इस सद्व्यवहार के परिणामस्वरूप भ्रातृभाव के स्थापन के लिये संसार को आर्य बनने की नितान्त आवश्यकता है अतः वेद ने आदेश दिया "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"।

पश्चिम ने भौतिक दृष्टि से जितना कमाया उतना ही आध्यात्मिक दृष्टि से खो दिया है और उसकी वह सभ्यता जिस पर वह अभिमान करता था विनाश के पथ पर खड़ी है। अणुबम पाश्चात्य सभ्यता के भव्य भवन के लिए भयंकर खतरा बन गया है क्यों? इसलिए कि उसके संरक्षक या पोषक जीवन के आधार से वंचित हो गए हैं।

शक्ति की अन्धाधुंध दौड़ में मनुष्य अनभिकृत समुद्रों को पार करने के लिए जहाज चला रहा है। पीछे छुटा हुआ बन्दरगाह उसकी आंखों से ओझल हो गया है और निर्दिष्ट स्थान क्षितिज के उस पार है। ऐसे आडे समय कदाचित एक बार पुनः वेद के जीवन संदेश को स्मरण करना बुद्धिमत्ता होगी। उसके प्रेम और शांति से भरे हुए सन्देश से हमारे वैयक्तिक राष्ट्रिय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में वही शान्ति और सद् भावना आ सकती है जिसकी हमें परमावश्यकता है और जिसे हम खो चुके हैं। वेद के संदेश से ही डांवा डोल सभ्यता में सामंजस्य उत्पन्न होकर शान्ति और सौहार्द पुनः प्रतिष्ठित हो सकता है।

स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा

आठ गप्पों का खण्डन

(१)

माघ वदि १५ संवत १९२४ को सूर्य ग्रहण था। इसलिए सहस्रों नर-नारी स्नानार्थ कर्णवास आ रहे थे। स्वामी जी महाराज भी भोले भाले भारत वासी भाइयों को विवेक दान देने लगे।

महाराज वसेन्दु के नीचे बैठे हुए धर्म्म कर्म और आचार-विचार का उपदेश करते थे। साथ ही वे इन आठ गप्पों का खण्डन भी करते थे :—

१—प्रथम गप्प अठारह पुराण व्यासकृत हैं।

२—मूर्ति पूजा।

३—शैव, शाक्त और रामानुजादि वैष्णव सम्प्रदाय।

४—तन्त्र-ग्रन्थ, वाम मार्ग आदि।

५—मदिरा, भांग इत्यादि मादक वस्तुएं।

६—व्यभिचार।

७—चोरी करना।

८—छल, कपट, अभिमान, झूठ इत्यादि।

इन आठ गप्पों का मनुष्य को परित्याग करना चाहिए।

वेदोक्त आठ सत्यों का प्रतिपादन

स्वामी जी महाराज ने कानपुर में निम्न लिखित आठ सत्यों का मण्डन किया।

१—चारों वेद, चार उपवेद, छः अंग, श्वेताश्वतर सहित दशोपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, कात्यायनादि सूत्र, योग भाष्य, वाकोवाक्य, मनुस्मृति, महाभारत पर्यन्त परमेश्वर और ऋषि प्रणीत ग्रन्थ सत्य हैं।

२—ब्रह्मचर्याश्रम में गुरु-सेवा पूर्वक अपने धर्म्म अनुष्ठान निभाते हुए वेदाध्ययन करना चाहिए।

३—वेदोक्त वर्णाश्रम का धर्म्म और सन्ध्या वन्दन, अग्निहोत्र आदि कर्म करने उचित हैं।

४—जैसा धर्म्मशास्त्र मे ऋतुकाल आदि के नियमों से गृहस्थ धर्म्म लिखा है उसके अनुसार चलना। पञ्च महायज्ञों और श्रौत स्मार्त कर्मों का करना कर्त्तव्य है।

५—शम, दम, तपश्चरण का धारण यम आदि से समाधि पर्यन्त उपासना करना और सत्संग पूर्वक वानप्रस्थाश्रम का अनुष्ठान करना विधिविहित है।

६—विचार, विवेक, वैराग्य, पराविद्या का अभ्यास करना और संन्यास ग्रहण कर सकल कर्मों की फलेच्छा को छोड़ देना उचित है।

७—जन्म-मरण, हर्ष शोक, काम क्रोध, लोभ मोह और संग दोष ये सब अनर्थकारी हैं। इसलिए इन्हें त्यागना शुभ है।

८—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश रूप क्लेशों से और तमो रजस सत्व गुणों से निवृति पाकर पंचमहा भूतों से अतीत मोक्ष रूप स्वराज्य को प्राप्त करना परम लक्ष्य है।

इससे लाभ क्या हुआ ?

(२)

कानपुर के दो बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति प्रयागनारायण और गुरुप्रसाद जी स्वामी जी के प्रतिपक्ष में खड़े हो गए थे। इसका कारण यह था कि इन दोनों ने कैलाश और बैकुण्ठ नाम के दो मन्दिर बनवाए थे। जब वे दोनों महाशय स्वामी जी को मिले तो उन्होंने उपदेश दिया :—

"आपने लाखों रुपए लगाकर मन्दिर खड़े किए हैं परन्तु यह तो बताइए इससे लाभ क्या हुआ है? अनधिकारियों को खिला-पिलाकर, ईंट पत्थरों में व्यय करके इतना रुपया यों ही खो दिया है। क्या ही अच्छा होता यदि यह द्रव्य जाति और देश के भले मे लगता, मनुष्य मात्र के हितकर कार्य में व्यय होता? तीस २ वर्ष की बड़ी लड़कियां बिनब्याही कनौजियों के घरों में बैठी हैं। यदि उनके ब्याह करा देते अथवा बालक बालिकाओं की कोई पाठशाला स्थापित करके जन-हित का परिचय देते तो भी अच्छा था। देश में शिल्प का अभाव है। उस द्रव्य से आप यदि एक शिल्प शाला स्थापित करके स्वदेश वासियों में कला कौशल का प्रचार करते तो कितना बड़ा लोक हित होता?"

(द० प्र०, पृ० १९५)

वेश्या सबसे अधिक नाशकारिणी है

(३)

एक दिन दो नवयुवक एक वेश्यागामी व्यसनी धनी परिवार के नवयुवक को उसके पिता की विशेष प्रेरणा पर स्वामी जी के पास ले गए। महाराज अपने प्रेम 'भरे नैनों' की पवित्र ज्योति से युवकों के मुख मण्डलों को उज्ज्वल करते हुए उपदेश देने लगे, "सौम्य युवको! वैसे तो व्यसन सभी बुरे हैं, परन्तु वेश्या सबसे अधिक नाशकारिणी है। इस व्यसन से सुरापान की बान सहज में पड़ जाती है। सभ्य वेष, सभ्य भाषा, सभ्य आचार आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं। कुलाचार पर कुठाराघात हो जाता है। रात-दिन राग-रङ्ग में निमग्न रहने से व्यवहार-बुद्धि का अभाव होने लगता है। ऐसा व्यसनी धर्म्म-कर्म से सदा दूर भागता है। वाराङ्गना (वेश्या) अपने वशीभूत जन के मन को कृत्रिम प्रेम से, बनावटी बातों से और हाव-भाव से सदा उत्तेजित रखती है जिससे व्यसनी लोग अल्पकाल मे ही निस्तेज जीर्ण शीर्ण शरीर हो जाते हैं। वेश्या का प्रेम स्वार्थ-पूर्ण होता है। जब स्वार्थ-सिद्धि नहीं होती तब वह बात तक नहीं पूछती। वेश्यासक्त के परिवार में आचार की शुद्धि नहीं रहती। उसका वंश नष्ट हो जाता है। यदि वंश नष्ट न भी हो तो उसकी सन्तान का सदाचारी होना महा कठिन है। वेश्यासक्ति से यदि लड़की उत्पन्न हो तो वह उस वेश्यासक्त पुरुष की पुत्री होती है जो युवति होकर वेश्या बनकर बाजार में बैठती है। देखो! संसार में कोई भी भला मनुष्य नहीं चाहता कि उसकी पुत्री वेश्या बनकर बाजार में बैठे, परन्तु वेश्यानुरक्त जन ही ऐसे हैं जो अपनी बेटियों को वेश्या बनाते हैं, चकले में बैठाते हैं, और द्वार २ पर नचाते हैं। क्या यह बुरी बात नहीं है?"

(द० प्र० पृ० १८८-१८९)

महापुरुषों में सच्चा अहंकार अवश्य होता है

(४)

एक दिन दो नवयुवक महाराज के पास गए। उनमें से एक ने कहा कि अहंकारी चांडाल होता है। स्वामी जी ने कहा भद्र! तू तो अभी यह भी नहीं जानता कि अहङ्कार क्या वस्तु है? परन्तु यह तो बताओ कि क्या तुमने ऐसा शब्द कहते हुए अहङ्कार नहीं किया? युवक ने कहा, महानुभावों को तो कदापि नहीं करना चाहिए। तुम्हारा ज्ञान अति संकुचित है इसलिए तुम महापुरुषों की गति-मति नहीं जान सकते। महात्माजन मिथ्याभिमान कदापि नहीं करते परन्तु सच्चा अहंकार उनमें अवश्य होता है। अच्छा मैं तुमसे पूछता हूँ कि श्री रामचन्द्र और श्री कृष्णचन्द्र जी महा पुरुष थे कि नहीं? इस पर नवयुवक निरुत्तर होकर अपने साथी सहित वहां से चला गया।

पर्वों का महत्व

[श्रीयुत पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती]

प्रत्येक देश और जाति के लोग कोई न कोई पर्व अवश्य मनाते हैं यहां तक कि जिन जातियों को जंगली एवं असभ्य समझा जाता है—वे भी कोई न कोई अपना पर्व मनाती हैं। मानवहृदय मक्खन के पिण्ड की भांति शीतोष्ण भावनाओं के सम्पर्क से कठिन और द्रवित होता रहता है। वीरता, कारुण्य, वात्सल्य आदि का इस पर प्रभाव पड़ता रहता है। कभी वह आनन्द-मग्न होता है तो कभी दुःख से उद्विग्न भी हो उठता है। आनन्द में मग्न होने के उपकरण आह्लाद की घड़ियों और साधनों से सम्बन्ध रखते हैं और उद्विग्नता आदि दुखोपकरणों से। मानव समाज में ये दोनों ही पाये जाते हैं। दोनों के अनुरूप ही समाज में सुखोद्गार और सहानुभूति की भावना का विस्तार पाया जाता है। कहीं पर मानव सुखोद्गार प्रकट करता है तो कहीं पर सहानुभूति प्रदर्शित करता है। पर्वों का भी इसी प्रकार का रूप देखा जाता है।

कुछ पर्व ऐसे हैं जिनमें आनन्द मनाया जाता है और कुछ ऐसे हैं जिनमें लोग कुछ धार्मिक कृत्य आदि भी करते हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक पर्व में कुछ न कुछ धार्मिक कृत्य अवश्य ही होता है। कुछ पर्व देश-जाति के नाम से विख्यात है तो कुछ का सम्बन्ध सीधा ही धार्मिक एवं सामाजिक है। दीपावली, होली, श्रावणी आदि धार्मिक और सामाजिक पर्व हैं। परन्तु रामनवमी, विजयादशमी और सीताष्टमी आदि महापुरुषों और समाज से सम्बन्ध रखने वाले पर्व हैं। वैसे तो सभी पर्वों का अपना सामाजिक महत्व है।

दीपावली में लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं, कई तो द्यूत भी खेलते हैं। परन्तु यह बिगड़ा हुआ रूप है। न लक्ष्मी पूजा ही प्रशस्त है और द्यूत आदि का खेलना ही। द्यूत तो भ्रष्ट कर्म है और समाज को पतन की ओर ले जाने वाला है। अतः यह सर्वथा ही त्याज्य है। लक्ष्मी की पूजा का कहीं वैदिक परम्परा में स्थान नहीं देखा जाता है। दीपावली का पर्व धार्मिक कृत्यों से सम्बद्ध है। यज्ञ आदिक उत्तम कर्म इस पर्व पर किये जाने चाहिएं। यह पर्वशारदीय नवसस्येष्टि पर्व भी कहा जाता है। गृह्यसूत्रों का विधान है कि सस्य के अन्त में नव सस्येष्टि और ऋतुओं के अन्त में अध्वरों को किया जावे। भारत के भाग्य विधाता नवयुग निर्माता भगवान् दयानन्द जी सरस्वती का इसी दिन शरीरान्त भी हुआ था अतः ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस पर्व का महत्व हो गया है।

सीताष्टमी का पर्व इसलिए अपना विशेष महत्व रखता है कि यह महारानी जानकी के जन्म से सम्बन्ध रखने से इस पर्व का एक अलग ही अपना रूप है। स्त्री परिवार और समाज का अनिवार्य अङ्ग है। अतः उस सम्बन्धी पर्व का भी पर्वों में सन्निवेश है।

पर्व व्यक्ति समाज और राष्ट्र को अपने अतीत का गौरव बताकर वर्तमान के साथ सम्बन्ध जोड़ते हैं और भविष्य के लिए प्रेरणा देते हैं। समाज के संघठन, व्यक्तित्व के निर्माण और राष्ट्र की रीतिनीति के निर्धारण की प्रेरणा मानव को किसी न किसी रूप में इन पर्वों से प्राप्त हुआ करती है। अतः इन पर्वों का अपना विशेष महत्व है।

आर्यसमाजों को प्रतिवर्ष सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्धारित पर्वों की सूची भेजी जाती है और इसके

(शेष पृष्ठ १८ पर)

बाल्मीकि का राम और तुलसीदास का राम

[श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त]

महर्षि बाल्मीकि के राम और सन्त तुलसीदास के राम के सम्बन्ध में लिखने से पूर्व मैं आवश्यक समझता हूँ कि उन कतिपय सज्जनों के मत के सम्बन्ध में अपनी राय व्यक्त करूं जो कि राम को एक ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं मानते। वे भगवान् राम को एक काल्पनिक व्यक्ति ही मानते हैं। राम को काल्पनिक व्यक्ति मानने के लिये कोई पुष्ट आधार नही है। उनका कथन प्रायः यह होता है कि अनेक रामायण ग्रन्थों मे जिस प्रकार राम के चरित्र का वर्णन है वह किसी भी व्यक्ति के लिये सम्भव नहीं है। अतः राम कवियों की कल्पना के राम का वर्णन है जिसका उद्देश्य मनुष्यों में मानवता का स्तर ऊंचा करना है। इस प्रकार का तर्क करने में वे यह भूल जाते हैं कि किसी सच्चरित प्रतापी पुरुष के देहावसान के पश्चात्, जितना भी अधिक काल व्यतीत होता है, उसमें उतना ही अधिक सद्गुणों की धारणा उनके प्रशंसक करते हैं, यह एक सर्वप्रसिद्ध बात है। फिर राम की तो बात ही क्या है। वाल्मीकि ने उनके चरित्र का वर्णन उस समय किया जब वे विद्यमान थे। उदाहरण के लिये किसी भी महापुरुष की जीवनी की ओर दृष्टिपात करिये। भगवान् शंकराचार्य, बुद्ध, ईसामसीह आदि महानुभावों का ऐतिहासिक पुरुष होना कौन इनकार कर सकता है, परन्तु इनके बारे में जो दन्तकथाएं हैं वे कालान्तर में अधिकाधिक अलौकिक होती जा रही हैं। जब हजार दो हजार वर्ष वालों की यह बात है, तो इससे भी अत्यधिक कालावधि वाले 'राम' के बारेमे ऐसी बातें होना स्वाभाविक ही है। भगवान् राम के ऐतिहासिक, राम होने के न कि काल्पनिक राम कई अकाट्य प्रमाण हैं। अयोध्या नगरी की प्राचीनतम नगरी होने में किसो को सन्देह नहीं। काल्पनिक राम होने की दशा में, महाराजा दशरथ द्वारा पुत्रेष्टियज्ञ का विधान निरर्थक हो जाता है।

२-अब मैं अपने विषय पर आता हूं। महर्षि वाल्मीकि का राम बाल्मीकि रामायण के प्रथम काण्ड (बालकाण्ड) के प्रथम सर्ग के प्रथम लगभग १८ श्लोकों में ही वर्णित है।

तपः स्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिपप्रच्छ बाल्मीकिर्मुनिपुंगवम् ॥१॥

कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्। धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥ २ ॥

चारित्रेण च को युक्त सर्वभूतेषु को हितः।
आत्मवान् कः समर्थश्च कश्चैक प्रियदर्शनः ॥३

आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः। कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥ ४ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥ ५ ॥
श्रुत्वा चैतत्त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः।
श्रूयतामिति चामन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥६॥
बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।
मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥७॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान्वशी ॥८
बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रु
निबर्हणः। विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो
महाहनुः। ६॥
महोरस्को महेष्वासो, गूढजत्रुररिंदमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः। १०॥
सम समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः। ११॥
धर्मज्ञः सत्यसंधश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्न शुचिर्वश्यः समाधिमान् १२
प्रजापतिसम श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता। १३।
रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्ग तत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः। १४
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः। १५॥
सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।
आर्य सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः। १६॥
सच सर्वगुणोपेतः कौसल्या नन्दवर्धनः।
समुद्र इव गम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव। १७।
विष्णुना सदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः। १८।
धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।
तमेवं गुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम्। १९॥

३-इसमें विशेष रूप से देखने की बात यह है कि वाल्मीकि जी "एवं विधम् नरम्" जानना चाहते हैं और नारद जी भी उत्तर में कहते हैं। "तैर्युक्तः श्रूयतां नरः"। प्रश्न में भी ऐसे गुणों से युक्त "नर" की आकांक्षा की गई है और उत्तर में भी वैसे गुणों से युक्त "नर" का नाम बताया गया है।

राम को 'नर' न कि 'नारायण' मानने की यही भावना वाल्मीकि रामायण के अनेक स्थलों में दृष्टिगोचर होती है। प्रक्षिप्त स्थानों को छोड़ देने से यह और भी स्पष्ट होता है।

४—अब सन्त तुलसीदास के "राम" की भावना को देखिये। उनकी भावना क्या है यह उनके रामायण के प्रथम कांड (बालकांड) के षष्ठम श्लोकों में दिया हुआ है:—

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुराः
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावताम्
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्। ॥६॥

५—सन्त तुलसीदास ने राम को 'नर' नहीं माना है बल्कि उनको 'ईश' 'हरि' परमात्मा माना है।

राम के सम्बन्ध में बाल्मीकि और तुलसीदास की ये भावनाएं उनके सम्पूर्ण रामचरित्र में दृष्टिगोचर होती हैं।

६—महर्षि बाल्मीकि ने राम को नरोत्तम, पुरुषोत्तम माना है, और हर प्रकरण में उनके वर्णन में यही बात दृष्टिगोचर होती है।

सन्त तुलसीदास ने राम को परमात्मा माना है, और अनेक स्थानों में उनके चरित्र और कार्य वर्णन में यही बात दीखती है।

७ दोनों रामायणों में एक और महान् भेद है। रामायण में जितने भी पात्रों का वर्णन आता है, उनके प्रति भी दोनों ग्रन्थों के दृष्टिकोण में अन्तर है। वाल्मीकि रामायण में उन सबके प्रति मानवी आवेगों की भावना है। मनुष्य में जो राग द्वेष,क्रोध, हर्ष आदि प्रवृत्तियां होती हैं वे प्रायः उनमें पाई जाती हैं। तुलसी रामायण में यह बात नहीं है। उन्हें इस प्रकार के मानवी दोषों से प्रायः मुक्त किया गया है।

उदाहरण के लिये राम के वनवास के प्रसंग को ही देखिये।

राम को वनवास भेजने का उत्तरदायित्व किस पर है? इस सम्बन्ध में, सन्त तुलसीदास

किसी को भी दोषी नहीं ठहराते। राजा दशरथ ने राम को वनवास दिया, परन्तु वे दोषी नहीं, क्योंकि वचनबद्ध थे और अपने वचन का पालन किया। कैकेयी भी दोषी नहीं। मन्थरा ने उसकी मति भ्रष्ट की। अतः मन्थरा दोषी हुई वह भी दोषी नहीं क्योंकि मन्थरा की बुद्धि सरस्वती ने फेर दी थी। अतः सरस्वती दोषी। वह भी दोषी नहीं क्योंकि देवताओं ने सरस्वती से प्रार्थना की थी। अतः सरस्वती भी दोष की भागी नहीं।

वाल्मीकि ने सीधा मन्थरा और केकैयी पर ही राम को वनवास भेजने का उत्तरदायित्व बताया है।

इस प्रकार के अनेक प्रसंग हैं, जिनका वर्णन करना लेख को लम्बा करना ही होगा। सीता-हरण का भी प्रसंग, वाल्मीकि और तुलसीदास के दृष्टिकोणों के महान् अन्तर को व्यक्त करता है। रावण ने सीता का जो हरण किया, उसे सन्त तुलसीदास रावण की पाशविक मनोवृत्ति नहीं बताते, बल्कि अपने उद्धार का एक साधन रूप में वर्णन करते हैं। वाल्मीकि ऐसा वर्णन नहीं करते।

(पृष्ठ १५ का शेष)

मनाने की प्रेरणा भी की जाती है। वस्तुतः पर्वों का जितना महत्व है उसी प्रकार उनका मनाना भी होना चाहिए। बड़े उत्साह के साथ आर्यजन समाजों में पर्वों को मनावें उन पर निर्धारित कार्य क्रम को यथोचितरूपसेसम्पन्न करें। मेरा विश्वास है कि पर्वों को इस प्रकार सोत्साह और विधि-पुरस्सर मनाने से उचित प्रेरणा समय समय पर लोगों को मिलती रहेगी। इसके साथ जिन पर्वों को मनाया जाता है और उनसे जो प्रेरणा मिलती है उसका पालन भी करना आवश्यक है सभी पर्वों की विशेष पद्धतियां भी बनी हैं अतः उनके मनाने में एकता और एकरूपता भी बनी रहती है।

पर्व शब्द का अर्थ पूरक है। आनन्द, भावना, शिक्षा, प्रेरणा और उत्साह से यह पूरित करता है अतः पर्व है। इसी के अनुरूप इन पर्वों को मनाया जाना चाहिए।

—:०:—

आज का संतप्त संसार सदाचार, शान्ति सुख एवं दया के युग की ओर बढ़ने के लिए छटपटा रहा है परन्तु मांसाहार एवं हिंसा की भावना मानव जाति के आगे बढ़ने के मार्ग में अनेक बाधाओं में से एक बड़ी बाधा सिद्ध हो रही है। ऐसा लगता है कि किसी भी सुकार्य से जिसके लिए मानव समाज के शुभचिन्तक राजनैतिक या अराजनैतिक स्तर पर यत्न कर रहे हैं। समाज को वैसा स्थायी तथा प्रतीकारात्मक लाभ न होगा जैसा लोगों को अपने प्राकृतिक आहार को फिर से अपनाने से होगा जो आहार ईश्वर ने मनुष्य के लिए पहले से ही निर्धारित कर दिया था।

ऋषि दयानन्द का भारत

[प्रिंसिपल भगवान दास, शोलापुर]

गत दिसम्बर मास में हमारे यहां की संस्थाओं के सम्मिलित वार्षिक पारितोषिक वितरणोत्सव पर भारत के उच्च-तम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश माननीय श्री० पी० बी० गजेन्द्रगढ़कर जी यहां पधारे। उन्होंने बहुत सुन्दर तथा युक्तियुक्त भाषण देकर जनता को मुग्ध कर दिया। उन्होंने ऋषि दयानन्द की बहुत प्रशंसा की तथा कहा कि भारतवासियों को साधारणतया तथा दयानन्द संस्थाओं तथा अध्यापकों और विद्यार्थियों को विशेषकर ऋषि दयानन्द की अमूल्य देन के लिए आभारी ही नही होना अपितु क्रिया द्वारा प्रशंसा करनी होगी। उन्होंने कहा कि दयानन्द संन्यासी थे और चाहते तो पहाडों की कन्दराओं में जा बैठते तथा अपना जीवन आध्यात्मिक क्षेत्र में ही बिता देते पर उन्होंने अपने आप ही शपथ ली कि वह जन कल्याण करेंगे तथा जिस ऊंचे कार्य के लिए दयानन्द ने घोषणा की कि जब तक छोटे से छोटे तथा पददलित दुखी को सहारा देकर ऊपर न उठा लेंगे वह चैन न लेंगे। ऋषि दयानन्द ने देश का लाभ इसी में देखा और उन्होंने ऐसा ही किया और अपने मिशन में सफल हुए। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि यह ऋषि दयानन्द के सकल्प का ही परिणाम हुआ कि भारत में जागृति पैदा हुई तथा देश स्वतन्त्र हुआ। उन्होंने कहा कि जब तक भारत में प्रत्येक के मन में जनकल्याण की वह भावना जो ऋषि दयानन्द के मन में थी नहीं आयेगी देश ऊंचा नहीं उठेगा।

माननीय मुख्य न्यायाधीश के शब्द बहुत मधुर तथा प्रभावशाली थे। वे स्वदेश की वर्तमान दशा को सुधारने का सीधा इलाज महर्षि दयानन्द के जीवन से जता रहे थे। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द सर्व प्रथम नेता थे जिन्होंने देश वासियों को ऊंचा उठाने का कार्य किया तथा इस क्षेत्र में अब भी उनके पदचिन्हों पर चलना होगा। यह सत्य है कि जन कल्याण तथा स्वदेश कल्याण तो तभी होगा अगर देश के नेता निर्धन से निर्धन तथा दबे हुए राष्ट्रघटकके दिल में बैठकर उसकी चिंताओं और आवश्यकताओं को देखेंगे। दरिद्रता का समुद्र तो रुकने की बजाय बढ़ता ही चला जा रहा है। क्या देश के नेताओं को इस बात का ज्ञान है। अगर है तो आज भी भारत का भविष्य उज्वल हो सकता है।

मैं तो यह समझता हूं कि देश का सब से बड़ा शत्रु तो भ्रष्टाचार है। देश में खाद्य संकट भ्रष्टाचार का परिणाम है। जब तक भ्रष्टाचार है तब तक कोई हल सफल नहीं होने वाला, जन कल्याण की तो बात ही क्या। यह बड़े दुःख की बात है कि भ्रष्टाचार कम होने की बजाय बढ़ता जा रहा है। आर्य समाज को भ्रष्टाचार दूर करने के लिए सरकार की सहायता करनी चाहिए।

हमारे राष्ट्र का ध्येयजन कल्याण समाजवाद है यह बहुत सुन्दर है तथा भारत की सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर है। इसका अर्थ यह है कि जनतन्त्र के साधनों से ही समाजवाद लाना है। यह रास्ता बहुत कठिन है पर अपने देश के लिये यह नवीन नहीं है। यह रास्ता इसी मिट्टी से निकला है। इस में जनता के सहयोग की आवश्यकता है। जनता को समाज-वाद के गुणों का ज्ञान नहीं। इसलिए उनको जताना है कि समाजवाद का लाभ क्या है।

धनी लोग निर्धनों का ध्यान करके कम से कम लाभ लें तथा उनका लाभ शुभ लाभ हो। चोर बाजारी का लाभ देश को गिराता जा रहा है। चोर बाजार को पकड़ने का कार्य पुलिस नहीं अपितु व्यापारी संघ ही करें। केवल सरकार क्या कर सकती है उसकी सब योजनाएं निष्फल जा रही हैं। क्योंकि जनता भले ही कांग्रेस को वोट देती है पर देश हित में कांग्रेस के कार्यकर्त्ता त्यागभाव से कार्य नहीं कर रहे यह एक तथ्य है। चाहिये तो यह कि जिस ध्येय के लिए हम वोट दें उसकी पूर्ति के लिए हम डट जावें।

खेती और उद्योग यह देश का दिल तथा दिमाग है। एक के बिना दूसरा नहीं चल सकता, इन दोनों की उन्नति के लिए आर्य समाज को देश में योजनायें बनानी चाहिये। ऋषि दयानन्द को केवल धार्मिक नेता कहने वाले यह भूल जाते हैं कि अंग्रेजी राज्य में भी उन्होंने पत्र-व्यवहार करके देश के नवयुवकों को जर्मनी में औद्योगिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। यह याद रखना होगा कि ऋषि ने इस शब्द का अर्थ शिल्प भी किया है।

आर्य समाज स्वदेश को एक मानता है तथा आर्य समाज के कार्य तथा कार्यक्रम देश को एक ही सूत्र में पिरोये रखने के उच्चतम तत्व हैं इस बात को सब आर्य समाज के विरोधी भी मान रहे हैं। देश के कोने कोने में लोग इस बात की आशा करते हैं कि आर्य समाज कार्यक्षेत्र में कूदे। दक्षिण में हिन्दी के नाम पर जो घृणा फैलाई जा रही है उसका इलाज आर्य समाज कर सकती है। अगर आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व आर्य समाज के कार्यकर्ता दक्षिण भारत में पहुँच गये होते तो वर्तमान स्थिति पैदा न होती। आज भी दक्षिण भारत में आर्य समाज की मांग बहुत है। धन भी है पर उत्तरी भारत के आर्य समाजी तथा हिन्दी प्रेमी कष्ट उठाने को तैयार दीख नहीं पड़ते आर्य समाज तो इन कार्यों में सदैव अग्रणी रहा है, अब क्यों ढील है।

भाषा अथवा प्रांतीयता के झगड़े तो ऊपर-ऊपर हैं अभी जनता में नहीं हैं। पर खाद्य पदार्थों के भावों की भिन्नता से जनता में भेद-भाव पैदा हो रहे हैं। जहां दक्षिण में चोर बाजार में गेहूं दो सौ रुपया क्विन्टल तक जाता रहा वहां उत्तरी भारत में वह पच्चास से अधिक नहीं। कंट्रोल के भावों में भी बहुत अन्तर रहा। दक्षिण भारत में यह विचार जनता में चल रहा है कि देश तो एक है फिर खाने के पदार्थों में यह भेदभाव क्यों। लोग सरकार से पूछते हैं कि संकीर्णता, प्रांतीयता कहां है उत्तर में अथवा दक्षिण में। क्या यह इस बात का प्रभाव नहीं कि देशवासी एक साथ नहीं सोचते। उचित यही है कि खाद्य पदार्थ सारे देश में एक ही भाव पर मिलें। ऐसा होने से सब देशवासी एकता का लाभ उठायेंगे। आर्य समाज देश के किसी भी भाग में पीड़ा होने पर सहायता के लिए निकलती रही है। क्या भूखी जनता की पुकार अब उसके कानों में नहीं पड़ रही। देश आगे कैसे बढ़ेगा? ऋषि दयानन्द का भारत कैसे पनपेगा?

अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन प्रयाग

में दिया गया श्री मिहिरचन्द्र धीमान का

अध्यक्षीय भाषण

उपस्थित सज्जनो तथा देवियो !

आप लोगों ने इस अखिल भारतीय अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन की अध्यक्षता प्रदान कर जो सम्मान मेरे प्रति प्रदर्शित किया है उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूं तथा हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

इस समय समस्त संसार में घोर अशांति छायी हुई है। उसके क्या कारण हैं ? मेरी समझ से तो विश्वव्यापी अशांति के मूल कारण मत-मतान्तरों के आपसी झगड़े ही दिखायी देते हैं, जिन्हें दूर करने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द ने आजीवन घोर प्रयास किया तथा अन्त मे अपने प्राणों तक की आहुति दे डाली। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखकर उसके चौदह समुल्लासों में से दस समुल्लासों में धर्म के व्यापक अर्थ को समझाया और शेष चार समुल्लासों में मत-मतान्तरों के असत्य प्रचार उनकी दुर्नीतियों पर प्रकाश डाला और मानव धर्म का स्वरूप बताते हुए सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में यह कहा- 'सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसीलिये उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके। यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मत वाले के भ्रमाये हुए जन जिसको अन्यथा जानें या मानें उसका स्वीकार कोई भी बुद्धिमान् नहीं करते। किन्तु जिसको आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक, पक्षपात-रहित विद्वान् मानते हैं, वही सबको मन्तव्य और जिसको नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं होता। अब जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्य्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं मानता हूं सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु जो आर्यावर्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल-चलन हैं उनका स्वीकार और जो धर्म युक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक युग में सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही सत्य सिद्धान्तों पर आधारित मानव धर्म की व्याख्या की और उस व्यापक आर्य (मानव धर्म को अपनानेके लिए कहा। इस धर्ममें विश्वास रखनेकेकारण मैं ईसाई अथवा अन्य मतों की धर्मयुक्त बातों का विरोध नहीं करना चाहता क्योंकि यह मनुष्यता से परे है, परन्तु यदि किसी मत या देश में अधर्मयुक्त चाल-चलन हैं तो उनको स्वीकार करना भी मनुष्यता नहीं कही जा सकती। अतः उसका विरोध करना आवश्यक हो जाता है।

आज विश्व दो गुटों में बटा हुआ है— एक आंग्ल-अमरीकी गुट और दूसरा साम्यवादी गुट, जिसके रहनुमा रूस और चीन हैं। आंग्ल-

अमरीकी गुट का एक मुख्य उद्देश्य ईसाइयत का प्रचार करना भी है और इसके माध्यम से वे संसार पर अपना प्रभुत्व अक्षुण रखना चाहते हैं। दक्षिणी वीयतनाम में वहां की ईसाई तथा बौद्ध जनता में जो घोर वैमनस्य फैला हुआ है, उसमें अमेरिका और चीन के स्पष्ट हाथ दिखायी दे रहे हैं। कैथलिकों ने दक्षिणी वीयतनाम मे बौद्धों के ऊपर जो अत्याचार किये थे वह मानवता का घोर अपमान था, जिसके फलस्वरूप नौ बौद्ध भिक्षुओं ने अपनी देह पर पेट्रोल छिड़क कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी थी।

ईसाई प्रचारक साम्राज्य प्रसार के अग्रदूत सदा से रहे हैं। उनके सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध उक्ति है 'First comes missionary and then machinery and then empire.' अर्थात् किसी भी देश में साम्राज्य प्रसार के लिए सर्वप्रथम ईसाई प्रचारक भेजे जाते हैं, बाद में व्यापारी अपने उद्योग-धन्धों का प्रसार करते हैं और तत्पश्चात् साम्राज्यनिर्माण का कार्य सम्पन्न होता है। भारत में ईसाइयों का पहले ऐसा ही रवैया था और इसी के फलस्वरूप सन् १८५७ में भारत में विद्रोह हुआ और स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद ईसाई भारत में फिर भी उसी रवैये को अपना रहे है। नागालैण्ड में वहां की अधिकांश जनता को ईसाई मत में दीक्षित कर तथा उन्हें उभाड़ कर भारत में पृथक् एक स्वतन्त्र ईसाई राष्ट्र घोषित करने की चेष्टा खूब जोर-शोर से चल रही है, जिसके पथ-प्रदर्शक पादरी माइकेल स्काट हैं। झारखण्ड के आदिवासी तथा गारों पहाड़ी के खासिया लोगों को भी इसी प्रकार की मंत्रणा पादरियों द्वारा दी जा रही है। मध्यप्रदेश में भी इसी प्रकार का कुत्सित प्रयास जारी है।

नागालैण्ड से जो भारत सरकार के बीच स्व० पं० नेहरू के प्रधान मंत्रित्व में समझौता हुआ था, उसमें एक बात यह भी मान ली गयी थी कि साधु समाज के सदस्यों को नागालैण्ड में जाने की अनुमति नहीं दी जायगी जिससे वे ईसाई मत के विरुद्ध अपने सिद्धांत का प्रचार कर सकें।

नियोगी कमेटी ने पादरियों के कारनामों की जांच-पड़ताल कर यह निष्कर्ष निकाला कि 'ईसाई बना लिए जाने पर नव दीक्षितों की देश और राज्य के प्रति निष्ठा के कम हो जाने का भय रहता है।' इसका ज्वलन्त उदाहरण केरल में दिखाई दे रहा है। वहां ईसाइयों, मुस्लिम लीग तथा साम्यवादियों का जोर होने के कारण धर्म-निरपेक्ष कांग्रेस सरकार की जड़ नहीं जम रही है। जिस प्रकार साम्यवादी मास्को और पेकिंग से प्रेम रखते हैं और उनको वहां की संस्कृति प्यारी है, उसी प्रकार मुस्लिम लीग को भारत से नहीं अपितु मक्का-मदीना से प्रेम है और अरब की भाषा-सभ्यता को यहां की भाषा-सभ्यता से श्रेष्ठ समझते हैं। ईसाई भी भारतीयता के नहीं अपितु पाश्चात्य संस्कृति के हिमायती हैं और वे भी कदापि भारत में आर्य अथवा वैदिक संस्कृति को फलते-फूलते नहीं देख सकते।

नियोगी कमेटी ने यह भी कहा है कि "भारत में लोगों को ईसाई बनाने का कार्य पाश्चात्य प्रभुत्व के पुनःस्थापन के निमित्त ईसाई मत के पुनर्जीवित करनेकी संसार व्यापिनी नीति का अंश प्रतीत होता है और यह कार्य आध्यात्मिक भावनाओं से प्रेरित हुआ नहीं जान पड़ता। गैरईसाई सोसाइटियों की एकता और दृढ़ता को भंग करने के लिए ईसाई अल्प संख्यकों के छोटे-छोटे भूखण्ड बनाने का ही उद्देश्य प्रतीत होता है।"

ईसाइयों की ओर से यह कहा जा रहा है कि जब भारत में साठ लाख ईसाई हैं तो वे क्यों नहीं समग्र भारत को ईसाई बनाने में

सफलीभूत हो रहे हैं।

ईसाइयों का इतिहास रक्तपात और असहिष्णुता से भरा पड़ा है। भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्व० जवाहरलाल जी नेहरू ने 'विश्व इतिहास की झलक' में लिखा है "कैथलिकों और प्रोटेस्टेएटों के सख्त मजहबी युद्ध,कैथलिकों कैलविन के अनुयायियों का मजहबी वैर-भाव और इनक्विजिशन, ये सब इस घोर मजहबी और सम्प्रदायी नजरिये के ही नतीजे थे। जरा इसका विचार तो करो। कहा जाता है कि यूरोप में ज्यादा करके प्यूरिटनों ने लाखों स्त्रियों को डायनें बतला कर जिन्दा जला डाला। विज्ञान के नये विचारों को दबाया जाता था। क्योंकि ये ईसाई-संघ के नजरिये से टक्कर खाने वाले समझे जाते थे। जिन्दगी के बारे में यह मत स्थिर और जड़ था, प्रगति का कोई सवाल ही न था।"

विश्व के सबसे महान जीवित दार्शनिक सर बरट्रैण्ड रसेल ने 'Why I am not a Christian ?' नामक अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में यह उल्लेख किया है कि ईसाइयत इन्सानियत का सबसे बड़ा शत्रु है। उनका कथन निम्नलिखित रूप में है—'In the so called ages of faith, when men really did believe the Christian religion in all its completeness, there was the inquisition with its tortures there were millions of unfortunate women burnt as witches and there was every kind of cruelty practised upon all sorts of people in the name of religion.'

(Why I am not a christian, पृष्ठ १५)

अर्थात् "तथाकथित धार्मिक युग में जब लोग वस्तुतः पूर्णतया ईसाई धर्म में विश्वास रखते थे, अत्याचार से पूर्ण इनक्विजिशन जारी था जिसके फलस्वरूप लाखों की संख्या में अभागिनी स्त्रियां डायन के रूप में जीवित जला दी गयीं और धर्म के नाम पर सभी प्रकार के लोगों पर हर प्रकार की निष्ठुरता बरती गयी।" आगे सर बरट्रैण्ड रसेल यह उल्लेख करते हैं—'I say quite deliberately that the christian religion, as organized in its churches has been and still is the principal enemy of moral progress in the world. अर्थात् 'मैं मुक्तकण्ठ से यह कहता हूं कि ईसाई धर्म, जैसा वह चर्चों में व्यवस्थित है, विश्व की नैतिक प्रगति का मुख्य शत्रु रहा है और अब भी है।

ईसाई मत में चोरी करने, झूठ बोलने, युद्ध करने, मांस खाने, व्यभिचार करने आदि शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है। मांस खाने की आज्ञा इस प्रकार दी गई है—'सब जीने चलते जानवर तुम्हारे खाने के वास्ते हैं। (पैदाइश ५-३ पृष्ठ ५३)। जो कुछ कसायबों की दुकान पर बिकता है वह खाओ। (१ कुरन्थियों १० : २५, पृष्ठ २४)।

युद्ध करने की आज्ञा इस प्रकार दी गई—'सो अब तू जा और अमालिक को मार और सब जो कुछ कि उनका हरण कर और उन पर रहम मत कर बल्कि मर्द और औरत, नन्हें बच्चे शीरख्वार और बैल, भेड़ और ऊंट और गधे तक सबको कत्ल कर। (१ सेमुअल १५/३ पृष्ठ ३६५)।

इन उद्धरणों से हमें यह स्पष्ट विदित होता है ईसाई मत भारत अथवा संसार को सुख-शांति प्रदान नहीं कर सकता, बल्कि वह आर्य (वैदिक) धर्म के द्वारा ही सम्भव है जिसका उद्देश्य—'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि' अर्थात् हम संसार के समस्त प्राणी को मित्रवत् देखें, उनसे

मित्रवत् व्यवहार करें, किसी को कष्ट न दे।'

महर्षि स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के दशम समुल्लास में लिखा है—'इन पशुओं की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त्त वा अन्य भूगोल देशोंमें बड़े आनन्दमें मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आये गौ आदि पशुओं को मारने वाले मद्यपायी राज्याधिकारी हुए तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।"

आर्य समाज का सिद्धांत श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा आचारित सर्वतन्त्र सिद्धांत आर्य (मानव) धर्म को प्रसारित कर संसार के लोगों को सुख शांति प्रदान करना है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हमारा लक्ष्य है, वह तभी संभव है जब महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित आर्योद्देश्य रत्नमाला में वर्णित मानव धर्म का भारत एवं विश्व में प्रसार हो। इनके निमित्त हमे कमर कस कर तैयार रहना है और बाधाओं से कभी भी विचलित नहीं होना है। हमें उस उद्देश्य की पूर्ति में प्राणपन से लग जाना चाहिए जैसा कि आज से ७० वर्ष पहले अमेरिका के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० ऐण्ड्रू जैक्सन ने कहा था कि "आर्य समाज वह दैविक अग्नि (Promethean Fire) है जो तब तक शांत नहीं हो सकती जब तक कि वह संसार से पाप, अत्याचार, अनाचार, अविद्या और अन्धविश्वास को जला कर भस्म न कर दे।"

ईसाइयों द्वारा पहाड़ी इलाकों के जनजातियों एवं हरिजनों के धर्म-परिवर्तन का कार्य चल रहा है, यह बड़ा आपत्तिजनक है। इससे भारतीय संस्कृति पर आघात पहुँच रहा है। इसलिए हमें आदिवासियों एवं हरिजनों में जा कर तथा उनके बीच सेवा कार्य कर एवं वैदिक धर्म का प्रचार कर उन्हें विधर्मी तथा भारतीयता का शत्रु होने से बचाना है। हमारा वेद महान् है, हमारा धर्म महान् है हमारी संस्कृति महान है। अवश्य ही हम अपने उद्देश्य में कृतकार्य होंगे। महाकवि इकबाल के शब्दों में मैं यह कहना चाहता हूँ:—

यूनान, मिश्र; रोमा सब मिट गए जहां से।
लेकिन है बाकी अब तक नामोनिशां हमारा॥
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा॥

भारत प्रजातंत्र देश है। यहां की बहुसंख्यक जनता के विचारों के अनुसार भारत सरकार के लिए कार्य करना अपेक्षित है। बहुसंख्यक जनता की भावना को कुचलना प्रजातंत्र के साथ घोर अन्याय करना है। धर्म-निरपेक्ष राज्य (Secular state) का यह कर्त्तव्य नहीं कि वह अल्पसंख्यक मतावलम्बियों के अत्याचार-अनाचारों को प्रोत्साहन दे और हिन्दुओं को संकुचित विचार-युक्त कह कर उनकी उपेक्षा करें।

भारत की बहुसंख्यक जनता गौ हत्या को देखना नहीं चाहती, पर भारत सरकार धर्म-निरपेक्षता की दुहाई दे कर इस ओर दृष्टिपात भी नहीं करना चाहती। बहुसंख्यक जनता ईसाइयों की खुराफातों को बन्द करना चाहती है, पर भारत सरकार ईसाइयों को प्रश्रय दे रही है। नागालैण्ड में वहां की जनता से समझौता करने के लिए पादरी माइकल स्काट को माध्यम बना कर उसको सबसे अधिक महत्व दिया जा रहा है, जबकि ईसाई मतावलम्बी होने के कारण वह भारतीयता का शत्रु है और नागालैण्ड को भारत से पृथक् ईसाई राष्ट्र बनाने का स्वप्न देख रहा है।

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

The Importance of Being Moral

BY BHIM SEN SACHAR

VETERAN'S WARNING

"No Social order under which moral values are at a discount can survive for any great length of time . corruption, blackmarketing, hoarding, adulteration, profiteering, exploitation and a hundred other ills are currently tearing our society .

Let us beware of flirting with vice ..

It would be difficult to come across a person who has not at one time or other in his life been assailed with questions like, Who am I? What is the purpose of my sojourn on earth? Whither am I bound?

On the answer to these ques tions depends the pattern of life which he weaves for himself It may be difficult for him to determine the origin of his journey or his ultimate destination. But the present for him is a reality and he reveals in it, with his large contacts with nature—both animate and inanimate

His first impulse is to spread, as far as he can, his sway over matter and men. He feels, he is entitled to be the lord of all that he surveys-Except when forced to admit the logic of events, he is unwilling to yield his wishes and desires to the wishes and desires of any other person.

But not for long can this abstract world last for him The world of reality is soon upon him. He feels he is but a tiny, nay, an invisible speck on the vastness of the universe that spreads all around him. Even in this wide expanse, he pants for a breath of fresh air. Everything around him smothers him. He struggles hard to get out of the icy grip of his environments. He is baffied He is dazed. He is lost.

NOT FREE TO SEIZE

To his dismay, he finds that in spite of the immeasurable quantity of gold that the world is full of, he is not free to lay his hands upon it He stands wondering at the magnificence of palatial buildings, huge stores, gigantic factories and other works of art and skill that human brain has conceived and human hand has fashioned.

He is naturallv anxious to enjoy all that nature and man have filled this universe with. But he finds that he is not the only one to have this longing. There are others, millions upon millions, who wish as he wishes, and sigh as he sighs, and yet have not the freedom to run away what they set their hearts on.

Why is all this limitation there? Who is its author? A little calm reflection will tell him that the first limitation on a man's free will to indulge in the vagaries of his heart is the naked fact that he is not almighty. Other persons. either singly or jointly, are physically more powerful than he. If he wanted to have is own way with the things of the world, he would soon find himself either deported to a place beyond the human reach or comfortably lodged at a place only to indulge in impotent rage.

MISTAKEN BELIEF

In these circumstances, he may feel tempted to invoke the aid of his intellect which he thinks is very sharp and incisive. But it would not take him long to discover that the combined intellect of the world or even of a few individuals is much sharper and more penetrating than his This puts him in the right place once more.

Humbled by the thought of his insignificance, man is forced to adopt a way of life by following which he would get every opportunity to enjoy the good things of the world and yet not come in conflict with rival claimants This marks the starting point of the conception evolution and establishment of the laws of good social conduct These laws regulate the relationship of human beings inter se and with reference to the use of material objects

The basis of these regulations is the recognition of the fact that all human beings are equal and have equal rights to enjoy what nature has given to men in abundance The fact that there is malappropriation and maldistribution of what is the common heritage of man will not in any way take away

from the basic fact that all men are entitled to equal opportunities for the enjoyment of what nature has bequeathed to us. Because we refuse to accept the fundamental fact, we find our lives haunted by misery, discord and unhappiness; although peace, joy and harmony are our normal and natural inheritance.

GOOD CONDUCT

The need for proper regulation of human relations has ever been imperative but in this age of galloping science and technology, the need for faithful observance of laws of good social conduct is absolutely unavoidable. The existence of organisations like the United Nations and the UNICEF is a vindication of the basis on which human relations should rest if sanity is to be the order of the day. Humanity is an indivisible whole and must function as such. So long as artificial divisions mar the organisation of human society, the sordid desire of one section to dominate the other cannot be eliminated. Unhealthy competition is the result. Those wanting to dominate others meet with natural resistance, giving rise to mutual distrust and hatred. Once hatred appears on the surface, everything is lost beyond redemption !

What then shall we do? Shall we despair of human destiny ? If competition is in the nature of man, then avarice and greed must hold their absolute sway in the world. But all is not as dark as it seems. We are not born to start from scratch. We have the advantage of the great guidance that is with us since time immemorial. We are not rudderless, to be swept away by the blind wind of selfishness. We have numerous noble guides to tell us how to conduct ourselves in life if we want peace and harmony to prevail in our midst.

All social philosophers are agreed that for a just social order to flourish, it is imperative that every person should be eager to do to others what he wishes others to do to him. "Love thy neighbour as thyself" is the highest watermark of social wisdom

We can not be at peace with ourselves unless we are free from the clutches of lust, anger, falsehood, hate and avarice. To be their slaves and yet be moral is a contradiction in terms. No man can claim to be moral unless he practises such common virtues as truth, continence and charity. This is the crux of good social breeding and

good social behaviour. This is what makes a man superior to lower animals. Bereft of these basic social values, life would be a dismal story of interminable sorrow and suffering, for moral practices are the very essence of our being.

MORAL VALUES

No social order under which moral values are at discount can survive for any great length of time. Before our very eyes, we have a spectacle of what can happen to human beings if strict observance of moral laws does not take place. Day in and day out, we complain of corruption, black-marketing, hoarding adulteration, profiteering and exploitation, and hundred other ills that are currently tearing our society.

A moment's thought would convince any impartial observer that this sorry state of things is due to dwindling respect for moral values. We not only disregard them but make light of them, with their obvious disastrous results. This disregard of moral values is sapping the very basis of the integrity and solidarity of our social life What is worse, it is playing with the safety and security of our country.

No people who have scant regard for moral values may be expected to be endowed with the noble sentiment of patriotism. And in the absence of burning patriotism in the hearts of the people, there is no guarantee that in an emergency they will le able to subordinate their petty personal interests to the higher interests of the community and the country. For an effective defence of the country, we need men, and "a man is no man if he is not moral."

We shall do well to take heed of this observatiou of the great philosopher Carlyle, as we are passing through a very critical period of our growth Greatness in men's souls only can make a country great Let us beware of flirting with vice.

(पृष्ठ २४ का शेष)

यह बड़े दुःख की बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत जब कि भारत में ईसाइयों का जोर कम हो जाना था, दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति के साथ उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है; जबकि ईसाई १५ अगस्त, १९४७ के बाद अपना बोरिया-बिस्तर बांध कर यहां से कूच करने वाले थे। इसका मुख्य कारण भारत सरकार की नीति ही कही जा सकती है।

भारत सरकार को यह समझना चाहिए कि 'Change of religion is the change of nationality' अर्थात् धर्म-परिवर्त्तन से लोगों की राष्ट्रीयता भी बदल जाती है और विधर्मी कभी भी इस देश का कल्याण नहीं चाह सकते। अतः भारत सरकार को इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अविलम्ब ध्यान देकर यहां की बहुसंख्य जनता की भावना को और अधिक ठेस नहीं लगने देना चाहिए। इसी में सरकार तथा जनता का हित है।

अन्त में, मैं आप लोगों को पुनः हृदय से धन्यवाद देता हूं और आप सबों की मङ्गल कामना करता हुआ अपना आसन ग्रहण करता हूं। ओ३म् शांतिः।

—मिहिरचन्द धीमान

Veda and some Fundamentals of National Progress

By Acharya Vaidyanath Shastri

The individuals are those important units which compose the society Society in its grand developed form is named as state. Society is never a complete product. It is always in process. The activities of the individuals in a society are not like that of the activities of the participants of a promenade Every individual unit bears some responsibilities and obligations. Confucius was right in his saying that in order to regulate the society units one should regulate family units and in order to regulate family units one should regulate individuals. This regulation is called the development of personality The good and well developed personality is the sign of a good nation. Individual soundness is based on the physical, mental and spiritual development of an individual. In developing an ideal personality the soundness of body, mind and spirit is a very important factor. The most essential attribute and virtue in human being is his character. It forms one of the personal perfection.

The national character is an indispensable element in the progress of a state. This uplifts the standard of the nations A well developed and powerful state may be meant by only the citizens of high character and moral standard. In the Vedic literature a most significant word is used for the man and that is Purusha. It indicates the perfection of the individual. A man physically, intellectually, spiritually and morally fit in the set of the society is called Purusha.

This word has a philosophical tinge in its meaning and therefore consists of the both sexes the man and female. Only some of the individuals who have attained such type of perfections can raise the character of the nation.

There are some fundamentals of unnegligible character in the structure of the character of a nation. If at any times these fundamentals disappear from a nation it becomes insolvent of morals and consequently declines to total downfall. Only law is not an appropriate and supreme force which could rule a nation to survive, if it has not some

moral standards. These fundamentals are (सत्यम्) The Truth and Honesty ; (बृहत्) Greatness and Generosity ; (ऋतम्) Rules and Morale ; (उग्रम्) Natural strength ; (तपस्) Austerity; with Industry and Labour ; (दीक्षा) Discipline; (ब्रह्म) Science and Arts ; and (यज्ञ) organisation and sense of sacrifice.

Though these elements are taught in the Indian scriptures and specially in Vedas, yet these have a universal character. These are essential for any nation on the globe. If these are made the code of conduct by all nationals, there could be no dissatisfaction and trouble in the nations. Nations exist and live long on these principles.

An individual is called alive till he has vitality The nation may also be alive unless it has its own vital force. A nation does not survive only on its material plannings if there is not any spiritual planning. State depends on its human force. People's force has more value than the force of matter and materials. It is called vital or organic force, the Tantra Shakti. Democracy as is significant word for a form of Government in particular and the theories of state in general, have their source in this Tantra Shakti, This force is found in human who, in the form of a living entity is known as national of a nation and citizen of a state Vitality in its interior nature enfolds seven coherents and these are: Existence, Knowledge, Harmony, Ambition of sueprmacy, Productivity Sense of justice and Search for truth They are very categorically described by the Vedic expressions. भूः, भुव , स्वः, महः, जनः तपः सत्यम

In Vedic Sandhya these constitute the Pranayam Mantra. What is Pranayama ? Pranayama makes a devotee to understand the real nature of spirit which is quite different from the matter. In an individual soul these are found in limited proportion and degree while in the universal soul they are in limitless manner and are quite pure from the mixture which is the result of the play of part on matter by the human soul.

A living being has always these seven things in him. A non-living is quite devoid of most of them Non-living element has only two of them, the existence and harmony. This vitality through the via media of individuals is found developed in the societies and states. The life of the nation depends on this.

Nowadays these have got their

roots in some superstitions in the society, which are checking the growth of individuals. They are named as circumstances, and state of affairs. Many people do not raise their heads because they are the subject of these blind beliefs. They think that it is time that makes a man do what it likes to be done, Everything will be moulded in the shape as time will mould them

But it is a sheer false belief and is such a fatal disease which should be cured without any indifference and negligence. Really time and tide does not make the man It is man that giveth a suiting turn to time and circumastances. He makes them favourable even under the tedious conditions An over-whelming odds may come against him but he can make his way through them. The great men were also faced by the circumstances but they moulded them to their own way. They changed the adversity of the time and circumstances and brought a good era on the earth. Says Mahabharata, that it is the king that can change the time and time has no power to change him. Thus under any circumstances man may make his way passable without any fear and danger.

Concluding the article here I have to say that such marvellous, golden principles for the progress of the nation are taught in the Veda and we can take inspiration from the following Atharvanic verse:—

सत्य बृहद्दतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति । सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥

Atharva XII. I. I.

Translation—The truth and honesty; greatness and generosity; rules and morale; natural strength; austerity with industry and labour; discipline; science and arts; and organisation and sacrifice govern the destiny of the nation.

May this earth, whereupon the whole past attainments of mankind are preserved and remain in plenty in store to be attained in future, yield us vast scope and oppotunities for our life-purpose.

A state to prosper, must be built on foundation of a moral character and this chracter is the principal element of its strength and the only guaranty of its permanence and prosperity

—J.L.M. Curry

आर्य संस्कृति और स्त्रियां

[श्रीमती स्नातिका सुशीला देवी]

भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं अपितु पुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता (महर्षि दयानन्द)

पुरुष और प्रकृति, ब्रह्म और जगत, नर और नारी ये युगल हैं—ब्रह्माण्ड के सृजनहार प्रखर, तेजस्वी, मूर्धा समान प्रकाशमान और द्युलोक के दिनमणि के समान पुरुष है, तथा शीतोष्ण एवं सुख-दुःखों के द्वन्द्वों में अचल रहकर चन्द्रकी चन्द्रिका की भांति -रोदधि को उछालती हुई व छलकाती हुई, सर्वसहा, पृथिवी की तरह विशाल हृदया और क्षमाशीला है स्त्री द्यौरहं पृथिवी-त्वम्। (अथर्व) पुरुष प्राण है तो स्त्री वाणी है "अमोऽहमस्मि सा त्वम्" (अथर्व) पुरुष सूर्य है तो नारी है चन्द्रमा, पुरुष समा है तो नारी ऋचा है। 'सामाहमस्मि ऋक् त्वम्' (अथर्व) पुरुष गान है तो नारी उसका ध्रुवपद है। इस प्रकार ये दोनों दूसरे के पूरक हैं, अन्योन्य आश्रित हैं और एक दूसरे के साथ सम्बद्ध हैं।

इन सब प्राकृतिक गुणों के होते हुए भी अपने अपने क्षेत्रों मे दोनों शक्तियों का महान् और स्वर्गीय महत्व होते हुए भी समय समय पर स्त्री पुरुष सम्बन्धी भावनाओं में बड़े ही विचित्र और असह्य परिवर्तन होते गये है। समाज का दृष्टिकोण बदल सा गया, असाधारण भाव साधारण हो गये, आध्यात्मिकता का माप उत्तरोत्तर अवनत होता गया। राष्ट्र के पतन के साथ ही इतिहास का पतन भी प्रारम्भ हो गया! स्त्री के दैवीय-अधिकार छीन लिये गये। स्त्री की कोमलता पुरुष के उच्छृंखल होने का साधन बन गई। मध्ययुग के कठोर इतिहास के पृष्ठ पलटते हुए तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मनुस्मृति के पवित्र भावमय निम्न श्लोक का विपरीत अर्थ करके महान् अनर्थ किये गये। श्लोक कितना सुन्दर और भावमय है देखिये—

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति।

अर्थात् कुमार अवस्था में कन्या पिता से रक्षित होती है, यौवन अवस्था में या विवाहित होकर पति से, वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करते हैं। स्त्री कभी अलग अकेली स्वतन्त्र अरक्षित होकर न रहे।

इस श्लोक से स्त्री की कोमलता का तथा उसके मूल्य का आभास होता है। मूल्यवान वस्तु को ही खूब सुरक्षित गौप्य ही रखना पड़ता है। परन्तु बड़े २ विद्वानों ने इसके वास्तविक अर्थ को न समझ कर उसकी पवित्रता का अपमान किया। उसके मूल्य को पैरों से ठुकराया उसको अविश्वसनीय समझा, उसकी स्वतन्त्रता छीन ली। उसे पुरुषों के बराबर अधिकारों के उपयुक्त न समझा। उसके आत्मिक व मानसिक विकास के विशाल द्वार पर ताला ठोक दिया। उपनयन संस्कार से वंचित रख कर सदा के लिए अविद्या के अन्धकूप में धकेल दिया। 'स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतिः' की मनगढ़न्त रचना करके वेदों के नाम से भी भ्रम उत्पन्न करने लगे। बौद्धकालीन स्थिति तो बड़ी दर्दनाक थी, बौद्ध-संघ में स्त्री जैसी पवित्र व्यक्ति को दाखिल करने की मनाही थी, बुद्ध भगवान् ने अपने ही श्रीमुख से आनन्द से जो शब्द कहे थे उससे उस समय के बड़े से बड़े विद्वानों के अन्तः प्रदेशों में देवियों के प्रति कितना सम्मान का भाव था, इसका भली-भांति अनुमान हो सकेगा। भगवान् कहते हैं और

बिल्कुल स्पष्ट कहते हैं कि—

हे आनन्द ! यदि तथागत द्वारा प्रतिपादित धर्म विषय में स्त्रियां प्रव्रज्या न पातीं तो यह धर्म चिरस्थायी होता, सद्धर्म सहस्र वर्ष तक ठहरता। लेकिन क्योंकि आनन्द ! स्त्रियां भिक्षुणी हुईं अतः अब यह धर्म चिरस्थायी न होगा, सद्धर्म ५०० वर्षों तक ही ठहरेगा।

औरों की तो बात जाने दीजिये। सर्वप्रथम उनकी माता महाप्रजापति गौतमी ने संघ में प्रविष्ट होने के लिये तीन बार आज्ञा मांगी परन्तु तीनों बार उन्हें निराश होना पड़ा। बहुत कुछ अनुनय-विनय के उपरान्त जब कृपा की तो उनके लिए भिक्षुओं की अपेक्षा कहीं अधिक कड़े नियम निर्माण किये गये। उनमें से एक यह भी था कि चाहे कोई भिक्षुणी देवी कितनी ही वयोवृद्ध क्यों न हो, चाहे सौ वर्षों की आयु वाली भी हो तो भी उसे उसी दिन के नवदीक्षित भिक्षु के लिये सन्मान सूचक अभ्युत्थान, अभिवादन आदि शिष्टाचार प्रदर्शित करने पड़ेंगे। इतने पर भी लाखों भिक्षु पुरुषों में भिक्षुणियों किंवा स्त्रियों की संख्या अधिक से अधिक ५०० ही थी। बौद्ध साहित्य के अन्तरनुशीलन से यह भी विदित होता है कि उस समय एक पत्नी-व्रत का आदर्श लुप्त हो चुका था। बड़े-बड़े राजाधिराज बहुविवाह करते थे। राजा विम्बसार की १६००० रानियों का जातक ग्रन्थों में वर्णन आता है।

यह तो हुआ मध्ययुग के पूर्वार्ध के या वेद कालीन इतिहास के कुछ थोड़े पृष्ठों का दिग्दर्शन। यदि उत्तरार्ध के पन्ने पलटाये जांय तो हृदय क्रान्ति की ज्वाला से जल उठता है और उबल उठता है। स्त्रियों पर समाज के अत्याचार और अन्यायों ने इस समय के इतिहास को इतना कलुषित कर दिया है कि इतिहास के पन्ने समाज की स्वेच्छाचारिता की कालिमा से सदा काले ही रहेंगे। इस समय भारतीय रमणी को मनुष्य की कोटि में नहीं गिना जाता था। पशु वर्ग में भी उसका स्थान सुरक्षित था या नहीं इसमें भी सन्देह रहता है। जहां समाज में उसकी कोई स्थिति न थी वहां परिवार में भी गिनती न थी। उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व ही नष्ट हो गया था। शंकराचार्य जैसे प्रगाढ़ पण्डित ने भी निस्संकोच हो कह दिया। प्रश्न –द्वारं किमेकं नरकस्य ? उत्तर—नरक का द्वार यदि देखना है तो नारी को देख लो। कितना रोमांचकारी पतन था ? और तो और तुलसीदास जी जैसे भक्त सन्त भी किनना स्पष्ट कहते हैं—

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी। स्त्रियों ने विश्व में केवल मात्र मार खाने के लिये, ठोकरें खाने के लिए लातें खाने के लिये तथा गालियां सुनने के लिये ही शायद जन्म धारण किया था। मानवजन्म धारण करते हुए भी स्त्रियां पशुओं से अधिक पतित मानी गई थीं। वे पैर की जूती के समान समझी जाती थीं। जिस प्रकार पैर की जूती जीर्णशीर्ण हो जाने पर या पुरानी हो जाने पर बदल दी जाती है इसी प्रकार स्त्री को भी बदला जाता था। सारांश यह कि दुनियां का कूड़ा कर्कट स्त्री को समझा जाता था।

हिन्दू रमणी का जीवन तो देख लिया। अब आइये सैमेटिक धर्म मे स्त्री का कैसा स्थान है उसे देखें। इस मत ने भी देवियों के विषय में बड़ी विचित्र मान्यता रक्खी है। यहूदियों की मान्य पुस्तक बाइबल के पुराने अहदनामें में लिखा है कि खुदा ने मिट्टी से गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि को बना दिया परन्तु उसमें रूह नहीं फूंकी। इसी प्रकार स्त्री को भी बनाया किन्तु उसमें भी रूह नहीं फूंकी अर्थात् आत्मा नहीं डाली। उसे जड़वत् बनाया। अन्ततः आदम को बनाकर उसमें रूह फूंकी। इसीलिए पक्के ईसाईमुसाई,औरमुहम्मदीपशुओं

और स्त्रियों को समान मानते हैं। दोनों को अनात्मा या जड़ मानते हैं। स्त्री की उत्पत्ति ही कितनी विषम मानते हैं? मुसलमान लोगों का सिद्धान्त है कि दो स्त्रियों की गवाही एक पुरुष के बराबर है। अर्थात् दो स्त्रियों के बराबर एक पुरुष की बुद्धि होती है। स्त्रियां अविश्वसनीय तथा बुद्धिहीन होती हैं। चीन के एक धुरन्धर सुधारक कन्फयुशस का कथन है कि स्त्रियों का उचित स्थान घर ही है। उसे घर के सिवा अन्य कहीं बाहर नहीं जाना चाहिए। उनसे अधिक परिचय भी नहीं बढ़ाना चाहिए। पारसी धर्म तो उसे पद पद का गुलाम बनाना चाहता है। वह कहता है कि प्रातः उठकर एक-एक काम के लिये स्त्री को चाहिए कि दस-दस बार अपने पति को पूछे। अपनी स्वतन्त्र इच्छा से कुछ न करे। कहने का अभिप्राय यही हुआ कि एक समय पारसी रमणी सेमैटिक नारी तथा हिन्दु-देवी सब की लगभग समान ही स्थिति थी। सभी समाजों ने स्त्रियों का यथाशक्ति अपमान किया, पददलित करने में कोई कसर न रक्खी।

परन्तु 'अति' का सदा विनाश हो जाता है। जब कोई कुप्रथा या दुश्चरण अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, जब किसी भी प्रकार का पतन सीमातीत हो जाता है, हद लांघ जाता है तब उसमें प्रतिक्रिया की भावना जाग्रत होती है, प्रतिकार या बदला भयंकर रूप धारण करता है। जब पाप का घड़ा छलाछल भर जाता है तब आखिरकार स्वयंमेव फूट जाता है। एक रबर जैसी निश्चेतन वस्तु भी यदि उसकी सीमा से अधिक खींची जाती है तो वह टूट पड़ती है। तो यह तो समाज है, विश्व का एक प्रधान अंग है, संस्कृति का आदि स्रोत है। उसकी सीमातीत अधोगति का भी उच्चतम परिणाम निकलना ही था। ईश्वरीय नियमानुसार इस 'अति' के अनन्तर प्रतिक्रिया की भावना उद्बुद्ध हुई। सत्य ने अपना शिव और सुन्दर स्वरूप धारण किया और प्रकाशित हो उठा।

वह समय भी आया जब स्त्रियां अपने अधिकारों को समझने लगीं, उन्हें भी आत्म-ज्ञान होने लगा। पाश्चात्य देशों में तो स्त्रियों के अधिकारों के लिए एक प्रबल आंदोलन १७९२ में मेरी वोलक्रने किया सबसे पहले इंगलैंड में और इसके लगभग ५० वर्षों के अनन्तर जेम्स स्टुअर्ट मिल ने स्त्रियों के व्यक्तित्व पर जोर शोर से अपनी कलम चलाई और इस आंदोलन को दार्शनिक सहारा दिया। इस समय पश्चिम की बहिनें अधिकांश अपने अधिकारों में फिट हो गई हैं, उन्हें नागरिकता के अधिकार भी मिल गए हैं और वे वोट भी दे सकती हैं। टर्की तथा अफगानिस्तान जैसे देशों में भी देवियों ने बुर्के उतार फैंके हैं, और वे अपने अधिकारों की, अपने व्यक्तित्व की, एवं अपने स्त्रियोचित आदर्शों का विचार करने लगी हैं। आज हमारे देश में भी देवियों ने कांग्रेस में अपने स्थान की भली-भांति पूर्ति की है, आज तो जिधर ही दृष्टिपात करें उधर ही स्त्रियों के समानाधिकार, स्वतन्त्रता आदि की खूब चर्चा सुनाई दे रही है, इन आंदोलनों या स्त्रियों को महत्ता देने का विचार कोई आज का नहीं है। वैदिक साहित्य मे स्त्रियों के महात्म्य के विषय में अनेक वर्णन आते हैं। परन्तु इस युग में देवियों को पददलन से बचाने के सर्व प्रथम विचारक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी थे। उन्होंने स्त्रियों की गिरती हुई दशा को सम्भाल लिया है। वे ही उनकी डूबती हुई नैया के कर्णधार बने। वे ही उनका वास्तविक स्वरूप और महत्ता पहचान सके, उन्होंने मार्ग खोल दिया, ईश्वरीय आदेश सुनाकर मृतप्राय स्त्री जाति को पुनर्जीवित किया। मातृशक्ति की वन्दना करने वाले वे ही एक सच्चे मातृ-भक्त निकले। एक पांच वर्ष की बाला के सामने भी श्रद्धा और भक्ति से वे अपना मस्तक नवा देते थे। क्योंकि

भविष्य में उसने माता बनना है, पुरुष को जन्म देना है। उस विश्वनिर्मात्री शक्ति की दुर्दशा उनके नेत्रों को सदा सजल रखती थी और उनके अन्तर में एक तमन्ना पैदा हो गई थी स्त्री जाति के उत्थान की—पददलित जाति की उन्नति का श्रीगणेश करने की। उनके विचारों का स्रोत वेद है, इस लेख में हम अति संक्षेप से वेदों में स्त्रियों के सम्बन्ध में कैसे विचार हैं। उनका दो शब्दों में वर्णन करने का प्रयत्न करते हैं।

अब हम मध्ययुग में आर्य रमणियों, सेमेटिक मतावलम्बी देवियों, मुस्लिम तथा पारसी स्त्रियों के लिये उनके समाज में जो भाव थे और उन्हीं के विरुद्धया उसी सम्बन्ध में हमारे वेदों में क्या विचार आते हैं उन्हें देखने का यत्न करेंगे। सैमैटिक मत कहता है स्त्रियों में आत्मा नहीं, वे जड़वत् हैं, परन्तु क्या पुरुषों की भांति स्त्रियां अनुभव नहीं करतीं? तर्कना नहीं करतीं? विचार नहीं करतीं? क्या ये सब आत्मा के विषय नहीं? आत्मिक बल के बिना वह माता बन ही नहीं सकती, आत्म-न्वती हुए बिना वह आत्मा वाले पुरुषों को उत्पन्न कर ही नहीं सकती। यदि स्त्री आत्म हीन है तो उसकी सन्तति में आत्मा कहां से आ सकती है? तो फिर पुरुष भी आत्म-हीन ही होंगे। परन्तु हमें इन तर्कों में नहीं पड़ना, अथर्ववेद का एक मन्त्र इस विषय में क्या ही सुन्दर ध्वनि करता है—

"आत्मन्वत्युर्वरा नारीयमागन् तस्यां नरो वप। बीजमस्याम्।"

अर्थात् (आत्मन्वती) आत्मिक बल से युक्त, (उर्वरा) उत्तम सन्तान उत्पन्न करने वाली यह (नारी) स्त्री (आगन्) आगई है (हे नर!) मनुष्यो! इस स्त्री में (बीजं वपत) बीज बोओ।

इससे स्पष्ट है कि स्त्री में आत्मा है। सह है, अनात्मवस्तु आत्मा को उत्पन्न नहीं कर सकती, आत्मा की सर्जक शक्ति "अनात्म" नहीं हो सकती। स्त्री 'आत्मदा' है, आत्मा को देने वाली है जो वस्तु स्वयं अपने पास न हो वह दूसरे को कैसे प्रदान की जा सकती है? स्त्री के बिना तो पुरुष आधा है, तथैव पुरुष के बिना स्त्री आधी है, दोनों मिलकर ही पूर्णांग बन सकते हैं। दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं और दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। शतपथ ब्राह्मण में आता है—

'आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः। सोऽहमस्मि इत्यग्रे व्याहरत् ततः अहं नामाभवत्। स न रेमे। तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत्। सहैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ संपरिष्वक्तौ स इममात्मानं द्वेधापातयत्। ततः पतिश्च पत्नी चाभवताम्।'

इस प्रकार पति और पत्नी एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। इस बात को यह संदर्भ कितने सुन्दर अलंकार से वर्णन कर रहा है। इसलिए जो अधिकार पति के अर्थात् पुरुष के हैं वे स्त्री के भी होने चाहिए। जब वह अनात्म वस्तु नहीं है, पुरुष की भांति आत्मावाली तथा उसकी पूरक भी है तो उसे भी मनुष्यता का उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व का, तथा अपने क्षेत्र पुरुष के बराबर ही अधिक है वैसे तो स्त्री और पुरुष की प्राकृतिक उत्पति में ही विभेद है। उस विभेद के अनुसार स्त्री को गृह के अन्तर्वि-भाग का तथा पुरुष को बाह्य विभाग का क्षेत्र सम्भाल लेना चाहिए। परिवार में उसका भी उच्च स्थान होना चाहिए। परन्तु हम देखते हैं कि स्त्रियों को पशु के समान, दासी के समान समझा जाता रहा है। वस्तुतः वह तो घर की रानी है दासी नहीं। अथर्व वेद में इस सम्बन्ध में एक मन्त्र आता है कि—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥

ऋषिदयानन्द और बोधोत्सव

[श्री प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार]

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भाग्य एक नया मोड़ ले रहा था। सदियों से सुप्त पड़ी इस देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ सुषुप्ति से जागृति की तरफ प्रगति की तरफ अग्रसर हो रही थी। इस जागृत चेतना की अभिव्यक्ति का क्या रूप था? सदियों से सोई पड़ी यह चेतना जब भारत के नव प्रभात में अंगड़ाई लेकर आंख खोलने लगी, तब १७७२ में बंगाल में राजाराम मोहनराय ने और १८३४ में रामकृष्ण परमहंस तथा उसी काल के आस-पास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया, १८२४ में गुजरात में महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया, १८६३ में मद्रास में थियोसोफिकल सोसाइटी ने जन्म लिया, १८८४ में महाराष्ट्र में प्रार्थना-समाज ने और दक्खन एजूकेशन सोसाइटी ने जन्म लिया और इसी कालमें मुसलमानों में चेतना के संचार के लिये सर सैयद अहमद ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियां थीं और इस देश के नव-निर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की इस देव-भूमि का सदियों का संकट काटने के लिए प्रकट हुई थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उनमें से ऋषि दयानन्द का बोधोत्सव पर्व हम आज मना रहे हैं। ऋषि दयानन्द आये, वे समय के दास बनकर नहीं आये, समय को अपना दास बनाने के लिये आये। महापुरुष वही कुछ करते हैं। हम समझते हैं कि हमें जमाने के अनुसार चलना है, महापुरुष जमाने की गर्दन पकड़ कर उसे अपने अनुसार चलाते हैं। वे खुद नहीं बदलते, जमाने को बदलते हैं। एक समाजशास्त्री ने कहा है कि यह जीवन एक ललकार है, एक चेलैंज है, आह्वान है। साधारण लोग इस ललकार को सुन कर, इस चेलैंज और इस आह्वान को देखकर जीवन-संग्राम से भाग खड़े होते हैं, जमाने का रंग पकड़ लेते हैं, महापुरुष जीवन की ललकार का, जीवन के आह्वान का उत्तर देते हैं, वे इस चेलैंज का जवाब देते हुए जीवन की समस्याओं के साथ जूझ जाते हैं, जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं, परन्तु इस संघर्ष में पीठ नहीं दिखाते। जमाने का रंग पकड़ने के स्थान में जमाने को रंग से रंग देते हैं, जमाने को पलट देते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों तरफ से ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों तरफ चेलैंज ही चेलैंज नजर आये। सबसे बड़ा चेलैंज था विदेशी राज्य का। उनके सामने ललकार उठी—क्या विदेशी राज्य को बर्दाश्त करोगे? ऋषि दयानन्द की आत्मा ने जवाब दिया—विदेशी राज्य को बर्दाश्त नहीं करूंगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिये तैयार करना शुरू किया। ऋषि दयानन्द के जीवन का बहुत बड़ा भाग राजस्थान के राजाओं को संगठित करने में बीता।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन की गतिविधियों का उल्लेख करते हुए सिर्फ १८५६ तक का विवरण दिया है। १८५७-५८-५९ के तीन वर्षों में वे क्या करते रहे इसका उल्लेख उनके जीवन में नहीं मिलता। ये गदर के वर्ष थे। इस समय उनकी आयु ३३ वर्ष की थी। उन जैसा धधकता अंगारा इस आयु में क्या क्या करता रहा कहां-कहां चिनगारियां लगाता रहा, कहां-कहां आग सुलगाता रहा, यह अंधकार में

छिपा है, परन्तु इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि ऐसे अवसर पर वह चुप करके नहीं बैठ सके होंगे।

१८७३ में इस देश के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक थे। कलकत्ता के लार्ड बिशप ने लार्ड नार्थब्रुक तथा ऋषि दयानन्द में एक भेंट का आयोजन किया। इस भेंट में दोनों में जो बातचीत हुई उसका विवरण लार्ड नार्थब्रुक ने अपनी डायरी में किया। यह डायरी लंडन में इंडिया-हाऊस में आज भी सुरक्षित है।

लार्ड नार्थब्रुक ने कहा—पंडित दयानन्द, आप मत-मतान्तरों का खंडन करते हैं। हिन्दुओं, ईसाइयों, मुसलमानों के धर्म की आलोचना करते हैं। क्या आप को अपने विरोधियों से किसी प्रकार का खतरा नहीं है? क्या आप सरकार से किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं चाहते?

ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया—अंग्रेजी राज्य में सब को अपने विचार प्रकट करने की पूरी स्वतन्त्रता है इसलिये मुझे किसी से किसी प्रकार का खतरा नहीं है। इस पर खुश होकर गवर्नर जनरल ने कहा कि अगर ऐसी बात है तो आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी राज के उपकारों का वर्णन कर दिया कीजिये। अपने व्याख्यान के प्रारम्भ में जो आप ईश्वर-प्रार्थना किया करते हैं, उसमें देश पर अखण्ड अंग्रेजी शासन के लिये भी प्रार्थना कर दिया कीजिये।

यह सुनकर ऋति दयानन्द ने उत्तर दिया—श्रीमान् जी, यह कैसे हो सकता है? मैं तो सायं प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासता से शीघ्र मुक्त करे।

लार्ड नार्थब्रुक ने इस घटनाका उल्लेख अपनी उस साप्ताहिक डायरी में किया जो वे भारत से प्रति सप्ताह हर मैजेस्टी महारानी विक्टोरिया को भेजा करते थे। इस घटना का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि मैंने इस बागी फकीर की कड़ी निगरानी के लिये गुप्तचर नियुक्त कर दिये हैं।

देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सन्मुख चैलेंज बनकर नहीं खड़ी थी, वे अपने समाज में जिधर नजर उठाते थे उन्हें चैलेंज ही चैलेंज दीख पड़ते थे, उनके कान में देश की समस्याओं की ललकार ही ललकार सुनाई पड़ती थी। वे महा-पुरुष इसीलिये थे क्योंकि वे किसी चैलेंज को सामने देखकर दम तोड़ कर नहीं बैठते थे, किसी ललकार को सुनकर चुप नहीं रहते थे। समाज की हर समस्या से वे जूझे, हर फ्रंट पर डटे, और हर मैदान, हर अखाड़े में छाती तान कर खड़े रहे। कौन सी समस्या नहीं थी जो इस देश के महावृक्ष को घुन की तरह नहीं खा रही थी। स्त्रियों को पर्दे में बन्द रखा जाता था, उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं था। ऋषि दयानन्द ने रूढिवादी समाज की इस ललकार का उत्तर दिया। ऋषि दयानन्द ने पहले-पहल आवाज उठाई कि स्त्रियों को वे सब अधिकार हैं जो पुरुषों को हैं। जैसे वेद मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले पुरुष ऋषि हैं, वैसे वेद मन्त्रों का साक्षात् करने वाली स्त्री-ऋषिकाएं भी हैं। लोपामुद्रा, श्रद्धा, विश्ववारा, यमी, घोषा आदि स्त्री ऋषिकाओं के नाम पाये जाते हैं ऋषि दयानन्द ने 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्' के नारे को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। 'शूद्र' संज्ञा देकर समाज के जिस वर्ग के साथ हम अन्याय तथा अत्याचार कर रहे थे, जिन्हें हमने मनुष्यता के अधिकारों से भी वंचित कर दिया था, उनके अधिकारों की रक्षा के लिये वे उठ खड़े हुए। ऋषि दयानन्द ने सामाजिक व्यवस्था के लिये एक नया दृष्टिकोण दिया। उन्होंने जन्म की जात-पांत को मानने से इन्कार कर दिया। जब जन्म से जात-पांत

ही नहीं, न कोई जन्म से बड़ा न जन्म से छोटा। तब शूद्र कौन और अछूत कौन ? समय था जब समाज के एक वर्ग के लिये 'अछूत' शब्द का प्रयोग किया जाता था। आज हम उसके लिये 'हरिजन' शब्द का प्रयोग करते हैं। परन्तु किसी को हम 'अछूत' कहें, या 'हरिजन' कहें—अर्थ दोनों का एक ही है, वह हमसे अलग है, एक पृथक् वर्ग का है, हमारे समाज का हिस्सा नहीं। आर्यसमाज ने 'अछूत' शब्द का प्रयोग नहीं किया, 'हरिजन' शब्द का प्रयोग भी नहीं किया। आर्यसमाज ने 'दलित' शब्द का प्रयोग किया। 'दलित'—अर्थात्, जिसे मैंने दल रखा है, जिसके अधिकारों को मैंने ठुकरा रखा है। 'अछूत'—शब्द में जिसे 'अछूत' कहा गया उसे बुरा माना गया, 'दलित'—शब्द में वह बुरा नहीं माना गया, मैंने दूसरे को दबाया इसीलिये बुरा माना गया। ये दोनों शब्द एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, परन्तु दोनों में दृष्टिकोण कितना भिन्न हो जाता है। आर्यसमाज ने इस बात को समझा कि जब हम 'अछूत'—शब्द का, या 'हरिजन'—शब्द का प्रयोग करते हैं, तब हम समाज की समस्या को समस्या ही बने रहने देते हैं, चैलेंज चैलेंज ही बना रहता है। यही कारण है कि पहले 'अछूत' एक वर्ग बना हुआ था, अब 'हरिजन' एक वर्ग बन गया है, और वह समाज के एक पृथक् वर्ग के तौर पर अपने अधिकार मांगता है। जब तक हम 'अछूत' या 'हरिजन' बने रहेंगे तभी तक तो विशेष अधिकारों की मांग कर सकेंगे, इसीलिये जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं उस पर तो 'अछूत' या 'हरिजन' बने रहना नफे का सौदा है। आज अनेक ब्राह्मण बालक अपने को 'अछूत' या 'हरिजन' कहलाना पसन्द करते हैं क्योंकि उससे उन्हें छात्रवृत्ति मिलती है, राजनीति के अखाड़े के अनेक उम्मीदवार अपने को 'अछूत' या 'हरिजन' सिद्ध करने के लिये अदालतों में दौड़ते हैं क्योंकि इससे उन्हें असेम्बली या पार्लियामेन्ट की मेम्बरी मिलती है। परन्तु इससे क्या समाज की समस्या हल होगी ? ऋषि दयानन्द इस समस्या से जूझे थे। उन्होंने समाज के शब्द-कोष से 'अछूत'—शब्द को ही हटा दिया था।

समाज जीता-जागता एक चैलेंज है. चारों तरफ से ललकार है, आह्वान है, पुकार है। हम इस चैलेंज का जवाब इस ललकार और आह्वान का प्रत्युत्तर देंगे या नहीं देंगे ? हम समाज के चैलेंज को देखते हुए भी नहीं देखते, ललकार को सुनते हुए भी नहीं सुनते। शरीर में पीड़ा हो, उसे जो अनुभव न करे वह जीवित नहीं मृत है, समाज के शरीर में रोग हो, उसे जो दूर करने के लिये छपपटाने न लगे वह मृत-समान है। ऋषि दयानन्द ने समाज के शरीर की पीड़ा को, इसके रोग को अनुभव किया, इसीलिये वे जीवित थे। उन्हें तो अपने समय का सारा समाज एक चैलेंज के रूप में दीखा। हिन्दुओं का रूढ़िवाद एक महान् चैलेंज था। जहां देखो वहां प्रथा की दासता, रूढ़ि की गुलामी। जो चला आ रहा है उससे इधर नहीं हो सकते, उधर नहीं हो सकते। ऋषिदयानन्द ने रूढ़िवाद की इस थोथी दीवार को एक धक्के में गिरा दिया। अगर हिन्दू-धर्म उन्हें एक चैलेंज के रूप में दीख पड़ा तो ईसाइयत और इस्लाम भी उन्हें चैलेंज देता हुआ दीख पड़ा। हिन्दुओं की जड़ जहां अपने कर्मों से खोखली हो रही थी, वहां ईसाइयत तथा इस्लाम भी उसे कमजोर करने में कुछ उठा नहीं रख रहे थे। ऋषि दयानन्द जहां अपनों से जूझे, वहां बाहर वालों से भी उसी तरह से जूझे। वे हिन्दुओं से, ईसाइयों से, मुसलमानों से—सबसे जूझ पड़े। दुनियां भर के गन्द को जला डालने की उनमें हिम्मत थी।

वह एक सूरमा थे जो दुनियां भर के रूढ़िवाद से टक्कर लेने के लिये उठ खड़े हुए थे।

ऐसे लोग दुनियां को बदल देने के लिये पैदा हुआ करते हैं। वे आते हैं, एक नई लहर चला जाते हैं, संसार को एक नया दृष्टिकोण दे जाते हैं। पुराना —जड़वाद उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता, और वे उस पुराने जड़वाद को बर्दाश्त नहीं कर सकते। वे जहर उगलते हैं, आग बरसाते हैं, कूड़े-कर्कट को राख करते चले जाते हैं। लेकिन यह दुनिया भी ऐसी है कि उन्हें देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकती। वे भी इसके लिये तैयार होते हैं। सुकरात अपने जमाने को बदलने के लिये आया था, उसे जहर का प्याला पीना पड़ा। ईसा मसीह एक नई दुनियां का सपना लेकर आया था, उसे जिन्दा सूली पर लटक जाना पड़ा। दयानन्द अपने देश और जाति को नये ढांचे में ढालने को आया था, उसे दूध में पिसा हुआ कांच पीकर प्राण गंवाने पड़े। गांधी एक नया संसार बना रहा था, उसे गोली का शिकार हो जाना पड़ा। दुनियां, दुनियां को बदल देने वालों को बर्दाश्त नहीं करती, परन्तु जहर देने वाले, गोली चलाने वाले, तलवार उठाने वाले देखते हैं, और हाथ मल-मल कर देखते हैं कि जहर पीकर, गोली खाकर और प्राण देकर जो चले जाते हैं वे अपने पीछे एक ऐसी शक्ति छोड़ जाते हैं जो एक नवीन संसार का निर्माण कर देती है, एक नई दुनियां बना देती है। ऋषि दयानन्द भी अपने जमाने से जूझे, जमाने ने उन्हें जहर दे दिया, लेकिन जहर पीने के बाद विदाई की वेला में उनसे जो शक्ति की धारा फूटी उसने सदियों से ऊसर पड़ी हुई इस भूमि का नक्शा ही बदल दिया। परमात्मा करे, हमारा देश भारत, महर्षि दयानन्द के सपनों का साकार रूप होकर महानता में हिमालय-सा, पवित्रता में गंगा-सा और विश्व में शान्ति की धारा बहाने में चन्द्रमा-सा उठ खड़ा हो।

मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बड़े समाज-संस्कर्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा समयानुकूल भाष्यकर्त्ता और आर्य संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्त्ता थे। उन्होंने जिस समाज की संस्थापना की उससे भी अपने देश, अपने धर्म्म और अपनी भाषा को बहुत लाभ पहुंच रहा है। मैं स्वामी जी की विद्वत्ता और उनके कार्य-कलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिह्न समझता हूं। उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रह कर मेरी आत्मा को बल का तथा मेरे बैठने के कमरे को शोभा का दान देता रहा है।

—(स्व०) महावीर प्रसाद द्विवेदी

सार्वदेशिक के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में विवरण

फार्म ४

नियम ८

(प्रेस ऐंड रजिस्ट्रेशन आव बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान —	महर्षि दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
प्रकाशन का समय —	प्रत्येक मास की २ तारीख
प्रिंटर का नाम—	रघुनाथ प्रसाद पाठक
राष्ट्रियता —	भारतीय
पता —	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-१
प्रकाशक—	रघुनाथ प्रसाद पाठक
राष्ट्रियता—	भारतीय
पता —	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान, नई दिल्ली १
सम्पादक के नाम—	१ —मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-श्रीयुत ला० रामगोपाल जी शालवाले २ — सहायक—रघुनाथ प्रसाद पाठक
राष्ट्रियता पता	पूर्ववत्
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है, भागीदार या हिस्सेदार है सम्पूर्ण पूजी के १ प्रति शत से अधिक हिस्से रखते है उनके नाम व पते।	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलील। मैदान), नई दिल्ली-१ (पत्र की स्वामिनी)

मै रघुनाथ प्रसाद पाठक इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हू कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

दिनाक
१८-२-६४

प्रकाशक के हस्ताक्षर
रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का विशेष अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाकी अन्तरंग का एक विशेष अधिवेशन ७-२-६५ को महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में सभा प्रधान श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास की अध्यक्षता में हुआ। सर्व श्री डा० डी० राम जी (बिहार), मिहिरचन्द्र जी धीमान (बंगाल), रामनारायणजी शास्त्री (बिहार), पं० वासुदेव जी शर्मा (बिहार), श्री महेन्द्रपाल जी (ईस्ट अफ्रीका), विष्णु देव जी मेघराज (मौरीशस), प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० (उत्तर प्रदेश लाο रामगोपाल जी शालवाले, श्रीमती शकुन्तलाजी गोयल (मेरठ), पं० अमरसिंह जी आर्य (सिन्ध), बालमुकन्द जी आहूजा, धर्मजितजी जिज्ञासु (मद्रास), पं० शिवकुमार जी शास्त्री, ने भाग लिया।

श्री बलदेव भाई आर्य, चंचल बहिन, मुनि मेघाव्रत जी, मधुसूदन राव जी, पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, धर्मपत्नी श्री महाशय कृष्ण जी, धर्म पत्नी डा० सत्यप्रकाश जी डी० एस० सी०, (प्रयाग), राजमाता शाहपुरा राज, चम्पालालजी पोद्दार के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

ईसाई प्रचार निरोध कार्य

ईसाई प्रचार निरोध के कार्य को स्वतन्त्र रूप से विशाल पैमाने पर करने का निश्चय किया गया। सभा ने इस कार्य के लिये एक उपसमिति नियुक्ति की है जिसके संयोजक सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी हैं।

आसाम, राजस्थान, त्रिपुरा, छोटा नागपुर, महुआ डान्ड, पलामू, हजारीबाग, राउर केला, सुन्दरगढ़, आदि आदि में दयानन्द सेवाश्रमों के नाम से प्रचार केन्द्रों का जाल बिछा देने और पूर्व से हो रहे कार्य की प्रगति को तेज करने की योजना बनाई गई।

पाखण्ड खण्डिनी शताब्दी

सम्वत् २०२४ में हरिद्वार मे सार्वदेशिक स्तर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका की शताब्दी मनाने का निश्चय हुआ। इस महोत्सव के उपयुक्त नाम और पुरोगम का निर्धारण करने के लिए एक समिति बनाई गई है।

विश्व धर्म सम्मेलन दिल्ली

२६, २७ और २८ फरवरी को देहली में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में आर्य समाज को ओर से श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री सम्मिलित होकर निबन्ध पढ़ेंगे और वाद-विवाद में भाग लेंगे।

भारत सरकार को बधाई

सभा ने एक विशेष प्रस्ताव के द्वारा भारत सरकार को २६ जनवरी से राज्य तथा सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी के प्रचलन की घोषणा करने पर बधाई दी और दक्षिण भारत में द्रविड़मुन्नेतरमूकड़गम तथा हिन्दी विरोधी तत्त्वों ने मिलकर जो अशान्ति व्याप्त की है उस पर खेद और चिन्ता प्रकट करते हुए भारत सरकार से अनुरोध किया है कि वह दृढ़ नीति का अवलम्बन और उपद्रवी तत्त्वों का कड़ाई के साथ दमन करे।

भारत सरकार से मांग

सभा ने भारत सरकार से मांग की है कि पंजाब को भी हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश घोषित करे जहां ७० प्रतिशत प्रजा की मातृ भाषा हिन्दी

है। प्रशासन में हिन्दी को समुचित स्थान देने की मांग की गई।

सभा ने कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज के उस वक्तव्य को दुर्भाग्यपूर्ण बताया जिसमें उन्होंने केरल के लोगों को यह परामर्श दिया बताते हैं कि सरकार से कोई पत्र उन्हें हिन्दी में मिले तो उसे फैंक दें।

बनवासी जातियां और ईसाई पादरी

एक प्रस्ताव में कहा गया है कि भारत की तथाकथित आदि जातियां अपनी धार्मिक परम्पराओं से हिन्दू हैं। अतः जो सुविधाएं भारत सरकार ने इन जातियों को दे रखी हैं, उन्हें धर्म परिवर्तन कर लेने पर प्राप्त करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं रहता। भारत सरकार को प्रेरणा की गई है कि इन जातियों के नाम पर ईसाई मिशनरियों को जो आर्थिक सुविधा दी जाती है वह तुरन्त बन्द की जाय।

नागालैंड में शान्ति वार्त्ता का कार्य सरकार स्वयं करे

भारत सरकार से मांग की गई है कि नागालैंड में पादरी माइकल स्काट और श्री जयप्रकाश नारायण के माध्यम से जो शांति वार्त्ता चलाई जा रही है उससे देश को बड़ी क्षति पहुंची है और विघटनकारिणी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला है। भारत सरकार से अनुरोध किया गया है कि इन दोनों को हटाकर शान्तिवार्त्ता का कार्य सरकार स्वयं अपने हाथ में ले।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विवाद के सम्बन्ध में सभा ने निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया।

निश्चय सं० ३ विज्ञापन का विषय सं० ३—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सम्बन्धी प्रधान जी के निर्णय की अवहेलनापूर्वक पंजाब सभा की अवैधानिक कार्यवाही पर विचार तथा भावी कार्यवाही के निश्चय का विषय प्रस्तुत हुआ। गम्भीर विचार विमर्श के पश्चात निश्चय हुआ कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी के आदेश के विपरीत पंजाब सभा का अधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन चर्खीदादरीमे हुआ। सार्वदेशिक सभा ने पाकसभा (रोहतक) में २४-११-६३को हुए अधिवेशनको अवैध माना है। पाकसभा अधिवेशन मे निर्वाचित अवैध अधिकारियों द्वारा चर्खी दादरी का अधिवेशन २८-११-६४ को हुआ। अतः चर्खी दादरी में हुआ निर्वाचन स्वतः अवैध है। इसके फलस्वरूप पाकसभा अधिवेशन से पूर्व पंजाब सभा के अधिकारियों को ही पंजाब सभा के विधिवत् संचालन का अधिकार स्वतः प्राप्त है। अतः उन्हें आदेश देती है कि वे यथा शीघ्र विधिवत् पंजाब सभा के संचालन की व्यवस्था करें।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

इस वर्ष २ अप्रैल १९६५ को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जायगा।

इस दिवस को समारोह पूर्वक मनाने के लिए आर्यसमाजों को अभी से तय्यारी आरम्भ कर देनी चाहिए और सार्वदेशिक सभा की वेद प्रचारार्थ धन की अपील को सफल बनाने का आयोजन विशाल पैमाने पर करना चाहिए।

'दिवस' का कार्य-क्रम शीघ्र ही परिपत्र के द्वारा सभा कार्यालय से प्रचारित किया जायगा।

रामगोपाल
मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा दिल्ली

विविध समाचार

हैदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के अन्तर्गत आर्य समाज उदगीर की व्यवस्था अनुसार अमर शहीद पं० श्यामलाल जी का बलिदान रौप्य महोत्सव समारोहपूर्वक दिनांक ३१ जनवरी से ७ फरवरी ६५ तक उदगीर जिला उसमानाबाद में मनाया गया। समारोह का आयोजन स्टेशन के समीप श्यामलाल स्मारक आर्य विद्यालय के नव निर्मित प्रांगण में किया गया था। लगभग १०,००० लोगों के पण्डाल में बैठने की व्यवस्था की गई थी।

इस समारोह में श्री पं०प्रकाशवीरजी शास्त्री सदस्य लोक सभा, आचार्य पं० कृष्ण जी, श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान सभा के अतिरिक्त श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी सदस्य विधान सभा आन्ध्र प्रदेश, पं० कृष्णदत्त जी एम०, ए० पं० खण्डेराव जी बी० ए०, पं० शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट, पं० डी आर० दास जी, श्री विनायकरावजी पाटिल अध्यक्ष महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस, पं० प्रेमचन्द्र जी "प्रेम", श्री पं० नरदेव जी स्नेही, और पं० प्रह्लाद जी व श्री तुलसीराम जी कामड़े सदस्य लोक सभा एवं श्री शंकरराव जी चाकूरकर अध्यक्ष नगरपालिका उदगीर ने सम्मिलित होकर इस अधिवेशन को तथा अन्तर्गत होने वाले सम्मेलनों को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के अनुसार प्रति दिन प्रातः बृहद् यज्ञ व भजन और तत्पश्चात् वेदोपदेश और मध्याह्न में उप सम्मेलन एवं सायं खुला अधिवेशन होता रहा है। ३१ जनवरी ६५ को मध्याह्न में आर्य नेताओं की बृहद् शोभायात्रा निकाली गई। जुलूस ने नगर के मुख्य मार्गों से घूमता हुआ पंडाल वापिस पहुंचकर बृहद् अधिवेशन का रूप धारण कर लिया। शोभायात्रा जिन-जिन मार्गों से चली उन्हें कमानों तथा झण्डियों इत्यादि से सुसज्जित किया गया था। इस बृहद् अधिवेशन में आचार्य पं० कृष्ण जी, पं० नरेन्द्र जी, श्री शेषराव जी वाघमारे, पं० डी० आर० दास० जी, और पं० कृष्णदत्त जी एम० ए० ने सम्बोधित किया। इन वक्ताओं ने हुतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। इस समारोह में इस क्षेत्र के एक सहस्र के लगभग मन्त्री, प्रधान तथा समाजों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

समारोह के द्वितीय दिन प्रातः यज्ञ के पश्चात् आचार्य कृष्ण जी का वेदोपदेश हुआ और मध्याह्न में पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा, व उपप्रधान सार्वदेशिक सभा देहली की अध्यक्षता में मराठवाड़ा और दूसरी समाजों के प्रधान, मन्त्री तथा कार्यकर्ताओं का एक "कार्यकर्ता सम्मेलन" आयोजित किया गया जिसमें पांच सौ से अधिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सम्मेलन में पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् आगामी कार्यक्रम पर विचार किया गया। सम्मेलन में आर्यसमाज के कार्य को विस्तार देने के लिए पं० नरेन्द्र जी, श्री शेषराव जी वाघमारे, पं० कृष्णदत्त जी एम० ए०, श्री पं० वालरेड्डी जी तथा श्री देवदत्त जी एडवोकेट, पं० गोपालदेव जी शास्त्री, पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा और श्री शंकरराव जी टोपे ने अपने-अपने

विचार व्यक्त किए। अन्त में पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "आर्य समाज प्रारम्भ से ही बुराइयों से लड़ता हुआ चला आ रहा है और सरकार को विवश करता है कि वह बुराइयों के निवारण में क्रियात्मक पग उठाए। साथ ही आपने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज ने खूब बढ़-चढ़कर कार्य किया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा मे मौलिक-कार्य किए जाएं। विद्यालयों से अधिक छात्रावास की स्थापना अधिक उपयोगी होगी। आपने आगे कहा कि भारतवासी आज धर्म के वास्तविक रूप से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में बृहद् यज्ञों का आयोजन किया जाकर धर्म के प्रति भावना जागृत की जानी चाहिए। आगे श्री शास्त्री जी ने कहा कि आर्यसमाजियों को समाज मन्दिर की पवित्रता का भी पूर्णतः ध्यान रखना चाहिए। हुतात्माओं की स्मृति में इस प्रकार के समारोहों का आयोजन आर्य समाज के कार्य के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा। श्री शास्त्री जी ने कहा कि आर्य समाज को चाहिए कि वह देश में बढ़ती हुई सांप्रदायिकता और प्रान्तीयता के निवारणार्थ प्रयत्नशील हो और स्वयं को इस दल-दल से बचाए रखे।

तृतीय दिवस ७ फरवरी ६५ को प्रातः यज्ञ के पश्चात् वेदोपदेश हुआ और मध्याह्न में श्यामलाल स्मारक आर्य विद्यालय उदगीर का वार्षिक समारोह श्री वेदकुमार जी वेदालंकार एम० ए० की अध्यक्षता में मनाया गया। वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी एम० एल० ए० ने विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किए। सायं बृहद् अधिवेशन में श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान सभा, श्री आचार्य कृष्ण जी तथा पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा के भाषण हुए। पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने चेतावनी दी कि ईसाई मिश्नरीज की प्रचार शैली से तथा देश में छुपे पाकिस्तानी एजेन्टों से सावधान रहा जाए। अन्यथा देश की स्वतन्त्रता और सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

श्यामलाल बलिदान रौप्य महोत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की ओर से हुतात्मा श्यामलाल जी की लगभग सवा सौ पृष्ठों की जीवनी तथा रंगीन क्यालेन्डर एवं "आर्यजीवन" का विशेषांक भी प्रकाशित किया गया था।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

महाविद्यालय ज्वालापुर का ५७वां वार्षिक महोत्सव इस वर्ष वैसाखी के शुभ पर्व के अवसर पर चैत्र शुक्ला ९, १०, ११, १२ सम्वत् २०२२ वि० तदनुसार दिनांक १०, ११, १२, १३ अप्रैल सन् १९६५ दिन शनि, रवि, सोम तथा मंगल वार को गुरुकुल की परम रमणीय भूमि में बड़े समारोहपूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण एवं शिक्षाप्रद सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। आर्यजनताकी सेवामें सप्रेम निमन्त्रणहै कि उक्त अवसर पर इष्ट मित्रों सहित पधार कर अभ्यागत साधु संन्यासी, महात्मा, योग्य विद्वान्, अनुभवी, शिक्षाशास्त्री, संगीत कला विशेषज्ञ, उपदेशक, महोपदेशक, प्रचारकों के सद्विचार एवं उपदेश श्रवण कर धर्म लाभ उठावें और अपनी हरिद्वार यात्रा को सफल बनावें।

शिवकुमार शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता

प्रन्तीय आर्य महिला सभा देहली का प्रस्ताव

"प्रान्तीय आर्य महिला सभा दीवान हाल देहली के तत्वावधान में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आ० स० पटेलनगर नई देहली में आयोजित यह सभा राष्ट्रीय एकता के लिए १९५० के संविधानानुसार १९६५ में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में लागू करने पर प्रान्तीयता के मोह में पड़कर, इसका विरोध करने वाले तत्वों की निन्दा करती है तथा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा में कड़ी तथा सुदृढ़ नीति अपनाए।

सावित्री देवी मंत्रिणी

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१ ऋग्वेद संहिता सजिल्द	१०)
२ अथर्ववेद संहिता सजिल्द	८)
३. यजुर्वेद संहिता सजिल्द	४)
४. सामवेद संहिता सजिल्द	३)
५ सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७ संस्कार विधि	१।)
८. आर्याभिविनय	।।।)
९. कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश	३।)
१०. मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।≤)
११. पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१२. वेदविरुद्ध मत खडन	)३५
१३. सत्य धर्म विचार	)२५
१४. शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण	)२५
१५. भ्रमाच्छेदन	)२०
१६. काशी शास्त्रार्थ	)२०
१७. भ्रान्ति निवारण	)२५
१८. सत्याथप्रकाश आन्दोलन का इतिहास	)२५
१९. विवाह पद्धति	)५०
२०. गोकरुणानिधि	)१६
२१. आर्य वीर दल बैजज	)२१ जोड़ी
२२. आर्य समाज प्रवेश पत्र	१) सैं०
२३. Life of Swami Dayanand (by Harvilash Sharda)	१०

ओ३म् ध्वज नेट मूल्य पर

२४. ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०॥ इंच मूल्य	२)५०
२५. ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच ,,	४।२५
२६. ओ३म् ध्वज४५ इंच × ६७॥ इंच ,,	६)५०

निम्न प्रकाशन २० नेट प्रतिशत कमीशन पर दिए जायेंगे।

१. सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	३)५०
२. वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)	७)
३. शिक्षण तरंगिणी ,, ,,	५)
४ मसाबीहुल इस्लाम (उर्दू) ,, मूल्य	५)
५ Wisdom of the Rishis (GuruduttaM.A.)	४)

निम्न पुस्तकों पर इस प्रकार कमीशन दिया जायगा

५०) तक की पुस्तकों पर २० प्रतिशत, १०) से २५)

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय	२)
२ वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४. अभ्यास और वैराग्य	१)६५
५. बाल संस्कृति सुधा	)५०
६. वैदिक ईशवन्दना	।≤)॥
७ वैदिक योगामृत	॥≤)
८. दयानन्द दिग्दर्शन	।।।)
९. वेदों मे दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तिया	।।।)
१०. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
निज जीवनवृत्त वनिकासजिल्द	)७५
११. वृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१२. बालजीवन सोपान	१।)
१३. छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
१४. दार्शनिक आध्यात्म तत्व	१॥)
१५. वेदान्त दर्शन (संस्कृत मे)	३)
१६. वेदान्त दर्शन भाषा भाष्य	३)५०
१७. वैदिक वन्दन	५)
१८. भ्रम निवारण	)३०
१९. वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द	२)
२०. वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द	२)५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१ कर्मव्यवस्था	४)
२ दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।–)
३. चरित्र निर्माण	१)१५
४. ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
५ .वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
६ दौलत की मार	।)
७. अनुशासन का विधान	।)
८ धर्म और धन	।)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१. योग रहस्य	१।)
२. मृत्यु और परलोक	१)
३. विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥≤)

४. उपनिषदें :—

ईश ।≤) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।≤) मुण्डक ।≤) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)

श्री प० गगाप्रसाद उपाध्याय कृत

१ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध ११।)
आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध ११।)
२ वैदिक संस्कृति १।)
मुक्ति से पुनरावृत्ति ।-)
४ आर्यसमाज और सनातनधर्म ।-)
५ आर्यसमाज की नीति ।)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

१ दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
२ वैदिक युग और आदि मानव ४)
वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

१ आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ।)
२ कथा माला ।।।)
३ सन्तति निग्रह १।)
४ नया ससार)
५ आदर्श गुरु शिष्य ।)

श्री प धर्मदवजी विद्यामार्तण्ड कृत

१ स्त्रियो का वेदाध्ययन अधिकार ११)
२ भक्ति कुसुमाञ्जलि ।।)
हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

१ आर्यसमाज के महाधन २।)
२ वेद की इयत्ता १।।)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

१ धर्म और उसकी आवश्यकता १)
२ वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप १।।)
३ दजहारे हकीकत (उर्दू मे) ।। -)
४ मत्य निर्णय ( )

प० मदनमोहन विद्यासागर कृत

१ जन कल्याण का मूल मन्त्र ।।)
२ सस्कार महत्व ।।)
वेदो की अन्तसाक्षी का महत्व ।।-)
४ आर्य स्तोत्र ।)

श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

१ वेद सदेश)७५
२ वैदिक सूक्ति सुधा)३०
३ दयानन्द वचनामृत)३०

श्री प० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

२ गीता समीक्षा १)
३ गीता की पृष्ठ भूमि)४०
४ ऋषि दयानन्द और गीता)६
५ आर्यसमाज का नवनिर्माण)१२

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी कृत

१ काग्रेस का सिर दर्द ।।)
२ आर्य समाज और साम्प्रदायिकता -)
३ आर्य वीर दल शिक्षण शिविर -)
४ आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना ≈)
५ आर्यवीर दल लक्ष माला ११।)

अन्य विद्वानों कृत

१ विरजानन्द प्रकाश (प भीमसेन शास्त्री) २)
२ स्वराज्य दर्शन (श्रीप० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
३ राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ।)
भूमिका प्रकाश (सस्कृत मे)
(प० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १ ।)
५ एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ।।
६ दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (कृष्णचन्द्र विरमानी) १ ।)
७ भजन भास्कर
(सग्रहकर्ता डा०हरिशकर शर्मा कविरत्न) १।।)
८ सनातन शुद्धिशास्त्र आर्योंका चक्रवर्ती राज्य २)
६ आर्य डायरेक्टरी (पुरानी) १।)
सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य
विवरण अजिल्द -)
११ आर्य पर्व पद्धति (प० भवानीप्रसाद कृत) १।)
१२ वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त))३७
१३ सन्ध्या पद्धति)१०
१४ सार्वदेशिक सभा का सक्षिप्त इतिहास ७५
१५ सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
१६ आर्य महासम्मेलनो के प्रस्ताव)६०
१ आर्य महासम्मेलनो के अध्यक्षीय भाषण)
१८ आर्यसमाज का परिचय १)
१६ साम सगीत)५०
२ उत्तरा खड के बन पर्वतो मे ऋषि दयानन्द
अजिल्द)६२ सजिल्द)७५
२१ भारत मे मुस्लिम भावनाओका एक रूप
(श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी) सजिल्द मूल्य २)
२२ दस अवतारो की कल्पना कैसे ?
(श्री हसराज जी रिसर्च स्कालर) १)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

१ ईसाई षडयन्त्र ।)

॥ ओ३म् ॥

* कृण्वन्तो विश्वमार्यम् *

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

सार्वदेशिक

हुतात्मा श्री सरदार भगतसिंह-

आर्य समाज की देन से

[उनके छोटे भाई का हल्द्वानी आर्य समाज के मन्त्री जी के नाम पत्र]

आदरणीय मन्त्री जी, ६ ५ ६५

सादर नमस्ते !

आप के माता जी और छोटे भाई राजेन्द्रसिंह जी के नाम २, ३, ४ अप्रैल को हो रहे उत्सव पर शामिल होने के निमन्त्रण मिले हैं। इनके लिये और उन भावों के लिये जो इन पत्रों से जान पड़ते हैं मैं आपका अति धन्यवादी हूं।

आर्य समाज मे मेरे दादा सरदार अर्जुनसिंह जी शामिल हुए थे फिर मेरे पिता सरदार किशनसिंह जी और चाचा सरदार अजीतसिंह जी को महात्मा हंसराज जी के साथ समाज का कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त रहा है। हम चारों नहीं बल्कि पांचों भाई यानी सरदार भगतसिंह जी भी डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ते रहे हैं और हमारे विचार और मानसिक उन्नति भी बहुत कुछ आर्य समाज की देन है इसलिए और बहुत दूसरे उपकारों के नाते हम आर्य समाज के ऋणी हैं

आपके बुलाने पर हाजिर होकर कुछ आज्ञा का पालन करने की खुशी हमें हासिल जरूर हो पाती मगर माता जी दूर पंजाब में हैं और इतनी जल्दी वहां से उनका आना मुश्किल है।

आप फिर कभी अपनी सोहबत का मौका देंगे तो जरूर फायदा उठाया जायगा।

आर्य समाज के उपकारों से लदा हुआ

एक सेवक

रणवीर सिंह

(ग्राम चकपुर, डा० बाजपुर, नैनीताल)

वार्षिक मूल्य ६) सृष्टिसम्वत् दयानन्दाब्द विदेश से वार्षिक ८ या १२ शि०
वर्ष ४२ १९७२९४९०६५ १४० मई १९६५ वैशाख २०२१ अंक ३

—: विषय सूची :—

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीनतम प्रकाशन

वेद सन्देश—यह पुस्तक वेदों के चुने हुए ३०० मन्त्रों का अर्थ सहित उत्कृष्ट संग्रह है ! विषयों का चुनाव बहुत अच्छा है । मूल्य ७५ पैसे ।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक में वेदों की ५०० सूक्तियां अर्थ सहित प्रस्तुत की गई हैं इन सूक्तियों को पढ़ने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लड़कों और लड़कियों का अमित लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है । मूल्य ३० पैसा ।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक में विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनों का संग्रह उपस्थित किया गया है । मूल्य ३० पैसा ।

❀ सम्पादक
रामगोपाल शाल वाले सभा मन्त्री
❀ सहायक सम्पादक
रघुनाथ प्रसाद पाठक
❀ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

❀ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७४७७१
❀ मुद्रक
सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज दिल्ली

* ओ३म् *

सार्वदेशिक

वैदिक विनय

मोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामी वचोविदः ।
सुमृडीको न आविश ॥ ऋ०, १, ६१, ११ ॥

हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव ! तुम सब जगत् के सार हो, जीवन रस हो, तो भी प्रकृति के विषयों मे फंसा हुआ मनुष्य संसार तुम्हें नहीं जानता, तुम कुछ हो वह कभी अनुभव नहीं करता। इसलिए हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोड़ी बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरे-फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें वचोविद् बना दिया है–तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति के रहस्य को जान पाए हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान पाए हैं अतः अपनी वाणियों से हम सब तुम्हारा कीर्त्तन करते हैं तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं। जहां विषय ग्रस्तमानवी हृदयों ने तुम्हें निकाल रखा है या जहां प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी हैं, वहां तुम्हारा नाम फैलाते हैं. तुम्हें पहुंचाते हैं मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते है। प. हे देव ! तुम इतना करो कि हमारे अन्दर सात्विक सुख के दाता होते हुए प्रविष्ट रहो. बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुम्हे कहां से बढ़ा सकते हैं ! हम तुम्हे फलाते है। हे सर्व शक्तिमान् ! हे अनन्त अपार ! असल में तुम ही हमारे अन्दर जितना प्रविष्ट होते हो उतना ही हम में तुम्हारा अवर्णनीय सात्विक सुख अनुभूत होता है कि उस आनन्द मे मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। बल्कि तब हमारे एक-एक अंग से, हमारी एक-एक हरकत से तुम्हारा प्रकाश होता है। अत हमारी यही प्रार्थना है कि तुम हमारे अन्दर प्रविष्ट होओ, तुम हमारे मे आविष्ट होओ। जितनी मात्रा में तुम हमारे में प्रविष्ट होंगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् मे तुम्हारा प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो ! इस सात्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए हम मे आविष्ट होओ।

सम्पादकीय—

राष्ट्र-रक्षा यज्ञ

आपको भली प्रकार पता है कि देश की सीमाओं पर शत्रुदल सक्रिय है। चीन समर्थित पाकिस्तान ने कच्छ और काश्मीर पर आक्रमण करदिये है। इसके अतिरिक्त भारतकी पूर्वी सीमा पर भी आक्रान्ता पूरी तैयारी कर रहे है। आर्य जनता जानती है कि पाकिस्तान का यह आक्रमण विभाजनसे पूर्व मुस्लिम लीग की उसी घोषणाकी एक कड़ी है जिसमें मिस्टर जिन्ना और लियाकत अली ने कहा था कि'हंसकर लेंगे पाकिस्तान और लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान।'

एक हजार वर्ष के पश्चात् प्राप्त की हुई स्वतन्त्रता को आज जो भारी खतरा दिखाई दे रहा है और मुस्लिम काल की परतन्त्र भारत की ७०० वर्ष पुरानी खूनी कहानी की पुनरावृत्ति करने की जो षड्यन्त्रकारी योजनाएं बनाई जा रही हैं उस भयंकर परिस्थिति को अपने देशवासियों के सुदृढ़ संगठन, आत्मत्याग तथा मनोबल को आधार बनाकर ही रोका जा सकता है। आर्य संस्कृति की सुरक्षा और देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने में आर्य समाज के सैनिकों ने जो अनुपम त्याग और बलिदान किये हैं उनको समय आने पर स्वर्णाक्षरों मे अंकित किया जायेगा। देश को आजाद करने के निमित्त आर्य वीरों ने बलिदान किये थे तो इस स्वातन्त्य रक्षा आन्दोलन मे भी आर्य बन्धुओं को प्रथम पंक्ति मे खड़े होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। आपको पता है कि सीमा सुरक्षा पर भारत के वीर सैनिक बड़े त्याग, बलिदान और बहादुरी से पाकिस्तानी भगोड़ों को मैदान छोड़ने पर विवश कर रहे हैं।

जिस प्रकार हैदराबाद में पुलिस एक्शन से पूर्व आर्य वीरों ने आन्तरिक सुरक्षा और प्रबन्ध करनेके शानदार कारनामेकरके रजाकारों से लोहा लिया था उसी प्रकार इस गम्भीर स्थिति में यदि कोई पाकिस्तानी मनोवृत्ति वाला अथवा चीनी पंचमांगी सक्रिय हों तो ऐसे देशद्रोही का सर कुचलने के लिए पुलिस दलसे हमारे कार्यकर्ताओं का आन्तरिक सम्पर्क होना चाहिए। प्रत्येक ग्राम कस्बे और नगर में नवयुवकों की संगठित टोलियां निर्माण की जावें और उन्हें अपने गली मोहल्ले तथा देश की आन्तरिक स्थिति को सुरक्षित रखने का प्रशिक्षण दिया जावे।

अखिल भारतीय राष्ट्र रक्षा दिवस ९ मई को समारोह पूर्वक मनाया जावे

इस दिन प्रातःकाल प्रभात फेरियां की जावें और देशवासियों को भावनात्मक एकता द्वारा राष्ट्र रक्षा निमित्त होने वाले राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे भारी संख्या मे उपस्थित होने के लिए निश्चय किया जावे। राष्ट्र रक्षा यज्ञ में "अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि" इस मन्त्र द्वारा सामूहिक रूप से पाकिस्तानी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए जनता शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करे।

सायंकाल सार्वजनिक सभा करके उसमें इस विपत्ति के समय संगठित होकर देश द्रोही और पंचमांगी पापियों से अपनी जन्मभूमि और मातृभूमिकी रक्षाका संकल्प करना चाहिए तथा प्रातःकाल यज्ञ पर लीगई शपथ को पुनः जनता द्वारा सामूहिक रूपसे दुहरानेका कार्यक्रम होनाचाहिए।

इस महान उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य के संगठन के लिए लाखों नवयुवकों के नाम और पते अंकित करके उनकी ट्रेनिंग और संगठित योजना पर विचार करने के लिए प्रतिदिन समाज मन्दिरों में उपस्थित होना अनिवार्य है। जो कार्यक्रम आप बनावें उसकी सूचना सार्वदेशिक सभा कार्यालय को अवश्य देवें।

इन सभाओं में पाकिस्तान और चीन के साथ कड़ा रुख अपनाने के लिए सरकार को बाधित किया जाय और मातृभूमि की रक्षार्थ युद्ध की स्थिति में केन्द्रीय सरकार को विश्वास दिलाया जावे कि इस महान् संकट काल में आर्य समाज तन मन धन से सरकार को पूर्ण सहयोग देगा। —रामगोपाल, सभा मन्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

वीर सावरकर सम्मान कोष

माननीय श्री के० नरेन्द्र जी धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने 'प्रताप' और 'वीर अर्जुन' के माध्यम से सावरकर सम्मान कोष की स्थापना करके बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य किया है।

स्वामी दयानन्द के परम शिष्य भारत के प्रथम कोटि के क्रान्तिकारी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के शिष्य श्री विनायक दामोदर सावरकर अपने आपको स्वामी दयानन्द का प्रशिष्य कहने में महानतम गौरव मानते रहे हैं। दुःख तो इस बात का है कि स्वराज्य मिलने पर हमारे शासकों ने बड़ी चतुराई से गान्धी हत्या काण्ड में घसीट कर श्री सावरकर जी को जनता की निगाहों में गिराने का नीचतम प्रयत्न किया था किन्तु भारत माता का यह बलिदानी सपूत उसमें से भी कुन्दन बनकर बाहर निकला। इसके पश्चात् शासन पर अधिकार करने वालों ने भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियां तोड़ने वाले महान् क्रान्तिकारी को देशवासियों की नजरों से ओझल करने का पूरा प्रयत्न किया है। किन्तु पूज्य महाशय कृष्ण जी के सुपुत्र श्री के० नरेन्द्र जी ने अपने पूज्य पिता की शानदार परम्परा को कायम रखते हुए राष्ट्र की सोई हुई आत्मा को जगाने के निमित्त सावरकर सम्मान कोष की स्थापना करके बड़ा शानदार काम किया है।

मैं राष्ट्रवादी हिन्दू जनता से इस राष्ट्रीय कोष में दिल खोल कर सहायता देने की अपील करता हूं।

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

उर्दू

अभी हाल में कुछ राजनीतिज्ञों ने कुछ राज्यों में उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा बनाने का प्रस्ताव किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू लोग लम्बे समय तक गुलाम रहे हैं जिसके कारण उनमें भले और बुरे की पहचान करने की क्षमता नहीं रही है। उर्दू के कुछ समर्थक यह प्रचार कर रहे हैं कि गांधी जी हिन्दुस्तानी के नाम से हिन्दी और उर्दू में समन्वय उत्पन्न करने के पक्ष में थे। वे लोग यह भूल जाते हैं कि गांधी जी देश के विभाजन के विरुद्ध थे और वे उर्दू के समर्थक मुसलमानों को संतुष्ट करने के यत्न मे संलग्न थे। देश का तिहाई भाग विभाजन के अर्पण करने के उपरान्त भी उर्दू वालों का व्यवहार ऐसा है मानो देश का विभाजन हुआ ही नहीं।

उर्दू के विरुद्ध दूसरी बात यह है कि हम जितनी अधिक भाषाओं को अपनायेंगे हमारे मतभेद उतने ही अधिक स्थिर रूप ग्रहण कर लेंगे। कनाडा का उदाहरण हमारे सामने है जिसने अंग्रेजी और फ्रेंच दो भाषाओं को अपनाया था। परिणाम यह है कि भाषाओं की पारस्परिक स्पर्धा से लोगों के मध्य स्थायी खाई खुद गई है। लोग अपनी २ भाषाओं के दावे प्रस्तुत कर रहे हैं इतना ही नहीं क्यूबा जैसे प्रदेश बन गए हैं जहां फ्रेंच भाषा भाषी अधिक हैं और जो अलग होने के लिए जी जान से जुटे हुए हैं। इस प्रकार उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा के रूप में स्वीकार कराने का यत्न करने वाले देश के भावी विभाजन की भूमि तैयार करने का अपराध कर रहे हैं यदि यह कह दिया जाय तो इसमें अत्युक्ति न होगी।

यदि उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा प्राप्त हो जाता है तो संस्कृत जैसी विशिष्ट

भाषाओं को बड़ी क्षति पहुंचेगी साथ ही हमारी संस्कृति को भी।

तंग वस्त्र

हिमाचल सरकार ने राज्य भर के अध्यापकों और अध्यापिकाओं को आदेश दिया है कि वे तंग वस्त्र न पहनें। विद्यार्थियों को पहले ही ऐसे वस्त्र धारण करने की मनाही की जा चुकी है। इस प्रकार का आदेश स्वागत योग्य है। जिस वेष-भूषा से शरीर की रक्षा के स्थान में पहनने वाले को कष्ट हो, जो सुरुचिपूर्ण न होकर लोगों की शिष्ट भावना पर आघात करती हो, जिससे वास्तविकता छिपकर प्रदर्शन और दिखावट की गंध आती हो, जिस पर सुख और आनन्द का बलिदान होता हो, उस वेष-भूषा से क्या लाभ ?

पैस्कोल ने फैशन की तुलना अत्याचारी के साथ की है जिसके मूर्खतापूर्ण विधि-विधान के आधीन रहने के लिए सर्वसामान्य जनता बाध्य होती है। परन्तु बुद्धिमान लोग इसके विधि-विधान का पालन करने में पहल नहीं करते। मनुष्य वही है जो विशिष्ट सादगी और विनम्र साहस के साथ अशिष्ट फैशन की प्रवृत्ति का सामना करता है।

त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत संस्कृत के बहिष्कार को सरकार स्वीकार न करे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का भारत व्यापी अभियान

मुख्य मन्त्रियों के सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित त्रिभाषा फार्मूला के अन्तर्गत संस्कृत को जो भारी क्षति पहुंचने की सम्भावना है उसका सक्रिय निराकरण करने के निमित्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा योजनाबद्ध कार्य आरम्भ कर दिया गया है। इस संदर्भ में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अन्य कालेजों स्कूलों एवं विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं के सैकड़ों विद्वानों का एक बृहत् सम्मेलन २८ मार्च ६५ को सभा कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन में बुलाया गया था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने की। त्रिभाषा फार्मूला की संस्कृत घातक नीति पर ४॥ घन्टे तक विद्वानों के द्वारा विचार विनिमय होने के पश्चात् निम्न प्रस्ताव पारित किया गया और इस प्रस्ताव को कार्यान्वित कराने तथा अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक आन्दोलन करने के निमित्त एक समिति नियुक्त की गई। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी संयोजक तथा श्री प्रो० कृष्णलाल जी नारान, प्रो० डी० ए० वी० कालेज देहली तथा श्री प्रो० दयानन्द भार्गव संस्कृत विभाग रामजस कालेज उसके सहायक संयोजक नियुक्त किए गए।

सम्मेलन का प्रस्ताव

भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले पुरातन एवं भारतीय परम्परा में विश्वास रखने वाले संस्कृत प्रेमियों और विद्वानोंका यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि वह देश की सांस्कृतिक परम्पराओं, भारतीय जीवन में उसके महत्व तथा राष्ट्र की एकता को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा सूत्र में मुख्य मन्त्रियों के सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित संस्कृत के बहिष्कार को किसी अवस्था में स्वीकार न करे।

सम्मेलन भारत सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि वह संविधान के अनुच्छेद ३५१ की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसी व्यवस्था करे कि संस्कृत का सामान्य ज्ञान प्रत्येक भारतीय के लिये आवश्यक हो। एतदर्थ इस सम्मेलन की सम्मति में सभी स्तरों पर अहिन्दी भाषा प्रदेशों में राज भाषा हिन्दी केपाठ्यक्रम में तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों में प्रादेशिक

भाषाओं के पाठ्यक्रम में कम से कम ३३ प्रतिशत भाग संस्कृत का रहे।

नीग्रो द्वेषियों का पैशाचिक कार्य

मानव का सहज विश्वास तो यह है कि मानवता सर्वत्र एक और अखण्ड है किन्तु मानव के व्यवहार में यह विश्वास सभ्यता के चरम-विकास के द्योतक इस युग में भी फलीभूत नहीं हो पाया। जल स्थल और नभ में अपनी असीम, शक्ति व चमत्कार दिखाकर विराट व्योम के सुन्दर ग्रह-नक्षत्रों तक की थाह पाने को यत्नशील आधुनिक मानव के मन के निभृत कोने में अब भी अन्धकार छाया हुआ है, यह देखकर आश्चर्य की सीमा नहीं रहती।

बाह्य प्रकृति पर विजय पाकर भी मानव आज तक अपनी मानसिक क्षुद्रता पर विजय नहीं पा सका। जन्म, जाति, वर्ण, और रंग के आधार पर मानव से मानव का अमानवीयता का बर्ताव पशुता का ही पर्यायवाची है। अतीतकाल में भारत में शूद्र कहे जाने वाले लोगों के साथ उच्च वर्ण के लोगों का जैसा व्यवहार था, शास्त्रों के अम्बार से भी उसका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। भारत के संविधान में अब सबको समानाधिकार प्राप्त है। परन्तु अमरीका के दक्षिणी राज्यों में वहां के नीग्रो लोगों को आज भी अपने नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए आन्दोलन करना पड़ता है, यह तथा-कथित नई दुनिया की सभ्यता के नाम पर कितना बड़ा धब्बा है?

राष्ट्रपति केनेडी की निर्मम हत्या को अभी संसार भूला नहीं है। जांच-रिपोर्ट कुछ भी कहती रहे, किन्तु विश्व के जनमत की इस धारणा को आसानी से बदला नहीं जा सकता कि उनकी हत्या के पीछे नीग्रो-द्वेषियों का षड्यन्त्र था। राष्ट्रपति केनेडी का सबसे बड़ा अपराध यही था कि वे नीग्रो लोगों को समान नागरिक अधिकार देने के पक्षपाती थे और उनको मताधिकार दिलाने के लिए उन्होंने कानून बनाना चाहा था। बिचारे केनेडी अपने मन की साध मन में ही लिये चले गये और राष्ट्रपति जानसन को उस कानून को पास करवाने का श्रेय मिला, परन्तु दक्षिणी राज्यों में व्यापक विद्वेष भावना को वे भी दूर नहीं कर सके। जातिभेद के पक्षपाती दक्षिणी राज्यों में गत तीन वर्षों में एक दर्जन से अधिक हत्याएं हो चुकी है, परन्तु मुजरिम, बिरले ही पकड़े गए हैं और यदि कभी पकड़े भी गए हैं तो न्यायाधीशों ने उन्हें तुरन्त बरी कर दिया है क्योंकि न्याय बनाने वाले भी तो सब श्वेत लोग हैं। यह आवे के बिगड़ने की निशानी है।

आलाबामा राज्य नीग्रो-विद्वेष में सबसे आगे है। उसी की राजधानी मांटगुमरी में २५,००० नीग्रो-लोगों ने अपने नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए प्रदर्शन किया। सेलमा से मांटगुमरी तक ५० मील की यह कूच ऐतिहासिक थी। डा० मार्टिन लूथर किंग और संयुक्त राष्ट्रीय अवरसचिव डा० राल्फ बुंच जैसे नोबेल-पुरस्कार विजेता शान्तिवादी नेताओं ने इस कूच का नेतृत्व किया। मानव-मात्र की एकता में विश्वास करने वाली श्वेत महिला श्रीमती वियोला ग्रेग लियूजो मिशिगन राज्य से इस कूच में भाग लेने आई थी। सेलमा से मांटगुमरी तक अपनी कार में कई चक्कर लगाकर उसने अश्वेतों को प्रदर्शनकारियों के जलूस तक पहुंचाया। दरिन्दों को उसकी यह मानवीयता भी बर्दाश्त नहीं हुई और उन्होंने उसे गोली से मार दिया। कहा जाता है कि क्लु क्लक्स क्लान नामक कट्टर अश्वेत-विद्वेषी संस्था के सदस्यों ने ही यह जघन्य कृत्य किया है और उस संस्था के चार सदस्य इस सिलसिले में गिरफ्तार भी किए गए हैं, परन्तु क्या अमरीका जैसे सभ्य देश में

इस प्रकार की संस्था का अस्तित्व भी अमरीका के नाम पर कलंक नहीं है ? जानसन शासन की प्रतिष्ठा सभ्य संसार की नजरों में क्लु क्लक्स क्लान को त्वरित समाप्ति से हीं आंच की जायगीं।

हिन्दु० २९-३-६५

पशुबलि हिन्दूधर्म के लिए कलंक

देवी देवताओं के कोप के निवारण के लिए पशुओं की बलि चढ़ाया जाना हिन्दू धर्म पर एक कलंक है। यह विचार राजस्थान के राज्यपाल डा०सम्पूर्णानन्द ने ३-४-६५को आयोजित करौली से १७ मील दूर केला देवी में राजस्थान दलित-वर्ग संघ द्वारा हरिजन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। एक संस्कृत श्लोक का उद्धरण देते हुए राज्यपाल ने स्पष्ट किया कि हिन्दू की मान्यता के अनुसार ईश्वर सभी देवी देवताओं, मनुष्यों एवं सभी छोटे-बड़े प्राणियों का प्रिय है। अतः प्रभु के सम्मुख उसी की सन्तान की बलि चढ़ाया जाना हिन्दू धर्म के अनुसार उचित नहीं है।

उन्होंने कहा कि बलि की प्रथा जैसी सामाजिक बुराई का उन्मूलन केवल कानून लागू करने से संभव नहीं है। इस प्रकार की बुराइयों के निरोध के लिए जनमत तैयार किया जाना आवश्यक है। देहाती क्षेत्रों में अब व्याप्त छुआछूत की चर्चा करते हुए डा० सम्पूर्णानन्द ने कहा कि यह हिन्दू धर्म के उज्ज्वल नाम पर एक दूसरा गहरा धब्बा है। उन्होंने कहा कि यह आश्चर्य की बात है कि जानवरों को भी छुआ और प्यार किया जा सकता है तो मानव को किस प्रकार से अछूत समझा गया है। आपने कहा कि हिन्दू शास्त्रों के अनुसार इस प्रकार के भेदभाव सर्वथा निराधारहैं।

सोमरस

श्री रामगोपाल (चण्डीगढ़) "सोमरस" के शीर्षक से १०-४-६५ के ट्रिब्यून (अम्बाला) में लिखते हैं:—

"सोमरस के सम्बन्ध में बड़ा विवाद और भ्रम व्याप्त है। वैदिक साहित्य और हिन्दू-वस्ता में स्थान ? पर सोमरस का उल्लेख मिलता है परन्तु "शराब" के रूप में इसका कहीं भी उल्लेख नहीं है। ऋग्वेद से लेकर कल्प-सूत्रों तक इस बात के साक्षी हैं कि सोम एक प्रकार का रस है जो पर्वत पर उगने वाले 'सोम' नामक पौधे को कूट कर तैयार किया जाता है। इसमें दूध और पानी मिलाया जाता था। रस को शराब या सुरा का नाम नहीं दिया जा सकता। जो उबाल कर तैयार की जाती है। सोम का मादक द्रव्य के रूप में कभी भी प्रयोग नहीं किया जाता था।"

अन्य ग्रहों पर भी जीवन सम्भव

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में इस प्रश्न का "सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं ?' उत्तर देते हुए लिखा है कि ये सब भूगोल लोक हैं और इनमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती है क्योंकि पृथ्वी, द्यौ, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु नाम है इसलिए कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या यह सब लोक शून्य होंगे ? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है ? इसलिये सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।

प्रमुख भारतीय गणितज्ञ डा० जयन्त विष्णु नारलीकर के २७ मार्च को पूना में दिये गये भाषण से श्री स्वामी जी महाराज के उपर्युक्त कथन की पुष्टि होती है। उन्होंने बताया कि—अन्य ग्रहों पर जीवन की संभावना का एक दम खण्डन नहीं किया जा सकता।

पूना विश्वविद्यालय के तत्वावधान में

"ब्रह्मांड प्रकृति" पर बोलते हुए डा० नारलीकर ने कहा कि अन्य ग्रहों पर जीवन ही नहीं बल्कि हमारी पृथ्वी से अधिक विकसित सभ्यताएं हैं। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इस समय हमारी पृथ्वी पर ऐसे संचार साधन नहीं हैं, जिनसे हम अन्य ग्रहों के निवासियों की भाषा समझ सकें और वे हमारी भाषा समझ सकें।

उन्होंने एक उदाहरण दिया कि किस प्रकार यह संसार ब्रह्माण्ड के विषय में अनभिज्ञ है। यह स्थिति वैसी ही है जैसे टेलीफोन के तार पर कीड़े रेंग रहे हों और उन्हें पता नहीं कि तार के अन्दर क्या-क्या महत्व-पूर्ण बातें हो रही हैं।

आत्म-हत्याओं का कारण घरेलू कलह, बीमारी

मद्रास राज्य के मुख्य मन्त्री श्री एम० भक्त-वत्सलम ने २-४-६५ को विधानसभा में बताया कि राज्य में हाल के हिन्दी-विरोधी आन्दोलन में सात व्यक्तियों ने आत्म-हत्या की।

वह विरोधी पक्ष के चार सदस्यों द्वारा पूछे गये एक प्रश्न का उत्तर दे रहे थे।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि जांच से पता चला है कि आन्दोलन के दौरान आत्म-हत्याओं के कारण घरेलू कलह, बीमारी आदि भी रहे हैं।

तीसरी भाषा

श्री जे०पी० विद्यालंकार १०-४-६५ के हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखते हैं:—

"त्रिभाषा सूत्र ने जिसे मुख्य मन्त्रियों ने स्वीकृत किया हुआ बताया जाता है, संस्कृत के अध्ययन के लिए एक समस्या उत्पन्न कर दी है। इस सूत्र के अनुसार संस्कृत और उर्दू को कोई विद्यार्थी तीसरी भाषा के रूप में न ले सकेगा। संस्कृति, दर्शन, धर्म, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं बौद्ध तथा जैन साहित्य के अध्ययन के लिए संस्कृत की कितनी बड़ी आवश्यकता है, इस पर बल दिये जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके साथ ही समस्त भारतीय भाषाओं और उनके विकास के लिए भी संस्कृत अनिवार्य है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में संस्कृत की उपेक्षा होने से समस्त भाषाओं पर दुष्प्रभाव पड़ेगा। अतः तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत लेने पर कोई प्रतिबन्ध न होना चाहिये। प्रत्येक छात्र को अनिवार्य रूप में हिन्दी और अंग्रेजी पढ़नी चाहिए और १४ भाषाओं में से तीसरी भाषा के रूप में कोई भी भाषा चुनने की उसे स्वतन्त्रता होनी चाहिये।

जो विद्यार्थी तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत न ले, उसका अध्ययन हिन्दी के साथ जोड़ देना चाहिए। इस पग के उठाए जाने से जहां संस्कृत की रक्षा होगी वहां दक्षिण भारतीय छात्रों को हिन्दी पढ़ने में कुछ सहायता मिल जायगी।

पादरी ने अपने बच्चों को बपतिस्मा देने से निषेध कर दिया

रूटर द्वारा प्रसारित २६ अप्रैल का बरमिंघम (इंग्लैण्ड) का समाचार है कि चर्च आफ इंग्लैण्ड के एक पादरी ने २५ अप्रैल को अपने श्रोताओं को बताया कि मैंने अपने बच्चों को बपतिस्मा (ईसाई बनाने) देने से इसलिए इन्कार कर दिया था कि प्रत्येक को ईसाइयत को अंगीकार न करने का अधिकार होना चाहिए। इस पादरी का नाम रेवरेन्ड डेविड कालेयर है और उसकी उम्र २६ वर्ष की है। उसके दो बालक हैं। उसने यह भी कहा 'दूसरे व्यक्ति का धर्म नियत करने का किसी को भी अधिकार नहीं है और बच्चों को ईसाई मत में दीक्षित करने में ऐसा ही होता है। यदि मेरे बच्चे ईसाइयत को रद्द कर दें तो मुझे निराशा न होगी। मैं इसे उनके गले नहीं उतार सकता।"

यह समाचार छोटा सा है परन्तु है बड़ा महत्वपूर्ण। देखें ईसाई जगत् में इसकी क्या प्रतिक्रिया होती है? — रघुनाथप्रसाद पाठक

प्रेस कांफ्रेंस

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित)

सभा के कार्यालय महर्षि दयानन्द भवन में २१ अप्रैल सन् १९६५ को श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी (हैदराबाद) की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा के प्रसंग में एक प्रेस सम्मेलन हुआ जिसमें पत्र प्रतिनिधियों के अतिरिक्त श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा उपप्रधान, सभा मंत्री, श्री रामगोपाल जी शालवाले, श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री सभा उपमंत्री, श्री क्षेम चन्द्र जी सुमन (साहित्य एकादमी भारत सरकार) श्री पं० कान्तिलाल शर्मा, जे० पी० बम्बई (आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान), श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम० ए०, श्री शिवचन्द्र जी गुप्त आदि ? महानुभावों ने भी भाग लिया।

सभा की ओर से जो वक्तव्य प्रेस प्रतिनिधियों को दिया गया था वह इस प्रकार है—

"आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही राष्ट्रीय एकता तथा देश की अखण्डता का पोषक रहा है और इसे ध्यान में रखकर ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रबल समर्थक रहा है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने संस्कृत के विद्वान तथा गुजराती भाषा-भाषी होते हुए भी आर्य भाषा हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और हिन्दी के प्रचलन तथा व्यवहार का यत्न किया। उन्होंने सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता के साधन के रूप में हिन्दी के महत्व को अनुभव कर लिया था। आर्य समाज के कार्यालयों और उसकी संस्थाओं में हिन्दी मे कार्य हुआ और शिक्षा का माध्यम उसकी शिक्षा संस्थाओं में हिन्दी ही रहा।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा हिन्दी भाषा के विशिष्ट ग्रन्थों पर आर्य समाज के अनेक विद्वानों को पारितोषिक प्राप्त हुए। यह भी सर्व विदित है कि पत्रकारिता के क्षेत्र में आर्य समाज बहुत बड़ा योग दे रहा है और उसने अनेक सुयोग्य पत्रकार देश को प्रदान किये हैं।

देश की प्रथम संसद ने हिन्दी को सर्व सम्मति से राजभाषा के पद पर आसीन किया था। स्वतन्त्रता के बाद भाषा के विषय पर किसी भी प्रकार के विवाद के लिए स्थान नहीं रह गया था। परन्तु दुर्भाग्य से अभी हाल में मदरास राज्य में अराजक, अराष्ट्रिय एवं अवांछनीय संगठित तत्वों के द्वारा हिंसा का प्रदर्शन हुआ। इससे हमारे देश और राज्य के नेताओं के हृदयों में निराधार भय कर गया है। उन्होंने मुट्ठी भर लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए जिनकी राष्ट्रनिष्ठा और देशभक्ति संदिग्ध है त्रिभाषा सूत्र के नाम से एक नई योजना प्रस्तुत की है। कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज के विविध वक्तव्यों ने और कतिपय अन्य नेताओं द्वारा प्रकट किये हुए विचारों ने इस आग में ईंधन का काम किया।

अब वे राजभाषा कानून में परिवर्तन करने और इस प्रकार कतिपय स्वार्थी लोगों के अराष्ट्रिय कार्यों के सामने झुकने के लिए सरकार पर हर प्रकार का दबाव डाल रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जो आर्य जगत् की शिरोमणि सभा है, इस प्रकार के किसी भी भाषायी परिवर्तन के नितान्त विरुद्ध है। इस प्रकार के परिवर्तन से देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जिस पर काबू प्राप्त करना कठिन होगा। सार्वदेशिक सभा ने मई के प्रथम सप्ताह के आसपास देश के हिन्दी प्रेमियों का एक सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया जिससे उनका परामर्श और सहयोग प्राप्त कर सके।

आधुनिक ऐतिहासिक खोजों की पृष्ठ-भूमि में महर्षि दयानन्द के कुछ ऐतिहासिक संकेतों का मूल्यांकन

[श्री जगदीश प्रसाद सिंह, आर्य सिद्धान्त रत्न, नूरसराय]

(गतांक से आगे)

इसमें महाभारत के युद्ध के अनन्तर जिन जिन राज वंशों ने दिल्ली के सिंहासन पर राज्य किया है उनका क्रमिक विवरण दिया गया है। यह हस्तलेख महाराज गुलेर के राज वंश के संग्रहालय में से प्राप्त हुआ है और विभाग ने इस हस्तलेख को कांगड़ी भाषा के विद्वानों प्रो० गोरीशंकर (आक्सन तथा प्रो० रघुनाथ शास्त्री एम०ए०, ओ०एल० द्वारा सम्पादित और पुनरीक्षित करवाया है। निम्नलिखित तालिकाओं मे यह ज्ञात होगा कि सत्यार्थ प्रकाश में दी हुई राजवंशावली एव पंजाब सरकार द्वारा आविष्कृत राजावली में कितना साम्य है।

सत्यार्थ प्रकाश की वंशावली

मु० शासक का नाम	पीढी	वर्ष	मास	दिन
१—श्री युधिष्ठिर आदि	३०	१७७०	६	१०
२—श्री विश्रवा आदि	१४	५००	३	१७
३ श्रीवीरमहाप्रध नआदि	१६	४४५	५	३
४—श्री धन्धर ,,	९	३७४	११	२६
५—श्री महानपाल	१	१४		
६—श्री विक्रमादित्य	१	९३		
७—श्री समुद्रपाल	१६	३७२	४	२७
८—श्री मलुखचंद ,,	१०	१९१	१	१६
९—श्री हरि प्रेमवेरागी	४	५०		२१
१०—श्री आधी सेन ,,	१२	१५१	११	
११—श्री दीप सिंह ,,	६	१०७	६	२२
१२—श्री पृथ्वीराज	५	८०		२०
कुल योगः—	१२४	४१५७	९	१४

पंजाब सरकार की राजावली

मु० शासक का नाम	पीढी	वर्ष	मास	दिन
१—श्री युधिष्ठिर आदि	३०	१७४५	२	२
२—श्री विसखा वजीर ,,	१४	५००	५	६
३—श्री वीरबाहु राजा ,,	१६	४२०	१०	१४
४—श्री दुन्दहरे ,,	९	३६०	११	११
५—श्री समुद्रपाल ,,	१६	४०५	५	१९
६—श्री तिलोकचंद ,,	१०	११९	१०	२९
७—श्री हढप्रेम ,,	४	४९	११	१०
८—श्री वहीसेन ,,	१२	१५८	९	७
९—श्री दीप सिंह ,,	६	१०४	६	२८
१०—श्री राय पिथौरा (पृथ्वी राज)	५	८५	८	२७
११—श्री मुसलमान राजे (शाहजहांतक)	४२	६६८	२	२६
१२—मुसलमान राजे (शाहजहां के उपरान्त)	४	८१	११	५
	१७३	४८३४	३	११

स्वामी दयानन्द जी ने इस सूची मे दिये हुए आंकड़ों को अनुमानतः लिखा है। उपरोक्त तालिका देखने से ज्ञात होता है कि सत्यार्थ प्रकाश वाली सूची में क्रम सं० ६ (विक्रमादित्य) का नाम पंजाब सरकार वाली सूची में नहीं है। पंजाब सरकार वाली राजावली की सूची मे क्रम सं० ११ एवं १२ में जिन मुसलिम वंशावलियों की चर्चा है, उस से भिन्न सत्यार्थ प्रकाश वाली सूची में है। सत्यार्थ

प्रकाश वाली सूची के क्रम ११ एवं १२ की नामावली, पंजाब वाली सूची के क्रम ९ और १० में ज्यों का त्यों है । इसके अतिरिक्त और जितने भी नाम तथा आकड़े हैं वे प्रायः थोड़े से हेर फेर के साथ प्रायः समान ही है। एक बात अधिक आश्चर्यप्रद है कि स्वामी जी ने पृथ्वीराज की अन्तिम पीढी में (कुल ५ पीढियों) यशपाल को हराकर सुलतान शाहबुद्दीन गोरी दिल्ली में राज्य किया। इनके कुल ५३ पीढियों ने ७५४ वर्ष १ मास और १७ दिन राज्य किया ऐसा लिखा है। इधर हम जब पंजाब वाली सूची का निरीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि पृथ्वीराज के बाद शाहंजहा के उपरान्त तक कुल ५१ पीढियां ७५९ वर्ष २ मास और ११ दिन राज्य करती है। अन्तर केवल क्रमशः ४-१-५ का ही पाते हैं।

स्वामी जी महाराज ने जिस हस्तलिखित पोथी का सहारा लिया यह ज्ञात नहीं रहा है। उन्होंने केवल संकेत मात्र दिया है कि उस सम्पादक (हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और "मोहन चन्द्रिका") महाशय ने अपने मित्र से एक प्राचीन पुस्तक जो कि विक्रम सं० १७८२ का लिखा हुआ था ग्रहण किया है। कांगड़ी और डोगरी को ऋषि ने कभी नहीं सीखा अतः अवश्य ही कोई अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ रहा होगा जिसका आधार उन्होंने बनाया। जो भी हो हम देख रहे हैं कि आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व जिस ऐतिहासिक संकेत को ऋषि अपने सत्यार्थ प्रकाश में बतला रहे हैं वह आज कसौटी पर सही उतर रहा है। सचमुच में उनकी बुद्धि सर्वतोगामिनी थी।

पांचवां ऐतिहासिक सकेत :—

"जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्रवालों उनसे यूनानी उनसे रूस और यूरोप देश में अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नहीं है (सत्यार्थ प्रकाश)।

स्वामी जी ने अपने इस मंतव्य की पुष्टि में मनुस्मृति का यह श्लोक दिया है:—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यांसर्व मानवाः॥
(मनु० २। २०)

पश्चिम के पद चिह्नों पर चलने वाले भारतीय ऐतिहासिक स्वामी जी की इस उक्ति का परिहास उड़ाते हैं। उनका कहना है कि स्वामी दयानन्द का यह अन्धा देश-प्रेम है— पक्षपात पूर्ण है। प्रसिद्ध सर्वोदयी नेता श्री दादा धर्माधिकारी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक' सर्वोदय दर्शन' में आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में यह लिखा है कि स्वामी जी का यह विचार कि भारत वर्ष से ही सारी विद्यायें भूगोल में फैली उनके हठाग्रह एवं पक्षपात का नमूना है 'संकृति के चार अध्याय के लेखक श्री दिनकर जी ने अपनी पुस्तक में उपरोक्त विचार का ही प्रदर्शन किया है। उन्होंने लिखा है कि बहुत से ज्ञान हमने विदेशियों से ग्रहण किया है जो पहिले से मेरे यहां नहीं थे।

महर्षि ने अपने विचार की पुष्टि में जहां मनु० का उल्लेख किया है वहां फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् जेकालयट की प्रसिद्ध पुस्तक 'बायबिल इन इण्डिया' से यह प्रमाण दिया है कि सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं।

आधुनिक विद्वानों की आधुनिक खोजों से अब यह प्रमाणित हो रहा है कि भारतवर्ष ही विश्व के अन्य देशों का आदि गुरु रहा है। कुछ प्रमाण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(१) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक

'बृहत्तर भारत" में लिखा है कि "चाल्डिया के (चाल्डिया की सभ्यता सबसे प्राचीन समझी जाती है) लोगों में अब भी यही जनश्रुति काम कर रही है कि हम लोग चोल हैं। कार्थेज के प्यूनिक भारत के पणि हैं। मेक्सिको में 'मय' सभ्यता को विकसित करने वाले भारत से ही गये थे। आइसलैंड के प्राचीन निवासियों का धर्म ग्रन्थ "बलस्या' सम्भवतः ऋग्वेद से बहुत ही प्रभावित है। संसार की प्राचीन जातियों हिट्टाईट्स और मिटनी लोगों के देवता रुद्र, वरुण और नासत्य वैदिक ही तो हैं। नेपाल, भूटान और अफगानिस्तान का इतिहास तो अठारहवी शती तक भारत का इतिहास रहा है। अशोक ने मिश्र और यूनान तक भारत की सभ्यता फैलाई। लंका, बर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, हिन्द, चीन, जापान, चीन आदि देशों में आज भी भारत की संस्कृति एवं सभ्यता के पर्याप्त चिह्न मिल रहे हैं। गणित का प्रचार भी अरबों में भारतीयों द्वारा हुआ था। अब तक अरब वाले यह मानते हैं कि हमने एक से नो तक के अंक लिखने की विधि भारत से सीखी इसलिये वे इन अंकों को 'हिन्दसा' कहते हैं। आगे चलकर अरबों से यह यूरूप में फैली। यूरूप में इन्हें अंक कहा जाता है। इसी प्रकार 'ज्योतिष' चिकित्सा, संगीत तथा अन्य विद्यायें सारे विश्व में फैलीं, ज्योतिष के सम्बन्ध में पाश्चात्य तथा उनके खुशामदी लोगों का कहना है कि भारत ने इस विद्या को अरब एवं ग्रीस से लिया है। परन्तु यह धारणा बिलकुल निर्मूल है। ७७१ ई० में भारतीय ज्योतिष पंडितों की एक मंडली बगदाद पहुँची थी। अपने साथ ज्योतिष का ग्रन्थ 'बृहस्पति सिद्धान्त' साथ में ले गई थी। अरबों ने इसका अनुवाद किया और 'आस्सिद हिन्द' नाम रखा। अरबों ने इसे स्पेन तक फैलाया। विशेष देखना हो तो 'बृहत्तर भारत' देखें। क्या पूर्व और क्या पश्चिम सभी एक स्वर से कहते हैं कि संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' है। १९५४ या ५५ के जनवरी मास में कलकत्ता में भारतीय संस्कृत संसद् का एक अधिवेशन हुआ था उसमें भारतीय विज्ञान वेत्ता श्री प्रो० सत्येन बोस भी थे। उस अधिवेशन में गोवर्धनपीठ के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने 'गणित शास्त्र पर एक व्याख्यान दिया था। उन्होंने घोषणा की थी ऋग्वेद के केवल १६ सूत्रों से गणित के कठिन से कठिन सवालों का हल हो सकता है। उन्होंने कहा कि प्रखर बुद्धि होने पर केवल १ वर्ष में गणित का महान् पंडित इन सूत्रों के आधार पर हो सकता है। उन्होंने केवल कहा ही नहीं बल्कि इस सम्बन्ध में कुछ प्रदर्शन भी किये। तारीफ तो यह है कि इन सूत्रों से ज्योतिष, भौतिक विज्ञान एवं रसायन शास्त्र के भी प्रश्नों का हल हो जाता है।

पाठकवृन्द! यह है हमारे महान ऋषि की खोज। आज इतिहासकार अन्त में इन सत्यों को स्थापित कर रहे हैं जिनकी चर्चा महर्षि ने आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी और जिसका मजाक उड़ाया जाता था

छठवां संकेतः—

स्वामी जी की यह मान्यता रही है कि सृष्टि के आदि में जब मानवों की सृष्टि हुई तभी ज्ञान के भण्डार वेदों का प्रकाश हुआ और वैदिक ज्ञान से उस समय के मनुष्य परिपूर्ण रहे। सभ्यता एवं संस्कृति में बढ़े चढ़े रहे। और यही हाल आज से ५ हजार वर्ष पूर्व तक रहा।

परन्तु विकासवादी इतिहासकार इसको नहीं मानते है। उनका कहना है कि आरम्भ में मनुष्य जब वनमानुष से विकसित होकर पूर्ण मानव हुआ तो उसे किसी भी वस्तु का ज्ञान

नहीं था। क्रमश: उन्नति का सिद्धान्त उन्होंने प्रतिपादित किया। वे कहते हैं कि उन आदिम काल के मनुष्यों को खेती का ज्ञान नहीं था। पत्थर युग या अस्थि युग मे जब मनव चल रहा था तो मांस पर ही उसका जीवन आधारित था। उन्होंने अस्थि युग, पाषाण युग एवं धातु युगों की कल्पनायें की हैं।

इधर की खोजों से विकासवादियों की इस मान्यता का पूरा खण्डन होता है। पटना से निकलने वाले दैनिक पत्र "प्रदीप" के ६ जुलाई १६६३ के अङ्क में एक समाचार प्रकाशित हुआ है। उसका कुछ अंश दे रहा हूँ।

"गोहाटी विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग के एक दल द्वारा उत्तरी कन्धार पहाड़ियों के "दाव आली हार्डिंग" में जो खुदाई की गई है उसमें उसे वहां उत्तर पाषाणयुग की सभ्यता के अवशेष उपलब्ध हुए हैं। यहां पर जो प्राग् ऐतिहासिक कालीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं वे बिल्कुल अच्छी दशा मे हैं नव पाषाण काल की परत पर किसी भी प्रकार का कोई धातु का सामान नहीं मिला है। वहां पर जो पत्थर के औजार मिले हैं वे उसके समीपवर्ती स्थानों से औजारों के ढंग के न होकर नागा और जेन्तिया पहाड़ियों मे पाये गये औजारों से मिलते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि उस काल के लोग पत्थरों को संगठित रूपसे खानों से निकालते थे।

अनेक प्रामाणिक विशेषज्ञों की धारणा है कि पोलिश किये हुए पत्थर के औजार संभवत लकड़ी काटने के लिए इस्तेमाल किये जाते थे। उन दिनों के लोग इन्हें खुरपीके फल के रूप में खेती में निराई के काम मे लाते थे। पत्थरों के औजारों से किस किस तरह के काम लिये जाते थे इसका विश्लेषण करने पर यही अनुमान होता है कि दावा आली हार्डिंग के पाषाण काल के लोग चावल और बाजरे की खेती किया करते थे। वहीं पर खुदाई करने पर जो अन्य चीजें मिली हैं उनसे इसबात की पुष्टि होती है कि उत्तर पाषाण काल अर्थात् नव पाषाण काल के लोग खेतीबारी का काम किया करते थे। इन स्थानों पर चावल तथा बाजरे की जगली किस्में भी मिली हैं जिनसे यह संकेत मिलता है कि नव पाषाण काल के लोग इन्हें बोया करते थे। यहां की खुदाई से यह तो निश्चित रूप से प्रमाणित हो गया है कि इस इलाके मे नव पाषाण युग मे बसे लोग पत्थरों के औजार काम मे लाते थे इनकी मदद से खेती-बारी करते थे और पशुओं को भी पालते थे उन्हें बर्तन वगैरह बनाने की विद्या भी आती थी"

इस खुदाई से निम्न तथ्यों पर प्रकाश पडता है।

(१) आदिम काल का मानव पूर्णतया मांसाहारी नहीं था।

(२) भू-गर्भ विद्या की जानकारी थी।

(३) खदानों से पत्थर निकालने का काम संगठित रूप में होता था। इन्हें इसका पूरा पूरा ज्ञान था।

(४) पत्थरों पर पालिश करने का ज्ञान था।

(५) पशुओं को पालते थे।

(६) चावल एवं बाजरे की खेती पर्याप्त मात्रा मे होती थी।

ऊपर के विश्लेषणों से यह मालूम होता है कि मनुष्य आदिम काल मे सभ्य था। उसपर

(शेष पृष्ठ १५ पर)

इन विषयों की विशेष जानकारी के लिए पाठकगण इस सभा द्वारा प्रकाशित श्री आचार्य वैद्यनाथजीशास्त्री की नवीन पुस्तक "वैदिक-युग और आदि मानव" पढें।

सम्पादक

महर्षि दयानन्द की विचार-धारा

२५ प्रश्नोत्तर

फर्रुखाबाद में पौराणिक पंडितों ने स्वामी जी के पास २५ प्रश्न भेजे। उनका उत्तर महाराज ने लिख दिया। वे प्रश्नोत्तर ये थे.—

प्रश्न १—वेदादि शास्त्रों में संन्यासियों के धर्म क्या कहे हैं? संन्यासियों को यानारूढ होना चाहिए या नहीं?

उत्तर—वेदादि शास्त्रों में सन्यासियों के धर्म ये बताए हैं—ज्ञानपूर्वक, वेदानुकूल, शास्त्रोक्त रीति से पक्षपात शोक, वैर, हठ और दुराग्रह का त्यागना। स्वार्थ साधन, निन्दा स्तुति और मानापमान आदि दोषों को छोड़ना। संन्यासियों का धर्म है कि सत्यासत्य की आप परीक्षा करें। सदैव विचरते हुए लोगों से असत्य छुड़ावें और सत्य ग्रहण करावें जिससे उनकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति हो और वे साधनों सहित विद्या लाभ कर अपने पुरुषार्थ से व्यावहारिक और पारमार्थिक सुखों को उपलब्ध करें। लोगों से दुराचार हटाना संन्यासियों का धर्म है। हर्ष-शोक से रहित संन्यासी जन यदि यानारूढ हों तो भी दोष नहीं है।

प्रश्न २—यदि आपके मत में क्षमा नहीं मानी जाती तो मनुस्मृति के प्रायश्चित्तों का क्या फल है? ईश्वर की दयालुता का क्या प्रयोजन है? यदि मनुष्य स्वतन्त्रता से आगन्तुक पापों से बचा रहे तो ईश्वर की क्षमाशीलता किस काम की?

उत्तर—हमारा मत वेदोक्त है, कोई कपोल-कल्पित नहीं है। वेदों में कहीं भी किए पापों की क्षमा नहीं लिखी। पापों की क्षमा मानना युक्ति संगत नहीं है।

क्षमा और प्रायश्चित्त का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। प्रायश्चित्त कोई सुख-भोग का नाम नहीं है। जैसे कारावास में अपराधी मनुष्य चोरी आदि कर्मों का फल भोग लेता है ऐसे ही प्रायश्चित्त में पाप-फल भोगा जाता है। अनेक नास्तिक जन ईश्वर का खण्डन करते हैं। दुःखों और दुर्भिक्षादि मे मनुष्य परमात्मा को गालियां तक देने लग जाते हैं। वह सब सहन कर लेता और अपनी कृपा का परित्याग नहीं करता। यही उसकी क्षमा और दया है। न्यायकारी यदि किये कर्मों को क्षमा कर दे तो वह अन्यायकारी हो जाता है। परमेश्वर अपने स्वाभाविक गुण के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करता। जैसे न्यायाधीश पापियों को विद्या और शिक्षा द्वारा पाप से पृथक् कर प्रतिष्ठा और दण्ड से शुद्ध और सुखी कर देता है ऐसे ही ईश्वर का न्याय समझना चाहिए।

प्रश्न ३—यदि आपके मत में तत्वों के परमाणु नित्य हैं और कारण का गुण कार्य मे रहता है तो यह बताइये कि सूक्ष्म परमाणुओं से स्थूल सृष्टि कैसे हो गई?

उत्तर—जो परम सूक्ष्म है उसी को परमाणु और अव्याकृत आदि नामों से पुकारा जाता है। ऐसे परमाणु अनादि और सत्य हैं। कारण के जो गुण समवाय-सम्बन्ध से हैं वे कारण में नित्य हैं और कार्यावस्था में भी नित्य बने रहते हैं। परमाणुओं में संयोग और विभाग के गुण भी नित्य हैं। इसीलिए इनके मिलने और बिछड़ने से इनके स्वरूप में अनित्यता नहीं आती। परमाणुओं में गुरुत्व और लघुत्व दोनों का सामर्थ्य भी नित्य है। गुण-गुणी का समवाय सम्बन्ध है।

प्रश्न ४—मनुष्य और ईश्वर का परस्पर सम्बन्ध क्या है? क्या ज्ञान से मनुष्य ईश्वर बन

सकता है? जीवात्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है? क्या वे दोनों नित्य हैं? यदि दोनों चेतन हैं तो जीव ईश्वराधीन है या नहीं? आधीन है तो क्यों?

उत्तर—मनुष्य और ईश्वर का राजा-प्रजा, स्वामी-सेवक आदि का सम्बन्ध है। अल्पज्ञ होने से जीव ईश्वर नहीं हो सकता। जीव और ईश्वर में व्याप्य-व्यापक आदि सम्बन्ध है। जीवात्मा सदा ईश्वराधीन रहता है परन्तु कर्म करने में वह स्वतन्त्र है और फ भोगने में पराधीन है। ईश्वर का सामर्थ्य ..नन्त है और जीव का अल्प। इसलिए जोव का परमात्मा के अधीन होना आवश्यक है।

प्रश्न ५—क्या आप संसार की रचना और प्रलय मानते हैं? प्रथम सृष्टि में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ था अथवा अनेक? आदि में जब उनके कर्म समान थे तो परमेश्वर ने कुछ एक मनुष्यों को ही वेद-ज्ञान क्यों दिया? ऐसा करने से उसमें पक्षपात का दोष आ जाता है।

उत्तर—सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय हम मानते हैं। ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव अनादि हैं इसलिए सृष्टि भी प्रवाह से अनादि है। यदि ऐसा माना जाय तो रचना से पूर्व ईश्वर को निकम्मा मानना होगा। परमेश्वर की तरह प्रकृति और जीव भी अनादि हैं। जैसे इस कल्प की सृष्टि की आदि में अनेक स्त्री-पुरुष उत्पन्न हुए वैसे ही पूर्व कल्पों में होते रहे और आगामी कल्पों में होते रहेंगे। जीवों के कर्म भी अनादि हैं। जिन चार आत्माओं में परमात्मा ने वेद का प्रकाश किया उनके सदृश अथवा उनसे अधिक किसीके भी पुण्य नहीं थे। इसलिये परमात्मा में पक्षपात का दोष नहीं आता। (पृ० ४२३, द० प्र०)

(क्रमशः)

(२)
रक्षा बन्धन

रक्षा-बन्धन के दिन बहुत से तरुण और वृद्ध रक्षा बांधने के लिए स्वामी जी के निकट गए। महाराज ने मुस्करा के कहा कि आप लोग अपने देश-रीति भूल गये हो। पूर्व काल में बूढ़े रक्षा बांधे नहीं फिरते थे। उस समय उस पर्व के दिन सब विद्यार्थियों के हाथ में राजा की ओर से रखड़ी बांधी जाती थी उससे यह सूचित किया जाता था कि इनकी रक्षा करना राजा और प्रजा दोनों का कर्त्तव्य है।

(३)
विश्वास उत्पन्न क्यों नहीं होता?

स्वामी जी के कर्मचारी कई बातें उनके मन्तव्य के विरुद्ध कर देते। विद्यार्थी जन कई बातें बार बार समझाने पर भी न मानते। महाराज ने एक दिन सबको एकत्र करके कहा—"आप लोगों के हृदयों मे जो मेरे कथनों का विश्वास उत्पन्न नहीं होता इसके अनेक कारण हैं। एक तो आप में सचाई के लिए अधिक आदर नहीं है। दूसरे आप सब मिथ्या कथाओं से प्राप्त किए अन्न से पले हो, तीसरे आप मृतकों का आदर करने वाले बन गए हो। यह भाव आप में से उठ गया है कि जीवित पितरों का श्रद्धा-भक्ति से आदर करना धर्म है।

(४)
मूर्ति पूजा क्यों?

फर्रुखाबाद में जौन्न महाशय ने निवेदन किया—"हिन्दुओं में मूर्ति पूजा क्यों है?" स्वामी जी ने उत्तर दिया—"आर्यों के धर्म में और धर्म-ग्रन्थों में प्रतिमा पूजन की आज्ञा नहीं है। इसके चलने का कारण यह प्रतीत होता है कि पहले लोग अपने मृत महापुरुषों की मूर्तियां बनवा कर घरों में रखते थे। उन्हें अपने पूज्य

पुरुषों का स्मारक चिह्न समझते थे। कालान्तर में उन्हीं प्रतिमाओं को प्रेम से पूजने लगे। आपके मत में लोग ईसा और मरियम की मूर्तियां रखते हैं। इनका पूजन भी करते हैं। अविद्या की ये बातें दोनों में समान हैं ?"

(५)

परमेश्वर प्रदत्त धर्म एक ही होना चाहिए

एक दिन जोन्स महोदय ने महाराज से पूछा कि क्या धर्म एक है या अनेक ? महाराज ने उत्तर दिया कि "परमात्मा के रचे हुए पदार्थ सबके लिए एक से हैं। सूर्य और चन्द्रमा सब को समान प्रकाश प्रदान करते हैं। वायु और जलादि वस्तुएं सब को एक सी दी गई हैं। जैसे ये पदार्थ ईश्वर की देन हैं, सब प्राणियों के लिए एक से हैं ऐसे ही परमेश्वर प्रदत्त धर्म भी मनुष्यों के लिए एक और एक सा होना चाहिए।

उस साधारण धर्म को ढूंढने के लिए यदि कोई जिज्ञासु सारे मतवादियों में भटकता रहे और पन्थाइयों के कथनों पर विश्वास करके धर्म को जानना चाहे तो उसे सच्चे धर्म का ज्ञान कदापि न हो सकेगा। हां यदि वह सब में से सार को निकाले तो उसे प्रतीत होगा कि थोड़ा बहुत सत्य सब मतों में पाया जाता है जैसे सत्य को सब मतावलम्बी स्वीकार करते हैं। सभी कहते हैं परोपकार पुण्य कर्म है, भूत दया का भाव बहुत अच्छा है, विपत्ति-व्याधि ग्रस्त मनुष्यों को सहायता देना और दान पुण्य करना शुभ कर्म है। सारांश यह कि सदाचार और धर्म के जिन अंशों में सब मत एक हैं वही धर्म ईश्वर की देन है। वही सच्चा और सनातन है। शेष सब अपनी अपनी खींचातानी है कि ईसा, मुहम्मद और श्रीकृष्ण के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती।

(पृष्ठ १२ का शेष)

असभ्यता का जो विचार प्रकट किया जाता रहा है वह असत्य है। देखिए स्वामी दयानन्द के इस विचार की पुष्टि किसप्रकार होती जा रही है। मैं कहां तक लिखूं। स्वामी दयानन्द जी के सभी ऐतिहासिक संकेतों का एक स्थान पर संग्रह करके और आज की खोजों से उनका कितना सम्बन्ध है, इस पर एक अलग पुस्तक की आवश्यकता है। आर्य समाज के विद्वान् विशेष कर जो इतिहास के हैं उनसे मेरा यह अनुरोध है कि इस कार्य को अवश्य करें। मैंने म० दयानन्द के इस कार्य का एक अति संक्षेप में वर्णन किया है। इसपर विशेष खोज की आवश्यकता है। अगर ऐसा कर सकें तो हम यह प्रमाणित कर सकते हैं कि—

यूं तो बहुत महापुरुष इस दुनिया में हुए पर गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना।"

—:o:—

महर्षि का न्याय सिद्धांत

[श्रीयुत रामसुमेर एम० ए०]

ज्ञान प्राप्त करने के मार्ग का नाम विद्या है। ज्ञान प्राप्त करने के दो ही मार्ग हैं, एक का नाम सत्य विद्या है और दूसरे का नाम पदार्थ विद्या है, ऐसा महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने हमको बोध कराया है। वेदों ने इन दो मार्गों का नाम परा विद्या और अपरा विद्या अथवा विद्या और अविद्या दिया है। वर्तमान युग में भी दो ही मार्ग ज्ञान प्राप्त करने के हैं एक का नाम कला है और दूसरे का नाम विज्ञान है। इन दो मार्गों से जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसके सत्य होने का प्रमाण क्या है, इस विषय पर महर्षि ने एक विशद विवेचन किया है। महर्षि ज्ञान का न्याय करने के हेतु पंच सूत्री क्रम निर्धारित करते हैं। वह पंच सूत्र क्रम निम्न है।

१—ईश्वर
२—सृष्टि क्रम
३—अष्ट प्रमाण
४—आप्त पुरुष
५—आत्म साक्षी

ईश्वर :—वेद में कहा गया है कि ईश्वर हमारा चक्षु है और यह भी कहा गया है कि वह हमारे अन्तः करण में उच्चारण करता है। (तत् चक्षुः—तत् उच्चरत्)। वह ईश्वर त्र्यम्बक है अर्थात् हमारा तीसरा नेत्र है। यह नेत्र बड़े तप के बाद खुलता है, ऐसा सुनने में आता है। इस तीसरे नेत्र के द्वारा देखा हुआ सब सत्य होता है, ऐसा महर्षि का दृढ़ विश्वास है। सत्यासत्य के संशय के निवारण के हेतु, महर्षि, अपने जीवन में, इस तीसरे नेत्र के दर्शन के हेतु, गाढ़ रात्रि में समाधि का आश्रय लेते रहते थे। महर्षि के दर्शन में यह तीसरे नेत्र का दर्शन प्रथम और सर्वोपरि न्याय है। कला के विद्यार्थी के अन्दर ज्ञान की प्राप्ति अन्दर से होती है। कोई उसके अकस्मात् ज्ञान का उच्चारण कर दिया करता है। कला तो उठाई और जागृत की जाती है। कला में तो साधना ही साधना है। इस साधना से चित्त का पट पूर्ण निर्मल हो अपने लक्ष्य रूपी देवता की पूजा में लगा रहता है। सत्य विद्या का विद्यार्थी जब तप द्वारा अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को जीत लेता है और पाचों यम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को धारण कर लेता है, पुनः नियम पूर्वक जीवन साधना में लगाए रहता है, तो अन्तःकरण में सत्य ज्ञान का उच्चारण होता है, उसको एक दृष्टि प्राप्त हो जाती है जिससे वह प्रत्येक क्षेत्र में सत्य को देख लेता है। यह दृष्टि उसकी स्वयं की नहीं है, यह ईश्वर ही है जो जातवेद होकर अपने ज्ञान रूपी सूर्य की किरणों को साधक के हृदय में उठाता है। (उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः)। यह ईश्वर ही अपने ज्ञान को साधक के अन्दर उच्चारण करता है। इसी कारण महर्षि स्वामी दयानन्द जी ईश्वर को ही सत्य के निर्णय का सर्वोपरि और प्रथम हेतु मानते हैं।

सृष्टि क्रमः ज्ञान—प्राप्त करने का दूसरा मार्ग पदार्थ विद्या है, अर्थात् पदार्थ दर्शन के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है। पदार्थों के दर्शन से ज्ञान कैसे प्राप्त हो जाता है, यह भी एक रहस्य का विषय है, पदार्थ को देखने से उसका रूप, व्यवहार और नाम ही हाथ लगता है। यह नाम रूप और व्यवहार प्रत्येक पदार्थ के पृथक् पृथक् हैं, पुनः क्योंकर इनको देखकर कोई जिज्ञासु ज्ञान

प्राप्त कर सकेगा। प्लेटो, जिसे अफलातून भी कहते हैं, उसका कहना तो यहां तक था कि इन पदार्थों को देखकर कोई ज्ञान हाथ नहीं लगता, केवल मात्र इनके पीछे बहने वाली प्रचलित मान्यताएं और रुढ़ियों तथा विश्वास ही मस्तिष्क में घर किए रहते हैं। यह बोध ज्ञान नहीं है। इस बोध के ऊपर तर्क का व्यवहार ही ज्ञान प्रदान कर पाता है। फ्रांसिसबेकन का विश्वास है कि तर्क स्वयं ही प्रचलित मान्यताओं का दास है। जैसे:—मनुष्य मरण धर्मा है, सुकरात मनुष्य है अतः सुकरात मरेगा। इस तर्क में मनुष्य मरण धर्मा है। इसका आधार लेकर तर्क चलता है। यह मत एक विश्वास ही तो है, यह एक प्रचलित मान्यता ही तो है। बेकन का कहना है कि इस प्रचलित मान्यता व विश्वास का निर्णय मात्र पदार्थ दर्शन के अन्य किसी से नहीं हो सकता अत पदार्थ दर्शन का आश्रय ही ज्ञान प्राप्ति का मार्ग है। यह, तर्क के प्रतिपादक और अनुभूति के प्रतिपादक, दोनों विद्वान. अपने मत की पुष्टि के लिए किसी कमी की अनुभूति करते ही रहे। महर्षि स्वामी दयानन्द जी का कथन है कि पदार्थों मे एक सृष्टि क्रम की विद्यमानता है, एक यूनीवर्सलिटी है, जो उनकी समानता में भी एकरूपता (यूनीफार्मिटी) का दर्शन कराती है। हम पदार्थों का दर्शन पदार्थों के नाम रूप और व्यवहार देखने के लिए नहीं करते हैं, वरन उन पदार्थों मे एकरूपता (यूनीफार्मिटी) देखने के लिए करते है। यह समस्त एक रूपता हमको एक सृष्टि क्रम के व्यवहार (यूनीवर्सल आर्डर) में पिरोई हुई दीख पड़ती है। यह देखने का दृष्टि कोण जिसको प्राप्त हो जाता है, वही पदार्थ विद्या के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, अन्य कोई नहीं। विज्ञान, इस दृष्टि का नाम ही है। तर्क का आधार यह सृष्टि क्रम है, कोई विश्वास, या प्रचलित मान्यता नहीं है। पर्वत पर अग्नि है, क्योंकि पर्वत पर धुवां दीख पड़ता है, जहां जहां धुवां होता है, वहां वहां आग होती है जैसा कि रसोई में अत पर्वत पर आग है यहां तर्क का आधार सृष्टि क्रम धुवां का अग्नि से अव्यवहित सम्बन्ध है। महर्षि इस प्रकार तर्क को न्याय का साधन मानते हैं। महर्षि का तर्क पूर्णतः रूढ़िमुक्त सृष्टि क्रम के आश्रय पर चलता है यह तर्क समस्त पदार्थ विद्या के दर्शन का हेतु है। महर्षि के दर्शन में इस प्रकार अनुभूति और तर्क का गठबंधन है, विरोध नहीं।

अष्ट प्रमाण —

१—प्रत्यक्ष :—पदार्थ विद्या में सृष्टि क्रम को अनुभव करने का प्रथम पग प्रत्यक्ष, साक्षात्कार है महर्षि का कथन है कि पदार्थ का इन्द्रियों के साथ इन्द्रियों का मन के साथ और मन का जो आत्मा के साथ अव्यवहित सम्बन्ध है, उससे ज्ञान उत्पन्न होता है।

पदार्थ का प्रत्यक्ष कर्म छापवादी इम्पीरिसिस्ट व व्यवहारवादी प्रतिक्रिया वाद के समान नहीं है। महर्षि का कथन है कि इन्द्रियां पदार्थ के गुणों को पकड़ती हैं, मन संस्कार मे पड़े नाम रूप के अनुसार इन गुणों का आत्मा की इच्छा से संयोगीकरण करता है और इन गुणों की सामग्री को एक भाव का नाम रूप देता है। आत्मा इस नाम रूप का साक्षात्कार करती है। इसके सत्य का न्याय यही है कि इस भाव को पदार्थ से मिलाया जाय। इस प्रकार कसौटी करने पर प्रत्येक बार में गुणों की शुद्धि के साथ साथ दर्शन में सुधार होता जाएगा। पूर्व प्राप्त संस्कारों की सहायता से यह दर्शन एक न एक दिन पूर्ण सत्य हो जाएगा। महर्षि इस परतः प्रमाण का मार्ग ही उचित समझते हैं और कहते हैं कि जो वस्तु जैसी है उसको वैसा

जानना सत्य है। महर्षि का निर्देश है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा तत्पर रहना चाहिए। महर्षि का प्रतिपादित प्रत्यक्ष सिद्धांत कोई निश्चेष्ट पार्थिव कर्म नहीं है, इसमें आत्मा का अव्यवहित सम्बन्ध सदा लगा रहता है। स्वामी जी कहते हैं कि जो अव्यपदेश्य, अव्यभिचार और निश्चयात्मक ज्ञान है, उसी को प्रत्यक्ष कहते हैं।

(२) अनुमान —पदार्थ को देखने पर पदार्थ के गुणों और उपादानों का इन्द्रिय के द्वारा ग्रहण होता है, किन्तु इन गुणों के पकड़ने के साथ साथ कुछ अन्य सम्बन्धित गुणों का भाव मन पर अंकित हो जाता है। जैसे पर्वत पर धुएँ को देख कर पर्वत पर अग्नि के गुणों का भाव मन पर आ जाता है। यह सृष्टि क्रम के भाव का प्रवाह आत्मा में पूर्वापर बना रहता है। पदार्थ के गुणों को पकड़ते ही साथ साथ सृष्टि क्रम के अनुसार उन गुणों का उत्पन्न हो जाना आत्मा में स्वतः होता है ही, और इस आधार पर पदार्थ के सम्बन्ध में एक भविष्य वाणी सी अन्तःकरण से निकल पड़ती ही है। मनुष्य पदार्थ को देख कर सदा कल्पना करने लग जाता है। यह कल्पनाएं जब गुणों की सृष्टिक्रम (व्याप्ति) में देखकर ऐसे मार्ग बनाती है जो किसी सत्य का प्राक् ज्ञान कराने में समर्थ होती है तो उन्हें अनुमान कहते हैं। इसी दृष्टि से प्रत्यक्ष भी अनुभव ही है, जो गुणों को देख गुणों की कल्पना व ज्ञान सम्मुख रखता है। जब प्रत्यक्ष पदार्थ के अतिरिक्त किसी अन्य पदार्थ का ज्ञान इस क्रम से होता है तो इसे अनुमान कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतोदृष्ट। पूर्ववत् वह है जहां कारण के आधार से कार्य का अनुमान होता है। जैसे बादलों को देख वर्षा का। शेषवत् जिसमें कार्य को देख कारण का जैसे पुत्र को देख पिता का अनुमान, सामान्यतोदृष्ट जैसे एक पदार्थ को देख उसके सदृश दूसरे पदार्थ का अनुमान।

उपमान —जब एक पदार्थ का बोध हो जाने पर दूसरे समान धर्म वाले अदृष्ट पदार्थ का बोध इसके गुणों की समानता के आधार पर किया जाता है तो इसको उपमान कहते हैं।

शब्द —मनुष्य के ज्ञान की विशेषता है कि उसका ज्ञान शब्द प्रतीक में बड़ी सरलता और सफलता से बहा करता है। शब्द प्रतीक के आते ही उसका अर्थ और तदर्थ भाव साक्षात्कार हो जाता है। यह शब्द संस्कृति की देन है। इस शब्द आधार के बिना मनुष्य का ज्ञान व्यापार सम्भव नहीं। शब्द के आधार पर ही मनुष्य अपने अर्जित संस्कार स्मृति में रखता है। शब्द का ध्यान आते ही समस्त ज्ञान व्यापार सचालित हो जाता है। शब्द को पकड़ने के समस्त प्रकार सामाजिक व सांस्कृतिक हैं। पठन और पाठन ही इसका एक मात्र मार्ग है। महर्षि का कथन है कि शब्द का अभ्युदय आदि में ईश्वर ने किया। वेद ही उस ज्ञान के आदि ग्रन्थ हैं। और अग्नि, आदित्य अंगिरा और वायु ही वे आदि ऋषि हैं जिन पर शब्द उतरे। इन ऋषियों ने सुना सुना कर जैमिनि पर्यन्त तक शब्द का प्रचार किया। व्यास जी ने इनको लिपि बद्ध करके ग्रन्थ का रूप दिया। समस्त संसार में यह शब्द रूपान्तर होता हुआ आर्यावर्त से ही गया है। संसार भी मानता है कि संसार के पुस्तकालय में ऋग्वेद ही सर्व प्राचीन पुस्तक है। यह भी भाषा विद मानते हैं, कि संसार की समस्त भाषाएं किसी एक ही भाषा से निकली हैं। आदि भाषा सत्य विद्या के माध्यम से अन्तःकरण में उच्चारित हुई है। पदार्थ विद्या के माध्यम से आदि शब्द प्राप्त नहीं हो सकता, कारण कि पदार्थ विद्या स्वयं शब्द के बिना सम्भव ही नहीं

हो सकती। अत' पदार्थ विद्यावित् लोगों का यह कहना कि आदि भाषा प्रयत्न और त्रुटियों के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुई, निराधार है।

ऐतिह्य —मनुष्यों के जीवन वृत्तों से भी ज्ञान व सत्य का लाभ होता है। अंग्रेजी की एक कहावत है कि इक्जाम्पल इस बेटर देन प्रेसप्ट(Example is better than precept) मनुष्य जीवन ज्ञानार्जन जीवन वृत्तांतों से सरलता और सफलता से करता है। अत असत्य जीवन वृत्तान्तोंका व हानिप्रद जीवन गाथाओं का परित्याग करना अनिवार्य है। जो संस्कृति सत्य और कल्याण से ओतप्रोत होती है वही सुन्दर है।

अर्थापत्ति —न्याय का सिद्धान्त है कि जो न्याय सत्य है उसका विलोम भी सत्य है। जैसे जो पैदा हुआ है मरेगा इसका विलोम किसी को मरता देख यह कहा जाएगा कि वह एक दिन पैदा हुआ था। ससार के पदार्थों को नष्ट होते देख यह ज्ञान करना कि ससार एक दिन पैदा हुआ था पूर्णतः सत्य है।

सम्भव —जो न्याय सम्भव होगा वही ज्ञानगम्य होगा अन्य नहीं। वन्ध्या पुत्र, आकाश-पुष्प, शश-शृंग आदि सम्भव नहीं है अत ऐसा न्याय मान्य नहीं होगा चन्द्रमा पर पहुचना, संसार के रहस्य को जानना सम्भव है अत हो सकता है।

अभावः - अराजकता को किसी देश मे देख कर यह न्याय आ जाता है कि इस देश मे राजा नहीं है अथवा यदि है तो निष्क्रिय है। अभाव भी ज्ञान प्राप्त करने का एक मार्ग मनुष्य जाति में पाया जाता है।

आप्तों का प्रमाण—यदि उपरोक्त प्रमाणों का अभाव हो अथवा संशय निवारण का कोई मार्ग न सूझता हो तो लोग कहते हैं कि गुरु के पास पहुँच कर संशय निवारण कर लेना चाहिए। आप्त पुरुष वही हैं जिन्होंने सत्य का साक्षात्कार किया है। ऐसे विद्वान् के संसर्ग से संशय का निवारण अति शीघ्र हो जाता है। अंग्रेजी मे इसको अथार्टी कहते हैं। महर्षि का कथन है कि उपरोक्त निर्देशित प्रमाणों को ध्यान में रख कर ही आप्त का निर्देशन प्राप्त करना चाहिए। संभव है कि आप्त का चुनाव गलत हो जाए और अपनी अयोग्यता पर उसका निर्देशन सत्य प्रतीत हो। अत असत्य को जब भी ज्ञात कर लिया जाय तुरन्त छोड़ दिया जाय, इसमें ही मनुष्य जाति का कल्याण है। केवल विश्वास पर आप्त को पकडना संस्कृति, जाति और स्वय सबको गढे मे गिराना है।

आत्म निर्णय —महर्षि का निर्देशित यह अंतिम प्रमाण है जो आत्मा कह दे वही अंतिम सत्य है। आत्मा को इसके लिए पूर्णत योग्य होना अनिवार्य है। वास्तविकता भी यही है कि सब प्रमाण व्यर्थ हैं यदि आत्मा उन्हें स्वीकार नहीं करती। आत्मा मे बुरे और गलत के प्रति आन्दोलन होता रहता है। आलस्य और अकर्मण्यता को छोडकर यदि आत्मा का निर्णय लिया जाय तो वह सत्य और अच्छे को ही सदा ग्रहण करने का पक्ष लेती है। न्याय का एक सिद्धांत यह है कि सत्य आत्मा ठीक ठीक जानती है। किन्तु दूसरे पर उसका उलटा प्रयोग करती है। जैसे आत्मा को सत्य प्रिय है, सुख प्रिय है और यदि कोई असत्य भाषण करे या दुःख दे तो स्वयं उसका प्रतिकार करेगा, स्वीकार कभी न करेगा। हम सबसे बडी भूल यह होती है कि हम जिसको आत्म-प्रिय सत्य और कल्याणकारी जानते हैं, उसको, दूसरों पर उतारने में बदल जाते हैं। हमको आत्म-साक्षी सत्य ही एक सा सब पर उतारना चाहिए।

एक स्थान पर जान डेवी ने लिखा है कि न्याय ही तर्क का केन्द्र है। किन्तु न्याय के विषय

(शेष पृष्ठ ३० पर)

त्रिभाषा-सूत्र और राजभाषा-संशोधन सर्वथा अराष्ट्रिय और असंवैधानिक हैं

[सुश्री ओमवती गुप्ता "कुशल' स्नातिका साहित्य रत्न ई ३, कृष्णनगर दिल्ली]

सरकार द्वारा शीघ्र ही लागू किये जाने वाले त्रिभाषा सूत्र का स्वरूप क्या हो, यह एक अनिश्चित और काफी विवाद का विषय बना हुआ है। केन्द्रीय शिक्षा परामर्श बोर्ड, संस्कृत आयोग, राज्यों के शिक्षा मन्त्री-सम्मेलन, भावात्मक एकता समिति और मुख्यमन्त्री सम्मेलन ने इस फार्मूले के विभिन्न रूप प्रस्तावित किये हैं। इस विषय में राज्यों, विश्वविद्यालयों, माध्यमिक शिक्षा बोर्डों तथा शिक्षा शास्त्री और नेताओं की सम्मतियों में भी काफी भिन्नता है। जिन राज्यों में परीक्षण के लिये इसे लागू भी किया गया है उसमें भी कोई एकरूपता नहीं है और विद्यार्थियों को चुनाव का कोई अवसर न देकर जबर्दस्ती उन पर अंग्रेजी या कोई मनमानी भारतीय भाषा थोप दी गई है।

सरकार द्वारा समर्थित मुख्यमन्त्री सम्मेलन के प्रस्तावित फार्मूले के अनुसार तीन (और किसी २ के लिये चार या पांच) भाषाएं इस प्रकार होंगी—१. क्षेत्रीय भाषा (राज्य की राजभाषा) और मातृभाषा. २ हिन्दी—पर हिन्दी भाषी राज्यों में कोई दूसरी भारतीय भाषा (संस्कृत को छोड़कर कोई आधुनिक भारतीय भाषा, दक्षिण की भाषा को विशेषता दी जायगी. ३ अंग्रेजी या कोई दूसरी योरोपीय भाषा

श्री हुमायूं कबीर ने राष्ट्र की एकता के लिये तथा इस कठिन फार्मूले को सरल करने के लिए एक दूसरा राष्ट्रिय संशोधन रखा है कि—हिन्दी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाएं तथा अहिन्दी भाषी राज्यों में राष्ट्रभाषा (हिन्दी) रोमन (अंग्रेजी) लिपि में पढ़ाई जाय। सरकार द्वारा नियत एक पर्यवेक्षण समिति ने (हिन्दुस्तान टाइम्स, ५ जून-१९६५) भी श्री हुमायूं कबीर के काम को थोड़ा और आगे बढ़ाते हुए सुझाव दिया है कि—"साहित्य अकादमी को देवनागरी लिपि के विकास के अतिरिक्त रोमन लिपि के वैज्ञानिक विकास के लिए भी शोध करनी चाहिए जिससे कि इसे (रोमन लिपि को) समस्त भारतीय भाषाओं के लिए प्रयुक्त की जाने वाली एक सामान्य लिपि के अनुकूल बनाया जा सके" धर्मयुग, ४ अप्रैल १९६५। इसके अतिरिक्त देश में भावात्मक एकता के लिये सरकारी पाठ्य पुस्तकों में अपने बच्चों को यह पढ़ते हुए भी आपने देखा होगा कि इस देश में आर्य तो विदेशी लोग हैं जो कोई ३५०० वर्ष पहले (यह चन्द्रगुप्त और चाणक्य का समय है तथा पांच हजार वर्ष तो महाभारत को ही हो गये हैं।) भारत में आये थे और पहिले यहां द्रविड़ लोग ही रहते थे जिन्हें आर्यों ने दक्षिण की ओर खदेड़ कर भारत पर आधिपत्य जमा लिया। ये दो भिन्न संस्कृतियां हैं।

देश के हित, सांस्कृतिक स्वाधीनता और विद्यार्थियों की सरलता के लिये हिन्दी और देवनागरी की दुहाई पूर्वक उच्च स्तर पर अंग्रेजी के लिये क्या कुछ हो रहा है, इससे कुछ अनुमान लग सकता है। कुछ व्यक्तियों को चुन कर प्रति पांच वर्ष के हिसाब से जनता अनन्त काल के लिये अपने अधिकार खोती रहे, यही

जनता का अधिकार है, इसके आगे किसी भी विषय पर कोई सम्मति या युक्ति जनता दे, संवैधानिक दृष्टि से न तो उसका कोई महत्व है और न ही उसका कोई प्रभावपूर्ण अवकाश है। अभी हमें एक राष्ट्र की दृष्टि से तो सोचना आया नहीं, उसके गौरव और सम्मान की रक्षा तो हम कर नहीं सकते, अभी तक भी विभिन्न वर्गों को उभाड़ कर साम्प्रदायिकता के आधार पर ही चाहे हमारे सारे कार्य होते हों, तो भी राष्ट्रियता की परिधि को लांघ कर अन्तर्राष्ट्रियता के बीहड़ वन में जानबूझ कर भटकते रहने में ही हम आत्मिक सा गर्व अनुभव करना चाहते हैं। कोई यदि कहे कि जब देश की जनभाषा राष्ट्रभाषा भी संविधान की किसी धारा के अनुसार देश के प्रशासन और शिक्षा में अनिवार्य नहीं की जा सकती, उसमें परीक्षा ही न हो ऐसा किया जा सकता है तो देश या विदेश की किसी भाषा को (और विशेषकर अंग्रेजी को जिसे केवल दो प्रतिशत लोग ही थोड़ा बहुत समझते हैं, देश के बड़े २ नेता भी जिसे ठीक ढंग से नहीं जानते) कैसे देश के प्रशासन का या शिक्षा में परीक्षा का अनिवार्य विषय बनाया जा सकता है, देश की शिक्षा प्रणाली सत्रह वर्ष से पहिले ही अनावश्यक विषयों से बहुत बोझिल है, उसे तीन-चार या पांच भाषाओं से पुन और बोझिल करना कहा की बुद्धिमत्ता है या यह कौन सा शिक्षा-विज्ञान है? सब भाषाएं रोमन-लिपि में पढ़ाई जायं, ऐसा सोचा जा सकता है तो संविधान ने राष्ट्रभाषा की जो लिपि निश्चित की है, जो देश की सब लिपियों का मूल है और पहिले से दुनियां की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है. देश की सब भाषाएं उस देवनागरी लिपि में भी पढ़ाई जा सकती हैं, या अंग्रेजी को भी राष्ट्रलिपि में ही पढाना चाहिये—ऐसा क्यों नहीं सोचा जाता, अनेक शिक्षाशास्त्री, भाषा वैज्ञानिक तथा राष्ट्रिय नेताओं के कहने के बावजूद देवनागरी को सब भाषाओं की वैकल्पिक रूप से ही सामान्य लिपि क्यों नहीं मान लिया जाता—तो उसे कूपमण्डूक या साम्प्रदायिक कह कर (जिसकी कोई परिभाषा नहीं है और कोई भी बलवान् व्यक्ति, स्वयं चाहे कितना भी साम्प्रदायिक हो, किसी भी निर्बल व्यक्ति के लिये इसका प्रयोग कर सकता है) उसकी बुद्धिमत्ता. राष्ट्रियता और देशप्रेम को हीन व तुच्छ सिद्ध किया जा सकता है।

त्रिभाषा फार्मूले और संविधान संशोधन की अराष्ट्रिय पृष्ठभूमि

कई बार ऐसा होता है कि अपने शत्रु को भी यदि हम न्याय की कुर्सी पर बिठा दें तो वह भी ठीक न्याय कर जाता है। संविधान निर्माण के समय भी कुछ ऐसा ही हुआ--हिन्दी सारे देश की भाषा होने से हिन्दी विरोधियों ने भी उस समय तो हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा माना तथा देश की भावात्मक एकता के लिए एवं सभी भारतीय भाषाओं की प्रकृति को देखते हुए उनकी समृद्धि के लिये भविष्य में संस्कृत को ही आधार माना। पर दुर्भाग्य से देश की सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में रही जो देश की एकता और गौरव को महत्व न देकर अन्तर्राष्ट्रियता के भ्रम में विदेशीपन से अधिक प्यार करते थे। अतः बाद में क्रमश. ऐसी योजनाएं बनाई गई जिनसे भारतीय भाषाएं अपने स्वाभाविक आधार संस्कृत को छोड़ कर अंग्रेजी के आधार पर विकसित हों. हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी ही देश की राजभाषा, राष्ट्रभाषा या सम्पर्कभाषा बनी रहे। केन्द्र एवं राज्यों में शिक्षा तथा प्रशासन में राष्ट्रभाषा चाहे अनि

वार्य न हो; पर सत्रह वर्ष तक उत्तरोत्तर अंग्रेजी का प्रयोग बढ़ाना, स्वाधीनता के सत्रह वर्ष बाद भी राजभाषा संशोधन विधेयक और त्रिभाषा फार्मूले के द्वारा उनमें तथा राष्ट्र के सारे जीवन में अंग्रेजी को अनिवार्य किया जाना तथा संस्कृत को मृतभाषा घोषित करना उक्त प्रच्छन्न नीति के ही अंग हैं देश की संस्कृति के पूर्णतः विदेशीकरण की इस नीति के अनुसार पहले माप तोल के भारतीय पैमानों को पूर्णतः समाप्त करने के लिये मीट्रिक पद्धति को फ्रान्स की ही पारिभाषिक शब्दावली म बिना किसी विकल्प के देश पर पहिले ही थोपा जा चुका है जब कि राष्ट्रिय कलैण्डर को अनिवार्य नहीं किया गया। मीट्रिक पद्धति की दाशमिकता को लेते हुए उसका सरलता से भारतीयकरण हो सकता था। धीमे २ ऐसे प्रहार राष्ट्रिय, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन के प्रत्येक स्तर पर इसी योजनाबद्ध क्रम में अवश्यम्भावी हैं। अब भी समय है कि जनता चेते और विदेशीकरण की इस नीति का तन-मन-धन से प्रबल विरोध करे।

त्रिभाषा सूत्र और राजभाषा संशोधन की असंवैधानिकता

संविधान में दिये गये मौलिक अधिकारों एवं भाषा सम्बन्धी आश्वासनों के अनुसार सरकार सारे देश में शिक्षा एवं प्रशासन में राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त किसी भी भारतीय या विदेशी भाषा को सरकार अनिवार्य रूप से पढ़ने या प्रयोग के लिये न तो बाध्य कर सकती है (जैसा कि राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त दो अन्य भाषाओं के लिये वह सबको बाध्य कर रही है। और न ही संविधान सम्मत चौदह जीवित मुख्य भाषाओं में से किसी एक को अन्य भाषाओं के समकक्ष पढ़ने से रोक सकती है जैसा कि त्रिभाषा फार्मूले में संस्कृत के लिये वह कर रही है)।

देश की भावात्मक एकता, सब भाषाओं की समृद्धि, देश के गौरव और संविधान की मूल भावना के अनुसार राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त किसी दूसरी भाषा को अनिवार्य किया जा सकता है तो वह केवल संस्कृत ही है क्योंकि संविधान मे राष्ट्रभाषा के विकास एवं भावी राष्ट्रिय पारिभाषिक शब्दावली के लिये मुख्य आधार संस्कृत को ही माना गया है।

संविधान संशोधन के द्वारा अंग्रेजी को अनन्तकाल तक राजभाषा बने रहने की तथा अंग्रेजी में काम करने वाले व्यक्ति को सारे देश मे किसी भी स्तर पर कठिनाई न होने देने की जो गारण्टी या कानूनी व्यवस्था सरकार करने जा रही है, वह संविधान का स्पष्ट हनन है क्योंकि संविधान में अंग्रेजी को प्रशासन से क्रमशः हटाकर उसके स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने की गारण्टी दी गई है। सरकार की अंग्रेजी के सम्बन्ध में दी गई गारण्टी से अंग्रेजी को हटाने के बजाय बनाये रखने की सरकारी नीति स्पष्ट प्रकट होती है। वस्तुत. संविधान के अनुसार तो ऐसी गारंटी सत्रह वर्ष पूर्व ही राष्ट्रभाषा के लिये दे देनी चाहिये थी और सन् १९६५ के बाद तो राष्ट्रभाषा के संबन्ध में वह गारण्टी तुरन्त ही दे दी जानी चाहिये थी, पर वैसा न करके यह गारण्टी एक विदेशी भाषा अंग्रेजी के लिये दिया जाना सर्वथा असंवैधानिक है क्योंकि इससे राष्ट्रभाषा की देश के प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्यता तथा देश में किसी भी स्तर पर राष्ट्रभाषा में व्यवहार के मौलिक अधिकार का हनन होता है तथा इससे भारत में भारत की राष्ट्रभाषा एवं अन्य भारतीय भाषाओं के व्यवहार पर एक प्रकार से अनन्त कालीन प्रतिबन्ध लग जाता है, राष्ट्रभाषा का राष्ट्रभाषात्व समाप्त कर दिया

जाता है तथा यह एक ऐसी व्यवस्था कर दी जाती है ताकि भारत में भारतीय भाषाए सदा२ एक विदेशी भाषा अग्रेजी से दबी रहें और कभी भी न पनप सकें।

अग्रेजी साहित्य और अग्रेजों के सम्पर्क से तो बहुत कुछ सीखने का अवसर हमे मिला ही है अब आवश्यकता इस बात की है कि हम ससार के अन्य देशों से भी सम्पर्क बढायें और उनसे भी सीखें। अग्रेजी जानने वाले लोग तो देश मे पहले ही काफी हैं, ससार की अन्यभाषाओं के सीखने के लिये विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। यह कहा जा सकता है कि इसीलिये त्रिभाषाफार्मूले मे अग्रेजी या किसी अन्य योरोपीय भाषा की व्यवस्था की गई है। पर सविधान सशोधन के द्वारा केन्द्र की तथा राज्यों म भी राजभाषा सशोधनों क द्वारा अग्रेजी को अनन्त काल तक वहा की राजभाषा या सहराजभाषा बना दिये जाने क बाद क्या यह सभव होगा कि अग्रेजी के अतिरिक्त किसी दूसरी योरोपीय भाषा को विद्यार्थी पढें? प्रशासन मे अग्रेजी की अनिवार्यता बना कर शिक्षा म विद्यार्थी अग्रेजी ही पढें, ऐसी व्यवस्था की जा रही है। इससे विकल्प का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है। फिर इसमे योरोपीय ही क्यों रखा गया है भारत की भाषाओं से भिन्न ससार की कोई भी भाषा अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थी पढ सकें ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं की गई है?

देश की राष्ट्रभाषा, सविधान की मूल भावना के अनुसार तो, केन्द्र और सभी राज्यों की मुख्यभाषा है और विभिन्न राजभाषाए अपने २ राज्यों मे राष्ट्रभाषा की समानान्तर भाषाए या सहभाषाए है। पहली तो असवैधानिकता यही है कि राज्यों म प्रादेशिक भाषाओं को मुख्यभाषा कहा और बनाया जा रहा है। फिर दूसरी असवैधानिकता यह हो रही है कि राज्यों में सहभाषा भी राष्ट्रभाषा को न बनाकर एक विदेशी भाषा अग्रेजी को बनाया जा रहा है। असवैधानिकता के साथ २ यदि यह अराष्ट्रियता और देश के साथ अनन्तकालीन छल भी हो तो क्या देश की जनता इस छल को चुपचाप सह लेगी या माफ कर देगी? देश की प्रधान इकाई राष्ट्र है, जिन आधारों पर एक राज्य के सब जिलों की मुख्यभाषा वहा की राजभाषा हो सकती है उससे अधिक उचित आधार इस बात के हैं कि देश की राष्ट्रभाषा उसके अगभूत सभी राज्यों की, सभी प्रदेशों की मुख्यभाषा है और देश के किसी भी प्रदेश मे किसी भी स्तर पर राष्ट्रभाषा मे शिक्षा या व्यवहार चाहने वाले किसी भी व्यक्ति को कोई कठिनाई नहीं होगी इस प्रकार की गारण्टी दी जाय। किसी भाषा को राष्ट्रभाषा कहा ही इसलिये गया है क्योंकि वह देश के सभी प्रदेशों की भाषा है। सन् १६६५ के बाद भी राष्ट्रभाषा मे वेतनपत्र बनाने पर तो वेतन ही न मिले और गारण्टिया विदेशी भाषाओं के लिये दी जाय, यह कहा की सवैधानिकता है?

राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की अनिवार्यता म सबसे मुख्य दोष तो यही है कि सविधानसम्मत जीवित एव देश की एक मुख्य भाषा सस्कृत को विशेष सरक्षण देने के बजाय तीन भाषाओं म से एक भाषा के रूप मे पढने से भी रोका गया है। चौथी और पाचवीं भाषा के रूप मे विद्यार्थी सस्कृत पढ यह सर्वथा अव्यवहार्य है। पहले तो देश मे अग्रेजी से भी अधिक सस्कृतज्ञ और सस्कृत प्रेमी लोगों के होते हुए भी एक सस्कृतभाषी पृथक् राज्य नहीं बसाया गया यही सस्कृत के साथ अन्याय हुआ। सस्कृतप्रेमियों ने भी देश

के हित का ध्यान कर पृथक् संस्कृतभाषी राज्य के लिये उस समय आन्दोलन नहीं किया। परन्तु यह उनकी एक कमजोरी समझी गई। कहां तो उसे राष्ट्रभाषा बनाने के लिये प्रस्ताव आ रहे थे, कहां अब संस्कृतभाषी राज्य न बनने से उसे अब मृत ही घोषित कर दिया गया है और अब त्रिभाषा सूत्र मे भी सम्मिलित करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। वास्तव में तो संविधान ने उसे जीवित भाषा मानने के साथ २ राष्ट्रभाषा और सभी भारतीय भाषाओं की समृद्धि के लिये आवश्यक भी माना है। इसके अतिरिक्त उसे अनिवार्य करने एवं विशेष संरक्षण के लिये केन्द्र एवं सभी राज्यों का विशेष उत्तरदायित्व इसलिये भी हो जाता है क्योंकि इसका कोई भाषायी राज्य नहीं बन सका है। इसलिये संस्कृत का शिक्षा मे कोई अनिवार्य स्थान तो होना ही चाहिये, हिन्दी भाषी राज्यों में संस्कृत को तथा अन्य भाषा-भाषी राज्यों में हिन्दी को अनिवार्यतः सहभाषा भी बनाया जाना चाहिये। केन्द्र एवं सभी राज्यों में आकाशवाणी से नियमित समाचार की एवं शिक्षा तथा प्रशासन में पत्र व्यवहार की विशेष व्यवस्था करके उसे संरक्षण की तुरन्त व्यवस्था की जानी चाहिये, अन्यथा संस्कृत भाषी एक पृथक् राज्य की मांग सरकार को पूरी करनी पड़ेगी।

संस्कृत के साथ अन्याय के अतिरिक्त संविधान के अनुसार भी भारतके प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भारतीय भाषा भी प्रत्येक विद्यार्थी के लिये शिक्षा का या परीक्षा का अनिवार्य अङ्ग नहीं बनाया जा सकता। इसके साथ २ युग की भी बहुत दिनों से यह मांग है कि देश ने शिक्षा को राजनीतिज्ञों के हाथ का खिलौना न रख कर निर्दलीय शिक्षा शास्त्रियों के एक सर्वथा-स्वतन्त्र आयोग के आधीन रखा जाय और अधिक से अधिक विकल्प के आधार पर उसका तुरन्त ही कोई क्रान्तिकारी पुनर्गठन किया जाय ताकि देश मे विद्यार्थी अनिवार्यतः एक राष्ट्रभाषा (स्वेच्छा से चाहे कोई कितनी भी भाषा जानता हो) के साथ विज्ञान व कलाकौशल की किसी शाखा मे माध्यमिक (८ म कक्षा) तथा उच्च माध्यमिक (१० वीं-११ वीं कक्षा) स्तर तक ही विशेष दक्षता प्राप्त कर सकें, रुचि व क्षमता के प्रतिकूल किसी भी विषय को विद्यार्थी छोड़ सकें तथा किसी भी विषय को ले सकें। समय की माग है कि प्रस्तावित राष्ट्रिय शिक्षा प्रणाली मे अनावश्यक विषयों का बोझ तुरन्त समाप्त किया जाय, न कि विद्यार्थियों पर ३-४-५ भाषाओं का एक अपने आप मे पूरा बोझ और लाद दिया जाये। "इस दृष्टि से देश का त्रिभाषा सूत्र के स्थान पर त्रिविषय (राष्ट्रभाषा तथा विज्ञान व कलाकौशल के कोई दो विषय)—सूत्र की ही अविलम्ब आवश्यकता है।" अन्य भाषाओं और विषयों का ज्ञान विद्यालयों मे तथा अतिरिक्त समय में सामान्य व्याख्यानों के द्वारा सामान्य ज्ञान के रूप में ही कराया जाना चाहिये जिसमें कोई परीक्षा न हो, विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत कोई अतिरिक्त भाषा या विषय केवल पढ़े होने का प्रमाणपत्र दे दिया जाय। सरकारी नियुक्तियों मे भी एक राष्ट्रभाषा के ज्ञान को ही अनिवार्य समझा जाय ताकि विद्यार्थी किसी विषय-विशेष मे दक्षता के लिये पूरा समय दे सकें।

अच्छा हो दलबन्दी और पदों के लोभ से ऊपर उठकर विशुद्ध शिक्षा, देश की प्रगति, राष्ट्रीयता एवं त्याग की दृष्टि से राष्ट्र के कर्णधार इस प्रश्न पर विचार करें। उन्होंने सदा सदा पदों पर नहीं बने रहना है, पर उनका देश सदा ही बना रहेगा और उनका त्याग भी सदा

स्मरण किया जा सका।

त्रिभाषा सूत्र का एक बड़ा दोष यह भी है कि सरकार ने कहने को तो इसमें योरोपीय और भारतीय भाषाओं में विकल्प रख दिया है, पर जिस एक अतिरिक्त भाषा (संस्कृत) के पठन-पाठन की सारे देश में व्यवस्था है उसे तो त्रिभाषा सूत्र से पहले ही पृथक् कर दिया है, और अन्य भाषाओं में से किसी स्कूल में जिस भाषा की सरकार व्यवस्था करेगी–वर्षों तक विद्यार्थियों को वे ही भाषा पढ़नी पड़ेंगी। परिणामतः शिक्षा में रुचि क्षमता और देश की आवश्यकता का कोई स्थान न होकर वह पूर्णत सरकार और राजनीतिज्ञों की नीतियों को पूर्ण करने का साधनमात्र रह जायेगी–जो सर्वथा असंवैधानिक है। देश जिस सकट की घड़ी से गुजर रहा है, उसके लिए हर क्षेत्र में लाखों-करोड़ों योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, उसका एकमात्र साधन है शिक्षा। देश कीशिक्षा और शिक्षाप्रणाली को खराब करके क्लर्क और कलह मात्र पैदा करने का जो स्वप्न मैकाले ने देखा था, उसकी पूर्ति अपने देश में काले अंग्रेजों के रूप में हम स्वयं करेंगे, यह बात देश के लिये बलिदान होने वाले शहीदों को ज्ञात न थी, अन्यथा वे 'अंग्रेजी राज्य ही ठीक है' सोच कर सन्तोष कर लेते। जब तक सरकार देश के प्रत्येक विद्यालय में सभी भारतीय और योरोपीय (या ससार की) भाषाओं के पढ़ने वाले अध्यापकों की व्यवस्था नहीं कर लेती (जिसमें कम से कम ५० वर्ष तो लगेंगे ही, इतने वर्ष तो एक राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा में ही सरकार लगा देगी और इसके बाद ही उसे राजभाषा बनाया जायगा) तब तक सरकारी पक्षपात को दूर रखने के लिये आवश्यक है कि एक राष्ट्रभाषा को ही अनिवार्य रखा जाय और इस प्रकार सरकार तब तक एक राष्ट्रभाषा के प्रसार व विकास के कार्य तथा उसे अंग्रेजी के स्थान पर पूर्णत प्रतिष्ठित करने के भार से भी मुक्त हो जायगी और न ही संविधान संशोधन के द्वारा संसार से उखड़ती हुई अंग्रेजी को भारत में जमाया जाय।

इस विषय में सबसे बड़ा उत्तरदायित्व संसद सदस्यों का तथा स्वयं महामान्य राष्ट्रपति का है। जनता इनको चुनकर भेजती ही इसलिये है कि वे सरकार पर नियन्त्रण रखें और जनता को अपने कामधाम छोड़कर असंवैधानिकता के लिये न्यायालयों की शरण न लेनी पड़े या शोर मचा कर ही चुप न रह जाना पड़े। उपर्युक्त तथा अन्य भी अनेक असंवैधानिकताओं एवं अराष्ट्रियताओं को देखते हुए जनता को उदासीनता छोड़कर इन प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये तथा महामान्य राष्ट्रपति यदि स्वयं ध्यान न दें तो उनसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वे सरकार को संविधान सशोधन तथा त्रिभाषाफार्मूले के विषय में जल्दीबाजी रोकें और इस सम्बन्ध में उच्च न्यायालय से अविलम्ब परामर्श लेने की कृपा करें। उच्च न्यायालय के पदनिवृत्त न्यायाधीश श्री विपिन बोस ने भी अभी चेतावनी दी है कि जनता जब देश की लोकतन्त्रीय समस्याओं के प्रति उदासीन हो जाती है तो (यह सामान्य नियम है कि) सत्ता के दुरुपयोग से लोकतन्त्र को खतरा पैदा हो जाता है तथा सैनिक शासन आदि का अनेक देशों में यही कारण रहा है। विधिवेत्ताओं से उन्होंने भाषा और भ्रष्टाचार की समस्या में स्वस्थ एवं राष्ट्रिय दृष्टिकोण से विशेष दिलचस्पी लेने का भी आग्रह किया है। आशा है जनता, जनता के प्रतिनिधि और विधिवेत्ता राष्ट्र में लोकतन्त्र की रक्षा के लिये अब भी चेतेंगे।

Thomas Paine and Christianity

[Shri Shiva Dayalu ji]

Sri Thomas Paine the great revolutionary in political and religious fields, was born in Eng land on 29th. January 1739 A D. His life had been all along an unsettled one.

His career began at Philadelphia (America). He took active part in American and French Revolutions He wrote two very valuable and important books, "Rights of man" & "Age of Reason" The latter work of the author remained bannedby the Roman Catholic Church for long

After the French revolution the intolerant spirit of Church persecutions had transferred itself into politics. The tribunals styled Revolutionary, supplied the place of an Inquisition and the guillotine of the State outdid the fire and faggot of the Church

The Church was conspiring to curb the liberty of the author and as he knew it he began to compile his work hurriedly.

The work was compiled in the latter end of the year 1793. Hardly the author could finish writing his work he was put in arrestation as a foreigner and conveyed to Lvxembourg jail Some how he managed to send his manuscript out of prison and put it to the protection of the citizens of the United States In this article we reqroduce some of the quotations from the book 'Age of Reason" pertaining to the Christian Faith & the Bible as well as some of the highly rationalistic views of Sri Thomas Paine with no comments of ours.

Article of faith of The Author

I believe in one God, and no more, and I hope for happiness beyond this life I believe in the equality of man, and I believe that religious duties consist in doing Justice. loving mercy and endea vouring to make our fellow creat ures happy. P. I

'Jesus Christ wrote no account of himself, of his birth parentage or anything else. Not a line of what is called the New Testament is of his own writing.

The history of him is altogether the work of other people and as to the account given of his resurrection and ascension, it was a necessary counterpart of the story of his birth." P 3

Saint Thomas, one of the 12

disciples of Jesus Christ, who came on pilgrimage to India just after a few years of the death of his holy Teacher, believeth not in myth and resurrection as the author writes- "It appears that Thomas did not believe the resurrection and neither Will I." P. 1.

"The Christian mythologists tell us that their Satan made war against the Almighty, who defeated him, and confined him afterwards in a pit. The mythologists were obliged to let him out again, to bring on the sequel of the fable. He is then introduced into the Garden of Eden, in the shape of a snake or a serpent and in that shape he enters in-to familiar conversation with Eve, who is in no ways surprised to hear a snake talk and the issue of this tete-a-tete is that he persuades her to eat an apple & the eating of that apple damns all mankind

After giving Satan this triumph over the whole creation they let him at large, without even obliging him to give his parole. These mythologists represent this virtuous and amiable man, Jesus Christ, to be at once both God and man, and also the son of God celestially begotten on purpose to be sacrificed, because they say that Eve in her longing, had eaten an apple.

Putting aside everything that might excite laughter by its absurdity and detestation by its profaneness, and confining ourselves merely to an examination of the parts, it is impossible to conceive a story more derogatory to the Almighty, more inconsistant with His wisdom, more contradictory to His power, than this story is

These mythologists have not only given him (Satan) the power of liberating himself from the pit after what they call his fall but that they have made that power exercise afterwards to infinity. Before this fall they represent him only as an angel of limited existence, as they represent the rest. After his fall he becomes, by their account, omnipresent He exists everywhere, and at the same time he occupies the whole immensity of space." P. 5.

"Not only content with this deification of Satan, they represent him as defeating by strategem, in the shape of an animal of the creation. all the power and wisdom of the Almighty. They represent him as having compelled the Almighty to the direct necessity, either of surrendering the whole of the creation to the government and sovereignty of the Satan or of capitulating for its redemption by coming down on earth & exhibiting

himself upon the Cross in the shape of man.

Had the inventors of this story told it the contrary way that is, had they represented the Almighty as compelling Satan to exhibit himself on a Cross in the shape of a snake, as a punishment for his new transgression–the story would have been less absurd, less contradictory. But, instead of this, they make the transgressor triumph and the Almighty fall." P. 6

"Revelation cannot be applied to anything done upon earth of which man is himself the actor or the witness, and consequently all the historical and anecdotal part of the Bible, which almost the whole of it, is not within the meaning & compass of the word revelation, and therefore, is not the word of God. When we contemplate the immensity of that Being who directs and governs the incomprehensible whole, of which the utmost ken of human sight can discover but a part, we aught to feel shame at calling such paltry stories (Bible) the Word of God. P, 7.

"Whenever we read the obscene stories, the voluptuous debaucheries, the cruel and tortuous executions. the unrelenting vindictiveness with which more than half the Bible is filled, it would be more consistent that we called it the word of a demon than the Word of God."

P. 7

"But when I see throghout the greatest part of this book scarcely anything but the history of the greatest vices and a collection of the most paltry and contemptible tales, I can not dishonour my Creator by calling it by His name"

P. 9–10

"Matthew, Mark, Luke & John, donot give a history of the life of Jesus Christ, but only detached anecdotes of him It appears from these books that the whole time of his being a preacher was not more than eighteen months They make mention of him at the age of twelve years. sitting they say, among the Jewish doctors asking and answering them questions. As this was several years before their acquaintance with him began, it is most probable, they had this anecdote from his parents. From this time there is no account of him for about sixteen years. Most probably he was working at his father's trade which was that of a carpenter. It does not appear that he had any school education. and the probability is that he could not read and write for his parents were extremely poor as appear from their not being able to pay for a bed when

he was born" P. 10.

"The only idea man can affix to the name of God is that of a first Cause (आदि कारण) the cause of all things." P. 14.

It is nevertheless true that the age of ignorance com menced with the Christian System. There was knowledge in the world before that period than for many centuries afterwards: and as to religious knowledge the Christian System, as already said, was only another species of mythology and the mythology to which it succeeded was corruption of an ancient system of Theism." P. 20

"Almighty God, who had mill ions of worlds equally dependent on His protection, should quit the care of all the rest and come to die in our world, because they say one man and one woman had eaten an apple ?' P. 27

"The God in whom we b lieve is a God of Moral truth and not a God of mystery or obscurity Mystery is the antagonist of Truth. It is a fog of human invention that obscures truth and represents it in distortion.'

The only idea we can have to serving God is that of contributing to the happiness of the living creation that God has made This cannot be done by retiring ourselves from the society of the world and spending a recluse life in selfish devotion" P 28.

"Mystery, miracle and prophesy are appendages that belong to fabulous and not to true religion."

P. 31

Moral duty of man consists in imitating the moral goodness and beneficence of God manifested in the creation towards all His creatures. That seeing. as we daily do. the goodness of God to all men it is an example calling upon all men to practise the same towards each other; and consequently that every thing of persecution and revenge between man and man every thing of cruelty to animals is a violation of moral duty. P. 32.

Forgiveness

The idea, always dangerous to society as it is derogatory to the Almighty-that Priests c uld forgive sins-though it seemed to exist no longer, had blunted the feelings of humanity, and callously prepared man for the commission of all manners of crimes. P. 33.

To believe therefore the Bible to be true, we must unbelieve all our belief in the moral justice of God. P. 36

There are however, some glar-

ing contradictions, which exclusive of the fallacy of the pretended prophecies are sufficient to show the story of Jesus Christ to be false. P. 69.

If they (Matthew and Luke) cannot be believed in their account of his (Christ's) natural geneology, how are we to believe them when they tell us he was the son of God, begotten by a ghost, and that an angel announced this in secret to his mother. P. 70.

Now if the writers of these four books (Matthew, Luke, John and Mark) had gone into any court of justice to prove an ALIBI and had given their evidence in the same contradictory manner as it is here given, they would have been in danger of having their ears cropped for perjury, and would have justly deserved it. Yet this is the evidence and these are the books that have been imposed upon the world as being given by divine inspiration, and as the unchangeable Word of God. P. 73.

Reader, whoever thou art, put thy trust in thy Creator, make use of the reason he endowed thee with, and cast from thee all such fables.

P 103

(पृष्ठ १९ का शेष)

में मान्यता है कि वह वैयक्तिक और मनोवैज्ञानिक है तर्क का फल नहीं। गुणों के आधार पर गुणी का बोध होता है जैसा कि महर्षि ने कहा तब तो न्याय तर्क का केन्द्र है किन्तु यदि न्याय को अनुभूति का फल माना गया जैसा कि बहुत से इम्पीरिसिस्ट मानते हैं तो न्याय के प्रमाण की योग्यता प्रश्नात्मक ही रहेगी। डैवी ने पुनः कहा है कि मनुष्य अपनी स्वाभाविक दशा में कठिनाइयों दुःखों और समस्याओं से मुक्ति की. नहीं सोचता और नहीं वह बल कठिनाइयों में ही सोचता है। विचार का अभ्युदय तो तब ही होता है जब समस्या का समाधान एक मात्र विचार में हो। पूर्णतः निर्देशित मार्गके अनुयायी होने में विचार का अभ्युदय नहीं होता।

अतः न्याय की प्राप्ति के हेतु तर्क को अपनाना है और तर्क को अपनाने के लिए समस्या की अभिव्यक्ति से विह्वलता प्राप्त करनी है। आलस्य और अकर्मण्य जीवन अनोन्नतिशील मृत है। विचार में पूर्ण सामर्थ्य है कि समस्या का हल प्रदान करे। महर्षि का इसी हेतु संकेत है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में तत्पर रहना चाहिए। यही उन्नति की कुंजी है।

Hindus see unity in Diversity

[Shri O P. Tyagi]

This beautiful world of ours is full of diversity—of people, languages, customs, habits, modes of dresses, and what not. This diversity is indeed the base of world progress and stability.

Now and then there has appeared on the stage of world history individual who has tried to destroy this diversity to satisfy his vanity but invariably such efforts have failed, bringing in their wake destruction and unhappiness.

On the other hand, human beings have consciously tried to divide themselves on the basis of the religion, race, colour and class consideration. This state of mind in turn has brought misery and strife to mankind.

The Hindu religion while recognising diversity of thought and action, does not sanction superiority or inferiority of any one group because of anything inherent in that group

PURE KNOWLEDGE:

The idea of superiority or inferiority based on religion colour or nation is repugnant to Hindu ethic and anyone who practices this philosophy does so because of **Avidya**—lack of pure knowledge.

All the ills of mankind are attributed to Avidya: hence every Hindu seer has exhorted mankind for a sincere quest after **vidya**—pure knowledge, on the attainment of which man is able to truly enjoy the comforts of life, peace of mind and divine bliss and eventually attains **moksha** or **nirvana** (salvation from the agony of birth and death).

In the Yajurveda, (40, 6) God ordains that the man who sees all animate and inanimate creation in God, and God pervading all objects, falls not a prey to doubt. He becomes a friend to every one and every one becomes a friend to him. In this state of mind man rises above the feeling of jealousy and hatred.

Like inanimate creation animate creation also is a part of God's grand design and in the eyes of Hinduism human beings and other living creatures are menifestations

Continued on page 34

राजभाषा की समस्या

क्या हम राज्य-शास्त्र के अटल सिद्धांत को उलट देंगे ?

[श्री मोरारजी देसाई]

शुरू में ही मैं कह देना चाहता हूँ कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा भाषियों ने नहीं, अहिन्दी-भाषा-भाषियों ने प्रस्तावित किया था। मोटे तौर पर दो नाम मेरे स्मरण में हैं—स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी। दोनों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार ही नहीं किया, उसे हृदय से अपनाया और उसके जरिये सारे देश में जागरण का शंख फूंका। बंकिमचंद्र और श्री निवास शास्त्री ने उसका समर्थन किया था।

स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी इस देश की जनता के दिल तक पहुंचना चाहते थे। शासक तो वे थे नहीं, जो सत्ता के जरिये जनता पर अपनी बात प्रकट कर देते। वे तो जन सेवक थे। प्रेम और सेवा के जरिये ही जनता को अपने कर्त्तव्य का बोध कराना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने ऐसी भाषा की खोज की जिसके द्वारा वे ज्यादा लोगों के साथ सम्पर्क कायम कर सकें।'

उन्होंने देखा कि देश में एक ऐसी भाषा प्रचलित है जिसके सहारे सदियों तक सन्तों ने देश के बहुत बड़े भाग में प्रेम भक्ति और सेवा का प्रचार किया है। स्वभाव से दोनों महापुरुष संत थे। इसलिए इस भाषा को खोजने और परखने में उन्हें ज्यादा कठिनाई नहीं हुई। यह भाषा हिन्दी थी और किसी न किसी रूप में, काफी तादाद में, लोग इसे समझते थे।

अंग्रेजी की जड़ कहां है

करीब पचास बरस पहले ही गांधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय कर लिया था। अंग्रेजी को यह दर्जा उन्होंने नहीं दिया था क्योंकि वह इस देश की भाषा नहीं है, उसकी जड़ें इस देश के निवासियों के संस्कारों मे नहीं हैं। सौ साल की राजकीय सत्ता और एक छत्र निरंकुश शासन के द्वारा भी अंग्रेज जिसे डेढ़ दो फीसदी से ज्यादा लोगों को नहीं सिखा पाये, उस अंग्रेजी भाषा को वे देश की राजभाषा या राष्ट्रभाषा मानने को तैयार नहीं थे।

अंग्रेजी से उन्हें वैर नहीं था, कोई विरोध नहीं था। किन्तु वे यह कमी सहन करने को तैयार नहीं थे कि अंग्रेजी इस देश की भाषाओं का हक छीने। राज-काज में इस्तेमाल की दृष्टि से वे अंग्रेजी के मुकाबले देश की किसी भी प्रांतीय भाषा को श्रेष्ठ समझते थे, क्योंकि ये सभी भाषाएं स्थायी हैं और इनकी तुलना मे अंग्रेजी को वे अंग्रेजी राज्य के साथ खत्म होने वाली भाषा मानते थे।

दरअसल अंग्रेजी राज्य के साथ वे अंग्रेजी सत्ता भी समाप्त करना चाहते थे। स्वतंत्रता मिलते ही उन्होंने देश का ध्यान इस तरफ आकृष्ट भी किया था। किन्तु परिवर्तन के शोर-गुल में उनकी आवाज को लोगों ने ठीक तरह सुना नहीं। आज जो कुछ राजभाषा को लेकर हो रहा है, वह इसी उपेक्षा का फल है।

कांग्रेस लोकप्रिय क्यों

गांधी जी तो हिन्दी से कहीं अच्छी अंग्रेजी की योग्यता रखते थे—यहां तक कि अंग्रेज भी उनके अंग्रेजी पर असाधारण अधिकार पर

चकित थे। भारत की आजादी का आंदोलन वे अंग्रेजी में चला सकते थे। उनके द्वारा कांग्रेस का नेतृत्व सम्भालने से पहले वह अंग्रेजी में चलाया भी जाता था। लेकिन तब वह लोकव्यापी आंदोलन नहीं था, गिनती के अंग्रेजीदां लोगों का एक छोटा-सा समूह-मात्र था। गांधी जी ने उसकी इस कमजोरी को समझा और अंग्रेजी के बजाय जनभाषा में स्वतंत्रता का आंदोलन शुरू किया। इस भाषा संबंधी परिवर्तन के फलस्वरूप गिनती के लोगों की कांग्रेस करोड़ों लोगों के विश्वास और संकल्पों को धारण करने वाली विश्व-विख्यात कांग्रेस बन गयी।

राजभाषा के सवाल को लेकर आज जो कोलाहल मचा हुआ है और जिसे अवसरवादी राजनीतिक हिंसा का अग्निकुंड बनाने मे व्यस्त हैं, उस संदर्भ में गांधी जी की यह भूमिका विशेष महत्व की है। जो अंग्रेजी भाषा स्वराज्य का आंदोलन चलाने के काबिल साबित नहीं हुई, वह अंगेजी भाषा स्वराज्य चलाने के काबिल कसे हो सकती है—इस सवाल पर आज हम सबको मनन करना होगा।

इतिहास की चेतावनी

इस प्रसंग में इतिहास की चेतावनी भी हमें कान खोलकर सुननी होगी। यह हमारे-आपके ही जीवन काल की घटना है कि अपार शक्ति और साधनों वाला अंग्रेजी साम्राज्य भारत से इसलिए लोप हो गया है कि उसने अपना राज-काज लोकभाषा में नहीं कर अपनी निजी भाषा में किया था।

यह राज्य-शास्त्र का अटल सिद्धान्त है कि जिस राज्य में शासन और शासित के बीच हृदय का सीधा सम्पर्क नहीं हो वह राज्य कायम नहीं रह सकता। आज अंग्रेजी को राजभाषा बनाकर क्या हम राज्य शास्त्र के इस नियम को इस देश में उतारना चाहते हैं? क्या स्वराज्य के शासन की हम वही गति करना चाहते हैं जो अंग्रेजी शासन की हुई?

भ्रामक विश्वास

आजकल एक और आश्चर्यजनक भय फैलाया जा रहा है कि अंग्रेजी का हटाना देश की एकता के लिए घातक होगा। अंग्रेजी के सूत्र में देश की एकता गुंथी हुई है, इस विश्वास से अधिक भ्रामक शायद ही और कोई विश्वास होगा। अंग्रेजी ने तो उल्टे देश की एकता भंग की है—आपसी मतभेद के कई अखाडे पैदा कर दिये हैं। देश की एकता देश के संस्कारों पर आधारित होती है और देश के संस्कारों की भाषा देशी भाषा ही हो सकती है। अंग्रेजी हमारे संस्कारों की भाषा नहीं हो सकती। यह पात्रता तो हिन्दी या प्रादेशिक भाषाओं की ही है।

दूसरी दलील यह पेश की जाती है कि अंग्रेजी के हटाने से देश की प्रशासनिक सूत्रबद्धता ढीली हो जायेगी। मेरी समझ मे यह बड़ा भारी भुलावा है। प्रशासन और भाषा में जमीन-आसमान का अन्तर है। प्रशासन साध्य है और भाषा साधन। साधन के रूप मे अंग्रेजी कमजोर साधन ही है, वह देश के स्वभाव की दृष्टि से अस्वाभाविक भी है।

मेरा विश्वास है कि अंग्रेजी की जगह हिन्दी या किसी देशी भाषा का ही माध्यम हमारे प्रशासन को मिले तो हमारा प्रशासन ही ज्यादा चुस्त और उपयोगी नहीं हो जायेगा, लोकतंत्र की दिशा में भी हम काफी तेजी से आगे बढ़ जायेंगे।

मिथ्या प्रचार

एक और भ्रम अहिन्दी प्रदेशों में प्रचारित

किया जा रहा है कि अगर अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी राजभाषा बना दी गयी तो प्रादेशिक भाषाओं का विकास रुक जायेगा। यह एक दम उल्टी बात है। प्रादेशिक भाषाओं को असल में कोई नुकसान पहुंचा है तो अंग्रेजी के निरंकुश प्रभुत्व से। परायी संस्कृति की भाषा इस देश की संस्कृति का वाहन कैसे बन सकती है—मेरी समझ में यह नहीं आता। इसके विपरीत, हिन्दी इस देश की संस्कृति की भाषा है। हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का सांस्कृतिक पोषण स्रोत एक ही है। इसलिए हिन्दी के राजभाषा बनने पर, मुझे तो विश्वास है कि प्रादेशिक भाषाओं का विकास रुकेगा नहीं, तेज ही होगा और उनकी इस समृद्धि का पोषण पाकर राजकाज की भाषा के रूप में हिन्दी भी और अधिक समर्थ होगी।

आखिर में, मैं फिर दुहराना चाहता हूं कि अंग्रेजी राजभाषा नहीं बन सकती, इसे मानकर ही हमें इस दिशा में आगे बढ़ना होगा। सम्पर्क भाषा के रूप में भी अनिश्चित काल तक उसका रहना सम्भव नहीं होगा, भविष्य की इस चेतावनी पर हमें अमल करना होगा। अगर आज के इस भ्रान्त आग्रह को हम दूर गुजर कर दें और विशुद्ध राष्ट्रप्रेम के तकाजे पर ही मन को एकाग्र करें तो मुझे आशा है कि राजभाषा के सम्बन्ध में हम जिस नतीजे पर पहुँचेंगे वह किसी भी प्रकार से असंतोषजनक नहीं होगा।

from page 31

of God's bounty and therefore one can realise his God in this world by being a true service to his fellow beings.

WORTHY OF LOVE

Hinduism does not recognise any basic difference in different forms of life. Atman (soul) takes different births and different forms according to its karma actions, therefore a Hindu sees God in the different forms of life and to him all living beings are worthy of love. This is the reason why killing of an animate creation is not considered a rightous action.

A Hindu born and brought up in this environment instinctively looks upon all human beings as a great brotherhood and consequently Hindu society is the most tolerant society the world has ever seen.

The whole human society is seen as a form of God in which all learned men symbolise the head; all rulers, Government functionaries and civil servants the arms; all business men, farmers, and industrialists, etc, the belly; and the unskilled labourer is the legs this is the conception of humanity which Lord Krishna made the warrior Arjuna realise in the battlefield of Kurukhsetra when the latter was listening to that song celestial—THE BHAGVAT GITA.

मेरी जन-संख्या की लूट
और
उसका निदान

(श्रीयुत रामेश्वरदयाल, बी०-एस० सी०)

[गतांक से आगे]

(३)

आखिर शासन को भी सोचना चाहिए कि इस देश के सच्चे घटक-निष्ठावान नागरिक जो यहां की इन्च इन्च भूमि के लिए आहुति देने को तैयार होंगे, वे हिन्दू ही हैं। उनका सफल समर्थन उन्हें जन्म-जन्मान्तर तक गद्दी पर हृदय की गद्दी पर बिठाये रक्खेगा। वरना अपने हृदय में वे भी जानते हैं कि खून देने वाले मजनू कौन हैं और दूध पीने वाले कौन हैं।

इन शासक बन्धुओं को समझाने के लिए ही हम उक्त आंकड़ों के एक और विस्मयकारी पहलू की ओर उनका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। वह यह कि मुसलमान ईसाई या बौद्ध व सिक्खों में से कोई भी व्यक्ति दूसरे धर्म में प्रवेश नहीं करता है केवल हिन्दू ही में से सब को रंगरूट मिलते हैं। यदि ये धर्म दार्शनिक दृष्टिकोण से आकर्षक हैं तो यह अहिन्दुओं को अपनी ओर क्यों आकृष्ट नहीं करते हैं। क्या हिन्दू मान्यतायें ही दुनिया में सब से निकृष्ट हैं।

अस्तु, हम अपने निदान पर कुछ और लिख कर अपना लेख समाप्त करते हैं। १९/९-६० में मैं लगातार श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री एम०पी० से मिलकर ऐसा बिल लोकसभा में उपस्थित करने को प्रार्थना करता रहा। एक ड्राफ्ट भी बना कर दिया परन्तु उन्होंने उसमें कुछ फेरफार करके उसे १९ फरवरी १९६० में पेश किया और लोक सभा में ४ मार्च १९६० को उस पर वाद विवाद हुआ। हम उस बिल को यहां उद्धृत करते हैं:—

THE BACKWARD COMMUNITIES RELIGIOUS PROTECTION) BILL, 1959

(AS INTRODUCED In LOK SABHA)

A BILL

to provide for more effective protection of the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other backward Communities from change of religion forced on them on grounds other than religious conviction.

Whereas it is expedient to provide for more effect ve protection of the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other backward communities of the Indian Union from change of their religion brought about on grounds other than religious conviction by covert or

overt compulsion;

Be it enacted by Parliament in the Tenth Year of the Republic of India as follows :—

1. (1) This Act may be called the Backward Communities. (Religious Protection) Act. 19

(2) It extends to the whole of India.

(3) It shall come into force on such date as the Central Government may, by notification in the Official Gazette, appoint, and different dates may be appointed for different areas

2. In this Act, unless the context otherwise requires :—

(a) "backward community" means any body of persons declared as such in any area by the State Government;

(b) "District Magistrate" means the District Magistrate of the District where person concerned resides, and shall include any magistrate Subordinate to the District Magistrate specially authorised in this behalf;

(c) "religion of Indian origin" means—

(i) Hindu religion in any of its forms or developments including Virashaiva, Lingayat or Brahmo, Prarthana Samaj or Arya Samaj;

(ii) Buddhist, Jaina or Sikh Religion;

(iii) any religion other than Muslim, Christian, Parsi or Jew;

(d) "Scheduled Castes" and "Scheduled Tribes" shall have the meaning assigned to them in the Constitution.

3. (1) No change of religion of any person belonging to Scheduled Castes, Scheduled Tribes or a backward community shall be effected except after :—

(i) he has filed a written statement before the District Magistrate of his District to the effect that he is changing the religion out of free will with no motive other than religious conviction; and

(ii) the District Magistrate after due enquiry has given a finding that the contemplated change of religion is out of free will motivated by religious conviction only and is not the result of any covert pressure of circumstances brought on him in other spheres of life.

(2) All such changes of religion shall be registered in a register kept for the purpose :

Provided that nothing in this section shall apply to any change of religion of any person whereby he takes to his ancestral religion of Indian origin.

4. Whoever effects, or performs, conducts, or directs any ceremony effecting any change of religion

contrary to the provisions of section 3 shall be punishable with imprisonment of either description for a term which may extend to three months or with fine which may extend to one thousand rupees or with both.

श्री रामसुभग सिंह, श्री सेठ गोविन्ददास, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री मणिबेन पटेल, श्रीमती सहोदरा बाई राय ने इसका स्पष्ट समर्थन किया और श्री नारायण कुट्टी मेनन, श्री महावीर त्यागी ने भावना का समादर किया पर वाक्य-विन्यास पर आपत्ति की। तत्कालीन डिप्टी होम मिनिस्टर ने उस पर सरकारी दृष्टिकोण निम्न प्रकार उपस्थित किया:—

Shri Datar : Mr. Deputy-Speaker. Sir, I was extremely sorry to find that considereble heat was imported in the course of the discussion. I would, therefore, like to approach the question with restraint and with a large measure of dignity.

A number of hon. Members have spoken and have placed before the House a certain picture. The general contention appears to be that there are mass conversions by force. The second point that has been made is that those who are converted develop what is called an anti—Indian or unpatriotic feeling. These are the two main points that have been raised.

Before I deal with the Bill on its merits, may I point out to the hon. Mover of this Bill that it discloses a number of very serious defects which, I wish, he had taken into account and remedied against.

In the first place we have got article 25 (1) of the Constitution. When this article was under consideration, as the House is aware, there was a very long discussion, an exhaustive discussion, on the various points that had to be considered in this respect, and after taking into account all the different aspects of the question, the Constituent Assembly passed the particular article because that is the touchstone by which the present Bill is to be tested. It reads :

"Subject to public order, morality and health and to the other provisions of this Part all persons are equally entitled to freedom of conscience and the right freely to profess, practice and propagate religion."

Thus, you will find that a very valuable right a fundamental right, was extended to the citizens of India. It consists of two parts. Firstly, there is what is known as freedom of conscience; a man can practice any religion he likes. Secondly, the orbit of religion has not been circumscribed as, unfortunately

the hon Member has purported to do.

The hon. Member has tried to contract the scope of religion. He has, unfortunately, excluded certain religions from what he calls the "religion of Indian origin." There are a number of recognised religions, and is it open to any citizen of India to follow any religion, or to embrace any other religion as well, and the word "religion" has not been circumscribed in the Constitution on the lines that the hon. Member now wants us to do. Here he says :

(c) "religion of Indian origin" means—

(i) Hindu religion in any of its forms for developments including Virashaiva, Lingayat or Brahmo, Prarthna or Arya Samaj ;

(ii) Buddhist, Jaina or Sikh Religion."

And may I point out with all sincerity to my hon. friend that the sting lies in the tail ?

(iii) any religion other than Muslim, Christian, Parsi or Jew." Is it proper, is it not late in the day, to say that Muslims, Christians, Parsis or Jews are not professing a religion which is a religion of Indian origin ?

We have to take into account two circumstances in this connection. One is that all of us are proud of Hinduism, even though some other friends try to insult certain books or certain doctrines. After all, may I point out to my hon friend that Hinduism was and has been one of the most tolerant of religions ? Secondly, Hinduism is always open to expansion, is always open to consolidation. It is one of the dynamic religions of India

While considering the question of religion, let us not bring in social organisations like caste or untouchability. They never formed part of the religion at all They were what can be called details of the organisational aspect, and therefore, the sooner we understand the substantial aspect of Hindu religion, the better for us, the better for the country at large.

While all of us those who are Hindus, might be proud of their religion, our religion, I may point out, is a universal religion in the sense that it appeals to all. Secondly, let us take into account the historical aspect how in India, side by side with Hinduism. even the Muslim religion had a place, an honourable place, dignified place, and how they have developed side by side here.

Take for example. the question of Christianity. Does my hon friend know that on the west coast of India within fifty years after Christ, a number of Christians came. They are here for the last 19 centuries, and should we dare call these people followers of a religion other than what the hon. Member calls a religion of Indian origin ?

Religion has no origin. If a religion is a religion is to be a religion, it must always have what may be called a universal appeal Take, for example, the Muslim religion. Let us not talk of what happened long ago. There might have been wrongs on both sides. But even the Muslim religion has been in India from the seventh century A. D,, for more than 1,200 years. Under the circumstances, would it be proper for us, would it be religious on our part, to say that these are foreign religions ?

Take the small community of Parsis. The Parsis came to India and India gave them shelter. It is amatter of pride to all of us that India gave shelter to a small community Their number is hardly one lakh, and even now they are proud that India has given them shelter.

Take the question of Jews also. The number of Jews is also small, but we are not going to circumscri. be our view of religion by what may be called a local idea. I am making referenee to the local idea because my hon. friend wants to bring within the purview of religion of Indian origin only Hinduism and certain allied religions. That is, in the first place. a wrong approach.

So, taking the Bill as it is, does it or does it not go against the provisions of the Constituion ?

If a man has a right not only to practise religion but to propagate religion, the question arises whether such a right can be taken away, especially in the case of the backward classes for whom my hon. friend wants a protection. They do not want any protection at all.

Now, I should like very briefly to make reference to a few other points. The question of mass conversions has been raised not only in the course of this debate. We had a long debate in the first Parliament when a similar Bill was spo – nsored by Shri Jethalal Joshi. There was a long discussion and the hon. Prime Minister also took part in it and explained what the Govenment policy was. And on certain occasions, I remember hon. Members have asked questions as to

whether there were forcible conversions, whether there were mass conversions. Government made enquiries in all these cases through their machinery, and all such contentions,I would not say allegations, were found to be without substance. I remember that in a case from Bombay State, Dohad or some other State, we were told that there were mass conversions, but ultimately, it was found that there was a conversion of one person with the consent of his or her guardian. That is all that had happened. So. let us not be immediately in a hurry to believe every piece of evidence or every piece of information that often comes to us.

Then, a reference was made to the anti-Indian attitude. So far as the anti-Indian attitude is concerned, may I tell the House that Government are anxious that no anti-Indian attitude is allowed in any quarters ? The Indian Government has to be strong and if for example, there is any anti –Indian or unpatriotic attitude, it amounts to what can be called a subversive attitude, and Government have rights in their armoury in respect of his. We have rights even under the ordinary criminal law of the land, whenever a conversion takes place against the desire either of the person converted or of his or her guardian. Even the hon. Member quoted some cases which were taken to the courts. Therefore, under the ordinary law, we have got powers, in the first place, to make enquiries as to whether there are conversions of a forcible type or a conversion of ordinary or normal type meaning a conversion by conviction with which it would not be proper for Government to interfere because that is a right which has been conceded by the Constitution. But. whenever there are any attempts at a forcible conversion, or any attempt at a conversion of, say, a minor who is not in a position to protect his or her interests, much less to know the principles of the religion that he or she has been following or of the new religion that he or she is to follow, we can take action. In the first place, we have got powers, It would not be proper, however, to point out what exactly we are doing. But whenever Government and that anything other than legitimate-let the House understand that clearly—is done, Government have sufficient powers.

Then, a number of hon. Members brought in the question of foreign missionaries So far as these missionaries are concerned, I have got the figures before me. The

number of missionaries has fallen down considerably Only recently, it has come down from 1700—I am speaking from memory—to about 1,300

The House will also note that so far as the foreign missionaries seeking recognition at the hands of India are concerned during the British administration there were certain other bodies bodies which were not Indian but which were foreign which were recognised The British Government had recognised two bodies one in respect of the Roman Catholics and another in respect of the Protestants The first act that was done after the achievement of Independence was to have recognition only through Indian bodies That is the first step that we have taken

The policy which the Government are following regarding missionaries was elucidated in one of the recent reports of he Home Ministry What was pointed out was that so far as these missionaries were concerned, certain over coloured accounts were placed before us There were similar accounts in the reports to which the hon Members have made a reference But, there is also the other side which we should take into account The other side is that not all these missionaries are acting in the manner that the hon Member wanted us to believe I know the conditions in various parts of India and the conditions of those parts where there is a large concentration of the tribal population and the Harijan population as well

As against the few instances which my hon friend has pointed out may I also say that these missionaries have been carrying on what can be called a Mission of Christ so far as service is concerned ? That is one of the greatest contributions that Christianity has made to the welfare of the world These Christian missionaries have been carrying on their work in that spirit Barring the few instances which have to be fully gone into may I add a word of tribute to the large number carrying on their work for the uplift and for the good of a large number of communities ? I know cases where these great Christian missionaries including the Indian missionaries also have gone far into the interior and have buried themselves into it When certain hon friends came to me and they just told me about this I asked them Have you got any missionary effort on the lines that our foreign missionaries or our

Christian missionaries have been carrying on ?" Let us try to appreciate the whole position. Let us not be unfair to the Christian missions here.

If, for example, they do not carry it on properly, then when their action comes within the orbit of the laws that we have, we can take action. I may point our here we have also got the foreigners laws which the Parliament passed a few years ago, such as the Foreigners Act and also the rules that have been made 'thereunder. If, unfortunately, any foreigner, be he a missionary or be he anybody else, is guilty of doing certain acts against the interests of India the Government have effective powers under all these laws to take action against him.

I may also point out in this connection that Government, while appreciating whatever they have done, are taking necessary steps to see that they carry on their work properly, whenever there is any reason to believe that their conduct is not proper, but, we must understand, it is subject to this that it is a matter which is governed by this Constitution. If, for carrying on their work or for distributing certain articles, they bring in money, and as it has been pointed out, they do bring in money, then, naturally, there is a normal presumption that the money has been used in a legitimate manner, unless we have evidence to the contrary.

Therefore, these are very large questions of policy, and in all these cases, the welfare of India is always kept before us I may further point out whenever any new missi nary societies or associations are to be recognised, then the test that has been laid down is that the recognition of such bodies should be necessary in the interests of India. That is all that we always look into. I would assure the House that Government are extremely anxious to see to it that the welfare of the poor masses, the Schduled Castes or the backward classes or the tribals is advanced to the fullest extent. And whenever it becomes necessary, whenever there is no objection, have to take their help, and we have to appreciate the help of these missionaries, either local or foreign. Therefore I would request the hon. Member to note this particular background. As I have pointed out already, the number of these missionaries also has been falling

Then, a contention was raised

that there were mass conversions in certain parts and Chotanagpur was brought forward as an instance I have got figures here to show that there has not been such a large conversion, as the hon Member would have us to believe I have got the figures of 1951, and I have the recent figures also, and they show that there is an increase of only a few thousands and not more

Under these circumstances let us not be guided or misguided by certain reports I know that two committees were appointed one by the Madhya Bharat State, and the other by the Madhya Pradesh State The Government of India have not got any communication from these two Governments when they were separate or from the present succ essor Government as to whether any action was called for Those two reports were there and they gave certain instances But I may assure the House that Governments are anxious to maintain in spirit as also in letter what has been given to every man so far as article 25 is concerned subject to the following condition

When we receive any complai nts which show that methods other than legitimate are used, then always we should see if anything wrong has been done in this respect, because after all Government have to see that the laws are properly administered and the interest of India, especially the interests of these communities, are always advanced Under the circumstances, in spite of all that often comes to our ears let us try to see and be lieve only those complaints which are well founded As I have stated, if there are any complaints which Prima facie call for examination, Government always take care to have a proper examination of it Subject to this, we always take care to see that the foreigners who come to India have to remain here for advancing the cause of India I would not like the House to believe all what my hon friend and others have stated, that the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes and, as he has stated, other back ward classes require any such protection at all, The protection of the law is here, the arm of the law is as long, as strong as possible Subject to this, we should appreci ate what they have done We should not bring in all the missionaries lump them together and condemn them in unmeasured terms, as has been done On the last occasion when this question was brought

forward, the whole position was explained

I therefore, appeal to my hon. friend. Shri Prakash Vir Shastri to withdraw this particular Bill on the ground that there has been a discussion and - I hope I have—Ihave tried to answer some of the points that he has raised.

उक्त भाषण का अनुवाद देने से लेख का कलेवर अत्यधिक बढ जायगा । संक्षेप मे सरकार ने यह आपत्ति की–

(१ कि केवल ईसाइयों पर हो इसे लगाने से भारतीय प्रजा मे भेदभाव प्रदर्शित होता है।

(२ अन्य लोगों के हिन्दू होने पर यह कानून इसलिए लागू न किये जाने की धारायें हैं कि वह भारत मे उद्भूत धर्म है। अन्य धर्म ऐसे नहीं है। सरकार का दृष्टिकोण है कि ईसाई व मुसलमान धर्म भारत मे हजारों वर्षों से हैं।

(३) स्वयं परिगणित जातियों ने यह संरक्षण नहीं मांगे हैं।

इसी लिये मैं अपने प्रारम्भिक सुझाव को फिर दुहराता हूं कि बिल व्यापक होना चाहिए। अर्थात् चाहे कोई व्यक्ति चाहे किसी धर्म से दूसरे धर्म जावे, वह मजिस्ट्रेट के यहां घोषणा करे कि वह धार्मिक तथा दार्शनिक कारणों मात्र से धर्म परिवर्तन कर रहा है—लोभ लालच दबाव या राजनैतिक कारणों से नहीं। यदि इस पर अन्य कोई प्रति घोषणा (Counter Affidavit) देता है तो मजिस्ट्रेट सबकी बात सुन कर फैसला देगा। जिन धर्म परिवर्तनों को वह प्रमाणित करे, वोटर लिस्टों में तदनुसार ही आचरण किया जावे।

यह प्रस्ताव देश के विचारकों, चिन्तकों और विधायकों एवं शासकों के सम्मुख बड़ी नम्रता पूर्वक रखा जाता है। अभीष्ट है कि सार्वदेशिक सभा इसके पक्ष में प्रबल जन-मत का समर्थन प्राप्त करने की ओर अपने सब साधन लगा देगी।

॥ इत्यलम् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बुलाए जाने वाले
राजभाषा विषयक कन्वेन्शन की तारीख आगे बढ़ी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने अपनी १८ अप्रैल ६५ की बैठक में राजभाषा विधेयक में परिवर्तन के विरुद्ध कार्यवाही को प्रबल बनाने एवं आवश्यक परामर्श एवं सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से मई के प्रथम सप्ताह मे देहली मे हिन्दी के प्रेमियों और हिन्दी समर्थक राष्ट्रवादी महानुभावों का एक कन्वेशन बुलाने का निश्चय किया है। परन्तु पाकिस्तान के कच्छ एवं कश्मीर की सीमाओं पर अचानक आक्रमण और भारत सरकार द्वारा सम्प्रति इस विषय के स्थगन को देखते हुए मई के प्रथम सप्ताह में इस कन्वेन्शन का बुलाया जाना स्थगित करके जून में बुलाया जाना निश्चित हुआ है। तिथि का निश्चय करके शीघ्र ही घोषणा कर दी जायगी। कन्वेंशन की तय्यारी की जा रही है।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका का

सन् १९६४ का विवरण

हिन्दी प्रचारः—प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसमें आगे अधिक स्कूल के छात्र व छात्राओं ने भाग लिया। श्री ज्ञानचन्द्र जी, श्री विनयकुमार जी और श्री देवनाथ जी के सहयोग के लिए सभा आभारी है।

मुम्बासा, नैरोबी, टबोरा व दारसलाम में हिन्दी श्रेणियां जारी हैं और किसुमु में व टांगा में इसका प्रबन्ध किया जा रहा है। श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी ने इस कार्य को अपने हाथ में लिया हुआ है और वे इसे पूरे उत्साह के साथ निभा रहे हैं और आयोजना इस प्रकार की है, जहां भी वे जायें वहां हिन्दी श्रेणियां चालू कर दी जायं। परन्तु इसके लिए स्थानिक कार्यकर्ताओं का सहयोग व परिश्रम अपेक्षित है। भारतीय कमीशन का सहयोग प्राप्त होता रहा।

१०. भारत में पोप का आगमनः—दिसम्बर मास में पोप के भारत आगमन के विरुद्ध आर्य समाज की ओर से वहां पर आन्दोलन चलाने का प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा ने पारित किया था। यह जानने पर शिरोमणि सभा ने हमारी बात मान ली और भारत में इकट्ठे हुए पादरियों को आर्य समाज के बारे में ट्रैक्ट आदि वितरण किये गए। इस विषय पर यहां भी सब समाजों को परिपत्रक भेजे गये। इसमें श्री त्यागी जी का सहयोग बहुमूल्य सिद्ध हुआ।

११. दयानन्द विश्व विद्यालय अजमेरः—दयानन्द यूनिवर्सिटी की अपील की प्रतियां सब समाजों को भेजी गई थीं। परन्तु खेद है कि अभी तक कुछ भी राशि हम भिजवा न सके। दयानन्द यूनिवर्सिटी का प्रस्ताव हमारी सभा का था अतः हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इस अपील को सफल बनायें कृपा करके जब आप अपनी समाजों को वापिस जांय तो उस ओर ध्यान दें और इस अपील पर आप जितनी भी सहायता दे सकें उतना ही अच्छा होगा।

१२. नये समाज मन्दिरः—नैरोबी साउथ 'सी' में मन्दिर निर्माण का कार्य हाथ में है इस प्रयत्न के लिए श्री भारद्वाज जी धन्यवाद के पात्र हैं।

अरुषा समाज ने भी अपने मन्दिर का प्लान तैयार किया है, वहां की समाज के पास कोई ७५००० शि० हैं और निर्माण कार्य लगभग ४८००० शि० का है इस प्रकार उन्हें १०००० से १५००० शि० की आवश्यकता है। यह सारा परिश्रम वहां की स्त्री समाज का है। प्रभु करे यह कार्य शीघ्र सफल हो।

१३. शुद्धि—मुझे यह सूचित करते हुए बहुत ही हर्ष होता है कि श्री त्यागी जी के अनथक परिश्रम और उत्साह के कारण हम एक अफ्रीकन परिवार को वैदिक धर्म में प्रविष्ट करा सके। इस सिलसिले मे एक परिपत्रक आप सब की सेवा में भेजा जा चुका है। दो परिवार और तैयार हैं जिनको भी शुद्ध किया जायेगा, शनिवार १९ दिसम्बर ६४ को टबोरा में एक मुस्लिम युवक जो कि यहां अध्यापक हैं—शुद्ध होकर वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए।

अफ्रीकन प्रजा को वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराने के सम्बन्ध में इतना कहना चाहता हूं कि यह कार्य बहुत सरल है और अब हमारी सब

शक्तियां इस ओर लगनी चाहियें। सफलता हमें अवश्य मिलेगी, केवल आवश्यकता इस बात की है कि हम अपना दृष्टिकोण थोड़ा सा बदलें और हम थोड़ी दूरदर्शिता से काम लें, भगवान अवश्य हमारी सहायता करेंगे। बहिनें इस बारे में खास प्रयत्न करके अफ्रीकन स्त्रियों को सिलाई इत्यादि कार्यों द्वारा अपने सम्पर्क में लायें ऐसी मेरी इच्छा और प्रार्थना है।

१४. अफ्रीकन बच्चों की गुरुकुलों में पढ़ाईः- ऐसा निश्चय किया गया है कि ६ अफ्रीकन बच्चों को गुरुकुल कांगड़ी और ६ अफ्रीकन कन्याओं को कन्या गुरुकुल देहरादून में शिक्षा के लिए भिजवाया जाय। उनका खर्च ५० रुपये प्रतिमास होगा। आर्य समाज दारसलाम ने २ बच्चों का खर्च अपने जिम्मे लिया है इसके लिए सभा उनकी आभारी है। आशा है कि आर्य समाज नैरोबी व कम्पाला भी दो-दो बच्चों के खच की जिम्मेवारी खुशी से उठा लेंगी जिससे कि सभा का भार कम हो और यह कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न हो सके।

१५. दयानन्द आश्रमः आज पूरे दो वर्ष हुए आर्य सम्मेलन में सभाको आदेश दिया गया था कि निराश्रित बच्चों के लिए नैरोबी में एक दयानन्द आश्रम खोला जाय। मुझे आपको यह सूचना देते हुए प्रसन्नता होती है और गौरव-मिश्रित हर्ष होता है कि सभा ने इस आदेश का पालन करते हुए दयानन्द आश्रम खोल दिया है। इस समय इसमें ४ निराश्रित बच्चे हैं। बाकी के बच्चे २० संख्या तक चाइल्ड वेलफेयर सोसायटी द्वारा लेने का प्रबन्ध होगा। क्योंकि वह सोसायटी हर बच्चे के पीछे ४० शि० प्रतिमास देगी जिससे कि सभा का बोझा भी हल्का हो जायगा। ५ और ७ वर्ष की आयु के बीच के ये शिशु लिये जायेंगे। क्योंकि इस आयु में उन पर वैदिक धर्म की छाप आसानी से डाली जा सकती है। इस बारे में एक अपील की गई थी, सब समाजों से प्रार्थना है कि वे अपना अपना सहयोग सभा को दें और अपने अपने भाग की राशि शीघ्र ही सभा को भिजवा दें। यह एक ऐसा पौदा लगा है कि जिसका फल आर्य समाज के फैलाव में अतीव सहायक होगा।

इस कार्य की सफलता का श्रेय श्री त्यागी जी को है। उनकी प्रेरणा से ही यह कार्य शीघ्र पूरा हो सका। इसके लिए सभा उनकी अत्यन्त आभारी है। इस पौदे को अभी पूर्णता तक ले जाने में काफी समय और परिश्रम की जरूरत है और इसमें श्री त्यागी जी ने अपना सहयोग देना स्वीकार किया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

अभी तक आश्रम किराये के मकान में रखा गया है परन्तु आशा है कि दो-तीन मास तक श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्य आश्रम में यह स्थिर हो सकेगा।

१६. आर्थिक अवस्थाः-यह सूचित करते हुए मैं प्रभु का धन्यवाद करता हूं कि सभा की आर्थिक अवस्था पहले से काफी अच्छी है। इसकी नींव अच्छे ढंग से डाली गई है। इस समय मासिक आय लगभग ४००० शि० है परन्तु जो कार्य हम करना चाहते हैं उसके लिए कम से कम हमारी आय ७००० शि० होनी चाहिए। यह असम्भव नहीं और यदि प्रभु कृपा रही तो यह ध्येय शीघ्र पूरा होगा।

सभा के कोष को स्थिर और आय को अधिक बढ़ाने में श्री कोषाध्यक्ष के प्रयत्न और और श्री चतरथ की सहायता के लिए सभा आभारी है।

१७. महेन्द्रपाल हालः-सभा की भूमि पर भूतपूर्व प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी ने १३०,००० शि० के लगभग खर्च करके एक हाल खड़ा कर

[illegible] पुस्तक भण्डार की पुस्तकों की सूची

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१	ऋग्वेद सहिता सजिल्द	१०)
२	अथर्ववेद सहिता सजिल्द	८)
३	यजुर्वेद सहिता सजिल्द	४)
४	सामवेद सहिता सजिल्द	३)
५	सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७	संस्कार विधि	१।)
८	आर्याभिविनय	।॥)
९	कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१०	मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।≈)
११	पचमहायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१२	वेदविरुद्ध मत खडन	)३५
१३	सत्य धर्म विचार	)२५
१४	शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण	)२५
१५	भ्रमोच्छेदन	)२०
१६	काशी शास्त्रार्थ	)२०
१७	भ्रान्ति निवारण	)३५
१८	सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास	)२५
१९	विवाह पद्धति	)५०
२०	गोकरुणानिधि	)१६
२१	आर्य वीर दल बैजज	)३१ जोडी
२२	आर्य समाज प्रवेश पत्र	१) सै०
२३	Life of Swami Dayanand (by Harvilash Sarda)	।≥

ओ३म् ध्वज नैट मूल्य पर

२४	ओ३म् ध्वज २७ इच × ४० ॥ इच मूल्य	२)५०
२५	ओ३म् ध्वज ३६ इच × ५४ इच	४ २५
२६	ओ३म् ध्वज ४५ इच × ६७॥ इच	)५

निम्न प्रकाशन २० नैट प्रतिशत कमीशन पर दिए जायेंगे।

१	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	२)५
२	वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)	७)
३	शिक्षण तरंगिणी ,	५)
४	मसाबीहुल इस्लाम (उर्दू) , मूल्य	५)
५	Wisdom of the Rishis (Gurudutta M A)	४)

निम्न पुस्तकों पर इस प्रकार कमीशन दिया जायगा

१०) तक की पुस्तकों पर २०प्रतिशत १०) से २५) तक२५ प्रतिशत, २५) से अधिक पर ३३⅓ प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१	यम पितृ परिचय	२)
२	वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३	वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४	अभ्यास और वैराग्य	१)६५
५	बाल सस्कृति सुधा	)५०
६	वैदिक ईशवन्दना	।≈)॥
७	वैदिक योगामृत	॥≈)
८	दयानन्द दिग्दर्शन	।॥)
९	वेदो मे दो बडी वैज्ञानिक शक्तिया	।।)
१०	निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५८
	निज जीवनवृत्त वनिका सजिल्द	)७५
११	बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१२	बालजीवन सोपान	१।)
१३	छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
१४	दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥)
१५	वेदान्त दर्शन (सस्कृत मे)	३)
१६	वेदान्त दर्शन भाषा भाष्य	३)५
१७	वैदिक वन्दन	५)
१८	भ्रम निवारण	)३०
१९	वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द	२)
२०	वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द	२)५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१	कर्मव्यवस्था	४
२	दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।–)
३	चरित्र निर्माण	१)१५
४	ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
५	वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
६	दौलत की मार	।)
७	अनुशासन का विधान	।)
	धर्म और धन	।)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१	योग रहस्य	१।)
२	मृत्यु और परलोक	१)
३	विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥≈)
४	उपनिषद — ईश ।≈) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।–) मुण्डक ।=) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)	
५	बृहदारण्यकोपनिषद्	३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

१ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १॥)
आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध १॥)
२. वैदिक संस्कृति १।)
३ मुक्ति से पुनरावृत्ति ।≈)
४. आर्यसमाज और सनातनधर्म ।≈)
५. आर्यसमाज की नीति ।)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

१. दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २।
२. वैदिक युग और आदि मानव ४)
३. वैदिक विज्ञान विमर्श ।७५

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

१. आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ।।=)
२. कथा माला ।।।)
३. सन्तति निग्रह १।)
४. नया संसार ≡)
५. आदर्श गुरु शिष्य ।)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

१. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)
२. भक्ति कुसुमाञ्जलि ।।)
३ हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

१. आर्यसमाज के महाधन २।)
२. वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

१. धर्म और उसकी आवश्यकता १)
२. वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप १॥)
३. इजहारे हकीकत (उर्दू में) ।।।≈)
४. सत्य निर्णय १।)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

१. वेद सन्देश)७५
२. वैदिक सूक्ति सुधा)३०
३. दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

१. गीता विमर्श ।।।)
२. गीता समीक्षा १)
३. गीता की पृष्ठ भूमि)४०
४. ऋषि दयानन्द और गीता)६

५. आर्यसमाज का नवनिर्माण)१२

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी कृत

१. कांग्रेस का सिर दर्द ।।)
२. आर्य समाज और साम्प्रदायिकता ।-)
३. आर्य वीर दल शिक्षण शिविर ।≈)
४ आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना ≋)
५ आर्यवीरदल लेख माला १॥)

अन्य विद्वानों कृत

१ विरजानन्द प्रकाश (प. भीमसेन शास्त्री) २)
२. स्वराज्य दर्शन (श्रीपं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
३ राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ।।)
४ भूमिका प्रकाश (संस्कृत मे)
(पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)
५. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ।।।)
६. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (कृष्णचन्द्र विरमानी) १।)
७ भजन भास्कर
(संग्रहकर्त्ता डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न) १।।।)
८. सनातन शुद्धिशास्त्र आर्यों का चक्रवर्ती राज्य २)
९. आर्य डायरेक्टरी (पुरानी) १।)
१० सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण-अजिल्द २)
११. आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानीप्रसाद कृत) १।)
१२. वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त))३७
१३. सन्ध्या पद्धति)१२
१४ सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
१५. सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
१६. आर्य महासम्मेलनो के प्रस्ताव)६०
१७. आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण १)
१८ आर्यसमाज का परिचय १)
१९ साम संगीत)५०
२०. उत्तरा खंड के बन पर्वतों में ऋषि दयानन्द अजिल्द)६२ सजिल्द)७५
२१. भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप (श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी) सजिल्द मूल्य २)
२२. दस अवतारों की कल्पना कैसे ?
(श्री हंसराज जी रिसर्च स्कालर) १)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

१. ईसाई षड्यन्त्र ।)
२. ईसाई पादरी उत्तर दें)३०

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली-७में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजो पाठक मुद्रक और प्रकाशक

॥ ओ३म् ॥

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

[illegible] गुरुकुल कांगड़ी

सार्वदेशिक

आर्यसमाज का शोध-समीक्षा-प्रधान सार्वदेशिक मासिक मुखपत्र

वर्ष—६२ | जून १९[illegible] ई० ज्येष्ठ २०[illegible] दयानन्दाब्द १ १ | अंक—

सृष्टि सम्वत १९७ ९४९०६५

सम्पादक —

रामगोपाल शालवाले

सार्वदेशिक सभा मन्त्री

सहसम्पादक

रघुनाथ प्रसाद पाठक



२७ मई को हमने जिनका निधन दिवस मनाया है।

पण्डित नेहरू ने कहा था

उत्तीसवा सदी के पिछले आध हिस्से म एक बहुत बड़ा सुधार आन्दोलन शुरू किया गया। इसको शुरू करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजरात के रहने वाले थे। यह सुधार आन्दोलन था आर्य समाज का और इसकी पुकार थी कि वेदों की ओर चलो।

इस पुकार के असलियत में ये माने थे कि वेदो के समय के आयधर्म में बाद में जो कुछ बातें जुड़ गई थी उनको अलग कर दिया जाय।

इसमें अन्दर से सुधार के लिए आन्दोलन था और धर्मयुद्ध था और साथ ही बाहरी हमलों के खिलाफ हिफाजत के लिए यह एक सुरक्षा संगठन था। इसने हिन्दू धर्म में विधर्मियो को शुद्धि करके अपनाने की प्रथा डाली। उस दूसरे धर्मो का हिन्दू धर्म पर संक्रमण बढ़ा न रहा था।

एक वक्त ऐसा भी था जबकि सरकार इसको राजनीतिक क्रान्तिकारी आन्दोलन समझती थी। लड़के लड़कियो के शिक्षा प्रसार में इसने बहुत अच्छा काम किया है। साथ ही स्त्रियों की हालत सुधारने में और दलित जातियो की हैसियत और मान्यता को उठाने में भी इसने बहुत अच्छा काम किया है।

हिन्दुस्तान की कहानी (प्रथम [illegible] ५५।

प्रकाशन कार्यालय
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि-सभा
दयानन्द-भवन, नई दिल्ली-१
दूरभाष—२७४७७१

वार्षिक मूल्य
स्वदेश में—६)
विदेश में—८) या १२ शि०
एक प्रति का मूल्य—५० पैसे

पाठ्य-सामग्री

देवव्रत धर्मेन्दु-स्थिर-निधि से प्रकाशित साहित्य

१. वेद-सन्देश- वेदों के चुने हुए ३०० मन्त्रों का विषयवर्गीकरण के साथ अर्थसहित उत्कृष्ट संग्रह। मूल्य-७५ पैसे मात्र।

२. वैदिक-सूक्ति-सुधा—अर्थसहित वेदों की ५०० सूक्तियाँ। लड़के-लड़कियों के कंठाग्र करने योग्य, जीवन को उन्नत बनाने वाली सूक्तियों का अपूर्व संग्रह। मूल्य—३० पैसा।

३. ऋषि दयानन्द वचनामृत—विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्गदर्शक वचनों का संकलन। मूल्य—२० पैसा।

ओ३म्

सार्वदेशिक

वर्ष-४२ | महर्षि दयानन्द भवन, नईदिल्ली-१, मई १९६५ ई०; ज्येष्ठ २०२२ वि०; दयानन्दाब्द-१४१; सृष्टि संवत् १९७२९४९०६५ । | अंक-४

वेदमाता : गौमाता

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे ।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ।।१।।
इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद्ददाति न स्वं मुषायति ।
भूयो-भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये निदधाति देवयुम् ।।२।।
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ।।३।।
ऋ०, ६।३।२८ (४।६।२५)

हमारे गोष्ठ (गौओं के रहने का स्थान) मे गौएँ आवें, बैठें, रहें और हमारे लिए मंगल करें। हमारे बीच आनन्दपूर्वक रहती हुयी, हमारे घर में ये गौएँ प्रजावती (उत्तम सन्तानों वाली) होकर, अनेक प्रकार से राज्य के लिए बहुत दिनों तक दुग्धवती बनी रहें। हमारी गौएँ उसी प्रकार हमारे साथ रहें, जिस प्रकार परिवार के सभी सदस्य सदा आनन्दित हो, विविध स्थितियों तथा रूपों में रमण करते हैं।

जो व्यक्ति और शासक, परिवार तथा राज्य के संघटन के लिए अपने गौधन की आय में से परिवार और राज्य को अपना देयांश देता रहता है, राज्य उसकी, गौओं की रक्षा करता है और उस गोरक्षक समाज तथा राज्य पर किसी प्रकार के बाहरी आक्रमण के होने पर गोधन-प्राप्त वह शासक, समाज तथा राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ होता है।

राज्य अथवा शासन का भी कर्तव्य होता है कि वह (भूयो-भूयो रयिमिदस्य वर्धयन) प्रजा अथवा सर्वसाधारण जन को उन उपायों का प्रोत्साहन देवे, जिससे गोधन की उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके।

वे गौएँ, जिन से राष्ट्र तथा शासन की सुरक्षा होती है, वे नष्ट नहीं होतीं, चोर उन पर प्रहार नहीं करता, शत्रु के पीड़ा देने वाले शस्त्रों के प्रहार का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और जिन गौओं से अथवा गोधन की आय से राज्य-शासक और संचालक देवों के यजन अर्थात् राज्य-शासन का संघटन करता है और जिनके घृतादि से अग्निहोत्रादि यज्ञ किए जाते हैं तथा अतिथि का घृतदुग्धादि से सत्कार किया जाता है, उन गौओं के साथ गोपालक गृहस्थ तथा राज्य-संचालक दीर्घकाल तक अपना, अपने शासन का तथा अपने राष्ट्र का पोषण एवं विकास करता है। शासन के गोसम्वर्धन और गौरक्षक योजना में रक्षित गौएँ न स्वयं नष्ट होती हैं और न राष्ट्र को नष्ट-भ्रष्ट होने देतीं हैं।

संपादकीय

हमारा अभिमत

१९४७ ई० के अगस्त मास की पन्द्रह तारीख को जिस स्वाधीनता-यज्ञ की पूर्ति हुई तथा जिस स्वराज्य की उपलब्धि हुई, उसका प्रारंभ महर्षि दयानन्द ने किया था। कांग्रेस की स्थापना से दस वर्ष पूर्व (१८७५ ई०), महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज का संगठन अथवा प्रवर्तन किया तथा देश में गणतंत्र-शासन की स्थापना के लिए समाज-सुधार-आन्दोलन के माध्यम से राज्यक्रान्ति का बीजारोपण किया था।

विदेशियों के शिकंजे से अपने देश को मुक्त करने के लिए महर्षि में जो तड़प और बेचैनी थी, वह अन्य देशभक्तों में नहीं थी। महर्षि लिखते हैं :—"यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरे देश नहीं हैं। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है, जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढय हो जाते हैं।"

महर्षि के ग्रंथों में स्वदेशाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ है। वे देशवासियों के हृदय मे देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना चाहते थे और राष्ट्र को यह सन्देश देते रहे कि एक दिन यह देश शक्ति-संपन्न था और स्वाधीन था। यदि प्रयास किया जाय तथा देश के प्रत्येक निवासी में ठीक शिक्षा एवं स्वदेश-भक्ति की भावना भर दी जाय, तब देश पुनः स्वाधीनता की उपलब्धि तथा उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के एकादश समुल्लास में प्रास्ताविक पंक्तियों में महर्षि के कथन हैं :—"सृष्टि से लेके पांच सहस्र वर्षों से पूर्व (महाभारत काल पूर्व—सम्पा०) समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहाँ के राज्य और राज्य-शासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चलाते थे।"

दूसरे स्थान पर महर्षि अपना विचार देते हैं :—"जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे होगा उसकी उन्नति तन-मन धन से सब मिल कर प्रीति से करें।"

महर्षि ने अपने उपर्युक्त कथन में स्वराज्य की लालसा तो व्यक्त की ही है, 'स्वदेशभक्ति' को स्वराज्य-प्राप्ति का प्रमुख साधन बताते हुए 'राष्ट्रीयता' की एक सर्वोत्तम व्याख्या भी प्रस्तुत की है तथा राष्ट्रिय बने रहने के लिए देशवासियों से अपील की है।

सचमुच जिनका शरीर देश के पदार्थों से बनता है और पुष्ट होता है अर्थात् जिनकी यह भूमि, जन्मभूमि है, जो यहाँ की धरती में जनमते हैं और जो इस देश की उपज (अन्न, खनिज तथा औद्योगिक साधनों से) पुष्ट होते हैं, वे इस देश के राष्ट्रिय हैं। अर्थात् जो इस देश को जन्म-भूमि तथ पितृ भूमि (पालित-पोषित एवं संरक्षित होने से) मानते हैं, वे ही इस देश के राष्ट्रिय हो सकते हैं। और उनमें तन, मन और धन से जो परस्पर प्रीति होगी, वही उनकी "राष्ट्रिय एकता" कही जायगी। मिलाइये महर्षि दयानन्द के इस कथन को—"तन मन धन से सब मिलकर उस देश की उन्नत्ति प्रीति से करें।"

हमारे कथन का विशेष अभिप्राय यह है कि आज हम जिनके साथ मिलकर राष्ट्रिय एकता का संकल्प लेना चाहते हैं, उन देश वासियों का महर्षि के कथन के आलोक में आइये, एकबार परीक्षा तो करें कि वे राष्ट्रिय हैं या नहीं और उनमें 'राष्ट्रियता' का तत्त्व है भी या नहीं? (शेषांश पृ० सं० २० पर देखिए)

श्री कान्तिलाल मोहनलाल शर्मा का दुःखद वियोग

आर्य जगत् मे यह समाचार बड़े ही दु ख के साथ सुना जायगा कि बम्बई के एक प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री कान्तिलाल शर्मा का १२ मई को प्रात काल स्वर्गवास हो गया। शर्मा जी आर्य-समाज बम्बई और मुम्बई प्रदेश आर्य-प्रतिनिधि-सभा के प्रधान थे। वे एक दृढ़ एव सभ्रान्त आर्य-समाजी थे और उत्साह एवं शक्ति के पुंज तथा महर्षि के अनन्य भक्त थे। वे सार्वदेशिक-सभा की अन्तरग के सदस्य भी थे। आर्यसमाज के बड़े ही उत्साही और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। काग्रेस मे भी उन्होंने बहुत कार्य किया था। गत हिन्दी रक्षा-आन्दोलन के समय उनका योगदान बड़ा ही प्रशसनीय रहा।

अभी थोडे दिन की बात है, वे रुग्ण होते हुए भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरग मे १८ अप्रैल को भाग लेने आये थे। मथुरा मे श्री विरजानन्द की कुटिया के निर्माण-कार्य को प्रारम्भ कराने के लिए वे स्वय मथुरा गये और तत्सम्बन्धी कार्य मे बराबर वहाँ २३ अप्रैल तक लगे रहे। वे जल्द-से जल्द कुटिया का निर्माण-कार्य प्रारम्भ कर उसे पूर्ण करना चाहते थे। कहते थे कि श्रीमान् सेठ प्रताप सिंह ने इस महान् दायित्त्व को पूरा करने का भार उन पर छोड़ा है। उसे अवश्य ही शीघ्र पूरा करना है। पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती से कुटिया के निर्माण-सम्बन्धी सभी कार्यों के विचार मे वे लगभग एक सप्ताह तक दिल्ली मे व्यस्त रहे। दिल्ली से जाते समय कह गए कि कुछ आवश्यक प्रारम्भिक बातें तबतक ठीक हो जावेंगी और वे शीघ्र ही लौटकर मथुरा मे कार्य प्रारम्भ करावेगें। काल की गति अविज्ञेय है। निर्माण-कार्य की भूमिका तैयार हो रही थी कि यहाँ १२ मई का तार आज १५ मई को मिला कि १२ मई ६५ के प्रात, शर्मा जी सदा के लिए इस ससार से चल बसे। ऐसे मनस्वी कार्यकर्त्ता के चल बसने से महान् दु ख का अनुभव हो रहा है। आर्य जगत् की जो महती क्षति हुई है, उसकी पूर्त्ति कठिन है। बम्बई समाज और बम्बई प्रतिनिधि-सभा को तो अपार क्षति हुई है।

परमेश्वर दिवगत आत्मा को शान्ति दे। सार्वदेशिक सभा इस दु ख मे उनके परिवार तथा समस्त आर्य जगत् के साथ दुःखी है।

रामगोपाल
सभा-मन्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

सामयिक चेतावनी

आर्य-समाज की महत्ता

विख्यात ईसाई विद्वान् श्रीयुत सिडनी वेक ने लिखा है :—

इसमें सन्देह नहीं कि आर्य-समाज एक महान् आध्यात्मिक उबाल है, जो पौराणिक हिन्दू मत को वेदाभिमुख करके, उसकी अनिश्चितता और त्रुटियों में क्रान्तिकारी सुधार लाकर उसे जीवन की पवित्रता, सादगी तथा स्वतंत्र भारतीय जीवन एवं विचारधारा की सर्वतोमुखी प्रेरणा के साथ जोड़ने वाला है।

इसके आगे वे लिखते हैं :—

"महर्षि दयानन्द ने एकेश्वरवाद और जीवन के प्रत्येक अंग के लिए सुनिश्चित आचार-पद्धति और व्यवस्थित धार्मिक क्रिया-कलाप के साथ अध्यात्मिक त्याग-वाद का प्रचार किया।"

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि बड़े-बड़े ईसाई मिशनरी भी स्वीकार करते हैं कि आर्य-समाज एकेश्वर-वादी आस्तिक समाज है और उसके लक्ष्य में न केवल प्रजा का वैयक्तिक और सामाजिक ही, अपितु लौकिक और पारलौकिक योग-क्षेम भी है।

आर्य-समाज का उद्भव वर्त्तमान हिन्दूमत से हुआ है, परन्तु हिन्दूमत की सबसे बड़ी कमजोरी यह रही है कि परस्पर विरोधी सिद्धान्तों और मान्यताओं का अपार समुद्र है, जिसके कारण इसका क्रियात्मक प्रचार न होकर हिन्दू लोग सहज ही विधर्मी बनाए जाते रहे हैं। महर्षि दयानन्द की दिव्य दृष्टि ने इस त्रुटि को देखा और उन्होंने हिन्दू मत के मूलाधार आर्य-धर्म की सुनिश्चित व्याख्या को अपना लक्ष्य बनाकर जो व्याख्या प्रस्तुत की, वह सर्वांगपूर्ण होने के साथ-साथ मतवाद से शून्य है। यदि आर्य-समाज केवल अपने दस नियमों तक सीमित रहकर महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों और मन्तव्यों को अपना सिद्धान्त स्वीकार न करता तो, यह भी हिन्दूमत की उपर्युक्त त्रुटि का शिकार बनकर न तो अपने प्रचार-कार्य में आगे बढ़ता और न जमकर अपने विरोधियों का मुकाबला ही कर पाता। महात्मा गाँधी जी ने महर्षि पर एक आक्षेप यह लगाया था कि उन्होंने आर्य-धर्म के सिद्धान्तों को सुनिश्चित रूप देकर हिन्दू-धर्म को संकुचित बना दिया है। आर्य-समाज के कतिपय अग्रणियों ने यह घोषणा की कि आर्य-समाज के सभासद् के लिए एकमात्र दश नियमों का मानना जरूरी है। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का मानना जरूरी नहीं है। इसे हम दृष्टिकोण की संकीर्णता ही कह सकते हैं। इसको विश्व समाज मानने को उद्यत न हुआ और न हो सकता है।

श्रीयुत्, सर जोतन लीले ने अपनी पुस्तक 'एक्सपेंशन ऑफ इंगलैंड' में "हिन्दूधर्म में सच्ची राष्ट्रीय चेतना की कमी बतलाते हुए हिन्दूमत के दोषपूर्ण विस्तार और अनिश्चित सिद्धान्तों को ही इसके लिए जिम्मेवार ठहराया है। जिनके कारण हिन्दू मत मनुष्यों को आपस में मिलानेवाले सिद्धान्त के रूप में दुर्बल हो गया था। उनकी सम्मति में सुनिश्चित एवं सर्वांग पूर्ण सिद्धान्तों का रूप लिए बिना हिन्दू मत राष्ट्रीय चेतना जाग्रत नहीं कर सकता। उनकी दृष्टि में आर्य-समाज राष्ट्र-चेतना की ओर ले जाने वाले मार्ग का निर्माण करता है, परन्तु हिन्दू मत का जंगल बड़ा बीहड़ है, मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हैं और मार्ग लम्बा है।"

एक दूसरे स्थल पर वे "आर्य-समाज को बहुत पुराने और अत्यन्त सम्मानित अर्थात् वेदादि सत शास्त्रों पर आश्रित सुनिश्चित धर्म का श्रेय प्रदान करते और आर्य-समाज के सिद्धान्तों

को दृढ़ एवं वीरोचित स्वीकार करते हुए, उन्हें उस लचकीलेपन से मुक्त बताते हैं, जो ब्रह्मसमाज के लिए घातक सिद्ध हुआ है।"

१९११ ई० की जनगणना-रिपोर्ट के पृष्ठ १४२ पर भी इसी प्रकार की बातें कही गई हैं 'अकेले आर्य-समाज ने सुस्पष्ट एवं वीरोचित धर्म का प्रतिपादन किया है, जो मुख्य सिद्धान्तों की दृष्टि से पूर्णतया आर्य-धर्म है।"

आर्य-समाज ने हिन्दू धर्म का रूप निखारने और सामाजिक सुधार करके उसे दृढ़ करने में जो योग दिया और स्तुत्य कार्य किया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। आर्य-समाज यह कार्य करता रहेगा।

निस्सन्देह आर्यजन और कट्टर हिन्दू अब आपस में प्रेम, एकता और सद्भाव की डोरी में बँधे हुए हैं। आर्य-समाज द्वारा प्रतिपादित अनेक सिद्धान्त पौराणिकों ने मान्य कर लिए हैं। दोनों ही कई दिशाओं में एक ही लाइन पर काम भी कर रहे हैं। आर्य-समाज और पौराणिक समाज का भाग्य अब एक साथ बन्ध गया है। दोनों ही एक दूसरे की रक्षा के लिये उद्योग करते हैं। आर्य-समाज और कट्टर पन्थी हिन्दू मत में बढ़ती हुई मित्रता में आर्य-समाज की शक्ति निहित है, परन्तु सुधार के स्तर को नीचा हो जाने के भय के प्रति भी विशेष जागरूक बने रहना आवश्यक है। आर्य-समाज ने हिन्दू समाज की जिन त्रुटियों को दूर करने का श्रेय प्राप्त किया है, उन्हीं में आर्यजन ग्रस्त होते दीख पर रहे है। आर्य-समाज के अस्तित्व की स्वतन्त्रता और उसकी शक्ति की रक्षा के लिये यह स्थिति चिन्तनीय है। स्वनाम-धन्य श्रीलाला लाजपतराय ने अपने सुप्रसिद्ध अंग्रेजी ग्रन्थ 'दि आर्य-समाज' में इस खतरे का संकेत करते हुए और आर्य-समाज को चेतावनी देते हुये लिखा था :—

हम चाहते हैं कि आर्य-समाज हिन्दूमत और हिन्दू जाति की सेवा यथापूर्व मनोयोग एवं उत्साह से करता रहे, परन्तु हम यह कभी न चाहेंगे कि आर्य-समाज हिन्दू मत के विशाल समुद्र में अपना अस्तित्व खोकर समा जाय। आर्य-समाज की स्वतन्त्रता इसकी उपयोगिता का चार्टर है।"

प्रत्येक आर्य और आर्य-समाज के कार्यकर्त्ता को इस चेतावनी पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके ऐसा आचरण रखना चाहिए, जिससे आर्य-समाज का अस्तित्व हिन्दू मत के विशाल समुद्र में विलीन होने से बचा रहे।		—रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

बंगाल में मुसलमानों के निरंतर अत्याचार का कारण

अखिल बँग आसाम आर्य-महासम्मेलन का सातवाँ अधिवेशन २४, २५ अप्रैल ६५ को आर्य-समाज बैरकपुर (२४ परगना) के तत्त्वावधान में हुआ। इसकी अध्यक्षता श्री स्वामी समर्पणानन्द जी ने की। उनका अध्यक्षीय अभिभाषण हमारे समक्ष है।

वीर-प्रसू और रत्नगर्भा होते हुए भी बंग भूमि इस्लाम के कलंक जंगली मुसलमानों से सदा पिटती रही है। आज से ५० वर्ष पूर्व बंगाल में हिन्दू बहुत संख्या में थे। किन्तु ५० वर्ष में बंगाल की काया पलट गई। विवेकानन्द, रवीन्द्र और सुभाष की आँखों के सामने हिन्दुओं पर अत्याचार हुए। पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दूओं पर, जो लोमहर्षक अत्याचार हुए वा, हो रहे हैं, उनसे प्रायः सभी जन परिचित हैं। हिन्दू समाज की बहुत सी सम्पत्ति ईसाई लूट ले गए। बहुत सी नकली मुसलमान। परन्तु इस्लाम के नाम पर अत्याचार करने वाले इन दुरात्माओं का वर्ग वसुंधरा के पास आज तक कोई इलाज नहीं। लोगों की आँखों के सामने दूसरी बार बँग-भंग हो गया। इसका कारण क्या है?

अध्यक्षीय भाषण में इसका ठीक कारण वंग भूमि का वेद से सम्पर्क टूट जाना बताया गया है। और कहा गया है कि कुरान, बाइबिल और मार्क्स के कैपिटल से लोहा लेने की शक्ति वेद और वैदिक

वर्ण-व्यवस्था के अतिरिक्त किसी में नहीं, किन्तु बंग भूमि वेद-सम्पर्क-शून्य है।

भाषण के अन्त में बंगाल के आर्य भाइयों से अपील की गई है कि वे जागरूक बनें और आर्य-प्रतिनिधि सभा बंगाल व आसाम को दृढ़ करें, जिससे यह सभा शक्तिशाली बनकर वैदिक-धर्म-प्रचार के लिए निश्चिन्त रहे।

बँगवासी सर्वसामान्य हिन्दुओं को प्रेरणा दी गई है कि "वे नाना विद्याओं के पंडित हैं। वे वेद की नौका को संभालें, वैदिक साहित्य के समुद्र में तैरने का अभ्यास करें, नहीं तो पश्चिम का तूफान नाव को ले डूबेगी। जिस तत्परता से देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र की खोज में जीवन लगाया था, उसी तत्परता से बँगवासी आर्य-समाज के आन्दोलन को भी अपने हाथ में ले लेवें, जिससे वेद का प्रचार हो, शुद्धि का चक्र चले और धर्म की नौका सारे मानव समाज को दुःख से पार करने में समर्थ हो।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने का ६० वर्ष पूर्व का स्वप्न

श्रीयुत ऐम० रंगाचार्य एम०ए०, ए-आई० ए-एस० ने १९०७ई० में फरवरी के 'इण्डियन रिव्यू' में 'भारत की जन-सामान्य की भाषा, के रूप में हिन्दी शीर्षक से लिखा था, जो उक्त पत्र के मई ६५ के अंक में पुनः प्रकाशित किया गया है।

हिन्दी के समर्थन में उन्होंने लिखा है "कि यही एक भाषा है, जिसे करोड़ों व्यक्ति बोलते और समझते हैं। जहाँ यह भाषा नहीं बोली, जाती वहाँ भी समझी जाती है। हिन्दी का थोड़ा-सा भी ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भारत का सुविधापूर्वक भ्रमण कर सकता है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी में संस्कृत भाषा का ही स्वरूप है, जो सुगमता से सीखी जा सकती है। दोनों की अभिव्यक्ति की जितनी शक्ति और सुचारुता हिन्दी में पाई जाती है, उतनी अन्य किसी स्थानीय भाषा में नहीं पाई जाती। प्रामाणिक व्यक्तियों ने यह माना है कि हिन्दी साहित्य के उच्चकोटि के ग्रन्थों में सौन्दर्य और पवित्रता का उच्चादर्श समन्वित है। भारतवर्ष का वह भाग जो हिन्दी भाषा का घर माना जाता है, शताब्दियों से वह केन्द्र बना हुआ है, जहाँ से भारत के कोने-कोने में जीवन और विचार को सुसंस्कृत करनेवाला प्रभाव प्रसारित होता रहा है। ऐतिहासिक एकता के इस स्रोत ने हिन्दू संस्कृति की एकता को पुष्ट किया है।

इन दिनों जबकि देश में प्रायः सर्वत्र इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि भारतीय एकता की वास्तविक और विशाल भावना अभिव्यक्ति के लिये संघर्षरत हैं, निश्चय ही भारत की सम्मिलित भाषा का पद हिन्दी को ही प्रदान किया जाना बड़ा महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अँग्रेजी हमारे घरों की भाषा नहीं बन सकती है। यह भारतीय सभ्यता की केन्द्रीय भाषा होने के कारण अँग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी ही लोगों के हृदयों और घरों में आसानी से प्रवेश कर सकती है। हिन्दी पहले से ही भारतीय जीवन की घाटियों की भाषा बनी हुई है और इन घाटियों से तत्काल ही उसकी धाराएं प्रवाहित हो सकती हैं। इसका मुक्त और विशाल प्रवाह इस बात का प्रमाण है कि इसमें विस्तार की असीम शक्ति संग्रहित है और राष्ट्रभाषा बनने की एक मात्र इसी में क्षमता है। हिन्दी भाषा की वर्णमाला देवनागरी है। यह बात भी हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाए जाने के पक्ष में आती है। भारत की सम्मिलित वर्णमाला की समस्या के समाधान में संलग्न बहुत से व्यक्तियों की यह सम्मति है कि थोड़े बहुत परिवर्त्तन और परिवर्द्धन से देवनागरी-लिपि राष्ट्रीय-लिपि बन सकती है।"

श्री राजगोपालाचार्य, श्री छागला और श्री हुमायूँ कबीर प्रभृति अँग्रेजी और रोमन-लिपि के समर्थकों

को १६०७ में लिखी गई इन पंक्तियों को आँखें खोल-कर पढ़नी चाहिए।

भारत में हिन्दी के प्रसार को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जाय, इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए विद्वान लेखक ने कुछ नए सुझाव दिए हैं। उनका एक सुझाव यह है कि "किसी समय इंग्लैंड के धनी परिवारों के नवयुवक अपनी शिक्षा की पूर्णता के लिए युरोपीय महाद्वीप में भेजे जाया करते थे। इसी प्रकार भारत के संभ्रान्त कुलों के नवयुवक भारत के भ्रमण पर भेजे जाया करें। इस प्रकार भ्रमण से उनका दृष्टिकोण विकसित होगा और लोगों के साथ उनकी सहानुभूति जाग्रत होगी। इससे उनकी देश-भक्ति भी जाग्रत होगी। यह भ्रमण धीरे-धीरे होना चाहिए और पर्यटकों को सर्वसामान्य जनता के जीवन के सम्पर्क में अवश्य लाया जाना चाहिए। देश के समृद्ध देश-भक्त लोग इस प्रकार की यात्राओं के लिए वजीफा देकर उन्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं। इन यात्राओं का एक लाभ यह भी होगा कि नवयुवक हिन्दी बोलने का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विवश होंगे और यात्रा पर जाने से पूर्व ही उन्हें यह ज्ञान प्राप्त कर लेना होगा।

जिन क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार बिलकुल नहीं है उनमें प्राइमरी और माध्यमिक स्कूल खोले जायँ। उनमें बच्चों को ऐच्छिक विषय के रूप में हिन्दी सिखाई जाय।

सबसे आवश्यक पग एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना है, जहाँ शिक्षा और विचारधारा का माध्यम एक मात्र हिन्दी हो। इस विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का स्थान भी रहे, परन्तु प्रभुत्व हिन्दी का हो। यह संस्था साम्प्रदायिक न हो। इसमें देश भरके बच्चे शिक्षा प्राप्त करें। हिन्दी को लोक प्रिय बनाने का इससे बढ़कर शायद ही कोई दूसरा मार्ग हो।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

बाइबिल १२०० भाषाओं में

बाइबिल की अबतक ७ करोड़ प्रतियाँ प्रसारित हो चुकी हैं और सम्पूर्ण बाइबिल या उसके भाग १२०० भाषाओं में छप चुके हैं। संसार में जिन पुस्तकों की बिक्री सबसे अधिक होती है उनमें बाइबिल का स्थान सर्वोच्च है।

बाइबिल के प्रकाशन कार्य २० बाइबिल संस्थानों के द्वारा होता है। उनकी रिपोर्ट है कि पूर्ण बाइबिल २३६, नया अहदनामा २८६ और, विविध भाग ७०७ भाषाओं में छप चुके हैं। लगभग १००० भाषाओं में बाइबिल के कुछ भाग छपने वाले हैं। गत वर्ष घाना आदि देशों की १७ भाषाओं में उसके कुछ अंश छापे गए थे।

बाइबिल के प्रसार की वृद्धि का कारण प्रत्येक देश में साक्षरता में द्रुतगति से वृद्धि का होना प्रतीत होता है। उसके प्रसार की सुव्यवस्था भी वृद्धि का कारण बतायी जाती है। अनेक देशों में घर-घर जाकर बाइबिल पहुँचाया जाता है। पुस्तकों की प्रदर्शनी एवं मेलों के आयोजन तथा चलती-फिरती पुस्तकों की गाड़ियों की व्यवस्था के द्वारा भी बाइबिल की बिक्री बढ़ाई जाती है।

अभी हाल में छपे हुए सम्पूर्ण बाइबिलों में एक बाइबिल केनियाँ के मेरु-भाषा-भाषी लोगों के लिए प्रकाशित हुआ है। इन लोगों की संख्या लगभग ३॥ लाख है। केनिया के स्वतन्त्र हो जाने पर मेरु-भाषा-भाषी लोगों में अपने साहित्य की सर्जना के लिए बड़ा उत्साह उत्पन्न हो गया है। इनमें लगभग २० हजार ईसाई हैं। इन्होंने अपनी भाषा में बाइबिल के प्रकाशन के साथ अपने निजी साहित्य के सर्जन का उपक्रम किया है।

भारत में प्रतिवर्ष बाइबिल की २५ लाख प्रतियाँ प्रसारित की जाती है। नागालैंड के लोगों में प्रचार के लिए सम्पूर्ण बाइबिल उनकी भाषा में छप गया है। प्रथम संस्करण दिसम्बर १९६४ में छपा था। और प्रति घंटा १५०० के हिसाब से इसकी प्रतियाँ बिक गयीं और कर संस्करण समाप्त हो गया था।

बाइबिल के आकार-प्रकार की काया भी पलट गई है। अब यह बड़े आकर्षक रूप में छापा जाता है। अफ्रीका ने ३० लाख से ऊपर प्रतियाँ बेची है।

काँगो की अशान्ति के काल में ८ लाख से अधिक प्रतियाँ वहाँ वेची गईं और साइप्रस में आर्कविशाप ने यूनानी भाषा के बाइबिल की १० हजार प्रतियाँ वहाँ के सैनिकों को भेंट कीं।

(हिन्दुस्तान टाइम्स, दिनांक २-५-६५)

बाइबिल प्रचार के ये आँकड़े चौंका देनेवाले हैं। इसके विशाल प्रचार का कारण बाइबिल की लोकप्रियता न भी हो तब भी प्रचारकों के उत्साह और प्रचार के विस्तृत एवं व्यवस्थित ढंग की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। आर्यजनों को सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार की दिशा मे इससे पाठग्रहण करना चाहिए। यदि हमारी शक्ति और साधनों का प्रयोग आपस में लड़ने-झगड़ने, अनुपयोगी संस्थाओं के संचालन एवं विशाल इमारतों के निर्माण मे न होकर सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार और अन्य उपयोगी साहित्य की सर्जना मे अधिकांश रूप में होने लगे तो यह एक बहुत बड़ा कार्य होगा। देश की अनेक बोलियाँ है जिनमें सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद और प्रकाशन की आवश्यकता है। इस्ट अफ्रिका की प्रतिनिधि सभा का ध्यान अफ्रिकन भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद की ओर गया है। यह सफलता की बात है। आशा है वहाँ की भाषाओं मे सत्यार्थ प्रकाश शीघ्र-से-शीघ्र प्रकाशित हो जायगा। बाद की अन्य आर्य संस्थानों को भी इस दिशा में सक्रिय होना चाहिये।

★

इंगलैंड की गृह-पत्नियों का मूक विद्रोह

इंगलैंड की ६०००० से अधिक गृह-पत्नियाँ मूल्य वृद्धि के विरुद्ध मूक-क्रान्ति में भाग ले रही हैं। उत्तरी इंगलैंड की एक गृह-पत्नी ने अपने पड़ोस की ६ गृह-पत्नियों को १ महीने के लिए बिस्कुट न क्रय करने के लिए राजी किया क्योंकि उनके मूल्य बढ़ गए थे। अन्य गृह-पत्नियाँ भी उसके बायकाट आन्दोलन में सम्मिलित हो गईं और उन्होंने अपनी क्रय-सूची में अचार, मुरब्बे और पाउडर निकाल दिए। यह आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा है, जिसका लक्ष्य बढ़ती हुई कीमतों को रोकना है।

★

स्त्रियों में शराब-खोरी

यह बड़े दुःख और दुर्भाग्य की बात है कि देश के पुरुष वर्ग में ही नहीं, अपितु स्त्री वर्ग में भी शराब-खोरी बढ़ रही है। 'देहली स्कूल ऑफ सोशल वर्क' ने १९६४-६५ के लिये जो पर्यवेक्षण कराया है, उससे स्पष्ट हुआ है कि देहली के उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की महिलाओं में शराब-खोरी बढ़ रही है। उच्च वर्ग की महिलाओं में उच्च पदाधिकारियों एवं संभ्रान्त उद्योग पतियों की पत्नियाँ और सर्विस करने वाली देवियाँ सम्मिलित हैं। इनकी आयु २० से २६ वर्ष की और निम्न वर्ग की महिलाओं की आयु ४० तथा इससे अधिक की भी पाई गई है। उच्च वर्ग की महिलाओं मे अनेक महिलाएँ ऐसी भी पाई गईं है, जिन्होंने २० वर्ष की होने से पूर्व ही शराब का प्रथम बार पान कर लिया था।

यह है हमारे नैतिक पतन की लम्बी दुःखद कहानी का एक अंश जो, स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् लिखी जा रही है। जो व्यक्ति शराब-खोरी में अपने दुःखों को भुलाने और आनन्द की प्राप्ति का सुख-स्वप्न, लेने मे मग्न हैं, वे भूल जाते है कि अपने इस कृत्य से अनैतिकता का वातावरण व्याप्त करने और देश के यश को धक्का लगाने का घोर अपराध वे करते रहे हैं। इस कुटेव से उनकी अपनी जो क्षति होती है, वह अलग होती है। देवियों को कम-से-कम अपने परिवार एवं अपनी सन्तानों के हित को दृष्टि में रख कर इस कुटेव से पृथक रखना चाहिए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

पहले गौरक्षा तब देशरक्षा

पशुपालन एक राष्ट्रीय उद्योग है

पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, मंत्री भारत गोसेवक समाज, दिल्ली

श्री मोरारजी देसाई ने उदयपुर विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा कि देश की आर्थिक समृद्धि का विस्तार करने के लिए खेती के पश्चात् पशुपालन दूसरा उद्योग है। भारत की कृषि अर्थ-व्यवस्था में गाय का महत्त्वपूर्ण स्थान है, अतः हमें गोधन की उन्नति की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

श्री मोरारजी देसाई को शायद यह मालूम होगा कि गुजरात में उत्तम नसल की गायें हैं, जिनमें दूध देने की अद्भुत क्षमता है, परन्तु गुजरात में आज शासन की सारी ताकत भैंस को बढ़ावा देने में लग रही है। सरकारी दुग्धशालाओं में भैंस के दूध का ही व्यवहार किया जाता है। दुर्भाग्य यह है कि आज सारे देश में गोवंश की उपेक्षा हो रही है और उसी का परिणाम है कि आज की अर्थ-व्यवस्था अस्त-व्यस्त बनी हुई है और अन्न का उत्पादन दिन दिन घटता जा रहा है। देश के समक्ष अन्न की भीषण संकट उपस्थित है।

पिछले दिनों हमने श्री अजित प्रसाद जैन के उद्‌गारों की कड़ी आलोचना की थी कि भारत में पशुओं द्वारा खेती होने से कृषि उत्पादन कभी नहीं बढ़ सकेगा। श्री जैन ने जनता को यह सलाह दी है कि मशीनों द्वारा खेती की जाय। छोटे बड़े ट्रैक्टरों का उपयोग किया जाय और बैलों का उपयोग बन्द कर दिया जाय।

श्री जैन ही देश में अकेले इस विचार-धारा के राजनीतिज्ञ नहीं हैं। देश के अनेक राजनीतिज्ञों और विशेषतः पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति और जीवन-प्रणाली से प्रभावित अनेक नेता इस घातक विचार-सरणी के मानने वाले हैं। स्व० प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू जब कभी किसानों के बीच जाते थे, तब उनसे यही अनुरोध करते थे कि वे हजारों वर्षों से चली आनेवाली खेती की पद्धति को बदलें और हल को त्याग कर ट्रैक्टर तथा अन्य प्रकार की मशीनों का उत्पादन करें। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी इस प्रकार के मशीनी-करण की अंध-परम्परा के विरुद्ध थे। वे चाहते थे कि भारत में जो जन-शक्ति भरी पड़ी है, उसे ही कार्यरत बनाया जाय और मशीनों का सहारा न लिया जाय। मगर गाँधी जी के विचारों और तथ्यों का आज के स्वतन्त्र भारत में कहाँ स्थान है?

देहात में किसान अपने आप गुड़, शक्कर और खांड (चीनी) पैदा करते थे। उसके कारण वर्ष में ६ महीने करोड़ों लोगों को रोजी और रोजगार मिलता था, लेकिन चीनी की बड़ी बड़ी मिलें कायम हो जाने से देहात में गुड़, शक्कर और खांड बनना कम होता जा रहा है। किसान आज खेत में गन्ने काट कर सीधा सुगर मिलों पर ले जाता है और उसके दाम जेब में डालकर चला आता है। निश्चय ही किसान को इस तरह की चीनी मिलों को गन्ना बेचने से आर्थिक लाभ होता है, परन्तु ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था अस्त व्यस्त होती जा रही है। किसानों में दुर्व्यसन बढ़ गये हैं। फिजूल खर्ची की प्रवृत्ति पैदा हो गई है और शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा भी घटती जा रही है। यह सारी स्थिति राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए घातक है। देश का यह दुर्भाग्य है कि स्वास्थ्य के लिए हानि करनेवाली चीनी को तो हर तरह का संरक्षण और प्रोत्साहन दिया जा रहा है और गुड़ तथा खांडसारी के गृह-उद्योग को नष्ट करने की कोशिश हो रही है।

भारत में पशुपालन से स्वराज्य-प्राप्ति के पूर्व देहातों में किसानों द्वारा करीब तीन अरब रुपये का शुद्ध घी पैदा किया जाता था। खेती के साथ किसान का यह सहायक धंधा था, मगर वनस्पति को प्रोत्साहन और संरक्षण देकर शुद्ध घी के उत्पादन-व्यवसाय को नष्ट कर दिया गया। स्व० प्रधान मंत्री नेहरूजी स्वतंत्र भारत को हर तरह सुखी और समृद्ध बनाना चाहते थे। इसी लिये उन्होंने बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा दिया। वनस्पति उद्योग का आज देश में जो विस्तार दिखाई देता है, वह भी स्व० नेहरूजी के ही विचारों का परिणाम है। नेहरूजी बड़े-बड़े कारखानों को चलता देखकर तथा एक स्थान पर बृहद् उत्पादन होता देख कर बड़े खुश होते थे। उन्होंने इस तरह से बृहद् उद्योगों का केन्द्रीकरण किया। इससे धनिक अधिक धनी बने। शहरों की खुशहाली बढ़ी, लोगों को जेबों में पैसे आते, घरों में रेडियो, बिजली, सोफा-सेट और स्कूटर तथ मोटरें पहुँची, परन्तु देश में जीवनोपयोगी वस्तुओं की महगाई होती गई। अन्न, दूध तथा घी का उत्पादन घटता गया। देश में दवाई बनाने के कारखाने बढ़े। बड़े डाक्टरों की संख्या बढ़ी, परन्तु रोगियों की सख्या भी इतनी बढ़ीकि, जिसे संभालना मुश्किल हो रहा है।

राष्ट्र के नव निर्माण का यह तरीका गलत था। समाजवादी अर्थ-व्यवस्था और समाज रचना के प्रयत्न में पागल हुई हमारी वर्त्तमान सरकार आज उलटे-सुलटे तरीकों का प्रयोग करके देश को बर्बादी की तरफ बढ़ाये ले जा रही है। देश में मंहगाई कितने भीषण रूप से बढ़ी है, क्या कोई लोकप्रिय सरकार ऐसी महंगाई को देखते हुये शासन करने की अधिकारिणी है ? परन्तु भारत की प्रजा पिछले सतरह वर्षों में इतनी निःसत्व बन गई है, कि वह आये दिन पैदा होनेवाले सकट और कष्ट को सिर झुका कर बरदाश्त करने की आदी बन गई है। प्रजातंत्र तो भारत में फल-फूल रहा है, परन्तु प्रजा दबती जा रही है। उसका नैतिक बल घटता जा रहा है और अपने पैरों पर खड़े होकर स्वाभिमान के साथ जीवन बिताने की उसकी क्षमता घटती जा रही है। देश, अन्न के लिये आज विदेशों का मुहताज है। यह सब सरकारी तंत्र की गलत विचार-धारा और कार्यप्रणाली का परिणाम है।

श्री मोरारजी देसाई का यह कथन सही है कि कृषि के बाद पशुधन भारत का दूसरा मुख्य उद्योग है, परन्तु आज सरकार की उपेक्षा के कारण पशुधन की दयनीय दशा है। सरकार से यह छिपा नहीं है कि देश में गोहत्या बंद न होने से बढ़िया से बढ़िया नसल की गायें और कार्यक्षम बैल काटे जा रहे हैं। कलकत्ता में प्रति-दिन हजारों दुधारू गायों की हत्या होती है और इस तरह पशुधन का नाश हो रहा है, परन्तु प्रजातंत्र का दंभ भरनेवाली सरकार इस विनाश को रोकने की कोई फिक्र नहीं करती।

देश मे अन्न का संकट तबतक दूर नहीं होगा, जबतक पशुधन की रक्षा करके कृषि को उन्नत न बनाया जायेगा। जो राजनीतिज्ञ भारत में पशुओं के बिना केवल मशीनों के सहारे खेती करने की बात कहते हैं, वे राष्ट्र के भविष्य को अंधकारमय बनाना चाहते हैं। कृषि का उत्पादन बढ़ाना है और अन्न संकट को दूर करना है, तो पशुधन की उन्नति और रक्षा करनी होगी तथा गोहत्या को बंद करना होगा। इसके लिये आवश्यक है कि देश में गोसम्वर्धन योजनाओं पर उदारता के साथ खर्च किया जाय और किसानों को अच्छे पशुओं को खरीदने तथा पालने के लिये आवश्यक सहायता दी जाय। पशुओं की रक्षा और उन्नति हुये बिना देश में कृषि की स्थिति मे सुधार नहीं होगा। ट्रैक्टरों द्वारा खेती करने से समस्या हल न होगी। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में कृषि का उत्पादन बढ़ाने के लिये केन्द्रीय खाद्य मंत्रालय ने जो कार्यक्रम निर्धारित किया है, उसमें कृषि के लिये सीमेंट, लोहा फर्टीलाइजर (नकली खाद) लाखों टन और साढ़े सात लाख ट्रैक्टर देने की योजना है।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

संस्मरण-साहित्य

स्वर्गीय पण्डित अयोध्या प्रसाद जी

बालगोविन्द सहाय, एडवोकेट, राँची

यों तो संसार में जीना-मरना लगा ही हुआ है, परन्तु समाज उन्हीं की मृत्यु पर शोक करता है, जिनसे देश और जाति का कल्याण हुआ हो। पण्डित अयोध्या प्रसाद, बी० ए०, वैदिकरिसर्च स्कालर इसी कोटि के मनुष्य थे। उनका जन्म, गया जिला (बिहार) के एक कायस्थ परिवार में हुआ था पर वे गुण, कार्य और स्वभाव से ब्राह्मण थे। उनके पिता श्री बंशीधर जी राँची में एक सरकारी कर्मचारी थे और राँची में अपना निवास-स्थान उन्होंने बना लिया था। कहा जाता है कि श्री बंशीधर जी को सारा (Welester Dictonary) कंठाग्र था। मालूम पड़ता है कि अपने पिता से पं० अयोध्या प्रसाद को स्मरण-शक्ति और अध्यवसाय विरासत में मिले थे। उस समय के भद्र समाज और विशेषत: कायस्थ परिवारों में उर्दू, फारसी की पढ़ाई का रिवाज था। पं० अयोध्या प्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा इसी भाषा में हुई थी। बचपन से ही पण्डित जी बड़े मेधावी थे।

उनको पढ़ाने का काम एक मौलवी साहब को सौंपा गया, जो अन्य लड़कों को भी पण्डित जी के साथ पढ़ाया करते थे। एक दिन वे पाठ याद न कर सके। मौलवी साहब की छड़ी से बचने के लिए और कुछ शैतानी के ख्याल से, वे अपने सह-पाठियों को भूत वगैरह का मनगढ़त, डरावना किस्सा कह बतलाये कि उन्हें पता लगा है कि आज एक जबरदस्त भूत, मौलवी साहब का भेष धर, उन्हीं की आवाज और ध्वनि में बोलते हुए, हमलोगों के पास पढ़ाने का बहाना कर आवेगा। इस भूत से बचने का उपाय यही है कि अभी से ही कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया जाय और भूत कितना ही दरवाजा खोलने को बोले हमलोग न खोलें। मौलवी साहब आये। पढ़ाने के कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द देख, दरवाजा खटखटाये। इस पर अयोध्या प्रसाद जी अपने साथियों को धीरे से बोले होशियार हो जाओ, वह भूत आ गया है, किवाड़ कभी न खोलना। बाहर से मौलवी साहब लड़कों का नाम ले लेकर किवाड़ खोलने के लिए चिल्ला रहे हैं। भीतर सब के सब लड़के चुप। बहुत हंगामा और देर के बाद दरवाजा खुला। मौलवी साहेब मारे गुस्सा के लड़कों को पीटने लगे और किवाड़ न खोलने का सबब पूछा। एक लड़के ने डरते-डरते बताया कि मोंछू (पं० अयोध्या प्रसाद का पुकारू नाम) हमलोगों को भूत का किस्सा कह, किवाड़ नहीं खोलने को कहा था। मौलवी साहब अयोध्या प्रसाद को पीटने की तैयारी कर ही रहे थे कि वे कमरे से भागे। इस पर मौलवी साहब लड़कों को हुक्म दिए, उसे पकड़ कर लाओ। लड़के उनके पीछे दौड़े। तब वे अपने मकान, भुतहा तलाब के पास लगे हुए एक ऊँचे दरख्त पर चढ़ गये। जब लड़के उन पर ढेला चलाने लगे तो वे दरख्त से तालाब में कूद पड़े और तैर कर तालाब के लाट पर चढ़ गये और वहाँ से लड़कों को लू लू करने लगे।

घर पर उर्दू और फारसी पढ़ अयोध्या प्रसाद जी राँची जिला स्कूल में दाखिल हुए। यहाँ से वे उर्दू-फारसी के साथ एनट्रेन्स (Entranee) परीक्षा पास किए। स्कूल में भी अयोध्या प्रसाद जी अपने नटखटपन से बाज नहीं आते थे।

स्कूल के हाते से सटा एक बड़ा बागीचा था, जो राजा हाता कहाता था। उस बागीचे में लीची,

आम, कवरंगा, पनौरा, रवड़ आदि के वृक्ष थे और एक गहरी बावली भी थी। बागीचा वीरान रहता था और एक जंगल का रूप लेलिया था। अयोध्या प्रसाद इस बागीचे में निडर घूमा करते थे। एक दिन उस बागीचे में उन्होंने एक नरमुंड देखा। मौका देख उसे उठा लिया और सिन्दूर तेल इत्यादि से रंजित कर ठीक, शाम के वक्त मुहल्ले के एक बुजुर्ग के घर में किसी तरह दाखिल कर दिया और तमाशा देखने के लिए सड़क पर टहलने लगे। बड़ा कुहराम मचा। ओझा मती आदि बुलाये गये और किसी तरह नरमुण्ड को हटाकर राजा हाता ही मे फेंक दिया गया। अयोध्या प्रसाद सब देख रहे थे और मजा लूट रहे थे। दूसरे दिन नरमुंड को फिर शाम के वक्त उन्हीं बुजुर्ग के मकान के आँगन मे फेंक दिया और तमाशा देखते रहे।

जब स्कूल में ही पढ़ते थे, तभी अयोध्या प्रसाद ने मैस्मरिजम, जादूगरी, फोटोग्राफी बाखूबी तैरना, ऊर्दू और फारसी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी। तरह-तरह के लोगों से बातचीत करना, मिलना-जुलना सभा-सोसाइटी मे आना-जाना उनके स्वभाव में था। उन्हीं दिनों वे राँची आर्य्य-समाज के अधिवेशनों में सम्मिलित होने लगे और उनकी रुचि संस्कृत सीखने की हुई, जिसे सीखने लगे। तत्कालीन राँची आर्य्य-समाज के प्रधान श्रीमान बाबू बालकृष्ण सहाय, वकील के व्यक्तित्व चरित्र, बाक्शक्ति, सारगर्भित व्याख्यान और प्रयत्नों से बड़े प्रभावित होते थे। इस तरह उनमें वैदिक धर्म का बीज बाबू बालकृष्ण सहाय जी के कारण पड़ा जो समय पर विशाल रूप धारण किया। शिकागों के धर्म-सम्मेलन में वैदिक धर्म पर सफल व्याख्यान देने के बाद, उन्होंने एक पत्र में बालकृष्ण सहाय जी के प्रति अपनी कृतज्ञता-प्रकाश की थी। उन दिनों राँची आर्य्य-समाज के तत्त्वधान में बिहार-बंगाल आर्य्य-प्रतिनिधि-सभा का साप्ताहिक पत्र "आर्य्यावर्त्त" निकलता था। प्रेस आदि को संभालने के लिए म० होतीलाल एक पंजाबी नवयुवक, राँची आये। अयोध्या प्रसाद और होतीलाल दोस्त बने। बाद में होतीलाल पर बम बनाने के षड्यन्त्र का सन्देह हुआ और उनकी धरपकड़ हुई। दोस्ती के कारण पुलिस अयोध्या प्रसाद पर भी शक करने लगी और बहुकाल तक खुफिआ तौर पर उनकी पीछा करती रही।

एनट्रेन्स (Entranes) पास करने के बाद, विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए अयोध्या प्रसाद पटना गए, जहाँ उनका संपर्क महामहोपाध्याय, साहित्याचार्य्य, पण्डित रामावतार शर्म्मा से हुआ। शर्म्मा जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनका विचार अनूठा और तर्क-शक्ति जबरदस्त थी। अयोध्या प्रसाद की मेधावी बुद्धि से शर्म्मा जी बड़े प्रसन्न थे और उन से स्नेह करने लगे। दोनों में तर्क खूब होता था। अयोध्या प्रसाद प्राय: "सत्यार्थ प्रकाश" में वर्णित बातों और तर्कों को काम में लेते थे। वर्षा ऋतु था, पटने की गंगा नदी इस छोर से उस छोर तक प्राय: दो तीन मिल लबालब भरी थी। बात ही बात में अयोध्या प्रसाद अपने साथियों से बाजी लगाए कि वे गंगा के इस पार से उस पार तैर कर तैरते ही लौट आवेंगे। भरी गंगा मे वे कूद पड़े और अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। कॉलिज की पढ़ाई के लिए, कुछ समय बाद, वे पटना छोड़ कलकत्ता चले गये।

कलकत्ता में अयोध्या प्रसाद अपने बहुज्ञान, सहृदयता और रोचक बातचीत के कारण विद्यार्थियों और परिचितों मे "चालू सिक्का" बन गए थे। वे ऊर्दू-फारसी की शायरी भी कुछ करते थे। उनका तखल्लुस था 'गनीमत"। बिहार के एक विद्यार्थी का रहन-सहन, तौर-तरीका, शरीर की आकृति बंगालियों की नजर मे बेढब, लगती थी। उनकी चुटकी लेना, प्राय: सभी अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। अयोध्या प्रसाद उनके नाम का प्रथम अंश "फूल" को "लफू" में उलट, एक मजाकिया "लफूनामा" लिखे, जिसके कुछ पद यों थे:—

"सर से धर तक वे हैं बराबर, मानिन्द मुनसपलटी के रोलर।

एक एक उज़ू को दाढ़ी दोनों रुखसार पर बढ़े हैं
मानिन्द वे मुड़ी की काठी दिवार पर जड़े हैं।
तालों में ताल नैनीताल है लफ्फजों में लफ्फू लफ् ़्लाल हैं।
इन्कलाब से दुनिया बदल जाये तब जानें
लफुओं मे मेरा नाम, कट जाय तब जानें "

अपने पिता की मृत्यु के बाद अयोध्या प्रसाद कलकत्ता छोड़, हजारीबाग पढ़ने चले आये जहाँ से उन्होंने सन् १९१५ ई मे दर्शन-शास्त्र, और अरबी, फारसी के साथ, बी०ए० पास किया। अब तक हिन्दी और काम चलाऊ संस्कृत के सहारे वे भारतीय दर्शनों का भी ज्ञान प्राप्त कर लिये थे, जिनके कारण वे अपने अध्यापकों और सहपाठियों की नजरों में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिये थे।

बी० ए० पास करने के बाद अपनी धर्मपत्नी को अपने साथ ले वे पुन कलकत्ता चले गये। जहाँ वे शिक्षक का काम कर धनोपार्जन कर वकालत पढ़ने लगे। और कलकत्ता आर्य-समाज मे जाने-आने और और सक्रिय भाग लेने लगे। जिस कटरे में वे रहते थे, उसी के एक कमरे मे स्वामी दयानन्द के एक अनुयाई और वैदिक धर्म के विद्वान वयोवृद्ध पण्डित भीमसेन शर्मा रहते थे। उनसे यदाकदा अयोध्या प्रसाद को वार्तालाप होता था। कालान्तर में वे वकालत पढ़ना छोड़ दिये और आर्य-समाज, कलकत्ता, के पुरोहित बन, वैदिक साहित्य के मनन और वेदों के मन्त्रों के रहस्य के अनुसंधान में जुट गये। इस काम में उन्हें अंग्रेजी, अरबी, फारसी भाषा के ज्ञान से बड़ी सहायता मिली। आर्य-समाज कलकत्ता के अधिवेशनों में वे वेद मन्त्रों की व्याख्या बड़े रोचक और ज्ञानपूर्ण भाषा में किया करते थे, जिससे श्रोता बड़े प्रभावित होते थे। कलकत्ता आर्य-समाज की उन्होंने बड़ी सेवा की। इस समय तक उनकी ख्याति सारे आर्य-जगत में हो गई थी।

नई-नई बातें जानना, उन पर खोज करना, और अच्छे अच्छे अमूल्य पुस्तकों का संग्रह करना उनके स्वभाव में था। एक बार वे इलाहाबाद गये। अपने स्वभाव के मुताबिक इलाहाबाद के गली-कूचों में पैदल घूमने को निकल गये। एक जगह एक कबाड़ी रद्दी कागजों का पुलिन्दा बेचता था। पुलिन्दों में ऊर्दू-फारसी के हस्तलिखित कागज भी थे। अयोध्या जी खड़ा हो देखने लगे की शायद उन्हें काम की चीज मिल जावे। देखते-देखते उनकी दृष्टि एक पुलिन्दे पर जम गई और उसे खरीदना चाहा। कबाड़ी हरेक पुलिन्दा ५ रु० में बेचता था, पर अयोध्या जी की खास मांग पर, उस पुलिन्दे का ७रु० मूल्य बताया। अयोध्या जी ७ रु० में सौदा तय कर, पुलिन्दे को अपने कबजा में कर १० रु० का नोट कबाड़ी को दिये। कबाड़ी ३ रु० लौटाने लगा, तो बोले उसे भी रख लो। कबाड़ी की उत्सुकता हुई और बेचे हुए पुलिन्दे के बारे में वह जानना चाहा। अयोध्या प्रसाद ने उसे बताया कि उसमे बादशाह शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह का अपने हाँथ का लिखा, फारसी मे उपनिषदों का भाष्य है, यदि १०० रु० भी माँगते, तो तुम्हें मै तुरत देता। शायद ही किसी उपदेशक के पास पंडित जी के पुस्तक भँडार के ऐसा पुस्तकों का संग्रह हो। प्रायः सभी भाषा, सभी विचार और धर्मों (मतों) के पुस्तक उन्होंने निजी व्यय से संग्रह किया था और प्रत्येक पुस्तक की बातों की जानकारी उन्हें थी। अपने अमूल्य और अलभ्य पुस्तक भंडार को अपने धर्मगुरु ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान टंकारा के दयानन्द स्मारक ट्रस्ट को उन्होंने अपने जीवन के शेष भाग में सात्विक दान कर दिया था। उनके अनुपम पुस्तकालय में प्रायः १५००० से ऊपर पुस्तकें थीं, जिनका आनुमानिक मूल्य तीन लाख से ऊपर है। इन पुस्तकों को कलकत्ता से टंकारा ले जाने में लगभग २५०० रु० लगे थे और इनको सुरक्षित रखने के लिए ३०० से ऊपर स्टील (लोहा) की अलमारियों के लिए ट्रस्ट ने अपील निकाली थी।

पण्डित अयोध्या प्रसाद जी की प्रेरणा से कलकत्ता और इसके आस-पास कई आर्य्य-समाज स्थापित हुए। पण्डित जी समय-समय पर इन समाजों मे प्रवचन और व्याख्यान देते थे। उनके हृदय मे वैदिक

धर्म का व्यापक रूप था और देश में स्वदेशी राज्य वे देखना चाहते थे। जब देश में स्वतंत्रता आन्दोलन जोरों पर था, पण्डित जी उस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिए और जेल गये। उन्हीं दिनों कलकत्ता से निकलनेवाले आर्य्य-समाज के पत्र ("आर्य्य जीवन") में उन्होंने "इस्लाम कैसे फैला" एक लेख-माला देना आरम्भ किया था जो पीछे से पुस्तक रूप मे छपा था। चुने हुए वेद मंत्रों का अनुवाद अंग्रेजी में कर "Jems of Vedic Wisdom" नामक पुस्तक उन्होंने प्रकाशित कराया था।

कलकत्ता का एक नामी होटल का मालिक और उसकी स्त्री जन्म से वैष्णवी थे, पर मुसलमान बन गए थे। आरम्भ में उनकी आर्थिक अवस्था गिरी हुई थी। चाह पकौड़ी की दूकान, ढिबरी जलाकर चलाते थे। जन्मना हिन्दू संस्कार के कारण स्त्री "ठाकुर" और "तुलसी" की पूजा नित्य किया करती थी। भाग्य ने साथ दिया और लौटरी में उन्हें काफी धन मिला। धीरे-धीरे वे ऊँचे दर्जे का होटल चलाने लगे। स्त्री का दृढ़ विश्वास था कि सारा ऐश्वर्य उसके ठाकुर और तुलसी की कृपा से है। अपने स्वामी पर यह विचार बराबर जताती रहती थी और उसी की तरह पूजा करने को कहती थी। मालिक के हृदय में प्रेरणा हुई कि वह पुनः हिन्दू धर्म्म में दीक्षित हो जाय। होटल में बड़े-बड़े लोग आया करते थे। बातचीत से मालिक को पता लगा कि कलकत्ता में एक पण्डित अयोध्या प्रसाद है, जो उसकी इच्छा पूर्ण कर सकते हैं। पण्डित जी से वह मिला और अपना अभिप्राय बताया। पण्डित जी उसे प्रोत्साहन दिये और उन दोनों प्राणियो को समारोह के साथ वैदिक-पद्धति से शुद्धि-संस्कार कर यज्ञोपवीत धारण कराया, तथा वैदिक धर्म्म और आर्य्य संस्कृति का महत्त्व बताया। फलस्वरूप मालिक ने अपने होटल से गोमांस-व्यवहार सदा के लिए बन्द कर दिया। इस सराहनीय कार्य का तीव्र विरोध हिन्दू समाज के कथित प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा अधिक हुआ। सर्वभक्षी हिन्दू उस होटल का बहिष्कार किये और पोंगापन्थी हिन्दू बवाल मचाये कि एक मुसलमान को यज्ञोपवीत पहनने का क्या अधिकार है। घबराये हुए होटल के स्वामी और स्त्री पण्डितजी के पास पहुँचे और अपनी विपत्ति की कथा कही। पण्डित जी उन्हें आश्वासन दे, उनके कार्य की सराहना कर गऊ की उपयोगिता बता, बोले तुम अपने पैसे से कोट, कमीज जूता टाई पहनते हो, तो इसमे किसी को आपत्ति नहीं होती, फिर अपने पैसे से यज्ञोपवीत पहनते हो तो दूसरों की आलोचनाओं की क्यों परवाह करते हो। जो तुमसे उलझें उन्हें कह देना मैं अपने पैसे से जनेऊ पहनता हूँ और जो शास्त्र की बातें लेकर आपत्ति उठावें, उन्हें मेरे पास भेज देना, मैं उनसे समझ लूँगा। वे अब निधड़क हो गए और समय समय पर सत्कार पूर्वक पण्डित जी को आमंत्रित कर उपदेश सुना करते थे।

एक दिन पण्डित जी ने गायत्री का उपदेश दे उन्हें गायत्री जप करने का आदेश दिया। इस पर स्त्री बड़े मार्मिक शब्दों में बोली, ठाकुर और तुलसी को छोड़ मैं गायत्री को कैसे जपूँ, जबकि मेरा भाग्योदय इन्हीं की कृपा से हुआ है। ईश्वर ने पण्डित जी को प्रेरणा दी। वे समझाते हुए बोले जब तुम्हारी आर्थिक अवस्था ठीक न थी उस समय तुम "ढीबरी" जला काम चलाती थी और जैसे-जैसे अवस्था सुधरती गई, क्रमशः लैम्प, गैस और अन्त मे बिजली जलाने लगी। सूर्य के उदय होने पर बिजली को भी तुम स्वयं बुझा देती हो। गायत्री सूर्य है, तुलसी और ठाकुर गैस, बिजली इत्यादि है, वे भी अपना स्थान रखते हैं और उनकी भी उपयोगिता है, पर सूर्य के उदय हो जाने पर उनकी कोई जरूरत नही होती। यह सरल तर्क उनकी समझ मे आ गया और उनके हृदय पर अमिट छाप लगा दिया।

पण्डित जी अपने भाषणों और प्रवचनों मे श्रोताओं में ग्राह्य-शक्ति का अनुमान लगा, उपयुक्त तर्क और दृष्टान्त दिया करते थे। उनका अध्ययन-मनन और जानकारी विस्तृत थी। वे कहा करते थे कि जिस "सत्यनारायण' की कथा को पौराणिक पण्डित वांचा करते हैं, वह स्कन्द पुराण के न रेवा खंड में, न सारे पुराण में कहीं भी है। संसार का प्रथम ज्यो तषी लंकापति रावण की पत्नी मन्दोदरी के पिता मय थे, जो रोम देश के निवासी थे। बीज गणित (Algebra) भारत की देन है। यह गलत धारणा है कि इस विद्या का आरम्भ अरब देश से हुआ है। वेद मंत्रों में गणित विद्या का ज्ञान भरा पड़ा है। वैदिक मंत्रों के आधार पर पण्डित जी बड़ा-बड़ा जोड़, घटाव, गुण इत्यादि का सही उत्तर मौखिक ही, कुछ पलों में हो, बता देते थे।

पण्डित अयोध्या प्रसाद सारे भारत में घूम-घूम कर एक त्यागी और गृहस्थ ब्राह्मण के रूप में वैदिक-धर्म का प्रचार करते रहते थे और अपने कथनों की अमिट छाप लोगों पर लगा देते थे। कंचन के फेर में वे कभी नहीं पड़े। उनकी बातें सुनने को लोग लालायित रहते थे। प्राय: सभी भिन्न-भिन्न मतावलम्बी उनकी विद्वत्ता, शिष्टता, तर्क, सभाचातुरी और योग्यता के कायल थे। सभी प्रचलित मतों के वे अच्छे ज्ञाता थे, कुरान-बाइबिल, बौद्ध, जैन-धर्म की पुस्तकें तथा गुरु-ग्रन्थ- साहब की अनेकानेक पंक्तियाँ उन्हें स्मरण थीं।

अमेरिका के शिकागो नगर में सन् १९३३ के अगस्त मास में विश्व-धर्म-सम्मेलन होने वाला था। सम्मेलन में आर्य्य-समाज का प्रतिनिधि बनकर कौन जाय, यह प्रश्न उठा। सार्वदेशिक-सभा ने श्री आचार्य्य रामदेव जी और प्रिंसिपल बालकृष्ण जी को अपना प्रतिनिधि ठीक किया और धन के लिए अपील की। पण्डित अयोध्या प्रसाद अपने बल पर शिकागो जाना चाहते थे। उनके लिए अमेरिका के लिए पास पोर्ट (Pass port) मिलना कठिन सवाल था, क्योंकि सन् १९०८ से ही वे विदेशी सरकार की आँख पर चढ़े हुए थे। पासपोर्ट के लिए, दरखास्त के साथ एक वैतनिक मजिस्ट्रेट की सिफारिश आवश्यक थी। विदेशी सरकार का दबदबा ऐसा था कि पण्डित जी के कई परिचित और श्रद्धालु मजिस्ट्रेट भी खुलकर सिफारिश करनेमें संकोच करते थे। इस परिस्थिति में पण्डित जी राँची आये और अपनी कठनाई उन्होंने बतायी। विचार-विमर्श के बाद निश्चय हुआ कि राँची के डीपूटी कमिश्नर के पास पासपोर्ट के लिए दरखास्त दिया जाय। आर्य्य-समाज, राँची के तत्कालीन प्रधान श्री श्याम कृष्ण सहाय जी, बैरिस्टर, राँची के सब-डिवीजनल ऑफिसर (Sub-Divisional officer) और अंग्रेज डीपटी कमिश्नर से मिले। सबडिवी-जनल ऑफिसर और पण्डित जी पटना कॉलिज के सहपाठी थे। पासपोर्ट के लिए उन्होंने अच्छी सिफारिश कर दी और बैरिष्टर साहब की कोशिश से पण्डित जी को कालान्तर में पासपोर्ट मिल गया। इस पासपोर्ट के लिए पण्डित जी बड़े चिन्तित थे, जिसके मिलने पर, बड़े प्रसन्न हो, बोले "आखिर चावल हो पन्थ के काम में आना है और यह पुराना चावल मेरा प्यारा राँची आर्य्य-समाज है।" पण्डित जी अमेरिका प्रस्थान के लिए सब तैयारी कर लिए। आचार्य्य रामदेव जी और प्रिंसिपल बालकृष्ण किसी कारण से अमेरिका न जा सके। सार्वदेशिक सभा ने पण्डित जी का नाम आर्य्य-समाजों के प्रतिनिधि रूप मे नामजद कर दिया। पण्डित अयोध्या प्रसाद आर्य्य-समाज के एक मात्र प्रतिनिधि बन, अपनी वृद्धा माता, धर्मपत्नी, अपनी अबोध बच्ची और पोषपुत्री को कलकत्ता में छोड़, अमेरिका के लिए प्रस्थान किये। बम्बई से जहाज पर चढ़ते-चढ़ते और जहाँ से भी उन्हें मौका मिलता था, मेरे पास पत्र भेजते रहते थे। मैं उन पत्रों को "आर्य्यमित्र" मे प्रकाशनार्थ भेज देता था।

शिकागो-सम्मेलन के प्रारम्भिक अधिवेशन में पण्डित जी की वैदिक प्रार्थना और संदेश सुन अमेरिका के नर-नारी आश्चर्य-चकित हो गए थे। ऐसा उदात्त, ऐसा सारगर्भित और व्यापक प्रार्थना-संदेश उन लोगों ने अपने जीवन में कभी नहीं सुना

था। अपने पत्र में इस सफलता का श्रेय, पण्डित जी ने, राँची आर्य-समाज और इसके संस्थापक श्रीमान बालकृष्ण सहाय जी को दिया था। उनके भाषणों, व्यक्तिगत आलापों और विचार-विनिमय से अमेरिका जनता आर्य-समाज के विषय में अधिकाधिक जानने के लिए उत्सुक रहती थी। भारतवर्ष में जातीय शिक्षा (National Education के बारे में पंडित जी ने ऋषि दयानन्द के शिक्षा-विषयक विचारों और गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली को अमेरिकी जनता के सामने रखा था, जिससे वे प्रभावित हुए थे। पंडित जी की प्रेरणा से सभा का आरम्भ वेद मंत्रों द्वारा और समाप्ति शान्ति पाठ द्वारा होता था। वक्ताओं का सत्कार "नमस्ते" से होता था, जिसका अर्थ उन्होंने बताया था "मैं अपने हृदय से, अपने मस्तिष्क से और अपने बाहुबल से आप की अन्तरात्मा के प्रति सम्मान प्रकाशित करता हूँ।" अनेक स्थानों पर, अनेक संस्थानों में उनका व्याख्यान हुआ था। उनके व्यक्तित्व, पांडित्य और प्रचार-शैली के कारण विश्वधर्म-सम्मेलन के सभापति मिस्टर चार्ल्स, फ्रेडरिक ने सार्वदेशिक सभा को पत्र द्वारा सामह-निवेदन किया था कि पण्डित जी को कुछ अधिक समय के लिए अमेरिका में ठहरने दिया जाय। पण्डित जी भी वैदिक-धर्म और आर्य-समाज की जड़ जमाने के लिए, वहाँ ठहरना चाहते थे। सार्वदेशिक-सभा ने निश्चय किया कि कम-से-कम दो साल तक पंडित जी अमेरिका में ठहर कर प्रचार करें। इस काम में वे जुट गए और उनकी मांग पर एक अन्य उपदेशक को भारत से वहाँ भेजा गया।

प्रायः तीन वर्षों तक अमेरिका में रह कर पण्डित जी बड़े लगन और सफलता के साथ वैदिक धर्म का प्रचार किए। उत्तरी अमेरिका से दक्षिणी अमेरिका प्रचारार्थ जाते हुये वेस्ट इन्डीज (West indies) द्वीप पुञ्जों में ठहरते गए। उन द्वीप पुञ्जों में अनेक भारतवासी बसे हुये हैं। उन द्वीपों में वे अनेक आर्य-समाज स्थापित किए और कई आर्य-समाज-मन्दिर वहीं के लोगों के दान से निर्माण कराये। विदेश-प्रचार के लिए अमेरिका को पण्डित जी उपयुक्त स्थान समझते थे और उन्हों ने प्रचार योजना भी सार्वदेशिक सभा के पास भेजे थे।

सन् १९३६ में पण्डित जी भारत लौटे। उस समय तक उनकी वृद्धा माता और पोषपुत्री की मृत्यु हो चुकी थी। उनकी बड़ी इच्छा थी कि वे पुन: अमेरिका जाकर अपने आरम्भ किए हुए कार्य को संभालें और पुष्ट करें, परन्तु परिस्थिति ने उनका साथ न दिया और उन्होंने भारत में ही अपने कार्य सीमित रखा।

वेदों के विषय में कहाँ क्या हो रहा है, उसकी पूरी खबर वे रखते थे और वैदिक मंत्रों को समझने, समझाने में बड़ा पुरुषार्थ करते थे। एकबार वे जयपुर गए वहाँ उन्हें एक वेदों के विद्वान् से मुलाकात हुई, जो बड़े निष्ठावान् और सौम्य स्वभाव के थे। बातचीत के सिलसिले में जयपुरी पण्डित जी ने, अयोध्या प्रसाद से एक वेद मंत्र का उल्लेख कर, उस मंत्र की व्याख्या जानना चाहा। इत्तफाक की बात थी कि वह वही मंत्र था, जिसकी संगति लगाने में अयोध्या प्रसाद अबतक असफल थे। जो कुछ उस मंत्र के विषय में वे समझे हुए थे बताये। इस पर जयपुरी पण्डित जी ने अपनी व्याख्या दी। अयोध्या प्रसाद गुणग्राही और मेधावी थे। उन्हें उस वेद मंत्र का रहस्य समझ में आ गया और नतमस्तक हो जयपुरी पण्डित जी का चरण-स्पर्श कर, कृतज्ञता प्रकाश किये। वह वेद मंत्र गणित-विद्या की कुंजी थी जिसे अयोध्या प्रसाद बराबर काम में लाते थे।

दूसरे महायुद्ध के समय, जब जापान के आंतक से कलकत्ता में भगदड़ मच रही थी, पण्डित जी राँची चले आये। राँची के जिस महल्ले और गली में वे निकलते थे, लोग उन्हें घेर लेते थे। वे रोचक शब्दों में वैदिक धर्म, आर्य-समाज तथा विदेश के अपने अनुभवों को बताते थे और उक्त वेदमंत्र के आधार

शेषांश पृ० सं० ६१ में देखें।

संकलन

महर्षि दयानन्द की विचारधारा

२५ प्रश्नोत्तर

गताक के बाद क्रमागत

(६)

प्रश्न—आपके मतानुसार कर्म-फल यथा कर्म न्यूनाधिक होता है, तो मनुष्य स्वतंत्र कैसे हुआ ? परमेश्वर का जैसा ज्ञान है जीव वैसा ही कर्म करेगा इसलिए स्वतंत्र न रहा।

उत्तर—कर्म-फल न्यूनाधिक कभी नहीं होते जिसने जैसा और जितना कर्म किया हो, उसे वैसा और उतना ही फल न दिया जाय तो अन्याय हो जाता है। ईश्वर मे भूत-भविष्यत् काल का सम्बन्ध नहीं है। ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस है। जैसे ईश्वर अपने ज्ञान मे स्वतंत्र है वैसे ही जीव कर्मों के करने मे स्वतंत्र है। परन्तु फल भोगने मे परतंत्र है।

(७)

प्रश्न—मोक्ष क्या पदार्थ है ?

उत्तर—सब अशुभ कर्मों से रहित होकर केवल शुभ ही कर्म करना जीवन-मुक्ति है और दुःख मात्र से छूटकर आनन्द-पूर्वक परमेश्वर में रहना मुक्ति है।

(८)

प्रश्न—धन बढ़ाना, कला-कौशल द्वारा लोगों को सुखी करना और रोग-ग्रस्त पापी मनुष्य को औषधादि देना धर्म है अथवा अधर्म ?

उत्तर—न्याय से धन बढ़ाने, कला-कौशल निकालने और औषध आदि बनाने मे धर्म्म है। यदि कोई मनुष्य ऊपर कहे कर्म अन्याय से करे तो अधर्म है। पापी मनुष्य को रोग से छुड़ाकर धर्म कार्यों में लगाना धर्म्म है।

(९)

प्रश्न—मांस खाने मे पाप है अथवा नहीं ? यदि पाप है तो वेद और आप्त ग्रन्थों में यज्ञ में हिंसा का विधान क्या है ? और भक्षणार्थ मारना क्यों लिखा है ?

उत्तर—मांस खाने में पाप है। वेदों तथा आप्त ग्रन्थों में यज्ञादि मे हिंसा करना कहीं भी नहीं लिखा। गोमेध आदि शब्दों के अर्थ वाममार्गियों ने बिगाड़े हैं। इनका वास्तविक अर्थ हिंसा-परक नहीं है। जैसे डाकू आदि दुष्ट जनों को राजा लोग मारते हैं, ऐसे हीं हानिकारक पशुओं का मारना लिखा है, परन्तु खाने का लेख नहीं है। आजकल तो वाममार्गियों ने मिथ्या श्लोक बनाकर गोमांस तक खाना भी बताया है। जैसे मनुस्मृति में धूर्तों का मिलाया हुआ लेख है कि गोमांस का पिंड देना चाहिए। क्या कोई पुरुष ऐसे भ्रष्ट वचन मान सकता है ?

(१०)

प्रश्न—जीव का क्या लक्षण है ?

उत्तर—जीव के लक्षण न्यायशास्त्र में इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान लिखे हैं।

(११)

प्रश्न—सूक्ष्म यंत्रों से ज्ञात होता है कि जल में अनन्त जीव हैं। इस अवस्था में क्या जल-पान करना चाहिए ?

उत्तर—जब पात्र और पात्रस्थ जल अन्त वाले हैं तो उनमें अनन्त जीव नहीं समा सकते। जल को आँख से देखकर और उसको छानकर पीना चाहिए।

(१२)

प्रश्न—पुरुष के लिए बहुत स्त्रियों से विवाह करने का कहाँ निषेध है ? यदि है तो धर्म-शास्त्र में यह क्यों आता है कि यदि एक पुरुष की अनेक स्त्रियाँ हों और उनमें से एक पुत्रवती हो जाय तो सभी पुत्रवती समझी जायँ।

उत्तर—वेद में बहुविवाह का निषेध है। संसार में सभी मनुष्य अच्छे नहीं होते इसलिए यदि कोई अधर्मी पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह कर ले तो उसकी स्त्रियों में परस्पर विरोध अवश्य होगा। यदि एक के पुत्र हो तो दूसरी उसे विष आदि से मार न दे इसलिए धर्म-शास्त्र में लिखा है, उसे अपना पुत्र ही समझें।

संकलयिता
रघुनाथ प्रसाद पाठक

★

(पृष्ठ १० का शेषांश)

कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिये जो असली साधन, गोधन है, उसका उक्त कार्यक्रम में कोई जिक्र तक नहीं है। सरकार में जो लोग सत्तारूढ़ हैं, वे मोटी-मोटी तनख्वाह पानेवाले सरकारी विशेषज्ञों की सलाह को ब्रह्म वाक्य समझते हैं और वे जो योजना पेश करते हैं, उसे स्वीकार कर लेते हैं। इन विशेषज्ञों के कारण ही देश में पशुधन का विनाश हो रहा है और कृषि की दिन-दिन अवनति हो रही है। यदि सरकार इसी तरह विशेषज्ञों के हाथों में खेलती रही और देश की स्थिति को देश के साधनों और देश की संस्कृति तथा परम्परा के आधार पर सुधारने का प्रयत्न नहीं किया गया तो, देश का संकट दिन-दिन बढ़ता जायगा और हमारी स्वतंत्रता हमारे लिये वरदान न रह कर अभिशाप बन जायगी। अतः, यह आवश्यक है कि देश के सत्ताधीश समय रहते सचेत हो जायँ और देश को विनाश की ओर बढ़ने से बचा लें।

★

करौली के लक्खी मेले पर पशुबलि-निरोध का कार्य

गत आठ वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्य-समाज के तत्वावधान में पशुबलि-निरोध-समिति द्वारा दिनाङ्क ३१-३-६५ से ६-४-६५ तक पशुबलि-निरोध एवं समाज-सुधार-प्रचार का आयोजन किया गया। इस वर्ष दिनाङ्क १ और २ अप्रैल को राजस्थान प्रान्तीय हरिजन सम्मेलन के अवसर पर इस समिति द्वारा भी विशेष सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें भरतपुर, माधोपुर, आगरा और मथुरा जिले के सैकड़ों नर-नारियों ने जलूस में शामिल होकर इस सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन का प्रारंभ ईश-प्रार्थना एवं महर्षि दयानन्द के गुण-गान के साथ हुआ। पुनः, महामान्य आदरणीय डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, राजस्थान-राज्यपाल, को समिति की ओर से अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। जिसमें, उनसे कैला देवी में धर्म के नाम पर की जाने वाली पशुबलि को कानूनन बन्द करने के लिए विनम्र प्रार्थना की गई। डॉ० सम्पूर्णानन्द जी ने हरिजन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा—"जहाँ मुझे कैला देवी जैसे तीर्थस्थान में आने से प्रसन्नता हुई वहाँ यह जान कर अति दुख हुआ कि कैला देवी के इस मन्दिर में पशुहत्या होती है। वास्तव में पशुहत्या हिन्दू-धर्म के लिए महान् कलंक है। देवी को जगदम्बा या जगन्माता कहते हैं। जगदम्बा प्राणिमात्र की रक्षिका होती है, भक्षिका नहीं। राक्षसी वा शेरनी भी अपने बच्चे को नहीं खाती, तो जगन्माता अपने मूक बच्चों को कैसे खा सकती है? धर्म के नाम पर मन्दिरों में पशुबलि गत डेढ़ हजार वर्षों से फैली है। इसका मुख्य कारण अज्ञानता है।" राज्यपाल सम्पूर्णानन्द ने अन्त में सहस्रों नर-नारियों से जोरदार शब्दों में अपील करते हुए कहा "या तो देवी को जगदम्बा कहना छोड़ दो या धर्म के नाम पर पशुहत्या बन्द करो।" परमात्मा हिन्दुओं को सद्बुद्धि दे, ताकि वे इस कुकृत्य को अविलंब बन्द करें।

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं संसत्-सदस्य श्री जगजीवन राम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जोरदार शब्दों में पशुबलि बन्द करने के लिए अपील करते हुए कहा—"कैला देवी की पूजा एवं पशुहत्या साथ-साथ नहीं चल सकती। पवित्र एवं विस्तृत हिन्दूधर्म के लिए 'पशुबलि' महान् कलंक है। हिन्दूधर्म की सबसे बड़ी विशेषता रही है कि इस धर्म में प्राणिमात्र को समान समझा गया। तभी तो सब प्राणियों के हित की दृष्टि से इस धर्म में "पंचयज्ञ" की उत्तम परिपाटी को प्रमुख स्थान दिया गया। बलिवैश्वदेव यज्ञ में कौआ, कुत्ता और चींटी तक को भोजन देने की विधि बतायी गयी है, तब भैंसे, बकरे आदि की हत्या का विधान इस विशाल धर्म में कैसे हो सकता है? यह अन्ध-विश्वास है। इसे दृढ़ता के साथ बन्द करने का प्रयत्न होना चाहिये।"

दिनाङ्क ३-४-६५ के हरिजन सम्मेलन में पशुबलि निरोध तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों के निवारण से सम्बन्धित अनेक प्रस्ताव पारित हुए। जिनमे अधोलिखित मुख्य प्रस्ताव उल्लेखनीय हैं:—

१. कैला देवी में धर्म के नाम पर की जाने वाली पशुहत्या को यह सम्मेलन घृणित कृत्य समझता है। अतः, यह सम्मेलन निश्चय करता है कि धर्म के नाम पर कैला देवी में तथा अन्य धर्ममन्दिरों में कोई हरिजन पशुबलि नहीं करेगा।

२. यह सम्मेलन हरिजन-समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों, मांस-मदिरा-सेवन, अश्लील नृत्य और बालविवाह आदि को हानिकारक अनुभव करता है और निश्चय करता है कि हरिजन-समाज इन कुरीतियों को नष्ट करेगा। —एक संवाददाता

पृ० सं० ८ का शेषांश

यह स्पष्ट है, जो इस देश से अधिक पवित्र तथा पाक-साफ दूसरे किसी और देश को मानते हैं, जो भारत के धर्म, मजहब, संत महात्मा, पैगम्बर की अपेक्षा स्वर्ग, बहिश्त या हेवन दिलाने वाले सुधारक के रूप में भारतीयेतर को श्रेष्ठ मानते हैं-जानते तथा स्मरण करते हैं, वे भारत के राष्ट्रिय नहीं है, देशभक्त नहीं है और इस भूमि या देश के साथ 'वफादार' नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार जो भारत के राजनीतिक सूत्रधार के बताये मार्ग की अपेक्षा मार्क्स, लेनिन स्टालिन और माओ आदि दूसरों के बताये मार्ग को अधिक स्पष्ट तथा युक्तियुक्त समझते ही नहीं, विरोधी देश की आक्रामक सेना को 'मुक्ति सेना' कह कर सम्बोधित करते हैं, वे न तो इस देश के राष्ट्रिय हैं और न उनके साथ शेष देशवासियों की एकता ही हो सकती है।

राष्ट्रिय-एकता के लिए वर्त्तमान समारंभ में हमें उपर्युक्त स्थिति पर विचार करना होगा। इस समय देश, सीमाओं के संकटों से तथा देश के भीतर की अनेक समस्याओं से, जिस प्रकार संकटापन्न स्थिति में है, वैसी स्थिति में संभवतः इतिहास में कभी नहीं रहा होगा। यद्यपि ये प्रायः सभी उलझन, जिससे यह देश अथवा इस देश के शासक स्वयं उलझ गए हैं और यह उनका स्वनिर्मित उलझन है, वह ऐसा नहीं है, जिसे सुलझाया न जा सके तथापि यह स्थिति चिन्तनीय अवश्य है। राष्ट्रिय तथा राष्ट्रियता के उपर्युक्त विवेचन के परिवेश को ध्यान में रख कर ही हमें देश के उन व्यक्तियों तथा निवासियों से सावधान रहना है, जो न तो इस देश के राष्ट्रिय हैं और न जिनमें राष्ट्र के प्रति रंचमात्र भी भक्ति है। देश के ऐसे गद्दारों से सदा सावधान रहना है और जनता को सावधान करना है।

आर्य-समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने आर्य-जाति के सदियों से शान्त पड़े विचार-सागर का मंथन किया, देश को झकझोर कर इस प्रकार जगाया कि देशवासियों में अनायास विचारों की स्वाधीनता तथा कर्म करने की प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ। सारा देश जग कर खड़ा हो गया और आज तक 'आर्य-समाज' जनता का जागरूक प्रहरी बनकर देश, समाज, संस्कृति तथा भारतीय आर्ष परम्परा की रक्षा में पूर्ण तत्परता से जुटा हुआ है।

इस समय, देश की जो अन्तःबाह्य स्थिति है, वह सतत जागरूक एवं पंचमांगियों से और शत्रु देशों के जासूसों से सावधान रहने की है। हमें यह गर्व है कि 'आर्य-समाज' ने तथा 'आर्य-समाज' द्वारा संचालित 'आर्य-वीरदल' के युवकों ने, जब भी देश पर संकट के बादल मंडराये हैं और देश पर विपत्ति आयी है, देश की रक्षा के लिए अपने को समर्पित किया है। स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल के गृहमंत्रालय ने जब हैदराबाद में निजाम की रज़ाकार-सेना के विरोध के बावजूद हैदराबाद-राज्य के भारत में विलीनीकरण के लिए भारत की सेना को भेजा था, उस समय उक्त राज्य के सुदूर अंचलों में फैले रजाकारों को 'आर्य-समाज' के नवयुवकों ने तथा कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम तथा राष्ट्र-साधना से नाकामयाब कर दिया था।

आज की परिस्थिति में, कच्छ, कश्मीर, नेफा, लद्दाख, तिब्बत, नागालैण्ड, आसाम, त्रिपुरा, बंगाल और केरल में जो कुछ हो रहा है, तथा निकटभविष्य में होनेवाला है, उसके समाधान के लिए देश ने वर्त्तमान नेताओं, शासकों और राजनीतिज्ञों पर भरोसा छोड़ कर हमें 'आर्य-वीरदल' के द्वारा सभी सभावित परिस्थिति के समाधान के लिए जुट जाना चाहिए। गाँव-गाँव में आर्य-वीरदल के तत्त्वावधान में "राष्ट्र-रक्षा स्वयंसेवक संगठन" संगठित करना चाहिए। इसमें सिद्धान्त की कट्टरता को छोड़ कर सभी विचारधारा के भारतीय मनोवृत्ति रखनेवाले विशाल जनसमुदाय को भर्ती करें और प्रत्येक उन स्थानों पर, जहाँ पँचमांगियों का षड्यंत्र हो सकता है, अभी से तैनात कर दें। "यद्वर्ष क्षत्रियाः सूते सो

(पृ० सं० १९ का शेषांश)

पर गणित का चमत्कार दिखाते थे। कुछ धनी-मानी व्यक्ति, उनसे आग्रह किए कि वे एक आश्रम स्थापित करें, जहाँ उनकी देख-रेख में वैदिक संस्कृति का प्रचार हो और छोटानागपुर की ईसाईयत से रक्षा हो। इस भावना से प्रेरित हो, राँची से ४२ मील दूर लोहरदगा में पण्डित जी ने "शान्ति आश्रम" स्थापित किया। जमीन उनके श्रद्धालुओं से मिल गयी थी, जिसकी रजिस्टरी वे, प्रधान, बिहार आर्य-प्रतिनिधि-सभा के नाम कराये और भवन निर्माण के लिए निजी पुरुषार्थ और कोष से हजारों रुपये दिए। इस आश्रम को निजी भवन, बाग, कुआँ और खेती की जमीन है, जिसका मूल्य अभी लाखों रुपये है। आश्रम का काम एन-केन-प्रकारेण चल रहा है। छोटानागपुर खण्ड के लिए पण्डित जी को बड़ी चिन्ता होती थी। उनके व्याख्यान और प्रचार के कारण बिहार-उड़ीसा सरकार के तत्कालीन अँग्रेज चीफ सेकरेटरी (Chief Secretary) ने कतिपय आर्य-समाज के उपदेशकों और पण्डित जी को गुप्त सरकुलर में "खतरनाक" (Dangerous) लिखा था। सरकार नहीं चाहती थी कि छोटानागपुर में जो ईसाई बन चुके हैं, वे फिर अपने जाति धर्म में वापस आ जाँय और आर्य-समाज का प्रचार इस खंड में हो। जिस समय यह गुप्त सरकुलर जारी हुआ था, पण्डित जी अमेरिका में थे। बिहार आर्य-प्रतिनिधि-सभा की निजी सम्पत्ति राँची आर्य-समाज और लोहरदगा का "शान्ति आश्रम" है। सार्वदेशिक-सभा और अन्य संस्थानों के लोग "छोटानागपुर प्रचार" के लिए बाहर से आते हैं, पर वे राँची शहर में ही रहना पसन्द करते हैं और त्यागी पादरियों का मुकाबिला करने का हौसला रखते हैं। पादरी छोटानागपुर में बसे शहरों से दूर, ग्रामों में स्थाई रूप से रह कर प्रचार करते हैं। वहाँ उन्हें भोजन यातायात आदि की सुविधा कार्य्यारम्भ के समय नहीं रहती।

पण्डित जी गया के गोवछवा नामक स्थान पर भी एक "शान्ति आश्रम" स्थापित किये थे। हवन-कुण्ड आदि धार्मिक चिन्ह रहने पर भी, द्वितीय महायुद्ध के समय सरकारी सैनिकों के लिए इस आश्रम और उसके लगे जमीन पर अधिकार कर लिया गया और आर्य जनता मौन ही रही। पण्डित जी की इच्छा थी कि वे अपने बिहार प्रान्त में स्थायी रूप से रहें। दानापुर में वे रहने भी लग गए थे, पर टिक न सके और कलकत्ता लौट गये।

पं० अयोध्या प्रसाद लेख और वाणी से अपना सारा जीवन आर्य-समाज की सेवा और वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में सात्विक भाव से बिताते रहे। धर्मोपदेश के लिए वे कभी न "दक्षिणा" न कोई "शर्त" ठहराये और न उन्होंने आर्य-समाज के माध्यम से देश सेवा में किसी प्रकार की कोताही की। उनका व्याख्यान हृदय को बेधता हुआ, श्रोताओं को हिला देता था। अपने देहावसान के दो-तीन वर्ष पूर्व से वे कृश और अस्वस्थ हो गये थे। इसी काल में उनकी धर्मपत्नी का वियोग हुआ था। प्रायः ७८ वर्ष की आयु में अपनी एक मात्र संतान अपनीसुपुत्री को और आर्य जनता को बिलखता छोड़, कलकत्ता में ता० ११ मार्च १९६५ ई०, बृहस्पतिवार को संसार से विदा हो गए। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति देवें।

★

'उपकारलोयमागतः" के अनुसार भारतजननी ने जिस दिन के लिए हमें जन्म दिया और राष्ट्रदेवता गुरुदेव दयानन्द ने हमारे बीच जिस भावना को जगाया, उसके उपयोग तथा उसे चरितार्थ और फलितार्थ करने के लिए यही अवसर है। देश की रक्षा के लिए आर्य युवको, देशवासियो मैदान में उतर पड़ो। अभी राष्ट्र की तथा धर्म की यही एकमात्र पुकार है।

—रामगोपाल

हिन्दी साहित्येतिहास में आर्य-समाज

श्रीमती ईश्वरी शर्म्मा, एम० ए०, साहित्यरत्न

हिन्दी-साहित्य के निर्माण तथा विकास मे आर्य-समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और राष्ट्र-भाषा हिन्दी के समुन्नयन में स्वमी दयानन्द की देन की सभी हिन्दी साहित्येतिहास लेखकों ने प्रशंसा की है। हिन्दी साहित्येतिहास के उन उद्धरणों तथा पृष्ठों को संकलित करते हुए, हम आशा करते हैं कि सुधी पाठक इससे अवश्य लाभान्वित होगें। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अधोलिखित लेख मननीय है।

पैगंबरी एकेश्वरवाद की ओर नवशिक्षित लोगों को खिचते देख स्वामी दयानंद सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद को लेकर खड़े हुए और संवत् १९२० से उन्होंने अनेक नगरों में घूम-घूम कर व्याख्यान देना आरंभ किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये व्याख्यान देश मे बहुत दूर तक प्रचलित साधु हिन्दी भाषा में ही होते थे। स्वामी जी ने अपना 'सत्यार्थप्रकाश' तो हिन्दी या आर्य-भाषा में प्रकाशित किया, वेदों के भाष्य भी संस्कृत और हिन्दी दोनों में किए। स्वामी जी के अनुयायी हिन्दी को "आर्य-भाषा" कहते थे। स्वामी जीने सवत् १९३३ में आर्य-समाज की स्थापना की और सब आर्य-समाजियों के लिए हिन्दी या आर्यभाषा का पढ़ना आवश्यक ठहराया। संयुक्त प्रान्त (अब उत्तरप्रदेश—सं०) के पश्चिमी जिलों और पंजाब में आर्य-समाज के प्रभाव से हिन्दी-गद्य का प्रचार बड़ी तेजी से हुआ। पंजाबी बोली में लिखित साहित्य न होने से और मुसलमानों के बहुत अधिक संपर्क से पंजाब वालों की लिखने-पढने की भाषा उर्दू हो रही थी। आज जो पंजाब में हिन्दी को पूर्ण चर्चा सुनाई देती है, इन्हीं की बदौलत है।

—हिन्दी-साहित्य का इतिहास (१९८६ वि०)
दसवाँ संस्करण, पृ० सं०—४४५

आचार्य शुक्ल के अभिमत के बाद, अधोलिखित उद्धरण भी पठनीय हैं। इन उद्धरणों के संकलन का विशेष अभिप्राय: जहाँ यह है कि आर्य-समाज द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन मे योगदान की जानकारी सबको ज्ञात हो, वहीं यह भी अभिप्राय है कि इस विषय से सम्बन्धित अनुसधान-अनुशीलन में संलग्न अनु-सन्धित्सुओं को एक ही स्थान पर शोध-सामग्री उपलब्ध हो जाय।

"हमारे यहाँ सबसे प्रथम स्वामी दयानंद जी ने आर्य-धर्म के महत्व का झंडा उठाया। इस धार्मिक उद्योग के साथ-ही-साथ हमारी भाषा को भी बहुत लाभ पहुँचा। खडन-मंडन के लिए किसी एक भाषा की आवश्यकता पड़ती है। आर्य-समाजियों ने हिन्दी को इस कार्य के लिए अपनाया और इसका नाम अपने समाज के नाम के अनुसार 'आर्यभाषा' रखा। स्वामी दयानंद जी ने शास्त्रार्थ करना तो संवत् १९२० ही से प्रारंभ कर दिया था पर आर्य-समाज की स्थापना संवत् १९३२ में बंबई नगर में हुई थी। इसके बाद नवीन धर्म के उत्साह में भरे हुए आर्य-समाजियों ने गुजरात युक्तप्रांत तथा पंजाब में प्रचार करना आरंभ कर दिया। स्वामीजी ने अपने ग्रंथ 'आर्य-भाषा' में ही लिखे। इनके मुख्य ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, वेदांगप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेदों के भाष्य हैं। आर्य-समाजियों के कारण हिन्दी भाषा की चर्चा पंजाब में प्रारभ हुई। इससे पहले वहाँ उर्दू का बोलबाला था। स्वामी जी की भाषा पण्डिताउपन को लिए हुए है। एक गुजराती के लिए शुद्ध हिन्दी लिख लेना उस समय अवश्य असंभव रहा होगा, जिस

समय हिन्दी के किसी आदर्श रूप की प्रतिष्ठा ही नहीं, हो पायी थी।"

—आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास
पृ० सं० ११० (पं० कृष्ण शंकर शुक्ल, १९९३ वि०)

दूसरी गतिवर्द्धक शक्ति स्वामी दयानंद सरस्वती का आर्य-समाज था। हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार का यह सबसे अधिक प्रभावपूर्ण और शक्ति-शाली साधन बना। पंजाब और पश्चिमी संयुक्तप्रान्त में उर्दू का आधिपत्य हटा कर हिन्दी प्रसार का सारा श्रेय आर्य-समाज ही को है। इस प्रकार इसके द्वारा हिन्दी का प्रभाव क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया। हिन्दुओं की राष्ट्रीय जागृति मे भी आर्य-समाज का बहुत बड़ा हाथ रहा। उन्हें इस बात का अनुभव होने लगा कि वे वैदिक ऋषियों तथा दर्शनकार और काव्यकार महापुरुषों के वंशधर हैं। वे अपने अतीत गौरव पर अभिमान करने लगे, जिससे उन्हें भावी उन्नति की प्रेरणा मिली।

आर्य-समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण देन शुद्धि, विधवा-विवाह, बालविवाह, वर्ण व्यवस्था, पर्दापद्धति और अस्पृश्यता आदि अनेक सामाजिक समस्याओं को प्रकाश में लाना था। इन समस्याओं पर आर्य-समाज ने शास्त्रार्थ प्रारंभ कर दिया और उपदेशकों तथा भजनीकों का एक वर्ग सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने लगा। इससे एक ओर विविध समस्याओं के खंडन-मंडन-मूलक उपदेश-साहित्य (Didactic Literature) की सृष्टि हुई और दूसरी ओर विशुद्ध साहित्यिक रचनाओं के लिए विषय और उपादान मिले। आर्य-समाज के उपदेश-साहित्य ने हिन्दी में लेखकों और पाठकों की बहुत वृद्धि की। ये पाठक और लेखक उपदेश-साहित्य से प्रारम्भ कर हिन्दी लिखने और पढ़ने का अच्छा अभ्यास कर लेने पर साहित्यिक रचनाओं के पठन और लेखन में प्रवृत्त होने लगे। आर्य-समाज के धार्मिक वाद-विवादों से जनता की आलोचना-प्रवृत्ति तीव्र हुई, जिससे समालोचना-साहित्य के विकास में यथेष्ट सहायता मिली।"

—आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास
पृ० सं० २७, २८।
डॉ० श्री कृष्णलाल (१९४२)

"सामाजिक और धार्मिक विचारों की दुनिया में क्रान्ति ले आने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था की स्थापना १८७५ ई० में हुई। इस संस्था का नाम है आर्य-समाज। आर्य-समाज ने एक ही साथ कई मोर्चों पर धावा बोल दिया। इस संस्था ने अपने महान् संस्थापक स्वामी दयानन्द के नेतृत्व में रूढ़िवादी सनातनियों से, हिन्दू-धर्म पर आक्रमण करने वाले इसाइयों से, और देश में फैले हुए अनेक धार्मिक संप्रदायों से एक साथ ही लोहा लिया। इन दिनों शास्त्रार्थों की धूम मच गई। उत्तर-प्रत्युत्तर से, कटाक्षों से और व्यंग्यों से सामयिक पत्र भरे हुए रहते थे, और हिन्दी का भावी गद्य नवीन शक्तियों से सुसज्जित हो रहा था। इन वाद-विवादों ने भाषा को बहुत समृद्ध किया, प्रौढ़ता प्रदान करने में बड़ी सहायता पहुँचायी। प्रथम योरोपियन महायुद्ध तक इस देश की सबसे बड़ी शक्ति इन सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों के रूप में प्रकट हुई। यह बहुत बड़ी शक्ति थी। इसने शिक्षा को, साहित्य को और समूची संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया।

आर्यसमाज का सबसे अधिक प्रभाव पंजाब में था। पंजाब उन दिनों उर्दू का गढ़ था, वहाँ हिन्दी की स्थिति बहुत ही नाजुक थी। स्वामी दयानंद और उनके शिष्यों ने उस प्रांत में हिन्दी और संस्कृत को नवजीवन दिया, और हिन्दी-संस्कृत के अध्ययन को बल दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में आर्य-समाज नवीन सामाजिक चेतना का सबसे बड़ा पुरस्कर्त्ता था। उसने देश की प्रसुप्त शक्ति को धक्का मार के जगा दिया।"

हिन्दी-साहित्य का उद्भव और विकास,
पृष्ठ सं० ३८९, ३९०,३९१ (डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी)

"इस काल में सुसुप्त भारतीय जन-जीवन को जगानेवालों में स्वामी दयानन्द सरस्वती को कभी भुलाया नहीं जा सकता। १८५७ के विद्रोह को अंग्रेजों ने इस बुरी तरह से कुचल दिया था कि उनकी आत्मा पर अविश्वास और हीनता की काई चढ़ गयी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की। वे हिन्दू धर्म के अन्ध-विश्वासों और पाखण्डों का नाश कर प्राचीन वैदिक आर्य-संस्कृति की स्थापना करना चाहते थे। उनका कहना था कि ब्रह्म एक है, मूर्तिपूजा निरर्थक है। जाति-पाँति का भेदभाव, बालविवाह तथा समुद्र यात्रा-निषेध हमारी प्रगतिशीलता में बाधक हैं। विधवा विवाह और स्त्रीशिक्षा पर उन्होंने जोर दिया। अहिन्दू को हिन्दू बनाने के लिए 'शुद्धि' की व्यवस्था की गयी। उन्होंने लोगों में स्वदेशी शासन अथवा स्वराज्य की भावना का प्रचार किया। स्वामी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहा। उसका प्रचार किया। उसमें ग्रन्थ लिखे। उनकी संस्था ने अनेक शिक्षण-संस्थायें खोलीं। आर्य-समाज ने हिन्दी के लिए बड़ा काम किया। स्वामी दयानन्द ने भारतीयों को हार का मनोवृत्ति त्यागने और उन्नति पथ पर अग्रसर होने प्रेरणा तथा स्फूर्ति प्रदान की।"

—हिन्दीः मूल और शाखा, पृष्ठ सं० २६५, २६६

—क्रमशः

★

आर्य-द्रविड़ संघर्ष की काल्पनिक आग

श्री किशोरीदास वाजपेयी

विदेशी तथा भारतीय सभी इतिहासकारों ने लिखा है कि अति प्राचीन काल में यह देश द्रविड़ों से आबाद था। बाद में आर्य जन यहाँ आये, जो आगे चल कर 'देव' कहलाये। ईरान के आर्य 'असुर' (अर्थात सुरा न पीने वाले) तथा लंका के आर्य 'राक्षस' (यानी रक्षा करने वाले) कहलाते थे। 'देव' शब्द का धातुमूलक अर्थ है (१) क्रीडा करने वाला और (२) विजिगीषु (विजयेच्छु)। जो क्रीड़ा-कल्लोल में मस्त, वही 'विजिगीषु'!

देवासुर संग्राम

उस समय आर्यों के दोनों वर्गों में दीर्घ काल तक संघर्ष-संग्राम चला, जो 'देवासुर-संग्राम' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संग्राम में असुर तेज पड़ते थे; देव दुर्बल वर्णित हुए हैं। कहते हैं, असुरों के गुरु शुक्राचार्य को 'संजीवनी विद्या' आती थी, और वे मुर्दों में भी जान डाल देते थे। असुरों के तेज पड़ने का यह भी एक बड़ा कारण था। यह 'संजीवनी विद्या' और कुछ नहीं, प्रचंड राष्ट्रीय कविता ही थी। शुक्र को 'कवि' रूप में आज तक सब जानते हैं। हैं। शुक्र का एक पर्याय ही 'कवि' बन गया है। वाणी में बड़ी शक्ति है। कवि मुर्दों में भी जान डाल सकता है और चिड़ियों को बाज बना सकता है। गुरु गोविंद सिंह भी कवि थे और उन्होंने अपनी कविता की शक्ति को समझ कर प्रतिज्ञा की थी—'जो चिड़ियों को बाज बनाऊँ, तो गुरु गोविन्द सिंह कहाऊँ।' उन्होंने वैसा किया। गरीब और निरीह किसानों को 'सिंह' बना दिया। छत्रपति शिवाजी को कविवर भूषण से बहुत बल मिला था। परंतु महाराणा प्रताप सिंह को कोई वैसा कवि प्राप्त न था। इसी तरह देवासुर-संग्राम के अवसर पर देवों को वैसा कोई कवि प्राप्त न था।

खैर, वह संग्राम संसार का प्रथम महासंग्राम है। वेदों में उस संग्राम की चर्चा है और पुराणों में भी है। परंतु देव-द्रविड़ संग्राम में क्या प्रमाण है?

न वेदों में ऐसी कोई चर्चा है और न प्राचीनतम द्रविड़ (तमिल) साहित्य में ही! वेद में 'द्रविड़' या 'तमिल' शब्द ही नहीं आया है! परंतु उस समय द्रविड़ जन दक्षिण में समुद्र-तट पर आबाद थे और खूब समृद्ध थे। वे समुद्री व्यापारी थे; दूर-दूर तक आयात-निर्यात करते थे। लक्ष्मी सदा समुद्र से ही पैदा होती है। अति समृद्धि के कारण आगे चल कर उस प्रदेश को आर्य जन 'द्रविण प्रदेश' कहने लगे—लक्ष्मी की भूमि। यह 'द्रविण' शब्द ही आगे चलकर 'द्रविड़' हो गया; ऐसा जान पड़ता है। परंतु यह बहुत आगे की बात है। वैदिक युग में उन समुद्री व्यापारियों को देव लोग 'निषाद' कहते थे; क्योंकि उनके जहाज संसार भर में प्रसिद्ध थे।

देव और द्रविड़ 'सह-अस्तित्व' के सिद्धांत पर मजे से रहते थे। देवों में वर्ण-व्यवस्था थी; द्रविड़ों में नहीं। द्रविड़ सब 'एक' थे और हैं। ब्राह्मण कुछ इधर से उधर गये, जिनके अगुआ अगस्त्य ऋषि थे। दुर्लंघ्य विंध्याटवी पार करके इधर से उधर पहुँच कर बस जाना जीवट का कार्य था। अगस्त्य ने तमिल भाषा का प्रथम व्याकरण बनाया और चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा दी। दक्षिण में आयुर्वेद का 'अगस्त्य संप्रदाय' आज भी प्रसिद्ध है। उधर की समृद्धि इधर आती थी। यानी परस्पर सहयोग था।

निषादों का सहयोग माँगा गया

जब असुरों से बहुत परेशानी हुई, तब एक ऋषि ने महासंगठन की बात सोची और कहा कि हम 'पंचजन' मिल कर असुरों को परास्त करें। 'पंचजनाः' शब्द का ऋग्वेद में अस्तित्व उसी समय की हमारी

राष्ट्रीय एकता का सूचक है। न देव; न निषाद; न चातुर्वर्ण्य के पृथक अवयव; सब मिलकर 'पंचजनाः'। इस 'पंचजनाः' शब्द की व्याख्या में यास्क ने ('निरुक्त' में) लिखा है—'चत्वारो वर्णाः, पंचयो निषादः' यानी आर्यों (या देवों) के चारों वर्ण और (पाँचवें) निषाद; मिलकर 'पंचजनाः'।

यह 'निषाद' शब्द चातुर्वर्ण्य के अंतर्गत देव-निषादों के लिए नहीं है। उनका समावेश तो 'चातुर्वर्ण्य' में ही हो गया! दूसरे, इन निषादों की ऐसी स्थिति भी न थी कि उस तरह विशेष रूप से (पृथक) अस्तित्व माना जाता।

स्पष्ट है कि असुरों के आक्रमण से देवों की ही तरह द्रविड़ों को भी खतरा था, और इसीलिए मिल कर—एक हो कर—जूझने का आह्वान! नहले पर दहला और दहले की जान बेगम बादशाह के हाथ में। बादशाह को एक ही पत्ता मारता है, जिसे 'एका' कहते हैं। (भूल से एका को 'इक्का' कर दिया है लोगों ने)।

निश्चय ही 'पंचजनाः' विजयी हुए—'भारतीय जन' विजयी हुए और तभी से 'पंच' को 'परमेश्वर' कहने लगे। 'पंच परमेश्वर' सब कुछ कर सकता है। पंचजनों की परिषद् 'पंचायत'। यदि देव द्रविड़ संघर्ष-संग्राम कभी हुआ होता, तो उस महासमर में ऋषि द्रविड़ों को साथ लेने को कैसे राजी होता?

वेद के 'बेकनाट' और 'पणि' शब्द

इतिहासकारों ने 'बेकनाट' और 'पणि' शब्दों का अर्थ द्रविड़परक किया है, जो गलत है। यास्क ने लिखा है—'बेकनाटाः कुसीदजीविनः' सूदखोर 'बेकनाट' हैं और 'पणि' हैं व्यापार करने वाले। 'पणि' शब्द ही आगे 'वणिक्' हो गया; यह भी यास्क ने लिखा है। एक ऋचा में ऋषि इन्द्र (राजा) से कहता है कि इन बेकनाटों से और पणियों से हमारी रक्षा करो। ऐसा जान पड़ता है कि आज की ही तरह उस समय भी पणियों ('पणन', यानी क्रय-विक्रय करने वाले वर्ग) से जनता परेशान थी और इसीलिए इन्द्र से वैसी प्रार्थना की गयी।

इतिहासकारों ने 'बेकनाट' तथा 'पणि' शब्दों का अर्थ 'द्रविड़' करके यह समझाया है कि 'द्रविड़' लोग देवों (यानी आर्यों) पर हमला करते थे और उनसे त्राण पाने के लिए इन्द्र से प्रार्थना की गयी है! क्या आर्यों में 'बेकनाट' (सूदखोर) और 'पणि' (क्रय-विक्रय करने वाले) थे ही नहीं? तब फिर इन शब्दों का 'द्रविड़' अर्थ कैसे कर लिया गया?

'शिश्नदेवाः' द्रविड़ नहीं हैं

ऋग्वेद में आये हुए 'शिश्नदेवाः' पद को भी इन इतिहासकार ने द्रविड़परक बता दिया है! ऋषि कहता है कि 'शिश्नदेवाः' हमारे यज्ञ को भ्रष्ट न करने पायें। इतिहासकारों ने 'शिश्नदेवाः' का अर्थ 'लिंगपूजकाः' करके लिखा है कि 'शिवलिंग' की उपासना-पूजा द्रविड़ लोग करते थे। इधर के लोगों ने उन्हीं से सीखी। यह बतला कर वे (इतिहासकार) कहते हैं कि 'द्रविड़ लोग दक्षिण से आकर इधर के (आर्यों के) यज्ञों को विध्वस करते थे और उन्हीं के उपद्रवों से रक्षा करने की प्रार्थना ऋषि ने की है।' मतलब यह है कि आर्यों से परास्त हो जाने पर द्रविड़ लोग 'गुरिल्ला-युद्ध' करने लगे थे!

इन इतिहासकारों को कैसे समझाया जाय कि 'शिवलिंग' के लिए केवल 'लिंग' शब्द तो व्यवहार में आता है—आया है; परन्तु उसके लिए 'शिश्न' शब्द का प्रयोग कोई नहीं करता; न कभी किसी ने किया ही है! यदि ये इतिहासकार भूल से कहीं किसी के सामने शिवलिंग को 'शिश्न' कह दें, तो मार पड़ने लगे!

वस्तुतः उस मंत्र में शिश्नदेवाः का अर्थ है—'शिश्नपरायणाः देवाः। ऐसे (विलासी) देव यज्ञ में सम्मिलित हों, तो भ्रष्टता आयगी ही—यज्ञ भ्रष्ट होगा ही! इसीलिए उन्हें यज्ञ से दूर रहने-रखने की बात है। एक तो आर्य जन 'देव' (क्रीड़ा-परायण)

हो ही गये, फिर उनसे भी आगे 'शिश्नदेवाः'; नीम-चढ़ा करेला ! देवों में कुछ दूरदर्शी भी थे, जो 'ऋषि' कहलाते थे। ये लोग 'यज्ञ' का आयोजन करते थे। 'यज्' धातु से 'यज्ञ', 'याग' शब्द बने हैं, जिनका अर्थ है किसी विशेष उद्देश्य से इकट्ठे होकर विचार-विमर्श करना—'यज्ञः संगतिकरणम्'। आजकल 'सम्मेलन' जैसे शब्द उस अर्थ में चलते हैं। वैसे यज्ञों में 'शिश्नदेवाः' पहुँचकर गड़बड़ ही करते होंगे।

आगे चलकर 'यज्ञ' शब्द का प्रयोग एक दूसरे अर्थ में होने लगा—धधकती आग में मेध्यअमेध्य चीजें फेंककर जलाना और खूब सोमपान तथा सुरापान करना। राजपुरोहितों ने ग्रन्थ लिखें, जिनमें ऐसे यज्ञों का विधि-विधान विस्तार से है। उसी का फल आगे सामने आया कि शक, हूण, मुसलमान और अंग्रेज आदि न जाने कितने जन हमें लातें लगाते देश में घुस आये और हमारे सिर पर बैठकर राज करते रहे !

शब्दों का अर्थ बराबर बदलता रहा है। गंगा और यमुना का 'संगतिकरण' (संगम) 'प्रयाग'। साधारण संगम यह नहीं है; इसलिए 'प्र' उपसर्ग साथ में—प्रकृष्ट संगम। आगे चलकर 'याग' का 'संगतिकरण' अर्थ उड़ गया और 'प्रयाग' का अर्थ यह किया जाने लगा—जहाँ (प्र) बड़े-बड़े 'याग' हुए हों ! बड़े-बड़े याग तो बड़ी राजधानियों में होते थे; 'प्रयाग' वैसी जगह नहीं। अयोध्या आदि में वैसे बड़े यागों का उल्लेख है।

'प्रयाग' का असली अर्थ जब उड़ गया, तब उसके लिए नया शब्द 'संगम' चला। वस्तुतः 'प्रयाग' और 'संगम' एकार्थक शब्द हैं।

'प्रयाग' की ही तरह 'त्रिवेणी' शब्द भी गलत अर्थ में चला। 'वेणी' का अर्थ 'नदी' समझा जाने लगा और तीन नदियों का संगम 'त्रिवेणी' समझा जाने लगा। वाल्मीकि और कालिदास ने केवल दो नदियों का संगम बतलाया है—गंगा और यमुना का मिलन। दो नदियों के मेल से तीन वेणियाँ (प्रवाह) ! एक प्रवाह गंगा का, दूसरा यमुना का और तीसरा दोनों का सम्मिलित। यों तीन वेणियों का समाहार 'त्रिवेणी'। वेणी का 'नदी' अर्थ समझा जाने लगा, तब सोचा गया कि तीसरी नदी कहाँ गयी ! सुन रखा था कि 'सरस्वती' नदी लुप्त हो गयी है; इसलिए कह चले कि तीसरी नदी 'सरस्वती' लुप्त हो गयी है। बेचारी 'सरस्वती' कभी इधर आयी ही नहीं; वह तो दिल्ली से उधर ही रही और लुप्त हो गयी। पर 'लुप्त हो गयी' ले लिया और 'त्रिवेणी' से उसे जोड़ दिया।

वर्ण-व्यवस्था में विकृति

आर्यों में वर्ण-व्यवस्था थी; जब कि अन्यत्र वैसा न था। जो तलवार चमका दे, वही शासन भी करता था; यह बात सर्वत्र थी। आर्यों ने कार्य-विभाजन किया। शत्रु से लोहा लेने का काम क्षत्रिय का—भुजबल का—और प्रजा का शिक्षण-शासन करना दूसरों का काम। इन्हें 'ब्राह्मण' कहते थे। 'ब्रह्म' ज्ञान और 'ब्राह्मण'—विद्वान नागरिक। धन की ओर जाने वाले 'पणि' (वणिक) और शेष सब 'शूद्र'। उस समय शूद्र गिरे हुए नहीं समझे जाते थे। आर्यों के 'निषाद' ही यातायात तथा आयात-निर्यात जलयानों से करते थे। दूसरा कोई यह काम न करता था—न कर सकता था। किसी-किसी निषाद के यहाँ हजारों जलयान थे। ऐसे ही एक निषादराज ने वनयात्रा के समय राम जी की सेवा की थी।

परंतु भारत के आर्यों की वर्ण-व्यवस्था शिथिल पड़ गयी थी। जिनका काम युद्ध करना था, वे ही शासन भी करने लगे। एक तरह का फौजी शासन ! इस प्रकार पुश्तैनी शासक बन बैठे। कुछ ब्राह्मणों को 'मंत्री' और 'पुरोहित' बना कर गुलाम बना लिया गया और कुछ को 'वेद' पढ़ने-पढ़ाने का काम सौंप कर छुट्टी ली।

जब दिमाग का काम बाहुओं ने सम्हाल लिया,

(शेषांश पृ० सं० २९ पर)

सार्वदेशिक-सभा की कार्य-प्रगति—

त्रिपुरा-राज्य के बिलोनिया स्थित आर्यसमाज सेवाश्रम का निरीक्षण-विवरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा के बम्बई अधिवेशन के अवसर पर बंगाल आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों ने सभा से त्रिपुरा राज्य स्थित बिलोनिया के आर्य-समाज सेवाश्रम केन्द्र के निरीक्षण तथा उसकी सुव्यवस्था के लिए अपील की थी। सार्वदेशिक सभा ने भी गत अनेक वर्षों से उक्त आश्रम की व्यवस्था तथा निरीक्षण की योजना बनायी थी। तदनुसार यह कार्य साधारण सभा में उक्त बम्बई अधिवेशन में ही मुझे सौंपा गया।

सार्वदेशिक सभा के आदेश के अनुसार ही मैं २६ जनवरी १९६५ ई० को कलकत्ता पहुँच गया और हमने बंगप्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि-सभा के उत्साही तथा कर्मठ महामन्त्री श्री जंगीलाल जी के साथ मिल कर बिलोनिया यात्रा की योजना बनायी। बिलोनिया जाने के लिए कलकत्ता से अगरतला तक का एकमात्र मार्ग हवाई जहाज का है। बीच में पाकिस्तान के प्रदेश पड़ जाते हैं, अतः हवाई जहाज का ही सहारा लेने को बाध्य होना पड़ता है। दमदम हवाई स्टेशन से अगरतला तक की यात्रा के लिए पूर्व-निश्चित यात्रा न होने पर हवाई जहाज में स्थान मिलने में कठिनाई होती है। मुझे भी २६ जनवरी से २८ जनवरी तक प्रयत्न करने पर भी टिकट नहीं मिल सका। आर्य-समाज कलकत्ता (१९ विधान सरणी, कलकत्ता—६) के माननीय प्रधान श्री हरिश्चन्द्र वर्मा के सत् प्रयास से मुझे २९ जनवरी के प्रातः ६ बजे के जहाज में स्थान मिला और मैंने सभा के महामन्त्री श्री जंगीलाल जी के साथ प्रस्थान किया।

२९ जनवरी को ही दमदम के हवाई अड्डे से प्रस्थान करके दो घंटे बाद मैं अगरतला पहुँच गया। अगरतला से नगर में मुझे बिलोनिया जाने वाली बस मिली, जो लगभग १७० मील की लम्बी यात्रा के बाद, लगातार सात-आठ घन्टे के पश्चात् मुझे बिलोनिया पहुँचायी। बस स्टेशन पर बिलोनिया के आर्य-समाज सेवाश्रम के वर्त्तमान व्यवस्थापक तथा उपदेशक पं० श्री भुवनमोहन देव शर्म्मा जी मिले। श्री शर्म्मा जी हम दोनों को सामान के साथ आश्रम में ले गए और उन्होंने हमारा स्वागत किया।

बिलोनिया त्रिपुरा राज्य का एक तहसील (सब-डिवीजन) है। त्रिपुरा, आसाम राज्य के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। केन्द्र प्रशासित इस क्षेत्र की जनसंख्या लगभग ६,३९,०२९ है, जिसका क्षेत्रफल प्रायः ४,०२२ वर्गमील है। यह प्रदेश वन तथा खनिज संपत्ति से परिपूर्ण है। यहाँ की प्रमुख उपज धान, जूट, चाय, ऊख, कपास और तेलहन आदि हैं। इस राज्य के उत्तर पश्चिम, पश्चिम दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम के लगभग ७२० मील के प्रदेश को पाकिस्तान की सीमा छूती है, जिससे पाकिस्तान द्वारा यहाँ अधिक उपद्रव होते रहते हैं। चकमा, रियांग, तिपरा, कुकी और मग प्रभृति तथाकथित आदिवासिया वन्यजातियों की संख्या यहाँ अधिक है। इस क्षेत्र की प्रधान भाषा बंगला है।

इसकी राजधानी अगरतला है। सम्पूर्ण प्रदेश दस डिविजनों—अगरतला, अमापुर, बिलोनिया, धर्मनगर, कैलाशहर, कमलपुर, सोवाई, सबरनम, सोनमूरा तथा उदयपुर में विभाजित है। यहाँ एक मुख्य आयुक्त अगरतला में रहते हैं, जिनके अधीन सभी डिविजन हैं। बिलोनिया के एस०डी०ओ० सम्प्रति श्री सच्चिदानन्द बनर्जी है, जो बड़े ही सात्विक तथा धार्मिक प्रवृत्ति के अधिकारी हैं तथा आर्य-समाज

सेवाश्रम के कार्यों में दिलचस्पी लेकर सहायता देते हैं।

बिलोनिया का यह आर्य-समाज-सेवाश्रम केन्द्र हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की सीमा पर स्थित है, तथा अत्यन्त मनोरम एवं लतावृक्षों से परिवेष्ठित होने के कारण हृद्य और आकर्षक है।

आश्रम का संक्षिप्त इतिहास

भारत-विभाजन के पूर्व सन् १६४६-४७ ई० में आर्यवीरदल के प्रधान संचालक श्री ओमप्रकाश जी त्यागी जब आर्य वीरों के साथ इस क्षेत्र में आए थे,

(पृ० सं० २७ का शेषांश)

तब 'वेकनाट' बढ़ंगे ही। शासक मदांध हो गये और बार-बार हारे। तब 'पंचजना:' की सृष्टि हुई। परंतु वह फौजी शासन तो जम ही चुका था। 'वेकनाट पणि' वेनकेल होते गये। बहुत गड़बड़ी फैली। यह सब प्रसंगत: उल्लेख हुआ। मुख्य रूप से कहना यह है कि देव-द्रविड़-संघर्ष (या समर) की कहानी मन-गढ़ंत है। मुझे कोई प्रमाण नहीं मिला, जिससे इतिहासकारों का वह कथन प्रमाणित हो।

'माध्यम' के द्वारा मैं विद्वानों को, इस विषय में, विचार करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं, या द्रविड़ और आर्य कहीं से आये, या द्रविड़; ये बातें आगे की हैं और प्रसंगत: इनकी भी चर्चा हो ही जायगी। परंतु पहले इस विषय पर चर्चा हो लेनी चाहिए कि आर्यों (देवों) का द्रविड़ों के साथ कभी वह संघर्ष हुआ भी कि नहीं, जिसे इतिहासकारों ने 'युद्ध' का नाम दिया है।

यह ठीक है कि आर्यों से द्रविड़ों का मूल भिन्न है परन्तु भिन्न होते हुए भी ये एक हो गये। रामानुज ब्राह्मण थे, जिन्होंने द्रविड़ 'आलवार' संतों का मत लेकर संस्कृत के द्वारा संपूर्ण भारत में फैलाया।

इतिहासकारों की उस कल्पित आग से आज सचमुच लोग झुलस रहे हैं। उसका इलाज है सही स्थिति प्रकट करना।

—माध्यम (जनवरी १६६५ ई०) से साभार।

उसी समय, उनका परिचय भूतपूर्व एम० एल० ए० श्री हरेन्द्रकुमार सूर से हुआ। मेहता सांवरमल दत्त के साथ श्री त्यागी जी ने श्री हरेन्द्रकुमार सूर के सत्प्रयास से १६४६ ई० के दिसम्बर के अन्त में बिलोनिया में कार्य प्रारम्भ किया। श्री हरेन्द्रकुमार सूर, श्री शचीन्द्रनाथ दत्त, श्री सुरेन्द्र कुमार विश्वास तथा श्री शारदा प्रसाद चक्रवर्ती को मिलाकर श्री त्यागी जी ने इस क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया।

१६४७ ई० में जब कलकत्ता में आर्य-समाज का रिलीफ कार्य होता था, उस समय रिलीफ सोसायटी कलकत्ता के तत्कालीन प्रधान मन्त्री और आर्य-प्रतिनिधि-सभा, बंगाल के उपमन्त्री श्री महाशय रघुनन्दन लाल जी के पुरुषार्थ तथा प्रयास से बिलोनिया में सहायता केन्द्र स्थापित हुआ और उक्त केन्द्र की व्यवस्था के लिए पं० श्री सदाशिव शर्मा जी नियोजित हुए। पं० भुवनमोहन देव शर्मा पूर्व से ही आर्य-वीर-दल के प्रचार का कार्य वहाँ करते थे। महाशय रघुनन्दन लाल जी के प्रयास से ही त्रिपुरा-राज्य से आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के नाम पर १४ कानी, १ गण्डा, २ करा भूमि (१ कानी १ बीघा से कुछ कम होता है) अर्थात् कुल ६ एकड़, (१८ बीघा के लगभग) जमीन आर्य-प्रतिनिधि-सभा बंगाल आसाम के नाम बन्दोबस्त है।

१६४८ ई० तक आर्य-समाज रिलीफ सोसायटी, कलकत्ता के तत्त्वाधान में, बिलोनिया में कार्य होता रहा। १६४६ ई० से बिलोनिया केन्द्र तथा सहायता कार्य आर्य-प्रतिनिधि सभा, बंगाल के तत्वावधान में आ गया। इस केन्द्र का निरीक्षण १६५० की जुलाई, में सार्वदेशिक सभा के प्रधान की हैसियत से राजगुरु पं० धुरेन्द्र शास्त्री (अब स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती) ने, १६५८ में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रघुवीर सिंह शास्त्री ने और १६५८ में ही श्री ओमप्रकाश त्यागी ने किया।

श्री ओमप्रकाश त्यागी के प्रभाव और परिचय, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री के पुरुषार्थ तथा श्री पं० सदा-

शिव जी के सत्प्रयास एवं प्रेरणा से श्री मेहरचन्द खन्ना एवं श्री भगवान सिंह जी की कृपा से भवन-निर्माण के लिए रुपये प्राप्त हुए। इस रुपये से ही औषधालय-भवन तथा विद्यालय का निर्माण हुआ।

सम्प्रति विद्यालय औषधालय का दो पक्का भवन, एक पाठशाला, एक गौशाला, एक कूपगृह कच्चा बना हुआ है। औषधालय में भी एक अस्थायी पाठशाला बना दी गई है। श्री भुवनमोहन देव शर्मा से ज्ञात हुआ कि इस समय निम्नलिखित वृक्ष आश्रम में हैं। बेल—३, लीची—३७, कटहल—६२, आम—३८, नीबू —६, आँवला—२, कमरगा (कटौरा)—१, अमरूद—२४, नारियल—६, सपाटी—६, और केला—२१। इसके अतिरिक्त एक व्यायामशाला तथा एक छोटा सा अध-बना तालाब है। आश्रम के एक छोर पर थोड़ी भूमि में पहाड़ी क्षेत्रों के भूतपूर्व कार्यकर्त्ता श्री शचीन्द्र नाथ दत्त को बंगाल सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री बटकृष्णवर्मन जी ने कच्चा मकान बनाकर आवास की अनुमति दे दी है। आश्रम की भूमि में मकान बनाकर श्री शचीन्द्रनाथ अभी सपरिवार रह रहे हैं।

१९५९ई० के मार्च मास में पुनर्वास विभाग से बिलोनिया के आर्य-समाज सेवाश्रम में एक हिन्दी विद्यालय तथा एक दातव्य चिकित्सालय का भवन बनाने के लिए २७५००) सत्ताईस हजार पाँच सौ रुपये प्राप्त हुए थे, जिसे बंगाल सभा ने प्राप्त किया तथा खर्च किया।

प० सदाशिव शर्मा जी के परिश्रम और प्रयास से वह क्षेत्र आर्य-समाज के प्रचार के लिए बहुत बड़े महत्त्व का क्षेत्र हो गया है। निस्सन्देह इसका श्रेय पण्डित जी को तथा बंग-आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा को तो मिलना ही चाहिये। प० भुवनमोहन देव शर्मा ने इसके लिए अपने को अर्पित कर दिया है। वैदिक सिद्धान्तों के प्रति इनमें जो कट्टरता है तथा किसी से भी किसी भी स्थिति में आर्य समाज की विचारधारा एवं मान्यता के प्रचार में समझौता नहीं करने की जो प्रवृत्ति है, वह इनके लिए प्रशंसनीय है। फिर भी इन्होंने यहाँ कष्ट झेलकर लोगों के कई प्रकार के असहयोग को बर्दाश्त करके, सार्वदेशिक सभा और बंग-आसाम सभा द्वारा किसी भी प्रकार के आर्थिक सहयोग के अभाव में भी स्वयं तथा परिवार के लोगों को भूखे रखकर आर्य समाज की सम्पत्ति की रक्षा की है।

प० सदाशिव शर्मा के परिश्रम का परिचायक है उस क्षेत्र की जनता द्वारा उस क्षेत्र का 'आर्य समाज कालोनी' नामकरण। मैंने देखा कि वहाँ के युवकों में श्री प० भुवनमोहन देव शर्मा लोकप्रिय हैं। उन्होंने आर्य वीर दल का संगठन भी वहाँ किया है। व्यायामशाला में ९७ युवक प्रतिदिन आते हैं। इसके प्रधान श्री ज्योतीन्द्र नाथ चौधरी (इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स, बिलोनिया) हैं और मन्त्री प० भुवनमोहन देव जी हैं। त्रिपुरा सरकार के शिक्षा विभागने व्यायामशाला को अपने १८-१-६५ के पत्र स० एफ-२० (१४-१) ई०-६४ द्वारा ५००) पाँच सौ रुपये का अनुदान भी दिया है।

बिलोनिया के आर्य समाज सेवाश्रम के कार्यक्रम के सम्बन्ध में कतिपय उपस्थित स्थिति पर विचार करने के लिए मैं निम्न लिखित स्थानीय व्यक्तियों से भी मिला।

१—श्री शचीन्द्रनाथ दत्त २—श्री अकिंचन बनर्जी ३—श्री सुरेशचन्द्र चौधरी (अध्यक्ष मोहरीपुर मण्डल कॉंग्रेस समिति) ४—श्री जवनीकुमार दत्त।

यहाँ के कार्यों की प्रशंसा सभी ने की। त्रिपुरा-राज्य के यूथ प्रोग्रेस के डिप्टी डायरेक्टर का १२-१-६५ का पत्र भी मुझे देखने को मिला, जिसमें उक्त अधिकारी ने यहाँ के कार्यों की सराहना की है। श्री सुरेशचन्द्र चौधरी ने मुझे बताया कि बंग युवकों में शारीरिक तथा नैतिक शिक्षा का अभाव है। व्यायामशाला और आर्य वीर-दल के कार्यों में प्रगति लानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य के सोशल वेलफेयरबोर्ड से सहायता की याचना करनी चाहिए। वे इसमें सहयोग देने के लिए भी वचन बद्ध हुए। श्री चौधरी ने परामर्श दिया कि दवा बाँटने का काम शीघ्र प्रारम्भ कर दें। पहाड़ियों में

वैदिक मधुविद्या

श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

ऋग्वेद में मधुविद्या का विस्तार है। प्राण, अमृत या द्युलोक की संज्ञा मधु है।

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारत् (ऋ० ४।५८।१)

इसमें कहा गया है कि यह विश्व एक मधुमान ऊर्मि या लहर है जो आरंभिक-पारमेष्ठ्य सोम या ऋत समुद्र से उत्पन्न हुई है। उस सोम का सर्वोत्तम प्रतीक मधु है। ब्राह्मणों में कहा है कि यह लोक दधि का रूप है, अंतरिक्ष घृत का, और द्युलोक मधु का।

दधि हैवास्य लोकस्य रूपं घृतमन्तरिक्षस्य मध्वमुष्य (शतपथ ७।५।१।३)

सीधी भाषा में कहा जाय तो दधि, घृत, मधु तीनों लोकों के ही प्रतीक हैं। जीवात्मा को मध्वद् सुपर्ण कहा गया है (ऋ० १।१६४।२२)। वहाँ मधु का अर्थ प्राण भी है।

प्राणो वै मधु। (शतपथ १४।१।३।३)

वस्तुतः प्राण ही सबसे बड़ी मिठास है।

रसो वै मधु। (शतपथ ६।४।३।२)

उसे ही अन्यत्र आनंद कहा है। यह सूक्ष्म रूप से सृष्टि में सर्वत्र विद्यमान है। यही जीवन का स्रोत है। इसका विस्तृत विवेचन छांदोग्य उपनिषद् ३।१-११ में है। वहाँ सूर्य को देवमधु कहा गया है।

असौ वा आदित्यो देवमधु। (छा० उ० ३।१)

देवता अमर होते हैं। उन्हें भी अमृत आयु के लिए मधु या प्राण चाहिए। यह आदित्य उनके लिए शहद का छत्ता है। इसे सर्वदेवत्य कहा है।

दो बार वस्त्र बाँटे जाएँ, विशेषकर ईसाई क्षेत्र में। उनका परामर्श है कि पहाड़ी जातियों के गांवों में कुएँ भी बनवाये जाएँ।

सारी स्थिति के अवलोकन के पश्चात् सार्वदेशिक-सभा अभी तीन मास से निम्नलिखित कार्य-प्रारंभ कर चुकी है।

१—अभी तीन मास के लिए (मार्च अप्रैल और मई) प्रतिमास १५ पन्द्रह रुपये दवा वितरण के लिए दिए जहे हैं।र।

२—पं० भुवनमोहन देव शर्मा जी को मासिक ७० सत्तर रुपये अभी तीन मास के लिए स्वीकृत किया गया है। इसमें से ३०) तीस रुपये आर्य वीर दल के कार्य के लिए और तीस रुपये अराष्ट्रीय-प्रचार निरोध कार्य के लिए, जिसके अन्तर्गत सप्ताह में दो दिन वे पहाड़ियों में दवा वितरण भिन्न-भिन्न ग्रामों में कर रहे हैं। वे सप्ताह में दो दिन कम से कम ५०० पहाड़ियों को दवा अवश्य बाँटते हैं। १०) दस रुपये प्रतिमास आश्रम में प्रतिदिन १५० व्यक्तियों को दवा बाँटने के कार्य के लिए दिया जा रहा है।

३—श्री शचीन्द्रनाथ दत्त को तत्काल तीन मास के लिए प्रतिमास ३०) तीस रुपये वेतन पर नियुक्त किया गया है। वे पहाड़ियों में प्रचार करते हैं। सम्प्रति सार्वदेशिक सभा इस क्षेत्र में प्रचार-कार्य को पूरे वेग से चलाने की भूमिका तैयार करने के लिए प्रतिमास १५०) रुपये के लगभग खर्च कर रही है।

बिलोनिया केन्द्र के लिये दीर्घकालीन योजना पर भी सभा शीघ्र विचार करने जा रही है। किन्तु, मार्च मास से उपयुक्त कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया है। इसी प्रकार सार्वदेशिक-सभा आसाम प्रदेश में प्रचार, संगठन एवं सहायता कार्य के लिए भी एक विस्तृत योजना लागू करने जा रही है।

★

यह सूर्य भौतिक नहीं है, यह तो वस्तुतः ब्रह्म का ही ज्योतिर्मय प्रतीक है।

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः। (यजु० २३।४८)

इस सूर्य की सूत्र रेखाएँ कोटि-कोटि अन्न-सूत्र हैं। वे हो अपनी ज्योति और ताप से प्राण-केन्द्रों का तपन करते हुए उनमें मधु उत्पन्न करते हैं। इन मधु-बिंदुओं का संचय पुष्पों में होता है। इस पुष्प को ही रेत कहते हैं। यह प्रकृति की मधुविद्या प्रत्येक स्त्री-पुरुष में समय पर मूर्त होती है। इसके लिए ऋतु या काल-चक्र का परिवर्तन चाहिए। जब यह ऋतुकाल व्यतीत हो जाता है, तो मधु का समय भी व्यतीत हो जाता है। जैसे शहद के छत्ते में मधु-कोष और मधु-नाड़ियाँ होती हैं, वैसे ही प्रत्येक प्राण-केंद्र में भी हैं। शहद के छत्ते के लिए अपूप शब्द है। वह मीठा पुआ है, और इस दृष्टि से प्राण-संयुक्त शरीर अपूप है; जिसके अधिष्ठाता प्राणापान रूप दो अश्विनी हैं। इंद्र को यह मधुविद्या विदित थी। इसके दो संकेत हैं। एक तो इंद्र सूर्य की ही संज्ञा है; दूसरे शतपथ ६।१।१।१ के अनुसार मध्य प्राण की संज्ञा इंद्र है। जब तक शरीर में मध्य प्राण की सत्ता है तब तक उसे रहने के लिए मधु चाहिए। इंद्र ने अश्विनीकुमारों को मधुविद्या का उपदेश दिया था।

प्राणापान ही इंद्र के दो अश्व या अश्विनी कुमार हैं। प्राणापान के द्वारा ही हम अमृत या मधु को चाहते हैं। प्राण का भी एक नाम 'दध्यङ अथर्वा' था जो मधुविद्या के रहस्य को जानता था। छांदोग्य के अनुसार त्रैविद्या और मधुविद्या का घनिष्ठ संबन्ध माना जाता था। वस्तुतः चारों वेदों के चतुर्भुजी स्वस्तिक की शक्ति से ही सूर्य की रश्मियाँ मधु तैयार करती हैं। यह एक रहस्यात्मक वाक्य है किंतु इसका अर्थ जान लेना चाहिए।

ऋक, यजु, साम—ये तीन वेद गति और अग्नि के प्रतीक हैं। तीनों वेदों को ब्रह्म और अथर्व को सुब्रह्म कहा गया है (गोपथ १।२।१)। मधु के बिना न विश्व का जन्म हो सकता है न उसकी स्थिति। सब भोज्य पदार्थों मे मधु विद्यमान है। सूर्य की रश्मियाँ ही उसे अपने ताप से उत्पन्न करती हैं। उस मधु को हम जिह्वा से चाट कर उसकी सूक्ष्म मिठास का अनुभव करते हैं। वही स्वाद ऋग्वेद में उसे मधुमान, रसवान और स्वादिष्ट सोम कहा है (ऋ० ६।४७।१।

इस प्रकार मधुविद्या ऋग्वेद को ही एक विशिष्ट विद्या थी। सामवेद में इसका विकास हुआ और वहाँ से छांदोग्य उपनिषद् में आयी वस्तुतः छंदोविद्या ही मधुविद्या के रूप में प्रकट होती है।

—माध्यम (जनवरी १९६५ ई०) से साभार।

एक अपील

वर्त्तमान समय में आर्यवीरदल की आवश्यकता

रामनारायण विद्याभास्कर

मैं आपका ध्यान आर्यवीरदल की ओर आकृष्ट करना चाहता हू, क्योंकि अन्य दल देखते ही देखते बड़ी तेजी से प्रगति करते जा रहे हैं, पर आर्यवीरदल जहाँ के तहाँ है। यह अकाट्य सत्य है कि आर्यवीरदल में जो अग्नि है, वह जिस दिन जलेगी उस दिन देश के विभिन्न भागों में विद्यमान अराष्ट्रीय तत्त्वों को भस्मसात कर देगी। वर्त्तमान भारत की एक पुकार है 'आर्य वीरदल जागे' क्योंकि स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए कराहती हुई भारत माता और बिलखती हुई मानवता की रक्षा के लिए 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और "वसुधैव कुटुम्बकम्' के नारों को साकार रूप देने के लिए आज देश को आर्यवीरदल की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यक है कि सार्वदेशिक आर्यवीरदल के तत्त्वावधान मे एक विस्तृत सुनियोजित योजना बनाई जाय और फिर देश के कोने-कोने में उस संगठन को व्यापक बनाया जाय। इसी माध्यम से हम आनेवाली पीढ़ी, नवयुवकों में, वैदिक संस्कृति और आर्य सभ्यता की ज्योति जगा सकते है।

आर्यवीरदल के सर्वाङ्गीण विकास तथा सर्वतोमुखी प्रगति के लिए निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान दिया जाय।

(१) देश के कोने में व्याप्त और स्थित आर्य-समाज की शिक्षण संस्था (गुरुकुल, कॉलेज:स्कूलों) मे अनिवार्य रूप से आर्यवीरदल की शाखा खुलनी चाहिए।

(२) वर्ष के अन्त में अर्थात् ग्रीष्मावकाश के दिनों में मण्डल, प्रान्तीय, भारतवर्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिविरों की सुनियोजित व्यवस्था हो।

(३) आर्यवीरदल की प्रगति में रुकावट का एक यह भी कारण है कि आर्यवीरदल के लिए हर जगह प्रशिक्षण देने वाले योग्य शिक्षक उपलब्ध नहीं होते, इसके लिए, स्कूल, कॉलिज, गुरुकुल तथा आर्य सभासदों को १५ दिन के समय का त्याग करके बौद्धिक तथा शारीरिक ट्रेनिंग लेकर गाँव-गाँव में नगर-नगर में आर्यवीरदल की शाखायें खोल देनी चाहिए।

(४) चौथा सुझाव यह है कि प्रत्येक आर्य नर-नारी यदि चाहते हैं कि उनकी संतानों का चरित्र-निर्माण हो, स्वदेश-भक्ति उनमें जागे, तो अपनी संस्कृति, धर्म, और आर्य जाति के गौरव को समझें, तथा जीवन को राष्ट्र के लिए प्रस्तुत करें। सभी का कर्त्तव्य है कि अपने बालक-बालिकाओं को आर्यवीरदल की शाखाओं तथा शिविरों में भेजें और स्वयं भी सम्मिलित हों।

(५) अन्तिम सुझाव है कि आर्यसमाज, आर्य-प्रतिनिधि सभा में आर्यवीरदल को तन मन धन से पूरा सहयोग देकर महर्षि दयानन्द-सेना के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दें।

कर्त्तव्य-बोध :—

स्वामी नित्यानंद भवन-निर्माण

मूर्धन्य नेता, महान पुरुषार्थी, महान् तार्किक, दिव्य ब्रह्मचारी, आर्य जगत् के श्रेष्ठ संत, कोकिल कंठ, सदाचार की ज्वलन्त मूर्ति, शास्त्रार्थ-समर-महारथी, वेदों के प्रकाण्ड-पंडित, "वैदिक शब्दसूची" और "पुरुषार्थ प्रकाश" के रचयिता, व्याख्यान-वाचस्पति, महारथोपदेशक, अलौकिक प्रतिभा के धनी, भारत-भूषण, नर-रत्न स्वामी नित्यानंदजी सरस्वती की पुण्य स्मृति मे उस महान् आर्य नेता के कार्य-कलापों और कीर्ति को चिरस्थायित्व देने के लिये, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने ५०,०००) पचास हजार रुपये की लागत मे एक भव्य नित्यानंद-भवन राजस्थान मे बनाने का शुभ निश्चय किया है । एतदर्थ नित्यानंद-भवन-निर्माण:कोष की योजना प्रारंभ कर दी गयी है ।

इस महान नर-रत्न की स्मृति को अमर रखने के लिये यह प्रस्तावित धन राशि कम ही है, क्योंकि इस भवन में अनेक उपयोगी कक्षों के निर्माण की योजना होगी । यथा—अनुसन्धान कक्ष, वैदिक साहित्य कक्ष (जिसमें विशेष रूप से स्वामी नित्यानंदजी रचित पुस्तकें प्रकाशित होंगी), अतिथि-गृह, सार्वजनिक वाचनालय, पुस्तकालय, उपदेशक विद्यालय, संस्कृति-संरक्षण-कार्यालय और सभा का केन्द्रीय कार्यालय आदि । तथापि यह विचार कर कि प्राय: प्रत्येक शुभ कार्य का प्रारम्भ बड़े रूप में नहीं हुआ करता । प्रारम्भिक सूक्ष्म बीज ही भूमि में परिपुष्ट होकर कालान्तर में विशाल वृक्ष का स्वरूप धारण करता है । इस महान यज्ञ को आर्य-प्रतिनिधि-सभा, राजस्थान (अजमेर)-ने प्रारम्भ किया है । उसे विश्वास है कि आर्य जगत में ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानंद जी के प्रति अगाध श्रद्धा है । किसको विदित नहीं कि महर्षि दयानंदजी सरस्वती महाराज के पश्चात वैदिक मिशनरियों में इसी महात्मा का नाम सर्व प्रमुख है, जिसने मधुर वेद-वीणा द्वारा राजा और प्रजा में समान रूप से सम्मान प्राप्त किया ।

इसी महाभाग ने देश के कोने में स्वामी विश्वेश्वरानंद जी के साथ और अकेले भी घूम-घूम कर वह विमल ज्ञान-सरिता प्रवाहित कर दी, जिसमें स्नान करके राजा और रंक सभी धन्य और पवित्र हो गये । किसी कवि की यह उक्ति स्वामी जी के प्रति सत्य है :—

(१)

"पेय वस्तु में पय के सदृश, खाद्य वृन्द में नव नवनीत
गेय वस्तु में गीता के सम, गान वृंद में सुर संगीत
ब्रह्म ज्ञान में व्यास वचन सम, सब वैद्यों में था हारीत
उनका सम्भाषण है मित्रो ! मिष्ट सार-युत और पुनीत

(२)

देश देश में धर्म हेतु वे दौड़ दौड़ कर जाते थे,
भाषण पहले नारद के सम, साम गान वे गाते थे ।
तन, मन, धन से सब भारत में उनने धर्म प्रचार किया।
मृत भारत जनता में उन्नत जीवन का संचार किया ।" ।

इतना ही नहीं, पण्डित मण्डली में भी इनकी अपूर्व धाक थी। महान् पण्डित आर्यमुनि जी, श्री गुरुदत्त जी तथा महात्मा मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानंदजी) इनके अत्यन्त प्रशंसक थे । एक पाश्चात्य विद्वान (A great scholar) उन्हे महान मेधावी और राजर्षि गोविंद रानाडे इन्हे (Gifted preacher) कह कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते थे। धन्य ! धन्य है, वह राजस्थान की वीर भूमि, जिसने राणा सांगा, महाराणा प्रताप और राठौर दुर्गादास आदि वीर नर पुंगवों को ही नहीं अपितु स्वामी नित्यानंद जी के समान यती, व्रती, तपस्वी और महात्मा उपदेशक को जन्म देकर अपने गौरव की वृद्धि की है । बड़ौदा, मैसूर, काश्मीर, शाहपुरा, आदि तत्कालीन नरेशों ने इन्हे पूर्ण सम्मान देकर अपने को सम्मानित समझा था । ऐसे स्वनामधन्य स्वामी नित्यानंद जी के स्मारक के लिये समस्त आर्य जनता और दानवीरों से आर्थिक सहायता

[शेषांश पृ० १८ पर]

इन्हें जानिए इनसे मिलिए—

प्रसिद्ध दानी श्री जगत राम जी अमृतसरी

श्री ला० जगत रामजी की गणना उन आर्य महानुभावों में होती है, जो नियमित रूप से प्रचारक न होते हुए भी सदा धर्म-प्रचार में रत रहे हैं। लाला जी गुरुदासपुर (पंजाब) में श्री स्वा० सत्यानन्द जी के आर्य-समाज सम्बन्धी व्याख्यान सुनकर आर्यसमाज के सभासद बने। आपने इंजिनीयरिंग की परीक्षा 'दयानन्द एंगलोवैदिक कालिज' लाहौर में रहकर पास की और १६१२ ई० में रंगून कारपोरेशन में ओवरसीयर के पद पर नियुक्त हुए। रंगून में वह लगातार ३० वर्ष तक सरकारी सेवा मे रहने के पश्चात् उस समय एस० डी० ओ० के पद से रिटायर्ड हुए, जब १६४२ ई० में जापान ने रंगून पर बम वर्षा की थी।

इस तीस वर्ष के सेवाकाल मे लालाजी तन मन धन से आर्यसमाज के कभी मन्त्री तथा कभी प्रधान के रूप में, निरन्तर सेवा करते रहे। रंगून के आर्यसमाज के भवन के निर्माण में आपने बड़ी लगन का परिचय दिया और वहां धर्मशाला का एक कमरा अपने व्यय से बनवा दिया। जब आपको वहां की आर्य-प्रतिनिधि-सभा का प्रधान बनाया गया, तो आपने समाज के प्रचार में अधिक प्रगति लाने के लिए पंजाब से स्वामी पं० परमानन्द जी बी० ए० को भी वहां बुला लिया इसी अवधि मे लाला जी ने बरमी भाषा में 'सत्यार्थ प्रकाश' का अनुवाद भी करवाया था, जो रंगून की बम वर्षा में नष्ट हो गया था, परन्तु तत्पश्चात् पुनः प्रकाशित हो गया।

उपर्युक्त आत्मरक्षा के पश्चात् आप रंगून से सेवामुक्त होकर जि० गुरुदासपुर की तहसील शैंकरगढ के अन्तर्गत अपने निवासस्थान कमाल में जाकर पूर्ववत धर्मकार्यों में भाग लेने लगे। वहां आपने आर्य-प्रतिनिधि-सभा, पंजाब के अधीन बालकों तथा बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक एक पाठशाला स्थापित करने के अतिरिक्त एक यज्ञशाला, एक धर्मशाला तथा एक कूआं भी बनवाया एवं एक धर्मार्थ औषधालय भी चलाया, जिसमें नेत्र रोगों के प्रसिद्ध डा० मथुरा दास जी, 'मोगा निवासी' चार वर्ष तक नेत्रचिकित्सा के लिए अभीष्ट समय देते रहे। इस पुण्यकार्य पर जो भी व्यय होता रहा, उसका भार श्री ला० जगत रामजी ने ही उठाया। जब देश-विभाजन के फलस्वरुप पंजाब का भी विभाजन हुआ तो लाला जी को अपने जन्म स्थान को भी छोड़ना पड़ा। वहां से आप अमृतसर आए और तब से दयानन्द नगर, लारेंस रोड, कोठी नं० १०० में सादा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। परन्तु, यहां भी आप यथाशक्ति परोपकार में रत रहते हैं। उदाहरणार्थ इस समय तक आप दयानन्द मठ, दीनानगर के अन्तर्गत साधु आश्रम में एक भवन, गुरुकुल कांगड़ी में विद्यार्थियों के लिए एक कमरा, दीना नगर के समीपस्थ से-काही ग्राम में महाशयों के लिए एक कुंआ चिन्तः पूर्णी में एक कूंआं, नादी ग्राम की कन्या पाठशाला के लिए एक कमरा, रियासत जम्मू के ग्राम घवाल में स्वामी परमानन्द जी के आश्रम में एक कूप; कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) के कन्या-आश्रम मे एक कमरा; गुरुकुल मज्जर, जि० रोहतक की गोशाला में एक कमरा; दीनानगर पशु हस्पताल (चिकित्सालय) में एक कूंआ और आर्य-समाज, लारेंस रोड, अमृतसर के स्नानागार में एक कमरा तो बना ही चुके हैं, इसके अतिरिक्त दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार मे भी एक कूंआ बनवा देने का वचन दे रखा है।

यह सौभाग्य की बात है कि अब आप ईसाइयों के राष्ट्रीय विरोधी प्रचार के निरोध कार्य की ओर भी विशेष ध्यान देने लगे हैं। एतदर्थ आप उड़ीसा, रांची, (बिहार) मध्य प्रदेश एवं बड़ौदा में आर्यसमाज की ओर से होने वाले शुद्धिकार्य में धन से सहायता कररहे हैं तथा इसी उद्देश्य से पानपोष (उड़ीसा) में गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास के नाम से जो संस्था कार्य कर रही है, उसे भी बहुत सहयोग देते रहे हैं।

इसी प्रसंग में 'सार्वदेशिक सभा' उड़िया भाषा में "सत्यार्थ प्रकाश" का जो संस्करण
प्रकाशित करना चाहती है, उसके लिए भी आपने अभी-अभी १०००)
(एक सहस्र) रुपये दान दिए है। इसके अतिरिक्त आप
अन्य अनेक पुस्तकों के प्रकाशन में भी पुष्कल
सहायता करते रहते है।



ऋषिभक्त श्री लाला जगत राम जी, अमृतसरी का जन्म आश्विन, सं० १६४१ वि० मे ग्राम छमाल, जि० गुरुदत्तपुर में हुआ था और इस समय आप लगभग ८१ वर्ष के है। ईश्वर से प्रार्थना है कि लालाजी चिरंजीवी हों, जिससे देश के धर्म-प्रेमी युवक, अधेड़ और वृद्ध समान रूप से प्रेरणा प्राप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार को उसी प्रकार अपने जीवन के पुरोगम का एक मुख्य अंग बना लें, जिस प्रकार लाला जी ने अपनी युवावस्था से लेकर अब तक बनाया है।

—राम गोपाल

हमरा अध्यात्म-कक्ष

HINDU THOUGHT

Yoga, the Science of the Soul

Shree O. P. Tyagi

For the realization of the Self and God and to attain salvation Yoga is the best scientific method, according to the tradition of the Hindu Dharma.

Though the Yoga is one of the six principal systems of Hindu philosophy, it is not the metaphysical and philosophical analysis of Reality; but the practical disciplıne given for its realization which forms the original contribution of the Yoga system towards Hiddu thought.

The ideal of self realization put forth by the Yoga as a philosophic conception is very common in Hindu philosophy and is by no means peculiar to that system but the practice enjoined as the means to that end constitutes the characteristic feature of Yoga system.

The yoga system has developed a "science of soul" which aims at a systematic delineation of the various methods and stages of the realization. of the Self and its powers leading to spiritual perfection. It is this scientific aspect of the Yoga practice which derseves all the emphasis. It opens before the eyes of the modern scientific man a new vista of experimentation and research.

The human being is itself the laboratory-the antahkaran (inner sense) with its four constituents of manna (mind), budhi (intellect) ahankar (ego) and chit (mind-stuff) is the apparatus required; introspection and meditation are the methods of using these instruments and self knowledge maps out the field of the discoveries of this science

TWO PRINCIPLES

Yoga offers us detailed outlines of the practice we have to perform; it furnishes us with the definite data in the form of spiritual experiences.

The theory of yoga directly inherited from the Sankhya School of Philosophy rests on the two principles of Purusha (the conscious) and Prakriti (the non-conscious i. e. matter).

This Purusha is the unmoved inducer of the entire cosmic activity and through its presence the entire psychological material phenomenon are evolving from the non-conscious Prakriti.

All the suffering and pain of man are due to the fact that on account os Avidya (ignorance) the human soul identifies itself with intellect and

reason and considers itself affected by the latter's transactions, while in reality it is only a silent witness and is unaffected throughout the process.

The result of this false identification is attachment and desire leading to frustration, and disappointment finally entangling the soul in the eternal cycle of birth and death.

ISOLATION

The way to break through this vicious circle is self-knowledge, which in embodied in the Kaivalya, meaning the complete isolation of the soul from the operations of the non-conscious Prakriti and its evolute of intellect and reason, having only semblance of consciousness.

The aim of Yoga is to dispel the dark cloud of ignorance which hides the real nature of the soul. But this does not mean the annihilation of mind and reason. Only we should take care that servant is not allowed to use the position of his master. It is only when we have achieved a control over the unsteady operations of our mind that we can attain everlasting peace and satisfaction.

In short, through the practice of Yoga or meditation we break the connection between soul (consciousness) and body (non-consciousness) which is the main root of all ignorance.

Thus yoga helps the soul enter the sphere of everlasting peace and happiness.

(शेषांश पृ० ३४ का)

की याचना करते हुए यह सभा भी गौरव अनुभव करती है और पूर्ण आशा करती है कि इसमें अधिकाधिक दान देकर जहां आर्य जनता सुयश प्राप्त करेगी, वहा यह स्मारक भी शीघ्रातिशीघ्र बनकर आर्य-समाज के महान कार्यक्रम को बहुत अंशों मे पूर्ण करेगी।

परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह "नित्यानंद भवन निर्माण यज्ञ" निर्विघ्न रूप से सम्पादित करने के लिए शक्ति प्रदान करने की कृपा करें।

दानी महानुभाव जिस-जिस विभाग अथवा कक्ष के लिये दान देंगे, उस विभाग या कक्ष में उनका नाम धवल शिला-पट्टिका पर अंकित होगा। समय समय पर उपयोगी सम्बंधित वैदिक साहित्य भी उन्हे सप्रेम भेंट किया जायगा।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि धर्म-प्रेमी दान-वीर जन आर्य-प्रतिनिधि-सभा, राजस्थान के इस आह्वान का हार्दिक स्वागत करते हुये पुस्कल आर्थिक सहायता प्रदान कर अक्षय कीर्ति के भागी बनेंगे।

धर्मप्रेमी, उदार दानी महानुभाव अपनी सहायता मंत्री, आर्य प्रतिनिधि-सभा, राजस्थान, केसरगंज, अजमेर के पते पर भेजने की कृपा करें।

राम गोपाल
मंत्री
सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा,
नई दिल्ली-१

अनुसन्धान अनुशीलन का कक्ष

हिन्दू नहीं आर्य

रघुनाथ प्रसाद पाठक

हिन्दू शब्द घृणा-सूचक है

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ही पहले महानुभाव थे, जिन्होंने महान् आर्य जाति के वंशजों को हिन्दू नाम से सम्बोधित किए जाने के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने एक बार कहा था "कर्म भ्रष्ट तो हुए हो नाम भ्रष्ट तो न होओ" हिन्दू नाम मुसलमानो का रखा हुआ है, जिसके अर्थ है-चोर डाकू, गुलाम, बटमार, काफिर, तलवार, काला-कलूटा और मनहूस-अशुभ। अरबी भाषा में भी यह शब्द काला कलूटा के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

इसका एक कारण है। अरब लोग दास(गुलाम) रखा करते थे और वे अबीसीनिया से दास लाया करते थे। वहां के लोग सर्वथा काले होते हैं। अरबी में काले के लिए 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग होता है। इन दासों के काले होने के कारण अरब लोग उन्हें हिन्दू कहने लगे और जब उनका दूसरे देशों पर शासन हुआ तो, वे अपने अधीनस्थ देशों को भी हिन्दू पुकारने लगे। ईरान और अफगानिस्तान आदि के लोगों का भारत पर शासन हुआ, तब ये भारतीयों को 'हिन्दू' कहने लगे।

अतएव-इस घृणा, सूचक और निकृष्ट नाम से आर्य जाति के वंशज का सम्बोधित वे होना उचित नहीं है।

एक तर्क

यहां एक तर्क उपस्थित किया जाता है, यदि 'हिन्दू' शब्द का फारसी आदि भाषाओं में घृणित अर्थ होने से वह त्याज्य है, तो फिर शरीर, राम आदि अन्य कई शब्द भी हमें छोड़ने पड़ेंगे, क्योंकि फारसी में 'शरीर' शब्द का अर्थ 'उपद्रवी' और 'राम' का अर्थ 'अधीन' है। फारसी आदि भाषाओं में 'हिन्दू' शरीर और राम शब्दों के अर्थ कुछ भी क्यों न हों, इससे हमें कोई सरोकार नहीं है। हमारी मान्यता यह है कि संस्कृत भाषा में 'हिन्दू' शब्द नहीं है और आर्य जाति के वंशजों के नाम के साथ इस शब्द का प्रयोग समस्त जाति पर लांछन है। यह नाम दूसरों का दिया हुआ और घृणा-सूचक है।

भारतीयों का नाम कुली

आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व हमारे देश के कुछ लोगों को मजदूर बनाकर विदेशी लोग अमरीका, अफ्रीका फिजी आदि देशों में ले गए। यतः जो, और लोग पहले गए वे कुली होकर गए थे। यतः, अफ्रीका में समस्त भारतीयों को, चाहे वे कुली न भी थे और उनके परिवार में सात पीढ़ियों से कुलीगिरी नहीं की गई थी, तब भी 'कुली' नाम दे दिया गया। सब सरकारी पत्रों में भारतीयों को 'कुली' लिखा जाता था। जब गांधी जी अफ्रीका गए और उन्हें इस अपमानजनक नाम का अर्थ तथा रहस्य विदित हुआ, तो उन्होंने आन्दोलन करके इस नाम को हटवाया। उनसे पूर्व अफ्रीका-प्रवासी, धनीमानी भारतीय भी अपने साथ 'कुली' शब्द के प्रयोग को सहन कर ही रहे थे। महर्षि दयानन्द ने अनेक सुधारों के साथ हमारे नाम का भी सुधार किया। इसके लिए हमें उनका अमित उपकार मानना चाहिए।

वर्नाक्यूलर शब्द को त्याग दिया गया

यूरोप के लोग अपने अधीनस्थ देशों की भाषाओं को 'वर्नाक्यूलर' कहते हैं, जिसका ,अर्थ है 'घर में उत्पन्न हुए गुलाम की बोली'। हमारे देश के पढ़े लिखे लोग भी अपनी भाषाओं को 'वर्नाक्यूलर' कहते रहे और शिक्षा विभागों—स्कूलों, कालेजों आदि—में सर्वत्र देशी भाषा 'वर्नाक्यूलर' कही और लिखी जाती रही। राजनैतिक चेतना के साथ-साथ इस नाम के विरुद्ध भी आन्दोलन होने लगा था। राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अब 'वर्नाक्यूलर' शब्द प्रायः भूतकाल का प्रयोग गया है। जीवित जातियाँ पराए दिए हुए मुख्यतः घृणासूचक, नाम को कभी स्वीकार नहीं करती। अतएव हमें भी 'हिन्दू' नाम को त्यागकर श्रेष्ठ 'आर्य' नाम को अंगीकार करना चाहिए।

हिन्दू नाम सनातन से नहीं चला आता

'हिन्दू' शब्द के समर्थकों का यह मत है कि 'हिन्दू' नाम विदेशियो या विरोधियों का दिया हुआ नही है। अपितु, यह नाम सनातन से चला आता है। वे यह भी कहते हैं कि 'आर्य' नाम भले ही पुराना हो, किन्तु यह गुणवाची नाम है। हिन्दू नाम के समर्थन में वे शब्द-कल्पद्रुम आदि कोषों का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं—

१—हीनं दूषयतीति, पृषोदरादित्वात्साधुः जाति विशेष (शब्दक०)

२ हिन्दु हिन्दूश्च प्रसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणे।
रूपशालिनि दैत्यारौ राज्ञि योगिजनेपि च (अद्भुत कोष)

३ हिन्दुर्दुष्टनृहः प्रोक्तोऽनार्यनीति विदूषकः।
सद्धर्म्म पालको विद्वान् श्रौत धर्म परायणः॥ (रामकोष)

४ हिन्दू धर्म्म प्रलोप्तारो आयन्ते चक्रवर्तिनः।
हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिये। (मेरुतन्त्र)

अर्थात् १—जो हिंसा को दूषित करता है उसे हिन्दू कहते हैं। यह शब्द पृषोदरादि गण में भी सिद्ध होता और जाति वाचक है। (शब्द कल्प द्रुम)

२—हिंदु और हिंदू ये दो शब्द हैं, दुष्टों को दंड देने में और रूपवान में, देव में और राजा में यौगिक जन में रखते हैं। (अद्भुत कोष)

३—दुष्ट मनुष्यो को दंड देने वाला, अनार्यों की नीति को दूषित करने वाला, श्रेष्ठ धर्म्म का पालन करने वाला, श्रौत स्मार्त धर्म्म का मानने वाला विद्वान पुरुष हिन्दू कहलाता है। (रामकोष)

४—आगामी समय में राजा लोग हिन्दू धर्म्म का नाश करने वाले होंगे और हे प्रिये पार्वति! हिन्दू लोग हिंसा को दूषित करते हैं इसलिए इनका नाम 'हिन्दू' है। (मेरुतंत्र)

ये सब ग्रन्थ इस देश में मुसलमानो के आगमन के पश्चात बने हैं। मुसलमानों से पहले के किसी भी ग्रन्थ में 'हिन्दू' शब्द नहीं मिलता। शब्द कल्पद्रुम, अद्भुत कोष और राम कोष को बने हुए १२५ वर्ष भी नहीं बीते। मेरुतन्त्र दो-तीन सौ वर्ष पुराना है, किन्तु यह भी मुसलमानी काल का है। अतः, हिन्दू शब्द अर्वाचीन है।

मेरुतन्त्र तथा शब्द कल्पद्रुम के, 'हीनं दूषयति' वाक्य का अर्थ किया गया है 'जो हिंसा को दूषित करता है'' इन दोनो प्रमाणों में 'हिंसा' पद ही नहीं है। इनमें तो 'हीनम्' पद है, जिसका अर्थ दुर्बल, कमजोर अर्थात् कमजोर को सताने वाला होता है, जिसके लिये 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग कहते है। क्या 'हिन्दू' शब्द के समर्थकों को यह अर्थ स्वीकार होगा? आर्यजन तो हीनो का उद्धार और उपकार ही करते है। बंगाल के विख्यात नामा और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के परम विरोधी पं० तारानाथ तर्क-वाचस्पति ने वाचस्पत्याभिधान कोष बनाया जो, शब्द कल्पद्रुम से कई गुणा बड़ा है। उसमें, उन्होंने 'हिन्दू' पद पर शब्द कल्पद्रुम वाला अर्थ और मेरुतंत्र वाला श्लोक देकर अंत में लिखा है 'अप्रमाणमिदम्' अर्थात् यह प्रमाण नही है।

'हिन्दू' शब्द के समर्थन में निम्न-लिखित प्रमाण भी दिए जाते हैं :—

१— नाम गुणोण्म तुल्य रमः हिन्दुः पातु पतिमः।
हिनस्ति तपसा पापान्दैहिकान दुष्ट मानसान्॥
हेतिमिः शत्रुवर्गां च सच हिन्दुर्विधीयते (पारिजात हरण नाटक)

अर्थात नाम तथा गुण के बराबर महत्व है, जिसका ऐसा जो हमारा पति हिन्दू ईश्वर है वह हमारी रक्षा करे। तप से दैहिक और दुष्ट मानसिक पापों का और शास्त्रो से दुष्ट शत्रुओं का जो नाश करता है, उसको हिन्दू कहते हैं।

यह नाटक अलाउद्दीन खिलजी के समकालीन मिथिला निवासी उमापति का बनाया हुआ है। यह श्लोक उस नाटक में है भी नहीं। अतः इसका प्रमाण देना व्यर्थ है।

(२) कालेन बलिनाच्छन्ने धर्मे कवलित कलौ।
यवनैरवनिः क्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन (कालिका पुराण)

(३) यवनैरवनिः क्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन।
बलिना वेदमार्गोऽयं कलिना कवलीकृतः॥ (शार्ङ्गधर पद्धति)

ये श्लोक साधु हरि प्रसाद ने अपनी पुस्तक में उधृत किए हैं, परन्तु इनके पते नहीं दिए। अतः ये भी मान्य नहीं हैं। स्वामी हरिप्रसाद ने यह माना है कि रामायण, महाभारत और पुराणो मे 'हिन्दू' शब्द नहीं है। वे लिखते हैं—''हम यह स्वीकार करते है कि उनमें (रामायण, महाभारत और पुराणों में) सिन्धु या हिन्दू नाम का उल्लेख नहीं (पृ,५६) इसी प्रकार पृष्ठ ६४ पर वे

मानते हैं कि हमारे पूर्वज आर्य थे। जैसा कि हम यह अच्छी तरह जानते और मानते हैं कि हमारे पूर्वज आर्य थे।"

स्वामी हरि प्रसाद प्रयत्न करके भी किसी आर्ष ग्रन्थ में या अमननीय पुराण में 'हिन्दू' नाम नहीं दिखला सके।

भविष्य पुराण में प्रतिसर्ग पर्व के चतुर्थ खंड के अ० २१ का श्लोक है :—

दशकोट्यः स्मृता आर्य्या बभूवुर्बौद्ध पन्थिनः।
पञ्चलक्षास्ततः शेषाः प्रययुर्गिरि मूर्द्धनि॥ ३३॥

दश करोड़ आर्य बौद्ध मार्गी बन गए उनसे बचे पांच लाख पहाड़ (विन्ध्याचल) के सिर पर चले गए।

यदि हमारे पूर्वज पुराण काल में हिन्दू कहलाते होते तो श्लोक में 'आर्या नभूवबौद्ध पन्थिनः' के स्थान में (हिन्दवो बभूवुर्बौद्ध पन्थिनः)। पढा जाता, स्पष्ट है पुराण काल में हमारे पूर्वज 'आर्य' कहलाते थे, हिन्दू नहीं कहलाते थे।

वेदों में आर्यों के वध का विधान

'हिन्दू' शब्द के समर्थक कहते हैं कि वेदों में आर्यों को मारने उल्लेख है। यदि हमारा नाम आर्य होता तो आर्यों के मारने का आदेश वेद में कैसे होता? वे निम्न लिखित मंत्र प्रस्तुत करते हैं :—

'त्वं तो इन्द्रोभयो अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च शूर।
वधीर्वनेन सुधिते भिरत्कैरा पृत्सु दर्षि नृणा नृतम॥ ऋक् ६/३३/३

हे इन्द्र! हे पराक्रमी तू उन दोनों शत्रुओं को मार जो पापात्मा दस्यु और आर्य हैं। हे नेताओं में श्रेष्ठ नेता। जंगल जैसे कुल्हाड़ों से काटे जाते है, वैसे तू इन को तेज किए हुए शास्त्रों से अच्छी तरह काट। इस मंत्र का शुद्ध अर्थ इस प्रकार हैं :—

हे इन्द्र शूरवीर। तू इन दोनों प्रकार के शत्रुओं को, जो दस्यु और आर्य रूपधारी पापी हैं, मार दे। हे नेताओं में श्रेष्ठ नेता। जैसे जंगल कुल्हाड़ी से काटे जाते हैं, वैसे तू इनको लड़ाइयों में तेज हथियार से काट।

ऊपर से भले मानस आर्य और अन्दर से कपटी ऐसे आर्य प्रतीत होने वाले अत्याचारियों से मनुष्य समाज की अधिक हानि होने की संभावना होती है। इस वास्ते इन्द्र (राजा) का कर्त्तव्य है कि वह राष्ट्र की ऐसे लोगों से रक्षा करे।

'सिन्धु और हिन्दू'

जो लोग यह स्वीकार करते हैं कि वेद में साक्षात् 'हिन्दू' शब्द तो नहीं मिलता, वे यह कहते हैं कि वेद में 'सिंधु' शब्द तो है। सिंधु से बिगड़कर 'हिन्दू' हो गया। 'स' को 'ह' हो ही जाया करता है। 'श्री' का 'ह्री' 'सिरा' का 'हिरा' 'सरित' का 'हरित' इसी प्रकार 'सिंधु' का 'हिन्दू' दूसरा रूप है।

उनका यह भी कहना है कि यूनानियों ने हमें इन्दु या इण्डु कहा और हमारे देश को इण्डिया नाम दिया। इन्दु या इण्डु से बिगड़ कर हिन्दू नाम हो गया। इत्सिंग ने भी इस देश का नाम हिसन-तू लिखा है। सिन्धु, इन्दु और हिन्दू एक से हैं। यूनानियों के समय यहाँ चन्द्रवंशी राजाओं का राज्य था, उनको इन्दुवंशी भी कहते हैं, इस कारण यूनानियो ने हमें 'इन्दु' नाम दे दिया। महमूद गजनवी के साथ अल्बरूनी नाम का विद्वान् आया था, उसने भी इस देश के वासियों को 'हिन्दू' कहा है।

इस कथन से स्पष्ट है कि हमारा 'हिन्दू' नाम दूसरों का दिया हुआ है। प्रश्न यह है कि हमारा अपना नाम क्या है? यूनानियों के समय तो हमारे देश में सूर्य वंशी राजा भी राज्य करते थे। अल्बरूनी का प्रमाण स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इत्सिंग चीनी यात्री था। उसने अपना यात्रा-वृत्तान्त चीनी भाषा में लिखा। उसका अनुवाद श्री० ज० तक कुसुने अंग्रेजी में किया। वे महाशय अपनी भूमिका में लिखते हैं :—

"इत्सिंग भारत को सामान्यतः, पश्चिम (सी फङ्) भारत के पास देश (वृतिवेन woot'ion) आर्यदेश (आ-ली-या त-इ-शा) मध्यदेश (मी-त-इ-स-इ-श) महाराष्ट्र (पो-लो-मे-कुओ) या जम्बू द्वीप (चम-पू-चौऊ) कहलाता है। वह कहता है कि हिन्दू (हिंस-तू) नाम का प्रयोग केवल उत्तरीय जातियाँ ही करती हैं और भारत के लोग स्वयं इस बात को नहीं जानते (श्री सन्तराम कृत अनुवाद पृष्ठ—१८-१९)

इत्सिंग भी स्पष्ट कह रहा है कि 'भारत के लोग इस नाम को नही जानते, मानने की बात तो दूर रही, भारतीय इस हिन्दु नाम को जानते भी नहीं। इत्सिंग सन् ६७१ ई० में चीन से चलकर ६०३ में भारत मे पहुँचा। वह ६६५ ई० तक भारत में रहा। इसके पश्चात् वह अपने देश को लौट गया। सन् ७०० से ७१२ तक उसने अनेक ग्रन्थो की रचना की, अर्थात् आज से लगभग १२६३ वर्ष पूर्व भी भारत के लोग हिन्दू नाम को नहीं जानते थे।

इस पर भी यदि कहा जाय कि हमारा नाम पुरातन काल से 'हिन्दू' है तो, इससे बढ़कर दुराग्रह और क्या हो सकता है? इत्सिंग लिख रहा है कि 'हिन्दू' नाम का प्रयोग केवल उत्तरीय जातियाँ ही करती हैं। भारत के उत्तर में तुर्किस्तान (तातार) और अफगानिस्तान देश है। इन आक्रमणकारियों ने हमें हिन्दू नाम घृणा के कारण दिया। हम उस घृणा के नाम को क्यों स्वीकार करें?

कहा जाता है कि वेद में 'सिन्धु' शब्द देश के लिए प्रयुक्त हुआ है, उस सिन्धु का विकृत रूप हिन्दू है। "अमन्दान स्तोमान प्रभरे मनीषा सिन्धा वधि क्षियती भाव्यस्य" ऋक् १/१२६/१

किन्तु, वेद में आर्यावत या भारतवर्ष शब्द कहीं भी नहीं मिलता, अतः हमारे देश का नाम 'सिन्धु', हमारा नाम भी सिन्धु है, जो कालान्तर में 'हिन्दू' हो गया।

वेद के उपर्युक्त मंत्र में आए सिन्धु शब्द का अर्थ नदी या सागर है। इस मंत्र-खंड-का अर्थ होता हैं— 'संसार रूपी नदी या सागर में रहने वाले उच्च भावना-सम्पन्न मनुष्य की मैं बुद्धि पूर्वक उत्तम स्तुतियाँ करता हूँ।

वेद इतिहास या भूगोल की पुस्तक नहीं, जो उसमें आर्यावर्त्त या भारतवर्ष का नाम मिलता। सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्य इस देश में आकर बसे, तब उन्होंने इसका नाम आर्यवर्त्त रखा'। बहुत काल पीछे प्रतापी भरत के कारण इस देश का नाम भारतवर्ष या भरत खंड भी पड़ा किन्तु 'सिन्धु' या 'हिन्दू' तो इसका नाम विदेशियों और विधर्मियों का दिया हुआ है। 'सिन्धु' से हिन्दू बनने की बात तो नितान्त अनर्गल है। जिस 'सिन्धु' नदी के कारण कुछ लोग देश का नाम 'हिन्दू' होना मानते हैं, वह 'सिन्धु' नदी सिन्धु या सिन्धु ही बनी हुई है वह हिन्दू न बनी। सिन्ध प्रान्त, जहाँ मुसलमानों ने सबसे पहले आक्रमण किया आजतक सिंध बना हुआ है, हिन्दु न बन सका। बाबर ने अपने मित्र को पत्र लिखा, जिसमें उसने सिंध और हिन्द पर विजय पा लेने पर परमात्मा को धन्यवाद दिया है। जैसे—'हे बाबर! दयालु प्रभु की दया के लिए सैकड़ों धन्यवाद दो क्योंकि उसने सिंध, हिन्द और सैकड़ों राज्य दिए हैं (Akbar by Col. Malkson पृ० ३८ की टिप्पणी का अंशानुवाद) इसी प्रकार तारीख-फीरोजशाही मे गया सुद्दीन तुगलक के सम्बन्ध में लिखा है कि 'हिंन्द और सिंध के समस्त देश तथा पूर्व और पश्चिम के सारे राजा और सेनापति अनेक वर्षों तक उसके डर से काँपते रहे। इनसे स्पष्ट है कि सिन्ध और हिन्द दो पृथक पद हैं। यदि 'सिन्ध' से हिन्दू बना होता तो सिंध के साथ हिन्द शब्द का प्रयोग कभी न होता।

भविष्य पुराण में इस देश का नाम 'सिन्धु-स्थान' मिलता है। इसका समाधान आवश्यक है। श्लोक निम्न लिखित है :—

सिन्धोः स्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।
म्लेच्छ स्थानं परं सिन्धोः कृतं तेन महात्मना॥

अर्थ- आर्य के उत्तम राष्ट्र को सिन्धु-स्थान जानना चाहिए और उस महात्मा (कश्यप) ने सिन्धु से पहले स्थान को म्लेच्छ स्थान कहा। इस वचन से स्पष्ट सिद्ध है कि कम से कम भविष्य पुराण के निर्माणकाल में इस देश का नाम सिंधु-स्थान अवश्य था।

इस श्लोक का अर्थ समझने में थोड़ी भूल हुई है। इस श्लोक से तो पता लगता है, कि सिंधु नदी के इधर आर्य राष्ट्र है और सिन्धु नदी से परे म्लेच्छ-स्थान है। यदि देश का नाम 'सिन्धुस्थान' होता तो अवश्य ही इस श्लोक में 'सिंधु स्थान' शब्द होता, किन्तु यहाँ 'सिंधोः स्थान' शब्द हैं। ये दो पद हैं। देश के नाम के लिए 'सिन्धु स्थानम्' पाठ होना चाहिए था।

जो लोग कहते हैं कि हमारा नाम 'आर्य' कभी नहीं था, उनको अधिक प्रमाण न देकर भविष्यपुराण के 'राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्' वाक्य पर विशेष ध्यान देने को प्रेरणा करते हैं। जिसको लोग सिंधु-स्थान बताना चाहते हैं, वह 'आर्य का उत्तम राष्ट्र' है। यदि हमारा नाम 'आर्य' न था तो 'आर्य का

उत्तम राष्ट्र' का क्या अर्थ ?

भविष्य पुराण का बहुत बड़ा भाग महारानी विक्टोरिया के काल में बना। उसमें संडे, जनवरी आदि अंग्रेजी दिनों और महीनों के नाम एवं विक्टोरिया पर्यन्त अंग्रेज राजाओं के नामों का भी उल्लेख है। अतः, 'सिन्धु-स्थान' अर्थ प्रमाण नहीं माना जा सकता। मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में तथा पुराणों में (आर्यावर्त्त) आदि नाम ही इस देश के मिलते हैं। उन्हें ही अपनाना चाहिए।

कुछ और प्रमाण

हमारा नाम हिन्दू नहीं, किन्तु 'आर्य' है इसके समर्थन में नीचे कुछ और प्रमाण दिए जाते हैं :—

(१) पहले संकल्प को लीजिए, जिसे पौराणिक भाई प्रत्येक शुभ-कर्म के आरंभ में पढ़ते हैं :—

'ओ' तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे वैवस्वते मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे अमुक···जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तैकदेशे······

इसमें देश का नाम आर्यावर्त है। आर्यों का आवर्त = सदा से व्यवहार का देश। यदि हमारा नाम आर्य न होता तो देश का नाम 'आर्यावर्त' कैसे होता ?

(२) काशी पौराणिकों का परम तीर्थ है। उसमें भी विश्वनाथ का मन्दिर मुख्य माना जाता है। पौराणिक लोग काशी को विश्वनाथ पुरी भी कहते हैं। उस मन्दिर के द्वार पर संगमर्मर का शिला लेख है उसपर लिखा है— 'आर्य्येतर धर्म्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः' यदि हमारा नाम हिन्दू होता तो 'हिन्दू धर्म्मे तराणां···''शब्द होता। इस प्रकार का लेख काशी के अन्नपूर्णा मन्दिर के बाहर भी है।

(३) सम्वत् १९२७ (१७९२ शकाब्द) के श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को काशी के ४६ पंडितों ने मिलकर एक व्यवस्था-पत्र लिखा कि हमारा नाम 'हिन्दू' नहीं है। इनमें सबसे अन्त में हस्ताक्षर करने वाले पंडित दुर्गादत्त जी ने लिखा :—

'हिंदू शब्दो हि यवनेष्वधर्मिजन बोधकः
अतो नार्हन्ति तच्छब्द बोध्यतां सकला जनाः ॥

अर्थात्—हिन्दू शब्द मुसलमानों के यहाँ अधार्मिक के लिए प्रयुक्त होता है, अतः सब मनुष्यों का यह नाम नहीं होना चाहिए।

इस व्यवस्था पत्र पर श्री स्वामी विशुद्धानंद सरस्वती जी तथा श्री पं० बालशास्त्री जी के भी हस्ताक्षर हैं। ये दोनों महानुभाव अपने समय में काशी के सबसे बड़े पंडित समझे जाते थे और इन्हीं दोनों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से शास्त्रार्थ करने की ठानी थी। यदि हमारा नाम 'हिन्दू' होता तो स्वामी दयानन्द सरस्वती की विरोधी मंडल कभी भी इस नाम के विरुद्ध व्यवस्था न देती। इस प्रकार इस व्यवस्था का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

(४) पाणिनि महर्षि ने अपने शब्दानुशासन (अष्टाध्यायी) में 'आर्यो ब्राह्मण कुमारयोः' ६/२/५८ सूत्र में और अन्य कई स्थलों पर 'आर्य्य ''शब्द का उलेख किया है'' किन्तु 'हिन्दु' शब्द का कहीं नहीं। परम पौराणिक भट्टोजिदीक्षित ने भी 'हिन्दू' शब्द की न सिद्धि की और न कहीं उल्लेख किया।

(५) अनेक ग्रन्थों में 'आर्य्य वाचः और म्लेच्छ वाचः, शब्द आते हैं, जिनका अर्थ है—आर्य्यों की बोली वाले और म्लेच्छों की बोली वाले। यदि 'आर्य' शब्द केवल गुण वाची होता तो 'आर्यों की बोली वाला' यह पद कैसे बनता ?

(६) जैनों के तत्त्वार्थ सूत्र में 'आर्य्या म्लेच्छाश्च (अ ३) में (आर्य और म्लेच्छ वाक्य है)। इससे भी सिद्ध होता है कि आर्य शब्द मनुष्यों के एक समुदाय का वाचक है। वेद से लेकर आधुनिक संस्कृत के नाटक ग्रन्थों तक में आर्य शब्द का प्रचुर प्रयोग मिलता है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि पहले 'हिन्दू' शब्द था पीछे उससे 'सिन्धु' शब्द बना। यह बात निस्सार, प्रमाण-हीन अतः, सर्वथा उपेक्षणीय है। कुछ यह कहते हैं कि अब यह नाम चल पड़ा है और बहुत व्यापक हो गया है, देश-विदेश में भी हमारा यही नाम है, अतः इसका मिटना असंभव है। संगठन की दृष्टि से भी यह नाम उपयुक्त है क्योंकि देवसमाजी, राधास्वामी, ब्रह्मसमाजी आदि सम्प्रदायों के लोग अपने आप को 'आर्य' कहलाना पसन्द नहीं करेंगे। 'आर्य्य' शब्द को वे कार्य-सम जियों के लिए रूढ़ समझते हैं। 'हिन्दू' शब्द से उन्हें कोई संकोच नहीं।

(शेष पृ० ४८ पर)

हिन्दी संस्कृत का महत्व

आचार्य विनोबा भावे

जब हम स्कूल में पढ़ते थे, तब शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। यह बात कुछ विचित्र सी थी। विपरीत इसके क्या करोड़ों वर्ष पुरानी कोई दूसरी ऐसी भाषा है, जिसके शब्द आज भी ठीक-ठीक अर्थ में प्रयुक्त होते हों ? उदाहरण के लिए वेद के प्रथम मंत्र को लेलो।

अग्नि मीडे पुरोहितम् यज्ञ स्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्न धातमम् ऋ० ।१ ॥

अग्नि, पुरोहित, यज्ञ, देव, रत्न आदि शब्द आज भी आधुनिक भारतीय भाषाओं में उनके मूल अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत के सहस्रों शब्द अग्नि, वायु, पवन, पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य, बुद्धि, अलङ्कार आदि-आदि शब्द पूर्व की भाँति अब भी व्यवहार में चले आते है। ऐसी कौन सी कोई दूसरी भाषा है, जो परम्परागत प्राचीन शब्द भाण्डार को इतनी समृद्धि का दावा कर सके।

भारत में इस प्रकार की एक भाषा है, जो प्राचीन होती हुई भी अर्वाचीन है। यूनानी और लैटिन भाषा के समान संस्कृत मृत भाषा नहीं, अपितु जीवित भाषा है। कुछ अवस्थाओं में तो यह भाषा अनेक आधुनिक भाषाओं से भी अधिक जीवित भाषा है।

भारत की किसी भी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए संस्कृत का सहारा लिए बिना नहीं रहा जा सकता। संस्कृत का अंग्रेजी में अनुवाद करना कठिन है। इस पर भी हमारे स्कूल के दिनों में संस्कृत अंग्रेजी द्वारा पढ़ाई जाती थी। उस समय अंग्रेजी को अनुचित महत्व प्राप्त था। फिर भी अंग्रेजी के उच्च कोटि के साहित्यकार बहुत कम थे। परन्तु, आज हमारे बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाए जाने की अत्यधिक उत्सुकता क्यों है ? बच्चे अंग्रेजी पढ़ें या न पढ़ें, इसकी उन्हें छूट होनी चाहिए।

स्वतंत्र भारत के लोगों को अच्छी अङ्गरेजी पढ़ने की परम्परागत अङ्गरेजी शिक्षण हमारे किसी काम का नहीं है। ऐसा होने से मातृभाषा में कमजोरी बनी रहेगी। अङ्गरेजी सीखने की आवश्यकता को मैं स्वीकार करता हूं। इसे सीखने में कोई हानि नहीं है। फिर भी मैं यह अवश्य कहूंगा कि जो व्यक्ति अङ्गरेजी पढ़ने का इच्छुक हो, उसके सामने प्रारंभ से ही उद्देश्य सुस्पष्ट होना चाहिए। क्या वह अङ्गरेजी का कवि या साहित्यकार बनना चाहता है ? अथवा यह व्यापारिक कार्यों के सम्पादन के लिए सीखी जा रही हैं ? अथवा बाहर यात्रा करने के लिए, राजनीति का अध्ययन या अङ्गरेजी के समाचार पत्रों को पढ़ने के लिए पढ़ी जा रही है ? या वह साधारणतः अङ्गरेजी पुस्तकों के पढ़ने का कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त करना चाहता है ;

अंग्रेजी सीखना प्रारंभ करने से पहले इन बातों में उसका मस्तिक साफ होना चाहिए। हमारे अधिकांश लोगों के लिए अंग्रेजी का ज्ञान अनावश्यक है। आजकल के बी० ए० और एम० ए० पास लड़के भी अङ्गरेजी में अपना साधारण काम भी नहीं कर सकते।

हमारे बच्चों को मातृभाषा के माध्यम से प्रत्येक वस्तु सीखने की अनुमति होनी चाहिए। यह है पहली चीज, जिसे हमको हृदयङ्गम कर लेना चाहिए। आज भारत में लगभग ८० लाख व्यक्ति अंग्रेजी जानते हैं और उनमें से लगभग ५० हजार व्यक्ति अंग्रेजी का अनुवाद कर सकते हैं। वे अंग्रेजी की ५० हजार पुस्तकों का अनुवाद करें। माता पिताओं को अपने बच्चों पर दया करके उस झंझट से उन्हें बचाना चाहिए जो, अङ्गरेजी पढ़ने से हमें भुगतनी पड़ी थी। यदि कोई माता पिता यह चाहे कि उनके बच्चे उसी कठिनाई में गुजरें तो यह अपवाद ही समझा जाना चाहिए।

अङ्गरेजी को शिक्षा का माध्यम बनाना गलत है। इसी प्रकार सबके लिए अङ्गरेजी का पढ़ना अनिवार्य बनाया जाना भी गलत है। कुछ व्यक्तियों के लिए अङ्गरेजी पढ़ाई आवश्यक है, परन्तु अङ्गरेजी, की पढ़ाई बचपन में प्रारंभ नहीं होनी चाहिए। बचपन से ही अङ्गरेजी के शिक्षण के लिए जो वातावरण आवश्यक होता है, उसका भारत में निर्माण होना संभव नही है। अपनी मातृभाषा और उसके व्याकरण का सम्यक् ज्ञान प्राप्त किए बिना दूसरी भाषा का पढ़ना बहुत कठिन होता है।

मातृभाषा के व्याकरण का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लेने पर तुलनात्मक भाषा के रूप में अङ्गरेजी पढ़ाई जा सकती है। बच्चे की पढ़ाई के प्रारंभ के ८ वर्षों में अङ्गरेजी नहीं पढ़ाई जानी चाहिए। इसके बाद जो अङ्गरेजी पढ़ने को इच्छुक हों, वह उसके पढ़ने में अधिक समय लगा सकते हैं। मातृभाषा में पूरी योग्यता प्राप्त कर लेने, संस्कृत का आवश्यक ज्ञान उपलब्धकर लेने और थोड़ी सी हिन्दी जान लेने पर अङ्गरेजी के अध्ययन पर मुझे कोई आपत्ति नही है।

बहुत से अङ्गरेजी पढ़े लिखे लोगों का दावा है कि वे जितने प्रभावशाली ढंग से अङ्गरेजी में विचार प्रकट कर सकते हैं, उतने प्रभाव शाली ढंग से अन्य भाषा में प्रकट नही कर सकते' क्या मै उनसे बड़ी विनम्रता से पूछ सकता हूं कि यह उनकी कमजोरी है या भाषा की ?

मुझसे प्रायः यह पूछा जाता है कि संस्कृत को राज भाषा क्यों न बना दिया जाय। मेरा उत्तर है अवश्य बनाया जाय। उस भाषा का स्वरूप संस्कृत होगा और सामग्री हिन्दी होगी। शब्दावली संस्कृत की होगी और हिन्दी में उसके रूप विस्तार और संयोजन के नियम व्यवहृत होंगे। दूसरे शब्दों में संस्कृत सुगम एवं सुबोध बनाई जायगी क्योंकि संस्कृत में विस्तार और संयोजन के नियम कठिन होते है। संस्कृत की मौलिक विशेषता यह है कि 'धातु' उसकी माता है जिसके मूल शब्द से बहुत से शब्द बन सकते और ग्रहण किए जा सकते हैं। हिन्दी में इसका विस्तार निरापद ढंग से होगा। इसलिए इस विषय में कोई भ्रान्ति न होनी चाहिए। यदि मैं हिन्दी का सहारा न लेता तो कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक और आसाम से लेकर केरल तक ग्रामों में सर्वोदय भूदान का सन्देश प्रसारित करना मेरे लिए संभव न होता। यदि मैं मराठी में संदेश प्रसारित करता तो मै महाराष्ट्र के बाहर सफल न होता। अवश्य कुछ प्रान्तों में अङ्गरेजी से मुझे सहायता मिलती, परन्तु वहाँ भी गाँव-गाँव तक अपनी विचारधारा का अङ्गरेजी में प्रसारित करना संभव न होता।

लोक भाषाओं का अपना स्थान है। किसी क्षेत्र विशेष के लोगों में लोकभाषा की सहायता से जाग्रति उत्पन्न की जा सकती है। अङ्गरेजी का भी अपना स्थान है। भारत के बाहर के देशों में सम्पर्क बनाए रखने में कुछ सीमा तक यह हमारी सहायता कर सकती है। 'कुछ सीमा' शब्द का प्रयोग मैंने जान बूझकर किया है, क्योंकि संसार के अनेक ऐसे भाग है, जहाँ अङ्गरेजी नहीं समझी जाती।

अङ्गरेजी, वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति में सहायक हो सकती है। अङ्गरेजी की महत्ता स्वीकार करते हुए भी मै इस बात पर बल दूँगा कि हिन्दी का अपना स्थान और कर्तव्य है जिसकी पूर्ति अङ्गरेजी से नही हो सकती। क्षेत्रीय और राष्ट्रिय भाषाएँ व्यक्ति की दो आँखों के सदृश हैं, संस्कृत हमारी तीसरी आंख होगी। अंग्रेजी का अध्ययन चश्मे का प्रयोग करने के समान है। प्रत्येक व्यक्ति को चश्मा लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

हिन्दी राष्ट्रभाषा स्वीकार की गई है, इसमें बाध्यता नहीं है। देश ने इसे अपनी इच्छा से स्वीकार किया है। दक्षिण वालों को इससे भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। इससे उन्हे ही लाभ होगा। यदि वे हिन्दी पढ़ेंगे तो समस्त भारत में अपने विचार फैला सकेंगे। दक्षिण के साहित्य में अनेक विचार हैं, जिनका प्रचार और प्रसार समस्त भारत में होना चाहिए। अतः, अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त जितनी जल्दी हिन्दी सीखेंगे उतनाही अधिक उन्हें और उनके साथ समस्त देश को लाभ होगा।

(इन्डियन रिव्यू, मद्रास)
और ट्रिब्यून (अम्बाला)
में प्रकाशित
(लेखों का सार)

विविध समाचार

आर्य वीर दल गाजियाबाद ने १ जून से २० जून ६५ तक आर्य वीरों को विशेष प्रशिक्षण देने का निश्चय किया है। प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीरदल के शिक्षक श्री काशीनाथ जी शास्त्री देंगे।

वेदप्रकाश आर्य

मन्त्री

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली द्वारा २-५-६५ को ग्राम खेड़ा जिला शाहजहांपुर में १७ और ग्राम मुजफ्फरपुर (शाहजहांपुर) में २६ नव मुसलिमों की शुद्धि हुई।

महर्षिदयानन्द ट्रस्ट के मंत्री ने सूचित किया है, महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, टंकारा, सौराष्ट्र का सरल संस्कृत परीक्षायें, जो गुजरात, राजस्थान, मध्य-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, बिहार, आसाम और पंजाब में चलाई गई थीं, उनके परिणाम २०-४-६५ को उन-उन प्रदेशों की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है।

अग्रिम परीक्षा सितम्बर १९६५ के अन्त में होगी। संस्कृतानुरागियों से निवेदन है कि समस्त भाषाओं की जननी वेद वाङ्मयी गीर्वाण वाणी के प्रचार में प्रचुर संख्या में सक्रिय भाग लेकर आर्ष-परम्परा की रक्षा करने में समर्थ होंगे। ये परीक्षायें विशेषकर आर्ष पद्धति के अनुकूल हैं, अतः, आर्य जनों का ध्यानाकर्षण नितान्त अपेक्षणीय है।

ग्राम रामपुरीत खंडवा में छुआछूत व जाति पांति के मतभेद से भीलों और बलाहीयों (हरिजनों) में कुछ मन मुटाव हो गया था। दि० १७-४-६५ को श्री पं० रामचन्द्र जी तिवारी, प्रधान, आर्य समाज खंडवा की अध्यक्षता में रामपुरी हरिजन मोहल्ले में यज्ञ प्रार्थना भजन एवं धार्मिक उपदेश हुआ। तत्पश्चात् तिवारी जी ने दोनों वर्गों के लोगों को एक जगह इकट्ठा कर उनके आपसी मनमुटाव एवं मतभेद का स्पष्टीकरण करते हुए उन्हें समझाया है। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान में सब मनुष्यों को समान अधिकार प्राप्त है। कोई भी नागरिक किसी के साथ ऊंच-नीच अथवा छुआछूत का व्यवहार नहीं कर सकता। ऐसा करना कानूनन जुर्म है। अतः, आप लोग पुराने रूढ़ि-वाद को समाप्त कर आपस में सद् प्रेम-भाव से मिलकर, संगठित होकर ग्राम की उन्नति करो। तिवारी जी के वैदिक-धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर इस भाषण का ग्रामीण जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर रोहतक (पंजाब प्रान्त) के मंत्री ने सूचित किया है—जो व्यक्ति अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त और षड्दर्शनों का अध्ययन करना चाहें वे निः शुल्क विद्या से लाभ उठावें।

विशेष जैमिनीय मीमांसा दर्शन पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए गुरुकुल की ओर से शुल्क भोजन का प्रबन्ध होगा।

आर्य-समाज, पुनाईचक, पटना १ के तत्त्वावधान में २६ अप्रैल, १९६५ को संध्या समय ५ बजे "आर्य बालिका विद्यालय" के भवन का शिलान्यास-समारोह धूम-धाम से रामगोविन्दपुरी, पुनाईचक में बिहार-राज्य के मुख्यमंत्री कृष्ण वल्लभ सहाय के कर-कमलों से वैदिक विधि से किया गया। कार्यारम्भ हवन यज्ञ द्वारा हुआ, जिसमें मुख्य मंत्री श्री कृष्णवल्लभ सहाय जी यजमान थे तथा श्री रामनारायण शास्त्री, उपमंत्री, सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा ब्रह्मा थे। मुख्य मंत्री जी के द्वारा आर्यध्वज फहराया गया और तदुपरान्त शिलान्यास किया गया।

एक शोक प्रस्ताव पारित कर स्वर्गीय श्री द्वारका राय यादव की, जिन्होंने महाविद्यालय को ८-१-२ बीघे जमीन और डेढ़ लाख रुपया देने का वचन दिया था, दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

श्री रामगोविन्द सिंह, प्रधान, आर्य-समाज, पुनाईचक ने मुख्य मंत्री, जनकार्य मंत्री तथा अन्य आगन्तुकों को धन्यवाद दिया। तदुपरान्त सभा का कार्य शान्ति-पाठ के साथ समाप्त हुआ।

आर्य-स्त्री-समाज, पटेल नगर, नई दिल्ली, तिथि २१-४-६५ की साधारण सभा, भारत सरकार से बल पूर्वक यह मांग करती है कि नए त्रिभाषा फारमूले में इस प्रकार संशोधन किए जाय कि संस्कृत के अध्ययन और प्रगति में किसी प्रकार की बाधा न पड़े और वह पूर्ववत् जारी रहे अन्यथा भारतीय जनता को ठेस पहुँचेगी।

अलीगढ़, २५-४-६५ को श्रीमती हाजिरा बेगम, मुहल्ला मैरिस रोड (अलीगढ़) ने धर्म-परिवर्तन के लिये प्रार्थना-पत्र दिया। यह अपने पति से परित्यक्ता तथा पिता के अत्याचारों से दुखी थी। उसे वैदिक विधि से शुद्ध किया और उसका नाम शशिकला रखा गया।

आर्य साधु आश्रम, पो० लाडवा (करनाल) का दशम वार्षिक धर्म-मेला, सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासि वानप्रस्थ भिक्षु-मण्डल, ज्वालापुर की शाखा की ओर से १६ से २० अप्रैल तक सामवेदीय, महापारायण यज्ञ ईश्वर कृपा से सम्पन्न हुआ। विद्वानों महात्माओं के प्रवचन तथा भजन-मण्डलियों के भजन कीर्तन के साथ ऋषि लंगर भी जारी रहा, इस शुभ अवसर पर श्री शिव चन्द्र जी आर्य, कपूर थला और श्री रघुवीर शरण जी आर्य, लडवा निवासी ने शुद्ध घृत हवन के लिये पचास-पचास रुपया दान दिया।

इस शुभ अवसर पर निम्न लिखित सुझाव दिये गये और निश्चय किए गये।

(१) आश्रम में प्रकाशन विभाग जारी किया जाय जिस का नाम "वैदिक धर्म प्रचार प्रकाशन" रखा जाय।

(२) वर्ष में कम से कम पांच सौ रुपया दानियों के सहयोग से प्राप्त कर के "वैदिक धर्म प्रचार प्रकाशन" में व्यय किया जाय तथा ग्रंथ-प्रकाशन दानियों के द्वारा जनता में वितरित किया।

(३) आश्रम में प्रचारार्थ सत्संग की उन्नति के लिये माइकरोफून और ध्यान के लिये तथा जनता के स्नान आदि की सुविधा के लिये मोटर मशीन तीन हार्सपावर की लगाने की शीघ्रता की जाय।

(४) सार्वदेशिक सन्यासि वानप्रस्थ भिक्षु मण्डल, ज्वालापुर से प्रार्थना की जाय कि उक्त आश्रम को ग्रामीण जनता के हित के लिये [illegible] बनाया जाय।

(५) आश्रम में दैनिक [illegible] का होना आवश्यक है, इस लिये मण्डल से प्रार्थना की जाय कि वह इस को भी स्वीकार करने की कृपा करे।

(६) आर्य—साधु आश्रम, लाडवा सड़क के साथ है। हर सम्प्रदाय के सन्त महात्मा आश्रम में आकर विश्राम करते है, जिनके, भोजन का प्रबन्ध करना अति आवश्यक है। अतः, मण्डल इस का भी प्रबन्ध करे।

(७) भ्रष्टाचार को दूर करने के लिये आश्रम की ओर से नवयुवकों की सभा बनाई जाय।

(८) हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है, इस लिये हर व्यापारी को अपने व्यापार कार्य में देव नागरी (हिन्दी) को प्रयोग में लाना चाहिये।

नारायण स्वामी शताब्दी का आयोजन

श्री पं० शिवदयालु जी संयोजक, नारायण स्वामी-जन्म-शताब्दी समारोह तथा मुख्य उपमंत्री, आर्य-प्रतिनिधि-सभा उत्तर-प्रदेश लिखते हैं:—

आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी के जन्म को आगामी बंसत पंचमी माघ शु० २०२२ वि को १०० वर्ष पूरे हो जावेंगे।

आर्य-प्रतिनिधिसभा, उत्तरप्रदेश की अन्तरंग सभा ने अपनी वाराणसी की बैठक में दि० २५ अप्रैल ६५ में, यह निश्चय किया है कि पूज्य स्वामी जी की जन्म-शताब्दी पूरे समारोह के साथ मनाई जाय।

स्वामी जी महाराज का जन्म अलीगढ़ में और देहावसान १५-१०-४७ को बरेलीनगर में हुआ था। पर्याप्त समय तक आप. आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश के कर्णधार रहे। सभा-कार्यालय को लखनऊ केन्द्रित करते समय सभा-भवन का नाम-"नारायण स्वामी भवन" रखा गया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के निर्माण एवं उत्थान में भी आपका महान् सहयोग रहा है। अनेक वर्षों तक आप उसके मुख्याधिष्ठाता रहे हैं। संन्यास आश्रम की दीक्षा लेने के उपरान्त आपने नैनीताल रामगढ़ जिला में आकर साधना की और वहां जो कुटी निर्माण की, वही शनैः शनैः नारायण आश्रम के रूप में विकसित हुआ। जहां उनका अपना वृहद् पुस्तकालय [illegible]

भागीरथी के तट पर हरिद्वार में आपने [illegible]

आर्य विरक्त (वानप्रस्थ संन्यास) आश्रम स्थापित किया, जिसने अब बढ़कर वृहद् रूप धारण कर लिया है और जो अब समूचे आर्य जगत् में सबसे बड़ा आश्रम माना जाता है।

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि- सभा के निर्माण एवं विधान में भी आपका प्रशंसनीय योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द की निर्वाण-वर्ष-शताब्दी अजमेर एवं जन्म शताब्दी मथुरा को अत्यधिक सफलता प्रदान करने में आपका ही प्रमुख हाथ रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह के तो आप सूत्रधार ही थे।

महात्मा जी अत्यन्त स्वाध्यायशील वक्ता एवं उच्चकोटि के लेखक थे। आपने जीवन मे अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। उत्तर प्रदेशीय सभा इस जन्म शताब्दी के अवसर पर आपके ग्रन्थों को संग्रहरूप में नारायण स्वामी ग्रन्थावली के नाम से प्रकाशित करने जा रही है।

माघ कृ० १४ से माघ शु० ५ (बसंत) तक अर्थात् दि० २० से २६ जनवरी १६६६ ई० तक नारायण स्वामी जन्म-शताब्दी-सप्ताह भारतवर्ष भर में और विशेष कर उत्तर प्रदेश में बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा। उत्तरप्रदेश में लखनऊ, अलीगढ़, मुरादाबाद, गुरुकुल वृन्दावन मथुरा, रामगढ़ (नैनीताल) एवं वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) बरेली आदि स्थानों का आपके जीवन की घटनाओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अतः, इन स्थानों पर विशेष समारोहों का आयोजन किया जायगा। उत्तरप्रदेश के बाहर देहली, अजमेर, शोलापुर तथा (हैदराबाद) का भी उनके जीवन से विशेष सम्बन्ध है, अतः, वहां भी विशद् रूप में कार्यक्रम रक्खा जायगा।

सभा ने एतदर्थ एक समिति का निर्माण किया है जिसकी शीघ्र एक बैठक होगी और जन्म शताब्दी का कार्यक्रम निर्धारित करेगी। स्वामी जी के जीवन से सम्बन्धित संस्थाओं को शीघ्र ही अपना-अपना कार्यक्रम निर्धारित कर आर्य-प्रतिनिधि:सभा उत्तरप्रदेश को सूचित करना चाहिये।

(शेषांश पृ० ४३ का)

कहावत है कि बुद्धि का फल हठ न करना है। जब सिद्ध हो गया कि हमारा नाम 'हिन्दू' नहीं है, तब इसको छोड़ने में विलंब न करना चाहिए। आयरलैंड वालों ने अपने देश का नाम Ireland बदलकर Eair कर दिया। फारसी वालों ने अपनी भाषा के कठिन शब्द निकालकर उसका रूप बदल दिया। जब हम सब मिलकर त्यागने का निश्चय करलें, तब बस यह समाप्त है। रही संगठन की बात, यह भी भ्रम है। राधा स्वामियों, ब्रह्म-समाजियों तथा देव समाजियों इन तीनों की इकट्ठी संख्या से आर्य-समाजियों की संख्या कई गुना अधिक है। जैनी अपने को 'हिन्दू' कहने को तय्यार नहीं, किन्तु आर्य कहलाने में वे खुश हैं। बौद्धों को भी आर्य नाम पसन्द है 'हिन्दू' नाम वे भी पसन्द नहीं करते। 'आर्य' नाम रखने से पारसीवर्ग भी हमारे संगठन में सम्मिलित हो सकता है। हिन्दू महासभा के काशी अधिवेशन में उनके सम्भ्रान्त, प्रतिनिधियों ने यह कहा बताते थे कि यदि 'हिन्दू महा सभा' का नाम 'आर्य महासभा' कर दिया जाय तो हम भी सम्मिलित हो सकते हैं। पारसियों जैसे विद्यावान और धन-सम्पन्न वर्ग का सहयोग कितना मूल्यवान एवं हितकारी है! बौद्धों के सहयोग से भी हमें अमित शक्ति प्राप्त हो सकती है।

सार्वदेशिक-सभा पुस्तक-भण्डार की पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्नलिखित प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१. ऋग्वेद संहिता सजिल्द १०)
२. अथर्ववेद संहिता सजिल्द ८)
३. यजुर्वेद संहिता सजिल्द ४)
४. सामवेद संहिता सजिल्द ३)
५. सत्यार्थ-प्रकाश २)
६ ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका २॥)
७. संस्कार-विधि १)
८. आर्याभिविनय ॥)
९. कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश ३)
१०. मराठी सत्यार्थ प्रकाश १।=)
११. पंचमहायज्ञ-विधि-भाष्यम् ५)
१२. वेदविरुद्ध मत खडन)३५
१३. सत्य-धर्म-विचार)२५
१४. शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण)२५
१५ भ्रमोच्छेदन)२०
१६ काशी शास्त्रार्थ)२०
१७. भ्रान्ति निवारण)३५
१८ सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन का इतिहास) ५
१९. विवाह-पद्धति)५०
२०. गो करुणानिधि)१६
२१. आर्य-वीर-दल बैज)३१ जोड़ी
२२. आर्य-समाज प्रवेश-पत्र १) सै०
२३. Life of Swami Dayanand (by Harvilash Sharda) १२)

'ओ३म्-ध्वज' नैट मूल्य पर

२४. ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४॥ इंच मूल्य २'५०
२५. ओ३म्-ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच ,, ४)·५
२६. ओ३म् ध्वज ४५ इंच × ६७॥ इंच ,, ६,५०

निम्नलिखित प्रकाशन २० नैट प्रतिशत कमीशन पर दिए जायेंगे ।

१. सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू) ३'५०
२. वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ७)
३. शिक्षण तरंगिणी ,, ,, ५)
४ मसार्वे हुक इस्लाम उर्दू) मूल्य ५)
५. Wisdom of the Rishis (Gurudutta M. A.) ४)

निम्नांकित पुस्तकों पर अधोलिखित दर से कमीशन दिया जायगा ।

१० रुपये तक की पुस्तकों पर २० प्रतिशत; १० रुपये से २५ रुपये तक की पुस्तकों पर २५ प्रतिशत; २५ रुपये से अधिक रुपये की पुस्तकों पर ३३⅓ प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय २)
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र १॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता ।)
४. अभ्यास और वैराग्य १)६५
५. बाल संस्कृति सुधा)५०
६. वैदिक ईशवन्दना ।=)॥
७. वैदिक योगामृत ॥=)
८. दयानन्द दिग्दर्शन ॥)
९. वेदों म दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियाँ ॥)
१०. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द)५०
निज जीवनवृत्त वनिका सजिल्द)७५
११. वृहत् विमान शास्त्र सजिल्द १०)
१२. बालजीवन सोपान १।)
१३. छान्दोग्य उपनिषद् कथा ३)
१४. दार्शनिक आध्यात्म तत्त्व १॥)
१५. वेदान्त दर्शन (संस्कृत में) ३)
१६. वेदान्त दर्शन भाषा-भाष्य ३)५०
१७. वैदिक वन्दन ५)
१८. भ्रम निवारण)३०
१९. वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द २)
२०. वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द २)५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१. कर्मव्यवस्था ४)
२. दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश ।–)
३. चरित्र निर्माण १)१५
४ ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण)१५
५. वैदिक विधान और चरित्र निर्माण)२५
६. दौलत की मार ।)
७. अनुशासन का विधान ।)
८. धर्म और धन ।)
९. हमारा राष्ट्र १।)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१. योग रहस्य १।)
२. मृत्यु और परलोक १)
३. विद्यार्थी जीवन रहस्य ॥=)
४. उपनिषदें :—
ईश ।=) केन ।), कठ ॥) प्रश्न ।=) मुण्डक ।≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)
५ बृहदारण्यकोपनिषद् ३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

१.	आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१।)
	आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध	१॥)
३.	वैदिक संस्कृति	१।)
३.	मुक्ति से पुनरावृत्ति	।≈)
४.	आर्य-समाज और सनातनधर्म	।≈)
५	आर्यसमाज की नीति	।)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

१.	दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश	२)५०
४.	वैदिक युग और आदि मानव	४)
३.	वैदिक विज्ञान विमर्श	)७५

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

१	आर्य जीवन गृहस्थ धर्म	॥≈)
२.	कथा माला	॥)
३.	सन्तति निग्रह	१।)
४	नया संसार	≡)
५.	आदर्श गुरु शिष्य	।)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

१.	स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार	१)
२	भक्ति कुसुमाञ्जलि	॥)
३	हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि	।–)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

१.	आर्यसमाज के महाधन	२॥
२	वेद की इयत्ता	१॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

१.	धर्म और उसकी आवश्यकता	१)
२.	वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप	१॥)
३.	इजहारे हकीकत (उर्दू में)	॥≈)
४	सत्य निर्णय	१॥)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

१.	वेद सन्देश	)७५
२.	वैदिक सूक्ति सुधा	)३०
३.	दयानन्द वचनामृत	)३०

श्री पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

१.	गीता विमर्श	॥)
२.	गीता समीक्षा	१)
३.	गीता की पृष्ठ भूमि	)४०
४.	ऋषि दयानन्द और गीता	)१२
५.	आर्यसमाज का नवनिर्माण	)१२

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी कृत

१.	कांग्रेस का सिर दर्द	॥)
२.	आर्य-समाज और साम्प्रदायिकता	।–)
३.	आर्य-वीर-दल शिक्षण शिविर	।≈)
४.	आर्यवीर-दल का स्वरूप और योजना	≡)
५.	आर्यवीरदल लेख-माला	१।)

अन्य विद्वानों द्वारा लिखित

१.	विरजानन्द प्रकाश (पं० भीमसेन शास्त्री)	६)
२	स्वराज्य दर्शन (श्री पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित)	१)
३.	राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती)	।)
४.	भूमिका प्रकाश (संस्कृत में) पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री)	१॥)
५	एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द)	॥)
६	दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (कृष्णचन्द्र विरमानी)	‹।
७.	भजन भास्कर (संग्रहकर्त्ता डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न)	१॥)
८.	सनातन शुद्धिशास्त्र आर्यों का चक्रवर्ती राज्य	≈)
९.	आर्य डायरेक्टरी (पुरानी)	१)
१०.	सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण-अजिल्द	२)
११.	आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानीप्रसाद कृत)	१।)
१२.	वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त)	)३७
१३.	सन्ध्या पद्धति	)१२
१४	सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिह	)७५
१५	सार्वदेशिक सभा के निर्णय	)४५
१६.	आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०
१७.	आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण	१)
१८.	आर्यसमाज का परिचय	१)
१९.	साम संगीत	)५०
२०	उत्तरा खंड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द अजिल्द ६२, सजिल्द	)७५
२१	भारत में मुस्लिम भावनाओं का एक रूप (श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी) सजिल्द मूल्य	२)
२२.	दस अवतारों की कल्पना कैसे? (श्री हंसराज जी रिसर्च स्कालर	१)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

१	ईसाई षड्यन्त्र	।)
२	ईसाई पादरी उत्तर दें	)३०

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली ७ में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजीपाठक, मुद्रक और प्रकाशक के

गुरुकुल कांगड़ी

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



वार्षिक मूल्य ६) सृष्टि सम्वत दयानन्दाब्द विदेश से वार्षिक ८ या १२ शि०
वर्ष ४२ १९७२९४९०६६ १४१ जून १९६५ ज्येष्ठ २०२२ अंक ४

-: विषय-सूची :-

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीनतम प्रकाशन

वेद संदेश—यह पुस्तक वेदो के चुने हुए ३०० मन्त्रो का अर्थ सहित उत्कृष्ट सग्रह है। विषयो का चुनाव बहुत अच्छा है। मूल्य ७५ पैसे।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक मे वेदो की ५०० सूक्तियाँ अर्थ सहित प्रस्तुत की गई है इन सूक्तियो को पढने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लडको और लडकियो का असीम लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है। मूल्य ३० पसा।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक मे विविध विषयो पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनो का सग्रह उपस्थित किया गया है। मूल्य ३० पैसा।

※ सम्पादक
रामगोपाल शाल वाले सभा मन्त्री

※ सहायक सम्पादक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

※ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

※ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७४७७१

※ मुद्रक
रघु प्रेस, जोगीवाड़ा, दिल्ली

सम्पादकीय

ईसाई षडयन्त्र

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास पानपोष जिला सुन्दरगढ़ (उड़ीसा) के सामने जो आर्य समाज का सुदृढ एवं शक्तिशाली प्रचार केन्द्र है, ईसाई मिशन ने अपना प्रचार-केन्द्र बनाने के लिए १५ एकड़-भूमि क्रय करके एक विषम और विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करदी है।

इस आश्रम के निकट लुंगई ग्राम है जिसमे सब आदिवासी कहे जाने वाले उरांव लोग रहते हैं जो अभी तक हिन्दू हैं। यह सारा इलाका वेदव्यास का है। वेदव्यास मन्दिर पास ही नदी के किनारे है जो हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यहां प्रति वर्ष शिवरात्रि के पर्व पर मेला लगता हैं।

इस समस्त इलाके में और आसपास ईसाइयों का जाल फैला हुआ है। उनके अनेक मिशन सक्रिय हैं। अनेक स्कूल, कालेज, हस्पताल आदि बने हुए हैं। वैदिक वेदव्यास आश्रम जिसके प्राण श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती हैं पादरियों की आंखों मे खटकता है। स्वामी जी ने कई वर्ष हुए इस आश्रम की स्थापना की थी और इसे आर्य समाज का प्रचार-केन्द्र बनाया था। तब से लेकर अब तक इन्होंने हजारों ईसाइयों को शुद्ध किया और हजारों हिन्दुओं को ईसाई बनने से बचाया। आश्रम के आधीन अनेक प्रचारक प्रचार कार्य कर रहे और कई स्कूल, पाठशालाएं, गुरुकुल और औषधालय चल रहे हैं। यह सब कार्य सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में हो रहा है। इस आश्रम के कारण उस इलाके में ईसाई मिशन का कार्य एक प्रकार से ठप्प हो गया है और वे इस आश्रम को बन्द कराने का षडयन्त्र रचते रहते हैं। उपर्युक्त १५ एकड़ भूमि का क्रय किया जाना इस षड़यन्त्र का ही एक अंग है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री पं० रुचिराम जी आर्योपदेशक स्थिति का निरीक्षण करने के लिए वहां गए थे। उनकी रिपोर्ट है कि वहां के आदिवासी हिन्दू ईसाइयों की इस योजना से बड़े क्षुब्ध हैं। अपने तीर्थ स्थान के निकट मिशन न बनने देने के लिए कृतसंकल्प हैं चाहे इसका इन्हें कितना ही मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। खतरा अभी तक नहीं टला है। यदि वेदव्यास के निकट ईसाई मिशन स्थापित हो गया तो यह हमेशा के लिए अशान्ति का कारण बना रहेगा।

अतएव मैं भारत सरकार को निवेदन करूंगा कि वह इस मामले को हाथ में लेकर समय रहते उचित पग उठाए और उड़ीसा सरकार को आदेश दे कि इस विवादास्पद भूमि को अपने अधिकार में लेकर हमेशा की अशान्ति के कारण को मिटा दे।

यदि सरकार ने समय रहते कार्यवाही न की और ईसाई मिशन बन जाने दिया तो इस इलाके की शान्ति खतरे में पड़ जायगी जिसके अनेक दुष्परिणाम होंगे।

—रामगोपाल

सम्पादकीय

टिप्पणियां

अणु शक्ति को ईश्वर न बनाओ

जेनेवा में तथा अन्यत्र इस बात पर विचार होता रहा है कि औद्योगिक विकास का एक नया युग लाने के लिये अणुशक्ति का समुचित प्रयोग किया जाय। जहां तक अणुशक्ति की संहारकारिणी क्षमताओं को नियन्त्रित करके मानवजाति को सम्पूर्ण विनाश से बचाने का प्रश्न है इस प्रकार का उद्योग सराहनीय है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उस औद्योगिक विकास की अब भी आवश्यकता है जिसका भयंकरतम अभिशाप अणुबम के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है और जिसने मनुष्य को मानव से दानव बनाने मे कोई कसर नही छोड़ी है। संसार ने एक शताब्दी पर्यन्त मानव जाति के औद्योगिक विकास का ड्रामा देखा है और वह इस ड्रामे के दुखांत दृश्यो से भयभीत हो गया है। इस काल में औद्योगिक विकास का स्तर जितना ऊंचा हुआ उतना सभ्यता का स्तर ऊंचा नही उठा है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध दार्शनिक हैनरीबर्गसन की चेतावनी ध्यान देने योग्य है। उन्होंने कहा था।

With the new technical discoveries only the body of mankind has developed, but not its soul and its spirit. A weak and primitive soul in an over civilised body, in this dwells the great danger. We need a supplement d'a' me, then and then we by means of modern science become an instrument of high performances une machine a creer des deud, a machine to make gods''

अर्थात् नवीन औद्योगिक अनुसन्धानों से एकमात्र मानव, समाज का शरीर विकसित हुआ है उसकी आत्मा और भावना का विकास नहीं हुआ। अत्यधिक सुसज्जित शरीर में दुर्बल और अविकसित आत्मा निवास करती है यही सबसे बड़ा खतरा है। हमें एक पूरक वस्तु की आवश्यकता है तभी हम वर्तमान विज्ञान के द्वारा उच्च कार्यों को सम्पन्न करने वाले बन सकते है। हमें देवताओं का निर्माण करने वाली मशीन की आवश्यकता हैं।

देवताओं का निर्माण करने वाली मशीन क्या है? वह मशीन है धर्म। धर्म ही मनुष्य को देव बनाता है। धर्म ही मनुष्य को प्रकृति की दासता से मुक्त करके उसे पशुत्व पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनाता है। धर्म ही मनुष्य को विश्व बन्धुत्व, सेवा और परोपकार को प्रेरणाएं देकर समाज में शान्ति, प्रेम, कर्मठता और पवित्रता का वातावरण उत्पन्न करने और बनाए रखने मे समर्थ हैं। ससार में ईसाइयत, इस्लाम, जैन तथा बौद्ध मतादि अनेक मत प्रचलित है फिर भी नैतिक गुणो का ह्रास, भय, सन्देह, घृणा और असहिष्णुता का वातावरण व्याप्त क्यो है? भोग प्रधान बनती जा रही संस्कृति में धर्म की प्रेरणाओ को हृदयस्थ करने के लिए मनुष्य को न तो फुर्सत है और न इच्छा है। यदि धर्म की प्रेरणाओ का भौतिक प्रेरणाओ पर प्रभुत्व कायम होता तो अविश्वास, भय, घृणा, स्वार्थपरता, लोभ, काम और क्रोध का प्राबल्य न हुआ होता जिसके परिणाम स्वरूप विश्व में तबाही मची हुई है और न अणुशक्ति को ईश्वर तथा आतंक को उसके पैगम्बर का रूप धारण कर लेने का खतरा ही उपस्थित हुआ होता। धर्म की प्रेरणाओ के ह्रास के लिए उपर्युक्त विविध मत जिम्मेवार हैं। इन मतों के सिद्धांत और उपदेश इतने लचर और कुछ अवस्थाओं में इतने अनर्गल है कि इस रोशनी के जमाने में विज्ञान के इस युग मे लोग उन पर मखौल उडाते है उन पर ध्यान देने की बात तो दूर रही। इन मतो की नैतिक उत्तरदायिता का दायरा उसी प्रकार सीमित होने से जिस प्रकार अभी कुछ दिन हुए पूर्वीय जर्मनी के एक बच्चे के पश्चिमी जर्मनी में एक दुर्घटना में घायल हो जाने पर वहां के हस्पतालों में इलाज नही करने दिया गया था, मनुष्य मनुष्य का विरोधी बन गया। मुक्ति धर्म और ईश्वर

की ऊल जलूल व्याख्याएं प्रस्तुत करके, आचार की श्रेष्ठता पर बल देने के स्थान में रूढ़ियो अनुष्ठानो और मान्यताओं पर बल देने से धर्म-तत्वो का प्राबल्य एव व्यवहार नष्ट हुआ और लोगो में धर्म की उपेक्षा वा घृणा उत्पन्न हुई । यदि इन मतो के द्वारा अकेले मानवीय भ्रातृत्व का दायरा सीमित न किया जाकर विश्वव्यापी बना रहता तो बहुत सम्भवत दूसरा महासमर टल गया होता और ५ करोड़ व्यक्तियो ने अपनी जान से हाथ न धोए होते ।

अत ससार के कल्याण एव मनुष्य को देवता बनाने के लिए आवश्यक है कि भौतिक उत्थान के साथ २ मनुष्य के आध्यात्मिक उत्थान की भी अवस्थाए उत्पन्न की जाए । ये अवस्थाए प्राणीमात्र से प्रेम करने, उनकी सेवा सहायता करने और सच्चरित्रता एव परोपकार का जीवन व्यतीत करने से उत्पन्न होती हैं । यही वास्तविक धर्म हैं धर्म तत्वो का आदर और ईश्वर पूजा है । ईश्वर को किसी मन्दिर या मठ मे बिठाया जाकर हमारी पूजा की आवश्यकता नही हैं वह तो हम सबको उसी प्रकार प्रेम करता हुआ देखना चाहता हैं जिस प्रकार गऊ अपने नवजात बच्चे से प्रेम करती है । यही उसकी सच्ची उपासना है ।

धार्मिक भावनाओ के प्रबल होने एव पारस्परिक प्रेम और सद्भाव को व्यवहार का आदर्श बनाने से ही विश्व व्यापक तनाव कम हो सकता है और अणुशक्ति ईश्वर का रूप ग्रहण करने से रुक सकती है ।

भारत के प्रति पाकिस्तान की घृणा ।

पश्चिमी जर्मनी के डाई वेल्ट नामक समाचार पत्र ने पाकिस्तान पर प्रबल आक्षेप किया है कि वह भारतवर्ष के विरुद्ध उसके वास्तविक हितो की नितान्त उपेक्षा पूर्वक घृणा का प्रचार कर रहा है ।

उसके सम्वाददाता के अनुसार जिसने अभी हाल मे पाकिस्तान का दौरा किया था पाकिस्तान का मूल-मन्त्र घृणा है । पाकिस्तान को सघठित रखने के लिए घृणा के इस प्रचार का उपयोग किया जा रहा है ।

उक्त पत्र का कहना है कि "पाकिस्तान का अस्तित्व इस बात पर आश्रित है कि जिसकी आस्था दूसरे परमात्मा मे हो उसका अपना राज्य होना चाहिए ।"

इस प्रकार प्रारम्भ बिन्दु के होते हुए किसी भी व्यक्ति के लिए अपने को २० वी शती के अनुरूप बना लेना बडा कठिन है । भारत और टर्की जैसे राज्य अधिक अच्छी स्थिति मे है जहा राज्य और धर्म एक साथ जुडे हुए नही है ।

पूर्वी पाकिस्तान के दगो को भड़काने मे अयूब प्रशासन के मन्तव्यो का विश्लेषण करते हुए उक्त पत्र कहता है कि इनका लक्ष्य पूर्वी भाग मे पृथकता वादी आन्दोलनो को कुंठित कर देना था जहा की जनता आर्थिक और राजनैतिक असमानताओ को बडे दुख के साथ अनुभव करने लगी है ।

विश्लेषण से स्पष्ट हुआ है कि पश्चिमी पाकिस्तान पूर्वी पाकिस्तान से १९ गुनी चाय, ६ गुनी सिगरेटो, तिगुने वस्त्रो और शकर और दुगने कागज और कोयले का उपभोग करता है ।

यदि भारत बीच मे न होता तो यह क्षेत्रीय असमानता समस्त राज्य के अस्तित्व के लिए कही अधिक खतरा बन जाती ।

सत्य यह है कि यह भय या भारत के प्रति घृणा ही पाकिस्तान के राज्य को मिलाए हुए है । यदि भारत का अस्तित्व न होता तब भी बहुत से पाकिस्तानी राजनीतिज्ञ इसका आविष्कार कर देते ।

अमेरिकन विद्वान व पुनर्जन्म

श्रीयुत ग्राफरे 'वर्ल्ड फोरम' में लिखते हैं

पुनर्जन्म का सिद्धान्त अब व्यापक रूप से स्वीकार होने लगा है। पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में अधिक जहां हजारों के स्थान में लाखों व्यक्ति शाकाहारी हैं अकेली यह बात इस तथ्य की सूचक है कि हम जो पदार्थ खाते है उनमें और जीवनोद्देश्य की भावना मे घनिष्ठ सम्बन्ध है।

यदि पूर्व जन्म की सच्चाई में जरा सा भी तथ्य है जो आध्यात्मिक विकास का एक मात्र साधन है तो हमें यह सोचना चाहिए कि सृष्टि की व्यवस्था में बेजुबान जीवों और प्राणियों को जो हमारे भाई के समान हैं हमे किसी प्रकार की पीड़ा देने का अधिकार है या नही जब कि हम स्वयं दूसरों से पीड़ित नहीं होना चाहते।

पुनर्जन्म का सिद्धान्त यह है कि आत्मा भौतिक शरीरों में जैसा कि हमे इस समय प्राप्त हैं जन्म-जन्मान्तरों में अपना विकास करता हैं। जन्म और मृत्यु दरवाजे हैं जिनके द्वारा हम क्रिया-कलाप के इस विशेष क्षेत्र मे प्रवेश करते और इसे छोड़ते है। इस ससार मे हमें जीवन के जो भिन्न भिन्न स्वरूप देख पडते हैं वे सब भौतिक जगत में ज्ञान प्राप्ति और विभिन्न सबक सीखने के माध्यम हैं। आराम और नाना प्रकार के अनुभवों की प्राप्ति के उपरान्त हम पूर्व जन्म के संस्कारों के साथ बार बार जन्म लेते रहते हैं।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त से अद्भुत बालकों के चमत्कारों का रहस्य सहज ही ज्ञात हो जाता है। बच्चे एक मात्र अपने माता-पिता के रजवीर्य सम्मिश्रण का ही फल नहीं होते यह बात भी सहज ही सुस्पष्ट हो जाती हैं। अपनी बुद्धि और प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर पुनर्जन्म के सिद्धान्त की व्याख्या को स्वीकार करना अधिक युक्ति युक्ति है बजाय यह मानने के जैसा कि विज्ञान-वेत्ता हमें विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं कि हम प्रकृति के खिलौने हैं और हमारे समस्त जीवन में रक्त और वीर्य का प्रभुत्व रहता हैं जब कि मरने पर आत्मा या जीवन शक्ति के निकल जाने पर ये सब तत्व काम करना छोड़ देते है। प्रश्न यह है क वे तत्व काम करना क्यो छोड़ देते हैं ?

वैज्ञानिकों का यह भी दावा है कि बच्चे माता पिता के गुणों और अवगुणों को लेकर जन्म लेते है यह प्रकृति के विशुद्ध भौतिक पहलू होते है। पुनर्जन्म के सिद्धांत से वंश-परम्परा के इस विवादास्पद विषय पर भी बड़ा प्रकाश पड़ता है।

हम मे माता पिताओं की कुछ अनुरूपता का होना सम्भव है क्योंकि वे इस जगत के उपयोग के लिये हमारे माध्यम स्वरूप हैं परन्तु बच्चों मे और उनके माता पिताओं में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक समानता नहीं होती। परन्तु यदि माता-पिता के तत्व बच्चों के एक मात्र निर्माता अंश होते हों तो उनमें उपर्युक्त विभिन्नता क्यो ? वैज्ञानिक लोग यह भी कहते है कि कुछ पीढियों में उत्पत्ति सम्बन्धी कुछ परिवर्तन होने से रह सकते है परन्तु वे अचानक उभर भी आते है। इस स्थापना से पुर्नजन्म के पक्ष की पुष्टि ही होती है जो इस बात की शिक्षा देता है कि आत्माएं वहां जन्म लेती हैं जहां दृढ आकर्षण होता और आत्माओं को अपने कार्यों का ठीक ठीक फल मिलने की अवस्थाएं होती हैं।

बहुत से लोग यह कहते हैं कि बच्चे अपने माता पिता के रोग से पीड़ित होते हैं यह बात वैज्ञानिक परम्परा के पक्ष में प्रमाण नही है।

ये बातें प्रसंग वशात कह दी गई हैं। यदि यह जगत आत्म-सुधार का स्थल है तो हमें सब प्रकार के मनुष्यों और प्राणियों के प्रति अपने रुख पर विचार करना होगा।

यदि हम यह मानें कि यह जगत गड़बड़ घुटाला है आकस्मिक चमत्कारों की शृंखला है जिसमें क्रिया और प्रतिक्रिया को शासन में रखने के लिए कोई नियम या व्यवस्था नहीं हैं और कार्य-कारण भाव की कोई संगति नहीं हैं तो हमारे व्यवहार से कोई सरोकार नहीं है। उस अवस्था में न तो हमें भूत की चिन्ता होनी चाहिये न वर्तमान की न भविष्य की न सदाचार की और न हीं अपने आचरण की उत्तरदायिता लेने की आवश्यकता होनी चाहिये। यदि हम पशु बने रहें या पशुओं की तरह दूसरे प्राणियों की हत्या करके उनका मांस खाते रहे या चीर फाड़ कर उनको पीड़ा पहुँचाते रहे तो इस में आश्चर्य ही क्या ?

यदि इसके विपरीत, जीवन का कोई उच्च उद्देश्य है, जीवन में नियम और व्यवस्था दीख पड़ती है सृष्टि के चमत्कार कुदरत के नियमों के आधीन हैं, और धीरे २ आत्मिक उन्नति अनुभव होती है तो हमें यह अनुभव हो सकता है कि हमारे व्यवहार और प्रतिक्रिया का बड़ा महत्व है क्योंकि जो कुछ हम करते है उसका प्रभाव हमारे ही ऊपर नही वरन अन्यों पर भी पड़ता है।

दुःखद वियोग

आर्य जगत् मे यह समाचार बड़े ही दुःख के साथ सुना गया कि बम्बई के एक प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री कान्ति लाल शर्मा का १२ मई की प्रातःकाल स्वर्गवास हो गया। शर्मा जी आर्य समाज बम्बई और बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। वे एक दृढ़ एवं सम्भ्रान्त आर्य सामाजिक थे और उत्साह एवं शक्ति के पुंज और महर्षि के अनन्य भक्त थे। वे सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के भी सदस्य थे। आर्य समाज के बड़े ही उत्साही और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। कांग्रेस में भी उन्होंने बहुत कार्य किया था। गत हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समय उनका योगदान बडा प्रशसनीय रहा।

अभी थोड़े दिन की बात है कि वे रुग्ण होते हुए भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग मे १८ अप्रैल को भाग लेने आये थे। मथुरा में श्री विरजानन्द कुटिया के निर्माण कार्य को प्रारम्भ कराने के लिये वे स्वयं मथुरा गए और तत्सम्बंधी कार्य में बराबरयहां २३ अप्रेल तक लगे रहे। वे जल्द से जल्द कुटिया का निर्माण-कार्य प्रारम्भ कर उसे पूर्ण करना चाहते थे। कहते थे कि श्रीमान सेठ प्रतापसिंह जी ने इस महान दायित्व के पूरा करनेका भार उन पर छोड़ा है। उसे अवश्य ही शीघ्र पूरा करना है। पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती से इस कुटिया के निर्माण सम्बन्धी सभी कार्यों के विचार मे वे लगभग एक सप्ताह तक दिल्ली मे व्यस्त रहे। जाते समय कह गए कि कुछ आवश्यक प्रारम्भिक बाते तब तक ठीक हो जावेंगी और वे शीघ्र ही लौट कर मथुरा में कार्य प्रारम्भ करावेंगे। काल की गति अविज्ञेय है। इधर निर्माण-कार्य की भूमिका तैयार हो रही थी कि यहां १२ का तार १५ को मिला कि १२ मई ६५ को प्रात: शर्मा जी सदा के लिए इस संसार से चल बसे। ऐसे मनस्वी कार्यकर्त्ता के चल बसने से महान दुख का अनुभव हो रहा है। आर्य जगत की जो महती क्षति हुई है उसकी पूर्ति कठिन है। बम्बई समाज और बम्बई प्रतिनिधि सभा की तो अपार क्षति हुई है।

परमेश्वर दिवंगत आत्मा को सद्‌गति दे। सार्वदेशिक सभा इस दुख में उनके परिवार तथा समस्त आर्य जगत के साथ दुःखी है।

प्रशंसनीय निर्णय

आर्य समाज के मूर्धन्य नेता स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी के जन्म को आगामी बसन्त पंचमी माघ शुक्ला ५ बसंत २०२२ वि० को १०० वर्ष पूरे हो जावेंगे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा ने अपनी वाराणसी की बैठक में दि० २५-४-६५ मे यह निश्चय किया है कि पूज्य स्वामी जी महाराज की जन्म शताब्दी पूरे समारोह के साथ मनाई जाय।

स्वामी जी महाराज का जन्म अलीगढ़ मे और देहावसान १५-१०-४७ को बरेली नगर में हुआ था। पर्याप्त समय तक आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कर्णधार रहे और सभा कार्यालय को लखनऊ में केन्द्रित करते समय सभा भवन का नाम नारायण स्वामी भवन रखा गया।

गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के निर्माण एवं उत्थान में भी आपका महान सहयोग रहा है। अनेक वर्षों तक आप उसके मुख्याधिष्ठाता रहे हैं। सन्यास आश्रम की दीक्षा लेने के उपरान्त आप ने रामगढ जिला नैनीताल में जाकर साधना की और वहां जो कुटी निर्माण की वही शनै. २ नारायण आश्रम के रूप में विकसित हुआ जहां उनका अपना वृहद् पुस्तकालय विद्यमान है।

भागीरथी के तट पर हरिद्वार में आपने भूमि क्रय कर आर्य विरक्त (वानप्रस्थ सन्यास) आश्रम स्थापित किया, जिसने अब बढ़ कर वृहदरूप धारण कर लिया है और जो अब समूचे आर्य जगत में सब से बड़ा आश्रम माना जाता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण एव विकास में भी आपका प्रशंसनीय योग दान रहा है। महर्षि दयानन्द की निर्वाण अर्ध शताब्दी अजमेर एवं जन्म शताब्दी मथुरा को अत्यधिक सफलता प्रदान करने में आपका ही प्रमुख हाथ रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह के तो आप सूत्रधार ही थे।

महात्मा जी अत्यत स्वाध्यायशील वक्ता एव उच्च कोटि के लेखक थे। आपने अपने जीवन में अनेक ग्रंथ लिखे है। उ० प्र० की सभा इस जन्म शताब्दी के. अवसर पर आपके ग्रन्थो को सग्रह रूप मे नारायण स्वामी ग्रन्थावली के नाम से प्रकाशित करने जा रही है।

माघ कृ० १४ से माघ शु० ५ (बसंत) तक अर्थात दि० २० से २६ जनवरी १९६६ ई० तक नारायण स्वामी जन्म शताब्दी सप्ताह भारतवर्ष भर मे और विशेषकर उत्तर प्रदेश में बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा। उत्तर प्रदेश में लखनऊ, अलीगढ, मुरादाबाद, गुरुकुल वृन्दावन, मथुरा, रामगढ़ (नैनीताल), वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) एवं बरेली स्थानों का आपकी जीवन की घटनाओं के साथ घनिष्ठ सम्बध रहा है। अतः इन स्थानो पर विशेष समारोहो का आयोजन किया जायेगा। उत्तर प्रदेश के बाहर देहली, अजमेर, शोलापुर, तथा आंध्र (हैदराबाद) का भी उनके जीवन से विशेष सम्बंध है, अतः वहा भी विशद् रूप में कार्यक्रम रक्खा जाना है।

उ० प्र० की सभा ने एतदर्थ एक समिति का निर्माण किया है जिसकी शीघ्र एक बैठक होगी और जन्म शताब्दी का कार्यक्रम निर्धारित करेगी। स्वामी जी के जीवन से सम्बद्ध सस्थाओं एव स्थानों को शीघ्र ही अपना २ कार्यक्रम निर्धारित कर आर्य प्रतिनिधि सभा को सूचित करना चाहिए।

गृह प्रवेश का उद्देश्य

श्री प० आशुराम जी आर्य पुरोहित

भगवान ने अपनी सुन्दर सृष्टि में घर का निवास मनुष्यों को किस लिए दिया ?

स्वर्गधाम बनाने की योजना

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो
अनमीवो भवान ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे
श चतुष्पदे ॥

(गृहाश्रम प्रकरण सस्कार विधि) ऋग् ७-५४-१

भावार्थ—हे गृहपति भगवान ! हमे अपनी शरण मे लो=अपनाओ, हम उत्तम भावो तथा व्यवहार युक्त होकर पाप हिन्सा रोग और दुख से मुक्त हो तेरी उपासना मे सलग्न रहे। तेरा प्रेम हमे प्राप्त हो और हमारी प्रजा तथा पशुओ के लिए सुख शान्ति और आनन्द बना रहे वास्तु पति वास्तव मे जगत पिता परमात्मा है जो सबको वास देने तथा सब प्रकार की वास्तु कला, भवन तथा घरो का एक मात्र स्वामी, पिता और पति है। (पतिरेक आसीत् आदि यजुर्वेद २५।१०) मकान शाला भवनादि बनाने की विधि भी वेद ज्ञान के द्वारा बतलाई हुई उसी की है। अथर्व ९।३ जिन साधनो से सामग्री से निर्माण होना है मिट्टी, जल, पत्थर, ककर, बजरी, लोहा और लकडी आदि वह भी सब भूमि मा की गोद के द्वारा उसी प्रभु से प्राप्त होते हैं। इसलिए महर्षि दयानन्द ने शाला (भवन) निर्माण और प्रवेश की पद्धति सस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण मे लिखते हुए उपरोक्त तथा ऐसी अनेक ऋचाओ

कांग्रेस कार्य समिति का प्रस्ताव

काग्रेस कार्यसमिति द्वारा भाषा के सवाल पर २ जून ६५ को सव-सम्मति से पारित प्रस्ताव अविकल रूप मे निम्न प्रकार हैं :—

(१) प्रत्येक राज्य के लिए यह अनिवार्य होगा कि वह विश्व विद्यालय स्तर तक शिक्षा व्यवस्था मे तीन भाषा फार्मूला कडाई से लागू करे।

(२) सघीय लोक-सेवा-आयोग की परीक्षा अग्रेजी हिन्दी तथा उन सभी राष्ट्रीय भाषाओ मे होगी जो सविधान की आठवी अनुसूची मे लिखी गई है। इस निश्चय को जल्दी लागू करने के लिए सभी कदम उठाये जायगे।

(३) संघीय लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ मे हिन्दी तथा अंग्रेजी के प्रश्नपत्र अनिवार्य होंगे। जिनका माध्यम हिन्दी होगी, उन्हे एक अन्य भाषा के प्रश्नपत्र का उत्तर भी देना होगा।

(४) इसके लिए (क) प्रत्येक राज्य मे राज्य की भाषा जल्दी से जल्दी शिक्षा तथा प्रशासन की भाषा बनाई जायगी, (ख) हिन्दी की शिक्षा का स्तर ऊचा उठाया जायगा तथा (ग) अग्रेजी की पढाई जारी रहेगी।

(५) हिन्दी के विकास तथा अधिकाधिक प्रयोग के लिए आयोजित-कार्यक्रम तैयार किया जायेगा तथा उसे लागू किया जायेगा, जिससे यह केन्द्र की राजभाषा तथा पूरे देश की सम्पर्क भाषा का कार्य कर सके। हिन्दी का विकास सविधान की धारा ३५१ के अनुसार होगा।

(६) अन्य भाषाओ के विकास का कार्यक्रम बनाया जायेगा और उसे भी लागू किया जायगा।

इस प्रस्ताव के सम्बन्ध मे आर्य समाज की प्रतिक्रिया का शीघ्र ही प्रचारित किया जाना आवश्यक है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

से आहुति देने का विधान किया है। महात्मा यास्क आचार्य ने "अर्थ वाच पुष्प फलमाह" के अनुसार अर्थ को वाणी का पुष्प और फल कहा है। कतिपय ग्रन्थो मे अर्थ का मन्त्र की आत्मा कहा है। अर्थानभिज्ञ को उन ग्रन्थो का भार ढोने वाला पशु और जड़ वृक्ष कहा है (निरुक्त १।१८) इसलिए स्वभाविकतया मननाथ जब इन मन्त्राथो पर ध्यान जाता है तो ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त उन सभी ऋषियो के चरणो मे हृदय और मस्तिष्क अनन्य श्रद्धा से झुक जाता है जिन्होंने कि वेद ऋचाओ के व्याख्यान और गृह्य सूत्र ग्रन्थो द्वारा इन पद्धतियो का निर्माण कर मानवता की रक्षा के लिए कोटिश अनुपम उपकार किया। इसलिये पितर, देव और मनुष्यो को ज्ञान कराने वाली सनातन आख मनु ने वेद ही बतलाई।

"पितृ देव मनुष्याणाम् वेदश्चक्षुः सनातनम्।" मनु १२।६४ ऋषि दयानन्द आये तो उन्होने भी इन ऋषियो के पदचिन्हो पर चलते हुए वेद को हाथ मे लेकर ससार के मनुष्यो को जगाते हुए कहा कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' 'और फिर वेदादि सत्शास्त्रो के स्वाध्याय अर्थात् पठन पढाने से ही तो ऋषि ऋण से उऋण हो सकते है जिनके द्वारा यह प्रकाश मार्ग कोटि कोटि वर्षो से प्रतिक्षण मानव जीवनकी रक्षा करता आ रहा है।

भवन किसका ?

मन्त्र मे वेदमाता के उपदेश से कैसे सुन्दर भावो का परम आस्तिकता के साथ गृह पति पत्नि आदि परिवार के अन्त करण मे समावेश होता है जब वे मन्त्र के साथ वास्तोष्पते' का सम्बोधन करके घर का मालिक स्वामी और गृहपति उस परब्रह्म परमेश्वर को मानते हुए प्रवेश करते हैं।

मन्त्र मे भगवान को वास देने वाला कहा है, इसलिये कि बनाने की सारी सामग्री ब्रह्मदत्त है। साथ ही बनाने की विधि भी तो बताई हुई जगत ब्रह्म की है।

कैसा घर बनाओ ?

भवन अत्यन्त सुन्दर, उप्यान युक्त, जिसके देखने मैं मन हर्षित हो कोने के सामने कोना हो, खिडकी के सामने खिडकी हो द्वार के सामने द्वार हो जोड, बन्धन और गाठे सभी सुदृढ और ईंट पत्थर की चिनाई बेजोड, सुन्दर और पक्की हो। वस्तु भण्डार, यज्ञशाला, उपासना गृह, पुरुषो और देवियो के बैठने के स्थान अलग अलग, घर मे सभादि के लिये स्थान हो। भोजनशाला स्नानागारादि सब पृथक २ हो जिससे देखने, प्रयोग और कला की दृष्टि मे गृह भवन उत्तम हो। ऋषि दयानन्द लिखते है कि इस प्रकार की दिव्यशाला कमनाय (अति सुन्दर) बनाई हुई सुखदायक होती है।
अथर्व० कां० ९।३।७ (सस्कार विधि गृहाश्रम प्रकरण)

दो चौकीदार हर समय रखवाली के लिये विद्यमान रहे। वह है वायु और अग्नि वा सूर्य। 'इन्द्राग्नि रक्षता शालाम्।' अथर्व ९।३।१९

इन दोनो की देख-भाल के अतिरिक्त वायु का प्रवेश घर मे सब ओर से हो। जिस ओर का वायु चले घर मे बेरोक टोक आ सके। निवास करने वाले ऐसे सुरक्षित हो जैसे माता के गर्भ मे बालक। घर हर समय सजा हुआ ऐसा हो जैसे नव वधु। अथर्व० ९।३।२२ २४

बनाने वाले कैसे हो ? तो वेदमाता ने उत्तर दिया कि ब्रह्मणा शाला निर्मिता कविभिर्निमिता मिताम्। अथर्व ९।३।१९

अर्थात शाला वेदो के जानने वाले उत्तम विद्वान शिल्पियो से बनाई हुई प्रमाण युक्त हो। (ऋषि दयानद)

निवास करने वाले कैसे हों ?

बलारोग्य पराक्रम से युक्त धन धान्य से पूरित। जल दूध रसादि का पान करने वाले और परस्पर राग, द्वेष, वैमनस्य तथा रोग से रहित होकर प्रेम प्यार तथा स्नेह के साथ सब प्रकार के अन्न से भरी हुई शाला मे निवास करे। अथर्व ९।३।१६

पुत्र पितानुगामी, माता के साथ एक मन, पत्नी पति के प्रति मीठे तथा शान्तिमय वचनो को बोलती हुई। भाई भाई से द्वेष रहित होकर प्यार करता हुआ। बहिन बहिन के प्रति स्नेह करने वाली इत्यादि सभी एक हृदय एक व्रत वाले होकर भद्र अर्थात कल्याणकारी वाणी को परस्पर बोलते हुए निवास करें। अथर्व ३-३-२-३

मन्त्र की शिक्षायें

१ न घर मेरा न घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा। घर तो प्रभु का है जो है इस संसार का और सभी गृह भवनो का गृहपति, वास्तुपति।

२ हमे प्रभु अपनाये, शरण में ले। अर्थात हम उस ब्रह्म के हो कर रहे। हा कौन किसे अपनाता और शरण में लेता है। जो उसका हो के रहता है। महर्षि दयानन्द ने इसकी रीति यो समझाई है कि—

'अति प्रेम से भक्ति विशेष किया करे।" केवल साधारण मन्त्र उच्चारण करके न इति श्री समझ ले।

आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात उसकी आज्ञापालन करने मे तत्पर रहे।" और क्या कहा?

ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से भक्ति विशेष किया करे। (संस्कारविधि प्रार्थना मन्त्रो का अर्थ)

३ हमारे भाव मन, व्यवहार, नियत, सकल्प, विचार और कर्म उत्तम हो।

४ पाप, हिंसा, दुःख, रोग और क्लेश से मुक्त हो।

जब पाप आने लगे तो स्मरण करें पिता तथा ऋषियो के उस आशीर्वाद को जो हमे जन्म के श्वास के साथ मिला था अर्थात पर्शुर्भव (जातकर्म संस्कार) से पुत्र पुत्री! फरसे के समान पाप को काटने के लिये तू सदा उद्यत रह। और परोपेहि मनस्पाय किमशस्तानि शंससि। अथर्व ६।४५।१

ऐ मन के पाप और दुर्विचार! तू परे हट। तू बुरे कर्मो की जो निंदनीय हैं की प्रशंसा करता हुआ मुझे उनमे धकेल कर बरबाद करना चाहता है। चल परे हट। इत्यादि।

५ ईश्वर की प्रार्थना और उपासना करते हुए, उसके चरणो में हृदय और मस्तिष्क को झुकाये हुए हर समय हमारे अन्तःकरण में यही ध्वनि हो। तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमः रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।

तुझ स्वामी के लिये, तुझ दाता के लिये, तुझ रक्षक के लिये, तुझ सब कुछ देने वाले के लिये हमारी बारम्बार नमस्ते तथा चरणो में समर्पण।

अन्त मे जो जो मन्त्रस्थ प्रार्थना है कि शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। वह अवश्यमेव पूरी होगी जब हमारे अंदर मन्त्र गत उपरोक्त आदर्श धारण हो जायेंगे।

तब हमारे घर बनेंगे स्वर्गधाम।

"सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन ३ और ४ जुलाई ६५ को डी.ए.वी. कालेज कानपुर में होगा"

Place of a Child in the Hindu Family

By : **Shree O. P. Tyagi Jee**

In Hindu Society children have an important role as a centre of hope of all the relatives for it is a permanent life-long attachment, so there is a fixed system of upbringing the children.

A son is called "putra" meaning one who redeems his parents. This aim is kept uppermost in the minds of the parents while culturing the young ones. Heaven stands for "Harmony and Happiness" and Hell for "discord and woe" during this very life.

Every person sees the decline of his physical strength and vitality in old age and is forced to depend upon others. Without anybody's help, old age takes the shape of hellish state. Worthy and duty conscious children do not let their parents suffer on such an occasion.

Transmigration :—

Hindu parents often ensure their comforts in their last days by educating and well equipping their sons to the best of their means.

They also believe that their children become instrumental in the achievment of 'Salvation after death.' By the theory of "transmigration of souls," the transcendence comes through various births in the same atmosphere and culture by learning various experiences and carrying their essence for progress in their next birth, but if the children are unworthy and forsake the patterns their predecessors, this process of evolution of the parents' souls will be hampered.

Hindu parents always desire that the good tradition of the family should be continued and preserved for many generations. So childless parents are considered as most unfortunate persons in the Hindu society.

Own self

They consider the children as part of their own "self" and 'personality to fulfil the incomplete cherished desires of their hearts. For example an illiterate father gloates in the academic degrees secured by his son, for he takes his son's success as his own.

There are numerable instances where the parents having left incomplete planned good deeds, on the death bed have asked their children to finalise them

नामकरण और तिथि-नक्षत्रों के देवता

(—श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार प्रकरण में तिथियों इनके देवता और नक्षत्रो तथा उनके देवताओं के नाम से आहुतियां देना लिखा है। कभी-कभी इस विषय पर लेख निकलते रहते है और ऐसी भी धारणाये प्रस्फुट होती रहती है कि यह पौराणिक विचारधारा है। परन्तु विचारपूर्वक अध्ययन करने पर ऐसा नहीं प्रतीत होता है यह विधान यद्यपि गृह्यसूत्रो का है परन्तु इसके पीछे वैदिक दृष्टि कोण है। वेद मंत्रो के अर्थ करने में आधियाज्ञिक आधिदैविक और आध्यात्मिक प्रक्रियाये पाई जाती हैं। इनमें आधिदैविक प्रक्रिया विज्ञान से सम्बन्ध रखती है। विज्ञान का एक बड़ा भाग ज्योतिर्विज्ञान से सम्बद्ध है।

आधिदैविक दृष्टि का व्यापक दृष्टिकोण हमे वैदिक साहित्य के देखने से प्राप्त होता है। छन्द.सूत्र के रचयिता पिंगलाचार्य ने—गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुव्, वृहती, विराट्, त्रिष्टुव्, और जगती-छन्दों के क्रमशः अग्नि, सविता, सोम, वृहस्पति, मित्रावरुण, इन्द्र और विश्वेदेवाः देवता माने है। यह प्रक्रिया ऋग्वेद के दशम मण्डल के १३० वे सूक्त के मत्रो से ली गई है। वेद के मुख्य छद सात हैं और उनके देवता भी मुख्यतया सात हैं। यज्ञ में भी सामान्यत इनका प्रयोग हैं। इस सूक्त के मंत्रो में यह बतलाया गया है कि सृष्टि मे इन छन्दों के साथ इन देवताओं का प्रकटीकरण हुआ। विस्तार इस सूक्त मे देखना चाहिए सायणाचार्य यहां पर क्या लिखते है—यतो ह्यग्न्यादि देवताभिः सह गायत्र्यादीनि सप्त छन्दांसि जातानि, अतो हेतोस्तेषां छन्दोसामग्न्या दयो देवतेति—अर्थात् अग्नि आदि देवताओ के साथ गायत्री आदि सप्त छन्द प्रकट हुए हैं अतः इन छन्दो के ये अग्नि आदि देवता है। पिंगल का सूत्र इस पकार है—अग्निः सविता सोमो वृहस्पतिमित्रा-वरुणाविन्द्रा विश्वेदेवा देवताः।

पिंगल ६।६३ ॥

इसी प्रकार पशुसमाम्नाय (यजुर्वेद २३,२४ अध्यायों) में पशुवो के नामों के साथ भी देवतावो का वर्णन है। यास्क ने इन पशुओं को इन दिव्य पदार्थों का अनुवादक और इनके विशेष गुणों वाला बतलाया है। 'अघोरामः सावित्रः" से उसने अघोराम पक्षी को सविता का पक्षी कहा है कृकवाकु की भी इसी प्रकार व्याख्या उसने की है। यही अवस्था तिथि देवता और नक्षत्र देवताओ की भी है। इनके साथ यदि कोई फलित ज्योतिष का सम्बन्ध लगाता है तो अनर्गल प्रलाप करता है और फलित ज्योतिष सर्वथा झूठा व्यर्थ है इन तिथि देवताओं के साथ फलित का कोई भी सम्बन्ध नही है।

ब्राह्मण ग्रन्थों मे विराट् को प्रजापति कहा जाता हैं। इस विराट् के भी आधिदैवत प्रक्रिया में अनेक रूप हैं। सवत्सरीय प्रजापति, नक्षत्रिय प्रजापति और हैरण्यगर्भ प्रजापति आदि भी इन ग्रन्थो मे पाए जाते हैं। संवत्सर का तिथियों से और नक्षत्र आदि का खगोलिक पदार्थों से स्पष्ट सम्बन्ध है। विराट् में अर्वाण्ड से खगोल के जिन लोकों की रचना होती है वे तारागण और नक्षत्र आदि हैं। इनमें जिन दिव्य पदार्थों के गुणों की विशेषता है उन्हें ही इन नक्षत्रों आदि का देवता दिया गया है।

तिथिया चन्द्रमा से गिनी जाने वाली तारीखे हैं। गणित मे इनका विशेष उपयोग है। ये सम्वत्सर रूपी विराट् भाग के भेद प्रभेद हैं। इन तिथियों के आधिदैवत विचार को ध्यान में रखकर इनके बोधक जिन देवता-वाचक पदों से इनकी सख्यावों का बोध होता है उन्हें इनका देवता कहा गया है। ज्योतिष मे चन्द्र से एक, बाण से पाच, वेद से चार आदि संख्याओ का बोध होता है। विधुरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे—का अर्थ १९३१ वां वर्ष होता है इसी प्रकार जिन तिथियों के जो देवता दिये गए हैं—वे इन संख्याओं के द्योतक हैं। प्रतिपदा का देवता 'ब्राह्मण'

है जो एक संख्या का बोधक है। द्वितीया का देवता त्वष्टा है जो दो का बोधक है। त्वष्टा सायं-प्रातः के सम्राटे का नाम है और वह है भी दो। विष्णु उदान, मध्यम् और अस्तमन् आदित्य प्रकार है इसका विक्रमण भी तीन है अतः यह तीन का बोधक है और तृतीया का देवता है। यम (अग्नि प्रकार) के चार भेद हैं अतः वह चार की संख्या का द्योतक और चतुर्थी का देवता है। सोम पांच का सकेतक हैं और पचमी का देवता है। कुमार अग्नि का एक प्रकार है जो कृत्तिका में पाया जाता है और वह छः प्रकार का होता है। अतः यह छः सख्या का संकेतक और षष्ठी का देवता है। मुनि, ऋषि, आदि सप्तर्षि नक्षत्रों के लिए प्रयुक्त होते हैं। ये सात ही होते है अत. सप्त संख्या के बोधक और सप्तमी के देवता है। वसु आठ हैं अतः वे अष्टमी के देवता हैं। शिव अग्नि का नाम है और वह नव प्रकार का है। शतपथ आदि में इसका वर्णन है (देखें मेरी पुस्तक वैदिक इतिहास विमर्श) अतः इससे ९ सख्या का बोध होता है और यह नवमी का देवता है। धर्म १० का बोधक है, यह दश प्रकार का होता है अतः दशमी का देवता है। रुद्र ११ हैं अतः वह एकादशी के देवता हैं। इसी प्रकार वायु, काम, अनंत और विश्वेदेव आदि से क्रमशः १२, १३, १४ और १५ सख्याओ का बोध होता है अतः वे क्रमशः द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा के देवता है। चन्द्र की कला की दृष्टि से तीस प्रकार की किरणें है। इन्हें ही पितर कहा जाता है अतः इनसे ३० संख्या का बोध होता है और वे अमावस्या के देवता हैं।

नक्षत्रों के देवताओ का सम्बन्ध विराट् के नक्षत्रिय प्रजापति से है। जिस नक्षत्र में जिस तत्व की विशेषता है वही इसका देवता है।

अश्वनी नक्षत्र के देवता अश्वी है। ये सख्या में दो है। 'आश्विनो" की विशेषता इसमे पाई जाती हैं। भरणी का यम देवता है—इत्यादि। ब्राह्मण ग्रन्थों और विशेषकर तैत्तिरीय ब्राह्मण में इनका विशेष उल्लेख पाया जाता है। शतपथ ब्राह्मण १२।८।२।३४ में (वसन्त ग्रीष्मा वेवाश्विनाम्याम् [प्रवरुन्धे]) अश्विनी के देवता अश्वी कहे गये हैं तैत्तिरीय १।५।५।७ (अनुराधा प्रथमम्, अप-भरणीरुत्तम तानि यमनक्षत्राणि) में भरणी का यम का नक्षत्र कहा गया है। कृतिका का देवता अग्नि है। कृतिका नक्षत्रों मे मुख्य है, यह अग्नि का नक्षत्र है. अग्नि इनका मिथुन है। दूसरे नक्षत्र एक, दो, तीन अथवा चार होते हैं परन्तु कृतिका मे बहुत से नक्षत्र होते हैं। मुखं वा सतन-क्षत्राणा यत्कृत्तिकाः—तै० १।१।२।१; एतदग्नेर्नक्षत्रं यत्कृत्तिकाः—तै०१।१।५।१; एतां वा अग्निनक्षत्रं यत्कृ-त्तिकाः-शतपथ २।१।२।१; पुरएताः (कृतिका उद्यन्ति) अग्निर्वा एतासां मिथुनम्-शतपथ २।१।२।५; एकं द्वे त्रीणि वा अन्यानि नक्षत्राणि अथैता एव भूयिष्ठा यत्कृतिकाः। श० २।१।२।२।

रोहिणी का देवता प्रजापति देवता । तैत्तिरीय में इसका वर्णन मिलता है कि विराट् ऊपर को चढ़ी अतः रोहिणी बनी, यह अग्नि की योनि है और प्रति-ष्ठिति है। यह प्रजापति का नक्षत्र है। —सा (विराट्) तत ऊर्ध्वारोहद्रोहिणी अभवत् तद्रोहिण्यं रोहिणीत्वम् तै० १।१।१०।६, विराट् सृष्टा प्रजापतेः। ऊर्ध्वारोह-द्रोहिणी। योनिरग्नेः प्रतिष्ठितिः। तै० १।२।२।२७, प्रजापते रोहिणी तै० १।५।१।१, रोहिणी देव्युदगात् पुरस्तात् प्रजापति हविषा वर्धयंती। तै० १।५।१।४,

मृगशीर्ष का सोम देवता है और इसके सम्बंध में इस प्रकार का वर्णन मिलता है। सोम राजा मृगशीर्ष के साथ आता है। वह प्रजापति रुद्र से बींधा गया भग गया अतः उसे मृग कहा जाता है। यह मृगशीर्ष नक्षत्र प्रजापति का शिर है। उस सोम ने इस सोम मृगशीर्ष के लिये श्यामाच चरु का दुग्ध में निरवाप किया अतः औषधियों का राज्य पद पाया। सोमो राजा मृगशीर्षेण आगन्—तै० ३।१।१।२, स प्रजापती रुद्रेण विद्ध उद-प्रयतत्तमेतं मृगः इत्याचक्षते। मैं० ३।१३, एतद्वै प्रजापतेः शिरोयन्मृगशीर्षम् श० २।१।२।८, स (सोमः) एतं सोमाय मृगशीर्षाय श्यामाकं चरुं पयसि निरवपत्। ततो वै स ओषधीनां राज्यमभ्यजयत्—तै० ३।१।४।३।

(क्रमशः)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार की पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे

१. ऋग्वेद सहिता सजिल्द	१० ००
२ अथर्ववेद सहिता सजिल्द	८ ००
३. यजुर्वेद सहिता सजिल्द	४ ००
४. सामवेद सहिता सजिल्द	३ ००
५ सत्यार्थ प्रकाश	२ २५
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२ ५०
७ सस्कार विधि	१ २५
८. आर्याभिविनय	० ७५
९ कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३ ७५
१०, मराठी सत्यार्थप्रकाश	१ ३७
११ पच महायज्ञ विधि भाष्यम	५ ००
१२. वेदविरुद्ध मत खडन	० ३५
१३. भ्रमोच्छदन	० ४५
१४ काशी शास्त्राथ	० २०
१५ भ्राति निवारण	० २५
१६ सत्याथप्रकाश आन्दालन का इतिहास	० २५
१७ विवाह पद्धति	० ५०
१८ गोकरुणानिधि	० १६
१९ आर्य वीर दल बजज	० ११ जोड़ी
२० आय समाज प्रवेश पत्र	१ ०० सैं०

निम्न प्रकाशन २० नेट प्रतिशत कमीशन पर दिए जायेंगे

१ सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	१ ५०
२ वदिक ज्योति (आचाय वद्यनाथ श स्त्रा)	७ ००
३ शिक्षण तरगिणी ,, ,,	५ ००
४ मसाबीहुल इस्लाम (उर्दू) , मूल्य	५ ००
५ Wisdom of the Rishis (Gurudutta M A)	४ ००

निम्न पुस्तकों पर इस प्रकार कमीशन दिया जायगा

१०) से २५) तक १२॥ प्रतिशत
२५) से ऊपर २५०) तक २० प्रतिशत
२५०) से ऊपर १०००) तक २५ प्रतिशत
१०००) से ऊपर २०००) तक ३० प्रतिशत
२०००) से ऊपर ३३⅓ प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय	२ ००
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१ ५०
३ वैदिक राष्ट्रीयता	० २५
४ अभ्यास और वैराग्य	१ ६५
५ बाल सस्कृत सुधा	० ५०
६ वैदिक ईश वन्दना	० ४०
७ वैदिक योगामृत	० ६२
८ दयानन्द दिग्दर्शन	० ७५
९ वेदो मे दो बडी वैज्ञानिक शक्तिया	० ७५
१० निज जीवनवृत वनिका अजिल्द	० ५०
निज जीवनवृत वनिका सजिल्द	० ७५
११. बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१० ००
१२. बाल जीवन सोपान	१ २५
१३ छान्दोग्य उपनिषद् कथा	१ ००
१४. दार्शनिक आध्यात्म तत्व	१ ५०
१५ वेदान्त दशन (सस्कृत मे)	३ ००
१६ वेदान्त दर्शन भाषा भाष्य	३ ५०
१७. वदिक वन्दन	५ ००
१८ भ्रम निवारण	० ३०
१९ वैशषिक दशनम् अजिल्द	२ ००
२० वशाषक दशनम् सजिल्द	२ ५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१ कम व्यवस्था	४ ००
२ दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	० ३१
३ चरित्र निर्माण	१ १५
४ ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	० १५
५. वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	० २५
६. दौलत की मार	० २५
७ अनुशासन का विधान	० २५
८ धम और धन	० २५

प्रकाशन कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१
दूरभाष २७४७७१

वार्षिक मूल्य
स्वदेश में—६)
विदेश में—८ रु० या १२ शि०
एक प्रति का मूल्य—५० पैसे

-: विषय सूची :-

देवव्रत धर्मेन्दु स्थिर निधि से प्रकाशित साहित्य

वेद-सन्देश —यह पुस्तक वेदों के चुने हुए ३०० मन्त्रों का अर्थ सहित उत्कृष्ट संग्रह है ! विषयों का चुनाव बहुत अच्छा है । मूल्य ७५ पैसे ।

वैदिक सूक्ति सुधा—इस पुस्तक में वेदों की ५०० सूक्तियां अर्थ सहित प्रस्तुत की गई हैं । इन सूक्तियों को पढ़ने तथा कण्ठाग्र करने से मुख्यतया लड़कों और लड़कियों का अमित लाभ हो सकता है और जीवन उच्च बन सकता है । मूल्य ३० पैसा ।

ऋषि दयानन्द वचनामृत—इस पुस्तक में विविध विषयों पर महर्षि दयानन्द के मार्ग दर्शक वचनों का संग्रह उपस्थित किया गया है । मूल्य ३० पैसा ।

मिलने का पता:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

❀ ओ३म् ❀

सार्वदेशिक

वेद-व्याख्या

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः।
नृभिः सुवीर उच्यसे ॥ ऋग्वेद ६। ४५। ६ ॥

विनय—'सुवीर'—सर्वश्रेष्ठ वीर—किसे कहना चाहिए? अन्त में तो प्रत्येक ही गुण की पराकाष्ठा भगवान् में है, परिपूर्ण वीरता का निवास भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का निवास भी उन्हीं में है। उनकी वीरता का अनुकरण करने वाले मनुष्य, नर लोग, सच्चे पुरुष उन भगवान् को ही 'सुवीर' नाम से पुकारते हैं। पर उनकी वीरता कैसी है? अज्ञानी लोग समझते हैं कि अपने शत्रु, द्वेषी का नुकसान पहुँचाने में सफल हो जाना ही बहादुरी है। यह निरा अज्ञान है। क्रोध के वश में आ जाना तो हार जाना है। क्रोधवश होकर मनुष्य केवल अपने को विषयुक्त करता है और जलाता है। एवं क्रोधी अपने शत्रु का नाश क्या करेगा वह तो अपना पहिले कर लेता है। ज्यों-ज्यों हम अपने द्वेषी के लिए अनिष्ट-चिन्तन करते हैं, त्यों-त्यों उसमें हमारे प्रति द्वेष और बढ़ता जाता है, उसका द्वेष, उसका शत्रुपन बढ़ता जाता है। उसे हानि पहुंचा लेने पर, उसके शरीर पर चोट दे लेने पर, यहां तक कि उसे मार डालने तक पर भी उसकी शत्रुता नष्ट नहीं होती, वह तो और बढ़ती जाती है। शत्रु के शरीर का, धन का, मान का एवं उसकी अन्य सब चीजों का हम बेशक नाश करने में सफल हो जाएं पर उतना ही उतना वह शत्रु (असली शत्रु) बढ़ता जाता है, उसका शत्रुपना बढ़ता जाता है। यह क्या हुआ? अत: वीरता (परमात्म देव से अनुकरणीय सच्ची वीरता) इसमें है कि हम उसकी बाहरी किसी चीज का नाश न करें (और क्रोध से हम अपना भी नाश न करें) किन्तु किसी तरह उसका—उसकी शत्रुता का नाश कर दें। उसके अन्दर हम ऐसे घुसें कि वह हमारा शत्रु न रहे, वह मित्र हो जाय। बहादुरी इसमें है कि हम क्रोध को जीत कर, धैर्य रख कर अपने द्वेषी के द्वेष भाव को बिल्कुल निकाल डालें, ऐसा निकाल डाले कि वह हमारी निन्दा करना तो दूर रहे वह हमारी प्रशंसा के गीत गाने लगे। यह है शत्रु पर विजय पाना। दर असल में ऐसी विजय पाने के लिए अपने में बड़ा भारी बल चाहिए—अपने में बलिदान की न खतम होने वाली शक्ति चाहिए, बड़ा धैर्य चाहिये, बड़ी भारी वीरता चाहिए। हम भी परिमित अर्थ में बोला करते हैं कि वीर वह है जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करें, पर हमें तो अपरिमित अर्थ में उस भगवान की सुवीरता का आदर्श अपने सामने रखना चाहिए जिनके विषय में भक्त लोग समझते कि आज संसार में जो लोग बिल्कुल उल्टे रास्ते जा रहे हैं वे भी एक दिन लौट कर भगवद् भक्त—भगवान् प्रशंसक—बनेंगे और भक्त होंगे। भगवान् की उस अपरिमित वीरता में से, हृदय-परिवर्तन करने की उनकी इस अनन्त शक्ति में से उनके अनन्त धैर्य में से हम भी कुछ ले लेवें, हम भी वीर बनें। —(वैदिक विनय)

सम्पादकीय

स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज

पूज्यपाद श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का आकस्मिक देहावसान २६ जून को प्रातः ६। बजे बम्बई में श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास के निवास स्थान पर हृदय की गति बन्द हो जाने से उस समय हुआ, जब स्वामी जी महाराज वायुयान से दिल्ली प्रस्थान करने की तैयारी कर रहे थे।

इस दुःखजनक समाचार से समूचे आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई है। इस समय वे आर्य समाज के मूर्धन्य नेता थे और आर्य समाज की आंखें उनके नेतृत्व पर टिकी थीं। मृत्यु के समय उनकी आयु ८३ वर्ष थी। वे स्वनिर्मित महानुभाव थे। आर्य समाज के कार्य में ही उनका एक-एक क्षण व्यतीत होता था। ऐसा लगता है कि उनके निधन से आर्य समाज अपनी किसी बहुमूल्य निधि से वंचित हो गया है।

पूज्यपाद श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती का असामयिक निधन आर्य समाज की महती क्षति है जिसका ठीक ठीक अन्दाजा इस समय नहीं लग सकता। ऐसे अवसर आयेंगे जब उनका अभाव बुरी तरह खटकेगा। उन जैसे महर्षि दयानन्द के भिक्षु जिनका एक-एक क्षण आर्य समाज पर अर्पित रहा हो मुश्किल से देखने को मिलेंगे। वे आर्य समाज के लिए जिये और उसी के लिए मरे यह कह दिया जाय तो इसमें अत्युक्ति न होगी। वे आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा को बहुत उन्नत और यशस्वी देखने के लिए लालायित रहते थे और इसके लिए उन्होंने कोई प्रयत्न उठा न रखा था। वे समाज को अपने व्यक्तित्व से ऊपर रखते थे। इसके लिए कितना ही बड़ा मूल्य क्यों न चुकाया जाय, अवसाद के कितने ही कड़े घूंट क्यों न पिए जाँय इसकी वे तनिक भी पर्वाह न करते थे। उनकी वाणी में और व्यक्तित्व में प्रभाव था। ऐसे अमूल्य रत्न को खोकर यदि आर्य समाज अपने को अकिंचन अनुभव करे और आर्य जगत् में शोक एवं सूनापन व्याप्त देख पड़े तो यह स्वाभाविक ही है।

श्री स्वामी ध्रुवानन्दजी (राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री) महाराज का जन्म सन् १८८२ में पानी गाँव (मथुरा) में हुआ था।

संस्कृत के अध्ययन के लिए उत्कण्ठा जागृत हो जाने और इसकी पूर्ति में घर वालों के बाधक बनने पर लगभग २३ वष की आयु में वह एक दिन रात्रि को चुपचाप घर से भाग निकले और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा संचालित मथुरा के विरजानन्द आश्रम में पहुँच गये। आश्रम के अध्यक्ष ने उन्हें संस्कृत पढ़ने की अनुमति दे दी। पढ़ाई के बदले में अवैतनिक रूप में इन्हें आश्रम के विद्यार्थियों के भोजन बनाने का कार्य सौंपा गया। जब स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आश्रम के अध्यक्ष बन कर गये और उन्होंने इनकी परीक्षा ली तो बड़े प्रसन्न हुए और इन्हें भोजन बनाने के कार्य से मुक्त कर दिया। स्वामी जी के चले जाने और नये अध्यक्ष के आ जाने पर विद्यार्थियों और अध्यक्ष के मध्य संघर्ष हो गया जिसके फलस्वरूप आश्रम टूट गया। वहां से वे रंगजी की बगिया में स्थित वृन्दावन के ऋषिकुल में पढ़ने के लिए गए। परन्तु सैद्धान्तिक मतभेद होने के कारण वहां अधिक समय तक रहना न हो सका और घर चले गए। स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को इसकी सूचना दी गई। वे सूचना पाकर

इनके घर गये और इनकी माता जी को यह आश्वासन देने पर कि इन्हें साधु न बनाया जायगा, अपने साथ साधु आश्रम (अलीगढ) मे ले आए और उनकी पढाई का समुचित प्रबन्ध कर दिया।

१९८ मे ये शास्त्री परीक्षा देने के लिए मुलतान चले गए। १९१९ मे पञ्जाब विश्व विद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर ली

इसके पश्चात् महाराजा कालेज जयपुर मे कुछ नव्य न्याय पढ कर काशी चले गए। वहाँ दर्शनों का अध्ययन किया।

१९२३ मे अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से तहसील माठ मे उन्होंने शुद्धि कार्य के अध्यक्ष के रूप मे काम किया। यह कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार बगाल द्वारा सचालित गुरुकुल वैद्यनाथ धाम में १९२६ से १९०८ तक आचार्य पद पर रह कर शिक्षण कार्य किया। शाहपुराधीश ने इनकी कर्मठता और कार्य कुशलता की प्रशसा सुन कर श्रीयुत युवराज सुदर्शनदेव जी को धर्म शिक्षा पढाने के कार्य पर नियुक्त करके शाहपुरा बुला लिया। राजाधिराज उम्मेदसिंह जी पर इनके आचार विचार का इतना प्रभाव पडा कि एक विशेष दरबार मे इन्हें राजगुरु की उपाधि से अलकृत किया। इससे पूर्व उन्होंने स्व० श्रीयुत राजा अवधेश सिंह जी कालाकाकर नरेश को वैदिक धर्म की दीक्षा दी और उन्हें आर्य समाज का भक्त बनाया, नजरगज पूर्निया, बिजुआ, झालावाड और देवास जूनियर आदि नरेशों को भी उन्होंने आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया।

१९३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे श्री राजगुरु जी ने चतुर्थ सर्वाधिकारी के रूप मे १५०० सत्याग्रहियों के साथ सत्याग्रह किया और सत्याग्रह की समाप्ति तक जेल मे रहे। इस अवसर पर सारे उत्तर प्रदेश का भ्रमण करके विपुल धन राशि सत्याग्रह के कोष मे जमा कराई। जब वह जेल मे थे तभी उत्तर प्रदेश के आर्य समाजों ने उनकी मूल्यवान् सेवाओं के आदरस्वरूप उन्हें सर्व सम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रधान निर्वाचित किया। जेल से छूट कर आने पर १९४० मे भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के इन्दौर सम्मेलन की अध्यक्षता की। इनके पद काल मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने भारी उन्नति की।

जब सिंध की मुस्लिम लीगी गवर्नमेन्ट ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाकर आर्यसमाज को चुनौती दी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस चुनौती को स्वीकार कर सत्याग्रह का निश्चय करके स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी को उसके सचालन का पूर्ण अधिकार दे दिया तो श्री स्वामी जी अपने साथ जिन तीन महानुभावों को लेकर कराची मे बैठे थे उनमे से एक श्री राजगुरु जी थे

महात्मा नारायण स्वामी जी ने सिन्ध सत्याग्रह का प्रथम सर्वाधिकारी इन्हे ही मनोनीत किया और इन्होंने जान पर खेलने वाले परखे हुए सत्याग्रहियों के साथ कैमारी (कराची) नगर की सडकों गलियों इत्यादि मे सत्यार्थप्रकाश का प्रवचन किया, उस पर भाषण दिये और यह ग्रन्थ बिकवाया। सिन्ध सरकार ने इन कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। इन्होंने ५६ दिन ऐसा किया। सत्यार्थप्रकाश की नीलामी कराई। एक सज्जन ने १ प्रति २५० रु० मे क्रय कर ली थी। सत्याग्रह के प्रवचन बिक्री आदि कराने का सिन्ध की गवर्नमेन्ट को नियमित नोटिस दिया परन्तु उक्त गवर्नमेंट

ने कोई कार्यवाही न की, तब सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

लगभग ८ वर्ष तक आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। इस काल में उन्होंने सभा की आर्थिक स्थिति बहुत दृढ़ की और आर्य जगत् में उसके नेतृत्व को बहुत प्रशस्त किया।

१९५५ में संन्यास लिया और श्री धुरेन्द्र शास्त्री से स्वामी ध्रुवानन्द जी बन गए। उनके संन्यास प्रवेश का समारोह जो साधु आश्रम में हुआ था, वह देखने योग्य था। इस समारोह में स्वामी जी के सैकड़ों बड़े-बड़े भक्तों के अतिरिक्त आर्य समाज के विद्वान नेता, राज्य के उच्च कर्मचारी और राज्यों के मन्त्री भी सम्मिलित हुए।

१९५६ के जुलाई मास में श्री स्वामी जी वैदिक धर्म के सन्देश के प्रसार और व्यवस्था करने के महान् कार्य पर विदेश गये। वहां वे अपने कार्य में पूर्ण सफल हुए और १२ अप्रैल १९६१ को भारत लौटे। सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर आर्य सभा मौरीशस की सुव्यवस्था तथा उसको हर प्रकार से उन्नत और दृढ़ करने का जो कार्य निरन्तर ३।। वर्ष वहां बैठ कर और विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करके किया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है। मौरीशस के अतिरिक्त श्री स्वामी जी ने पूर्वी अफ्रीका के केनिया, युगाण्डा, टांगानिका, जंजीबार चारों भागों में दक्षिण रोडेशिया और मेडागास्कर, थाईलैण्ड आदि में भी खूब सफल प्रचार कार्य किया। स्वामी जी की आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा के प्रति की गई मूल्यवान् सेवाओं के आदर स्वरूप आर्य समाज ने उन्हें सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव और नवम आर्य महासम्मेलन का प्रधान चुनकर अपने एक बड़े कर्तव्य का पालन किया था।

श्री स्वामी जी महर्षि दयानन्द के तपस्वी भिक्षु थे। उनकी विशद् कीर्ति सदैव कायम रहेगी।

उनके निधन से आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी सम्भव नहीं है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—रामगोपाल

श्री लाला देवीचन्दजी का आकस्मिक निधन

आर्यसमाज के वृद्ध नेता श्री लाला देवीचन्द जी का निधन एक दूसरा वज्राघात है। अभी आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती की मृत्यु का दुःख ताजा ही था कि उस पर एक दूसरी चोट उपस्थित हो गई। आर्य समाज के लिए यह बहुत ही दुःख की घड़ी है। ला० देवीचन्द जी डी० ए० वी० कालेज होशियारपुर के प्रिंसिपल, प्रादेशिक सभा के प्रधान तथा अन्य पदों पर रहकर आर्य समाज की महान् सेवा कर चुके हैं। वे दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर के प्रधान और संस्थापक थे। इसके माध्यम से इन्होंने शुद्धि का बहुत बड़ा काम किया। लाला जी की सेवा, शिक्षा के क्षेत्र और सामाजिक क्षेत्र में बहुत ही सफल रही है और सुविदित है। आप महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त थे और आपने सामवेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य का भी इंग्लिश में अनुवाद आपने किया। वे निरन्तर ही आर्य समाज की सेवा करते रहे। इनके निधन से आर्य जगत् को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति दुष्कर है।

सार्वदेशिक सभा इस महान् शोक के समय में शोक सन्तप्त समस्त आर्य जनों के साथ अपने को सम्मिलित करती है।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति दें।

—रामगोपाल



पुष्प मालाओं से आच्छादित श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का शव



श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का शव दिल्ली रामलीला मैदान में
आर्य नेता एवं विद्वत् जन शोक मुद्रा में निकट खड़े हैं।



श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की देहली में शव यात्रा का एक दृश्य

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

बम्बई से निगम बोध घाट

(पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी का महा प्रयाण)

श्री पुण्य श्लोक पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती जी अब इस संसार में नहीं हैं। १ जुलाई ६५ को निगम बोध घाट (दिल्ली) पर उनका पार्थिव शरीर अग्नि को अर्पित कर दिया गया और वह सदा के लिए पांच तत्त्वों में विलीन हो गया। उनके जीवन का अन्त इतना आकस्मिक होगा इसकी किसी को भी कल्पना न थी। २९ जून ६५ को प्रातः ८॥ बजे उन्हें पालम हवाई अड्डे पर बम्बई से आने वाले प्लेन से उतरना था। उनको लाने के लिये सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकुन्द जी आहूजा तथा श्री आचार्य वैद्यनाथजीशास्त्री कार लेकर पालम जाने वालेथे। प्रातः ७बजे श्रीयुत सेठ प्रतापसिंहशूरजी का आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री को सभा कार्यालय में ट्रंक काल आया कि स्वामी जी महाराज का प्रातः ६॥ बजे जब कि वे हवाई अड्डे पर जाने की तय्यारी कर रहे थे हृदय की गति अचानक बन्द हो जाने से देहान्त हो गया। जब वे कमरे में अपने सामान की व्यवस्था कर रहे थे उन्हें बेचैनी अनुभव हुई डाक्टर को बुलाने का संकेत किया और दो तीन मिनट बाद ही श्री प्रताप भाई के हाथों में सदैव के लिये शय्यागत हो गए। यह बड़ा हृदय विदारक समाचार था। जिस सेठ प्रतापसिंह शूरजी जैसे स्वामी जी के परम भक्त ने हजारों रुपए की तनिक भी परवाह न कर योग्य से योग्य सामान्य लोगों को असुलभ विशेषज्ञ डाक्टरों से समय २ पर स्वामी जी महाराज की चिकित्सा कराई और अब भी उसी कार्य में पूरी शक्ति से लगे थे वह भी उन्हें न बचा सके और अन्त में "पततयवश्यं हि विक्रष्यमाणं कालेन यत्ना रपिरक्ष्य माणस" के अटल नियमों को नतमस्तक हो स्वीकार करना पड़ा।

वे मेरठ से १५ जून को सभा कार्यालय में देहली पधारे थे। शरीर में दुर्बलता अधिक थी, वाणी में धीमापन था। जब उन्हें देहली में रह कर आराम करने के लिये निवेदन किया गया तो कहा "मैं कल बम्बई जाऊंगा। प्लेन की सीट रिजर्व हुई हुई है वहां डाक्टरों से निदान करा के सीधा सभा के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने के लिये २७ जून तक कानपुर पहुंच जाऊंगा। बम्बई में प्रताप भाई के यहां मुझे सब प्रकार की सुविधा रहती है। वे स्वयं और उनका समस्त परिवार मेरा अत्यधिक ध्यान रखते हैं, चिकित्सा भी बढ़िया से बढ़िया उपलब्ध रहती है। चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

१५ को हीश्री विद्याधर जी शर्म्मा को ट्रंक काल करके सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन तथा मान्य सदस्यों के निवास आदि की व्यवस्था सम्बन्धी विस्तार पूर्वक बात-चीत की और सुझाव दिये। सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपालजी की उपस्थिति में उनसे परामर्श करने के बाद कार्यालय को आवश्यक आदेश-निर्देश दिये। जब १५ की सायं काल को हम लोग घर जाने के लिये तय्यार हो कर उनके पास गए और आज्ञा मांगी तो हंसकर कहने लगे "जाना तो सभी को है महापुरुषो! चले जाओ।" हम नमस्ते करके उनसे विदा हुए। क्या पता था कि उनके दर्शन पुनः न होंगे और उनकी वाणी पुनः सुन न पड़ेगी?

२९ जून का दिन जिस दिन स्वामीजी बम्बई से पधारने वाले थे कार्यालय के लिये अत्यधिक व्यस्तता का दिन था, क्योंकि पहले से ही निर्दिष्ट अनेक फाइलों के सम्बन्ध में उनसे परामर्श करना था और उनके आदेश-निर्देश प्राप्त करने थे। उस दिन उनके निधन का समाचार पाते ही सभा मन्त्री श्री ला०रामगोपाल जी सबसे पहले सभा कार्यालय में पहुँचे। कुछ देर

बाद सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा पहुंचे और शाहदरा से हम लोग भी पहुँच गए। श्री मन्त्री जी, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री तथा हम देश-विदेश के आर्यजनों, संस्थानों और श्री स्वामी जी के इष्ट मित्रों एवं प्रशंसकों को तार और ट्रंक काल द्वारा निधन का समाचार प्रसारित करने में व्यस्त हो गए। शव को दिल्ली मंगाने का निश्चय हुआ। इस सम्बन्ध में श्री प्रताप भाई जी से टेलीफोन पर निरंतर सम्पर्क स्थापित रहा। आल इण्डिया रेडियो एवं समाचार पत्रों को भी सन्देश दिये गए। आल इंडिया रेडियो ने उनके निधन का समाचार प्रसारित करके अपना मूल्यवान् योग दिया। समाचार पत्रों ने भी आर्यसमाज के महान् नेता के प्रति अपने कर्त्तव्य का सुन्दर रीति से निर्वाह किया। आल इंडिया रेडियो के माध्यम से सुदूर विदेश में भी खबर प्रसारित हुई यद्यपि सभा कार्यालय से कुछ स्थानों को तार द्वारा सूचना दे दी गई थी। २९ जून का समस्त दिन और उस दिन की रात्रि तारों और ट्रंक कालों के आदान प्रदान में व्यतीत हुई। इस प्रकार खेद है प्रकारान्तर से २९ जून का दिन अत्यधिक शोकमय व्यस्तता का ही दिन रहा।

श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूरजी ने शव को सहस्रों रुपए के निजी व्यय पर वायुयान द्वारा दिल्ली भेजने का आयोजन किया परन्तु मौसम के खराब होने के कारण यह आयोजन सफल न हो सका। फलतः २९ को फ्रण्टीयर मेल से शव को एक विशेष पेटिका में बम्बई से रवाना करने का निश्चय हुआ इस निश्चय के अनुसार ३० जून को सायंकाल ७॥ बजे फ्रण्टीयर मेल द्वारा शव देहली लाया गया। मार्ग में बड़ौदा आदि स्थानों पर अनेक आर्यबन्धु अपने महान् नेता के अन्तिम दर्शन के लिए स्टेशन पर गए। नई दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर आर्यजनों के भारी जनसमूह ने श्रद्धांजलि प्रस्तुत की और शव को ऐम्बुलैन्स द्वारा दयानन्द भवन लाया गया। भवन के सामने रामलीला मैदान में विशेष रूप से निर्मित मंडप में रखा गया। रात भर उनके श्रद्धालु भक्तों एवं प्रेमियों के आने जाने का तांता लगा रहा। शव पुष्प हारों से आच्छादित हो गया। सुदूर प्रान्तों से अनेक आर्यजन स्वामी जी के अन्तिम दर्शन के लिये ३० की सायंकाल को ही देहली पहुंच गए थे और अन्यों के १ के प्रातः देहली पहुँचने के सन्देश प्राप्त हो चुके थे। शव यात्रा और दाह-संस्कार की व्यवस्था की देख रेख के लिये जो सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द आहूजा जी, श्री विश्वनाथजी, श्री ला०ज्योतिप्रसादजी कोषाध्यक्ष आर्यसमाज दीवानहाल श्री रामलालजी ठेकेदार आदि के सहयोग से कर रहे थे सेठ प्रतापसिंह जी ३० के प्रातः ही बम्बई से देहली आ गए थे। वे बड़े ही शोकाकुल थे। बात २ में रो पड़ते थे। श्री ला० ज्योतिप्रसाद जी ने श्रद्धा सुमन के रूप में शवदाह केलिए लगभग २०५) का घृत आदि प्रदान किया था। श्री डा० डी० राम जी पटना से वायुयान द्वारा १ की प्रातः देहली पहुंच गए थे।

अलीगढ़ के श्री सुरेन्द्रकुमार जी वर्मा तथा उनके भाई श्री महावीर कपूरजी को २९ जून को सर्वप्रथम ट्रंककाल द्वारा स्वामीजी के निधन का समाचार दे दिया गया था। इन दोनों भाइयों के साथ श्री स्वामी जी महाराज की बड़ी घनिष्ठता और आत्मीयता थी। अलीगढ़ प्रवास के समय वे इन्हीं के यहां ठहरते थे। इनके परिवारों का बच्चा २ स्वामी जी का परम भक्त था। गत जनवरी-फर्वरी में श्री स्वामी जी महाराज इन्हीं के यहां १ मास पर्यन्त उपचार के लिये रहे थे और उन्हें वहां अत्यन्त सुविधा प्राप्त रही थी। श्री महावीर कपूर जी को बम्बई से श्री स्वामी जी का आदेश प्राप्त हुआ था कि ३० जून को कालका मेल पर अलीगढ़ स्टेशन पर दोपहर के भोजन सहित मिलो। उस दिन मैं दिल्ली से कानपुर जाऊंगा। इस आदेश के

अनुसार व्यवस्था हो ही गई थी। ट्रंककाल मिलते ही श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने साधु आश्रम में निधन का दुःखद समाचार भिजवा दिया। समाचार के मिलते ही आश्रम के अध्यक्ष श्री स्वामी हरिहरानन्द जी श्री बाबूराम जी तथा एक और सज्जन १ कनस्तर घी के साथ सभा कार्यालय में आ विराजे। उन्होंने घी के अतिरिक्त शव दाह के व्यय में योग देने के लिये १००) भी सभा को दिये। श्री सुरेन्द्रकुमार जी तथा महावीर जी कपूर भी ३० को देहली आ गए। दोनों भाई अलीगढ़ के सम्पन्न उद्योग पति हैं और श्री सुरेन्द्र कुमार जी सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य, श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष और अलीगढ़ तथा जिले की आर्य सामाजिक प्रगतियों के प्राण एवं सूत्र संचालक हैं।

आल इण्डिया रेडियो से खबर पाते ही स्वामी जी महाराज के परम भक्त एवं स्नेह भाजन श्री बाबूराम जी प्रधान सपत्नीक ३० को जौनपुर से देहली आ गए थे।

श्री रामलाल जी ठेकेदार देहली के एक विशेष ट्रक द्वारा भारी जनसमूह के साथ १-७-६५ के प्रातः ८ बजे दयानन्द भवन से शव-यात्रा आरम्भ हुई। अजमेरी गेट, हौज काज़ी, चावड़ी बाजार, नई सड़क, चांदनी चौक और आर्यसमाज दीवान हाल होता हुआ शव प्रातः ११ बजे के लगभग निगम बोध घाट पहुँचाया गया। सर्व सामान्य आर्य नर नारियों के अतिरिक्त देहली और देहली से बाहर सुदूर प्रान्तों तक के चुने हुए विशिष्ट आर्यजन मौसम और समय की कमी एवं प्रतिकूलता के होते हुए भी भारी संख्या में शव-यात्रा के साथ थे।

कई मन घी, हवन-सामग्री और चन्दन की लकड़ी का प्रबन्ध कर लिया गया था। लगभग १२।। बजे दाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कार के समय सर्वश्री आनन्द स्वामी जी महाराज, स्वामी समर्पणानन्द जी, आनन्द भिक्षु जी, स्वामी हरिहरानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्दजी, प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास, डा० डी० राम (पटना), वेणी भाई आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, प्रभाशंकर मोहनलालदवे (बम्बई) प्रि० काशीप्रसादसिंह जी दयानन्द विद्यालय माटुंगा (बम्बई), रतनलालजी रि० डि० से० जज प्रधान सार्वदेशिक न्याय सभा (मेरठ), सुरेन्द्र कुमार वर्म्मा, महावीर कपूर (अलीगढ़), चन्द्रदत्त तिवारी एम० ए०, एल० एल० बी० मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश (लखनऊ), प्रेमचन्द शर्मा एम० एल० सी० (हाथरस), कर्णसिंह छौंकर (मथुरा), प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०, पं० क्षितीश कुमार सहसम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान देहली, वीरेन्द्र एम०ए० सम्पादक वीर प्रताप व प्रताप (जालन्धर), रमेशचन्द्र एडवोकेट (मथुरा), बाबूराम प्रधान सपत्नीक (जौनपुर) ला० रामगोपाल शालवाले, ला० चतुरसेन गुप्त (शामली). डा० नगेन्द्र अध्यक्ष हिन्दी विभाग देहली विश्व विद्यालय पं० चन्द्रभानु आर्य स० हनुमान रोड, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवाः अभिविनय भारती, पं० सुरेन्द्र शर्मा, गौर (शाहदरा) महेन्द्रकुमार शास्त्री, देशराज चौधरी (देहली), बालमुकन्द आहूजा, ऐस० ऐन० सक्सेना डी० ऐस० नार्दर्न रेलवे नई दिल्ली, देवव्रत धर्मेन्दु, स्वामी सूर्यदेव जी, रामनारायण शास्त्री, पं० सोमदत्त विद्यालंकार, पं० सत्यदेव शर्म्मा विद्यालंकार, स्वामी सत्यानन्द जी (यमुना नगर) पं० शिवचन्द्र, प्रो० इन्द्रदेव सिंह हिन्दी डाइरेक्टोरेट नई दिल्ली, प्रो० रामसिंह एम० ए० (देहली), देवराज चड्ढा एम० ए० (देहली), ला० मेलाराम (देहली), पं० शिवदत्त सिद्धान्त शास्त्री, मौलवी, फाजिल (सा० स०) पं० रुचिराम आर्योपदेशक, बालदिवाकर हंस, मा० पोहकरमल (सार्व०स०) महाशय बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद तथा देहली की आर्य समाजों के सदस्य एवं अधिकारी आदि उप-

स्थित थे।

बात की बात में मिट्टी का पुतला मिट्टी में मिल गया। आर्य समाज के गगन-मण्डल का अत्यन्त तेजोमय एवं प्रकाशयुक्त सितारा लुप्त हो गया।

श्री स्वामी जी के निधन से जो सूनापन अनुभव हुआ था, श्मशान से लौटने पर उसकी विभीषिका बढ़ गई ऐसा लगा मानो वरद-हस्त उठ गया।

स्वामी जी का स्वास्थ्य गत ४-५ वर्ष से खराब था। उन्हें विश्राम की आवश्यकता थी। स्वास्थ्य के खराब रहते हुए भी उनके वैयक्तिक एवं सावजनिक जीवन की सक्रियता और कर्मठता कम न हुई। वही निरन्तर भारी पत्र-व्यवहार, वही देश विदेश की यात्राएं, तूफानी दौरे, व्याख्यान एवं वेद कथाएं प्रशासकीय तथा संगठनात्मक उलझनों का समाधान आदि के कार्यक्रम जारी रहे। तूफानी दौरों में ऐसे स्थानों पर भी जाना पड़ता था, जहां सवारी और भोजनादि की सुव्यवस्था न होती थी। गत वर्ष मार्च में थाईलैंड व सिंगापुर की ७॥ मास की यात्रा से लौटते ही पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों के सेवा-कार्य संचालन के लिए महीनों तक कलकत्ता में विराजमान रहे। इसके अतिरिक्त बनवासी भाइयों की रक्षा कार्य के प्रसंग में चक्रधर पुर, बृजराज नगर, राउर केला तथा वन प्रदेश की यात्राएं कीं।

स्वामी जी को अपने स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रहता था। रहता भी क्यों, वह जीवन परमात्मा और आर्य समाज की सेवा पर जो अर्पित था। गत कुछ महीनों से उनका जीवन कच्चे धागे पर झूल रहा था। परन्तु वह इसकी परवाह न करते हुए आर्य समाज के कार्य के विस्तार, उसकी तथा सार्वदेशिक सभा की शक्ति तथा श्रीवृद्धि के लिये प्रयत्नशील रहे। अक्टूबर ६५ में कुछ महीनों के लिये ब्रिटिश गायना, डच गायना, ट्रिनीडाड, लन्दन, रूस, फिजी और मौरीशस जाने का प्रोग्राम तय हो चुका था। यात्रा को तय्यारियां जारी थीं। कुछ औपचारिकताएं पूर्ण हो चुकी थीं, कुछ पूर्ण होनी शेष थीं।

श्री स्वामी जी ने निरन्तर ४३ वर्ष तक आर्य समाज की सेवा की। वे वीतराग स्व० श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के सुयोग्यतम शिष्य थे। राजाओं और सम्भ्रान्त परिवारों में आर्यसमाज को लोकप्रिय बनाने का उन्होंने बड़ा प्रशसनीय कार्य किया। स्वामी जी के परम भक्त कालाकांकर नरेश स्व० श्री राजा अवधेश सिंह जी के सुपुत्र श्री राजा दिनेशसिंह जी भारत सरकार के परराष्ट्र विभाग के डिप्टी मिनिस्टर हैं। यह घराना भी स्वामी जी का परमभक्त रहा है। श्री राजा दिनेश सिंह जी भी श्री स्वामी जी को गुरुवत् मानते रहे। उनकी बीमारी में हाल पूछने कई बार दयानन्द भवन भी पधारे। श्री स्वामी जी के निधन के समाचार से उन्हें बड़ा दुःख हुआ।

स्वामी जी की सेवाओं का विशद वर्णन तथा जीवन की विविध झलकियों का दिग्दर्शन पृथक् लेख का विषय है। अपने त्याग और सेवा के बल पर वे धूल से उठ कर यश और सौभाग्य की सोपान पर चढ़े और अपने समय के आर्यसमाज के सबसे अधिक प्रभावशाली नेता बने। यह बात छोटी न थी। वे आर्य समाज के लिए देन सिद्ध हुए।

श्री स्वामी जी आदित्य ब्रह्मचारी थे। स्वभाव में बड़ी भावुकता थी। हमने अपने लगभग २० वर्ष के सम्पर्क में उनके क्रोध और हर्ष दोनों की मुद्राएं देखीं। उनका क्रोध क्षणिक होता था। सत्य और निष्कपट व्यवहार पसन्द करते थे। कूटनीति और छल-कपट से उन्हें बड़ी चिढ़ थी। तबीयत में सादगी थी परन्तु प्रत्येक व्यवहार और चीज में सुन्दरता और सुघड़ता देखना चाहते थे।

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी का बम्बई में निधन

शव के दिल्ली भेजे जाते समय का कारुणिक दृश्य

बम्बई में अन्तिम दर्शन के लिए जनता की अपार भीड़

स्वामी ध्रुवानन्द गत पांच वर्षों से हृदय रोग से पीडित थे और गत रविवार २७ जून को ही बम्बई के डाक्टरों ने उनकी जांच कर उन्हें पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी थी।

वे लगभग १४ दिन पहले बम्बई आये थे और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास के 'कच्छ कैसल' आपेरा-हाउस-स्थित निवास स्थान पर ठहरे हुए थे

स्वामी ध्रुवानन्द जी इसी दिन प्रात-काल विमान से दिल्ली होते हुए कानपुर जाने वाले थे।

महाप्रस्थान की वेला

कहा जाता है कि हमेशा की तरह प्रात-काल ४ बजे के आस पास जगे। नित्य कर्म से निपट कर उन्होंने प्रस्थान करने के लिए कपड़े भी पहिन लिये।

वे विमानस्थल की ओर जाने ही वाले थे, कि उन्हें घबराहट मालूम हुई और उन्होंने श्री प्रताप भाई से—जो उनके पास खड़े हुए थे, डाक्टर बुलाने के लिए कहा।

इतने में उन्हें अचानक खून की उल्टी हुई और वे लेट गये। कुछ क्षणों के अन्दर उनका प्राणान्त भी हो गया।

उनकी मृत्यु का समाचार तत्काल नगर-उपनगरों में फैल गया और विभिन्न आर्य समाजों के नेता तथा कार्यकर्ता 'कच्छ कैसल' पहुँच गये। लगभग दस बजे उनका शव बम्बई आर्य समाज मन्दिर (काकड़वाड़ी) लाया गया, जहां उनके अन्तिम दर्शन के लिए कई लोग पहुंचे। वहां उन्हें आर्य समाजों की ओर से हार पहिनाये गये और श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गयीं।

यशस्वी जीवन

स्वामी ध्रुवानन्द का मूल नाम राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री था और वे बालब्रह्मचारी थे।

उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगाया और कई वर्षों वे उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के और बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे।

उन्होंने सन् १९३९ में हैदराबाद में आर्य समाज आन्दोलन का और बाद मे सन १९४५ में कराची मे सत्यार्थ-प्रकाश-आन्दोलन का नेतृत्व किया और जेल भी गये। इसी प्रकार वे स्वाधीनता-संग्राम में भी भाग लेते रहे और १९४२ के अगस्त आन्दोलन के सिलसिले में जेल यात्रा की।

स्वामी ध्रुवानन्द जी ने अपने जीवन काल मे आर्य समाज के प्रचारार्थ अफ्रीका के देशों की और मारिशस की यात्रा भी की। वे एक असाधारण पण्डित और न्यायाचार्य भी थे।

नवभारत टाइम्स, बम्बई

वस्तुतः श्री स्वामी जी ने आर्य समाज के इतिहास के निर्माण में मूल्यवान् योग दिया। वे एक वीर योद्धा के समान आर्य समाज के कार्य में रत रहे और वीर योद्धा के समान ही बिना शय्या पर पड़े यहां से विदा हो गए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

स्वामी ध्रुवानन्द का शव दिल्ली को

वयोवृद्ध आर्य समाजी नेता स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती का पार्थिव शरीर मंगलवार की शाम को फ्रण्टियर मेल द्वारा बम्बई सेण्ट्रल से दिल्ली भेजा गया। इसीदिन प्रातः बम्बई में अपने इहलीला समाप्त की।

घनघोर वर्षा के बावजूद बम्बई सेण्ट्रल स्टेशन पर उनके भक्तों तथा नगर के विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की भारी भीड उन्हें अन्तिम विदा देने के लिए उपस्थित थी। पूर्व व्यवस्था के अनुसार शव विशेष विमान द्वारा दिल्ली भेजा जाने वाला था, पर मौसम के खराब हो जाने के कारण उनके शव को ट्रेन द्वारा दिल्ली भेजने की व्यवस्था की गयी।

अन्तिम विदाई

शुद्ध श्वेत रंग की शव पेटिका को रसायनों से इस प्रकार तैयार किया गया था, कि अन्दर रखी देह को लम्बे प्रवास के दर्म्यान किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे दूर दूर से आये श्रद्धालु भक्त आसू भीगी आंखों से शवपेटिका के आगे नतमस्तक होकर अपने प्रिय नेता को मूक श्रद्धांजलि अर्पित करते दिखायी दे रहे थे।

स्टेशन पर यूं तो सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे उनमें भी माटूंगा, काकड़-वाड़ी, चैम्बूर, बम्बई प्रदेश, फोर्ट, शिवाजी पार्क, सांताक्रूज, गोरे गांव, भाण्डुप तथा महिला आर्यसमाजों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या मे उपस्थित थे।

शवपेटिका के साथ साथ बम्बई आर्यसमाज के श्री प्रभाशकर मोहनलाल दवे तथा श्री रवीन्द्र शास्त्री, माटूंगा आर्यसमाज के मंत्री श्री ओंकारनाथ तथा दयानन्द विद्यालय के प्रिन्सिपल श्री काशीप्रसाद सिंह दिल्ली जा रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अध्यक्ष प्रतापसिह शूरजी वल्लभदास तथा प्रमुख आर्यसमाजी नेता भगवानदेव आर्य आदि ३० जून को विमान द्वारा दिल्ली जायेंगे। रेलवेस्टेशनपर सर्वश्री सत्यव्रत विद्यालंकार, गुलजारी लाल आर्य, पण्डित रामचन्द्र विद्यालंकार, शामलाल गोयल, शामलाल अग्रवाल, पण्डित भोलाराम, प० रुद्रमित्र शास्त्री, दीवानचंद साहनी, भावसारजी हरगोविन्द धरमसी कांचवाला, प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास, भगवानदेव आर्य आदि प्रमुख आर्यसमाजी अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित थे।

—नवभारत टाइम्स बम्बई

सार्वदेशिक सभा ने अपने कानपुर के अधिवेशन में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के प्रचार सम्बन्धी कार्य के निमित्त सार्वदेशिक मासिक को साप्ताहिक करने का निश्चय किया है। साप्ताहिक सार्वदेशिक के डिक्लेरेशन के लिए आवेदन पत्र दे दिया गया है, डिक्लेरेशन के देने पर पत्र चालू कर दिया जायगा और इसकी सूचना प्रचारित कर दी जायेगी।

आर्य नेताओं, विद्वानों एवं स्वामीजी के प्रशंसको के सन्देश व श्रद्धाञ्जलियां

--श्रद्धेय स्वामी ध्रुवानन्द महाराज सदा के लिए इन स्थूल नेत्रों से ओझल हो गए। आर्य समाज के संगठन को सर्वोपरि समझने वाले, देश-विदेश में महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचाने वाले, सारा ही जीवन आर्यसमाज के हित में लगा देने वाले स्वामी ध्रुवानन्दजी हा शोक! चले गए। हृदय रोग के साथ पर्याप्त युद्ध उन्होंने किया। रोग-पीड़ित होते हुए भाग-दौड़ करते रहे ताकि आर्य समाज का गौरव बना रहे, बढ़ता रहे और अब सारा बोझ आर्य मात्र पर छोड़ चिरकाल के लिए विश्राम करने चले गए।

आनन्द स्वामी सरस्वती

—स्वामी जी इस युग के आर्य समाजियों में सब से अधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे। पिछले ४० वर्षों में उन्होंने अपने समय को निरन्तर आर्य समाज के चिन्तन में व्यय किया था। अपनी आत्म-बल की शक्ति से वे एक देहाती लड़के की दशा से उन्नति करते करते आर्य जगत् के सबसे बडे पद को प्राप्त करने में सफल हुए। सारे आर्य जगत् में उनकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी।

गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रयाग

—स्वामी जी के निधन के समाचार से भारी चोट लगी।

अनन्त स्वामी सरस्वती

—स्वामी जी कर्मठ कर्मयोगी थे। उनका जीवन आर्य समाज की सेवा करते हुए ही समाप्त हुआ। उनके जीवन में कोई भी धब्बा न था।

स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी
आर्य गुरुकुल, एटा

—पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन से महान दुःख हुआ। उनके निधन से आर्य जगत् और राष्ट्र की महती क्षति हुई है। हम सबका कर्त्तव्य है कि उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए उनके कार्यों की पूर्ति करें।

पूर्णचन्द्र ऐडवोकेट
माई थान आगरा

—स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का सहसा एवं असामयिक निधन आर्य जगत् के लिए वज्राघात से अधिक भयंकर है।

कुछ समझ में नहीं आ रहा कि देश के भाग्य में क्या है। जब पथ-प्रदर्शन की अनिवार्य आवश्यकता है तब एक एक करके धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनैतिक स्तम्भ टूटते चले जा रहे हैं। मुझे तो भविष्य अंधकार-मय प्रतीत होता है क्योंकि जो हृदय-विदारक अभाव होता जा रहा है उसकी पूर्ति दृष्टिगोचर नहीं होती परमेश्वर! पाहि माम्!

(राजा) रणञ्जयसिंह एम. पी.
अमेठी

—स्वामी जी के देहावसान का दुःखद समाचार सुनकर अवाक् रह गया। स्वामी जी की मृत्यु आर्य समाज पर ऐसा वज्रपात है कि उसके प्रभाव को आर्य समाज सहन कर सकेगा इसमें मुझे सन्देह है।

पूज्य स्वामी ध्रुवानन्दजी महाराज ने अपना सर्वस्व आर्य समाज के चरणों में अर्पित कर दिया था। वृद्धावस्था में भी वह अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न कर आर्य समाज की ज्योति की

रक्षा व प्रसार के लिए ही रात-दिन भागते रहे थे।

ओ३म् प्रकाश त्यागी
टरोरो (पूर्वी अफ्रीका)

—लन्दन से दिल्ली पहुंचते ही एक अत्यन्त दुःखद समाचार कानों में पड़ा कि आर्य समाज के महान् नेता और वीतराग संन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज इस संसार से उठ गये हैं। स्वामी ध्रुवानन्द जी अपने को आर्य समाज के अर्पण कर चुके थे। उनकी गणना हम अपने उन नेताओं में कर सकते हैं जिन्होंने होश संभालते ही आर्य समाज का आंचल पकड़ा और फिर जीवन के अन्तिम सांस तक उसे नहीं छोड़ा। केवल आंचल ही नहीं पकडा बल्कि उसकी सेवा मे अपने जीवन का एक एक पल लगा दिया। सोते-जागते, उठते-बैठते उन्हें सिवा आर्य समाज के किसी दूसरी बात की चिन्ता न थी।

स्वामी जी की मृत्यु से आर्य समाज में एक ऐसा स्थान रिक्त हुआ है जो सुगमता से न भरेगा।

वस्तुतः आर्य समाज अब तक ऐसे युग में प्रविष्ट हो चुका है जहां वह उत्तरोत्तर कमजोर ही होता जा रहा है। उसके पुराने महारथी उसे छोडते जा रहे हैं, उनका स्थान लेने वाले नये पैदा नहीं हो रहे। आज जब आर्य समाज की नाव मंझधार में है और जब कि किसी ऐसे नेता की जरूरत है जो उसे उसमें से निकाल सके स्वामी ध्रुवानन्द का वियोग आर्य समाज के लिए एक ऐसी हानि है जिसकी पूर्ति न हो सकेगी।

वीरेन्द्र एम० ए०
(वीर प्रताप जालन्धर)

—स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की आकस्मिक मृत्यु से हार्दिक दुःख हुआ। मैं उनकी शव-यात्रा व उनकी मृत्यु के शोक मे दिल्ली में आयोजित सभा में स्वयं भाग लेना चाहता था किन्तु अपनी शारीरिक निर्बलता व अस्वस्थता के कारण कहीं भी उपस्थित न हो सका। अपनी गहरी समवेदना प्रगट करता हूँ। आर्यसमाज को गहरा धक्का लगा है। आर्य जगत् से एक कर्मठ व कर्तव्य परायण सिपाही उठ गया।

रामचन्द्र देहलवी
हापुड़

—आर्य समाज का महान् सेनानी हम सब को छोड़कर परम धाम को प्राप्त हो गया। उनकी जीवन-यात्रा आर्य समाज के एक लम्बे इतिहास में एक बड़े अध्याय के रूप में याद रहेगी। उनके निधन से भारी सूनापन, नेतृत्व का अभाव व सबको एक कड़ी में आबद्ध करने की क्षमता का अभाव प्रतीत होने लगा।

वीरसेन वेदश्रमी
इन्दौर

—आर्य जगत् के इतिहास में स्वामी जी की सेवाएं स्वर्णाक्षरों में लिखी जायंगी।

भगवती प्रसाद, पुलीस स्टेशन आफीसर
थादला (म० प्र०)

—आर्य कुल श्रेष्ठ! श्रद्धांजलि के रूप में कुछ रक्त सुमन अर्पित करता हूँ। प्रभु आपकी पुनः जन्म-मन्थी कोष्ठी द्वारा इस आर्य भूखण्ड को सौंपें। (रक्त से लिखा पत्र)

डा० किशोरसिंह आर्य, अजमेर वाला
मानसा (मध्य भारत)

—स्वामी ध्रुवानन्द जी के असामयिक निधन से धक्का लगा।

मोहदीन सिंह हरदोई

—स्वामी जी के निधन का समाचार आर्य नगरी शाहपुरा के आर्य सभासदों एवं राज परिवार के लिए ही असह्य नहीं है किन्तु सारे शहर में ही शोक की लहर दौड़ गई। स्वामीजी

महाराज का शाहपुरा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।

भंवरलाल टांक,
मन्त्री आ० स० शाहपुरा

—प्रादेशिक आर्य वीरदल बंगाल को अपार कष्ट हुआ। स्वामी जी आर्य समाज के लिए बड़े उपयोगी कर्मठ नेता थे।

ब्रह्मदेवसिंह, प्रान्तीय संचालक
कलकत्ता

—आर्य समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार से उन्होंने जो सेवाएं की हैं वे सदा स्मरणीय रहेंगी। उनके निधन से आर्य समाज को अवर्णनीय क्षति हुई है। आर्य जगत् मे उनके निधन पर जो शोक मनाया जा रहा है गुरुकुल कांगड़ी उसमे सम्मिलित है।

प्रियव्रत वेदवाचस्पति
आचार्य

—स्वामी जी के निधन का समाचार नवभारत टाइम्स में पढ़ कर धक्का लगा। उनकी क्षति की पूर्त्ति सम्भव नहीं है। उन्होंने आर्य समाज की सब प्रकार से निरन्तर सेवा की।

केदारनाथ गुप्त
रि० इ०
मैनेजर एस० एन० इन्टर कालेज, इटावा

—आर्य समाज के मूर्धन्य नेता, टंकारा ट्रस्ट के सुयोग्यतम ट्रस्टी, आर्य समाज की विविध अनेक प्रवृत्तियों के प्राण, बाल ब्रह्मचारी, परम तपस्वी संन्यासी महात्मा स्वामी ध्रुवानन्द जी के अवसान से समस्त आर्य समाज को जो क्षति हुई वह सहज में पूर्ण न हो सकेगी। उनके निधन से टंकारा ट्रस्ट को बड़ा धक्का लगा।

आनन्द प्रिय
मन्त्री

—ईश्वरेच्छा बलवती है। पूज्य स्वामी जी ने जीवन भर अपने शारीरिक कष्ट और आराम की उपेक्षा करके भी समाज की सेवा की। समाज सेवा ही अन्त तक उनका ध्येय रहा।

हमारे सारे परिवार के साथ वर्षों से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनके वियोग से सबको धक्का लगा। उनके उपकारों के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे। हम उनके बताये मार्ग पर चलकर समाज सेवा करते हुए अपने जीवन को धन्य बनावें यही कामना है।

कृष्णलाल पोद्दार
२, अली अकबर रोड, बंगलोर

स्वामी जी के निधन से आर्य जगत् की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में होनी सम्भव नहीं है।

—जगदीश प्रसाद वैदिक, उपप्रधान
म० भा० आ० प्र० सभा, इन्दौर

—इस प्रकार धीरे २ आर्य समाज के गण्यमान्य और मूर्धन्य नेताओं का उठते जाना आर्य समाज और राष्ट्र के लिए दुःखदायी एवं अपूरणीय क्षति है।

इस महान् दुःख में हम सभी स्नातकों को सम्मिलित समझियेगा।

निरूपण विद्यालंकार, मन्त्री
अ० भा० स्नातक मंडल
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

—पूज्य स्वामी जी से मेरा सम्पर्क १९३१ से हुआ। उन्हीं के आदेश से मेरा परिवार दृढ़ आर्य बना। स्वामी जी आर्य जगत् की अनूठी विभूति थे। उनके आदेश से १९३३ में अपनी पुत्री का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। उन्हीं की कृपा से मेरे परिवार में दैनिक यज्ञ निरन्तर हो रहा है। उनके निधन से जहां आर्य समाज की बड़ी क्षति हुई है वहां हमारे परिवार की भी बड़ी क्षति हुई है।

रामप्रसाद आर्य
मेडू अलीगढ़)

—स्वामी जी के निधन से बड़ा धक्का

लगा। सार्वदेशिक सभा के सदस्यों को मेरी समवेदना पहुंचा देवें।

राजन पोद्दार, कलकत्ता

—स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती के निधन से बड़ा धक्का लगा। आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई।

मिहिरचन्द्र धीमान, कलकत्ता

—स्वामी जी के निधन के समाचार से गुरुकुल में शोक की लहर दौड़ गई। उनका निधन आर्य समाज की महती क्षति है।

वटकृष्ण वर्म्मन
गुरुकुल काउरचण्डी
(मिदनापुर) बंगाल

—स्वामी जी की मृत्यु पर अवाक् रह गया।

हलियाराम, कलकत्ता

—स्वामी जी के निधन से हृदय पर बड़ी चोट लगी। शोक की इस वेला में आर्य जगत् के साथ हूं।

सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट, देहली
डलहौजी से भेजा हुआ तार

—उनका आर्य जगत् में अब न रहना देश और जाति की बड़ी हानि है। हम पर उनके अमित उपकार हैं।

रामशरण आहूजा, मैसूर

—स्वामी जी एक प्रकार से मेरे गुरु भाई थे। मैंने कराची में गुरुदेव स्व० स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से ही दीक्षा ली थी। साधु आश्रम अलीगढ़ में ही जाने का पक्का निश्चय था।

अमरसिंह आर्योपदेशक
(सिन्ध) इन्दौर

—व्रतीनां श्रद्धालुः मुनिगणव्रतानामनुगतः
सरस्वत्या भक्तः सुरगणगिराणामनुचरः।
सदा सत्ये निष्ठः श्रतिविहितकार्येषु निरतः
ध्रुवानन्दः स्वामी परमपदगामी समभवत ॥

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी चल बसे। अचम्भे की बात कुछ नहीं, सब को ही जाना होगा।

मलिया आवत देख के कलियां करें पुकार।
फूले फूले चुन लिए काल्ह हमारी बार ॥

स्वामी जी को तो पर्याप्त समय मिला ८७ वर्ष। शोक की कोई बात नहीं है, खेद यह है कि जाने वाले के स्थान की पूर्ति नहीं होती। समाजों का व्यवहार और वातावरण ही ऐसा बनता जा रहा है विद्वान् जन आकर्षित हो नहीं सकते। विशेषत. संस्कृत के पण्डितों का तो समाज में किसी दिन पूरा अभाव हो जायगा।

स्वामी जी ने जब से आर्य समाज को छुआ तब से समाज के ही बनते चले गये। घर-द्वार नाता-रिश्ता, धन-माल सब कुछ उनका आर्य समाज ही हो गया। उनके सारे मनोरंजन, स्वाद, प्यार और रूठना सब कुछ आर्य समाज में ही था। सारी मनोवृत्तियां उनकी समाज के साथ जुड़ गई थीं। अच्छे पवित्र कुल सनाढ्य ब्राह्मण परिवार मे उन्होंने जन्म लिया। वृन्दावन के पास ही यमुना के परले किनारे पर बसा पानी गांव उनका जन्म स्थान था। पर आर्य समाज सागर में वे नमक की तरह लीन हो गये। न बिरादरी से काम न गांव से मतलब।

रहिमन पानी राखिये बिनु पानी सब सून।
पानी गये न उबरे मोती, मानुष, चून।

आर्य समाज के संगठनों (सभा आदि) से उन्हें विशेष प्रेम रहा। चुनाव के अखाड़े के वे मल्ल थे। पानी गांव के थे और पूरे पानीदार भी थे। उनका पानी सदा रहा कभी उतरा नहीं।

उन्होंने पानी सदा बनाये रक्खा। जब चढ़े तो चढ़ते ही चले गये। आर्य जनता ने उन्हें पूरा-पूरा मान दिया। विशेषकर धनी और

स्व० स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन पर देश-विदेश के आर्य समाजों में भारी शोक व श्रद्धांजलियां

ब्रह्मदेश

पूज्य स्वामी जी से हमारा परिचय सन् ३०-३१ से था जब वे श्री कालाकांकर (उ० प्र०) नरेश के साथ राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री के रूप में ब्रह्मदेश प्रथम बार आए थे। हम विद्यार्थी उनसे बहुत प्रभावित हुए थे। फिर दुबारा एक बार वे आए।

इस बार युद्ध के पश्चात् ब्रह्मदेश में प्रथम हिन्दू कान्फ्रेंस के अवसर पर भी उन्हें बुलाने में मेरा ही हाथ था। उस समय भी उनका बड़ा अच्छा प्रभाव रहा। स्थानीय रामकृष्ण मिशन में उनका व्याख्यान 'ईश्वर' विषय पर था। इसमें बर्मी, भारतीय तथा अंग्रेज पादरी लोग भी उपस्थित थे। स्वामी जी महाराज हिन्दी में भाषण देते थे तथा इन पंक्तियों का लेखक उसका अनुवाद अंग्रेजी में करता जाता था। व्याख्यान बड़ा ही सारगर्भित तथा प्रभावशाली रहा। उनकी विद्वत्ता की धाक तथा वैदिक धर्म्म की प्रतिष्ठा सबके मन में बैठ गई।

सारे ब्रह्मदेश में सब आर्य भाई-बहनों तथा आर्य समाज के हम सदस्यों तथा हिन्दू मात्र को उनके निधन से बहुत दुःख हुआ है।

डा० ओ३म् प्रकाश
मन्त्री आर्य प्रति० सभा, ब्रह्मदेश

ईस्ट अफ्रीका

सार्व० सभा के तार और आल इण्डिया रेडियो से श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन की खबर सुनकर हम स्तब्ध रह गए। केनिया, युगान्डा और तनजानिया के आर्यसमाज के क्षेत्रों में व्यापक शोक मनाया जा रहा है। श्री स्वामी जी आर्य समाज के रत्न थे।

श्री स्वामी जी हमारे यहां पधारे थे। हम बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ उनका स्मरण

रईसों पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ता था। उनका अपना-पराया कोई न था। जिसे वे आर्य-समाज के लिए हितकर जानते थे वही उनका अपना था। जो आर्य समाज के लिए उनकी समझ में ठीक न थे उनका वे विरोध करते थे। वे अन्तिम क्षण तक समाज सेवा में लगे रहे यह उनके जीवन की महती सफलता है। धर्म सेवा के साथ साथ देश सम्बन्धी आन्दोलन में भी उन्होंने भाग लिया। कांग्रेस में भी काम किया। उनका एक-एक क्षण धर्म और देश की सेवा में लगा। उनका सच्चा श्राद्ध-तर्पण व स्मारक-निर्माण यही है कि हम लोग अपने जीवनों को वैदिक बनावें और आर्यसमाज को दृढ़ बनावें।

यदि उत्तरप्रदेश के लोगों के हृदयों में उनके प्रति श्रद्धा है, जो कि होनी ही चाहिये, तो उत्तर प्रदेश के आर्यसमाजी शीघ्र से शीघ्र लखनऊ में सभा-भवन का निर्माण करके उसका नाम "ध्रुवानन्द-भवन" रख दें और उनके प्रिय साधु आश्रम को एक बढ़िया विद्यापीठ बनाया जाये। केवल संस्कृत और वेद शास्त्रों की शिक्षा का अच्छा केन्द्र बनाया जाये। स्वामी जी तो अपना जीवन सफल बना गये अब हमें अपना कर्तव्य सोचना है।

ध्रुवानन्दो ध्रुवानन्दे विलीनो ब्रह्मतेजसि।
शरदिन्द्रसमातस्य द्योतते कीर्ति-कौमुदी।

—बिहारीलाल शास्त्री

❀ ❀ ❀

करते हैं परन्तु हम प्रभु की इच्छा के समक्ष नतमस्तक हैं। कल (२९ जून) ही श्री स्वामीजी का बम्बई से लिखा हुआ पत्र हमें प्राप्त हुआ था। हमें क्या पता था कि जब हमें उनका पत्र मिला तब वे हम से सदैव के लिए वियुक्त हो गये थे।

सामान्यतः समस्त आर्य जगत् और विशेषतः सार्वदेशिक सभा स्वामी जी महाराज की बड़ी ऋणी है। उनके निधन से आर्य समाज हमारे इतिहास के एक अनुपम कार्यकर्त्ता और नेता से वंचित हो गया है। उनके स्थान की पूर्ति होनी कठिन है। हम विधि के विधान के समक्ष नतमस्तक हैं। प्रभु से प्राथना है कि हमें ऐसी शक्ति और योग्यता प्रदान करें कि जिससे हम सब मिलकर वैदिक धर्म का प्रचार बढ़ाएं।

समुद्र पार अफ्रीका की भूमि के हम समस्त आर्य नर-नारी सार्वदेशिक सभा के मान्य सदस्यों के प्रति अपनी संयुक्त क्षति में समवेदना प्रदर्शित करते हैं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और आर्य समाज पर उनकी कृपा बनी रहे।

चन्द्रप्रकाश गुप्त मन्त्री
आर्य प्रति० सभा पूर्वी अफ्रीका

मौरीशस

स्वामी जी महाराज के निधन के समाचार से समस्त मौरीशस के आर्य नर-नारी अत्यन्त दुःखी हैं। आर्य जगत् की महती क्षति पर, जिस की पूर्ति नहीं हो सकती, हम सब सार्वदेशिक सभा के प्रति समवेदना का प्रकाश करते हैं।

प्रधान आर्य सभा मौरीशस
पोर्ट लुइस

कम्पाला

स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन का समाचार सुनकर हम सबको मर्मान्तक दुःख हुआ। उनका वियोग बड़ा दुःखद और आर्य-समाज की महती क्षति है। हार्दिक समवेदना का प्रकाश करते हैं। उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

प्रधान
आर्य समाज

दारास्सलाम

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के स्वर्गवास का समाचार (रेडियो द्वारा) जानकर हार्दिक दुःख हुआ। वे आर्य जगत् के मूर्धन्यनेता महर्षि के अनन्य भक्त और भारत के सुप्रसिद्ध आर्यसंन्यासी महात्मा थे। दारेसलाम की समस्त आर्य संस्थाओं के अधिकारियों एवं सदस्यों को बड़ा भारी आघात लगा है। आर्य-जगत् की महती क्षति हुई है जो सदा अपूरणीय रहेगी।

ओ३म् प्रकाश वसिष्ठ
मन्त्री आर्य समाज

टांगा (तंजानिया)

स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के २९ जून ६५ को बम्बई में हुए दुःखद एवं आकस्मिक निधन के समाचार से हम बड़े दुखी हुए जिस की सूचना आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका से प्राप्त हुई। ३-७-६५ को बृहत् शोक सभा हुई और शोक-प्रस्ताव पास हुआ।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति और सार्वदेशिक सभा को इस महती क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

ऐस० आर० सेठी
मंत्री आर्यसमाज

नैरोबी

सार्वदेशिक सभा के प्राण, आर्यसमाज के आजीवन विशिष्ट कार्यकर्त्ता, अफ्रीका मौरीशस आदि देशों में वैदिक संदेश को प्रचारित करने

वाले महान् नेता पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी के आकस्मिक अवसान पर नैरोबी के आर्य-सामाजिक क्षेत्र स्तब्ध रह गए।

आजीवन वैदिक धर्म की सेवा निष्काम निर्भीक एवं निःस्वार्थ भाव से करने वाले उस महारथी एवं आर्य जगत् के प्रेरणा दाता नेता के उठ जाने से अपूरणीय क्षति हुई है। आर्यसमाज पर छाए हुए आपत्ति के बादलों को छिन्न-भिन्न करने वालों में वे आगे की पंक्ति में रहे उन्होंने सभी आन्दोलनों में प्रमुख भाग लेकर हमें मार्ग दिखाया। उनके भक्तों को उचित है कि उनके अधूरे छोडे हुए कार्यों को पूर्ण करें तथा उनके चरण-चिह्नों पर चलें।

अछरादास
प्रधान आ० स०

जियावाडी (ब्रह्मदेश)

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के देहावसान का दुःखद समाचार आकाशवाणी द्वारा सुनकर बड़ा ही दुःख हुआ। १-७-६५ को नगर में शोक सभा हुई। वे आर्य समाज के कर्मठ नेता, बाल ब्रह्मचारी, सार्वदेशिक सभा के प्राण, भारत के एक दर्शन शास्त्री, वैदिक धर्म के तूफानी प्रचारक, तर्क शास्त्री, निर्भीक वक्ता एवं अनुशासन के प्रहरी थे। परमात्मा उन्हें पुनः भारत में हो इसी कार्य के लिए जन्म दें।

केदारनाथ
मन्त्री आ० स०

मांडले

उनकी पुण्यात्मा को सर्वप्रथम उच्च स्थान प्राप्त हो। उनकी पुण्य स्मृति आर्य जनों के लिए सदा पथप्रदर्शक बनी रहे।

रामलाल गुलाठी

लंडन

स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन का समाचार पाकर स्तब्ध रह गया। लंडन के आर्य जन और आर्य परिवार आर्य समाज की इस महती क्षति के दुःख में सार्वदेशिक सभा और आर्य जगत् के साथ हैं।

गौतम तिलक

मुम्बासा

स्वामी जी आर्य समाज के स्तम्भ थे। भूमंडल के आर्य जगत् और सार्वदेशिक सभा की बड़ी क्षति हुई!

रामकरण
प्रधान आ० स०

किसुमु

परमात्मा आर्यजनों को शक्ति दें, जिससे इस क्षति की पूर्ति करने का यत्न कर सकें।

गुरुदास राय

सिंगापुर

पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का जीवन अत्यन्त त्यागमय था तथा वे आर्यसमाज के स्तम्भ थे। स्वामीजी महाराज गत वर्ष सिंगापुर पधारे थे। वे ही एक संन्यासी थे जो यहां से कुछ न लेकर देकर ही गए। स्वामी जी हमारे वैदिक पुस्तकालय के विकास की महान् योजना तथा पवित्र विचार दे गए। पिछली बार अस्वस्थ होते हुए भी यहां तथा राजधानी क्वलालम्पुर व विविध स्थानों में भ्रमणकर प्रचार करते रहे। अब हमें केवल उनकी मधुर स्मृतियों का ही सहारा है।

श्रीधर पाठक
मंत्री आ० स०

आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के शोक प्रस्ताव

उत्तर प्रदेश

१—शामली (मुजफ्फर नगर) २—झांसी ३—आर्य स्त्री समाज गोंडा ४—आर्य कुमार पाठशाला मवाना (मेरठ) शोक प्रस्ताव के बाद पाठशाला बन्द कर दी गई ५—कांठ(मुरादाबाद) ६—एटा ७—गोरखपुर ८—हरदोई ९ चांदपुर (बिजनौर) १० शिकोहाबाद ११—खतौली (मुजफ्फरनगर) १२-एन० सी० वी० इन्टर कालेज आगरा छावनी शोक प्रस्ताव के बाद १-७-६५ को सम्मान मे विद्यालय बन्द कर दिया गया १३—खुरजा (बुलन्दशहर) १४—हाथरस १५—फैजाबाद १६—आर्य समाज गर्ल्स इन्टर कालेज मथुरा (विद्यालय बन्द रहा) १७—कालपी १८—आर्य स्त्री समाज शहर मेरठ(१९) अमरोहा (मुरादाबाद) २०—कासगंज २१—मुहम्मदी (खीरी) २२-कायमगंज फर्रुखाबाद २३—वाराणसी केन्ट २४—भरथना (इटावा) २५—जौनपुर २६—बेवर मैनपुरी २७—काजिमाबाद (अलीगढ़) २८—मऊनाथ भंजन २९—आर्ष गुरुकुल (एटा) ३०—बाद ३१—पूरनपुर (पीली भीत) ३२—आर्यकन्या पाठशाला इंटर कालेज मिर्जापुर ३३—मगरहा सीखड़ (मिर्जापुर) ३४—राजामंडी आगरा ३५—सदर झांसी ३६—सुभाषनगर प्रयाग ३७—सदर मेरठ ३८—महाविद्यालय ज्वालापुर ३९—गुरुकुल वृन्दावन दोनों संस्थाएं सम्मान स्वरूप बन्द रहीं ४०—मेरठ शहर ४१—मसूरी ४२—आ० स० लालापार सहारनपुर ४३—जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ ४४—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग पूरनपुर (पीलीभीत) ४५—श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ ४६—दयानन्द नगर गाजियाबाद ४७—शृंगार नगर लखनऊ।

मध्य भारत

(१) गुना (२) देवास (३) श्री म० कृष्ण पुस्तकालय बांगरोद (रतलाम) (४) अशोक नगर (५) सरस्वती विद्यालय गुना (६) सतना (७) रतलाम (८) मल्हारगंज (इन्दौर)।

मध्य प्रदेश

(१) विलासपुर (२) तुलराम उच्चतर आर्य कन्या विद्यालय दुर्ग (३) आर्य कन्या पाठशाला, इटारसी (४) खडवा पूर्वनिमाड़ (५) अकोला

मद्रास

स्वामी जी के वियोग से हम सब संतप्त हैं। स्वामी जी को मद्रास से प्रेम था और हम सब की स्वामी जी के प्रति श्रद्धा थी।

धर्मजित जिज्ञासु
मंत्री आ० स०

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद

स्वामी जी आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर वेद ज्ञान सरिता के प्रसार और प्रचार में रत रहे। देश-विदेश सभी स्थानों में पवित्र वेद-विचार-धारा को प्रवाहित किया। जब २ आर्य समाज परीक्षणों में उतरा स्वामी जी ने अपने को सैनिक के रूप में प्रस्तुत किया। हैदराबाद के धर्म युद्ध तथा सिंध सत्याग्रह में आप अग्रणियों में रहे। नरेन्द्र प्रधान

दार्जिलिंग

१९२६ से १९२९ तक जब आर्य समाज दार्जिलिंग की स्थापना हुई थी श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी जिस समय धुरेन्द्र शास्त्री थे कई बार दार्जिलिंग पधारे थे। उस समय काली-चरण बिल्डिंग के एक छोटे से कमरे में

साप्ताहिक सत्संग होता था। उन्होंने इस समाज की निःशुल्क सेवा की थी। जब-जब वे यहां रहे अपने खर्च से खाते रहे। उनके सत्संग का प्रभाव जनता पर पड़ा उसके फल स्वरूप समाज का काम चल पड़ा। सन् ५१ में स्वामी जी गोरक्षा सम्मेलन में पधारे थे स्वामी जी के ओजस्वी भाषण से नवयुवक उत्तेजित हो उठे थे और कसाइयों के विरुद्ध भी मनमानी की थी उसमें ९ नवयुवक पकड़े गए परन्तु सम्मेलन सफल हुआ। पूज्य स्वामी जी के उपदेश से बहुत से लोगों ने सिग्रेट-बीड़ी पीना छोड़ दिया था ' आर्य समाज दार्जिलिंग उनके उपकारों के लिए उनका सदैव ऋणी रहेगा।

टीकाप्रसाद राई
प्रचार मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल

बंगाल के आर्य जन बड़े दुःखी हैं। हार्दिक समवेदना के साथ आय समाज के महान नेता को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूं।

जंगीलाल
सभा मन्त्री

पानी गांव, मथुरा

(स्वामी जी की जन्म भूमि)

स्वामी जी के निधन का समाचार पाकर समस्त घर बार और ग्राम शोक में डूब गया।

वेनीराम शर्मा सरपंच न्याय पंचायत क्षेत्र
श्री स्वामी जी के निकटतम परिजन

आ० प्र० सभा कर्नाटक, बंगलौर

स्वामी जी की मृत्यु से बड़ा दुःख हुआ। १९/६ में जब वे बंगलौर पधारे थे तब उन्होंने इस सभा का उद्घाटन किया था।

जे० नारायण राव
प्रधान

बंगाल

(१) जमशेद पुर (२) खिदिर पुर (३) हावड़ा (४) कार्नवालीस स्ट्रीट कलकत्ता (५) आसनसोल (६) मल्लिक बाज़ार, कलकत्ता।

बम्बई

(१) आर्य स्त्री समाज गिरगांव (२) कमाठीपुरा बम्बई (३) मांटुंगा ४) बम्बई नगर एवं उप नगरों की समस्त आर्य समाजों ने सम्मिलित शोक सभा ४-७-६५ को की (५) घाटकूपर बम्बई (६) आर्य कन्या गुरुकुल पोरबंदर (७) आर्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदा शोक प्रस्ताव के बाद विद्यालय बंद कर दिया गया (८) महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा (९) काकरिया रोड अहमदाबाद (१०) कमाठीपुरा बम्बई (११) नाना पेठ पूना (१२) कुबेरनगर अहमदाबाद (१३) सरसपुर अहमदाबाद (१४) देवलाली (१५) शान्ता-क्रूज बम्बई (१६) सायला सौराष्ट्र।

राजस्थान

१) कोटा (२) शाहपुरा (३) आर्य पुत्री हायर सैकेण्डरी स्कूल, अजमेर (४ अशोक नगर (५) कोटा सिटी (६) भरतपुर (७) अजमेर

पंजाब

(१) करनाल, होली मुहल्ला २) विक्रमपुरा, जालंधर (३) किला आर्य समाज, विक्रमपुरा-जालंधर (४) चंडीगढ सेक्टर ८ (५) अर्जुन नगर गुड़गांवा (६) चंडीगढ़ सेक्टर २२ (७) लुध्याना रोड फिरोजपुर छावनी ८) रेलवे रोड, अम्बाला शहर २ ९) वल्लभगढ़ (१०) गोविन्द गढ़ जालंधर नगर (११) धारीवाल (१२)नया नंगल (१३) केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर (१४) पठानकोट (१५) नंगल टाउनशिप (१६) पानीपत (१७) बटाला (१८ श्री नगर, कशमीर (१९) होडल (२०) आर्य महिला समाज

समवेदना सन्देशों की प्राप्ति स्वीकार

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का निधन बड़ी दुःखद घटना है जिससे समस्त आर्य-जगत् शोकाकुल है। उनके असंख्य मित्रों, श्रद्धालु भक्तों, प्रशंसकों और विशाल आर्य-परिवार के दुख की सार्वदेशिक सभा को अनुभूति है परन्तु विधि के विधान के समक्ष नत-मस्तक होने के सिवाय अन्य कोई चारा नहीं है।

हम आजीवन आर्यसमाज की सेवा में निरत रहें उसके कार्य और यश को बढ़ाएं, उसकी शक्ति को दृढ़ एवं समन्वित करें, हम सबको स्वामी जी महाराज के उदात्त एवं कर्मठ जीवन से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास — प्रधान
रामगोपाल — मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

अम्बाला शहर—

बिहार

(१) गढ़वा (पलामू) (२) मोतीहारी (३) पीरो शाहाबाद (४) रोसड़ा (५) मधुआ (६) रजौली (७) गया (८) मलाही चंपारन (९) बिहार समाज।

दिल्ली

(१) आर्य समाज दीवान हाल (२) बाजार सीताराम (३) तेलीवाड़ा (४) सेंट्रल बोर्ड आफ हायर एजुकेशन, तिलक नगर (५) आर्य समाज सावली दादि पंच-पुरी गढ़वाल शाखा समिति (६) नया बांस (७ आर्य कुमार सभा किंग्सवे (८) मिन्टोरोड (९) आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज नगर-निगम दिल्ली।

स्वामी ध्रुवानन्द जी को निगम की बैठक में श्रद्धांजलि

दिल्ली, सोमवार (प्र) नगर निगम के सदस्यों ने निगम की साप्ताहिक बैठक में आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता स्वामी ध्रुवानन्द के निधन पर शोक प्रकट किया।

निगम पार्षदों ने दो मिनट मौन रहकर उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

स्वामी ध्रुवानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निगम कांग्रेस दल के नेता श्री ब्रज-मोहन ने उनके द्वारा की गयी समाज सेवा की सराहना की।

जनसंघ दल के नेता प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा ने स्वामी ध्रुवानन्द द्वारा देश में तथा देश के बाहर की गयी सेवाओं के प्रति आदर व्यक्त किया।

नवभारत टाइम्स

(आंध्र व महाराष्ट्र) मद्रास

(१) हिंगोली (२) जालना (औरंगाबाद) (३) गुलबर्गा (४) गांधी धाम (५) धाराशिव उस्मानाबाद (६) विश्वेश्वर पुरम बंगलौर।

उड़ीसा

(१) ब्रजराज नगर (सम्बलपुर) (२) रांची।

शोक समाचार

इस मास श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के अतिरिक्त आर्यसमाज को श्री महात्मा देवीचन्द जी होशियारपुर, श्री पं० सत्य देवजी विद्यालङ्कार और श्री पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार पालीरत्न के आकस्मिक निधन का आघात सहन करना पड़ा।

श्रीयुत पं० सत्यदेव जी विद्यालङ्कार ख्यातनामा पत्रकार और ग्रन्थकार थे। उनसे आर्यसमाज का यश बढ़ा। उनकी गणना भारत के इने गिने योग्यतम सम्पादकों में होती थी। दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि २ सुप्रसिद्ध दैनिक पत्रों को जन्म देने और उनका उत्तम सम्पादन करके उन्हें उन्नति के पथ पर अग्रसर कर देने का श्रेय उन्हें प्राप्त रहा। हैदराबाद सत्याग्रह का इतिहास, राष्ट्रवादी दयानन्द 'स्वामी श्रद्धानन्द जी का बृहत् जीवन चरित्र, 'जीवन संघर्ष' आदि अनेक ग्रन्थ लिखकर उन्होंने आर्यसमाज और हिन्दी के साहित्य को मूल्यवान् बनाया। आंखों की ज्योति चली जाने पर भी वे बड़े उत्साह और तन्मयता के साथ साहित्य-निर्माण का कार्य करते रहे। इस समय वे श्री स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी की जीवनी लिख रहे थे। इस कार्य को पूर्ण करने का भार श्री पं० सत्यकामजी विद्यालङ्कार ने अपने ऊपर लिया है जो श्री स्व० पं० इन्द्र जी के भांजे और नवनीत बम्बई के संपादक हैं।

श्री पं० चन्द्रमणि जी चिरकाल तक गुरुकुल कांगड़ी में वेद के प्रोफेसर रहे। श्री पंडित जी की वेद के धुरंधर विद्वानों में गणना होती थी। उनका 'वेदार्थ दीपक' नाम से निरुक्त का दो भागों में किया हुआ भाष्य उनकी अगाध विद्वत्ता और परिश्रमशीलता का परिचायक है। उन्होंने वाल्मीकि रामायण और मनुस्मृति का भी अच्छा हिन्दी अनुवाद किया था। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि के भी वे कई वर्ष पर्यन्त मुख्याधिष्ठाता रहे।

इन दोनों महानुभावों का विधन वस्तुतः आर्यसमाज और साहित्यिक जगत् की महती क्षति है। उनके परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना का प्रकाश करते हुए हम प्रभु से दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

वैदिक संस्कृति की उन्नायक—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

[श्रीयुत अमीचन्द जी]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज का सबसे महत्वपूर्ण संगठन है। उसकी स्थापना ५६ वर्ष पूर्व वैदिक संस्कृतिके उन्नयन केलिए की गयी थी तबसे अब तक देश विदेश मे लगभग चार हजार से अधिक आर्यसमाजों के माध्यम से यह संस्था अनेक समाज कल्याणकारी कार्य कर रही है। इस संस्था के अन्तर्गत नवयुवकों में देश प्रेम की भावना उत्पन्न करने के लिये समय समय पर विशेष यत्न किया जाता है। भारत के अतिरिक्त नेपाल, अफ्रीका, त्रिनीदाद में आर्य वीर दल की ५४० शाखाएं कामकर रही हैं। इनमें नवयुवक राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का महा-अधिवेशन तीन चार जुलाई को कानपुर मे हुआ है, समग्र देश के कोने कोने से आर्य नेता संन्यासी एवं विद्वानों ने भाग लिया और विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श किया।

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत देश भर मे दो सौ आर्य कुमार सभाएं, ३०० कालेज और हाई स्कूल तथा दो हजार प्राथमिक तथा ६० गुरुकुल, दो हजार सस्कृत पाठशालाएं और एक दर्जन से अधिक टेकनिकल संस्थाएं कार्य कर रही हैं।

समाज के कल्याण के उद्देश्य से प्रभावित होकर अनेक अनाथालय वनिता आश्रम, गौशालाएं चल रही हैं। आर्य समाज की शिक्षा-संस्थाओं में प्रतिवर्ष दो लाख से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उन पर प्रति वर्ष एक करोड़ रुपया खर्च होता है। इसी प्रकार आर्य-समाज के ३०० वाचनालय पुस्तकालय एवं बहुत सी पत्र पत्रिकाएं समाज को आदर्श जीवन बिताने के लिए प्रेरित करती हैं। समाज के लगभग एक हजार संन्यासी व्याख्याता और भजनोपदेशक समाज के कल्याणकारी उद्देश्यों के प्रचार में विशेष कार्य कर रहे हैं।

सभा ने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए विशेष आन्दोलन चलाये, जिन आन्दोलनों मे गोरक्षा आन्दोलन तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा बलात् धर्म परिवर्तन रोकने के लिए सार्वदेशिक सभा ने विशेष प्रयत्न किया।

सार्वदेशिक सभा की स्थापना में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बड़ा हाथ था। उसके संचालन में स्वामी नारायणस्वामी, श्री घनश्यामसिंह गुप्त, स्वर्गीय इन्द्र विद्यावाचस्पति, स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, स्वामी अभेदानन्द आदि महानुभावों ने सभा के अध्यक्ष के रूप मे सराहनीय कार्य किया।

स्वर्गीय डा० केशवदेव शास्त्री, स्व० प्रो० सुधाकर एम० ए० पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय लाला रामगोपाल शालवाले तथा रघुवीर सिंह जी शास्त्री आदि सभा के महासचिव के रूप मे सेवा करते रहेहैं। इससमय सेठप्रतापसिंह शूरजीवल्लभदास प्रधान, डा० डी०रामपटना विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति उपाध्यक्ष और प्रसिद्ध आर्य नेता नरेन्द्र जी हैदराबाद) एवं प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य भी सार्वदेशिक सभा के प्रमुख पदाधिकारियों मे हैं।

सार्वदेशिक सभा अपने कार्य को हिन्दी-

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी की प्रस्तावित स्थूल योजना

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। १९७५ में आर्य समाज को स्थापित हुए पूरे १०० वर्ष व्यतीत हो जायेंगे। इतने थोड़े समय में जो सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सफलताएं आर्य समाज ने प्राप्त की हैं तथा जिस गति से देश विदेश में हमारे संगठन का विस्तार हुआ है, वह हम सब के लिए गौरव की बात है। अपनी इन सफलताओं का मूल्यांकन करने और भावी योजना बना कर फिर नई चेतना जागृत करने के लिए १९७५ में आर्यसमाज का शताब्दी समारोह मनाने के लिए यह आवश्यक है,कि अब से ही तैयारियां आरम्भ कर दी जाएं। सन् ६५ तो आधा निकल ही चुका और सन् ७५ के प्रारम्भ में आर्य समाज स्थापना दिवस पर यह आयोजन होगा, इस तरह केवल ९ साल बीच में रह जाते हैं। इन नौ वर्षों में यदि निम्न कार्य पूरे हो सके तो शताब्दी की सफलताओं में और चार चांद लग जायेंगे।

१. आर्य समाज की सदस्य संख्या

शताब्दी समारोह तक निश्चित ही देश की जन संख्या पचास करोड़ को लांघ जायगी। उसमें यदि हम कम से कम पांच करोड़ अपने सदस्य सारे देश में बना लें तो इसका अभिप्राय होगा दस में एक व्यक्ति आर्य समाजी है। क्योंकि एक सुधरा हुआ और लगनशील आर्य दस व्यक्तियों पर अपनी छाप आसानी से डाल सकता है। इस तरह देश को वैदिक विचारों से अनुप्राणित करने में सुगमता हो जायगी। परन्तु इसके लिए अब ही से योजनाबद्ध अभियान प्रारम्भ करना होगा।

प्रचार तथा आर्यसमाज के सिद्धांतों की दृष्टि से अधिक व्यापक बनाना चाहती है। सभा विदेशों के उपनिवेशों ब्रिटिश गियाना, डचगियाना, त्रिनीदाद, मौरिशस, फिजी, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में आर्यसमाज का कार्य और अधिक व्यापक बना रही है इन सब स्थानों में आर्य-समाज के प्रयत्न से समाज में कल्याणकारी भावनाएं उत्पन्न हुई हैं। इन देशों में आर्य-समाज के मन्दिरों में हिन्दी, संस्कृत और वैदिक साहित्य का प्रचार किया जाता है।

सार्वदेशिक सभा देश की उन प्रमुख संस्थाओं में पहली संस्था है, जिसका अपना भवन कई लाख रुपये की लागत का है। इस सभा भवन द्वारा आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियां संचालित की जाती हैं। उनमें सभा द्वारा अनुसंधान विभाग तथा महत्वपूर्ण प्रकाशन, सम्बन्धी योजनाएं भी प्रमुख हैं। सभा का अपना बृहत् पुस्तकालय है। उसमें कई हजार पुस्तकें हैं। मुख्य रूप से समग्र वैदिक साहित्य सभा के पुस्तकालय में विद्यमान हैं। सभा ने जिन महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन किया है, उन में बृहद् विमानशास्त्र, वैदिक युग, आदि मानव, तथा बहुत सी अन्य पुस्तकें हैं। 'सभा ने स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित आर्य समाज का विस्तृत इतिहास कई भागों में प्रकाशित किया है। इससे आर्यसमाज के इतिहास के अतिरिक्त उस समय के महत्वपूर्ण आन्दोलनों पर भी पूरा प्रकाश पड़ता है। आर्यसमाज की और भी अनेक प्रवृत्तियां सार्वदेशिक सभा के माध्यम से तथा सम्बद्ध संस्थाओं के माध्यम से चल रही हैं। इनसे करोड़ों व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं।

कुछ दिनों से अपनी इस आर्य-सामाजिक परिवार की सदस्य संख्या बढ़ाने का काम न केवल रुक सा ही गया है अपितु जो थे भी उनमें से जो कुछ किन्हीं कारणों से हट कर दूर चले गये हैं, उन्हें वापिस लाने अथवा उनसे सम्पर्क बनाने का प्रयास नहीं किया गया। इस नये अभियान की पहल यहीं से होनी चाहिये।

आर्य समाज क्योंकि विचारों में क्रान्ति लाने वाला संगठन है इसलिये शिक्षित और बुद्धिमान् व्यक्तियों का प्रारम्भ से ही इसकी ओर रुझान होना स्वाभाविक था। सदस्यता-वृद्धि के इस अभियान में शिक्षित समुदाय को निकट सम्पर्क में लेना हर दृष्टि से उपयोगी होगा।

२. साहित्य-प्रचार

आर्य समाज की स्थापना के लगभग पचास साल तक साहित्य-सृजन का काम बड़े उत्साह से चलता रहा। स्वयं स्वामी जी ही इसे कितना आवश्यक समझते थे, उसका प्रमाण उनकी लेखनी से निकला साहित्य है। यों पचास साल के बाद भी साहित्य तो तैयार हुआ पर अपेक्षाकृत कम। इसका कारण जहां विद्वान् लेखकों का उस ओर कम झुकाव रहा वहां तैयार साहित्य की खपत का प्रश्न भी था। स्वाध्याय की रुचि धीरे धीरे गिरती चली गई। कुछ प्राचीन उपयोगी आर्य साहित्य ऐसा भी है जो एक-दो बार ही छप कर रह गया है।

समय और परिस्थिति को ध्यान में रख कर जहाँ नया साहित्य तैयार होना बहुत आवश्यक है वहां पुराने ठोस आर्य साहित्य का भी सुन्दर प्रकाशन होना चाहिये। यह काम प्रान्तीय और सार्वदेशिक सभा के अतिरिक्त परोपकारिणी सभा एवं सम्पन्न आर्य समाजें अच्छा कर सकते हैं। काम दुहरा न हो जाये इसके लिए वह बांट लेना ठीक रहेगा। नये साहित्य के लिए ऊंचे और उत्तम के धनी लेखकों को पुरस्कार योजना अच्छा प्रोत्साहन दे सकेगी। इससे एक ही विषय पर कई लेखकों के विभिन्न ढंग से लिखे गये विचार उपलब्ध हो सकेंगे।

३. मंच द्वारा प्रचार

ज्यों-ज्यों जनता का शैक्षणिक स्तर ऊंचा हो रहा है, उस हिसाब से हमारे भी मंच का स्तर ऊंचा होना आवश्यक है। इसके लिए सुपठित और परिश्रमी व्याख्याता चाहिये। बहुत दिनों से इसके लिए उच्चस्तरीय उपदेशक विद्यालय की बात भी चल रही है। परन्तु एक विद्यालय से यह काम पूरा नहीं हो सकेगा। देश को पांच भागों में बांट कर १९७५ तक इस प्रकार के ५ केन्द्र यथाशीघ्र चालू होने चाहियें। अच्छी योग्यता के मेधावी छात्रों को उनमें प्रवेश दिया जाये और अध्ययन काल का पूरा भार वहन करने के अतिरिक्त स्नातकोत्तर जीवन की भी गारण्टी उन्हें दी जाय।

वानप्रस्थी और संन्यासियों का भी बड़ी तेजी से अभाव हो रहा है। उंगलियों पर गिनने लायक कुछ महात्माओं को छोड़कर अच्छे स्तर के वानप्रस्थी और संन्यासी प्रायः कम हो रहे हैं। उधर अच्छे-अच्छे सेवा-निवृत्त (रिटायर्ड) डाक्टरों, प्रोफेसरों, इंजीनियरों और दूसरे भी इसी प्रकार के व्यक्तियों का समय काटना भारी हो रहा है! देश की और आर्य समाज की बहुत बड़ी सेवा इनसे हो सकेगी, यदि इस प्रकार के व्यक्तियों में से समाज सेवा की रुचि रखने वाले व्यक्तियों को कुछ काम हम दे सकें!

काम भी दें और उनसे उनकी आवश्यकता पूछकर दाम भी दें इसके लिये दयानन्द सेवा मण्डल की स्थापना की जाये। हर प्रान्त में इसके केन्द्र हों और वहां उन्हें कुछ दिन रखकर प्रशिक्षण दिया जाये। इसी बीच में उनकी

रुचि का पता लग जायगा और उसी आधार पर उनके अनुरूप काम भी सौंपा जा सकेगा।

हमारा प्रचार केवल आन्दोलनात्मक और विचारोत्तेजक ही न हो उसमें रचनात्मक और श्रद्धा की भी पुट पूरी होनी चाहिये। इसके लिये जहां चिकित्सालयों आदि के द्वारा अच्छी सेवा हो सकेगी वहां यज्ञों और कथाओं आदि की परम्परा से श्रद्धा जागृत करना भी उपयुक्त रहेगा। अन्ध श्रद्धा के हम विरोधी जरूर हैं पर अश्रद्धा भी हमारे किसी व्यवहार से न टपके इस ओर भी सजग रहना बहुत जरूरी है।

४. शिक्षा संस्थाएं

देश में इस समय आर्य समाज और उसके संगठनों द्वारा संचालित होने वाली शिक्षण संस्थाओं का एक अच्छा जाल बिछा हुआ है। महाविद्यालयों, विद्यालयों और कन्या पाठशालाओं आदि के अतिरिक्त गुरुकुलों ने भी जो सेवा देश की है, वह इतिहास में अच्छे शब्दों में स्मरण की जायेगी। भारत-सरकार के बाद निजी संगठनों में शिक्षा विस्तार कार्यक्रमों पर व्यय करने वाली प्रमुख संस्थाओं में आर्य समाज का अपना महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु शिक्षा प्रसार के भी इस कार्यक्रम का कोई शृंखलाबद्ध रूप न होने से जहां उसका पूरा लाभ नहीं उठाया जा रहा है वहां जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह संस्थाएं चालू की गयी थीं, उसमें भी कोई विशेष प्रगति नहीं हुई। शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से धार्मिक वातावरण के प्रचार में जो सहयोग मिलना चाहिये था प्रारम्भ में वह अवश्य रहा परन्तु अब तो कहीं-कहीं यह शिक्षण संस्थाएं अपने मूल को भी नष्ट करने पर तुली हुई हैं।

देश की इन समस्त शिक्षण संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिये एक मजबूत संगठन बनना हर दृष्टि से आवश्यक है। शताब्दी से पूर्व के नौ वर्षों में यह कार्य भी सम्पन्न हो ही जाना चाहिये और शताब्दी के अवसर पर समस्त शिक्षण संस्थाओं का पूरा परिचय और कितना व्यय वर्ष में उन पर होता है इसकी विस्तृत जानकारी देने वाली पुस्तक भी छपनी आवश्यक है।

ऐसा भी अनुभव किया जा रहा है कि अब भविष्य में शिक्षा संस्थाओं पर अधिक ध्यान दिया जाय तो वहां अधिक अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहायता मिलेगी। इसी योजना में अच्छे और प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति देने का भी क्रम चालू होना हितकर रहेगा।

५. शताब्दी समारोह

शताब्दी समारोह तो बम्बई में ही होना ठीक होगा परन्तु उससे पूर्व देश के प्रमुख नौ राज्यों में अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन अच्छे स्तर पर होने चाहियें। जहां तक प्रान्तीय सभाओं का सम्बन्ध है वह इन नौ वर्षों में प्रान्तीय आर्य सम्मेलन कमिश्नरियों के हिसाब से रखें तो उससे अच्छा प्रचार हो जायगा।

६. शुद्धि प्रचार

शुद्धि प्रचार का कार्य भी कुछ दिनों से पर्याप्त मन्द पड़ गया है।

जब कि दूसरे मतावलम्बी इस दिशा में अधिक सक्रिय हो गये हैं भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों और पर्वतीय प्रदेशों में विशेष रूप से इनका जाल फैल रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके बाद अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी और ला० लाजपतराय जी आदि ने जब इस बीड़े को उठाया था तो न केवल अपनी संख्या बढ़ाने का ही उद्देश्य था अपितु देश में धर्म-परिवर्तन की आड़ में जो राष्ट्रीयता का अभाव होता जा रहा था उसे संभालना

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कानपुर वार्षिक अधिवेशन
में ता० ३-७-१९६५ को दिया गया

श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास का

अध्यक्षीय भाषण

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम। यजु० अ० ४०। मन्त्र १६॥

आर्य जगद्हित परायण श्रद्धेय संन्यासिगण, आदरणीय विद्वद्वृन्द,

माननीय श्रोतृजन एव वन्दनीय मातृवर्ग !

आज पुनः एक बार आप सबके समक्ष समुपस्थित होकर अभिनन्दन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है।

बम्बई अधिवेशन के बाद भारत देश में अनेक घटनाएं घटित हुई हैं। अनेक उतार-चढ़ाव हुए हैं। जिनका न केवल देशव्यापी प्रभाव रहा, परन्तु विश्वभर में उनकी गहरी छाप पडी। स्वातंत्र्य और स्वराज्य के अनन्तर प्रथम बार देश की ऐसी परिस्थिति प्रादुर्भूत हुई कि वह अपने को असहाय, असमर्थ और निर्बल अनुभव कर रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति ने विश्ववंद्य महात्मा गांधीजी तथा लौह पुरुष सरदार पटेल के अभाव का अनुभव हमें नहीं होने दिया था जितना कि आज इन तीन महा विभूतियों के वियोग में सम्पूर्ण देश अपने को असहाय और किंकर्तव्यविमूढ सा अनुभव कर रहा है। देश की आन्तरिक स्थिति उत्तरोत्तर महती चिन्ता का विषय बनती जा रही है। बाह्य स्थिति भी अत्यन्त विषम हो गई है। विदेशों के साथ सुसम्बद्ध हमारा राजनैतिक सम्बन्ध-सूत्र भी दिनोदिन शिथिल होता जा रहा है, जो देश हमारे साथ अपना निकटतम मैत्री सम्बन्ध बनाये हुए थे वह भी शंकास्पद बनता जा रहा है। देश की सीमाएं शत्रुओं के दुन्दुभी नाद से निनादित हैं। ऐसी सर्वतोमुखी निराशा के घोर अन्धकार से पूर्ण परिस्थिति में यदि कहीं प्रकाशपुंज की आशा की अपेक्षा की जा सकती है तो वह आनन्दकन्द देव दयानन्द के पुण्य प्रभाव से प्रभावित वैदिक धर्म धुरीण महर्षि के अनुयायियों से ही की जा सकती है। क्योंकि इनमें इतना आत्मिक बल, तेज, ज्ञान और साहस है कि अपनी संगठित शक्ति से इस निविडतम अन्धकार को दूर कर सकते हैं। महाकवि माघ ने कहा है :—

ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः।
क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।

भारत वही देश है जिसकी सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार, कला-कौशल और ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होने के लिये देश देशान्तर तथा द्वीपद्वीपान्तर के समस्त मानव लालायित रहते थे। इसी विशुद्ध निर्विकल्प सत्य को लक्ष्य में रखकर महाराज मनु ने अपने विश्व-विख्यात मानव धर्म-शास्त्र में उद्घोषित किया था:—

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

यह बात भी निर्विवाद प्रमाणित हो चुकी है कि विश्व में मानव मात्र को आदि ज्ञान का देने वाला यदि कोई साहित्य है, तो वह केवल वेद ही है। वेदोऽखिलं धर्ममूलम्। वेद ही सब धर्मों का आदिस्रोत है। यही समस्त ज्ञान का मूल है। निखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त सम्पूर्ण ज्ञान की धाराओं का वेद ही उद्गम स्थान है, इस तथ्य को पाश्चात्य विद्वानों ने भी मुक्त कण्ठ से अंगीकार किया है। उनका कथन है—

Rigved is the oldest Book in the library of the universe

धर्म, राजनीति, दर्शन शास्त्र, अर्थ शास्त्र, मनोविज्ञान, कलाकौशल, शिल्पशास्त्र, साहित्य युद्धविद्या, आदि समस्त ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी यह देश उन्नति के शिखर पर आरूढ था। कविकुलगुरु कालिदास की इस सूक्ति के अनुसार यही परमपावन देश अवनति के भयंकर गर्त में जा पड़ा है।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

महान् उच्च और उज्ज्वल आदर्शों को दृष्टि पथ में रखकर युगद्रष्टा महर्षि ने जिन उदात्त-भावनाओं, दिव्य प्रेरणाओं, निस्पृह, साधनाओं तपस्याओं और निष्काम सेवा वृत्तियों को अपने जीवन का पाथेय बनाया था, खेद है हम उनके मार्ग का पूर्णतया अनुसरण न कर सके।

जिन आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन, अध्ययन अध्यापन और निरन्तर स्वाध्याय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विशेष बल दिया था उसके प्रति हमारी विशिष्ट श्रद्धा होनी चाहिये। हमारे उपदेशक, प्रचारक और सुधारक आर्य समाज की पवित्र वेदी से, जिन वैदिक आदर्शों और वैदिक जीवन की दुहाई देते हैं। जनता के समक्ष वेदों की पुनीत ऋचाओं द्वारा जिन उच्च वैदिक सिद्धान्तों का समर्थन किया जाता है, उन्हें जीवन में उतारने का भी यत्न करना चाहिये। जिससे तदनुकूल वातावरण बन सके। कथनी और करनी में अन्तर नहीं रहना चाहिये। उक्त सुकृति के सूत्र में अनुस्यूत होने पर ही उत्कर्ष और अभ्युदय का हेतु बन सकती है। किसी विद्वान् का कथन है।

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्राण धर्म ही है। धर्म विमुख देश पतन के भयानक गर्त में जा गिरता है। यत: वह विवेक भ्रष्ट हो जाता है। इससे पराङमुख होने पर इस देश की भी वही दुदशा होगी जो मिश्र, बेबिलोनिया, ग्रीस, रोम, आदि अनेक देशों की हुई यत: धर्म ही हमारा सर्वस्व है। हमें स्मरण रखना चाहिये कि 'धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित:।'

हममें अपने पूर्वजों के समान ही श्रद्धा, ईश्वर भक्ति, प्रेम, आस्तिकता, सहानुभूति, सेवा, त्याग, और तपस्या आदि की सद्भावनाएं होनी चाहियें जिससे हम आर्य वीर, धर्मवीर और कल्याणमार्ग के पथिक बन सकें। इन सद्गुणों के लिये पुरुषार्थ और ईश्वरीय प्रेरणा की विशेष आवश्यकता है। हमें अविश्वास, निराशा, नास्तिकता, और अश्रद्धा के मनोवेगों से दूर रहना चाहिये जिससे हमारा झुकाव साम्यवाद के अराष्ट्रीय तत्वों की ओर न हो।

इसके अतिरिक्त ईसाई और मुसलमानों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि के प्रति भी हमें सजग एवं सतर्क रहना चाहिये।

प्रत्येक आर्य जन महर्षि भक्त का पुनीत कर्तव्य है कि वह अपने जीवन का लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, बना ले। स्वयं आर्य बने। अपने परिवार,कुटुम्ब, समाज, राष्ट्र एवं देश के प्रत्येक व्यक्ति को इस वैदिक धर्म की शिक्षा, दीक्षा,

आचार-विचार, और रहन-सहन तथा नीति-रीति से संस्कार सम्पन्न बनाकर सच्चे अर्थों मे आर्य कर दे। सबको वेदामृत का पान कराकर अमर बना दे। प्रत्येक ग्राम तथा नगर को भी वैदिक धर्म के प्रकाश से प्रकाशित कर दे। हमें पदलिप्सा, स्वार्थ बुद्धि, अधिकारलिप्सा, मात्सर्य, ईर्ष्या, द्वेष, कलह, और वैमनस्य आदि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिये। शौच, सन्तोष तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, आदि उदात्त एवं समुज्ज्वल सद्भावनाओं को जीवन का ध्येय बनाना चाहिये। इन्हें अपने जीवन का पाथेय बनाकर प्रचारकार्य में हमें अग्रसर होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण द्वारा आत्मसुधार करना चाहिये जिससे आर्य समाज ज्योतिस्तम्भ का कार्य कर सके।

राजनीति के क्षेत्र में तथा दूसरे नानाविध विषम क्षेत्रों में बिखरे हुए आर्यसमाज के सितारे यदि आर्य समाज के पुनीत कार्य में पूर्ण सहयोग दें, तो देश के उत्थान एवं उत्कर्ष मे महत्वपूर्ण प्रगति हो जाय।

गतवर्ष आर्यसमाज ने सेवा के क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य किये हैं, वे आप सबको रिपोर्ट द्वारा विदित ही हैं।

हजारों लाखों निर्वासित शरणार्थियों की जो सेवा आर्यसमाज ने की है, उसकी भूरि भूरि प्रशंसा सर्कार सरकार ने भी मुक्त कण्ठ से की है।

ईसाई प्रचार निरोध के सम्बन्ध में स्थान स्थान में जो प्रवृत्तियां हुईं, जो साहित्य छपा, जो प्रचार कार्य हुआ और होरहा है, उन सबका मूल्यांकन करना मेरे लिये असम्भव है।

ऐसे सैकड़ों ऋषिभक्त कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है, जो रचनात्मक सामाजिक कार्यों में पूर्ण सहयोग एवं सारा समय दे सकें। कई स्थानों पर दयानन्द सेवाश्रम खोले जा चुके हैं, जिनमें सुचारु रूपेण कार्य हो रहा है। ऐसे अनेक आश्रम खोलने का हम निश्चय कर चुके हैं। इनकी स्थापना को सभा परम आवश्यक समझती है जिससे सेवा का कार्य प्रबलता से आगे बढ़ सके।

आर्य समाज ने पंजाब तथा उत्तर भारत में जितना प्रचार तथा प्रसार कार्य किया है, उसकी तुलना में दक्षिण भारत में समाज का प्रचार-कार्य कुछ कम हुआ है। इस कमी को पूर्ण करने के लिये सार्वदेशिक सभा ने यह आवश्यक समझा कि मद्रास में कार्यालय की स्थापना की जाय। इसी प्रकार दक्षिण के सभी प्रान्तों में प्रचार कार्य की विशिष्ट योजनाएं बनाकर इस कार्य को विशेष महत्व दिया जाय।

पिछले दिनों राष्ट्र भाषा हिन्दी का जिस रौद्र रूप में विरोध हुआ है तथा केरल आदि प्रान्तों में ईसाइयत तथा साम्यवाद की विचार धारा का जो प्राबल्य दृष्टिगोचर होरहा है, उसके प्रति भी हम उदासीन नहीं हैं। हम इनकी गति-विधियों को भी निरन्तर ध्यान से देखते हैं तथा निराकरण के उपायों पर सतत विचार करते रहते हैं इस विषय में हमारे लिये जागरूकता नितांत स्पृहणीय एवं वांछनीय हो जाती है।

आसाम और नागालैण्ड की समस्याएं भी हमारे सामने विषमतम बनती जा रही हैं। इस सम्बन्ध मे भारत सरकार का यह परम पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वह सुदृढ़ निश्चयात्मक नीति, तर्क एवं धर्मसङ्गत मार्ग का अनुसरण करे। सीमाओं की आक्रमणात्मक संघर्षपूर्ण गतिविधि के प्रति भी उसे सदैव सतर्क और सचेष्ट रहना चाहिये। वह संघर्षात्मक तथा उत्तेजनात्मक आन्दोलन, पाकिस्तान, चीन या आसाम किसी भी प्रतिपक्षी द्वारा संचालित किया गया हो, हमें

निर्भय होकर उसका प्रतिकार एव विरोध करना चाहिये। इस सम्बन्ध मे केवल प्रबल विरोधात्मक पत्रों से तथा कोरे वक्तव्यों से कार्य नहीं चलेगा।

बाह्य देशों की मध्यस्थता की नीति पर आश्रित रहना भी हमारे लिये नितान्त अवाछनीय है। इसी के परिणाम स्वरूप तीन वर्षों से चीन द्वारा बलात् गृहीत प्रदेश को भी वापिस लेने का कोई विशेष प्रयत्न हमने नहीं किया।

इसी दौर्बल्य के कारण काश्मीर का प्रश्न भी पाकिस्तान की कुटिल चाल के साथ उलझ रहा है। काश्मीर के कुछ प्रदेश को उसने अब तक अपने आधीन किया हुआ है। अब इसने अपनी कुटिल नीति द्वारा कच्छ के कुछ प्रदेश को अपने हस्तगत कर लिया है। यदि इसे भी इसी मध्यस्थता की नीति पर छोड दिया जायगा तो हम इससे भी सदा के लिए हाथ धो बैठेंगे।

विचारशील कोई भी देशभक्त इस बात को कैसे सहन कर सकता है।

सार्वदेशिक सभा के प्रचार के परिणाम स्वरूप फिजी, ब्रिटिश गायना, डच गायना, मारिशियस, ईस्ट आफ्रिका आदि स्थानों मे भी प्रतिनिधि सभाए स्थापित हो चुकी है। अमेरिकन मिशन भी गत वर्ष से हमारे साथ सम्बद्ध हो गया है।

हर्ष का विषय है कि पश्चिम के देशों मे भी आर्य समाज के विशेष प्रचार की आवश्यकता को अनुभव करते हुए लण्डन मे भी आर्य समाज खोलने की आवश्यकता प्रतीत होती है। आर्य समाज की वैज्ञानिक एव वैदिक सिद्धान्त विचार माला के प्रचार के लिए हमे ऐसे त्यागी, तपस्वी, मनस्वी, और विद्वान् प्रचारक उपदेशकों की परम आवश्यकता है जो कि तुलनात्मक विचारों द्वारा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन कर सकें जिसका महर्षि के पवित्र ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ अग्रेजी भाषा पर भी पूर्ण प्रभुत्व हो। इसी प्रकार जर्मनी, फ्रान्स, अमेरिका, इटली आदि के प्रमुख नगरों तथा दूर सुदूर विदेशों में भी आर्य समाज की स्थापना का विचार कर रहे हैं जिस से महर्षि के वैज्ञानिक एव वैदिक सत्य सिद्धान्तों का अधिकतर प्रचार एव प्रसार हो सके।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत वैदिक अनुसन्धान विभाग द्वारा आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सर्वोत्तम वैदिक साहित्य के सम्पादन का कार्य भी सुचारु रूपेण चल रहा है। इस विभाग की ओर से श्री आचार्य जी ने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन करके समाज के गौरव को बढाया है। इसे भी भुलाया नहीं जा सकता।

इस प्रकार आर्य समाज का कार्य उत्तरोत्तर बढ रहा है। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि विश्व के विद्वान् वैदिक सिद्धान्तों की प्रामाणिकता को स्वीकार करेंगे। विश्व मे वैदिक धर्म की विजय होगी, यत सत्यमेव जयते नानृतम्।

अन्त मे सब सन्यासीगण, विद्वद्वृन्द, नेतृगण, आर्य जगत् के समस्त कार्य कर्तृ वृन्द एव स्थानिक स्वागतसभा के कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार प्रदर्शन करके सर्वेश्वर परमेश्वर से प्रार्थना करता हू —

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्य शूर इषव्योऽति व्याधी
महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु
सप्ति पुरन्धि र्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो
युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे
निकामे पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो न ओषधय
पच्यन्ताम् योगक्षेमो न कल्पताम्॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन

कानपुर, ३ जुलाई, १९६५

आर्य समाज स्थापना शताब्दी महोत्सव की तैयारियां

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार तथा अवैदिक मत-मतान्तरों का प्रतिकार करने के लिए संगठित अभियान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २ और ३ जुलाई ६५ को श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास की अध्यक्षता में कानपुर के डी० ए० वी० कालेज भवन मे सम्पन्न हुआ। २ की रात्रि को अन्तरंग बैठक हुई और ३ जुलाई को साधारण अधिवेशन हुआ। उत्तर-प्रदेश, मध्य भारत, बम्बई, हैदराबाद, बिहार, बंगाल, राजस्थान, मौरीशस, मद्रास आदि देश और विदेश के प्रतिनिधियों ने बहु संख्या में भाग लिया।

पिछले वर्ष का कार्य विवरण हिसाब के लेखे के साथ स्वीकृत हुआ और आगामी वर्ष के लिए ३८८०००) का बजट पास किया गया। अगले वर्ष के लिये पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों के निर्वाचन के अतिरिक्त कार्य संचालन के लिये विविध उपसमितियां निर्मित की गई: -

अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यो का चुनाव इस प्रकार हुआ: -

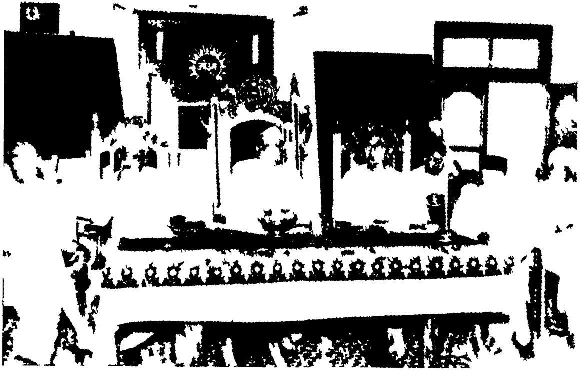
प्रधान—श्रीयुत सेठप्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास
उपप्रधान—१. श्री पं० प्रकाशवीरजी शास्त्री, संसत्सदस्य
उपप्रधान—२. ,, डा० डी० राम जी, पटना
उपप्रधान ३. ,, पं०नरेन्द्रजी हैदराबाद(आन्ध्र)
मन्त्री—श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले,
उपमन्त्री—१ श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री
,, —२ ,, वेणी भाई जी आर्य
,, —३ ,, पं० धर्मजित जी जिज्ञासु, मद्रास
कोषाध्यक्ष—श्री बालमुकन्द जी आहूजा, देहली
पुस्तकाध्यक्ष—श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री

इसके अतिरिक्त १७ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए:—

अन्तरंग सदस्य—

१—श्रीमती शकुन्तला जी गोयल
खैरनगर गेट, मेरठ शहर, (जनरल)
२—श्रीयुत सोमनाथ जी एडवोकेट
८,मल्कागंज देहली,(जनरल
३—,, पं० विद्याधर जी शर्मा
डी० ए० वी० कालेज,कानपुर,(जनरल)
४—,, घनश्याम सिंह जी गुप्त दुर्ग, (जनरल)
५—, पं० वासुदेव जी शर्मा
झाऊगंज, पटना, (बिहार)
६—,, बाल रेड्डी, उम्दा बाजार, बेरुन
दूध बावड़ी हैदराबाद (आन्ध्र)
७—,, हरिगोविन्द जी धरमसी कांचवाला
३५ मिर्जा स्ट्रीट, बम्बई
८—,, छोटूसिंह जी एडवोकेट
केडल गंज, अलवर (राजस्थान)
९—,, डा० महावीर सिंह जी
रि० सिविल सर्जन हस्पताल रोड,
लश्कर, ग्वालियर (मध्यभारत)
१०—,, मिहिरचन्द धीमान
११५ तुलसी निवास सलकिया,
हावड़ा (बंगाल)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कानपुर अधिवेशन



श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास म य म (सभा का प्रधान पद ग्रहण करते हुए)

(बायें से दाहिनी ओर)

(१) श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा उपप्रधान (४) श्री ला० रामगोपाल जी मन्त्री

(२) श्री पं० नरेन्द्र जी (५) श्री बालमुकुन्द जी आहूजा कोषाध्यक्ष

(३) श्री डा० नी० राम जी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कानपुर अधिवेशन (३ ७ १९६५)





(सदस्य महानुभाव)

११-, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती
दयानन्द भवन, मंगलवारी पेट सदर
नागपुर (मध्यप्रदेश)
१२-,, ला० चतुरसेन जी गुप्त
गुप्ता प्रेस, शामली मुजफ्फरनगर)
(आजीवन सदस्य)
१३-,, महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज
तपोवन नाला पानी, देहरादून (प्रतिष्ठित)
१४-,, विष्णुदेव मेघराज जी
साधु आश्रम, अलीगढ़ (मौरीशस
१५-,, महेन्द्रपाल जी, ५ आनन्द कुंजलिंकिंग
रोड, शान्ताक्रुज, बम्बई (पूर्वी अफ्रीका
१६-,, प्रो० महेन्द्रप्रताप शास्त्री, कन्या गुरुकुल
हाथरस, पो० कन्या गुरुकुल (अलीगढ़)
१७-,, चन्द्रदत्त जी तिवारी एम. ए. एल-एल.बी.
एडवोकेट, ५ मीराबाई मार्ग,लखनऊ (उ प्र.)

१९७५ में आर्य समाज स्थापना शताब्दी मनाई जायगी। सभा ने इस शताब्दी के कार्य-क्रम की स्थूल योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत आर्यों की संख्या वृद्धि का यत्न किया जायेगा। आर्य विद्वानों के अप्राप्य श्रेष्ठ साहित्य के पुनर्मुद्रण की व्यवस्था की जायेगी और वतमान आवश्यकताओं को दृष्टि में रख कर विविध भाषाओं में भी साहित्य प्रकाशित किया जायेगा। ९ वर्षों के भीतर विविध प्रान्तों में प्रतिवर्ष आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। सुयोग्य उपदेशकों के प्रशिक्षण के लिए कई उपदेशक विद्यालय खोले जायेंगे। शताब्दी महोत्सव के कार्य संचालन के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रबन्ध में एक समिति नियुक्त की जायेगी, जिसमें प्रान्तीय सभाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होगा। श्रेष्ठ आजीवन सेवकों की प्राप्ति के लिए सभा के आधीन दयानन्द सेवक संघ स्थापित करने का निश्चय हुआ।

इस अधिवेशन में पाखण्ड और अनाचार के गढ़ आनन्द पुर (मध्यप्रदेश) मठ के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें मठ की आन्तरिक जांच कराने की भारत सरकार से मांग की गई है। समाज का एक शिष्ट मण्डल भी इस सम्बन्ध में भारत सरकार के विशिष्ट अधिकारियों से भेंट करेगा।

कांग्रेस कार्यकारिणी ने राज्य भाषा के सम्बन्ध में जो निर्णय अभी हाल में किया है उसके सम्बन्ध में एक विशेष वक्तव्य के द्वारा आर्य समाज का मत शीघ्र ही प्रचारित किया जायेगा। इसके लिये सभा ने सुयोग्य विद्वानों और शिक्षाशास्त्रियोंकी एक उपसमिति बनाईहै।

एक अन्य प्रस्ताव में गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास के समक्ष में आर्य समाज के कार्य में बाधा डालने के निमित्त ईसाई पादरियों ने जो १४ एकड़ भूमि अपने चर्च इत्यादि के निर्माणार्थ क्रय करने का प्रयत्न किया है वह सदैव अशान्ति का कारण बनी रहेगी, यह भय प्रकट करते हुए भारत सरकार को प्रेरणा की गई है कि वह वन-वासी भाइयों की परम्पराओं की रक्षा करें और इस अशान्ति के कारण को तत्काल सदैव के लिये दूर कर दे।

वहां आर्यसमाज ने अपने कार्य को चलाने एवं संगठित करने के लिये श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती के नेतृत्व में जो यत्न किया, कर रहा है व करेगा, उसे और भी वेग और दृढ़ता के साथ चलाने के लिये आर्य समाजों को पूर्ण सहयोग देने की अपील की गई है।

सभा का यह अधिवेशन बड़ी शान्ति और सौहार्द के वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी के आकस्मिक निधन ने इसकी गम्भीरता को और भी बढ़ा दिया था। प्रदेशों से आये हुए प्रतिनिधियों की

आकृति स्वामीजी महाराज के निधन से अत्यन्त शोकाकुल एवं उद्विग्न थी।

अधिवेशन की समाप्ति पर सभा प्रधान श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास तथा ला० रामगोपाल जी के विशेष वक्तव्य हुए, जिनमें इस अधिवेशन की सुन्दर प्रबन्ध व्यवस्था करने पर कानपुर की समस्त आर्य समाजों के आर्य बन्धुओं विशेषतः श्री पं० विद्याधर जी शर्मा (डी० ए० वी कालेज) तथा उनके सहयोगियों को धन्यवाद दिया गया और मान्य सदस्यों को सभा के कार्य संचालन में अधिकाधिक सहयोग देने का निवेदन भी किया गया।

श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह जी ने अपने वक्तव्य में श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की स्मृति को चिरस्थायी रूप देने के लिये श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम, अलीगढ़ में स्वामी ध्रुवानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना की आयोजना की घोषणा की।

(पृष्ठ २५ का शेष)

भी बहुत बड़ा उद्देश्य था। इन नौ वर्षों में इसके लिये भी कुछ योजना बनाकर लग पड़ना हर दृष्टि से बहुत आवश्यक है। सीमाओं पर जो शत्रु-राष्ट्र इस समय हमें ललकार रहे हैं, आर्य समाज अपने इस शुद्धि आन्दोलन से देश की आन्तरिक पुष्टि में एक बहुत बड़ा योग दे सकता है।

इन तथा ऐसी ही अन्य समस्याओं पर विचार करने के लिये प्रान्तीय और भारतीय स्तर पर प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठकें पहले हो जानी आवश्यक हैं। इन बैठकों में ही आगामी नौ वर्षों के कार्यक्रम की रूपरेखा स्वीकृत कर ली जाये। शताब्दी समारोह के आने तक बीच में जो यह समय शेष है उसमें जो-जो कार्य उस बैठक में निश्चय हों उनको पृथक्-पृथक् बांटकर दायित्व सौंप देना कार्य-संचालन की दृष्टि से सुगम होगा। आशा है आर्य जन इसमें अपने और भी सुझाव भेजेंगे। व्यक्तियों के शताब्दी समारोह जब दो-दो और चार-चार साल पहले आरम्भ हो जाते हैं तब एक इतने बड़े व्यापक संगठन की शताब्दी के कार्य क्रम अभी से चालू होने तो और भी जरूरी हैं।

प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०
उपप्रधान—सार्वदेशिक सभा,
नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कानपुर अधिवेशन पर एक दृष्टि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बम्बई अधिवेशन में जो ७, ८ और ९ अगस्त को आर्य समाज माटुंगा में हुआ था, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद ने १९६५ के अधिवेशन को हैदराबाद में आमन्त्रित किया था। तदनुसार १९६५ का अधिवेशन हैदराबाद में होना था परन्तु बाद में ७-२-६५ की अन्तरंग के निश्चयानुसार अधिवेशन का उत्तर प्रदेश में किया जाना निश्चित हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपनी २५-४-६५ की अन्तरंग के निश्चयानुसार इस अधिवेशन को कानपुर में आमन्त्रित किया और ३-४ जुलाई इसके लिए नियत की। सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान जी ने इस निमन्त्रण को स्वीकार कर अधिवेशन के कानपुर में होने की घोषणा कर दी।

कानपुर के आर्य समाजों ने अधिवेशन की प्रबन्ध-व्यवस्था सहर्ष स्वीकार की और वे कानपुर की आर्य सामाजिक प्रगतियों एवं प्रवृत्तियों के केन्द्र-बिन्दु श्री पं० विद्याधर जी शर्म्मा के मार्ग-दर्शन में इस कार्य में जुट गए अधिवेशन तथा सदस्यों के निवासादि के लिए डी० ए० वी० कालेज चुना गया। श्री शर्म्मा जी डी० ए० वी० कालेज की गत ४० वर्ष से प्रशंसनीय सेवा करते आ रहे हैं। डी० ए० वी० कालेज को उनसे और उन्हें डी० ए० वी० कालेज से पृथक् रखकर सोचा ही नहीं जा सकता।

सभा का कार्यालय २ जुलाई के प्रातः कानपुर पहुँच गया था। सदस्य महानुभाव २ जुलाई को प्रातः ही आने शुरू हो गए थे। २ की शाम तक अधिकांश सदस्य वहां पहुंच गए थे। सदस्यों के ठहरने की डी० ए० वी० कालेज के विशाल कमरों में व्यवस्था की गई थी जिनमें उनके सहयोगियों श्री बंशीलाल जी, श्री शास्त्री जी आदि के सहयोग से हर प्रकार की सुविधा समुपस्थित थी।

२ को रात्रि के ८॥ बजे से अन्तरंग सभा की बैठक प्रारम्भ हुई।

(१) सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित विद्यार्य सभा की धार्मिक परीक्षाओं का संचालन बंद करने का निश्चय हुआ। इसका कारण यह था कि अनेक प्रान्तीय सभाओं एवं संस्थाओं ने अपनी परीक्षाएं जारी की हुई हैं जिनके कोर्स का दायरा विस्तृत है। सार्वदेशिक सभा की परीक्षाओं में एकमात्र महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ नियत हैं। परीक्षाओं के लिए समय की अनुकूलता न होने और कोर्स का दायरा परिमित होने से अधिक से अधिक छात्र उनसे लाभ उठाने से वंचित रह जाते थे।

अन्तरंग सभा ने यह निश्चय किया है कि विद्यार्य सभा सभी परीक्षाओं का एकीकरण करे और उन्हें सार्वदेशिक स्तर पर लाया जाय।

राज-भाषा एवं त्रिभाषा फार्मूला के सम्बन्ध में कांग्रेस की कार्य-कारिणी ने २-३ जून को अपनी बैठक में जो निर्णय किए हैं उनके सम्बन्ध में आर्य समाज के प्रामाणिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति के लिए एक वक्तव्य का तय्यार करना भी विषय सूची में सम्मिलित था। इस वक्तव्य की तैयारी के लिए सभा ने एक उपसमिति नियुक्त की है जिसके संयोजक सभा मन्त्री ला० रामगोपाल जी नियुक्त हुए हैं। यह समिति विषय का पूर्णतया अध्ययन कर रही है और

शीघ्र ही वक्तव्य प्रसारित कर दिया जायगा।

गुरुकुलों और आर्य शिक्षा संस्थाओं को आर्य समाज के वातावरण के अनुकूल बनाने के लिए क्रियात्मक पग उठाए जाने का भी इस बैठक में निर्णय हुआ और आर्यसमाज के शिक्षाविदों की एक समिति सुझावों का प्रारूप तय्यार करने के लिए नियुक्त की गई जिसके संयोजक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रि० भगवानदास जी डी० ए० वी० कालेज, अम्बाला नियुक्त हुए हैं।

कानपुर के बृहदाधिवेशन के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण विचारणीय विषय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह की योजना थी। १८-४ ६५ की अन्तरंग ने योजना का प्रारूप बनाने का कार्य सभा उपप्रधान श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्रीजी के सुपुर्द किया था और निश्चय किया था कि इस योजना पर कानपुर के अधिवेशन में विचार किया जाय। इस योजना पर पहले कानपुर की अन्तरंग में विचार हुआ और पुनः कानपुर के साधारण अधिवेशन में पर्याप्त समय तक विचार हुआ। योजना का प्रारूप पृथक् प्रकाशित किया गया है। अन्तरंग ने इस योजना को स्वीकार करके निम्नलिखित सुझावों के साथ इसे साधारण सभा में भेजा :—

१—इस समारोह के प्रचार कार्य के लिए सभा के मासिक सार्वदेशिक पत्र को साप्ताहिक कर दिया जाय। साप्ताहिक सार्वदेशिक के लिए डिक्लेरेशन का आवेदन पत्र जिलाधीश दिल्ली को भेज दिया गया है। डिक्लेरेशन के भरते ही सार्वदेशिक साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होने लगेगा।

२—आर्य समाज के अप्राप्य श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था की जाय।

३—सार्वदेशिक सभा के संचालन में एक उपदेशक विद्यालय खोला जाय।

४—आर्यसमाज का सन्देश प्रसारित करने के लिए दो सांस्कृतिक मंडल देश से बाहर भेजे जायें।

५—आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के प्रबन्ध के निमित्त सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत एक प्रबन्ध समिति बनाई जाय जिसमें प्रान्तीय सभाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो। इसके लिए प्रान्तीय सभाओं को लिखा गया है और निर्दिष्ट संख्या में नाम मांगे गए हैं।

बृहदधिवेशन

३ जुलाई के प्रातः ६ बजे श्रीयुत सेठ प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास की अध्यक्षता में यह अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन की शोक-छाया पग पग पर दृष्टिगोचर हो रही थी। यह अधिवेशन नए नियमों के अनुसार परिमित प्रतिनिधित्व के अधीन हो रहा था अतः सदस्य महानुभावों की संख्या और उपस्थिति का पूर्वापेक्षा कम हो जाना अनिवार्य था। इस अधिवेशन में ४७सदस्य उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और प्रादेशिक सभा का प्रतिनिधित्व न था। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रतिनिधि सदस्यों की सूची प्राप्त हो गई थी। उन्हें विज्ञापन भेजा जा चुका था। उक्त सभा के प्रधान जी ने सभा को कई बार लिखा कि फार्म तय्यार है सभा के कोषाध्यक्ष बाहर गए हुए है। पंचमांश के चैक के साथ शीघ्र भिजवा रहा हूं। परन्तु ये फार्म व चैक प्राप्त न हुए।

अधिवेशन में उपस्थित सदस्यों की सूची प्रान्त वार इस प्रकार है—

१. उत्तर प्रदेश	१२ (१५ मेंसे)
२. बम्बई	५
३. राजस्थान	१
४. बंगाल	५
५. बिहार	३

६. मध्य दक्षिण	१
७. मध्यभारत	४
८. मौरीशस	१
९. आर्यसमाज मद्रास	१
१०. आजीवन	६
११. पदैन	१
१२. प्रतिष्ठित	७
	४७

प्रारम्भ में ३ वर्ष के लिए ५ प्रतिष्ठित सदस्यों का चुनाव होना था जो सर्व सम्मति से इस प्रकार हुआ :—

१—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज
२— ,, स्वामी हरिहरानन्द जी
३— ,, ला० रामगोपाल जी शालवाले
४— ,, सोमनाथ जी मरवाहा, ऐडवोकेट देहली
५— ,, नारायणदास जी कपूर देहली

सर्व प्रथम श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन पर निम्नलिखित शोक प्रस्ताव पारित हुआ :—

शोक प्रस्ताव

"यह सभा आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करती और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करती है।

श्री स्वामी जी महाराज ने आजीवन आर्य समाज की सेवा की। वे सुयोग्य विद्वान्, वक्ता एवं निर्भीक नेता थे। उनके शरीर और मन का एक एक क्षण आर्यसमाज के कार्य पर अर्पित रहा। आर्यसमाज के कार्य-विस्तार, उसके संगठन के दृढ़ीकरण एवं कीर्ति वृद्धि में उनका जो योग रहा वह चिरस्मरणीय रहेगा।

वे आर्यसमाज की शोभा थे। आर्यसमाज को उन पर गर्व था। आर्य जगत् उनके नेतृत्व की ओर आंखें लगाये रहता था।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा के वर्षों पर्यन्त प्रधान रहकर उन्होंने इन दोनों सभाओं की स्थिति को सुदृढ़ बनाये रखने में प्रशंसनीय प्रयास किया था। देश और विदेश में इन्होंने आर्य समाज को एक जीवित शक्ति बनाने में कोई प्रयत्न उठा न रखा था।

आर्य समाज पर जब जब आपत्ति आई वे निर्भीकता पूर्वक आगे रहे। हैदराबाद के धर्म युद्ध और सिन्ध के सत्याग्रह में उन्होंने जिस निर्भीकता, त्याग और कर्मठता का परिचय दिया वह अनुकरणीय है।

अपने ऐसे रत्न को खोकर आर्य समाज अपने को अकिंचन अनुभव करता है। उनके निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है।"

इसके अतिरिक्त सर्वश्री पं० अयोध्याप्रसाद जी रिसर्च स्कालर, अमृतलाल करसन जी पटेल (बम्बई), पं० देवदत्त जी मौद्गल्य (म० प्र०), पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, मुनि मेधाव्रत जी आचार्य (येवला नासिक), बलदेव भाई आर्य (बम्बई), मधुसूदन राव जी (आन्ध्र), सुश्री चंचल बहन जी (टंकारा), सेठ चंपालाल जी पोद्दार (कलकत्ता), पं० कान्तिलाल मोहनलाल शर्मा जे० पी० (बम्बई) के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

इसके पश्चात् सभा प्रधान जी ने अपना वक्तव्य पढ़ा।

प्रातःकाल की इस कार्यवाही में वार्षिक रिपोर्ट हिसाब के लेखे के साथ पारित हुई और अगले वर्ष के लिए बजट पारित हुआ। यह कार्यवाही १२॥ बजे तक चलती रही।

३-७-६५ को मध्याह्नोत्तर २॥ बजे से कार्यवाही शुरू हुई। इस बैठक में अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों आदि का चुनाव हुआ और

आर्य समाज स्थापना शताब्दी महोत्सव के कार्यक्रम पर लगभग २ घंटे तक विचार हुआ। सदस्य महानुभावों ने जो विचार प्रकट किये या सुझाव दिये उनका विवरण इस प्रकार है:—

श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक

महर्षि दयानन्द बोध रात्रि (शिव रात्रि) और आर्य समाज स्थापना दिवस की सरकारी छुट्टियां स्वीकार कराई जायं।

श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन प्रति वर्ष आकाश वाणी से आर्य समाज का सन्देश प्रसारित हुआ करे, इसकी व्यवस्था कराई जाय। आवश्यक होने पर इस सम्बन्ध में सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल भारत सरकार के सम्बद्ध अधिकारी से भेंट करे।

श्री राजा रणञ्जयसिंह जी

शुद्धि के कार्य को विशेष प्रगति दी जाय। इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से किया जाय।

श्री पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद

सार्वदेशिक सभा एक केन्द्रीय उपदेशक विद्यालय चलाए और उसमे उच्चकोटि के प्राध्यापक रखे जायं।

सार्वदेशिक सभा में दयानन्द सेवा संघ के ढंग पर सेवा संघ स्थापित किया जाय जिसके सदस्य आजीवन आर्य समाज की सेवा के लिए निरत रहें। उन्हें आजीविका, तथा बच्चों के प्रशिक्षण की चिन्ताओं से मुक्त रखा जाय। उनका राजनीति से कोई सम्पर्क न होना चाहिये। ६ वर्ष में ऐसे सुयोग्य सेवक पैदा किए जायं जिन्हें हर समय आर्य समाज की सेवा की धुन हो।

श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी

आर्य समाज के वर्तमान उपनियमों से सदस्य संख्या नहीं बढ़ सकती। कोई संस्था या समाज सदस्य संख्या बढ़ाना नहीं चाहता। उपनियमों में कोई ऐसी व्यवस्था रखी जाय जिससे सदस्य संख्या बढ़ सके। चुनावों में मत-दान की प्रणाली समाप्त हो। नामजदगी की प्रणाली अपनाई जाय।

उपदेशक विद्यालय खोलने की आवश्यकता नहीं है। हमारे गुरुकुलादि उपदेशक विद्यालय ही हैं। आर्ष गुरुकुलों में पुस्तकें पढ़ाने के योग्य नहीं मिलतीं। पुस्तके तैयार होनी चाहिएं। षड्दर्शनों की व्याख्या का हमारे ढंग से होना आवश्यक है। विपरीत ग्रन्थ होने से उपदेशक विद्यालयों से हमारे शत्रु निकलेंगे।

अवश्य चीन, जापान आदि की भाषाओं के उपदेशक तैयार कीजिये। देश की भाषाओं में उपदेशकों के तैयार करने का काम प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाएं करें।

श्री प्रिं० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री

उपयुक्त साहित्य की सृजना होनी ही चाहिये। ग्रेजुएट होने वाले विद्यार्थियों को अपना साहित्य भेंट करना चाहिए। आ०प्र०सभा उत्तरप्रदेशने गुरुकुलवृन्दावनमें उपदेशक विद्यालय खोल दिया है।

श्री शिवचन्द्र जी

१९७५ से पूर्व सन् १९७१ में जनगणना होनी है। उसमें आर्यों की अधिक से अधिक संख्या अंकित हो इसके लिए यत्न होना चाहिए। आर्य समाज का कार्य वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों के द्वारा होना था गृहस्थियों के द्वारा नहीं। उन्हें ही इस कार्य को प्रमुखतः अपने हाथ में लेना चाहिये। आर्य समाज साधन है साध्य नहीं। साध्य है वैदिक धर्म का प्रचार। आर्यों को आर्य शब्द का प्रचार और हिन्दू का बलपूर्वक खण्डन करना चाहिए।

श्री पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा

उपदेशक विद्यालयों की व्यवस्था अवश्य

होनी चाहिये। परन्तु ये प्रान्तों में ही खुलें। यथा कन्नड़, मलयालम, तेलगु, तमिल, बंगला, मराठी, गुजराती आदि २ भाषाभाषी क्षेत्रों के। बम्बई प्रांत में आर्य समाज को बौद्ध समस्या से निबटना है। बौद्ध मत के विरुद्ध मराठी में साहित्य तैयार होना चाहिए।

श्री चन्द्रनारायण जी बरेली

वर्तमान उपनियमों से अनेक उलझनें पैदा हो गई हैं उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिए।

श्री पं० वाचस्पति जी

जिन प्रान्तों में कोई प्रतिनिधि सभा नहीं है वहां दस वर्ष में कम से कम एक आर्य महा सम्मेलन अवश्य हो जाया करे।

प्रत्येक थाने और तहसील में एक-एक समाज अवश्य स्थापित हो जाने चाहिएं।

कार्य चलते रहना चाहिये। उपदेशकों के लिए काम का अभाव है। नए २ समाज खोलते जाइये। आर्य समाज स्थापना शताब्दी को आन्दोलन का रूप दीजिये।

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

१. समस्त देश को ५ भागों में बांट दिया जाना चाहिये और प्रत्येक भाग के मध्य में एक उपदेशक विद्यालय होना चाहिए।

२. शताब्दी समारोह तक ६ अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन हो जाने चाहिएं।

३. आर्य समाज की सम्पत्तियों के ट्रस्ट बना देने चाहिएं।

४. आर्य पत्रों को अभी से शताब्दी का प्रचार शुरू कर देना चाहिये।

श्री जंगीलाल जी

केन्द्रीय उपदेशक विद्यालय अवश्य होना चाहिये।

श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान

गोवध देश और जाति पर कलंक है। इसके निराकरण की पूरी २ व्यवस्था होनी चाहिए। मद्य निषेध के कार्य क्रम को भी क्रियान्वित करना चाहिए।

इन विचारों और सुधारों के अंकित किए जाने के उपरान्त श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

"आर्यसमाज स्थापना शताब्दी की जो योजना प्रस्तुत की गई है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा २-७-६५ ने उसका जो स्पष्टीकरण किया है तथा साधारण सभा में जो सुझाव विभिन्न प्रतिनिधियों ने प्रस्तुत किए हैं, उन सबके साथ इस योजना को यह अधिवेशन स्वीकार करता है और सभा की अन्तरंग को अधिकार देता है कि इसे सुनियोजित रूप में कार्यान्वित करे।

श्री पं० वासुदेव जी शर्मा ने इसका समर्थन किया और सम्मति लेने पर यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पारित हुआ।

उपसंहार

सभा प्रधान का भाषण

सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास ने अधिवेशन को समाप्त करते हुए संक्षिप्त भाषण में कहा कि सदस्य महानुभावों के सहयोग और प्रभु की कृपा से वार्षिक अधिवेशन बड़े सुन्दर ढंग से समाप्त होने जा रहा है। उन्होंने सदस्यों को संबोधित करके कहा—

"आप लोगों ने कष्ट करके कानपुर आने का अनुग्रह किया और समस्त कार्यवाही प्रेम के वातावरण में सम्पन्न की इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

आपने एक बार पुनः मुझे प्रधान के पद पर बिठाकर अपने प्रेम का जो परिचय दिया है उसका वर्णन शब्दों द्वारा असंभव है। मैं जानता हूं मुझे पूरा समय नहीं मिलता इस पर भी आप ने मेरी त्रुटियों को न देखकर मेरे कंधों पर जो भार रखा है उसमें मुझे पूर्णाशा है आप मेरा

हाथ बटायेंगे और जिस स्नेह से आपने मुझे यहां बिठाया है वह स्नेह और सहयोग मुझे मिलता रहेगा।

सभा में अनेक विचार-विनिमय होते हैं। प्रस्ताव पारित होते हैं परन्तु ये तभी क्रिया में आ सकते हैं जब कि सबका सहयोग प्राप्त हो। मुझे विश्वास है कि आर्यसमाज का हित आपके सामने रहेगा और सार्वदेशिक सभा की गौरव-वृद्धि का ध्यान रखेंगे। मैं पुनः आप लोगों को धन्यवाद देता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि जो दायित्व मेरे ऊपर रखा गया है उसको पूरा करनेमें आप सहायक होंगे। श्री स्व०स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के निधन की बड़े मार्मिक शब्दों में चर्चा और उनके प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए प्रधान जी ने सुझाव दिया कि—

"स्वामी जी महाराज का समस्त जीवन आर्यसमाज के अर्पित रहा। उन्होंने आर्य समाज के प्रचार और संगठनादि का जो कार्य किया है उसके आदर स्वरूप उनकी स्मृति बने यह मैं आवश्यक समझता हूँ। स्वामी जी के जीवन का विशेष भाग सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़) के अर्पण रहा अतः उनकी स्मृति में आश्रम में ध्रुवानन्द उपदेशक विद्यालय खोला जाय। यदि साधु आश्रम के अधिकारी सहमत हों तो कुछ कार्यवाही करनी चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा श्री पं० विद्याधर शर्मा आदि को धन्यवाद देते हुए प्रधान जी ने कहा—

"मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का आभारी हूँ कि उसने यहां अधिवेशन बुलाया और बड़ी सुन्दर व्यवस्था की। श्री पं०विद्याधर जी शर्मा ने जो इस सुन्दर व्यवस्था के निमित्त हैं। हर प्रकार की सुविधा को लक्ष्य में रखकर जो व्यवस्था की ओर पटुता दिखाई उसके पीछे उनका प्रेम प्रतिलक्षित होता है। आशा है उनका प्रेम सार्वदेशिक सभा को सदैव प्राप्त रहेगा मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। यदि हमारी ओर से कोई त्रुटि हुई हो तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। सभा के अधिकारियों ने और सभा के कार्यालय ने रात दिन एक करके अधिवेशन की सफलता के लिए जो कार्य किया है उसके लिए भी आभार मानता हूँ।

सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी का भाषण

सभा मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी ने एक संक्षिप्त भाषण देते हुए इस बात पर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया कि समस्त कार्य्यवाही प्रेम और सौहार्द के वातावरण में सम्पन्न हुई। उनका भाषण इस प्रकार है—

"सार्वदेशिक सभा में यदि प्रेम और सौहार्द का वातावरण प्रस्तुत किया जाता है तो आर्य समाजों और प्रान्तीय सभाओं में इसकी प्रतिक्रिया अच्छी होती है।

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज हमारे मध्य नहीं हैं। हमें भय था कि कार्य्यवाही किस प्रकार सुचारु रूप से चलेगी। श्री प्रधान जी ने यह भार अपने ऊपर लेने की कृपा की और कार्य का उत्तम रीति से संचालन किया। इससे निश्चय ही स्वामी जी की आत्मा संतुष्ट होगी। प्रधान जी जिस वातावरण को लाने के लिए प्रयत्नशील हैं वह अवश्य आयेगा। श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम में स्वामी जी की स्मृति में उपदेशक विद्यालय खोलने का जो प्रस्ताव है वह उत्तम है। निश्चय ही यह प्रस्ताव मूर्त्त रूप धारण करेगा। प्रधान जी ने अपने भाषण में जिस चमक का दिग्दर्शन कराया है उसका प्रकाश बना रहेगा।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को धन्यवाद देता हूँ। कानपुर में आर्य समाज जीवित है यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ। विद्याधर

शर्म्मा तथा आर्य बन्धुओं ने स्वागत सत्कार की जो व्यवस्था की उसके लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं प्रधान जी को विश्वास दिलाता हूँ कि हम पूरी शक्ति के साथ उनकी आज्ञाओं का पालन करके आर्यसमाज को आगे बढ़ाने में समर्थ होंगे।

श्री पं० विद्याधर जी का भाषण

श्रीयुत पं० विद्याधर जी ने श्री स्वामी जी महाराज को भाव भरी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करने के बाद कहा कि स्वामी जी महाराज ने मुझे फोन करके पूछा कि कानपुर में अधिवेशन बुलाया जाय तो क्या हम स्वीकार करेंगे। मैंने उन्हें तत्काल स्वीकृति दे दी। यदि आज स्वामी जी उपस्थित होते तो न जाने हम आपका स्वागत करने में कितना उत्साह दिखाते! यहां के आर्य समाजों ने थोड़े समय में जो कर दिखाया है वह कम नहीं है। यदि कोई त्रुटि रही हो तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

प्रभु की कृपा से हम आर्यों का जीवन आलोकमय हो जिससे दूसरे दीपक जल सकें।

इस प्रकार कानपुर का यह अधिवेशन शांति पाठ के साथ समाप्त हुआ।

अधिवेशन के निश्चय

आर्यसमाज के कार्य को बन्द कराने का ईसाई षड्यन्त्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह साधारण अधिवेशन उड़ीसा प्रदेश के राउरकेला के निकटस्थ सुन्दरगढ़ जिलान्तर्गत पानपोष सब डिवीजन के वेदव्यास में स्थित गुरुकुल वैदिक आश्रम के महाविद्यालय-विभाग के भवन निर्माण योजना के लिए लुंगाई के ग्राम के निकट की भूमि के चारों ओर १४ एकड़ जमीन खरीद कर विदेशी ईसाई पादरियों ने जो अव्यवस्था पैदा की है उसके प्रति खेद प्रकट करता है। स्थानीय वनवासियों की प्राचीन परम्पराओं की रक्षा के लिए विदेशी पादरियों की घुस पैठ को भारत सरकार तथा उड़ीसा सरकार रोके तथा उन्हें इन बेजा हरकतों से बाज आने के लिए सावधान करे। साथ ही आर्य जगत् से अनुरोध करती है कि स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा जो कार्य वहां हो रहा है उसमें तथा आर्यसमाज के प्रचार, संगठन तथा शैक्षणिक निकायों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहयोग देने के लिए तत्पर रहें।

यह भी निश्चय हुआ कि गृहमन्त्री महोदय से सभा का एक डेपुटेशन मिले।

सार्वदेशिक सभा के कानपुर अधिवेशन का आनन्दपुर मठ विषयक निश्चय

'इस सभा को अनेक सूत्रों से विदित हुआ है कि मध्य प्रदेश के गुना जिले के अशोकनगर में महात्मा नामधारी लोगों ने धर्म के नाम पर अत्याचार, बलात्कार, नारी अपहरण तथा अन्य अनैतिक कार्यों के अड्डे के रूप में आनन्दपुर नामक धार्मिक मठ बना रखा है।

इस मठ के तत्वावधान में औद्योगिक प्रतिष्ठान तथा व्यापारिक कार्य भी होते हैं जिससे होने वाली लाखों रुपये की आय को भी छिपा कर ये इनकम टैक्स से बचाव करते हैं और लाखों रुपये के सरकार को होने वाले आय कर से वंचित करते हैं।

इसके पूर्व भी स्थानीय प्रदेशीय सरकारी अधिकारियों की ओर से जांच के लिए नियुक्त व्यक्ति वहां गए, किन्तु वे कुछ ऐसा हथकंडा अपनाते हैं जिससे वे जांच अच्छी तरह नहीं कर पाते हैं। उस क्षेत्र में उन महन्तों और साधुओं का इतना बड़ा आतंक है कि उनके भय से, वहां की प्रबुद्ध जनता भी उनके विरोध में आवाज बुलन्द करने से डरती है। कहा जाता है कि विरोध प्रकट करने वाले मठवासियों की हत्या जैसे जघन्य कार्य पर भी ये उतर आते हैं।

अतः सार्वदेशिक सभा भारत सरकार से गृह-मन्त्रालय से तथा मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री से विशेष रूप से अनुरोध करती है कि उक्त मठ के कुकृत्यों की जांच के लिए उच्चस्तरीय आयोग नियुक्त करें।

श्रावणी पर्व

—[आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री]

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में पर्वों का सदा से स्थान रहा है। धरा पर सभी मानव जातियां किसी न किसी प्रकार का पर्व मनाती ही हैं। पर्व शब्द का अर्थ पूरक भी है और सन्धि भी है। यह जहां आनन्दसे पूरित करता है वहां ग्रन्थि होने से धारक भी है। ईख के रस को ईख की ग्रन्थि सुरक्षित रखती है और बांस आदि की दृढ़ता को उनकी गांठें स्थिर रखती हैं। इसी प्रकार शरीरकी स्थिति स्थापकता शरीर की ग्रन्थियों द्वारा सुरक्षित है।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान् पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालों से है। गृह्यसूत्रों के अनुसार इस पर्व का सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिकों से दिखलाया गया है। यह पर्व जहां पर्व है वहां यह एक गृह्य कर्म भी है। गृह्यसूत्रों के अनुसार श्रावणाकर्म भी इसी अवसर पर होता है और उपाकर्म-वेदाध्ययन का प्रारम्भ होता है। चार मास वर्षा के होते हैं। इनमें बराबर वेदाध्ययन चलता रहता था और पौष में जाकर उत्सर्ग किया जाता है। इसी आधार को लेकर आर्य समाज ने वेद सप्ताह का इस अवसर पर आयोजन किया। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रशस्त किया अतः उनके द्वारा स्थापित वेदप्रचारक आर्यसमाज का यह कर्तव्य ही है कि वह वेद के प्रचार को बढ़ावे। श्रावणी नाम इस पर्वका क्यों है? इसका उत्तर यह है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है अतः यह श्रावणी है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावणमास है। इस श्रावणी की भी विधि है और वह गृह्यसूत्रों और हमारी पर्व पद्धति में लिखी है—जो प्रत्येक आर्य और आर्य समाज को करनी चाहिए।

यह सब होने पर भी कुप्रथाओं और सुप्रथाओं के बीच में चलने वाले आर्यों में भी श्रावणी के वास्तविक स्वरूप के विषय में कहीं कहीं पर अनभिज्ञता ही दिखाई पड़ती है। हमारे पत्र-पत्रिकाओं में भी ऐसी बातें कभी कभी निकल जाती हैं। दीपावली के विषय में राम की लंका विजय के बाद की दीपावली कारण बताई जाती है और होली के विषय में प्रह्लाद का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। ये दोनों ही कल्पनायें भ्रान्त और गलत हैं। वस्तुतः ये दोनों ही गृह्य कर्म हैं इसी प्रकार रक्षा बांधनेकी प्रथाको लेकर श्रावणी को रक्षा बन्धन पर्व के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझा जाता है। रक्षा बांधने की प्रथा बीच में किसी समय प्रारम्भ हुई। परन्तु श्रावणी तो वैदिक गृह्य कर्म है। वह बहुत पहले भी था और अब भी है।

एक दिन एक आर्य सज्जन कहने लगे कि श्रावणी के दिन ही चारों वेदों का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में मिला था इसलिए यह श्रावणी पर्व मनाया जाता है। मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। क्योंकि जहां तक मेरा ज्ञान है मैंने ऐसी बातें कहीं नहीं पढ़ी हैं। यह सम्भव भी नहीं। ऐसी ऐसी अनेक कल्पनायें लोग बना लेते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि श्रावणी के विषय में ऐसी कल्पनाओं को आधार नहीं बनाना चाहिए। उसके शुद्ध स्वरूप को समझना चाहिए। रक्षा बन्धन का लौकिक और सामाजिक कृत्य भी इसी दिन पड़ता है—यह ठीक है। परन्तु यह प्रथा इस पर्व का कारण नहीं।

श्रावणी और स्वाध्याय

जैसा ऊपर कहा गया है वेदाध्ययन का इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है। श्रावणी मनाने का एक उत्तम तरीका यह है कि वेदादि सच्छास्त्रों का स्वाध्याय इस पर्व से अवश्य चालू किया जावे। स्वाध्याय जीवन का अंग होना चाहिए। परन्तु ऐसे पर्वों के अवसरों से प्रेरणा लेकर ही

यदि हम इस प्रवृत्ति को बढ़ावें तो अच्छा हो। आर्यों के जीवन का स्वाध्याय एक अंग है। स्वाध्याय में प्रमाद का हमारे शास्त्रों में निषेध है। स्वाध्याय (Self Study) का ज्ञान के परिवर्धन में बहुत बड़ा महत्व है। शतपथ ब्राह्मण ११।५।७।१ में स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए लिखा गया है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है, युक्तमना होता है, अपना परम चिकित्सक होता है, उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती है। यहां पर ब्राह्मण ग्रंथ का प्रत्येक शब्द महत्व से भरा हुआ है। पुनः उसी ब्राह्मण में ११।५।७।१० में कहा गया है कि स्वाध्याय न करने वाला श्व ब्राह्मण होजाता है अतः प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए और ऋक्, यजु, साम, अथर्व आदि को पढ़ना चाहिए जिससे व्रत का भंग न होवे। ब्राह्मण ग्रन्थ स्वाध्याय को अन्य व्रतों की भांति एक व्रत बतला रहा है। शतपथ ११।५।६।२ में इस स्वाध्याय को ब्राह्मण कहा गया है और आगे चलकर बताया गया है कि इस यज्ञ की वाणी जुहू है, मन उपभृत् है, चक्षु ध्रुवा है और मेधा स्रुवा है और सत्य इसका अवभृथ है। इस प्रकार स्वाध्याय की शास्त्रों में महती महिमा गाई गई है। ऋग्वेद में स्वयं इसका सुन्दर वर्णन है। वर्षाकाल में मेढ़क बोलते हैं। एक की बोली को दूसरा दुहराता है। यह उपमा ऋग्वेद में वेदपाठी ब्राह्मणों को दी गई है। क्योंकि इस चातुर्मास्य के समय में वेद को पढ़ते हैं। वस्तुतः वेद का मण्डूक शब्द और यह उपमा निदर्शन का महत्व लिए हैं। इससे सुन्दर संमिश्रण वेदवाणी, मण्डूककी वाणी और मानसून-मेघस्य वाणी का और क्या हो सकता है। इस वर्षा की ऋतु में वेदज्ञ के मुख से निकली वेदवाणी, मानसून की गड़गड़ाहट से निकली मध्यमा वाणी और मेंढकों की अनिरुक्त अव्यक्त वाणी—परा पश्यन्ती मध्यमा, और बैखरी के अनिरुक्त रूप की प्रतीक हैं और इस वर्षा की ऋतु में इन सबका समन्वय हो जाता है। अतः स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रत्येक आर्य को बढ़ाना चाहिए—यही यहां पर मेरा निवेदन है।

यज्ञोपवीत और श्रावणी

श्रावणी के साथ नये यज्ञोपवीत के धारण और पुराने के छोड़ने की भी प्रथा जुड़ी हुई है। इसका भी एक प्रधान कारण है। गृह्यसूत्रों में विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। निवीति, उपवीति, प्राचीनावीति आदि संज्ञाये इसी आधार पर हैं। यह भी एक गृह्यसूत्रों के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक प्रधान उत्तम यज्ञ याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जावे। उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा भी है। यज्ञोपवीत का आर्यों के संस्कार और कर्मकाण्ड में बड़ा ही महत्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले में पड़ते ही वह पितृऋण, देवऋण और ऋषि ऋण आदि कर्त्तव्यों से अपने को बंधा हुआ समझने लगता है। यहां उपनयन, यज्ञोपवीत, व्रत बन्ध आदि पद इस सम्बन्ध में विशेष महत्व के हैं। आचार्य कुल मे विद्यार्थी लाया जाता है—इस कर्म पूर्वक अतः यह उपनयन है। यज्ञ आदि उत्तम कर्मों के लिए विद्यार्थी इससे प्रतिज्ञात और अधिकृत होता है अतः यज्ञोपवीत है। इससे अनुशासन और व्रतों में पालन की प्रतिज्ञा में बद्ध होता है अतः यह व्रतबन्ध है। वेदों में भी इस यज्ञोपवीत धारण का वर्णन है। उसी को लेकर अन्यत्र शास्त्रों में इसका पल्लवन किया गया है। ऋग्वेद १०।५७।२ मन्त्र में कहा गया है कि "जो तन्तु यज्ञोपवीत-तन्तु यज्ञों का प्रसाधक है और विद्वानों में आतत है उसको हम धारण करें। यद्यपि इस मन्त्र में बहुत से तथ्य छिपे हैं परन्तु विस्तार भय से यहां पर उनका वर्णन नहीं किया जा रहा है।

परिपत्र

सत्याग्रह बलिदान-स्मारक दिवस
गुरुवार १२ अगस्त १९६५ को मनाइये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के दिनांक १३-१०-४० के स्थायी निश्चयानुसार सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में श्रावण शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार गुरुवार १२ अगस्त १९६५ को आर्यसमाज मन्दिरों में सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायगा। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। इसका कार्यक्रम आर्य पर्व-पद्धति के अनुसार श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलाकर निम्न प्रकार किया जाय :—

प्रातः ८॥ बजे आर्यसमाज मन्दिरों में सभाएं की जायें जिनमें उपाकर्म की कार्यवाही के पश्चात् सब उपस्थित नर पुरुष तथा देवियां मिलकर निम्न पाठ करें :—

१—ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरय ॥ ऋग्वेद ७। ६६। १३।

२—ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजुर्वेद १। ५॥

३—ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ ऋ० ९। ६३। ५॥

४—ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयु. प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥ अथर्ववेद १२। १। ६२॥

आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़ कर प्रार्थना करायें —

१—जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं, उनके सुखदायक उत्तम आश्रय में हम सब सदा रहें तथा हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२—हे ज्ञानस्वरूप! सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर! हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसके पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान करें ताकि उस व्रत के ग्रहण से हमारी सब तरह से उन्नति हो! वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य की ही शरण में आते हैं। आप हमें शक्ति दें कि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३—हे मनुष्यो! तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए श्रमशील बन कर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी, धर्मात्मा बनाओ।

४—हे प्रिय मातृभूमे! हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियां तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। सर्वथा नीरोग, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए हम दीर्घायु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बलि देने को भी तैयार रहें।

इसके पश्चात् मिल कर निम्नलिखित कविता का गान किया जावे :--

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान ॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा धीरों ने ॥
ऐसे सभी धर्म वीरों के, आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम, निज जीवन में लाते हैं ॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर, वीर जाति को निश्चय से ॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणों की आहुति दें वीर ॥
जगदीश को साक्षी जानकर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत करते हैं ॥
सर्वशक्ति दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें ॥
(ध० दे०)

❀ धर्मवीर नामावली ❀

श्यामलाल जी महादेव श्री राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द ॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाण्डुरंग श्री शान्तिप्रकाश ॥
पुरुषोत्तम श्री ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त-अरुड़ा मातुराम जी नन्हूसिंह जी श्री गोविन्दराव ॥
बदनसिंह जी रतीराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द ॥
माणिकराव श्री भीमराव जी महादेव श्री अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण वैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह ॥
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सब ही वीरों धीरों का ॥

रामगोपाल
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा

पांच हजार वर्ष हुए जब भारत का नेतृत्व श्रीकृष्ण जी के हाथ में था। उन्होंने देश का नेता होते हुए देशवासियों की सभी क्लासों के साथ वह व्यवहार किया जो आजकल के संसार के लिए अनुकरणीय है। उनके क्रियात्मक जीवन पर हम तीन तरह से दृष्टिपात कर सकते हैं—(१) शारीरिक तौर पर वह इतने शक्तिशाली थे कि उनकी शक्ति का लोहा भीष्मपितामह जैसे ब्रह्मचारी भी मानते थे। शिशुपाल ने जब पाण्डवों की सभा में उनका अपमान करना चाहा और इसी उद्देश्य से मुकाबले के लिये ललकारा तो उन्होंने बिना कोई अगर मगर किये शिशुपाल का प्राणान्त कर दिया।

(२) आध्यात्मिक तौर पर वह इतना ऊंचा स्थान रखते थे कि आज भी दुनिया की तमाम सभ्य जातियां गीता में दी हुई शिक्षा के सम्मुख नतमस्तक हैं। नैपोलियन व नैलसन बनने की इच्छा कहीं नहीं देखी जाती, परन्तु कृष्ण बनने की इच्छा प्रायः सभी मनुष्यों में पाई जाती है।

(३) सामाजिक उन्नति का उन्होंने इतना उत्तम उपदेश दिया है कि यदि हम उसे अपनायें तो हमारा भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। हम उनके जीवन के सम्बन्ध में कुछ बातें यहां देते हैं। (क) उनके विचार में सामाजिक उन्नति के लिए हर एक व्यक्ति के लिए अच्छा होना आवश्यक था इसलिए उनका विश्वास था कि माता-पिता का कर्त्तव्य है कि तैयारी करके सन्तान पैदा करें। उन्होंने इसकी क्रियात्मक शिक्षा दी और वह यह थी कि रुक्मिणी से विवाह करने के अनन्तर जब दोनों में सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा उत्पन्न हुई तो कृष्ण और रुक्मिणी दोनों ने सन्तान पैदा करने की तैयारी की और वह तैयारी यह थी कि दोनों ने ११-१२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया और तब एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह पुत्र प्रद्युम्न ऐसा पैदा किया कि माता-पिता दोनों को उसपर गर्व था। (ख) जाति में जो निर्धन व्यक्ति हों उनसे कैसा व्यवहार करना चाहिये। उनकी वह शिक्षा वह अमल था जो उन्होंने सुदामा जैसे निर्धन के साथ किया। यदि आज दुनिया के धनवान् अपना ऐसा व्यवहार बनालें तो Labour and Capital का झगड़ा समाप्त हो सकता है। (ग) सामाजिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य समाज (Society) के स्वार्थ के सामने अपने स्वार्थ को हेच समझे। कृष्ण ने जब तय कर लिया कि उन्हें इस देश का चक्रवर्ती राज्य स्थापित करना चाहिये, तो उन्होंने इसके लिये विचार भी नहीं किया कि राज्य का राजा मुझे बनना चाहिये। यदि वह ऐसा करते तो वह इसके लिए उपयुक्त ही थे। परन्तु इससे जो मिसाल वह स्थापित करना चाहते थे नहीं बन सकती थी। इसलिये उन्होंने जो किया उसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। (घ) गृह कलह से देश की शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिए इसके लिए भी उनका जीवन शिक्षाप्रद है। उन्होंने जरासन्ध से युद्ध नहीं किया। उन्हें मथुरा छोड़कर द्वारिका जाना पड़ा इसे उन्होंने स्वीकार किया, लेकिन गृह कलह में नहीं उलझे। जरासन्ध के राज्य को देश के चक्रवर्ती राज्य के आधीन होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने इतनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि सिवाय जरासन्ध के एक आदमी की जान की हानि नहीं हुई और उसका राज्य आधीनता में आ गया। (ङ) अत्याचार और धींगा-धांगी सहना पाप है। कृष्ण के जीवन का यह चित्र था। उन्होंने कंस का वध इसी पाप से बचने के लिए किया। संक्षेप में यह कि उनके जीवन को किसी भी दृष्टि से देखें तो वह आज भी अच्छी से अच्छी और ऊंची से ऊंची शिक्षा हमको दे सकता है। आशा है कि श्रीकृष्ण के जन्म दिवस को मनाते हुए उनके जीवन से कोई शिक्षा लेने का हम यत्न करेंगे।

—०—

वैदिक प्रार्थना

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥

य० ३२ । १३ ॥

हे सभापते ! विद्यामय न्यायकारिन् सभासद् ! सभाप्रिय सभा ही हमारा न्यायकारी हो । ऐसी ही इच्छा वाले आप हमको कीजिये । किसी एक मनुष्य को हम लोग राजा कभी न मानें, किन्तु आपको ही हम सभापति सभाध्यक्ष राजा मानें । आप अद्भुत, विचित्र शक्तिमय तथा प्रियस्वरूप ही हैं । इन्द्र जो जीव उसको कमनीय (कामना के योग्य) आप ही है । 'सनिम्' सम्यक् भजनीय और सेव्य भी जीवों के आप ही है । मेधा अर्थात् विद्या, सत्य धर्म्मादि धारणा वाली बुद्धि को भगवन् मैं याचता हूँ सो आप कृपा करके मुझको दें । एक ईश्वर से भिन्न कोई जीवों को सेव्य नहीं है । यही वेद में ईश्वराज्ञा है सो सब मनुष्यों को माननी योग्य है ।

प्राक्कथन

सार्वदेशिक सभा के माननीय सदस्यों के समक्ष सभा का ५७वां वार्षिक वृत्तान्त प्रस्तुत किया जाता है।

इस वर्ष सभा का विशेष ध्यान और प्रयत्न पूर्वी बंगाल के विस्थापितों की सेवा सहायता और अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध कार्य पर केन्द्रित रहा। ईसाई विश्व सम्मेलन के दुष्प्रभाव के निराकरण के लिए सभा को प्रचार और साहित्य प्रकाशन एवं वितरण का भारी आयोजन करना पड़ा। आर्य नर नारियों, आर्य समाजों एवं आर्य विद्वानों के सक्रिय सहयोग से हम इस कार्य को सफलता-पूर्वक कर सके, इसका हमें हर्ष है। इस समस्त आयोजन के पीछे सभा के मान्य प्रधान श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास का सचिन्त्य और सक्रिय मार्ग-दर्शन क्रियारत रहा जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर कईबार इस कार्य केलिये देहली की यात्राए कीं, अपने साधनाश्रम मे अपने व्यय पर कार्यकर्ताओं एव आर्य विद्वानों के निवास और भोजनादि की सुव्यवस्था की और इस समस्त आयोजन की सफलता के लिए अपने प्रभाव और धन का सदुपयोग किया। पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों के सेवा कार्य का गुरुतर भार श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज ने अपने स्वास्थ्य की पर्वाह न करते हुए, अपने ऊपर रखा। महीनों पर्यन्त कलकत्ता मे बैठकर अपनी देख-रेख मे इस कार्य को कराया और इस कार्य के प्रसंग मे भ्रमण भी किया। इसके साथ ही उन्होंने ईसाई प्रचार निरोध काय का संचालन और निरीक्षण भी जारी रखा। उनकी इन विशद सेवाओं के लिए सभा हृदय से उनका आभार मानती है। श्री आचाय वैद्यनाथ जी शास्त्री की सेवाओं का प्राप्त होना, सभा के लिए गौरव की बात है। वे अनुसन्धान पूर्ण श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना एव विरोधियों के ग्रन्थों का उत्तर लिखने के महान् कार्य में संलग्न हैं। उनके ग्रन्थों एवं कार्य का विस्तृत वर्णन आगे के पृष्ठों मे अंकित है। सुप्रसिद्ध भागवत केस मे उनकी साक्षी और उसके फलस्वरूप आर्य समाज की विजय आर्य समाज के इतिहास की एक उल्लेखनीय घटना बन गई है।

दक्षिण मे आर्य समाज के कार्य के विस्तार और सगठन के लिए मदरास मे सभा के उपकार्यालय की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न था। प्रसन्नता है कि इसकी विधिवत् स्थापना हो गई है और एक सुयोग्य विद्वान् की सेवाएं प्राप्त हो गई है जो हिन्दी और अंग्रेजी के उत्कृष्ट वक्ता और होनहार नवयुवक है। आशा है वहां का कार्य शीघ्र ही सुचारु एव व्यवस्थित रूप से होता रहेगा। इस दिशा मे मदरास आर्य समाज, उसके सुयोग्य मन्त्री श्री धर्म्मजित जी जिज्ञासु तथा श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सभा उपप्रधान के प्रयत्नों की सराहना किये बिना नहीं रहा जा सकता। आसाम मे प्रचार की व्यवस्था का होना आवश्यक है। इस दिशा में भी सभा प्रयत्नशील है। विश्वास है आगामी वर्ष हम इस दिशा में कोई ठोस कार्य कर सकेंगे। त्रिपुरा (विलोनियां) की सम्पत्ति की रक्षा और कार्य के विस्तार की व्यवस्था कर दी गई है। इस कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के अधिकारियों एवं सभा के उपमन्त्री श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री का सहयोग और प्रयत्न प्रशंसनीय रहा।

सभा के वर्चस्व एवं अनुशासन को अक्षुण्ण बनाये रखने में आर्य जनता की जो सचिन्त्य भावना पाई गई उससे हमें बड़ा बल मिलता रहा। इस पर हम हर्ष ही प्रकट कर सकते हैं। जिन प्रान्तीय सभाओं ने इस वृत्तान्त के लिये अपने विवरण भेजकर कार्यालय को उपकृत किया है उनके तथा माननीय सदस्यों के सक्रिय सहयोग के लिए भी हम कृतज्ञ हैं। विदेश की समाजों केविवरणों को हमने तद्वत् देना ही उचित समझा है।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

ओ३म

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

का

५७वां वार्षिक वृत्तान्त

(१-३-६४ से २८-२-६५ तक)

निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष इससभा मे देश-विदेश की प्रतिनिधि सभाएं तथासभा में प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाला एक आर्य समाज सम्मिलित रहा।

वर्ष के अन्त में यह सभा निम्न प्रकार १७५ सदस्यों का समुदाय थी।

१. प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि	१४१
२. आर्यसमाजों के प्रतिनिधि	१
३. आजीवन सदस्य	२४
४. सभा प्रधान (पदेन)	४
५. प्रतिष्ठित	५
	१७५

इस वर्ष श्री बल्देव भाई आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के सदस्य के निधन से उक्त सभा के एक प्रतिनिधि सदस्य का स्थान रिक्त हो गया।

श्री ला० हरशरण दास जी के निधन से एक आजीवन सदस्य कम हो गया।

सम्बद्ध सभाएं	प्रतिनिधि सं०
१. आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश	३५
२. ,, ,, पंजाब	३८
३ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब	११
४. आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार	१०
५. ,, ,, बंगाल	११
६ ,, ,, मध्य भारत	३
७ ,, ,, मध्य प्रदेश	७
८ ,, ,, राजस्थान	७
९. ,, ,, मध्य दक्षिण	५
१०. ,, ,, सिन्ध	१
११. ,, ,, बम्बई	१४
१२ ,, ,, पूर्वी अफ्रीका	१
१३ ,, ,, दक्षिण अफ्रीका	—
१४. ,, ,, फिजी	—
१५ ,, ,, सुरीनाम-डचगायना	
१६ ,, ,, मौरीशस	१
१७. ,, ,, ब्रह्मदेश	
	१४१

नोट—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक सभा का पंचमांश न आने के कारण इस वर्ष इन दोनों सभाओं का प्रतिनिधित्व न हुआ और ना ही इन सभाओं के प्रतिनिधियों की संख्या का सदस्य सूची में परिगणन ही हुआ।

अधिकारी और अन्तरंग सदस्य

६-८-६४ के बम्बई मे हुए वार्षिक साधारण अधिवेशन मे १९६४ ६५ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी और अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए :—

पदाधिकारी

(१) प्रधान—श्रीयुत सेठ प्रतापसिंह शूर जी बल्लभदास

(२) उपप्रधान—श्रीयुत पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम. पी.

(३) उपप्रधान—श्रीयुत डा० डी० राम जी एम. एल ए. भूतपूर्व वाइस चासंलर पटना-विश्व विद्यालय, एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार राज्य।

(४) उपप्रधान—श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यदक्षिण हैदराबाद (आन्ध्र)

(५) मन्त्री—श्रीयुत ला०रामगोपाल जी शालवाले

(६) उपमन्त्री—श्रीयुत वेणीभाई जी आर्य. मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई

(७) उपमन्त्री—श्रीयुत पं०रामनारायण जी शास्त्री. पटना

(८) कोषाध्यक्ष—श्रीयुत लाला बालमुकन्द जी आहूजा, आहूजा स्टोर्स, चांदनीचौक, देहली

(९) पुस्तकाध्यक्ष—श्रीयुत पं० शिवकुमार जी शास्त्री. मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (सहारनपुर)

अन्तरंग सदस्य

१. श्री स्वामी ध्रुवानन्दजी सरस्वती (जनरल से)

२. ,, महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती (प्रतिष्ठित सदस्यों के प्रतिनिधि)

३. ,, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (मध्य प्रदेश) द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, दयानन्द भवन मंगलवारी पेट-सदर नागपुर (म० प्रदेश)

४. ,, के० सीतैया जी गुप्त, उसमान गंज, हैदराबाद (आन्ध्र) मध्यदक्षिण

५. ,, पं० वासुदेव जी शर्म्मा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, झाउगंज-पटना (बिहार)

६. ,, डा० महावीर सिंह जी रि० सिविलसर्जन हस्पताल रोड, लशकर ग्वालियर (म०प्र०)

७. ,, मिहिरचन्द्र जी धीमान, ११५ बनारस-रोड, सलकिया-हावड़ा (बंगाल)

८. ,, पं० कान्तिलाल मोहनलाल जी शर्म्मा, जे० पी० सुभद्रा मेशन, ७४ बालकेश्वर बम्बई

९. ,, अमरसिंह जी आर्योपदेशक ७ उल्हास नगर थाणा (महाराष्ट्र) (सिन्ध)

१० ,, छोटूसिंह जी एम. कौम, एल. एल. बी, ऐडवोकेट, केडल गंज अलवर (राजस्थान)

११ ,, प्रेमचन्द जी शर्म्मा एम० एल० सी०, हाथरस (अलीगढ़), उत्तर प्रदेश)

१२. ,, गणेशदास जी सलूजा, मालिक रावलपिंडी फ्लोरमिल. मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश

१३. ,, महेन्द्रपाल जी, ५ आनन्द कुंज लिंकिंग रोड, शान्ताक्रुज बम्बई-४ (ईस्टअफ्रीका)

१४. ,, विष्णुदेव जी मेवराज, साधुआश्रम (अलीगढ़) (मौरीशस सभा)

१५. ,, धर्म्मजित जी जिज्ञासु एम. ए., एल-एल. बी, ३६२ मिन्टस्ट्रीट, मद्रास (आ० स० मद्रास)

१६ श्रीमती शकुन्तला जी गोयल द्वारा श्री डा० भगवद्दत्त जी खैरनगरगेट, मेरठ शहर (जनरल)

१७. श्री ठा० फूलनसिंह जी आर्य, मंत्री नारायण कालेज शिकोहाबाद (मैनपुरी) (जनरल)

१८ ,, म० बनवारीलाल जी आर्य, नयागज, गाजियाबाद (मेरठ) (आजीवन सदस्यों के प्रति०)

१९६४-६५ के लिए श्रीयुत नारायणदास जी कपूर आडिटर नियुक्त हुए।

उपसमितियां

१०-८-६४ की अन्तरग सभा ने वर्ष का कार्य-विभाजन करते समय निम्नलिखित उपसमितियां नियुक्त कीं —

आर्य नगर गाजियाबाद भूमि समिति

१—श्रीयुत बालमुकन्द जी आहूजा
२— ,, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री
३— ,, म० बनवारीलाल जी आर्य
३— ,, लाला रामगोपाल जी (संयोजक)
५— ,, सोमनाथ जी मरवाहा

इस समिति को आवश्यक होने पर अन्तिम निर्णय करने का भी अधिकार दिया गया।

विधान समिति

१—श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
२— ,, घनश्यामसिंह जी गुप्त
३— ,, विष्णुदेव नारायण जी एडवोकेट
४— ,, लाला रामगोपाल जी (संयोजक)
५— ,, पं० रामनारायण जी शास्त्री
६— ,, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री
७— ,, बालमुकन्द जी आहूजा

विदेश प्रचार समिति

१—श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
२—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज
३— ,, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
४— ,, डा डी राम जी
५— ,, महेन्द्र पाल जी
६— ,, मिहिरचन्द्र जी धीमान
७— ,, लाला रामगोपाल जी (संयोजक)

निश्चय हुआ कि विदेश सम्बन्धी कोई पत्र श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती जी की बिना अनुमति के सभा कार्यालय से न भेजा जाया करे।

आर्यवीर दल समिति

१—सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी
२—सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा
३—श्री मिहिरचन्द्रजी धीमान (रक्षासचिव)

विद्यार्य सभा समिति

१—श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री (संयोजक)
२— ,, पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार
३— ,, भारत भूषण जी त्यागी
४— ,, पं० चन्द्रदत्त जी तिवारी
५— ,, प० विद्याधर जी शर्मा (कानपुर)
६— ,, धर्मेन्द्र सिंह जी देहरादून
७— ,, ला० रामगोपाल जी
८— ,, डा० डी० राम जी

यह समिति अपने मे २ सदस्य तक सहयुक्त कर सकेगी और कोरम ३ का होगा। इस निश्चय के अनुसार इस समिति में श्रीयुत देवराज जी चड्ढा एम० ए० तथा श्रीमती सुशीला देवी जी सेठी एम० ए०, बी० टी० सहयुक्त किये गये।

पुस्तकालय समिति

१—श्रीयुत आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

२—श्री पं० शिवचन्द्र जी
३—,, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
४—,, वाचस्पति जी शास्त्री
५—,, पं० शिवकुमार जी शास्त्री(संयोजक)
६—,, पं० रामनारायण जी शास्त्री

धर्मार्य सभा समिति

१—श्री आ० वैद्यनाथजी शास्त्री (संयोजक)
२—,, पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु
३—,, पं० शिवकुमार जी शास्त्री
४—,, आचार्य रामानन्द जी शास्त्री
५—,, पं० रामचन्द्र जी देहलवी
६—,, आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री
७—,, पं० वाचस्पति जी शास्त्री

श्रद्धानन्द बलिदान भवन समिति

१—श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
२—,, पं० शिवकुमार जी शास्त्री
३—,, ला० बालमुकन्द जी आहूजा
४—,, ला० रामगोपाल जी (संयोजक)
५—,, पं० शिव चन्द्र जी
६—,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा

सभा कर्मचारियों के सर्विस नियमों में परिवर्तनों का सुझाव देने विषयक समिति

१—श्री बालमुकन्द जी आहूजा
२—,, पं० रामनारायण जी शास्त्री (सयोजक)
३—,, ठा० फूलनसिंह जी आर्य
४—,, पं० वासुदेव जी शर्मा
५—,, ला० रामगोपाल जी

आर्य विद्वत्सम्मेलन समिति

१—श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
२—,, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री (संयोजक)
३—श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
४—,, पं० शिवकुमार जी शास्त्री
५—,, पं० वाचस्पति जी शास्त्री
६—,, डा० हरिदत्त जी शास्त्री

उपदेशक विद्यालय समिति

१—श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
२—,, महात्मा आनन्द स्वामी जी
३—,, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री
४—,, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
५—,, पं० शिवकुमार जी शास्त्री
६—,, ला० रामगोपाल जी (संयोजक)
७—,, धर्मेन्द्र सिंह जी

मद्रास में सभा उपकार्यालय समिति

१—श्री पं० नरेन्द्र जी
२—,, पं० धर्मजित जी जिज्ञासु (सयोजक)
३—,, ला० रामगोपाल जी
४—,, पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

इस समिति को अपने में सदस्य सहयुक्त करने का अधिकार होगा।

आर्य नगर गाजियाबाद

आर्य नगर गाजियाबाद की भूमि को एक्वीजीशन व मास्टर प्लान की बाधाओं से बचाने का यत्न जारी रहा।

सरकारी कागजात में इस भूमि की स्वामिनी के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम लिखा हुआ न था वरन् "प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा दुर्गाप्रसाद उपप्रधान" ऐसा लिखा हुआ था। अब इस भूल का सुधार करा दिया गया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा लिखा दिया गया है।

इस भूमि का धारा १४३ का डिक्लेरेशन भी नहीं लिया गया था जो इस वर्ष प्राप्त कर लिया गया है।

उत्तर प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों एवं मन्त्रियो से समय २ पर सभा के शिष्ट मंडल गाजियाबाद और लखनऊ में भेंट करते रहे। इस भूमि को सरकारी बाधाओं से शीघ्र से शीघ्रमुक्त कराने के लिए प्रत्येक सम्भव यत्न किया गया।

मई १६६३ में सभा की ओर से हाई कोर्ट इलाहाबाद में रिट पिटीशन दाखिल की गई थी। इस वर्ष प्रेस्क्राइब्ड अथारिटी, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश सरकार तथा लैण्ड एक्वीजीशन आफिस के शपथ पूर्वक उत्तर दाखिल हुए। श्री म० बनवारीलाल जी आर्य द्वारा सार्वदेशिक सभा की ओर से इलाहाबाद हाई कोर्ट में उन सब के उत्तर दाखिल किये गये। आशा है शीघ्र ही निर्णय हो जायगा। आर्य नगर भूमि गाजियाबाद के निमित्त तहसील गाजियाबाद से बांड मिलने हैं उनके लिए सभा का संशोधित नाम अंकित कराने की कार्यवाही करादी गई है। विश्वास है बांड शीघ्र ही प्राप्त हो जायेंगे।

इस समस्त कार्य में श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री महाशय बनवारी लाल जी आर्य का मूल्यवान सक्रिय सहयोग प्राप्त रहा जिसके लिए सभा उन्हें धन्यवाद देती है।

विदेश प्रचार

इस वर्ष भी श्रीयुत ओम्प्रकाश जी त्यागी पूर्वी अफ्रीका में और श्री स्वामी अखिलानन्दजी सरस्वती मौरीशस में प्रचार कार्य करते रहे।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज आर्य समाज बैंकौक और सिंगापुर के निमन्त्रण पर २६ फरवरी १६६४ को एयर इण्डिया जहाज से थाईलैण्ड और मलेशिया प्रचारार्थ गये।

बैंकोक के सभी भारतीय संस्थानों, बैंकौक के लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तियों तथा स्थानीय आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा सामूहिक रूप से पूज्य स्वामी जी महाराज का अभिनन्दन किया गया।

श्री स्वामी जी महाराज ने लगभग १। मास तक इन स्थानों में प्रचार कार्य किया।

बैंकौक में २० फरवरी से ही व्याख्यानों एवं प्रवचनों का कार्य-क्रम प्रारम्भ हो गया था। प्रथम व्याख्यान हिन्दू समाज के विशाल हाल में हुआ।

२८ फरवरी को प्रात: आर्य समाज मन्दिर में बृहद् यज्ञ हुआ। सायंकाल ३।। बजे से ४ बजे तक होली का वास्तविक स्वरूप विषय पर पूज्य श्री स्वामी जी महाराज का ओजपूर्ण व्याख्यान हुआ। श्री के० वाई पद्मनाथन तथा श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल सदस्य योजना कमीशन भारत सरकार का स्वागत किया गया। मान्य राजदूत महोदय ने अपने स्वागत सत्कार के प्रति आभार प्रकट करते हुए नववर्ष पर सब लोगों के मंगल की शुभ कामना की।

तत्पश्चात् श्रीमन्नारायण जी ने सर्व प्रथम पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की तथा भारत सरकार की प्रथम तथा दूसरी योजनाओं और उनकी उपादेयता पर प्रकाश डाला। उन्होंने संसार की भौतिक उन्नति आदि की भी विवेचना की।

उन्होंने इस बात पर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की कि आर्य समाज देश के बाहर भी अच्छे पैमाने पर आर्य संस्कृति का प्रचार और प्रसार कर रहा है।

हिन्दू समाज के विशाल हाल में प्रतिदिन सायंकाल ५।। बजे से ६।। बजे तक, प्रत्येक शनिवार को हिन्दू महिला मंडल में सायंकाल ३ से ४ बजे तक, रविवार को प्रातः हिन्दू समाज के हाल में और दोपहर बाद आर्य समाज के विशाल हाल में प्रवचन होते रहे। इसके अतिरिक्त नगर से दूर भारतीय बस्तियों में भी प्रति-

दिन प्रवचन होते रहे।

श्री महा मुकुट राजविद्यालय (बौद्ध यूनिवर्सिटी) के प्रधान संचालक के विशेष अनुरोध पर महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर २६ मार्च को श्री स्वामी जी का ओजस्वी भाषण हुआ। यह भाषण लगभग ३ घंटे तक चला जिसका थाई भाषा में अनुवाद श्री भगवान प्रसाद जी दुबे ने किया। महाविद्यालय के आचार्यों ने वैदिक धर्म के उत्तम विश्लेषण पर श्री स्वामी जी महाराज का विशेष आभार माना और इसके लिए पूज्य स्वामी जी को बधाई एवं धन्यवाद दिया। इस समारोह में सहस्रों बौद्ध भिक्षु उपस्थित थे।

श्री स्वामी जी के प्रवचनों में अपार भीड़ रहती थी। उन प्रवचनों में से अधिकांश का टेपरिकार्ड हो गया है। सन्ध्या के शुद्ध एवं सस्वर उच्चारण के लिए सारी सन्ध्या के मन्त्रों के रिकार्ड बना लिए गए हैं।

थाईलैण्ड के वयोवृद्ध विद्वानों ने कहा था कि श्री स्वामी जी बैंकौक के पहले व्याख्याता हैं जो अपने विषय को इस बुद्धिमत्ता एवं निपुणता से जन साधारण के समक्ष उपस्थित करते हैं कि उनके विरोधियों तक में उनके और प्रवचनों के प्रति श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न हो जाती है।

३१ मार्च को वायुयान से श्री स्वामी जी सिंगापुर पहुंच गए।

सिंगापुर

सिंगापुर में आर्य समाज की स्थापना १९२७ में हुई थी। द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त तथा जापानी प्रशासन के काल में इसके कार्य में शिथिलता आ गई थी। गतवर्षों से वहां आर्य समाज का कार्य व्यवस्थित रूप से और द्रुतगति से हो रहा है। इस समय वहां आर्य समाज को मुख्य धार्मिक संस्थाओं में उच्च स्थान प्राप्त है। १९६३ में इसका विशाल भवन बनकर तैयार हुआ जिस पर १॥ लाख डालर व्यय हुआ।

समाज भवन में ही श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। भवन को देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। आर्य समाज के ऊपरी मुख्य भवन वैदिक हाल में उनके सायंकालीन व्याख्यान की व्यवस्था की गई थी। रविवार की पहली विशाल सभा में श्री स्वामी जी द्वारा एक शुद्धि भी हुई।

अपने विविध भाषणों में स्वामी जी ने वैदिक धर्म तथा सात्विक जीवन अपनाने की विशेष प्रेरणा की। जिनके घर मांस, मदिरा का प्रयोग होता था उनके घर जाने की स्वामीजी महाराज स्वीकृति न देते थे। परिणामतः बहुत व्यक्तियों ने शाकाहार की प्रतिज्ञा की।

स्वामी जी ने आर्य समाज के पुस्तकालय को उन्नत एवं व्यवस्थित करने का भी निर्देश किया और एक ही व्याख्यान में लगभग ३ हजार रुपया इस कार्य के निमित एकत्र हो गया।

स्वामी जी के व्याख्यान लोगों के निवास स्थानों पर, स्थानीय संस्थाओं में एवं आर्य-समाज मन्दिरों में हुए।

श्री स्वामी जी को २ बार वायुयान से क्वलालम्पुर जाकर व्याख्यान देने पड़े। आर्य समाज ईपो में भी उनका भाषण हुआ।

मलेशिया की आर्य हिन्दू जनता ने श्री स्वामी जी के व्याख्यानों एवं प्रवचनों से अमित लाभ उठाया। वहां की जनता में अपूर्व धार्मिक चेतना उत्पन्न हुई। उपकृत जनता ने अपनी प्रतिक्रिया यह कहकर व्यक्त की कि द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त भारतवर्ष से आने वाले श्री स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हमसे कुछ लिया नहीं, अपितु हमें अधिकाधिक दे गए।

श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी का प्रचार कार्य

श्रीयुत ओ३म् प्रकाश जी त्यागी आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका को प्रचार और संगठन कार्य में अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं, जो बड़ा मूल्यवान सिद्ध हो रहा है यहां तक कि वे लोग श्री त्यागी जी को भारत आने नहीं दे रहे हैं।

सन् १९६२ में आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका ने निराश्रित बच्चों की रक्षा के लिए नैरोबी में एक दयानन्द आश्रम खोलने का निश्चय किया था। इस निश्चय को मूर्त्तरूप देने का सर्वाधिक श्रेय श्रीयुत त्यागी जी को प्राप्त हुआ। उनके अनथक परिश्रम के फलस्वरूप दयानन्द आश्रम खोल दिया गया है। इसमें ५ और ७ वर्ष की आयु के बच्चे लिए जायेंगे। प्रारम्भ ४ निराश्रित बच्चों के प्रवेश से हुआ है।

२० बच्चे चाइल्ड वैलफेअर सोस इटी द्वारा लेने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह सोसाइटी प्रत्येक बच्चे के लिए ४० शिलिंग प्रतिमास सहायता देगी। इससे आश्रम का आर्थिक बोझ हल्का रहेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका श्री त्यागी जी के महयोग से इस संस्था को जीवित-जाग्रत संस्था बनाने का प्रयास कर रही है।

श्री त्यागी जी की प्रेरणा पर आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रोका ने ६ अफ्रीकन बालकों और ६ बालिकाओं को भारत के गुरुकुलों में रखकर पढ़ाने का निश्चय किया है जिससे कि वे स्नातक और स्नातिकाएं बनकर अपने २ प्रदेशों में वैदिक धर्म्म के प्रचार का स्थायी कार्य कर सकें। २ बालकों का व्यय भार आर्य समाज दारासलेम ने अपने जिम्मे लिया है। आर्य समाज नैरोबी तथा कम्पाला आदि भी इस अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य में हाथ बटाने का यत्न कर रहे हैं। वस्तुतः यह कार्य बड़ा उपयोगी और दूरदर्शितापूर्ण है। इसे सम्पन्न करने में कोई प्रयत्न उठा न रखा जाना चाहिए।

अफ्रीकन सुह'ली भाषा में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद कराने की व्यवस्था की गई है। इस अनुवाद के प्रकाशित हो जाने पर एक बहुत बड़ी खटकने वाली कमी की पूर्ति हो जायगी और प्रचार का मार्ग भी प्रशस्त हो जायगा।

मुम्बासा टाइम्स में प्रतिसप्ताह श्री त्यागी जी के वैदिक धर्म्म और संस्कृति पर अंग्रेजी में लेख छप रहे हैं जो बड़े लोकप्रिय हो रहे हैं।

श्री त्यागी जी के अनथक परिश्रम और उत्साह के फलस्वरूप एक ईसाई अफ्रीकन परिवार को शुद्ध किया गया है। अन्य कई परिवारों की शुद्धि का उपक्रम हो रहा है। शुद्ध हुए परिवार के मुख्य व्यक्ति श्री जो शुआ बड़े प्रभावशाली व्यक्ति और सोशल वर्कर हैं। वे फ्लोर मिल में लेबर आफीसर रह चुके हैं, वह अब आर्य समाज के प्रचारक के रूप में कार्य करेंगे। १९ दिसम्बर ६४ को टबोरा में एक मुस्लिम युवक को जो वहां अध्यापक ह शुद्ध किया गया।

यह सभा श्री त्यागी जी की मूल्यवान् सेवाओं के लिए उन्हें धन्यवाद देती है।

श्री स्वामी अखिलानन्द जी सरस्वती का कार्य

श्री स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी बड़ी तन्मयता और लगन से मौरीशस में प्रचार कार्य में संलग्न हैं। वे आर्य सभा मौरीशस की प्रबन्ध व्यवस्था में सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ प्रतिनिधि के रूप में अपना योग दे रहे हैं। वृद्धावस्था मे स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए भी वे प्रचार काय को आगे बढ़ाने साहित्य का प्रचार करने और समाज को एक शक्ति का रूप देने में जो योग दे रहे हैं वह भुलाया न

जा सकेगा। सभा उनकी विशेष कृतज्ञ है।

वर्ष भर में उनके द्वारा तथा उनके सहयोग से निम्न प्रकार कार्य हुआ :-- विवाह संस्कार ३२४, वेद कथाएं ११०. प्रचार २१ स्थानों पर, समाज स्थापना १३, यज्ञ ३५७, कर्ण वेध संस्कार १२, नामकरण ४४, गृहप्रवेश १६, मुंडन १४, अन्न प्राशन १२, अन्त्येष्टि १०।

लंदन प्रचार

लन्दन में आर्य समाज मन्दिर की व्यवस्था का प्रश्न इस सभा के विचाराधीन है। उपयुक्त भूमि लेकर मन्दिर बनवाना वा उपयुक्त मकान क्रय करके उसे मन्दिर का रूप देना इन दोनों बातों पर सभा विचार कर रही है। इस सम्बन्ध मे सभा कार्यालय श्री पं० उषर्बुध जी से जो लगभग १ वर्ष से वहां हैं, पत्र व्यवहार कर रहा है। इस कार्य के लिए लगभग डेढ़ लाख रुपए की व्यवस्था करना है। अपना मन्दिर हो जाने से वहां स्थायी कार्य की व्यवस्था हो जायगी। श्री पं० उषर्बुध जी से प्रार्थना की गई है कि वे बने बनाए किसी उपयुक्त मकान की खोज करके उसके मूल्यादि से कार्यालय को सूचित कर देवें। श्री बनवारी लाल जी पचेरी वाला ने २ वर्ष हुए १०००) इस मन्दिर के लिए सार्वदेशिक सभा मे जमा कराया हुआ है। योजना के मूर्त्त रूप लेने पर इन सज्जन ने १० हजार रुपया तक और देने का वचन दिया है। आशा है अन्य महानुभावों और सर्व साधारण जनता से धन की पूर्ति होते देर न लगेगी।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाओं का कार्य पूर्ववत् इस वर्ष भी सुचारु रूप से चालू रहा। परीक्षाओं के विस्तार और उनके सर्वप्रिय बनाने का प्रयत्न बराबर चालू है। विद्यार्य-सभा की समिति ने अपनी ८-११-६४ की मीटिंग में यह निश्चय किया कि सार्वदेशिक सभा से अनुरोध किया जावे कि वह समस्त आर्य संस्थाओं द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं का केन्द्रीकरण करे। समिति का यह विचार सभा को कार्यान्वित कराने के लिए भेजा गया। परन्तु विषय प्रयोगात्मक रूप में जटिल है अतः सभा इस दिशा में प्रयत्नशील है कि किस प्रकार इसे कार्यान्वित किया जावे। इसमें सन्देह नहीं कि यदि यह सुझाव कार्यान्वित हो जावे तो सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाओं का विस्तार अधिक हो जावेगा और सभी धार्मिक परीक्षाओं में एकरूपता भी आ जावेगी।

इस वर्ष चावड़ी बाजार आर्य कन्या पाठशाला में २६-११-६४ को उपाधि वितरणोत्सव का आयोजन हुआ। उत्सव की प्रधानता सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास ने की। प्रधान जी ने परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। अपने इस अवसर पर दिये गए भाषण में उन्होंने धर्म शिक्षा पर विशेष बल दिया और इस बात पर भी लोगों को समुचित प्रेरणा दी कि इन परीक्षाओं को अधिकाधिक विस्तृत और सर्व-जनीन बनाया जावे। इस उत्सव के आयोजन का समस्त कार्य कन्या पाठशाला के अधिकारियों और विद्यार्य सभा के परीक्षा मंत्री श्री देवराज जी चड्ढा ने बड़े उत्साह से संपन्न किया। विद्यार्य सभा का समस्त कार्य गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यार्य सभा के संयोजक श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री के द्वारा संचालित होता रहा। परीक्षायें वर्ष में दो बार हुईं।

अप्रैल १९६४ की परीक्षाओं में कुल ३६३ परीक्षार्थी बैठे और इन में २९४ उत्तीर्ण हुए। सितम्बर १९६४ की परीक्षाओं में ३७३ परीक्षार्थी बैठे और उनमें से ३०५ उत्तीर्ण हुए।

इस प्रकार परीक्षा परिणाम दोनों परीक्षाओं का अच्छा ही रहा। इनका विवरण निम्न प्रकार है:—

१९,२० अप्रैल १९६४ को

आर्य सिद्धान्त विशारद

परीक्षा में कुल परीक्षार्थियों की संख्या ३६३ अनुपस्थित १० अनुत्तीर्ण ७९ उत्तीर्ण २७४।

आय सिद्धान्त भूषण

परीक्षा मे कुल छात्रों की सख्या १३, अनुपस्थित ६, अनुत्तीर्ण १, उत्तीर्ण ६

आर्य सिद्धान्त रत्न

परीक्षा में सम्मिलित कुल विद्यार्थी संख्या-६, उत्तीर्ण ६

वर्ष की दूसरी परीक्षा

१७,१८ सितम्बर १९६४

आर्य सिद्धान्त विशारद

परीक्षार्थियों की संख्या—३७१, अनुत्तीर्ण ४२, अनुपस्थित २९, उत्तीर्ण ३०५

आर्य सिद्धान्त भूषण

परीक्षार्थियों की संख्या—२ उत्तीर्ण २

आर्य सिद्धान्त रत्न

परीक्षार्थियों की संख्या—२, उत्तीर्ण २

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नये नियम स्वीकार होकर प्रचलन में आ गए। उनके अनुसार ही अब इस समिति की व्यवस्था चलती है। कई विचारणीय विषयों के विचारार्थ धर्मार्य सभा की बैठक बुलाई गई। परन्तु विषयों की गम्भीरता को देखकर अधिक विचार की अपेक्षा होने से बैठक को आगे के लिए स्थगित कर दिया गया। यह भी उचित जान पड़ा कि धर्मार्य सभा के विचार करने से पूर्व प्रान्तों के अन्य विद्वानों की भी सम्मतियां विचारणीय विषयों पर ले ली जावें तो अच्छा होगा। अतः सभी प्रान्तीय सभाओं के मन्त्री महोदयों को एक परिपत्र भेजा गया कि वे उन विषयों पर अपने प्रान्त के विद्वानों की सम्मतियां लेकर भेजें। इस दिशा में पत्राचार बराबर चल रहा है।

सभा के पास इस वर्ष भी सिद्धान्त सम्बन्धी शंकाओं के पत्रों का तांता सा लगा रहा। सभी शंकाओं का उत्तर धर्मार्य सभा की ओर से दिया जाता रहा। देश और विदेश की अनेक समाजों और आर्य पुरुषों ने अपनी सिद्धान्त विषयक अनेक समस्याओं को भेजा और उनका भी समाधान किया गया। श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री इस वर्ष भी धर्मार्य सभा के संयोजक रहे और उसके सब कार्यों का संचालन किया।

वैदिक अनुसन्धान विभाग

जैसा गत वर्ष के विवरण मे दिया जा चुका है 'वैदिक-विज्ञान विमर्श' और 'वैदिकयुग और आदि मावन' पुस्तकें प्रकाशित हो गई और उनकी बिक्री बराबर हो रही है। उसके अनन्तर अंग्रेजी पुस्तक लिखने का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस पुस्तक का नाम 'The Arya samaj its Cult & Creed है। इस पुस्तक में आर्य समाज के मन्तव्यों, उसके दर्शन, और वैदिक सिद्धान्तों पर विशेष रूप से विचार किया गया है। पुस्तक इस दृष्टि से लिखी गई है कि देशीय-विदेशीय. कोई भी विद्वान् जो अंग्रेजी भाषा ही जानता है आर्यसमाज के सिद्धान्तों और वेद आदि के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सके। विदेशीय लोगों को दी जा सके और विदेश मे आर्य समाज के प्रचार में यह विशेष उपयोगी हो सके इसका ध्यान रखकर पुस्तक को तैयार

किया गया है। वेद मन्त्रों का आधार बनाकर उनकी व्याख्या रूप में विशेष लेख भी इसके एक प्रकरण में विभिन्न विषयों पर दिये गए हैं पुस्तक आगामी जुलाई अगस्त तक छपकर तैयार हो जायगी।

भागवत केस

गत मास मे भड़ौंच (गुजरात) मे चल रहे भागवत केस के विषय मे कुछ समय लगाना पड़ा अदालत मे मुकदमे की पैरवी करने के लिए श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री को स्वय साक्षी के रूप मे उपस्थित होना पडा। आचार्य जी के इस कार्य मे आर्य समाज की विजय रही और निर्णय आर्यसमाज के पक्ष मे हुआ। इसका सर्वत्र बहुत उत्तम प्रभाव पडा। आर्य समाज के इतिहास मे यह एक अभूत पूर्व घटना रही। जजमैन्ट पृथक् और पत्रों मे छापकर वितरित किया गया जो आर्य जनों ने पढा होगा। इसके पढने वाले सभी लोग न्यायाधीश की न्याय-प्रियता और श्री आचार्य जी की विद्या और केस को सम्भालने की क्षमता तथा प्रभाव की मुक्त कठ से प्रशसा करते हैं।

न्यायाधीश महोदय ने स्वय ही आचार्य जी की योग्यता की प्रशसा की है। कोर्ट मे जो लोग आचार्य जी की गवाही के समय उपस्थित थे वे तो इस दृश्यको दूसरा काशी शास्त्रार्थ कहते हैं। मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण जिन्होंने इस मुकदमे की पैरवी की थी इस कार्य की प्रशसा करते नहीं थकते। भगवान् दयानन्द का प्रभाव इसी प्रकार सदा अक्षुण्ण रहे।

युकेरिस्टक कान्फ्रेंस के अवसर पर साहित्य

गत वर्ष नवम्बर मास मे बम्बई मे हुए विश्व ईसाई महा सम्मेलन के अवसर पर सभा ने लाखों की सख्या मे ट्रैक्ट छपवाये और वितरित किये, आर्य जनता को यह भली प्रकार विदित है। समय समय पर विज्ञप्तियों और समाचार पत्रों द्वारा उसे यह सूचना दी जाती रही है सभा ने जो साहित्य इस अवसर पर प्रकाशित किया वह सब श्री आचार्य जी की देखरेख और उनके सम्पादन मे हुआ। इस साहित्य की सर्वत्र भूरिभूरि प्रशसा हुई है तथा अभी तक इसकी माग बराबर बढती जा रही है।

विश्व धर्म सम्मेलन

इस वर्ष फरवरी मास मे रामलीला मैदान देहली मे एक तथाकथित विश्वधर्म सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का स्तर बहुत नीचा था और कहना पडेगा कि सर्वथा ही यह सम्मेलन बनावटी था। कुछ लोगों ने अपने निहित उद्देश्यों को दृष्टि मे रखकर अपने धर्म के प्रचार और अपनी व्यक्तिगत लोकैषणा की पूर्ति के लिए यह आयोजन किया था। पर्याप्त दिनों तक पत्र व्यवहार करने पर पता चला कि इस सम्मेलन मे कोई तथ्य नहीं है और इसमे भाग लेने से कोई लाभ नहीं। सभा ने श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री को इसमे अपना प्रतिनिधि चुना था। आचार्य जी ने अग्रेजी मे अपना भाषण भी तैयार कर लिया था। परन्तु पत्रों द्वारा बार बार पूछे जाने पर यह उत्तर आयोजन कर्ताओं से मिला कि इस सम्मेलन मे अन्य सम्मेलनों की भाति निबन्ध और व्याख्यान विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों द्वारा नहीं होंगे, केवल विभागीय बैठकें मात्र होंगी और आयोजकों द्वारा निर्मित और वाछित कुछ स्वोद्देश्यपूरक प्रस्ताव ही पारित किये जावेंगे। इन परिस्थितियों में सभा के प्रतिनिधि ने ऐसे बनावटी सम्मेलन में भाग लेना उचित और सभा की प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं समझा और भाग नहीं लिया।

विविध विशेषोपयोगी कार्य

गतवर्ष की भांति लोगों की शंकाओं का समाधान पत्र आदि के द्वारा किया जाता रहा और लेख आदि लिखे जाते रहे। पी. एच. डी. आदि के लिए थीसिस लिखने वाले कई एतद्देशीय और विदेशीय विद्यार्थियों को उनके विभिन्न विषयों पर समुचित परामर्श और मार्गदर्शन किया जाता रहा। इनमें से कई ऐसे थे जिन्होंने आर्य समाज और वेद सम्बन्धी विषय भी लिए थे। यह कार्य आर्य समाज के प्रचार के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

भावी कार्य

पूर्वोक्त अंग्रेजी की पुस्तक के प्रेस में छपने के साथ-साथ आगे दूसरी पुस्तक लिखने का कार्य चलता रहेगा। सत्यार्थ दर्पण और ईश्वर-मीमांसा नाम की पुस्तकों का उत्तर लिखा जावेगा। वे पुस्तकें जैन मतानुयायियों की ओर से लिखी गई हैं। ईश्वर मीमांसा में ईश्वर विषय पर प्रहार किया गया है और यह पुस्तक अन्य विषयों के साथ पर्याप्त बड़ी है। इसके साथ ही सत्यार्थदर्पण का भी उत्तर दिया जावेगा। इसमें सत्यार्थ प्रकाश के १२वें समुल्लास में किये गये खण्डन को असत्य सिद्ध करने और महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आक्षेप किया गया है। इन पुस्तकों का समुचित उत्तर बहुतपूर्व ही दिया जाना चाहिए था। परन्तु वह नहीं किया गया। अतः अब इनका उत्तर भली प्रकार दिया जावेगा। इसी के साथ साथ जैन धर्म द्वारा और भी जो कहीं आर्य सिद्धांतों पर आक्षेप किये गए हैं उनका भी उत्तर दिया जावेगा।

सभा को श्री आचार्य वैद्यनाथ जी की सेवाओं का प्राप्त होना बड़ा ही उपादेय सिद्ध हुआ है। कार्यालय में निरन्तर उनकी उपस्थिति और उनका मूल्यवान् सहयोग दोनों ही सभा के कार्य की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं। श्री आचार्य जी के सहयोग केलिए सभा उनकी विशेष आभारी है।

साहित्य प्रकाशन

इस वर्ष सभा के विक्रय पुस्तक विभाग में निम्न लिखित पुस्तकें छपीं.--

	लागत
१ हजार प्रतियां दयानन्द एण्ड आर्य समाज	३५६-२४
१ हजार प्रतियां वैदिक विज्ञान विमर्श	४५१-६०
१ हजार प्रतियां वैदिक युग आदि मानव	१६७३-५२
११ सौ प्रतियां वेद और विज्ञान	६०५ ८२
५ हजार प्रतियां धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यन्त्र (पुस्तिका)	४५०-००
१ हजार प्रतियां वेदान्त दर्शन का भाष्य (हिन्दी में)	१६४७-७०
५ हजार प्रतियां ईसाई पादरी उत्तर दें (पुस्तिका)	१०८-५०
१५ हजार प्रतियां रोमन कैथोलिक चर्च क्या है ? (पुस्तिका)	६८१-२०
५ हजार प्रतियां आर्य समाज (पुस्तिका)	१४६-००
५ हजार प्रतियां शंका समाधान (पुस्तिका)	१६१-००
५ हजार प्रतियां पूजा किसकी ? (पुस्तिका)	१३१-००
२ हजार प्रतियां आर्य समाज के नियमोपनियम	११८-३७
योग	७१२३-६५

सार्वदेशिक-पत्र

इस वर्ष भी पत्र का सम्पादन सभा मन्त्री द्वारा हुआ। इस वर्ष चन्दे और विज्ञापन से ४७१८)७० की आय हुई। छपाई, कागज, लेखक

के वेतन और डाक व्ययादि पर ६११८'७० व्यय हुआ। घाटा १५००)०६ रहा। गत वर्ष घाटा १३३३)४१ था।

स्थिर पुस्तकालय

सभा पुस्तकालय में इस समय ६१४२ पुस्तकें हैं। गत वर्ष ६१०६ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ३३ की वृद्धि हुई। इस वर्ष ४७२)६४ की पुस्तकें क्रय की गई।

पुस्तकालय को उत्तम बनाने और सुव्यवस्थित करने का यत्न जारी है। इस वर्ष अधिकांश पुस्तकें अनुसन्धान करने वालों विशेषतः आर्य समाज विषय पर थीसिस लिखने वालों के प्रयोग में आईं। थीसिस लिखने वालों के लिए एक विशेष विभाग खोल कर उसमें प्रायः सभी सम्बद्ध ग्रन्थों को एकत्र करके रखने का विचार है। इससे निश्चय ही छात्रों को अमित लाभ होगा और आर्य समाज के यश और कार्य में वृद्धि होगी, एक मुस्लिम छात्र, आर्य समाज विषय पर पी. एच. डी. के लिए थीसिस तैयार कर रहा है। उसे सम्बद्ध साहित्य उपलब्ध किया गया और किया जा रहा है।

आर्य विद्वत् परिषद्

आर्य विद्वानों की ३-४ दिन पर्यन्त एक गोष्ठी का किया जाना बड़ा आवश्यक है जिससे कि सिद्धान्त सम्बन्धी अनेक विवादों और शंकाओं का समाधान किया जा सके। इस गोष्ठी का आयोजन सभा के विचाराधीन है। कुछ आवश्यक विषय धर्मार्य सभा द्वारा निर्णीत होने हैं। उनके निर्णीत हो जाने पर गोष्ठी की विषय सूची पूर्ण हो जायगी। धर्मार्य सभा उन विषयों पर समिति के सदस्यों की सम्मति प्राप्त कर रही है। सम्मतियों के प्राप्त होते ही वे विषय निर्णीत हो जायेंगे। आशा है आगामी वर्ष यह कार्य सम्पन्न हो जायगा।

उपदेशक विद्यालय

सभा की अन्तरंग सभा ने उपदेशकों के प्रशिक्षण के लिए एक उपदेशक विद्यालय खोलने का निश्चय किया हुआ है। अनेक अपरिहार्य कारणों से यह निश्चय अभी तक मूर्त्त रूप धारण नहीं कर सका। आर्य समाज के कई उपदेशक विद्यालय कार्य कर रहे हैं और टंकारा एवं गुरुकुल वृन्दावन आदि में इस प्रकार के विद्यालयों के संचालन की योजना बन चुकी है। अतः सभा का पृथक् विद्यालय चलाया जाय या नहीं, यदि चलाया जाय तो कहां ? यह प्रश्न विचारणीय है। एक सुझाव यह भी आया है कि श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी, श्री पं० बिहारी लाल जी शास्त्री प्रभृति आर्य विद्वानों के पास सभा के व्यय पर २-२ छात्र रख दिये जायं जिससे कि वे उनके पास रह कर प्रशिक्षित हो जायं।

उपकार्यालय मदरास

आर्य समाज मदरास के मन्त्री श्रीयुत पं० धर्मजित जी जिज्ञासु के प्रस्ताव और सभा उपप्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के समर्थन पर सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने २६-३-६४ की अपनी बैठक में मदरास नगर में अपना उपकार्यालय खोलने का निश्चय किया था जिससे कि वह मदरास प्रान्त में आर्य समाज के प्रसार का साधन बने। उसके द्वारा कार्य का निरीक्षण होता रहे और आर्य समाज एक शक्ति का रूप ले सके। इस कार्यालय के संचालन के लिए एक सुयोग्य महानुभाव की खोज की जा रही है, (गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्रीयुत विश्ववर्धन जी को जो हिन्दी, संस्कृत अंग्रेजी के वक्ता और वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ हैं नियुक्त करके मदरास भेज दिया है।

सार्वदेशिक न्याय सभा

इस वर्ष भी इस सभा के निम्न लिखित महानुभाव सदस्य रहे :—

(१) श्रीयुत रतनलाल जी रि० डिस्ट्रिक्ट ऐण्ड सेशन जज, ७०-ए, पुलीस स्ट्रीट मेरठ कैंट। —प्रधान

(२) श्री ठा० नन्दलाल सिंह जी रि० डि० एण्ड सेशन जज, सरावा (बुलन्दशहर)।

(३) गुण्डेराव जी रि० डि० एण्ड सेशन जज, ५२७—लाल दर्वाजा हैदराबाद, (आन्ध्रप्रदेश)

(४) श्री जस्टिस रंगीलाल जी सिविल लाइन्स लुधियाना।

(५) श्री बाबूराम जी एडवोकेट इटावा (उ.प्र.)

(६) श्री रघुवरदयाल जी मित्तल एडवोकेट ब्रिज श्री २०२ साकेत मेरठ।

(७) श्री रामगोपाल जी ऐडवोकेट पानीपत

कानूनी परामर्श और उचित कार्यवाही के लिए जिनके सम्बन्ध में कानूनी परामर्श प्राप्त करना अथवा कार्यवाही का किया जाना आवश्यक समझा गया, समय २ पर विविध विषय न्याय सभा को भेजे जाते रहे।

इस वर्ष ९-८-६४ के इस सभा के नैमित्तिक अधिवेशन में न्याय सभा के संशोधित नियम स्वीकृत हुए। सभा के आदेशानुसार १०-८-६४ से ये नियम प्रचलित हुए और हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित हो गए हैं।

दयानन्द पुरस्कार

इस वर्ष निम्न लिखित विषयों पर ग्रन्थ मंगाए गए:—

(१) वेद विषय पर मौलिक अनुसन्धान पूर्ण रचना।

(२) महर्षि के सिद्धान्तों और उन पर किए गए आक्षेपों के समाधान पर उत्तम रचना।

(३) आर्य समाज के दार्शनिक एवं किन्हीं अन्य सिद्धान्तों पर मौलिक रचना।

(४) राजनीति अथवा आचार शास्त्र पर आर्य सामाजिक दृष्टिकोण से लिखी गई मौलिक कृति।

परन्तु १-२ ग्रन्थ को छोड़ कर कोई विचार योग्य ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ।

उड़िया सत्यार्थ प्रकाश

उड़िया सत्यार्थ-प्रकाश के नए संस्करण के प्रकाशन के लिए इस ग्रन्थ का नए सिरे से अनुवाद कराया जा रहा है। ११ वें समुल्लास तक का अनुवाद हो चुका है। आगामी नवम्बर ६५ तक यह कार्य समाप्त हो जायगा।

दक्षिण प्रचार

यद्यपि दक्षिण मुख्यतः मद्रास क्षेत्र में सभा का नियमित प्रचार कार्य कई वर्ष से नहीं हो रहा है तथापि सभा के लगभग ३२ वर्ष पर्यन्त नियमित प्रचार के फलस्वरूप उस क्षेत्र में स्थापित कई आर्य समाजें प्रमुख २ नगरों में अच्छी दशा में है और अच्छा कार्य कर रही है। उन समाजों में से जिनके कार्य विवरण प्राप्त हो सके हैं वे नीचे दिए जाते हैं।

मद्रास

(१४-आदिप्पा नायक स्ट्रीट, जी-टी-मद्रास)

सदस्य संख्या—१५० जिनमें ७५ प्रतिशत तमिल भाषा भाषी हैं।

पदाधिकारी-प्रधान-श्री पी. सी. कल्याण-सुन्दरम

उपप्रधान-श्रीमती शीला इन्द्रसेन

श्री अर्जुनदेव जी स्याल

श्री सत्यदेव जी स्याल

मन्त्री—श्री धर्म्मजित जी जिज्ञासु

उपमन्त्री—श्री पी. टी. पिलाई जी

संरक्षक—श्री इन्द्रसेन जी

साप्ताहिक सत्संग निरन्तर होते रहे।

विशेष पर्व समारोह पूर्वक मनाए गए। इस वर्ष ११७ शुद्धियां हुई—५० मद्रास शहर में तथा ६२ मद्रास शहर के बाहर। इस वर्ष मद्रास शहर के बाहर तिरुवानमिया में एक कैम्प लगाया गया। जन साधारण पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। वे यह समझते हैं कि आर्य समाज ही हमारा वास्तविक मुक्ति दाता है। इस कैम्प से आर्य समाज के कार्य को विस्तृत करने की आवश्यकता भली भांति अनुभूत हुई।

मद्रास आर्य समाज की ओर से एक कन्या विद्यालय चल रहा है। आय समाज मन्दिर मे हिन्दी क्लासे लगती हैं।

वेलोर नगर के मध्य मे एक ईसाई चर्च बनने वाला था। बडे यत्न से कोर्ट द्वारा इसका निर्माण रुकवाया गया।

दक्षिण कनारा

इस वर्ष श्री गोपालकृष्ण जी रोगे अध्यक्ष, श्री वी-उमेश जी उपाध्यक्ष, श्री ज्ञानचन्द्र जी मोहनचन्द्र मन्त्री, श्री मंजा अम्पार उपमन्त्री और श्री कृष्ण जी कामत कोषाध्यक्ष रहे। साप्ताहिक अधिवेशन नियम पूर्वक होते रहे जिनमे मुख्यतया श्री स्वामी सदानन्द जी महाराज के प्रवचन होते रहे। कभी कभी बाहर से पधारे हुए स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी महाराज, प०सुधाकर जी और स्वामी सत्यानन्द जी जैसे सज्जनों के भी प्रवचन होते रहे। इस के सिवा स्वामी सदानन्द जी के आर्य समाज के सिद्धान्तों, समाज सुधार आदि २ विषयों पर मंगलूर के बाहर भी कभी कभी प्रवचन व भाषण हुआ करते थे। लगभग ढाई सौ रुपये का पं० सुधाकर जी कृत दयानन्द जीवन चरित्र (कन्नड़) सत्यार्थप्रकाश और अन्यान्य छोटी पुस्तिकाओं आदि आर्य-साहित्य का प्रचार भी हुआ।

इस वर्ष तीन ईसाइयों और एक मुसलमान की शुद्धि हुई है। तीन अन्तर्जातीय विवाह हुए।

शिवरात्रि के अवसर पर श्री शि० हरिदास जी भट, प्रिंसिपल एम० जी० एम० कालेज की अध्यक्षता में ऋषि बोधोत्सव धूम धाम से मनाया गया। उस मौके पर श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने ऋषि बोधोत्सव और शिवरात्रि की महत्ता पर भाषण दिया और पं० पी० के० नारायण जी ने महर्षि के समाज सुधारों, धार्मिक सुधारों और राष्ट्र निर्माण के कार्यों पर जोरदार भाषण दिया।

अध्यक्ष महोदय ने महर्षि दयानन्द जी और आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए ऋषि के सामाजिक और राष्ट्र निर्माण कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तन, मन व धन से सहायता करने के लिए जनता से प्रार्थना की।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम के नाम से एक अनाथालय चल रहा है। इस वर्ष ७० बालिकाओं और ६७ बालकों का पालन पोषण और प्रशिक्षण हुआ। प्रातः और सायं दोनों समय संध्या और अग्निहोत्र होते हैं। धार्मिक शिक्षा देकर, महर्षि दयानन्द और समाज के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाता है।

आश्रम के अध्यक्ष डा० के बि० शेट्टी हैं जो दक्षिण कन्नड जिले के माने हुए व्यक्ति हैं और जिला कांग्रेस के प्रेसिडेंट भी हैं। उपाध्यक्ष श्री जयन्तीलाल जी खेत्सी हैं जो शहर के बड़े व्यापारी हैं। कोषाध्यक्ष श्री एम० वेंकटराय जी कामत हैं जो गवर्नमेंट प्लीडर हैं और वे भी शहर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं।

आश्रम को केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड (Central Social Welfare Board) से

१०,००० रु० और राज्य सरकार से १६,२२२ रुपये अनुदान (Grant) के रूप में सहायता मिली।

—यह ज्ञात हो मंगलूर ईसाइयों का केन्द्र है जहां पर उनके बड़े बड़े कालेज, हाईस्कूल और कारखाने हैं जिनकी सहायता से गरीब हिन्दू और उनके बच्चों को धन, उद्योग और प्रतिष्ठा का प्रलोभन देकर ईसाई बनाया जाता है।

हिन्दू लोग दिल खोलकर पैसा ही नहीं देते अन्य रूप से भी आश्रम को सहायता पहुंचाते रहते हैं। यह संस्था ईसाइयों की आंखों में चुभती है। इस संस्था से निकले हुए कई बालक और बालिकाएं स्कूलों मे अध्यापक है और कई सरकारी और गैर सरकारी कम्पनियों में नौकर है।

आजकल कई मैट्रिक, में एक कालेज में, एक पी० यू० सी० में और एक इंजिनियरिंग कालेज में शिक्षा पा रहा है।

कारकल (दक्षिण कन्नड़ जिला)

कार्कल आर्य समाज का कार्य अत्यन्त सौम्य-रीति से होता है। साप्ताहिक सत्संग इत्यादि नियम पूर्वक हो रहा है। समाज के पुस्तकालय में अनेक सज्जन देवियां तथा नवयुवक, वैदिक साहित्य को प्रेम से पढ़कर लाभ उठा रहे हैं। मन्त्री जी ने अवकाश पर आस-पास ग्रामों में भ्रमण करके वैदिक धर्म का प्रचार किया और एक सौ से अधिक निम्न पुस्तकों का वितरण किया। महर्षि जीवन चरित्र, १४ प्रति कर्नाटक सत्यार्थ प्रकाश,४ प्रति आर्यसमाज लक्ष्य मन्तव्य, ७ प्रति वैदिक यज्ञमाला, १० वैदिक सन्ध्या, ४ वैदिक विवाह विधि, ७ वाल्मीकि रामायण १२ और अनेक हिन्दी इंग्लिश वैदिक ट्रैक्ट।

महर्षि के २५ केलेंडर तिथि दर्शक खरीद कर यहां के आर्य प्रेमियों में वितरण किये गये।

सार्वदेशिक सभा की सम्पत्ति

सार्वदेशिक भवन

यह सभा का तिमंजला अपना भवन है जो परेड मैदान के सामने एस्प्लेनेड रोड पर स्थित है। इस भवन को श्रीमती जानकी देवी ने अपने स्व० पति श्रीयुत ला० ज्योतिप्रसाद जी खिलौने वाले की पुण्य स्मृति में सभा को दान किया था। यह भवन १७१) मासिक किराए पर चढ़ा हुआ है। इस भवन की रजिस्ट्री सभा के नाम मे १६-२-१९१५ को हुई थी। सभा के निजी उपयोग के लिए भवन को किराएदार से खाली कराने के लिए कानूनी कार्यवाही चालू है। सभा ने भवन को खाली कराके उसमें स्व० ज्योति प्रसाद जी की स्मृति में एक विद्यालय पुनः चालू करने का निश्चय किया हुआ है।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन

इस भवन के नीचे की दो दुकानें ६७)७४ मासिक किराए पर तथा दूसरी मंजिल का एक कमरा (बलिदान वाले कमरे को छोड़कर) तथा कालोनेड का एक भाग २५०) मासिक किराए पर रहा। किराये से ४१७२)८८ की आय हुई और कारपोरेशन के टैक्स पर ६६६)६४ तथा मरम्मत आदि पर १३३६)६६ व्यय हुआ। इसके अतिरिक्त ५७)१४ बिजली व पानी पर व्यय हुआ। कुल २३६३)७४ व्यय हुआ।

सभा ने बलिदान वाले कमरे को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चित्रों आदि से अलंकृत करके उसमें उनके ग्रन्थ, वस्त्रादि रखकर संग्रहालय के रूप में प्रयुक्त करने का निश्चय किया है। अपने प्रकाशन गृह को भी इस भवन में स्थापित करके उसे सुदृढ़ एवं विस्तृत का विचार है।

महर्षि दयानन्द भवन

यह भवन सभा ने ४५८४०८) ४४ नए पैसे में क्रय किया। ४३६०००) भवन का क्रय मूल्य था और १५२८३) ५० नए पैसे भवन की रजिष्ट्री पर तथा ७१२४,६४ अन्य व्यय हुआ। रजिष्ट्री १-६-५८ को हुई यह भवन रामलीला मैदान के सम्मुख आसफ अली रोड पर स्थित है। इसी भवन में सबसे ऊपर की मंजिल पर इस समय सभा का कार्यालय है। शेष भाग इस प्रकार किराए पर चढ़ा हुआ है—

१ बेसमेट (तहखाना) डनलप रबर कं० ८७५ मासिक
२. ग्रान्ड फ्लोर आधा भाग ओरियटल लागमेन्स कम्पनी, पुस्तक विक्रेता १६००) ,,
३. ग्राउन्ड फ्लोर आधा भाग बी० धर्मसिंह एण्ड कम्पनी १४००) ,,
४ पहली मंजिल लिपटन १२५०) ,,
प्र लि. (इण्डिया) कम्पनी ५१२५)

मकान मरम्मत पर ५१२)३० एवं कारपोरेशन के टैक्स तथा इम्प्रूवमेन्ट के लीज इत्यादि पर ६७६८)६२, कुल १०२८०)६२ कुल व्यय।

श्रद्धानन्द नगरी

श्रद्धानन्द नगरी आर्य नगर (पहाड़ गंज) दिल्ली मे इस सभा के अधीनस्थ अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा निर्मित २ भवन हैं (पाठशाला तथा आर्यसमाज मन्दिर)। इन दोनों की लागत ६६६३) है। इन भवनों की सुरक्षा तथा इन पर सार्वदेशिक सभा का स्वत्व बनाये रखने के लिए अ० भा० श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ओर से अदालतों मे सभा के स्वत्व को चुनौती देने वालों के विरुद्ध अभियोग चल रहे हैं जिन के लिए सभा ने दलितोद्धार सभा को १०००) का अनुदान देना स्वीकार किया था और १०००) उन्हें दिया जा चुका है।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

इस आश्रम की भूमि तथा उस पर बने हुए मकानों की लागत लगभग १५ हजार रुपया है और यह सभा की सम्पत्ति है। यह आश्रम प्रबन्ध के लिए वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अधीन किया हुआ है। इस आश्रम में विशेष नियमों के अनुसार यात्रियों को निवास की सुविधा दी जाती है। आश्रम मे प्रति सप्ताह रविवार को हवन, भजन और उपदेश होते हैं।

यात्रियों को बर्तनों आदि की सुविधा दी जाती है। इस वर्ष इसका प्रबन्ध श्री स्वामी कल्याणानन्द जी ने किया। आय १०६१) पैसे व्यय२१८२) हुआ। इस वर्ष ६ महात्मा और ५ छात्र स्थायी रूप से रहे इस वर्ष सीताराम जी रुड़की निवासी ने २६००) की लागत मे चौबारा और रसोई घर, स्नानालय आदि बनवाए।

स्व० ला० बाबूराम शाहदरा स्मारक निधि

देहली शाहदरा के प्रसिद्ध और वयोवृद्ध आर्य स्व. ला बाबूराम जी ने सभा मन्त्री श्री लाला रामगोपाल जी तथा श्री बालमुकुन्द जी आहूजा की प्रेरणा पर एक वसीयत के द्वारा जो दान किया था उसमें से इस सभा को ४५ सहस्र रुपया नक्द, १ मकान लगभग ४000) का तथा १ प्लाट २00 वर्ग गज का प्राप्त होना था। न्यायालय से प्रोवेट प्राप्त करके ट्रस्टियों को दे दिया गया। अब तक सभा को ३७८७२)२३ नकद प्राप्त हो चुका है। शाहदरा के मकान का ७।।।) मासिक किराया सभा को प्राप्त हो रहा है। इस मकान का ४०००) में सौदा हो गया है।

जब श्री स्व. ला जी को इन दोनों महानुभावों

द्वारा प्रेरणा की गईथी तो यह आश्वासन दिया गया था कि उनके दान से शाहदरा में एक दातव्य औषधालय खोला जायेगा। प्रसन्नता है, इस सभा की २६-३-६४ की अन्तरंग के निश्चयानुसार ३१-५-६४ को नगर आर्यसमाज शाहदरा में बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक धर्मार्थ औषधालय खोल दिया गया। औषधालय का उद्घाटन सभा कोषाध्यक्ष श्रीयुत ला० बालमुकन्द जी आहूजा द्वारा हुआ। उद्घाटन समारोह भारी जनसमूह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, जिसमें देहली और शाहदरा के अनेक प्रतिष्ठित और गण्यमान्य महानुभाव सम्मिलित हुए जिनमें श्री के० नरेन्द्र, सम्पादक वीरअर्जुन व प्रताप, श्री बी.पी. जोशी ऐडवोकेट, सभा मन्त्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री ला० गोविन्दराम जी, श्री ला० काशीनाथ जी, श्री हरिदास जी आर्य प्रधान नगर आर्य-समाज के नाम उल्लेखनीय हैं।

औषधालय के इंचार्ज वैद्य श्री परमसुख पाण्डेय जी हैं। इस वर्ष ७७५० रोगियों की चिकित्सा हुई। औषधालय के संचालन में नगर आर्य समाज के अधिकारियों विशेषतः श्रीयुत ला० काशीनाथ जी का सभा को मूल्यवान् सहयोग प्राप्त रहा। आशा है इस सहयोग के फल स्वरूप औषधालय बहुत उन्नति करेगा और इसके व्यय की पूर्ति स्थानीय दान और चन्दे से होती रहेगी।

श्री मूलचन्द बजरंगलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान) स्मारक निधि

स्व० श्री पं० मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल में ५०००) की राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्त निधि के नाम से स्थिरनिधि में जमा है जिसके ब्याज से महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ तथा अन्यान्य आर्य साहित्य प्रकाशित हुआ करेगा। इस वर्ष इस निधि में १५०) ब्याज के जमा किए गए। इस समय तक राशि का ब्याज ७५०) हो गया है।

थरियालाल जी का दान

श्रीयुत थरियालाल जी जानकीगंज लशकर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार की राशि २६-१-६० को सभा को दान में दी थी।

श्रीयुत ला० जगन्नाथ जी का दान

श्रीयुत ला० जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी ५ सहस्र की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा के नाम दान की हुई है जिसमें से दानी की इच्छानुसार २ सहस्र रुपया श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ को दिया जायगा। इस वर्ष श्रीयुत लाला जी के निधन के पश्चात् इस पालिसी के धन की प्राप्ति के लिए पोस्ट आफिस को लिखा गया। पोस्ट आफिस ने मूल और ब्याज का हिसाब तैयार करके ७६५३) प्राप्तव्य की सूचना सभा को दे दी है। आगामी वर्ष यह राशि प्राप्त हो जायगी!

चन्द्रभानु वेद मित्र स्मारक स्थिर निधि

यह निधि श्रीयुत स्व० चन्द्रभानु जी रईस तीतरों (सहारनपुर) निवासी की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्रीयुत म० वेदमित्रजी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छा-नुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है। अब तक इस निधि से २० पुस्तकें छप चुकी हैं और कई पुरानी पुस्तकों के नए संस्करण छप चुके हैं।

इस वर्ष इस निधि के ब्याज तथा आर्य-समाजों से प्राप्त सहायता के धन से मुख्यतः नेफा और लद्दाख में सीमाओं की रक्षा कार्य में

संलग्न भारतीय सैनिकों में वितरण के लिए श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की सुप्रसिद्ध कृति कर्त्तव्य दर्पण, पुस्तक की १५ सहस्र प्रतियां छपवाई गईं। आवश्यकता और सुविधानुसार यह पुस्तक सैनिक छावनियों में भेजी जा रही है। जिन समाजों ने इस कार्य के लिए सभा को आर्थिक सहायता प्रदान की है सभा उन सबको धन्यवाद देती है।

इस वर्ष ५०० प्रतियां सैनिकों मे वितरण के लिए भेजी गईं।

दक्षिण अफ्रीका वेद प्रचार सीरीज

२७-८-५० की अन्तरंग के निश्चयानुसार यह निधि श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के १३३५) के दान से स्थापित हुई थी जिसमें वर्ष के अन्त पर ७६४) ६४ शेष थे यह धन उन्हें दक्षिण अफ्रीका में वहां के आर्य बन्धुओं की ओर से निजी व्यय के लिए भेंट किया गया था। इस निधि के धन से अबतक 'सनातन धर्म और आर्य समाज', 'लाइफ आफटर डेथ' तथा 'एलीमेंटरी टीचिंग्स आफ हिन्दूइज्म' पुस्तकें छप चुकी हैं। यह निधि अन्तरंग के निश्चयानुसार अन्य निधियों के साथ महानिधि में सम्मिलित की गई।

दयानन्द दलितोद्धार निधि

यह निधि ३०००) की है जो स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज द्वारा एकत्र धन से निर्मित हुई थी। इस निधि के ब्याज से मुख्यत: दलित कहे जाने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है। अब तक अनेक छात्रों को इससे छात्रवृत्तियां दी जाती रही हैं। ब्याज की आय ९०) हुई। सहायता व छात्रवृत्ति पर १५५)७५ व्यय हुआ।

श्रीयुत अर्जुनलाल जी आचार्य का दान

श्रीयुत स्व० अर्जुनलालजी आचार्य रिटायर्ड रेल्वे गार्ड ने अपना मकान जो सदर बाजार नीमच छावनी में स्थित है, जिसका म्यूनिसिपल नम्बर १०३६ तथा मूल्य लगभग १० हजार रु० है आर्य समाज नीमच छावनी के उपयोग के लिए सार्वदेशिक सभा को दान किया हुआ है। इस मकान का उपयोग आर्य समाज नीमच छावनी करता है।

गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट

इस सभा के भूतपूर्व प्रधान श्रीयुत पं० गंगा प्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार रुपए के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की हुई है जिसका ब्याज दानी महोदय की अनुमति से आर्यसमाज टिहरी (गढ़वाल) के कार्यों मे व्यय होता है।

भवानीलाल गज्जूलाल शर्मा स्थिर निधियां

विश्वकर्मा कुलोत्पन्ना स्व० श्रीमती तिज्जो देवी भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्य स्मृति में श्री स्व० भवानीलाल शर्मा कानपुर अमरावती विदर्भ निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ ५ हजार रुपए की स्थिर निधि स्थापित की हुई है जिसके वार्षिक ब्याज में से आधा सार्वदेशिक पत्र को दिया जाता है शेष आधा ब्याज मूल राशि में जमा कर दिया जाता है। इस समय ब्याज के ६००) जमा हैं।

श्री स्व० शर्मा जी ने ५००० के दान से एक दूसरी निधि स्थापित की थी जिससे सत्यार्थ प्रकाश छपा करेगा। इस निधि से सत्यार्थ प्रकाश का एक अच्छा संस्करण छप चुका है।

देवव्रत धर्म्मेन्दु पुस्तक प्रचारक निधि

दिल्ली निवासी श्रीयुत पं० देवव्रत धर्मेन्दु जी द्वारा प्रदत्त २०००) के दान से गत वर्ष यह निधि स्थापित हुई थी जिससे उनकी 'महर्षि वचनामृत' "वैदिकसूक्ति सुधा" और 'वैदिक

उपदेश' नामक तीन पुस्तकें जो उन्होंने आर्य कुमारों के लाभार्थ लिखी थीं और छपवाई थीं सदैव छपती रहेंगी। सभा की १२-१-६३ की अन्तरंग ने यह योजना स्वीकृत की। गत वर्ष ये तीनों पुस्तकें छपीं।

स्व० श्री किशोरीलाल पुरी की वसीयत

इस वसीयत से सभा को नकद और विविध कम्पनियों एवं संस्थानों के ५२८३)६१ के शेयर्स प्राप्त होते हैं जिनका डिस्ट्रिक्ट जज देहली की अदालत से प्रोबेट मिल चुका है। इस वर्ष निम्न प्रकार नकद मिला और सभा के हक में शेयर्स ट्रांस्फर हुए:—

१—मोहिनी शुगर मिल्स कलत्ता १000) के शेयर्स

२—कपूर पेपर मिल्स लखनऊ १000) के शेयर्स

३—यूनाइटेट कमर्शियल बैंक देहली ६१७)४ नकद

इस वर्ष निम्न प्रकार कैश प्राप्त हुआ और शेयर्स ट्रांसफर हुए —

७७१)२४ पंजाब नेशनल बैंक लि०, करौलबाग, नई दिल्ली

७५0) शेयर्स हिन्दुस्तान कमर्शल बैंक लि० कानपुर

१५0) शेयर्स बालकृन इन्श्योरेन्स कं0 बम्बई

एक वसीयत

एक सज्जन ने ४000) की अपनी जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान में दी है। ब्याज से आर्य गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल नई दिल्ली की ९, १० और ११ वीं श्रेणियों की उन छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाया करेगी जो धर्म शिक्षा आदि विषयों में सर्व प्रथम रहा करेंगी।

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्रीयुत डा0 सूर्यदेव जी शर्मा एम. ए., डी. लिट० अजमेर ने सार्वदेशिक पत्र की सहायतार्थ ४000) के दान से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि के नाम से गत वर्ष एक स्थिर निधि कायम की। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने, अपनी २३-४-६३ की अन्तरंग बैठक में इस दान तथा इसकी शर्तों को स्वीकार कर लिया। शर्तें इस प्रकार हैं—

१—यह निधि ४000) की डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि के नाम से रहेगी।

२—इसका मूलधन ४०००) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में जमा रहेगा और इसकी व्यवस्था तथा ब्याज का उपयोग सभा ही करेगी।

३—इस धन के ब्याज से सार्वदेशिक पत्र सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों तथा वाचनालयों आदि को रियायती मूल्य पर दिया जाया करेगा। इन सस्थाओं आदि का निर्णय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा होगा।

४—वर्ष में २ बार प्रतिवर्ष (कार्तिक तथा चैत्रमास) ऋषि निर्वाण तथा आर्य समाज स्थापना के उपलक्ष्य में इस निधि की सूचना सार्वदेशिकपत्रमें प्रमुख स्थानपर डा०सूर्यदेवशर्मा स्थिर निधि के हैडिंग से प्रकाशित हुआ करेगी।

५—सम्मानार्थ सार्वदेशिक पत्र सदा श्री डा० सूर्यदेव जी के पास भेजा जाता रहेगा।

६—प्रतिवर्ष सभा की बैलेन्स शीट में इस स्थिर निधि का उल्लेख होना आवश्यक होगा। प्रति वर्ष इसके ब्याज का हिसाब तथा जिन संस्थाओं को रियायती मूल्य पर सार्वदेशिक दिया जावेगा उनकी सूची श्री डा० जी के पास सूचनार्थ भेजी जाया करेगी।

७—यदि कभी (ईश्वर न करे) सार्वदेशिक पत्र का प्रकाशन बन्द हो जाय तो स्थिर निधि

के ब्याज का उपयोग सार्वदेशिक सभा द्वारा वैदिक साहित्य प्रकाशन में होगा।

जोधपुर की सम्पत्ति

जोधपुर में निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है:—

१—५६५५ वर्ग गज भूमि सर प्रताप हाई स्कूल के सामने श्री रणछोड़ मन्दिर के पास।
२—आर्य श्मशान भूमि २७१२ वर्ग गज।
३—गुरुकुल मारवाड़ मण्डोर ७ मकान. कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।
४—गोशाला मारवाड़ मंडोर—१ कोठरी (चारे की), ४ अन्य कोठरियां, २ बरांडे भूमि ३० हजार वर्ग गज।

रणछोड़ मन्दिर के पास जो प्लाट था उसे सरकार ने हस्तगत करके उसके बदले में ५ प्लाट अन्यत्र दे दिए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने सुझाव दिया है कि यह सम्पत्ति उक्त सभा के अधिकार में दे दी जाय जिससे इसकी सुरक्षा और सुप्रबंध की वह समुचित व्यवस्थाकर सके। अंतरंग सभा दिनांक १३-१०-६३ के निश्चयानुसार इस सुझाव के कानूनी औचित्य के निरूपण के लिए यह विषय सभा के कानूनी परामर्शदाता श्रीयुत सोमनाथ जी मरवाहा के सुपुर्द है।

पूर्वी बंगाल के विस्थापितों की सेवा सहायता का कार्य

पूर्वी बंगाल (पाकिस्तान) में १९६४ के जनवरी और फरवरी के महीनों में विशाल पैमाने पर सुव्यवस्थित ढंग से हिन्दुओं एवं अन्य अल्प संख्यकों के सफाए का और उन्हें पूर्वी-बंगाल से खदेड़ देने का राजनैतिक चक्र चला जिसके फलस्वरूप हत्याओं. लूटमार, अपहरण,बलात्कार, धर्म्म परिवर्तन, सम्पत्ति विनाश और पलायन के जो बीभत्स दृश्य सामने आए उनका सम्यक् वर्णन कठिन है।

सभा मंत्री ने आर्य समाज की ओर से पीड़ितों की सेवा, सहायता और रक्षा का अभियान प्रारम्भ करने की घोषणा की और १ मार्च को होली का फाग न मनाने की आर्य हिन्दू जनता से अपील की। अधिकांश हिन्दू जनता ने इस अपील का समुचित आदर करके होली का फाग न खेला और फाग पर व्यय होने वाले धन को बचाकर पूर्वी बंगाल के पीड़ितों की सहायतार्थ व्यय करना अपना कर्त्तव्य समझा।

सभा मंत्री तुरन्त स्थिति का निरीक्षण और सहायता कार्य को व्यवस्थित ढंग से चलाने का प्रबन्ध करने कलकत्ता चले गए। उन्होंने उन सभी पश्चिमी बंगाल के सीमावर्त्ती स्थानों का निरीक्षण किया जहां शरणार्थी बहु संख्या में ट्रेनों द्वारा पहुँचाए जा रहे थे। कलकत्ता में कार्य की तात्कालिक व्यवस्था करके वे देहली लौट आए। प्रतिदिन हजारों की संख्या में हिन्दुओं के निष्क्रमण को देखकर उन्हें यह समझते देर न लगी कि पूर्वी पाकिस्तान के हिन्दू राजनैतिक षड़यन्त्र के शिकार बनाए जा रहे हैं। जब उन्होंने शरणार्थियों की दयनीय दशा देखी और हिन्दुओं पर हुए घोर अत्याचारों की स्वयं शरणार्थियों के मुंह से कष्ट कहानी सुनी तो उन्हें यह निश्चय हो गया कि पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दू रहकर जानमाल और इज्जत की सुरक्षा पूर्वक रहना दूभर है। उन्होंने ये तथ्य आर्य हिन्दू जनता के समक्ष रखकर सहायता कार्य को विशाल पैमाने पर सफलता पूर्वक चलाने के लिए धन और वस्त्रादि से सहायता करने की उन्हें प्रेरणा की। अनेक प्रेस वक्तव्यों, सम्मेलनों, परिपत्रों और सैकड़ों स्थानों पर विशाल सार्वजनिक सभाओं द्वारा जन जागृति उत्पन्न करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया। बात की बात में आबाल वृद्ध आर्य

हिन्दू नर नारियों ने रात-दिन एक करके अर्थ, वस्त्र तथा अन्य आवश्यक उपकरणों की झड़ी सी लगादी।

आर्य समाज के पुराने सेनानी स्व० म० कृष्ण जी के सुयोग्य पुत्र श्रीयुत के० नरेन्द्र जी ने भी अपने दैनिक पत्र प्रताप तथा वीर अर्जुन में पूर्वी बंगाल पीड़ित सहायता कोष खोलकर हमारे बोझ को हल्का करने का स्तुत्य कार्य किया। उन्होंने इस कोष में प्राप्त ५३५००) में से ५१०००) सभा मे सीधे, २५००) आ० स० कलकत्ता द्वारा सभा के कोष में भिजवाया। हमारे पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं जिनके द्वारा हम उनके प्रति आभार प्रकट कर सकें। उनका यह सहयोग कभी भुलाया न जा सकेगा। सभा उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती है।

सभा के कोष मे २८ फरवरी ६५ तक १२६६७६)६३ प्राप्त होकर जमा हुआ जिसमें वीरअर्जुन व प्रताप कोष का ५१०००) भी सम्मिलित है।

कार्य

पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज बैंकोक और सिंगापुर की यात्रा से लौटकर कार्य संचालन और निरीक्षण के लिए कलकत्ता बैठ गए और सार्वदेशिक सभा की ओर से कार्यारम्भ करा दिया। इसी बीच में १३-३-६४ को उन्होंने कलकत्ता के विभिन्न आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के सदस्यों की आर्य समाज सहायता समिति नाम की एक समिति संगठित करा दी जिसका कार्यालय आर्य समाज मन्दिर १६ कार्नवालिस स्ट्रीट (विधान सरणी) कलकत्तामें रखा गया। समितिकी प्रधाना श्रीमती कौशल्या जी हांडा, मन्त्री श्रीयुत हरिश्चन्द्र जी वर्म्मा, कोषाध्यक्ष श्री रघुवीर प्रसाद जी गुप्त नियुक्त हुए। समिति के शेष सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) श्री रघुनन्दन लाल जी आर्य
(२) ,, हंसराज जी हांडा
(३) ,, जंगीलाल जी आर्य
(४) ,, सीताराम जी आर्य
(५) ,, कृष्णलाल जी पोद्दार
(६) ,, जनक लाल जी
(७) ,, सुखदेव जी शर्म्मा
(८) ,, दीनबन्धु जी शास्त्री
(९) ,, कलियाराम जी गुप्त
(१०) ,, रामनगीना जी पांडेय
(११) ,, मती विद्यावती जी सबरवाल

श्री पं० सदाशिव जी कार्यालय के इंचाज नियुक्त हुए। पुनर्वास विभाग के अधिकारियों से परामर्श करके उनकी अनुमति से हसनाबाद, (२४ परगना), गेदे (नदिया) तथा हावड़ा रेल्वे स्टेशन पर विस्थापितों की सहायतार्थ ३ सेवा केन्द्र खोले गए। हसनाबाद कलकत्ता से ६० मील की दूरी पर है। गेदे पश्चिमी बंगाल का पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ पहला रेल्वे स्टेशन है।

१४ अप्रैल १६६४ को सायंकाल के समय आर्य समाज सहायता समिति के अधिकारियों तथा सदस्यों मे से श्रीमती कौशल्या देवी जी हांडा, श्री हरिश्चन्द्रजी वर्म्मा, श्री म० रघुनन्दन-लाल जी, हंसराज जी हांडा, सुखदेव जी शर्म्मा तथा कर्मचारी वृन्द ने दण्डकारण्य की ओर जाने वाले शरणार्थी परिवारों मे २५० के लगभग बाल्टियां बांटीं। बाल्टियां बांटे जाने का अपना महत्व था। पाकिस्तानी दरिंदों ने हिन्दुओं का सभी कुछ लूट लिया था यहां तक कि पानी पीने के लिए भी उनके पास कोई पात्र तक रह नहीं गया था। बाद में भिन्न २ तारीखों में श्रीमती कौशल्यादेवी जी अन्य देवियों तथा स्वयं सेवकों की सहायता से हावड़ा स्टेशन पर बाल्टियां आदि बंटती रहीं। सार्वदेशिक सभा

की प्रेरणा पर बहिन विद्योत्तमा यति जी भी सहायता कार्य में सहयोग देने के लिए कुछ समय के लिए कलकत्ता पहुंच गई। उन्होंने भी कई स्थानों का निरीक्षण किया तथा दानियों से कई प्रकार की सहायता सामग्री संग्रह करके समिति को दी।

हसनाबाद

हसनाबाद रेल्वे स्टेशन पर बाल्टियां, वस्त्र और साबुन शरणार्थियों में बांटने का काम शुरु किया गया। कलकत्ता नगर से ७५ किलोमीटर की दूरी पर सरकारी ट्रक द्वारा सहायता सामग्री ले जाकर कड़कती धूप तथा वर्षा में भी सहायता कार्य चालू रहा। इस कार्य में सर्वश्री रघुनन्दन-लाल जी, पूनमचन्द आर्य, पं० विष्णुदत्त जी, रामगोपाल जी, ब्र० आत्मानन्द जी, अवतार-सिंह जी तथा कलकत्ता कन्या विद्यालय व आर्य विद्यालयके कर्मचारी भी समय २ पर हसनाबाद जाकर सहायता कार्य में हाथ बटाते रहे।

गेदे

१-६-६४ को बड़े समारोह से आर्य समाज सहायता समिति ने श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की उपस्थिति में इस केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान, श्री जगदीश चन्द्र जी हिमकर, श्री म० रघुनन्दन लाल जी, श्री हरिश्चन्द्र जी वर्मा, श्री रघुवीर प्रसाद जी गुप्त, श्री पूनमचन्द जी आर्य, श्री राजेन्द्रसिंह जी मलिक, सार्वदेशिक सभा द्वारा सेवा तथा सहायता कार्य में सहयोग देने के लिए भेजे गये। ब्र० जयदेव जी आदि तथा अन्य गण्य मान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे। इन सब की उपस्थिति में पूर्वी पाक से आई हुई ट्रेनके शरणार्थियों में चिउड़ा-गुड़ आदि बांटने का काम शुरू किया गया। बाद में सार्वदेशिक सभा द्वारा भेजे गए ब्रह्मचारी गण तथा रवीन्द्र कुमार जी सहायता कार्य करते रहे। विद्यालय खुल जाने पर ब्रह्मचारी गण वापस चलेगए। बादमें सभा द्वारा भेजे हुए आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के भी कई वानप्रस्थी गेदे केन्द्र में रहकर सहायता कार्य करते रहे। श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती की अनुमति से श्री बटकृष्ण वर्म्मन द्वारा भेजे गए ३ बंगला भाषा-भाषी स्वयं सेवक सहायता कार्य करते रहे। यह समस्त कार्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की देखरेख में सहायता समिति द्वारा हुआ। स्वामी जी महाराज ने दण्डकारण्य स्थित कई शरणार्थी केन्द्रों का निरीक्षण करके सार्वदेशिक सभा द्वारा वहां भी सहायता कार्य की व्यवस्था करने की योजना बनाई।

सार्वदेशिक सभा में एकत्र ६७४६ वस्त्र कलकत्ता भेजे गए। लगभग १६० नए और पुराने वस्त्र विविध स्थानों से भेजे गए। कुल ३२००० व्यक्तियों को वस्त्र, बालटियां, गुड़, चिउड़ा आदि बांटे गए।

आर्य सहायता समिति कलकत्ता द्वारा ३३४७०)१२ व्यय हुआ। समिति को कुल आय ३५१६२)७६ पैसे की हुई जिसमें से २६०००) सार्वदेशिक सभा से भेजा गया था।

यह सभा श्रीपूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की अत्यन्त कृतज्ञ है जिन्होंने वृद्धावस्था में स्वास्थ्य ठीक न रहने पर भी अपनी निरन्तर देख-रेख में सहायता कार्य कराया और सभा कार्यालय को इस दिशामें निश्चिन्त रखा। आर्य समाज सहायता समिति कलकत्ता के अधिकारी, सदस्यगण और अन्य सभी आर्य नर नारी धन्य वादके पात्र हैं जिन्होंने इस कार्य के संचालन में योग दिया और सभा के हाथ दृढ़ किए।

हस्तिनापुर केन्द्र

राज्य ने १००० शरणार्थी परिवारों के बसाने

की योजना बनाकर शरणार्थियों को गत जुलाई में हस्तिनापुर भेजना प्रारम्भ किया। सितम्बर के अन्त में वहां १०० परिवार पहुँच गए थे जिनमें लगभग ३००० व्यक्ति थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ द्वारा वहां सहायता कार्य का आयोजन किया गया।

वहां सबसे बड़ी आवश्यकता लालटेनों की थी। सभा ने इनके वितरण का विशेष रूप से प्रबन्ध किया। लगभग ७०० लालटेनें क्रय करके बांटी गईं।

इसके अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य समिति ने वस्त्र, बाल्टियां, बर्तन और जूते भी निम्न प्रकार बांटे :—

वस्त्र ३६५२ बाल्टियां ५०, बर्तन १४०, जूते २६ जोड़े। इस सब पर निम्न प्रकार ११२००) का व्यय हुआ :—

(१) लालटेन २८००), (२)वस्त्र ७३५०),(३) बर्तन १०००), (४)जूते ५०).कुल ११२००)। सार्वदेशिक सभा से १८८५ नए और पुराने वस्त्र भेजे गए।

सभा मन्त्री श्री लाला रामगोपाल जी अपनी उपस्थिति में इस केन्द्र का कार्य आरम्भ करा आए थे। श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज भी २ बार कार्य का निरीक्षण कर आए थे। केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ के प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी मिश्र, समिति के भूतपूर्व प्रधान श्री मुसद्दीलाल जी, श्रीमती शकुन्तला जी गोयल, समिति के मंत्री श्री इन्द्रराज जी, श्री बलजीतसिंह जी शास्त्री, जिला सूचना अधिकारी मेरठ, श्रीमती मोहनीदेवी जी, श्रीयुत कान्तिप्रकाश जी आर्य मंत्री आर्य समाज मेरठ शहर आदि २ आर्य-बन्धुओं और बहिनों ने बड़े परिश्रम और प्रशंसनीय ढंग से कार्य किया। सभा इन सबको धन्यवाद देती है।

आर्य समाज के इस सहायता कार्य से शरणार्थी बन्धु और राज्याधिकारी बड़े प्रभावित हुए।

नागार्जुन सागर

नागार्जुन सागर (आन्ध्र) स्थित शरणार्थी कैम्प में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के उत्साही प्रधान श्रीयुत पं. नरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक सभा की देख-रेख में आर्य प्रतिनिधिसभा मध्यदक्षिण की ओरसे अगस्त६४ में सहायता कार्य प्रारम्भ किया। ५000, के नए वस्त्र क्रय करके वितरित किए। कैम्प के बच्चों के शिक्षण के लिए रात्रि पाठशाला की व्यवस्था की गई। हिन्दी बंगला की पुस्तकें फ्री दी गईं और एक वैतनिक अध्यापक इस कार्य पर लगाया गया। वहां यह कार्य निरन्तर हो रहा है।

वहां विस्थापितों के बच्चों को पढ़ाने के लिए एक ऐसे विद्यालय की आवश्यकता अनुभव हुई जिससे वे बच्चे वहां के स्थायी निवासियों के बालकों के साथ घुलमिल जायं। सार्वदेशिक सभा के आर्थिक सहयोग से यह कार्य शुरू हो गया है। सभा उपप्रधान श्री पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री ने इस समस्त कार्य का निरीक्षण किया और उसे सफल पाया।

इस केन्द्र पर जनवरी ६५ के अन्त तक ६३०५) का व्यय हुआ जिसमें ५०००) सार्वदेशिक सभा का और १३०५) आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण का अनुदान था। विद्यालय के संचालन के लिए सभा ने ६०००) का अनुदान भी दिया।

विस्थापित बच्चों का शिक्षण

विस्थापित बच्चों को अपने गुरुकुलों आदि में प्रविष्ट करके उनकी शिक्षा-दीक्षा का कार्य अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इस पर अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है। इस दिशा में सभा के प्रयत्न जारी हैं। ७ बच्चे

गुरुकुल काउरचण्डी (मिदनापुर प० बंगाल), में प्रविष्ट हो चुके हैं, जिनपर सभा को प्रति बालक ५०) मासिक देना होगा। ३ बच्चों की सहायतार्थ १५००) उक्त गुरुकुल को दिया भी जा चुका है। ४ बच्चों के लिए शीघ्र ही प्रतिमास सहायता भेजने का आयोजन हो रहा है। हस्तिनापुर कैम्प के कुछ बच्चों को प्रविष्ट कराने का आयोजन किया गया परन्तु उस कैम्प के भंग हो जाने के कारण यह कार्य सम्पन्न न होसका। सभा का यत्न अधिकाधिक बालकों को गुरुकुलादि में प्रविष्ट कराने का है। इस योजना की अभीष्ट सफलता के लिए लाखों रुपयों की आवश्यकता होगी जिसकी पूर्ति होने में सभा को कोई सन्देह नहीं है।

श्री रमेशचन्द्र वर्म्मा एडवोकेट पर से प्रतिबन्ध हटाया गया

मैनपुरी के श्री रमेशचन्द्र वर्म्मा एम.ए ऐल.ऐल. बी. ऐडवोकेट पर सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार पूर्वी बंगाल दिवस मनाने और उत्तेजक भाषण देने के अतथ्य अपराध पर १३ अप्रैल १९६४ को भारत सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत जिलाधीश ने यह प्रतिबन्ध लगा दिया था कि वे सरकारी लिखित आज्ञा लिए बिना मैनपुरी से बाहर न जायं। श्री रमेशचन्द्र बड़े उत्साही नवयुवक और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। वे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध लेखक एवं नेता स्व० श्री बाबू श्याम सुन्दरलाल जी ऐडवोकेट के सुपुत्र हैं। इस अनुचित प्रतिबन्ध से न केवल मैनपुरी नगर और जिले की ही आर्य हिन्दू जनता में वरन् समस्त हिन्दू समाज में असन्तोष एवं रोष व्याप्त होगया था। इस प्रतिबन्ध के विरोध में अनेक स्थानों पर सार्वजनिक सभाएं हुईं और प्रस्ताव पास करके उसको अविलम्ब उठा लेने की मांग की गई। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी ने मैनपुरी जाकर स्थिति का निरीक्षण किया। जिले भर का दौरा किया और २९ मई को सार्वजनिक रूपमें सरकार को चुनौती दी। साथ ही अविलम्ब प्रतिबन्ध न हटने की दशा में देश-व्यापी आन्दोलन करने की घोषणा भी कर दी। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से. उत्तर प्रदेश के गृहमन्त्री श्रीयुत हरगोविन्दसिंह जी को एक विशेष पत्र भी भेजा गया। प्रसन्नता है कि माननीय गृहमन्त्री महोदय ने इस प्रतिबन्ध के अनौचित्य को अनुभव करके उसे हटा दिया। इस प्रतिबन्ध के हटवाने में श्रीयुत पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० ने भी सराहनीय योग दिया।

नजफगढ़ (दिल्ली) में सहायता कार्य

दिल्ली की १५० आर्य समाजों ने आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में सितम्बर ६४ में बाढ़ पीड़ितों की सहायता कार्य का आयोजन किया। १३-९-६४ को दिल्ली के तत्कालीन चीफ कमिश्नर श्री धर्म्मवीर जी द्वारा सहायता शिविर का उद्घाटन हुआ। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने चीफ कमिश्नर महोदय का स्वागत करते हुए आर्य हिन्दू जनता से सहायता कार्य में भाग देने की अपील की। चीफ कमिश्नर महोदय ने आर्य समाज के इस अभियान की प्रशंसा की और उसकी सफलता की आशा व्यक्त की। श्री वी० पी० जोशी एडवोकेट दिल्ली, सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा तथा श्री ला० हंसराज ने भी स्वागत किया।

आर्य समाज के इस सहायता शिविर को ८ ग्राम सौंपे गए थे। ग्रामों के नाम नांगली, सवरावली, नवादा, केशोपुर, नांगलोई सैयद, तिलकपुर, कोटला तथा निलोटी हैं। पीड़ितों में अन्न, वस्त्र, और औषधियां वितरित की गईं। आर्य समाज करौलबाग और हनुमानरोड आदि

आदि प्रमुख समाजों ने सैकड़ों बोरे आटा एवं अन्य खाद्य सामग्री शिविर में पहुँचा दी थी।

सार्वदेशिक सभा ने १०००) नकद और ११६३ वस्त्र दिए।

श्री डा० ओ३म् प्रकाश, श्री ला० रामलाल ठेकेदार, सार्वदेशिक सभा के मुख्तारआम श्री मास्टर पोहकर मल, श्री विश्वनाथ सर्राफ तथा अनेक आर्य महिलाओं तथा कार्यकर्ताओं ने इस कार्य मेंमहत्वपूर्ण योग दिया।

विश्व ईसाई सम्मेलन

विश्व ईसाई सम्मेलन (इन्टरनेशनल यूकरिस्टिक कांग्रेस) का ३८वां अधिवेशन २८ नवम्बर ६४ से ६ दिसम्बर ६४ तक बम्बई में हुआ। जिस दिन इस अधिवेशन के किए जाने की घोषणा समाचार पत्रों में छपी उसी दिन से आर्य समाज इसके दुष्प्रभावों से भोली भाली जनता को सचेत करने और इसके दुष्प्रभावों से बचाने के कार्य में लग गया।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने अपनी ७-८-६४ की बैठक में जो बम्बई में हुई थी, इस सम्मेलन के माध्यम से ईसाइयों के आपत्तिजनक प्रचार और प्रसार और लाखों हिन्दुओं के ईसाई बन जाने का खतरा अनुभव करके इसे निष्क्रिय बनाने का आयोजन करने का निश्चय किया। इस अवसर पर साहित्य के वितरण और प्रचार की बृहत् योजना तैयार की गई।

इस सम्मेलन के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न करने वाले कई तथ्य थे जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं: —

१—भारत के रहने वाले भारतीय ईसाइयों को अन्य नागरिकों की भांति अपने सम्मेलन आदि करने का विधानतः पूर्ण अधिकार है परन्तु विदेशी मिशनरी आकर भारत में विशेष सम्मेलन करें और ऐसी परिस्थिति में जब कि नागालैण्ड और अन्य प्रदेशों एवं सीमाओं की भयंकर स्थिति सामने हो, तो इसका औचित्य विचारणीय हो जाता है।

२—बाहर से आने वाले विदेशी मिशनरियों और व्यक्तियों की भोजन-व्यवस्था में अनेक गायों का वध होगा और विदेशी शराब की व्यवस्था की जायगी यह बात भारतीय जनमानस और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचायगी।

३—पोप महोदय के आने पर कई लाख रुपयों की वस्तुएं भारत के गरीबों में बांटने की व्यवस्था की गई थी। यह तथ्य भारत की दीनता का उपहास है और धर्मपरिवर्तन केलिए प्रलोभन है।

४—इस से भारत में पूर्व से बढ़ी-चढ़ी पादरियों की अराष्ट्रिय प्रगतियों को प्रोत्साहन मिलने की आशंका है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में प्रचार की व्यवस्था की। सभा का शिष्ट मंडल प्रधान मंत्री श्रीयुत लालबहादुर जी शास्त्री से दिल्ली में २३-११-६४ को मिला और उनके समक्ष मुख्यतया निम्न बातें रखीं:—

१—यतः भारत धर्म्म निरपेक्ष राज्य है अतः इस सम्मेलन को उनका कोई भी सक्रिय सहयोग

न मिलना चाहिए।

२—भारत के राष्ट्रपति वा वे स्वयं राजकीय स्थिति मे पोप महोदय का स्वागत न करें।

३—इस अवसर पर ईसाइयों द्वारा गरीबों में बांटी जाने वाली वस्तुएं सरकार द्वारा बांटी जायं न कि ईसाई पादरियों के द्वारा।

इस भेंट का फल अच्छा रहा। गरीबों मे बांटी जाने वाली वस्तुएं ईसाई पादरियों द्वारा बटने न दी गई। यह शिष्ट मंडल सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी के नेतृत्व में गया था जिसमे श्री लाला रामगोपाल जी, डा० डी० राम जी, श्री प्रकाशवीरजी शास्त्री, श्री सोमनाथ मरवाहा स्वामी रामेश्वरानन्द जी तथा श्री वी० पी० जोशी सम्मिलित थे।

आवश्यक होने पर शास्त्रार्थ करने के लिए अनेक आर्य विद्वान् और महोपदेशक महानुभाव बम्बई पहुच गए थे। सार्वदेशिक सभा के आदेश पर आर्यसमाजों के द्वारा भेजे हुए उनके सुलझे हुए योग्य कार्यकर्ता भी साहित्य वितरण के लिए बम्बई जा पहुंचे थे।

सार्वदेशिक सभा की ओर से निम्न लिखित ट्रैक्ट लाखों की सख्या मे छपवाकर वितरण के लिए बम्बई भेजे गए और वे सभी वितरित कर दिए गए।

१—आय समाज ऐट० ए० ग्लान्स।

२—सम क्वेश्चन्स आन बाइबिल (श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी कृत)।

३—क्रिश्चियनिटी इन दी आइज आफ जवाहरलाल नेहरू।

श्री रामचन्द्र जी देहलवी कृत ट्रैक्ट ने ईसाई पादरियों मे बड़ी खलबली मचाई। उनमे से किसी को उन प्रश्नों का उत्तर सूझ न पड़ा।

इसके अतिरिक्त भारतीय संरक्षण समिति एवं आर्य धर्म्म सेवा संघ दिल्ली द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट बम्बई के महामान्य श्री गोस्वामी दीक्षित जी महाराज के ट्रैक्ट, तथा मसूर आश्रम गोरे गांव के श्री ब्र० दत्तमूर्ति जी द्वारा निर्मित साहित्य भी बहु संख्या मे बांटा गया।

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट देश और विदेश की समस्त समाजों के अतिरिक्त केन्द्रीय मन्त्री मंडल, राज्यों के मंत्री मंडलों यथा उत्तर प्रदेश, पंजाब महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार, गुजरात, बगाल उड़ीसा आदि २, मुख्य-न्यायाधीशों, विधान सभाओं के अध्यक्षों, मुख्य मुख्य समाचार पत्रों के सम्पादकों और विशिष्ट गण्यमान्य व्यक्तियों को सभा कार्यालय द्वारा पूर्व से ही भेज दिए गए थे। इन ट्रैक्टों की प्रशंसा मे अनेक पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त हुए। आर्य समाज ऐट ए ग्लान्स ट्रैक्ट विविध समाजों और संस्थाओं ने स्वयं हजारों की संख्या मे छापकर बांटा और यह क्रम जारी है। प्रसन्नता है इन ट्रैक्टों के प्रकाशन के लिए आर्य समाजों एवं आर्य नर-नारियों ने सभा की अपील पर पर्याप्त मात्रा में धन दिया। इन ट्रैक्टों की छपाई पर सभा का १२२१५)८३ व्यय हुआ तथा अन्य व्यय २०७९ २१ कुल व्यय १४२९५)४ हुआ। समाजों आदि से १३३०७)५० प्राप्त हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मंत्री श्री वेणीभाई आर्य सम्मेलन से कई दिन पूर्व प्रबन्ध के लिए बम्बई पहुँच गए थे। समस्त प्रबन्ध भारतीय संरक्षण समिति के अधीन था जो बम्बई के आर्य और हिन्दुओं से बनी स्थायी संस्था है। इसके प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान, उपप्रधान, उपमन्त्री, अन्तरंग सदस्यों और अनेक समाजों के सदस्यों, अधिकारियों, एवं अन्तरंग सदस्यों ने प्रबन्ध में हाथ बटाया।

सार्वदेशिक सभा से तथा विविध प्रान्तों से गए हुए आर्य जनों एवं आर्य विद्वानों के सहयोग

से बड़ी शान्ति और गौरव पूर्ण ढंग से सम्मेलन के अवसर पर आर्य समाज का प्रचार कार्य हुआ। बाहर से जो कार्यकर्ता गए थे उन्होंने तथा बम्बई नगर की आर्यसंस्थाओं के कार्यकर्ताओं एवं बम्बईनगर के आर्यों ने मिलकर पादरियों,बिशपों और विदेश से आए हुए प्रतिनिधियों को उनके निवास स्थानों पर जाकर साहित्य दिया। हजारों गैर ईसाइयों ने भी उस साहित्य को बड़ी उत्सुकता के साथ मांग कर पढ़ा

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभाकी प्रेरणा पर और अनुमति से समाजों द्वारा बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र, मध्य भारत, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, देहली, पंजाब आदि से सुयोग्य कार्यकर्त्ता बम्बई भेजे गए थे।

मध्य भारत से सर्व श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, राजस्थान से श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के छोटे भाई जियालाल जी जो ईसाई साहित्य के मर्मज्ञ हैं, पंजाब से नन्दलाल जी, देवराज जी, पं० मुरारीलाल जी शास्त्री, उत्तर प्रदेश से विश्वनाथ जी त्यागी, शास्त्रार्थ महारथी पं० ओ३म्प्रकाशजी खतौली(मुजफ्फरनगर), पं० रुचिराम जी आर्योपदेशक, आशानन्द जी भजनोपदेशक आदि २ महानुभाव बम्बई गए थे। चौपाटी के विशाल मैदान में प्रतिदिन सार्वजनिक भाषण होते थे। इसके अतिरिक्त बम्बई के आर्यसमाजों ने भी अपने प्रबन्ध में प्रचार कार्य कराया।

उपदेशक महानुभावों और कार्यकर्त्ताओं के ठहरने और भोजन की समुचित व्यवस्था सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी के साधनाश्रम विले पारले, आर्य समाज शान्ताकुंज, मांटुंगा, चेम्बूर और विशेष रूप से काकड़वाड़ी समाज में की गई थी।

ओवल के मैदान में सायंकाल ५ बजे से ईसाइयों का जल्सा होता था परन्तु दिन भर बम्बई के विभिन्न स्थानों पर ईसाइयों के जल्से होते थे। वहां भी अपना साहित्य बांटा जाता था। इसके अतिरिक्त ईसाई पादरी जहां २ ठहरे थे वहां-वहां भी साहित्य पहुँचाया गया। ३ जहाज समुद्र में खड़े थे उनमें भी साहित्य वितरित किया गया। भारतीय संरक्षण समिति के सुन्दर लिफाफों में अपना साहित्य दिया जाता था। भारतीय संरक्षण समिति ने ट्रैक्टों के वितरण के लिए टैक्सियों की सुव्यवस्था की थी।

जिन संस्थाओं आर्य विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं ने इस प्रचार में योग दिया सभा उन सबको धन्यवाद देती है।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती जी की प्रचार यात्राएं

विदेश की प्रचार यात्रा से लौटने के पश्चात् श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापितों की सेवा-सहायता के कार्य की देख-भाल में व्यस्त हो गए और कलकत्ता में बैठकर कार्य का संचालन कराते रहे। समय २ पर इस कार्य के प्रसंग में उन्हें बाहर भी जाना पड़ा।

इसी बीच में कलकत्ता, राउर केला, ब्रजराज नगर, चक्रधरपुर आदि में दुर्भाग्य पूर्ण हिन्दू मुस्लिम उपद्रव होगए जिनका कारण उन क्षेत्रोंसे गुजरने वाली ट्रेनों में भरे हुए हिन्दू विस्थापितों की दुर्दशा से भड़की हुई भावनाएं थीं। इन उपद्रवों में अनेक निरपराध आदिवासी कहे जाने वाले हिन्दू और आर्यकार्यकर्त्ता पकड़ कर जेल में बन्दकर दिएगए और उनपर झूठे मुकद्में चलाएगए। सार्वदेशिक सभा ने उन भाइयों को अन्याय से मुक्त कराने और उनके परिवारों की सहायता करने का कार्य हाथ में लिया। यहां से

आर्थिक सहायता और वस्त्रादि भेजे गए। सार्वदेशिक सभा ने श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम पी. के सहयोग से इस कार्य में पर्याप्त सफलता प्राप्त की। बहुसंख्यक व्यक्ति जेल से मुक्त हो गए है और उन पर से मुकदमे उठा लिए गए हैं।

श्री स्वामी ध्रुवानन्दजी सरस्वती ने अस्वस्थ रहते हुए भो उन क्षेत्रों का भ्रमण किया। इससे पूर्व वे लगातार मध्यप्रदेश के बिलासपुर भिलाई और जब्बलपुर के आर्य समाजों के उत्सवों मे सम्मिलित हुए। अस्वस्थ हो जाने के कारण विश्राम के लिए उन्हें जमशेदपुर रुक जाना पड़ा। कुछ स्वस्थ होते ही वे आदिवासी कहे जाने वाले क्षेत्रों के दौरे पर चल पडे।

वे पहले चक्रधरपुर गए। बाबा धर्मशाला में विशिष्ट २०व्यक्तियों को बुलाकर विचार विनिमय के पश्चात् निम्न लिखित निश्चय हुआ.—

१—वनवासी भाइयों के साथ सहानुभूति प्रकट की जाय।

२—स्थानीय आर्य समाज को जाग्रत और पुष्ट किया जाय।

३—आर्य समाज का उत्सव प्रभावोत्पादक प्रकार से किया जाय।

श्री स्वामीजी एक दिन केलिए वीर-मित्रापुर (उड़ीसा) गए। धर्मशाला में अनेक लोगों के साथ विचार-विमर्श हुआ। निष्कर्ष यह निकला कि मुसलमानों की झूठी शिकायतों पर निरपराध लोगों को जेल भेजा गया। उदाहरणार्थ ,एक वृद्धा पर यह आक्षेप लगाया गया कि उसने एक जहरीले पदार्थ को ऊपर से छिड़का जिससे मुसलमानों की मृत्यु हो सकती थी। इससे प्रकट है कि नितांत असत्य मन-घडन्त घटना के आधार पर प्रतिष्ठित आर्यों और हिन्दुओं के नाम लिखाए गए।

इसके पश्चात् स्वामी जी महाराज कुमार मुंडा गांव में गए। इस गांव के प्राय सभी पुरुष कई महीने से जेलों मे बन्द थे। घरों मे स्त्रियां और बच्चे देखने को मिले। स्त्रियों ने रोते हुए अपनी करुण कहानी सुनाई और कहा कि खेती न होने से वे अन्नवस्त्र से तंग हैं। श्री स्वामी जी महाराज ने उन्हें सान्त्वना दी और सहायता का वचन दिया। सभा से ११२५ वस्त्र व १५० कम्बल वितरण के लिए भेजे गए।

उसके पश्चात् वे व्रजराज नगर गए। वहां के लोगों से विचार करने के पश्चात् परिणाम यह निकला कि वहां के निरपराध आर्यों को डी. आई. आर में पकड़ा गया है।

दो मास तक जेल मे रखकर भी जब उनके विरुद्ध कोई अपराध प्रमाणित न हुआ तो उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने अपनी ८-११-६४ की बैठक में समस्त स्थिति पर विचार करके आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के जिम्मे यह कार्य लगाया कि वह पीडितों की सूची बनाएं और उनकी आवश्यकताएं ज्ञात करें। साथ ही जेलों में बन्द अवशिष्ट व्यक्तियों की भी सूची बनाए और उन्हें जेलों से मुक्त करने का प्रबन्ध किया जाय।

आर्य समाज चक्रधरपुर का उत्सव विशेष समारोह से मनाने की व्यवस्था की जाय। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार इस कार्य मे संलग्न है।

श्री स्वामी जी महाराज वृद्धावस्था में और प्राय: अस्वस्थ रहते हुए भी आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा के कार्य में जिस तत्परता और मनोयोग से संलग्न रहते हैं उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। सभा उनके प्रति हार्दिक आभार का प्रकाश करती है।

सभा मंत्री श्री ला० रामगोपाल जी की प्रचार यात्राएं

सभा मन्त्री ने अपने निजी तथा सार्वजनिक

व्यस्त कार्य-कलाप में से समय निकाल कर इस वर्ष भर अपने व्यय पर आर्य समाज के कार्य निमित्त विस्तृत भ्रमण किया। अनेक वार्षिकोत्सवों और सम्मेलनों में भाग लेकर व्याख्यान दिए। पीड़ितों के सहायताकार्य एवं आर्य समाजों के कार्य का निरीक्षण किया। मुख्यतया विस्थापितों के सहायताकार्य तथा अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोधके कार्य संचालनार्थ धन संग्रह किया। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के कार्य को बढ़ाने और संगठित करने के लिए अनेक कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन करा,ए उनमें प्रधानत्व किया।

पूर्वी पाकिस्तान के पीडितों की सहायतार्थ जन-जागृति उत्पन्न करने केलिए देहली तथा देहलीसे बाहर विशेष पुरोगम भुगताए गए। अप्रैल ६४ के तीसरे सप्ताह में शामली, थाना भवन, ऊन, गढ़ी, झिंझाना, कैराना का तूफानी दौरा किया गया। लगभग ३५००) की थैलियां भेंट की गई। इसी प्रकार सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) आदि मे थैलियां भेंट की गईं।

सभा मन्त्री ला० रामगोपाल जी को थैली रूप में

३४६३)६२ शामली आदि स्थानों पर

२०७)	आर्य समाज	जलालाबाद
१५५)	,,	लुहारी
१४०४)	,,	थानाभवन
१०६)	,,	गढ़ी अब्दुल्लापुर
१७५)	,,	ऊन
१२५)	,,	झिंझाना
४६६)२५	,,	कैराना
८५२)३७	,,	शामली

२२२)२० आर्य कुमार सभा किंग्स्वे कैम्प दिल्ली
३६६)५० आर्यसमाज कासगंज (एटा)
१३१४) महिला आर्य सभा, दीवानहाल दिल्ली
५७५) आर्य समाज शकूर बस्ती, दिल्ली
१५००) आर्य समाज नया बांस, दिल्ली (श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी वा० प्र० द्वारा संगृहीत)
३०२) २००) आ स. शिकोहाबाद
५१) आ. स. बेवर
५१) स्त्रीसमाज शिकोहाबाद
४०१) आर्य समाज पुलबंगश, दिल्ली

१०१५७)३४

श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज को थैली रूप में

१५००) आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली थैली
५०१) आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली ,,
३००) श्रीमती रुक्मिणीदेवीजी सोरोत बम्बई भेंट
२६१) श्रीमती जमुनाबाई नरसिंह जी बम्बई ,,

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

४५०) आर्यसमाज शकूर बस्ती, दिल्ली थैली

छात्र वृत्तियां व सहायता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस वर्ष निम्न प्रकार मासिक सहायता व छात्रवृत्तियां दी गईं:—

१—श्रीमती कौशल्यादेवी धर्मपत्नी हुतात्मा सोमनाथ जी जालन्धर (हिन्दी आन्दोलन) ५०) सहायता।

२—श्री जगमोहन सिंह, ग्वालियर अम्बाला ट्रेन दुर्घटना के पीड़ित (हिन्दी आन्दोलन) २०)

३—श्री दयानन्द जी एम० ए० विश्वेश्वरानन्द वैदिक इन्स्टीटयूट साधुआश्रम होशियारपुर १०) छात्रवृत्ति।

४—कुमारी जगरोशनी देवी जी मेरठ (दयानन्द दलितोद्धार निधि) ५) छात्रवृत्ति

५—हैदराबाद सत्याग्रह के हुतात्मा सदाशिव पाठक जी की माता सरस्वतीबाई पाठक ६) मासिक सहायता।

ब्रह्मदेश के समाजों की सम्पत्ति की रक्षा

नवीन क्रान्तिकारी राजनैतिक परिवर्तनों एवं भारतीयों के निष्क्रमण के फलस्वरूप ब्रह्मदेश में आर्य समाजों की सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रश्न सार्वदेशिक सभा के समक्ष गंभीर रूप में विचारणीय रहा। सभा की अन्तरंग ने अपनी ७-८-६४ की बम्बई की बैठक में इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करके इसकी सुरक्षा का उपाय करने का निश्चय किया। इस कार्य के लिए भारत सरकार की विशेष सहायता लेने का भी निर्णय हुआ। सर्वप्रथम सम्पत्ति का पूर्ण विवरण प्राप्त करके उसके आधार पर पूर्ण और प्रामाणिक आवेदन पत्र तैयार करना आवश्यक था।

आर्य प्रतिनिधि सभा ब्रह्मदेश के वरिष्ठ अधिकारी और ब्रह्मदेश में आर्य सामाजिक प्रगतियों के प्राण श्री डा० ओ३म्प्रकाश जी ने इस कार्य को अपने हाथ में लिया और दिसम्बर ६४ में यह विवरण सभा मे भेज दिया जो इस प्रकार है :—

(१) रंगून

आर्य समाज मन्दिर तथा धर्म्म शाला-४ मंजिल की पक्की बिल्डिंग १००'६०' भूमि का मूल्य—एक लाख रु० । मन्दिर का मूल्य—४ लाख रुपया। गलियारा डी० ए० वी० हाईस्कूल १००'–६०' तीन मंजिल मकान भूमि का मूल्य ६० हजार रु.। भवन मूल्य-ढ़ाई लाख रु.। आर्य समाज फ्रीडिस्पेंसरी—५०' ४०' एक मंजिल मकान—(भूमि सरकारी है परन्तु गत ३० वर्ष से अपने हाथ में है) भूमि का मूल्य ४० हजार रुपए। भवन—४० हजार रुपए।

(२) जियावाडी

आर्य समाज मन्दिर-भूमि तथा भवन १५०००),आर्य समाज मंदिर जयपुर-३०००)
एक कमरा दान में मिला—५००)

(३) मांडले

आयसमाज मंदिर भूमि तथा भवन २लाखरु.
डी० ए० वी० स्कूल—ड़ेढ़ लाख रु.
कमरे जो किराए पर चढ़े—५० हजार रु.

(४) कलो

आर्य समाज मन्दिर ७० हजार
धर्म शाला-७ हजार

(५) टौंजी

आर्य समाज २५०००)
धर्मशाला-१० हजार रु.।

(६) लाशियो

आर्य समाज मन्दिर ४० हजार रु.।
किराए के मकान—२०हजार रु.

(७) नानटू

आर्य समाज मन्दिर १० हजार रु।

(८) मोगोक

आर्य समाज मन्दिर पुराना २० हजार रु०
आर्य समाज नया ५० हजार रु०।

(९) मिचिना

आर्य समाज—३० हजार रु०
लकड़ी का एक मकान १५ हजार रु०
धर्म्म शाला ५ हजार रु०
दूकान ३ हजार

(१०) श्वेको

आर्य समाज मन्दिर ३ हजार रु०
भूमि १५ हजार रु०
स्कूल १० हजार रु०

(११) मनीवा

आर्यसमाज मन्दिर ७५ हजार रु०
नया मकान ३५ हजार रु०
किराए के लिए ३५ हजार रु०

(१२) एनन जांव

आर्य समाज मन्दिर ५० हजार रु०

(१३) छौक

आर्य समाज मन्दिर ७५ हजाररु०
किराए के लिए मकान २५ हजार रु०।
एक और भूमि २५ हजार रु०।

(१४) बमीन

आर्य समाज मन्दिर भूमि सहित १ हजाररु

(१५) मेम्पो

आर्य समाज मन्दिर भूमि सहित ४०हजाररु
मकान किराए के लिए १५ हजार रु०

अचल सम्पत्ति का योग १५ लाख १४ हजार ५ सौ है समाजों के पास कुछ नकद धन भी है।

इस समस्त सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रबन्ध वहा पर ही हो रहा है।

सम्मानित अतिथि

नवम्बर मास में सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे मौरीशस निवासी श्री गौतम तिलक जो इन दिनों लदन मे निवास करते है, सपत्नीक पधारे। वे भारत भ्रमण के लिए आए थे।

श्री तिलक जी मौरीशस क सम्भ्रान्त भूमि धर है। प्रतिष्ठा की दृष्टि से इनका परिवार मौरीशस मे प्रथम कोटि का है।

श्री तिलक जी गत ५ वर्ष से लदन मे निवास कर रहे है।

उन्हे आर्य समाज से विशेष प्रेम है, वे आर्य प्रतिनिधि सभा मौरीशस के आजीवन सदस्य हैं। मौरीशस की दोनों सभाओं को एक कराने मे उनका प्रमुख हाथ था।

श्री तिलक जी बडे उदार है। सार्वजनिक कार्यों के सम्पादन मे अपना समय और धन लगाते है। ८ ११ ६४ को आय समाज दीवान हाल देहली द्वारा उनका स्वागत हुआ। अन्यत्र भी आर्य समाजों द्वारा उनका अभिनन्दन किया गया।

मौरीशस के एक दूसरे सज्जन श्री सुखराम प्रसाद जी भी देहली पधारे। वे आर्य सभा मौरीशस के पुस्तकाध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध समाज-सेवी हैं।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का स्मारक

देहली मे घटा घर के सामने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का स्मारक बनाने का दिल्ली नगर निगम ने श्री विजय कुमार मल्होत्रा के प्रस्ताव पर निर्णय किया था और इस कार्य के निमित्त एक उप समिति नियुक्त कर दी थी। इस वर्ष श्री रामचरण अग्रवाल ने इस स्थान पर श्री स्व० प० जवाहरलाल जी नेहरू का स्मारक स्थापित करने का प्रस्ताव किया। सभा मन्त्री ला० रामगोपाल जी ने इस प्रस्ताव का कडा विरोध किया और दिल्ली नगर निगम की ढुलमुल नीति पर रोप प्रकट करते हुए एक वक्तव्य मे नगर निगम को प्रेरणा की कि वह स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक स्थापित करने के अपने निश्चय को शीघ्र मूर्त रूप दे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि श्री प० नेहरू के स्मारक के लिए ससद भवन या लाल किला के बाहर का भाग उपयुक्त हो सकता है। हर्ष है कि दिल्ली नगर निगम ने अपना पूर्व निश्चय नहीं बदला है और स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का स्मारक स्थापित करने के निश्चय पर कायम है।

भ्रष्टाचार निवारण

सभा मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी, दिल्ली के चीफ कमिश्नर द्वारा राजकीय सदाचार

समिति के सदस्य मनोनीत हुए। गृहमन्त्री माननीय गुलजारीलाल नन्दा ने उनसे विशेष रूप से भ्रष्टाचार निवारण के सुझाव आमंत्रित किए। उन्होंने जो योजना प्रस्तुत की वह बड़ी महत्वपूर्ण मानी गई। योजना इस प्रकार है—

(१) भ्रष्टाचार का मूल कारण भौतिकवाद का व्यापक प्रचार तथा सर्व साधारण में समष्टि के स्थान पर व्यक्तिवाद की स्वार्थपूर्ण भावना के साथ ईश्वर के सर्वव्यापक स्वरूप से विमुख होना तथा धर्म के असली स्वरूप को भूल जाना है। इसके साथ २ यह विश्वास कर लेना कि मुझे कोई देखता ही नहीं। इसी लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाला निर्विवाद नियम बना कर आर्यसमाज की बुनियाद रखी। अंग्रेजी सभ्यता की छाया में इंग्लैण्ड तथा अमरीका के संविधान का अन्धानुकरण शासन द्वारा होने से भी भ्रष्टाचार को भारी प्रोत्साहन मिला है। भ्रष्टाचार के मूल कारणों में सरकारी कन्ट्रोल भी मुख्य कारण है। सरकारी कन्ट्रोल के स्थान पर यदि अंग्रेजी राज्य की तरह भारत के सभी प्रांतों से किसी भी वस्तु के लाने और ले जाने पर प्रतिबन्ध न लगाये जाते तो मूल्य वृद्धि होती ही नहीं, उसे रोकने का प्रश्न ही पैदा न होता। जहां जो वस्तु मन्दी मिले सब साधारण को उसे खरीद कर लाने ले जाने की खुली छूट देने में कन्ट्रोल करने की जरूरत ही नहीं पड़ सकती। कुछ गिने-चुने प्रभावशाली लोग जिनकी सरकारी अधिकारियों तक पहुंच हैं कन्ट्रोल के जमाने में उन्हीं को सामान खरीदने तथा बेचने का अधिकार देने से हजारों मध्यम वर्ग के व्यापारियों के बेकार हो जाने से भी अनेक प्रकार के भ्रष्टाचारों की प्रवृत्ति जन साधारण में बढ़ती है तथा सरकारी कर्मचारियों की जेबें गर्म होती हैं।

(१) क्या यह ठीक है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भ्रष्टाचार अधिक बढ़ गया है

यह प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण है। यदि इस पर उदारतापूर्वक विचार किया जाय और अपने तथा पराये सभी के साथ समान रूप से व्यवहार किया जाये तो इस प्रश्न की पृष्ठ भूमि का पता लगाया जा सकता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के कोने २ में भ्रष्टाचार ने अपने पैर पसार लिए हैं। अंग्रेजी राज्य काल में यह भ्रष्टाचार केवल सरकारी कार्यालयों तक ही सीमित था किन्तु आज यह बीमारी व्यापक रूप से देहातों में भी फैल चुकी है। ग्राम पंचायतों के चुनाव के कारण भ्रष्टाचार देहातों में व्यापक रूप धारण कर रहा है। सब से बड़ा कारण यह कि हमारी सरकार द्वारा स्वेच्छाचारिता के प्रचार के कारण भारत की प्राचीनतम वर्ण व्यवस्था जो गुण कर्म स्वभाव पर आधारित थी उसका तो मूलोच्छेद कर दिया गया है। आज देश का प्रत्येक व्यक्ति अपनी अयोग्यता पर दृष्टिपात न करके शासन में भागीदार बनने का इच्छुक है इसलिए ग्रामीण जनता जो इस प्रकार के दुर्गुणों से सर्वथा अपरिचित थी आज आपसी झगड़े और कलह के दावानल में बुरी तरह झुलसती जा रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ग्रामीण जनता दूध दही घी और मक्खन जैसे सात्विक तथा पौष्टिक भोजन से अपना निर्वाह कर रही थी और नगरों की अपेक्षा अधिक सन्तोष और सुख अनुभव करती थी। किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् गो-वध के बढ़ जाने से गो भक्त ग्रामीणों की भावना बदल कर अर्थकरी विचार धारा बन जाने से तथा मांस एवं शराब का प्रचार होने से देहातों में बडे पैमाने पर भ्रष्टाचार फैल चुका है,

ग्रामीण जनता की धार्मिक भावना दिन प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है, भौतिकवाद का प्रसार अब वहां भी हो रहा है और ग्रामीणों में सबसे बड़ी बुराई पंचायत राज्य के अन्तर्गत चुनावों के जोड़-तोड़ के कारण आ गई है। पंचायत राज्य के कारण धड़ेधन्दी होने से अनुशासन की भावना नष्टप्राय हो गई है।

व्यापार में भ्रष्टाचार इतना अधिक बढ़ गया है कि बड़े २ मिल मालिक और कारखानेदार जिनका सरकारी अधिकारियों के साथ सम्बन्ध स्थापित हो चुका है और सरकार कन्ट्रोल भाव से कुछ गिने चुने लोगों को लाभ देनी है वे बड़े-बड़े व्यापारी प्रतिदिन हजारों रुपयों को काले बाजार द्वारा कमाते हैं। गरीब और मध्यम वर्ग के करोड़ों लोगों को पेट भर रोटी नहीं मिलती। किन्तु कुछ लाख व्यक्ति जिन पर सरकार की मेल-जोल की कृपा है करोड़पति से अरब पति बनते चले जा रहे हैं। हमारे देश में किसी वस्तु का अभाव नहीं। जीवनोपयोगी वस्तुएं पहले से अधिक उत्पन्न हो रही हैं किन्तु महंगाई इतनी बढ़ गई है कि मध्यम वर्ग का जीवन सर्वथा दूभर होता जा रहा है।

अतः शासन की परिपाटी में आमूल चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। बड़े २ कारखानेदार कुछ वर्षों में करोड़ों के स्वामी बनने जा रहे हैं। सरकार इसकी खुले रूप में जांच करे। वे लोग जनता से काले बाजार की चोरी करने के साथ सरकार से इन्कम टैक्स की चोरी भी करते हैं। जब कोई जांच होती है तो छोटे लोगों को पकड़ा जाता है और बड़े २ ब्लैक मारकीटिंग करने वाले शासन के कृपापात्र बन कर मनमानी करते हैं। मेरा विश्वास है कि पंचवर्षीय योजना का आधे से अधिक धन सरकारी अफसरों और बडे २ उद्योगपतियों की जेबों में चला गया है। साधारण जनता को पंचवर्षीय योजना से रत्ती भर लाभ नहीं पहुंचा।

यदि केन्द्रीय सरकार देश में एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जीवनोपयोगी वस्तुओं के लाने और ले जाने का अधिकार प्रांतीय सरकारों से अपने हाथ में ले ले तो मूल्य वृद्धि की समस्या बड़ी हद तक सुधारी जा सकती है। भ्रष्टाचार के मूल कीटाणु पुलिस थानों में उस समय वृद्धि प्राप्त करते हैं जब किसी सबल अत्याचारी के बर्बर अन्याचार से पीड़ित गरीब और असहाय व्यक्ति की कुछभी सुनाई नहीं होती। यह परम्परा अंग्रेजी राज्य में बड़े पैमाने पर बढ़ी और वही घटिया दर्जे का तरीका स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी बरता जा रहा है। पुलिस के अधिकार और कर्त्तव्यों का आमूल चूल परिवर्तन किये बिना पुलिस थानों में फैला हुआ भ्रष्टाचार देश में अनैतिक प्रवृत्तियों को दिन प्रतिदिन बढ़ावा दे रहा है। भले लोग सताये जाकर और दुखी होने पर भी पुलिस थाने में जाने से डरते हैं। इसलिये पापी और भ्रष्टाचारी निःशंक रूप से मनमानी हरकतें करते हैं। पुलिस के साथ उनके लेन-देन और निजी सम्पर्क होते हैं। इसलिए भले मानस सताये जाने के बावजूद भी पुलिस थाने में जाने से संकोच करते हैं। जनता की सरकार यदि यह विश्वास दिला सके कि पुलिस द्वारा न्याय संगत व्यवहार होगा तो अनैतिक व्यापार करने वाले हजारों गुण्डे अपने समाज विरोधी भ्रष्टाचारी जीवन में परिवर्तन करने के लिये बाधित हो जायेंगे।

भ्रष्टाचार के मूल कारणों में एक यह भी है कि सरकारी कर्मचारियों के काम की नियमपूर्वक देख रेख नहीं की जाती। इसी लिये इन्सपेक्शन के अभाव में भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है।

भ्रष्टाचार के मूल कारणों में से सिनेमा का व्यापक प्रचार भी एक कारण है। कई लोग सिनेमा घरों में चोरी, डकैती और अपहरण तथा

प्रेम की घटनाएं देख कर अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठते है, वहीं से आदतों में भारी परिवतन आना आरम्भ हो जाता है और मनः स्थिति किसी बुराई की ओर प्रवृत्त होती है तो सिनेमा मे देखे हुए दृश्य सामने मूर्त्त रूप धारण कर खडे हो जाते हैं और भ्रष्टाचारी दिमाग उन्हीं उपायों को बरत कर सफलता प्राप्त करता है। कालेजों और स्कूलों के विद्यार्थियों में धार्मिकता का अभाव तथा सिनेमा से प्रभावित होना भी देश की भावी सन्तति के लिए भारी चिन्ता का विषय बनता जा रहा है और नवयुवकों तथा नवयुवतियों मे यहीं से भ्रष्टाचार आरम्भ होता है।

अपने देश की प्राचीन परिपाटी को तिलांजलि देकर स्कूलों में और कालेजों में लड़के लड़कियों की सहशिक्षा भी अनेक प्रकार के कृत्रिम भ्रष्टाचार को जन्म देती है। योरप की जनता आज सहशिक्षा के कारण अपने पारिवारिक जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर चुकी है। अनैतिक व्यभिचार के जहरीले कीटाणु सहशिक्षा की दीवारों से ही पैदा होते है। इसलिए इस युग के महान सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लडकों के विद्यालयों मे पांच वर्ष की लड़की और लडकियों के स्कूल और कालिजों मे पांच वर्ष के लड़के को भी जाने की कडी मनाही कर दी। ये कुछ कारण मैने भ्रष्टाचार के प्रारम्भ होने के बताये है। इस विषय पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला जा सकता है किन्तु स्थानाभाव के कारण इतना निवेदन करना ही उचित है।

भ्रष्टाचार के मूल कारणों में हमारे भोजन का विदेशीकरण तथा मांस, अण्डा, शराब का सरकारी तौर पर प्रचार एवं हमारे खाने पीने की प्राचीन भारतीय पद्धति का उपहास भी एक बड़ा कारण है। सरकारी तौर पर रेडियो द्वारा मुर्गी, अण्डा तथा मांस खाने का निरन्तर प्रचार भी बड़ा घातक सिद्ध हुआ है। देशवासियों के भोजन की सात्विकता नष्ट कर देना भी भ्रष्टाचार का मूल कारण है।

(३) इसके रोकने के क्रियात्मक उपाय

यह विषय अत्यन्त गम्भीर है और हमारे गृहमन्त्री श्री नन्दा जी यदि इस पर कड़ाई के साथ आचरण करे तो यह समस्या जल्दी सुधारी जा सकती है।

१—भावी भ्रष्टाचार को रोकने के लिए शिक्षण संस्थाओं में सहशिक्षा पर प्रतिबन्ध तथा विदेशी परम्परा के भारतीयकरण की योजना।

२—यूनिवर्सिटियों में इस प्रकार के कमीशन नियुक्त किये जावे जो विद्यार्थियों के देखने योग्य चल-चित्रों का चुनाव करे कमीशन द्वारा प्रस्तावित फिल्मों के अतिरिक्त अन्य सिनेमा घरों तथा चलचित्रों को देखना विद्यार्थियों के लिये निषिद्ध कर दिया जावे।

३—प्रारम्भ से स्कूलों और कालिजों में सर्व सम्मत धार्मिक शिक्षा को आवश्यक विषय के रूप में पढ़ाया जावे। मत मतान्तरों के द्वेष-पूर्ण विचारों से सर्वथा अलिप्त ऋग्वेद के कुछ सूक्त इस दिशा मे बडे उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

४—पाप एवं भ्रष्टाचार करने वाले बड़े २ व्यक्तियों को कडी से कड़ी सजा दी जावे और उनकी निजी सम्पत्ति की जांच के साथ २ उनके कृपा पात्र मित्रों तथा रिश्तेदारों की सम्पत्ति की जांच करके उन्हें भी इसी प्रकार अपराधी घोषित करके दण्डित किया जावे। यदि सरकार इस प्रकार के दो-चार पापियों को भी पकड़ कर सार्वजनिक रूप से अपमानित तथा दण्डित करने की योजना बना ले तो एक दम हजारों भ्रष्टाचारी दण्ड के भय से अपना रास्ता बदलने के लिये बाधित हो जायेंगे।

भ्रष्टाचार को निर्मूल करने के लिए मनु द्वारा बताई गई पुरानी दण्ड व्यवस्था ही काम में लानी होगी। अंग्रेजी पद्धति के दण्ड विधान से पापी फिर छूट जाते हैं और मनमानी करके अन्य लोगों में भी भ्रष्टाचार को प्रोत्सहान देने में समर्थ हो सकते हैं।

इस प्रकार के घोषित भ्रष्टाचारियों को अपील करने के अधिकार से वंचित किया जावे और प्रारम्भ में ही उनके धन और सम्पत्ति पर सरकारी कब्जा कर लिया जावे जिससे वे धन के प्रभाव से अपने पाप को छिपाने में समर्थ न हो सकें।

(४) देश की धार्मिक तथा राजनैतिक संस्थायें इस सम्बन्ध मे महत्व पूर्ण योग दान दे सकती हैं। इसके लिये मेरा निम्न सुझाव है :—

१—धार्मिक संस्थाओं के कतिपय चुने हुए ईमानदार और निष्ठावान् व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया जावे। इनमें कोई ऐसा सज्जन न लिया जावे जो पहले कभी किसी चुनाव में भाग ले चुका हो अथवा भविष्य में चुनाव लड़ने का इच्छुक हो, केवल जनता की सच्ची सेवा करने वाले सज्जनों की सहायता ले। सरकार ऐसे चुने हुए स्वयं सेवक तैयार करे जो भ्रष्टाचार उन्मूलन में सक्रिय भाग ले और अपने उत्तर-दायित्वपूर्ण कार्य से देश मे भ्रष्टाचारियों के पाप पूर्ण कृत्यों की छान बीन करके सही तरीकों से सरकार को अवगत करे। आर्यसमाज इस प्रकार के हजारों निष्ठावान स्वयं सेवक इस महान् कार्य की पूर्ति के लिये दे सकता है। आर्यसमाज ने अपने जन्म दिन से ही सदाचार के प्रसार और चरित्रनिर्माण पर बल दिया और जन-सामान्य का मार्ग-प्रदर्शन किया है। वैयक्तिक लाभालाभ और चरित्र रक्षा के मध्य चुनाव के भीषण अवसर उपस्थित होने पर आर्यजन चरित्र रक्षा का परिचय देते और दूसरों के लिए उत्तम उदाहरण बनते हैं।

आर्य समाज ने भ्रष्टाचार का उन्मूलन और चरित्र निर्माण का कार्य अपने कार्यक्रम का विशेष अङ्ग बनाया हुआ है। आर्यजनों की जो दूकानें हैं वे उचित मूल्य पर ठीक वस्तु देने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं।

आर्य जन अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही सदाचारी बनाने का विशेष ध्यान रखते हैं। इस प्रक्रिया के व्यापक प्रसार की आवश्यकता है।

आर्य समाज का जोर वैयक्तिक और सार्वजनिक दोनों ही जीवन की शुद्धि पर रहता है। जब तक ये दोनों जीवन शुद्ध और उन्नत नहीं होंगे तब तक चरित्र निर्माण की समस्या समस्या बनी रहेगी।"

१३ अप्रैल ६४ को सभा की प्रेरणा पर समस्त आर्य जगत् में भ्रष्टाचार विरोधी दिवस मनाया गया और आर्य जनों ने हवन, यज्ञ करके अग्नि के समक्ष स्वयं भ्रष्टाचार से पृथक् रहने और भ्रष्टाचार के निवारण में पूर्ण योग देने का व्रत लिया।

गोवध निषेध

बंगाल के कानकुनी क्षेत्र में विशाल बूचड़ खाने के निर्माण का सभा कार्यालय द्वारा प्रबल विरोध किया गया। एक प्रेस वक्तव्य जारी किया गया तथा भारत सरकार को विरोध पत्र भेजा गया जो इस प्रकार है :—

(१)

दिल्ली १५ जून। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि आजादी मिलने के पश्चात् भारत में बड़ी तेजी के साथ गो धन नष्ट किया जा रहा है। आपने बताया कि सरकारी योजना के अनुसार हैदराबाद,बम्बई, कलकत्ता तथा अन्य स्थानों पर प्रतिदिन हजारों

की संख्या में गो वध किया जा रहा है। इसी संदर्भ में देश के विभिन्न क्षेत्रों में पांच नये यान्त्रिक कसाई खाने खोलने की योजना बन चुकी है। श्री शाल वाले ने वक्तव्य को जारी रखते हुए बताया कि आज बंगाल के कानकूनी क्षेत्र में एक बहुत बड़ा मशीनी बूचडखाना तैयार किया जा रहा है जिसमे प्रतिदिन हजारों पशुओं का वध किया जायेगा। इस कसाईखाने का विरोध करने के लिये बंगाल गौ रक्षा समिति के शिष्ट मण्डल ने उक्त क्षेत्र का निरीक्षण किया। १०५ एकड भूमि जहां बंगाल का सब से बढ़िया चावल पैदा होता है वहां सैकडों किसान निवास करते हैं ऐसे उपजाऊ स्थान पर कसाई खाने का निर्माण करना सर्वथा अनुचित है। श्री रामगोपाल जी ने इस कसाई खाने के निर्माण का बडा विरोध करते हुए कहा है कि महात्मा गांधी के नाम पर सरकार चलाने वालों को लज्जा करनी चाहिए कि वे इस प्रकार गोधन का नाश करके देश को रसातल में ले जाने की भूमिका तैयार कर रहे हैं। गो धन की कमी होने से देश में दूध, घी और मक्खन का अभाव होता जा रहा है। घी दूध की कमी होने से अन्न की समस्या जटिलतम होती जा रही है। यदि जन साधारण को घी दूध पुष्कल मात्रा में उपलब्ध हो तो स्वाभाविक रूप से अन्न की खपत कम हो जायेगी। गो रक्षा करने से उत्तम खाद पैदा होगी, बैलों की संख्या बढ़ने से खेती अच्छी और अन्न अधिक उपजेगा।

श्री शालवाले ने सरकार को गम्भीर चेतावनी देते हुए कहा कि गांधी, दयानन्द और भगवान् कृष्ण की भूमि में गो वध स्थल बन्द करो वरना देश में भारी क्रांति का सूत्रपात होगा। गो पर किया जा रहा यह अत्याचार अब अधिक समय तक सहन नहीं किया जा सकता।

(२)
देश को तबाही से बचाने के लिये गोहत्या बन्द करो

कलकत्ता में लगभग दो करोड़ रुपये की गायें और भैंसें दूसरे राज्यों से, खास कर पंजाब से मंगाई जाती हैं, जिन्हें बूचड़खाने में भेजने से पहले साल भर बहुत ही बुरी हालत में रखा जाता है और दुहा जाता है।

ये गाय के नाम पर पैसा कमाने वाले कारोबारी लोग दूध दुहने का बड़ा ही बे-रहमी का तरीका अपनाते हैं, ये लोग उनके बछड़ों पड़वों को भूखा मार डालते हैं क्योंकि जिन्दा रहने पर वे कुछ दूध पी जाते हैं और उन्हें चारा भी देना पड़ता है।

दुहने के लिए गाय भैंसों का पेन होने वाला तरीका सबसे बर्बर और दर्दनाक है। ग्वाला मवेशी की दुम को मूत्राशय के अन्दर कस कर ठूंस देता है। साल भर तक ग्वाले मवेशियों को भूखे रख कर इतना कमजोर कर देते हैं ताकि पशु अधिकारी बेकार जानवर मानकर बूचड़खाने के भेजने की इजाजत दे दें।

इस प्रकार क्षणिक एवं व्यक्तिगत लाभ के कारण प्रतिवर्ष २ करोड़ रुपये के दुधारू पशुओं को बड़ी बेरहमी के साथ कत्लखाने के हवाले कर दिया जाता है।

गत १७ वर्षों में हमारी राष्ट्रीय सरकार की अहिंसक नीति के फलस्वरूप भारत में १८ करोड गाय और बैल कसाई खानों में कटवाये जा चुके हैं।

आज जनता घी और दूध को तरस रही है। इतनी बड़ी संख्या में गोवंश का नाश इस बात का प्रबल प्रमाण है कि सरकार की सर्वथा गलत नीति के कारण भारत भूमि पशुधन से विहीन हो रही है। आज घी और दूध व

मक्खन आदि की महंगाई चरम सीमा को पहुँच गई है। अंग्रेजी शासन काल में महात्मा गांधी और दूसरे कांग्रेसी नेता पुकार पुकार कर विदेशी शासकों से गोहत्या बन्द करने की मांग किया करते थे। किन्तु गांधी जी का नाम लेने वालों के हाथ में जब शासन सूत्र आया तो गोहत्या को प्रोत्साहन देने के लिए कलकत्ता, बम्बई, हैदराबाद और मद्रास में आठ करोड़ रुपये खर्च करके आधुनिक ढंग में मशीनी बूचड़ खाने बनाने की योजनाएं बनाई गईं।

गोसंवर्द्धन का ढोंग रचने वाली वोटों की तलबगार कांग्रेसी सरकार ने अमरीका को ११ लाख मन गोमांस भेजने का समझौता किया है। डेनमार्क में गोसेवा के कारण गौ की नस्ल सुधारने एव गोदुग्ध का उत्पादन बढ़ाने के तरीकों पर विचार करके दूध, मक्खन और घी की पैदावार दिन प्रतिदिन बढ़ाई जा रही है। किन्तु भारत के मूर्ख शासक गोहत्या को प्रोत्साहन देकर नये आधुनिक ढंग के कसाई खाने निर्माण करके दूध और घी के उत्पादन के स्थान पर गो माता का मांस, चमड़ा, हड्डी, जिह्वा, चरबी बेचकर डालर कमाना चाहते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ठीक चेतावनी दी थी कि गो हत्या जारी रहने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।

अतः देश की गोभक्त जनता से मेरा निवेदन है कि यदि इसी प्रकार हमारी मूर्ख सरकार की बेढंगी चाल जारी रही तो दूध डाक्टरों की दुकानों पर शीशियों में मिलना भी कठिन हो जायेगा।

श्री नेहरू जी तो अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार हिन्दुओं के प्रत्येक धार्मिक दृष्टिकोण को साम्प्रदायिक कह कर टाल दिया करते थे। किन्तु आज देश का शासन श्री लालबहादुर शास्त्री और श्री गुलजारीलाल नन्दा जैसे धार्मिक विचार धारा के लोगों के हाथ में है। अतः गोभक्त जनता को अपनी संगठित आवाज शासन के कानों तक पहुंचाने की तैयारी करनी चाहिए।

मद्यनिषेध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा ने अपने बम्बई के अधिवेशन में ८-८-६४ को मद्य निषेध सम्बन्धी प्रस्ताव पास किया था जो इस प्रकार है :—

"मादक द्रव्यों और विशेषकर शराब आदि के प्रयोग का निषेध आर्य समाज के कार्यक्रम का एक विशेष अंग रहा है। महर्षि दयानन्द ने इस कार्य को अपने रचनात्मक कार्यक्रम में एक विशेष महत्व दिया था इसलिए आर्य समाज के मंच से मादक द्रव्यों के उपयोग के विरुद्ध विशेष प्रचार होता रहा है।

जिस समय हमारे विधान में सरकार को शराब आदि के निषेध का आदेश दिया गया था तो आर्यसमाज ने इसे अपनी अपूर्व सफलता समझी थी परन्तु यह अत्यन्त खेद और लज्जा का विषय है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शराब का प्रयोग बढ़ रहा है और अब इतना बढ़ गया है कि स्त्रियों ने भी शराब पीनी शुरू कर दी है। सार्वदेशिक सभा इस स्थिति को शोचनीय समझती है और साथ ही यह आर्य समाज के लिए एक चुनौती थी। अतः सार्वदेशिक सभा का यह वार्षिक अधिवेशन यह निश्चय करता है कि भारत सरकार को यह चेतावनी दी जाय कि यदि शीघ्र ही देश में पूर्णतया शराब बन्दी के लिए कोई सक्रिय कार्यवाही न की गई तो आर्य समाज सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में सरकार की इस नीति के विरुद्ध अभियान शुरू करेगा इसलिए देश भरके आर्य नर नारियों को इस नए धर्म-युद्ध में

अधिक से अधिक बलिदान देने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। आर्य समाज देश के वर्तमान नैतिक पतनको देखते हुए मौन नहीं रह सकता इसलिए उसे सक्रिय रूप में उतर पड़ना चाहिए।

इस प्रस्ताव की लिपि भारत सरकार को भेजकर उसे प्रेरणा की जाय कि वह शीघ्राति-शीघ्र भारत में पूर्णतया शराब बन्दी करे। यदि सरकार द्वारा पूर्णतया शराब बन्दी न हुई तो सारी स्थिति पर विचार करने और भावी-कार्यक्रम का निश्चय करने के लिए उचित समय पर दिल्ली में एक कन्वेंशन बुलाया जाय जिसमें सार्वदेशिक सभा के समस्त सदस्यों प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य २ अधिकारियों एवं देश के प्रमुख २ आर्यों को आमन्त्रित किया जाय जिसमें भावी पगका निश्चय किया जाय जिसमें सत्याग्रह भी सम्मलित होगा सत्याग्रह के निर्णय के लिए आर्य महा सम्मेलन का अधिवेशन बुलाया जाना आवश्यक होगा।

श्री मास्टर पोहकरमल जी मुख्तार आम का कार्य विवरण

(१-३-६४ से २८-२-६५ तक)

१—सभा की सम्पत्ति के किरायेदारों से किराये की राशि प्राप्त की गई।

२—लाला श्रीराम से सभा की डिग्रियों के मद में लगभग १२५००) की प्राप्ति में योग दिया।

३—आर्य समाज बस्ती हरफूलसिंह से सभा के १०,०००) में से ७५००) प्राप्त किये गये। शेष २५००) शीघ्र ही प्राप्त हो जायेंगे।

४—सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के लगभग ४३०००) रुपये के हिस्से भागीदारों से दान में लेकर सभा के नाम कराने के लिए सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड को दिये।

(५) मोहरी रेल दुर्घटना की ४६०००) की डिग्रियां रेलवे बोर्ड के विरुद्ध हुई थी, जिसके विरुद्ध रेलवे बोर्ड ने हाई कोर्ट में अपील कर रखी है जिसकी पैरवी की गई।

(६) सभा के अभियोग श्री निरंजनलाल, श्री रघुवीरसिंह शास्त्री, श्रीरणजीतसिंह एण्ड सन्स, वाईटल कैमिकल कम्पनी के विरुद्ध दीवानी अभियोगों की पैरवी की गई।

(७) कस्बा नजफगढ़ में बाढ़ पीड़ित भाइयों की सहायता के लिए कैम्प में सेवा की गई।

(८) स्व० लाला जगन्नाथ जी की बीमा पालिसी की राशि ७६५३) डाकखाने से स्वीकृत कराई गई। यहराशि शीघ्र की प्राप्त हो जायेगी।

(९) महर्षि दयानन्द भवन को सरकारी कागजात में सभा के नाम में दर्ज कराने के लिए डेवलपमेंट अथारिटी में पूरा-पूरा यत्न किया जा रहा है।

(१०) स्वर्गीय श्री लाला बाबूराम जी की वसीयत से प्राप्त मकान का इस वर्ष ४०००) में सौदा हुआ।

(११) लिपटन कम्पनी के किराये नामे की रजिस्टरी सभा के नाम कराई गई।

(१२) श्री बाबू रामनाथ जी सहगल से ८००) का चैक केन्द्रीय सभा दिल्ली की तरफ से सार्वदेशिकसभा के नाम दानमें प्राप्त किया।

(१३) आर्य नगर गाजियाबाद की भूमि के सरकारी कागजात में आर्य प्रतिनिधि सभा का स्थान में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दर्ज कराया गया।

विवाह कानून में संशोधन कराना

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई की २१-६-६४ की साधारण सभा ने सार्वदेशिक सभा में इस आशय का प्रस्ताव पास करके भेजा कि विवाह सम्बन्धी कानून हिन्दुओं, मुसलमानों आदि

सब पर समान रूप से लागू होना चाहिए। सभा की ८-११-६४ की अन्तरंग में इस प्रस्ताव पर विचार हुआ। अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार केन्द्रीय गृहमन्त्री को एक विशेष पत्र भेज कर अनुरोध किया गया कि वे विवाह सम्बन्धी कानून में आवश्यक संशोधन कराने की व्यवस्था करें जिससे कि हिन्दुओं और हिन्दुत्व की रक्षा हो।

अन्तरंग सभा ने कानून में परिवर्तनों का प्रारूप बनाने के लिए निम्न लिखित महानुभावों की एक उपसमिति नियुक्त की:—

(१) श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त
(२) „ छोटूसिंह जी एडवोकेट
(३) „ सोमनाथ जी मरवाहा एडवोकेट
(४) „ पं० प्रकाशवीरजी शास्त्री एम.पी.
(५) „ लाला रामगोपाल जी (संयोजक)

अन्तरंग सभा ने धर्म परिवर्तन विषयक कानून का प्रारूप बनाने का भी निश्चय किया है।

कुछ आर्य समाजें चैरिटी एक्ट के अधीन अपने को रजिस्टर्ड कराने लगी हैं। इस प्रवृत्ति को रोकने की आवश्यकता है। यह विषय भी उपर्युक्त समिति के सुपुर्द किया हुआ है। इसके अतिरिक्त श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के नाम पर स्वतन्त्र संस्थाएं खोल दी जाती हैं। इस कार्य को कानून के अनुसार रोका जा सकता है या नहीं यह विषय भी रिपोर्ट के लिए उपर्युक्त समिति को भेजा हुआ है।

इस दिशा में कार्य आरम्भ हो गया है।

राजार्य सभा

८-११-६४ की अन्तरंग सभा ने समय २ पर अपेक्षित राजनैतिक विषयों पर आर्य समाज का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और जनता का मार्ग प्रदर्शन करने के लिये निम्न लिखित राजार्य सभा उपसमिति का निर्माण किया:—

(१) श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास प्रधान
(२) „ ला० रामगोपाल जी (संयोजक)
(३) „ स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
(४) „ घनश्याम सिंह जी गुप्त
(५) „ पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
(६) „ मिहिरचन्द जी धीमान
(७) „ डा० डी० राम जी
(८) „ पं० कान्तिलाल जी शर्मा
(९) „ ओम्प्रकाश जी त्यागी

पाखण्ड खण्डिनी शताब्दी महोत्सव

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने अपनी ७-२-६५ की बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रस्ताव पर सम्वत् २०२४ में अपने प्रबन्ध में हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका शताब्दी महोत्सव मनाने का निश्चय किया है और इस कार्य के संचालनार्थ एक उपसमिति नियुक्त कर दी है जिसके सदस्य इस प्रकार हैं :—

(१) श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती
(२) „ पं० शिवकुमार जी शास्त्री
(३) „ पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
(४) „ आचार्य रामानन्द जी शास्त्री
(५) श्रीमती शकुन्तला जी गोयल
(६) श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री
(७) „ डा० हरिशंकर जी शर्मा
(८) „ पं० शिवदयालु जी
(९) „ प्रेमचन्द जी शर्मा
१०) „ लाला रामगोपाल जी (संयोजक)

इस समिति को अपने में सदस्य बढ़ाने का अधिकार होगा। यही समिति उत्सव का उपयुक्त नाम निर्धारित करेगी। इस महोत्सव का कार्यक्रम तैयार कराके इसकी प्रबन्ध व्यवस्था का कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायगा।

राजभाषा हिन्दी

इस सभा की अन्तरंग सभा ने अपनी ७-२ ६५ की बैठक मे राजभाषा हिन्दी के सम्बन्ध मे निम्न लिखित प्रस्ताव पारित किया —

(क) यह सभा भारतीय सविधान मे स्वीकृत अनुच्छेद के अनुसार २६ जनवरी १९६५ से केन्द्रीय एव प्रदेशीय शासन मे राष्ट्र भाषा तथा सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी के प्रचलन की घोषणा के लिए भारत सरकार को धन्यवाद देती है और इसे राष्टीय एकता के लिए सरकार द्वारा अपनाई गई सुन्ढ नीति का द्योतक मानती है।

(ख) हिन्दी के राज भाषा के रूप मे केन्द्रीय सरकार द्वारा उद्घोषित होने के बाद मदरास की द्रविड मुन्नेतरम कडगम पार्टी तथा अन्य हिन्दी विरोधी तत्वों ने मिलकर मदरास प्रात मे अशाति व्याप्त करके देश की एकता को खण्डित करने का जो देश द्रोह पूर्ण दुष्प्रयत्न किया है यह सभा उस पर खेद और चिन्ता व्यक्त करती हुई सरकार से अनुरोध करती है कि वह उपद्रवी तत्वों का कडाई के साथ दमन करे।

(ग) समाचार पत्रों मे प्रकाशित हुआ है कि काग्रेस अध्यक्ष श्रीयुत कामराज जी ने एरना कुलम मे १ फरवरी को पत्रकारों को यह कहा बताते हैं कि वे केरल के व्यक्तियों को यह कहने के लिए तैयार है कि उन्हें सरकार से कोई पत्र हिन्दी मे मिले तो वे उसे फेंक दें। यदि यह समाचार ठीक है तो यह सभा यह कहने के लिए बाध्य है कि उनका यह परामर्श अनुत्तर-दायित्व और दुर्भाग्य पूर्ण है। साथ ही यह जहा सविधान, प्रजातन्त्र और काग्रेस के आदर्शों के अनुकूल नहीं है वहा उनके उच्च पद के गौरव के अनुकूल भी नहीं है।

(घ) यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह पजाब को भी हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश घोषित करे जहा ७० प्रतिशत प्रजा की मातृभाषा हिन्दी है साथ ही प्रशासन मे हिन्दी को समुचित स्थान प्रदान करे जिससे हिन्दी भाषा भाषी प्रजा को किसी प्रकार की असुविधा और कठिनाई का सामना न करना पडे। इस सभा की प्रेरणा पर २१ फरवरी ६५ को समस्त आर्य जगत् मे अखिल भारतीय राष्ट्र रक्षा दिवस मनाया गया। स्थान २ पर विराट सार्वजनिक सभाए हुई जिनमे अन्य हिन्दी प्रमियों ने भी भाग लिया।

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के कार्य को बढाने और उसे सार्वदेशिक स्तर की उन्नत सस्था का रूप देने के निमित्त सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के शेयर होल्डरों ने अपने शेयर्स सार्वदेशिक सभा को दान कर दिए है जिनकी राशि सभा के १२३००) के अतिरिक्त ४३०००) है। अन्तरग सभा ने अपनी २९ ३ ६४ की बैठक मे इन शेयर्स को दान रूप मे स्वीकार कर लिया है, इस कार्य मे सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा ने विशेष रुचि ले कर इसे सम्पन्न कराया इसके लिए सभा उन्हें धन्यवाद देती है। इस कार्य मे मुख्तार आम श्री मास्टर पोकरमल जी ने विशेष योग दिया।

इन शेयर्स को सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड द्वारा सभा के नाम मे नियमित रूप से परिवर्तित कराने की कार्यवाही कराई जा रही है।

भागवत के केस में आर्यसमाज की विजय

मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री वेदमित्र ठाकोर ने भडौच से प्रकाशित होने वाली अपनी गुजराती मासिक पत्रिका 'वेद विज्ञान' के दिसम्बर १९६१के अक मे अग्नि

स्मृति के १८२ वें श्लोक का उद्धरण दिया और उस पर टिप्पणी की कि "अपना कल्याण चाहने वालों को भागवत नहीं पढ़ना चाहिए क्योंकि यह निकृष्ट कोटि का ग्रन्थ है।" उद्धृत श्लोक निम्न लिखित है—

वेदविहीनाश्च पठन्ति शास्त्रम्,
शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठाः।
पुराणहीनाः कृषिणो भवन्ति,
भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति॥

श्री वेदमित्र जी ने अपनी टिप्पणी देने के पूर्व इस श्लोक का निम्न अर्थ किया है "वेद ज्ञान रहित मनुष्य शास्त्र बांचते हैं, शास्त्र ज्ञान रहित मनुष्य खेती करते हैं और भ्रष्टाचारी अधम मनुष्य भागवत बांचते हैं। इस लेख पर गुजरात सरकार के गृह विभाग के आदेश के अनुसार डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भड़ौच ने १८-६-६३ को प्रथम श्रेणी के जुडिशियल मजिस्ट्रेट की कचहरी में अभियोग चलाया। जुडिशियल मैजिस्ट्रेट ने प्राथमिक जांच के अनन्तर इस अभियोग को सेशन्स जज भड़ौच की कोर्ट को विचारार्थ भेज दिया।

सुना जाता है कि पुष्टि संप्रदाय के हिमायती कुछ व्यक्तियों ने पहले भड़ौच के पंडितों को इस विषय में प्रोत्साहितकर अभियोग चलाने के लिए आगे चलने का प्रयत्न किया था परन्तु इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली क्योंकि पंडितों ने सुना गया है कि यह उत्तर देकर अपनी अनिच्छा प्रकट की कि आर्यसमाज के विद्वान् बड़े प्रबल विद्वान् होते हैं उन्हें छेड़ना ततैयों के छत्ते को छेड़ना है। परन्तु इसका प्रभाव इन व्यक्तियों पर नहीं हुआ और इन्होंने सरकार पर अनुरोध करके उसकी तरफ से केस चलवाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई प्रदेश के मन्त्री श्री वेणी भाई आर्य को इस अभियोग की सूचना मिलने पर इस केस की पैरवी का भार उन्होंने सभा पर लिया और सभा ने इस केस की पैरवी करनी प्रारम्भ कर दी। लगभग डेढ़ वर्ष तक यह अभियोग सेशन्स जज भड़ौच की कोर्ट में चलता रहा। आर्यसमाज के लिए यह एक ऐतिहासिक और प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। मुम्बई प्रदेश प्रतिनिधि सभा ने इस अभियोग की गम्भीरता को देखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ला० रामगोपाल जी और प्रधान श्री प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास तथा आर्य जगत् के मूर्धन्य नेता श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती को इस अभियोग की गम्भीरता का संकेत करते हुए प्रार्थना की कि इस केस की पैरवी के साक्षी के रूप में वे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री को भेजें। सभा के इन नेताओं ने आचार्य जी से प्रार्थना की और वे भड़ौच गए। २३, २४, २५ जून को तारीख थी। २४ और २५ जून को आचार्य जी का बयान कोर्ट में हुआ जो अभूतपूर्व ढंग से प्रभावशाली रहा। अदालत के हाल में आचार्य जी के बयान के दिनों में आनन्द, सूरत, बड़ोदा आदि के आर्यजन और दूसरे विपक्षी लोग बयान सुनने को बड़ी संख्या में आते रहे।

प्राप्त अधिकृत सूचनाओं से यह ज्ञात हुआ है कि इस बयान का बहुत अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा है। न्यायमूर्त्ति माननीय श्री ए० के० शाह भी इससे बहुत प्रभावित हुए और ३०-३-६४ को अपना फैसला देते हुए उन्होंने श्री वेदमित्र ठाकोर को निर्दोष घोषित कर अभियोग से मुक्त कर दिया। इस प्रकार आर्यसमाज की विजय हुई।

श्री वेदमित्र ठाकोर की ओर से पैरवी करने वाले वकील बड़ौदा के सुप्रसिद्ध एडवोकेट

श्री ए० डी० पटेल थे। उन्होंने इस केस की बड़ी ही दक्षता से पैरवी की। वे धन्यवाद के पात्र है। सहयोग के लिये आचार्य जी के अतिरिक्त निम्न विद्वान् इसमें उपस्थित थे : - श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक, श्री पं० ऋषिमित्र जी शास्त्री तथा श्री पं० रुद्रमित्र जी शास्त्री।

मुकदमे की पैरवी का सब प्रबन्ध मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेणी भाई आर्य ने किया। वे अपने उपमन्त्री श्री पं० माधवेन्द्र जी शास्त्री तथा दल बल के साथ उपस्थित रहतेथे। इसकेस का पूरा फैसला सार्वदेशिक में प्रकाशित हो चुका है। इसकी कापियां बम्बई अधिवेशन के समय वितरित की गई थीं।

श्री पण्डित रुचिराम जी आर्योपदेशक

कार्य विवरण (रिपोर्ट) १ मार्च सन् १९६४ से २८ फरवरी ६५ तक।

ईसाइयों का पहला ग्राम मस्जिद मोठ

पं०जी ने मस्जिद मोठ के ईसाइयों की शुद्धि २८-८-५५ को की थी, कुल ४२ परिवार शुद्ध हुए थे जिनकी संख्या २१० थी। वहां ८ आठ परिवार ईसाइयों के शुद्ध नहीं हुए, पादरी इन को आज तक सहायता दे रहा है। यह लोग हर रविवार को महरौली गिरजाघरमें जाते हैं। पं०जी इस गांव में प्रचार करते रहे तथा शुद्ध किये परिवारों की देखभाल करते रहे।

ईसाइयों का दूसरा ग्राम बेगमपुर

बेगमपुर के ईसाइयों की शुद्धि १८-९ ५५ को की गई थी। कुल ३३ परिवार शुद्ध हुए थे। जिनकी संख्या १८५ थी। यह सारा गांव शुद्ध हुआ था इसमें भी प्रचार तथा देख-माल का कार्य होता रहा।

ईसाइयों का तीसरा ग्राम लाडोसराय

९-२-५६ को लाडो सराय के ईसाइयों की शुद्धि की गई थी, ५५ परिवार शुद्ध हुए थे। जिनकी संख्या ३६५ है। इसमें ४ घर ईसाई रह गये थे। पादरी इनकी सहायता आज तक कर रहा है यह चारों घर भी महरौली गिरजाघर में हर रविवार को जाते रहते हैं, इस ग्राम में भी प्रचार तथा देख भाल का काम होता रहा।

ईसाइयों का चौथा ग्राम चिराग दिल्ली

चिराग दिल्ली के ईसाइयों की शुद्धि ८-७-५६ को की थी, जिनकी जनसंख्या ५६६ थी। केवल दस-ग्यारह घर ईसाइयों के रह गये थे। पादरी आज तक उनके लिये ४ क्लास तक स्कूल चला रहा है। इसके बाद वह मिडल स्कूल गुड़गांवा में लड़के भेज देता है। मिशन की ओर से उनको भोजन, वस्त्र आदि मिलता है। इस ग्राम में भी प्रचार कार्य तथा देख-भाल का कार्य होता रहा।

ईसाइयों का पांचवा ग्राम मसीहगढ़

मसीहगढ़ के ईसाइयों को शुद्ध किया गया था जिनकी संख्या ५०० है, इस ग्राम का नाम रामगढ़ रखा गया। रोमन कैथोलिक मिशन ने रामगढ़ के शुद्ध हुओं जमींदारों पर ३० मुकद्दमे फोजदारी आदि के चलाये, जो एक साल में सब मुकद्दमे जीत लिये, इसके साथ ही मिशन ने ३५ मुकद्दमे जमीन की बेदखली के चलाये। श्री अफसर माल तथा श्री ए. डी. एम. की अदालत से हम ३५ मुकद्दमे हार गये। परन्तु हमने माननीय चीफ कमिश्नर की अदालत में अपील कर दी। उपरोक्त दोनों अदालतों में मुकद्दमे हारने का यह कारण था कि शहरी इलाका के किसान दिल्ली भूमि सुधार सन् ५५ के कानून से बेदखल हो रहे थे। प्रयत्न करके रामगढ़ के किसान भूमिधर हो गये। माननीय चीफ कमिश्नर की अदालत से

सब मुकद्मे जीत लिये गए ।

फिर मास्टरप्लान के कारण रामगढ़ की खेती की जमीनों को सरकार ने एक्वायर कर लिया, फिर हमने सरकार से रामगढ़ के शुद्ध किये परिवारों को मुआवजा दिलाने के लिए मुकद्मे चलाये, फलस्वरूप बहुत सज्जनों को मुआवजा मिल चुका है, फिर भी कुछ सज्जनों को अभी तक मुआवजा नहीं मिला। मुकद्मे मुआवजा के लिये अभी तक चल रहे हैं आशा है उनको भी जल्दी मुआवजा मिल जायेगा।

रामगढ़ में शुद्धि के समय आर्य समाज की स्थापना कर दी गई थी जिसके साप्ताहिक सत्संग होते रहते हैं। शुद्धि के समय रामगढ़ में आर्य प्राइमरी स्कूल खोला गया था । एक मास्टररखा हुआहै साठ लड़के पढ़ रहे हैं। आर्य समाज रामगढ़ ही इस स्कूल के लिये चन्दा इकट्ठा करता है।

निम्न लिखित ग्राम ईसाइयों के हैं, यह लोग ८० साल से ईसाई हैं। मिशन की ओर से इन्हें सहायता मिलती है। (१) डेरा फतहपुरी बेरी (२) महीपालपुर (३) रंगपुरी यह तीनों ग्राम महरौली के पास हैं (४) खेड़ा खुद (५) भोगल तथा (६) कन्हेई ग्राम जिला गुड़गांवा में इनमें भी प्रचार होता रहता है और शुद्धि के लिये प्रेरणा की जाती है, परन्तु ये लोग लालच में फंसे हुए हैं।

३८वां विश्व ईसाई सम्मेलन बम्बई

बम्बई में २८ नवम्बर से ६ दिसम्बर ६४ तक ईसाई सम्मेलन था। ससार भर के कैथोलिक ईसाई वहां इकट्ठे हो गयेथे। पं.जीमी सार्वदेशिक सभा की ओर से बम्बई २७-११-६४ को काकड़-वाड़ी आर्य समाज पहुंच गए थे। उन्होंने देश-विदेश के आये हुए ईसाइयों, पादरियों, आर्क बिशप, कार्डीनल आदि में सार्वदेशिक सभा की ओर से साहित्य बांटा तथा श्री पोप पाल से भी भेंट का अवसर मिला। उनको अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश तथा सम क्वेश्चन्स आन बाइबल आदि सार्वदेशिकसभा का साहित्य भेंट किया गया। पोप पाल ने मैडल दिया, तथा एक पास जहां ईसाइयों का जलसा ओवल के मैदान में हो रहा था, के लिये दिया। चौपाटी पर समुद्र के किनारे प्रचारार्थ एक विशाल पंडाल बनाया गया था। ३० नवम्बर से ६ दिसम्बर तक उसमें प्रचार किया। सार्वदेशिक सभा की ओर से वहां बड़े बड़े प्रचारकों के व्याख्यान होते रहते थे। पोप पाल के पास सार्वदेशिक सभा का साहित्य पहुंच जाने के बाद आर्य समाज की धाक बैठ गई।

अराष्ट्रिय ईसाई प्रचार निरोध कार्य

श्रद्धानन्द ट्रस्ट और सार्वदेशिक सभा की एक संयुक्तसमिति दिसम्बर ६४ तक कार्य करती रही। २८-६-६४ की अन्तरंग ने निश्चय किया था कि संयुक्त समितिमें ३ प्रतिनिधि श्रद्धानन्द ट्रस्ट के और ३ सार्वदेशिक सभा के रहें। समिति का प्रधान सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त होगा। श्रद्धानन्द ट्रस्ट ने इस कार्य पर होने वाले व्यय का आधा भाग वहन करने की अपनी असमर्थता प्रकट की। उसने केवल १२०००)वार्षिक देना स्वीकार किया। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग का उपर्युक्त निश्चय समुचित था क्योंकि इस कार्य पर कुल व्यय लगभग ३२ हजार होता है। सार्वदेशिक सभा को १२ हजार के मुकाबले में लगभग २० हजार व्यय करना होता। श्रद्धानन्द ट्रस्ट को प्रतिनिधित्व का यह अनुपात स्वीकार्य न जंचा। यह विषय पुनः इस सभा की ८-११-६४ की अन्तरंग में विचारार्थ प्रस्तुत हुआ। अन्तरंग ने निश्चय किया कि श्रद्धानन्द ट्रस्ट १२ हजार रु०वार्षिक दे और उसे इस सभा के ४ प्रतिनिधि संयुक्त समिति में रखने स्वीकृत हों तो संयुक्त समिति कार्य करती रहे अन्यथा सभा कार्यालय अपने द्वारा कार्य कराए।

श्रद्धानन्द ट्रस्ट को यह स्थिति स्वीकृत न हुई। फलतः अन्तरंग सभा ने अपनी ७-२-६५ की बैठक में इस कार्य के संचालन के लिए एक उपसमिति बना दीः—

१. सभा प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी प्रधान
२. सभा मंत्री श्री ला०रामगोपाल जी (संयोजक)
३. सभा कोषाध्यक्ष श्री बालमुकन्द जी आहूजा
४. श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती जी
५. ,, डा० डी० राम जी
६. श्री पं. वासुदेव जी शर्म्मा
७. ,, पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री
८. ,, पं. धर्म्मजित जी जिज्ञासु
६. ,, मिहिरचन्द्र जी धीमान
१०. ,, पं. नरेन्द्र जी
११. ,, डा. महावीरसिंह जी
१२. ,, पं. रामनारायण जी शास्त्री

अब यह कार्य इस समिति की देख-रेख में सीधे सार्वदेशिक सभा द्वारा हो रहा है। इस कार्य पर इस वर्ष सभा द्वारा १८८५४) व्यय हुआ। श्रीयुत पं०शिवदत्त जी कार्यालय में रहकर कार्य के संचालन में योग देते हैं।

कार्य का विवरण

कार्य-विवरण इस प्रकार है:—

(१) मुख्य केन्द्र दिल्ली

दिल्ली अपने आप में ईसाई एवं बहाई मतों के क्रिया-कलाप का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। इसलिए देश के अन्य केन्द्रों की भांति यहां भी इन दोनों तथा अन्य मतों की राष्ट्रविरोधी गतिविधि पर दृष्टि रखते हुए उसके कुप्रभावों के प्रतिकार के लिए पर्याप्त कार्य करना पड़ता है। परन्तु सौभाग्यवश इस कार्य में राजधानी के अनेक आर्य समाज, आर्य समाजी महानुभाव एवं प्रचारक तथा सभा के प्रमुख अधिकारियों का सहयोग प्राप्त रहने से इस कार्य के सम्पादन में पर्याप्त सीमा तक सफलता मिल जाती है। फिर भी समिति इस बात का ध्यान रखती है कि इस महान् नगर के किसी भाग में कोई राष्ट्रविरोधी तत्त्व चुपचाप कार्य करके राष्ट्र को हानि न पहुंचाने पाए। एतदर्थ श्री पं० शिवदत्त जी एंड्रयूज गंज आदि अनेक हरिजनों एवं श्रमजीवी व्यक्तियों की

कालोनियों में महीनों तक प्रतिदिन लगातार २।।—३ घंटे जाकर उनसे मद्यपानादि दोष छुड़ाने का प्रयत्न करते रहे हैं और जिन कालोनियों में ईसाई पादरियों के अथवा उनके एजंटों के समय समय पर आने जाने तथा अपने मत के प्रचार करने के कारण ईसाइयत का कुप्रभाव पड़ गया था, उनमें वहां के कतिपय समझदार देश भक्त श्रमिकों को समझा बुझा कर उनकी सहायता से पं० जी ने इतनी सफलता प्राप्त कर ली कि वहां पादरियों का आना लगभग बन्द हो गया।

ईसाई एवं बहाईमत वाले दिल्ली नगर में अधिकतर अशिक्षित एवं भोले भाले और कुछ सीमा तक उन पढ़े लिखे लोगों में, जो विदेशी विचार-धारा में पले हुए हैं और उस रहन-सहन को छोड़ना नहीं चाहते, अपने विचारों को किस प्रकार से नया रङ्ग रूप देकर प्रस्तुत करते हैं और उनको वास्तविकता का उन्हें ज्ञान तक भी नहीं होने देते—यह एक लम्बी कहानी है। परन्तु सभा को यह महत्व-पूर्ण कार्य भी करना ही पड़ेगा क्योंकि ईसाई आदि मतों के उपर्युक्त हथकण्डों से राजधानी में राष्ट्रविरोधी तत्व लगातार बल प्राप्त करते चले जा रहे हैं।

(२) उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में भी ईसाईमत का पर्याप्त प्रचार हो चुका और हो रहा है। इस राज्य के प्रायः सभी बड़े बड़े नगरों एवं ग्रामों में ईसाइयोंने चर्च, स्कूल एवं हस्पताल स्थापित किए हुए हैं परन्तु इस विकट अवस्था में भी सभा इस राज्य के तीन जिलों में इस वर्ष जो कार्य कर पाई है वह हमारे उपलब्ध साधनों की तुलना में कहीं अधिक उत्साह वर्धक है। इस कार्य का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है—

इस राज्य में ईसाई प्रचार निरोध समिति ने अपना मुख्य केन्द्र अलीगढ़ ही बनाए रखा और मुख्य संघटक श्री डा० रघुवीरशरण जी अपने घर मतरौली में न रहकर किराए के मकान में अलीगढ़ में ही रहे और वहीं से जि० अलीगढ़, जि० मथुरा एवं जि० आगरा मे निरोध प्रचार का संचालन एवं निरीक्षण करते रहे। उन्हें नाममात्र दक्षिणा रूप मे १००) मासिक दिया जाता है। उनके साथ पांच कार्यकर्त्ता प्रचार कार्य करते हैं, जिन के नाम और दक्षिणा राशि निम्न प्रकार है—

(१) श्री पं० शिवचरण लाल जी, ८०) (मासिक)
(२) श्री पं० छाजूरामजी ८०)(मासिक)
(३) श्री पं० काशीनाथ जी ८०) (मासिक)
(४) श्री पं० सोहन लाल जी ७०) (मासिक) तथा
(५) श्री पं० शान्तिस्वरूप जी वानप्रस्थी (जलपानार्थ केवल २५) मासिक दक्षिणा)

परन्तु इन राशियों में ५) साइकिल भत्ता निकालकर शेष आधी दक्षिणा इस राज्य की अरा० ईसाई प्रचार निरोध उपसमितियां देती रही हैं। दूसरे शब्दों में हमारी अथवा समिति को इस केन्द्र के प्रचारकों की दक्षिणा पर मासिक निम्न प्रकार व्यय करना पड़ा है:—

(१) श्री पं० शिवचरण लाल जी ४२,५०
(२) श्री पं० छाजूराम जी, ४२)५०
(३) श्री पं० काशी नाथ जी ३७)५०
(४) श्री पं० सोहन लाल जी ३७)५० और
(५) श्री पं० शान्ति स्वरूप जी २५)

श्री डा० रघुवीर शरण जी के तपोमय नेतृत्व में समिति के इन प्रचारकों ने इस वर्ष में उपर्युक्त तीन जिलों के लगभग ७०० ग्रामों में प्रचार किया और वहां के लगभग एक

लाख व्यक्तियों को ईसाई एवं अन्य मतों के वास्तविक उद्देश्य का ज्ञान करा कर उन्हें भ्रष्ट होने से बचाया तथा लगभग तीन हजार ईसाइयों को फिर से आर्य (हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। यदि हमारे कार्यकर्ता यथा समय न पहुंचते तो कतिपय ग्रामों के लगभग ५०० हिन्दू ईसाइयों के जाल में फंस कर हम से अलग हो जाते।

इस वर्ष में शुद्धियों की उपर्युक्त संख्या लगभग ड्योढ़ी हो सकती थी यदि अतिवृष्टि के कारण अनेक ग्राम लगभग चार मास तक यातायात के अयोग्य न बन गए होते।

इस राज्य के उपर्युक्त तीनों जिलों के प्रचार में वहां के मुख्य संघटक तथा अन्य प्रचारक महानुभाव केवल बसों अथवा साइकलों का ही सहारा नहीं लेते अपितु अनेक ग्रामों तक पहुंचने में उन्हें मीलों पैदल भी चलना पड़ता है। यद्यपि उनका मुख्योद्देश्य यह है कि वे उन आर्यों को शीघ्रातिशीघ्र आर्य धर्म में लौटा लाएं जो किसी समय किसी कारण से अपना प्यारा वैदिक धर्म छोड़कर विदेशीय मतों में जा फंसे हैं तथापि वे इस प्रयत्न में भी रहते हैं कि कथित सवर्ण जातियों को यह समझा सकें कि केवल जन्म के कारण किसी व्यक्ति को नीच मान कर उससे घृणा करना और परिणामतः उसे चिढ़ाकर आर्यधर्म छोड़ने पर विवश करना महा पाप है, जिसका अनुमोदन किसी भी सच्छास्त्र से नहीं होता।

इस राज्य के विभिन्न केन्द्रों के बहुत से ग्रामों अथवा उपनगरों में रहने वाले समझदार लोगों को विपत्तियों से स्वयं बचने तथा दूसरों को बचाने की भावना से सभा की ओर से लगभग एक सहस्र पुस्तिकाएं भी बांटी गईं और यह कहने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि इन पुस्तिकाओं को पढ़ सुनकर सहस्रों व्यक्तियों ने अपने प्राचीन धर्म-वैदिक-धर्म तथा आर्य संस्कृति के प्रति श्रद्धा के भाव प्रकट किए।

विभिन्न केन्द्रों में सभा द्वारा होने वाले कार्य के निरीक्षण का भार इस वर्ष में मुख्य संघटक एवं प्रचारक महानुभावों के ऊपर रहते हुए भी श्री पं० शिवदत्त जी ने इस राज्य के अलीगढ़ तथा मथुरा जिलों के बहुत से ग्रामों में जाकर वहां के लोगों की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करके उन्हें आर्य वैदिक धर्म के सौन्दर्य एवं विदेशी मतों तथा उनके प्रचारकों के खोखलेपन तथा हथकण्डों से अवगत कराया।

इस कार्य-निरीक्षण में उन्हें जहां जहां प्रचार के कार्य की प्रगति में तीव्रता लाने अथवा सुधार करने की आवश्यकता अनुभव हुई, उसके विषय में उन्होंने मुख्य संघटक जी तथा प्रचारक महानुभावों से विस्तारपूर्वक विचार विनिमय भी किया और नई योजनाओं का सुझाव भी दिया। आशा है कि उन योजनाओं को कार्यान्वित करने से इस राज्य में कार्य की प्रगति में पर्याप्त वृद्धि हो जाएगी।

(३) मध्य प्रदेश

इस राज्य में हमारी सभा के अधीन दो केन्द्र स्थापित किए गए हैं—

(१) उज्जैन और (२) लश्कर

उज्जैन केन्द्र के मुख्य संघटक श्री पं० देव प्रकाश जी हैं तथा लश्कर केन्द्र के मुख्य संघटक हैं श्री डा० महावीरसिंह जी।

(१) उज्जैन केन्द्र

इस केन्द्र के मुख्य संघटक श्री पं० देवप्रकाश जी आर्यसमाज के पुराने अनुभवी कार्यकर्ता हैं। इस जिले में ईसाई मत के बहुत से प्रचार केन्द्र हैं। वर्ष के प्रारम्भ में २ पाठशालाएं (प्राइमरी) चल रही थीं परन्तु वर्ष के अन्त में एक रह गई।

इसके अतिरिक्त एक छात्रावास है जिसमें उपस्थिति ५२ रही। अध्यापक प्रारम्भ में २ थे वर्ष के अन्त में एक रह गए। लगभग १६ छात्रों के रहने का प्रबन्ध है। छात्र विभिन्न स्कूलों की विभिन्न श्रेणियों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। ईसाइयों के कपट-जाल से बचाने के लिए ही यह प्रयास किया गया है। इन छात्रों में कुछ ऐसे भी रहे हैं और अब भी हैं जो मुख्य संचटक जी के इस नियम के कारण कि प्रत्येक छात्र के लिए प्रतिदिन सन्ध्या तथा स्वाध्याय करना अनिवार्य है, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से अच्छी परिचिति प्राप्त किए हुए हैं और उन्हें वैदिकधर्म से प्रेम है।

सभा इस छात्रावास के लिए २००) प्रति-मास सहायता के रूप में देती रही है।

इस केन्द्र के द्वारा प्रचार तथा शिक्षा का कार्य चलता रहा है तथा गत २ वर्षों में जो लग-भग ६३ हजार आर्य हिन्दुओं को बहाई मत से हटाकर पुनः अपने धर्म में लाया गया था उनमें वैदिक संस्कृति तथा सिद्धान्त का प्रेम उत्पन्न करने का क्रम चलता रहा।

इस वर्ष में इस क्षेत्र में बौद्धों ने भी हल्ला बोलने का प्रयास किया था परन्तु उसे पर्याप्त सीमा तक समाप्त कर दिया गया है। एतदर्थ पोस्टरों तथा छोटी २ पुस्तिकाओं का विस्तृत वितरण हुआ। इस केन्द्र पर सभा का लगभग ३३००) व्यय हुआ।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के अतिरिक्त इस जिले के-सहस्रों हिन्दुओं को एक विशेष पंथ का अनु-यायी बनने से रोकने के लिए उस क्षेत्र के एक से अधिक माननीय महन्तों के अतिरिक्त केन्द्र के मुख्य संचटक श्री पं० देवप्रकाश जी श्री पं० गणेशदत्त जी तथा श्री बा० रामकृष्ण जी आर्य आदि २ महानुभावों को उनके सक्रिय सहयोग के लिए सभा धन्यवाद देती है।

लश्कर केन्द्र

मध्य प्रदेश में सभा का दूसरा केन्द्र लश्कर में है। इस केन्द्र के मुख्य संचटक श्री डा० महावीरसिंह जी हैं। वे आर्यसमाज के प्रचार कार्य में कितना सहयोग देते रहे हैं और अब भी देते रहते हैं, यह सर्व विदित है।

इस वर्ष उनकी देख-रेख में "लश्कर" एवं "ग्वालियर" क्षेत्रों में अनेक अवैतनिक कार्य-कर्ताओं के अतिरिक्त निम्नांकित तीन प्रचारक कार्य करते रहे:—

(१) श्री पं० श्रीराम जी वैतनिक वानप्रस्थी

(२) श्री पं० जैतराम जी

(३) श्री पं० छोटेसिंह जी

(४) इसके अतिरिक्त ग्राम बरई के उत्साही आर्य श्री पं० द्वारिकाप्रसाद जी भी बिना कुछ लिए अराष्ट्रिय प्रचार निरोध में विशेष योग देते रहे हैं।

श्री पं० शिवदत्त जी उज्जैन केन्द्र के निरी-क्षण के पश्चात् जब लश्कर एवं ग्वालियर के कार्य को देखने गए तो उन्होंने श्री पं० द्वारिका प्रसाद जी तथा श्री पं० श्रीराम जी को साथ लेकर दर्जनों ग्रामों में भ्रमण किया और उससे वह इस परिणाम पर पहुँचे कि बहाइयों की तुलना में हमारे प्रचारकों के पास अल्प साधन होने पर भी उन्होंने बहाइयों के प्रचार को जिस प्रकार से विफल बना दिया है वह बहुत ही स्तुत्य है।

(४) राजस्थान

भारतीय इतिहास में राजस्थान को जो महत्व-पूर्ण स्थान प्राप्त है उस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, केवल इतना कह देना ही पर्याप्त है कि यह राज्य महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के सुस्वप्नों की प्यारी स्थली रह चुकी है। परन्तु दुर्भाग्यवश इस राज्य को विमुख करने का जो दुष्कर कार्य इस्लामी

शासन की तीक्ष्ण तलवार कई सौ वर्षों में भी न कर पाई थी वह कार्य अल्प कालीन अंग्रेजी शासन, विशेषतः स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् केवल १७ वर्ष में, हमारे अपने स्वदेशीय, पर धर्मनिरपेक्ष, शासन में जिस सरलता से और चुप-चाप ढंग से ईसाइयों ने कर दिखाया है, उसका उदाहरण हमारे सारे इतिहास में नहीं मिलता। उन्होंने हमारी इस वीर भूमि की उन भीलादि जातियों को अन्यान्य प्रलोभनों के द्वारा कुछ ऐसे ढंग से अपने जाल में फंसा लिया है कि इस राज्य मे भीलों तक चहुं ओर बसने वाले भील ग्राम पूर्णतया ईसाई बन गए हैं।

इस भयावह स्थिति के अन्त के लिए सभा ने अपना एक केन्द्र ' बांसवाड़ा" में भी स्थापित कर रखा है जिसके मुख्य संघठक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं। श्री स्वामी जी यहां एक दयानन्दाश्रम का संचालन कर रहे हैं जिसका मुख्य कार्य धर्म प्रचार के अतिरिक्त उन छात्रोंके आवास एवं भोजनछादन का प्रबन्ध करना भी है जो स्वयं अथवा जिनके माता पितादि ईसाईमत से पुनः आर्य धर्म में लौट आए हैं और जिन्हें किसी सरकारी छात्रावास में रहने की सुविधाएं उपलब्ध नहीं होतीं। केवल इतना ही नहीं, इस छात्रावास में ईसाई-मतावलम्बी छात्रों को भी वही सुविधाएं प्राप्त हैं जो आर्य छात्रों को मिली हुई हैं।

इस केन्द्र के तपोनिष्ठ संघटक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी इस छात्रावास की समुचित व्यवस्था करने और उसके वातावरण को आर्य वातावरण बनाए रखने के अतिरिक्त जिला बांस वाड़ा के दर्जनों ग्रामों में पुनः पुनः जाकर वहां के उन लोगों को फिर से आर्यधर्म में लाने का यत्न भी करते रहे हैं जो अज्ञान वश अथवा लोभ में फंस कर अपना प्यारा धर्म छोड़ चुके हैं और इस कार्य में पर्याप्त सफलता भी मिली है।

इस केन्द्र के अधीन २ पाठशालाएं भी कई महीनों तक चलती रहीं।

इस केन्द्र द्वारा इस वर्ष कुछ ग्रामों में औषध वितरण का कार्य भी होता रहा है।)

इसके अतिरिक्त श्री स्वामी जी को कुछ ऐसे दुष्कर कार्य भी करने पड़ते हैं जिनमें साधारण आर्य (हिन्दू) उपेक्षावृत्ति का परिचय देते हैं। यथा अप्रैल १९६४ में जब भीमपुरा के निवासी श्री सोमाभील को ईसाई मिशन के कम्पौंड में रहने वाले कुछ लोगों ने लूट लिया और उसे मारा भी तो उसका सुपरिन्टेंडेंट पुलिस के पास एक प्रार्थना पत्र भेजकर अपराधियों को दण्ड देने तथा उसके घर से लूटा हुआ सामान वापिस दिलवाने की याचना की। परन्तु उस भील में अपने अभियोग के निमित्त अपेक्षित वकीलादि का प्रबन्ध करने का सामर्थ्य नहीं था इसलिए सोमा ने एतदर्थ जब स्वामीजी से प्रार्थना की तो उन्होंने सारा प्रबन्ध कर दिया।

यह तो हुआ एक उदाहरण-अन्य भी इसी प्रकार के अनेक शुभ कार्य स्वामी जी करते रहे हैं।

दयानन्दाश्रम की उपयोगिता एक और प्रकार से भी सराहनीय है अर्थात् इसके छात्रावास में रहकर बाहर जाने वाले अनेक युवक वैदिक धर्म के रंग में ऐसे रंगे जा चुके हैं कि वे जहां भी जिस कार्य में भी लगाए गए वहीं पर वे अपना कार्य करने के साथ-साथ अपने आश्रम के ऋण को किसी सीमा तक चुकाने के लिए वैदिक धर्म का सन्देश पहुँचाते रहे और अब भी पहुँचा रहे हैं।

(५) उड़ीसा

अन्य राज्यों की भांति उड़ीसा राज्य में भी

ईसाई अपने मत के प्रचार में पर्याप्त सक्रिय हैं। यहां भी उन्होंने कई स्थानों पर नागालैंड जैसी स्थिति उत्पन्न करने सामान जुटाने की, योजनाएं चालू कर रखी हैं यथा पानपोस में हमारे "पान पोस केन्द्र" के मुख्य संघटक श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने जो गुरुकुल स्थापित किया हुआ है, ठीक उसके पास ईसाइयों ने भी पर्याप्त भूमि खरीद कर अपना चर्चादि बनाने का ढंग सोच रखा है जो किसी शान्तिप्रिय संघठन के अनुरूप नहीं माना जा सकता अतः श्री स्वामी जी महाराज उनकी इस योजना का विरोध कर रहेहैं और एतदर्थ उन्हें अनेककष्ट भी सहने पड़े हैं फिर भी आशा की जा सकती है कि वह अपने संकल्प में कृतकार्य होंगे। सार्वदेशिक सभा उन्हें पूर्ण योग दे रही है।

इस वर्ष श्री स्वामी जी की अध्यक्षता में इस केन्द्र पर हमारी समिति के निम्नांकित प्रचारक एवं अध्यापक तथा चिकित्सक कार्य करते रहे हैं:—

(१) श्री सुकरामुंडा जी (प्रचारक) ८५) (मासिक)
(२) ,, दुःखीश्याम जी (प्रचारक) ८०) ,,
(३) ,, निर्मलमुंडा जी (प्रचारक) ५०) (मासिक)
(४) ,, भास्कर दुतिया जी ,, ६०) ,,
(५) ,, चन्द्रसिंह जी किसान ,, ६०) ,,
(६) ,, लोपोमुंडा जी (अध्यापक) ६०) ,,
(७) ,, सुदर्शनमुंडा जी ,, ६०) ,,
(१ जनवरी ६५ से इनके स्थान पर श्री गुप्ता जी नियुक्त किए गए।)
(८) ,, डा० रघुनन्दन प्रसाद जी (चिकित्सक) दिसम्बर ६४ तक ६०) तदनन्तर १००) मासिक पर।)

उपर्युक्त पांच प्रचारकों, दो अध्यापकों एवं एक चिकित्सक के पुरुषार्थ से इस वर्ष लगभग १००० प्रचार सभाएं आयोजित की गईं। भिन्न-भिन्न श्रेणियों के लगभग १०५ विद्यार्थी प्रतिदिन शिक्षा प्राप्त करते रहे तथा ३६२१ रोगियों को बिना मूल्य औषधदान एवं रोग परीक्षादि की सुविधाएं प्राप्त हुईं।

धान गोला

उपर्युक्त सहायता के अतिरिक्त समिति की ओरसे इस केन्द्र पर एक धान गोला भी स्थापित किया गया है जिससे महंगाई अथवा दुष्काल के समय निर्धन अथवा अल्प आय वाले व्यक्तियोंको उचित मूल्य पर अन्न दिया जाता है। इस धान-गोला का महत्व इसीसे जाना जा सकता है कि ईसाई पादरी आपत्काल मे भोले भाले आदिवासी एवं अन्य व्यक्तियों को अन्न देकर उसके बदले में उन मनुष्यों का धर्म मोल ले लेते हैं जो अन्न का मूल्य लौटाने मे असमर्थ होते हैं। यद्यपि समिति द्वारा स्थापित १०००) के इस धान गोले से कुछ थोड़े से व्यक्ति अथवा परिवार ही लाभान्वित हो सकते हैं तो भी इस से उस क्षेत्रके व्यक्तियों को इतना आश्वासन तो मिल ही जाता है कि हमारे संकट में हमारे अपने धर्म बन्धु भी यथाशक्ति किसी सीमा तक अपना कर्तव्य पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस केन्द्र पर हमारे मुख्य संघटक एवं कार्यकर्ता उन लोगों की सहायता भी करते हैं जिनके विरुद्ध विपक्षी झूठे अभियोग चला कर उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए विवश कर देते हैं।

(६) बिहार

कतिपय कारणों से बिहार राज्य में ईसाइयों को अपने मत के प्रसार में जो सफलता मिली है वह भारत के किसी अन्य राज्य में नहीं मिली। इन अनेक कारणों में से एक मुख्य कारण यह है कि स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् भी दूसरे रूप में अभी तक ऐसे लाखों मानव मिल सकते हैं जिन्हें दोनों समय पेट भर भोजन तथा तन ढांकने के लिए पर्याप्त वस्त्र तक नहीं मिलता।

फिर शिक्षा की तो कथा ही क्या है ?

इन्हीं व्यक्तियों की उपर्युक्त आवश्यकताएं पूरी करने का आश्वासन देकर ईसाई लाखों आदिवासियों को ईसाई बना चुके हैं और इस राज्य में अपना बल इतना बढ़ा चुके हैं कि सवर्ण हिन्दू भी सामान्यतः उनसे टक्कर लेने का साहस नहीं करते।

परन्तु आर्य समाज प्राणपण से निःसहायों की सहायता करता है। अतः इसी उद्देश्य से उसने "महुआडांड" "टैसरा" एवं "हजारी बाग" में अपने तीन केन्द्र स्थापित कर रखे हैं जिनके द्वारा आलोच्य वर्ष में समिति के ४-५ प्रचारक एवं चार अध्यापक धर्म कार्य करते रहे हैं। महुआ डांड में समिति के निम्नांकित प्रचारक प्रचार कार्य करते हैं :—

(१ श्री रोहन केरकेटा जी (२) श्री बुदन राम जी (३) श्री बागुनराम जी तथा ४) श्री बुलुराम जी। दो मास तक श्री प्रमोद नारायणजी भी प्रचार कार्य क ते रहे हैं।

इस क्षेत्र मे ईसाई जिस प्रकार के अत्याचार करते रहे हैं और हमारे प्रचारक उनके प्रतिकार में जो कष्ट उठाते रहे—यह एक लम्बी कहानी है।

टैसरा केन्द्र

यहां पर हमारा एक स्कूल श्री स्वामी श्रद्धानन्द माध्यमिक स्कूल के नाम से चलता है जिसको सहायता के लिए समिति १००) मासिक देती रही है। इस स्कूल मे लगभग १५५ छात्र प्रतिदिन शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। इसमें हरिजन, ईसाई, आदिवासी तथा अन्य प्रकार के बालकों को शिक्षा की सुविधाएं दी जाती रही हैं।

इस स्कूल के अधीन एक छात्रावास भी है। स्कूल को सरकार से भी कुछ सहायता मिलती है।

हजारी बाग

इस केन्द्र पर समिति की ओर से श्री पं० भूपनारायण जी नियुक्त किए गए हैं। श्री पं० जी बिहार सभा के अधीन वर्षों कार्य कर चुके हैं और उन्हें ईसाइयों द्वारा आदिवासियों अथवा अन्य हरिजनादि पर होने वाले अमानुषिक व्यवहारों से निपटने के लिए दौड़ धूप करने का पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो चुका है। इस समिति से उन्हें वेतन के रूप में १५०) मिलता है और शेष अर्थात् भोजन एवं मार्ग व्यय की आवश्यकताओं की पूर्ति वह वहां से प्राप्त दान द्वारा कर लेते हैं।

उन्होंने वहां अनेक अभियोगों में फंसे हुए अनेक आदिवासियों को कष्ट से छुड़ाया, वहां उस क्षेत्र में एक महान् यज्ञ का भी आयोजन किया जिसमें सहस्रों व्यक्तियों ने भाग लेकर अपनी धर्म भावनाओं को दृढ़ किया एवं अनेक योग्य वक्ताओं के प्रवचनों से शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन को सुधारने का सुअवसर प्राप्त किया।

इस वर्ष इस केन्द्र के द्वारा १५७६ ईसाइयों को शुद्ध करके पुनः आर्य धर्म में दीक्षित किया गया।

केन्द्र की इस सफलता से चिढ़ कर ईसाई पादरियों ने अनेक प्रकार की बाधाएं उत्पन्न करने का दुष्प्रयत्न किया, जिनका सामना श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने प्रचारकों की सहायता से बड़ी वीरता और सफलता से करते रहे हैं तथा कर रहे हैं।

अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध के कार्य तथा आदिवासी कहे जाने वाले भाइयों के उत्थान के लिए विविध दान के अतिरिक्त निम्न प्रकार सहायता प्राप्त हुई :—

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की प्रेरणा से
३००) श्री सेठ ओंकारनाथ जी मानिक टाला

मझगांव बम्बई ३ मास की सहायता।

२०००) मोहता चेरीटेबिल ट्रस्ट बम्बई द्वारा श्रीयुत सेठ बद्रीप्रसाद जी मोहता सहायता ८ मास, सितम्बर ६४ तक।

२००) श्रीमती रुक्मिणी देवी जी सोरोत बम्बई ८ मास जनवरी ६५ तक।

२५५) श्री सेठ रावेलाल जी अग्रवाल सहायता ८ मास आदिवासी कहे जाने वाले भाइयों की शिक्षा तथा औषधि के लिए।

सभामन्त्री श्री ला० रामगोपालजी की प्रेरणा से

७००) श्री ला० साईंदास जी (बिजली पहलवान) अमृतसर ने अगस्त ६४ तक ७ मास की सहायता।

२४००) श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिरला द्वारा आर्य हिन्दू धर्म्म सेवा संघ देहली सहायता १ वर्ष मार्च ६४ से फरवरी ६५ तक।

३५०) अन्यों से

दान दाताओं को सभा हार्दिक धन्यवाद देती है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

वार्षिक कार्य विवरण १९६४-६५

समिति की बैठकें-सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति की १९६४ तथा १९६५ में दो बैठकें हुई। फरवरी मास में हुई दल की बैठक विशेष महत्व पूर्ण थी। इसमें सार्वदेशिक रक्षा सचिव श्री मेहर चन्द जी धीमान सम्मिलित हुए। उन्होंने दलकी गतिविधियों को प्रान्तीय अधिकारियों द्वारा सुना। साधनों के अभाव में भी दल की वर्तमान प्रगति के विषय में जानकर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की तथा विश्वास दिलाया कि मैं सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग से दल कार्य को सशक्त बनाने के लिए उचित सहायता प्राप्त करने का यत्न करूंगा। इस बैठक में आगामी वर्ष के लिए निम्न अधिकारियों की नियुक्ति की गई।

प्रधान संचालक—श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी
सहायक प्रधान संचालक—श्री गौरी शंकर जी 'कौशल",
" " "—श्री बाल दिवाकर जी हंस
प्रधान मंत्री—श्री जगदेव जी एम० ए०
शारीरिक शिक्षाध्यक्ष—श्री काशीनाथजी शास्त्री
बौद्धिकाध्यक्ष—श्री आचार्य कृष्ण जी
अर्थाध्यक्ष—श्री कृष्णलाल जी भाटिया
प्रतिष्ठित सदस्य—श्री भगवान दास जी प्रि० दयानन्द कालेज अम्बाला
श्री ठाकुर यशपाल सिंह जी एम० पी०
श्री स्वामी समर्पणानन्द जी
श्री वीरेन्द्र जी, जालन्धर पंजाब
श्री नरेन्द्र जी हैदराबाद

श्री गोरख प्रसाद जी को वैतनिक केन्द्रीय शिक्षक नियुक्त किया गया तथा दिल्ली प्रदेश में दल कार्य को संगठित करने के लिए दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल को उनकी सेवाएं दी गईं। उनके प्रयत्न से इस समय तीन शाखाएं दीवान हाल, लाजपत नगर तथा एडवर्ड पार्क में चालू की गईं। आशा है इस वर्ष दिल्ली में दल कार्य को प्रगति मिलेगी।

पंजाब प्रान्त आर्य वीर दल

पंजाब में दल कार्य की प्रगति का श्रेय वहां के प्रान्तीय संचालक श्री प्रो० उत्तम चन्द जी शरर तथा उनके सहयोगियों तथा प्रदेश की समिति के सदस्यों और अधिकारियों को है। इस समय पंजाब में कुल २० शाखाएं चल रही हैं। दल कार्य को प्रगति प्रदान करने के लिए श्री रामसिंह जी तथा श्री सत्यपाल जी आर्य दो वैतनिक शिक्षक कार्य कर रहे हैं। आर्य वीर दल पञ्जाब में १९६४-६५ में नारायण गढ़, बीकानेर, ओल्डों, यमुना नगर तथा पलवल में शिविरों का आयोजन किया गया। ये शिविर दस-दस दिनों के लिए आयोजित किए गए। इस वर्ष पांच स्थानों पर दल की नवीन शाखाएं स्थापित की गई हैं। इस वर्ष का प्रान्तीय सम्मेलन गुड़गांवां में मार्च में रखा गया जो बड़ा प्रभाव शाली रहा। प्रान्त के विभिन्न स्थानों में भी सम्मेलन रखे गए। २१-२२ नवम्बर १९६४ को श्री गौरी शंकर जी "कौशल" जी के सभापतित्व में रोहतक में एक बैठक हुई। बैठक में गत वर्ष की गतिविधियों पर विचार हुआ और दल का वर्ष भर का आय व्यय का व्यौरा रखा गया तथा कई महत्वपूर्ण निर्णय किए गए।

प्रान्तीय आर्य वीर दल मध्य प्रदेश

आर्य वीर दल मध्य प्रदेश के संचालक श्री बाबूलाल जी तिवारी एक आदर्श एवं मूक कार्य-कर्ता तथा सफल शिक्षक हैं। इस समय प्रान्त में लगभग १०० शाखाएं लगती हैं। श्री ब्रज-मित्र जी मेधावी वैतनिक प्रान्तीय प्रचारक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आर्य वीर दल मध्य-प्रदेश का कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है। गत वर्ष दिसम्बर १९६४ में प्रान्तीय सम्मेलन भूपालमें हुआ। आर्यवीरदल का मध्य प्रदेश की २० पंचायतों पर अपना प्रभाव है। मध्य प्रदेश की अनेक शाखाओं में पुस्तकालय, कार्यालय तथा वस्तु भण्डार और साधना मन्दिर हैं।

मध्य प्रदेश में अभी तक धमरी, सिहोर, गुरुकुल होशंगाबाद, विदिशा, सागर आदि स्थानों में शिविर लग चुके हैं।

आर्य वीर दल मध्य प्रदेश का अपना एक व्यवस्थित कोष है जिसमें लगभग १७ हजार रुपये की आय और १५७५० रुपये का व्यय है। जिसमें आय का साधन वीर निधि है।

अन्य साधन--५००) रुपये का अनुदान मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा।

२००) का अनुदान आर्य समाज भोपाल द्वारा।

सार्वदेशिक प्रधान संचालक श्री कौशल जी के भ्रमण से आर्य वीरों को विशेष उत्साह मिला। श्री बाबूलाल तिवारी प्रान्तीय संचालक ने भ्रमण किया तथा नवीन स्थानों पर नवीन शाखायें खोलीं। विदिशा मण्डल के ग्राम अंडिया में आर्य वीरांगनादल की स्थापनाहुई।

इन दिनों मध्य प्रदेश में बैरसिया, विदिशा, बाड़ी, सागर, छतरपुर, महाराजपुर आदि मण्डलों में अभूतपूर्व सफलता के साथ शाखाएं चल रही हैं। शाखाओं में आर्यवीरों की दैनिक उपस्थिति का मध्यमान निम्न प्रकार है:—

५००० साधारण आर्य वीर, १५०० व्रति आर्य वीर, १५० दीक्षित आर्य वीर।

उत्तरप्रदेश आर्यवीर दल

श्री आदित्यकिशोरजी तथा भूतपूर्व संचालक श्री वेदप्रकाश जी के कुशल नेतृत्व में आजम-गढ़, गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, जौनपुर, गोरखपुर, बस्ती, गोंडा, बहराईच, सीतापुर, हरदोई, शाहजहांपुर, पीलीभीत, बरेली, मेरठ, मुजफ्फर नगर, देहरादून, अलीगढ़, मैनपुरी,

लखनऊ, कानपुर, झांसी, मुरादाबाद, आगरा, बाराबंकी, फैज़ाबाद और बलिया आदि ३० जिलों में किसी न किसी रूप में अपने उद्देश्यों की पूर्त्यर्थ कार्यरत हैं। शाखाओं का विस्तार लगभग ५०-६० के है।

उत्तर प्रदेश आर्यवीर दल की ओर से प्रांत भर में अनेकों स्थानों पर सम्मेलनों, शिविरों, सेवा-कैम्पों व उत्सवों आदि के विभिन्न रोचक प्रोग्राम रखे गए जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा तथा दल को सुदृढ़ बनाने में सफलता मिली। मेले में सेवा कार्य से जन-सम्पर्क स्थापित करने एवं वास्तविक सेवाएं देकर दल ने एक आदर्श स्थापित किया है। अनेकों खोये हुए बच्चों को उनके अभिभावकों तक पहुंचाया, शिक्षण शिविर में प्रशिक्षित आर्य वीरों ने अनेक नये स्थानों पर जा जाकर नई शाखाओं की स्थापना की है। यह भी गौरव की बात है कि पूर्वी क्षेत्र मे एक शिक्षक की व्यवस्था स्थायी रूप से कर दी गई है।

प्रान्तीय आर्यवीर दल राजस्थान

इसप्रान्त में आर्य वीर दल के संचालक श्री जेठमल जी आबू रोड निवासीहैं। इस प्रान्त में निम्न स्थानों पर नियमित शाखाएं चलती हैं।
(१) आबू रोड दो स्थानों पर (२) सिरोही
(३) जोधपुर—दो स्थानों पर (४) बालोतरा
(५) अलवर।

सभी शाखाओं में मिल कर लगभग २५० आर्य वीर भाग लेते हैं। समय-समय पर सेवा कार्य होता रहता है।

प्रान्तीय आर्य वीर दल बंगाल

इस प्रान्त में प्रादेशिक संचालक श्री ब्रह्मदेव सिंह जी हैं। बंगाल प्रांत आर्यवीर दल की आय १५८७ रु० हुई तथा व्यय भी १५८७ रु० हुआ।

बंगाल आर्य वीर दल में शाखाएं थोड़ी हैं परन्तु सेवा कार्य की दृष्टि से बंगाल आर्य वीर दल सदा अग्रणी रहा है।

दल में १०० दीक्षित, ११० व्रती तथा ५० साधारण आर्य वीर हैं। दल कार्य पर १६०० रुपये व्यय किए गए। पूर्वी पाकिस्तान में जब हिन्दू अल्प संख्यकों पर अत्याचार हुए तो वहां से आए हुए हिन्दुओं की सेवा हेतु सार्वदेशिक सभा ने बंगाल मे कैम्प खोले। आर्य वीर दल बंगाल ने भी इस कार्य में सभा को पूरा सहयोग देकर अपने कर्तव्य को निभाया।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

प्रान्त में दल का सचालन करने के लिए प्रान्तीय समिति का निर्माण हुआ जिसके सचालक श्री मनोहर लाल जी बगाई ऐडवोकेट हैं।

इस प्रदेश मे एक शिक्षक की नितान्त आवश्यकता थी, शिक्षक के अभाव में ही दल प्रगति की ओर नहीं बढ़ पाता था। सौभाग्य से सार्वदेशिक सभा ने दिल्ली प्रदेश के लिए श्री गोरख प्रसाद जी को वैतनिक शिक्षक नियुक्त किया है। आशा है कि आगामी वर्ष में दल का विस्तार अधिक से अधिक होगा।

जगदेव, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

उपसंहार

वर्ष का कार्य विवरण समाप्त करने से पूर्व यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि सर्वश्री अमृतलाल करसन जी पटेल (बम्बई), पं०देवदत्त जी मौद्गल्य (म० प्र०), पं०ब्रह्मदत्त जीजिज्ञासु, मुनि मेधाव्रत जी आचार्य (येवला, नासिक), बलदेव भाई आर्य (बम्बई), मधुसूदन राव जी (आंध्र), चंचल बहिन जी (टङ्कारा), सेठ चम्पा लाल पोद्दार (कलकत्ता),का वियोग सहन करना पड़ा। इन सबका निधन आर्यसमाज की महती क्षति है।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

शेष-पत्र दिनांक २८-२-१९६५

दातव्य		
स्थिर निधियां		
वेद प्रचार	१००,०००-००	
देश देशान्तर प्रचार	५०,०००-००	
रक्षा निधि	२५,०००-००	
हुतात्मा परिवार सहायता	१५,०००-००	
ऋषिकेश भवन	१४,०००-००	
आर्य साहित्य प्रकाशन	२०,७४९-८४	
चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक प्रकाशन	५,०००-००	
श्री भवानीलाल गञ्जूलालजी शर्मा अमरावती वेद प्रचार	५,०००-००	
श्री मूलचन्द बजरंगलाल जी आर्य साहित्य प्रकाशन	५,०००-००	
श्री डा० सूर्यदेव जी शर्मा	४,०००-००	
श्री गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट	२,०००-००	२४५,७४९-८४
भवन फण्ड		१४,२५०-००
विशेष निधियां		
दलितोद्धार	१,४४१-७४	
दयानन्द आश्रम	२,४९५-८०	

सम्पत्ति तथा प्राप्तव्य			
भूमि तथा भवन			
महर्षिदयानन्द भवन नईदिल्ली	४४८,८००-००		
श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली	२८,९७५-००		
सार्वदेशिक भवन दिल्ली	२३,२७५-००		
ऋषिकेश भवन ऋषिकेश	१४,०००-००		
शोलापुर आर्य समाज मन्दिर	१४,९२२-६२		
श्रद्धानन्द नगरी नई दिल्ली	६,६६३-००		
गाजियाबाद भूमि	३०,०१३-५०		५६६,६४९-१२
इन्वेस्टमेंट			
हिस्से सार्वदेशिक प्रकाशन लि० दिल्ली १३२० हिस्से प्रतिहिस्सा १० रु० का ७-५० पैसे प्रति हिस्सा भुगतान हुए	९९००-००		
३ हिस्से १० के पूरे भुगतान हुए	३०-००	९,९३०-००	
हिस्से आर्य साहित्य मंडल लि० अजमेर १ हिस्से १०)के हिसाब से पूरे भुगतान हुए		१०-००	

श्रद्धानन्द नगरी	६,६६३-००	
ब्याज विविध निधियों का	९,१२६-७६	१८,७३२-३०
पीड़ित सहायता निधियां		
जनरल	४३,७८६-४२	
हरयाणा	२,४४८-२७	
बिहार	३१२-००	
पूर्वी बंगाल	८१,६४७-७७	१२८,१९४-४६
दक्षिण भारत प्रचार निधियां		
हैदराबाद स्टेट मन्दिर निर्माण	५,०५४-४१	
आर्य समाज कारकल मन्दिर	१,०२५-००	६,०७९-४१
विदेश प्रचार निधियां		
अमरीका	४,५००-००	
बिड़ला	११,२२०-८८	
उपदेशक मार्ग व्यय	२१३-७५	
लन्दन आर्य समाज मन्दिर निर्माण	१,०००-००	१६,९३४-६३
प्रकाशन निधियां		
श्री भवानीलाल शर्मा अमरावती सत्यार्थप्रकाश	५०००-००	
श्री देवव्रत धर्मेन्दु	२,०००-००	
उड़िया सत्यार्थ प्रकाश छपाई सहायतार्थ	१,०००-००	८,०००-००

हिस्से मोहिनी शुगर मिल्स लि० कलकत्ता, १०० साधारण हिस्से प्रत्येक १०) का पूरे भुगतान हुए		१,०००-००	
हिस्सा अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल्स लखनऊ १ प्रीफरेन्स हिस्सा १००) का पूरा भुगतान हुआ		१००-००	
हिस्से बालकन इन्श्योरेन्स कं०लि० बम्बई प्रत्येक हिस्सा १००),१०) के हिसाबसे प्रत्येक हिस्सेके भुगतानहुए		१५०-००	
हिस्से हिन्दुस्तान कमर्शल बैंक लि. कानपुर ५ साधारण हिस्से प्रत्येक १००) का, ५०) के हिसाब से प्रत्येक हिस्से के भुगतान हुए		२५०-००	
		११,४६०-००	
इलाहाबाद बैंक लि. दिल्ली फिक्सड डिपोजिट		२४०,०८३-८०	२५१,५४१-८०
ऋण			
सुरक्षित मकानों तथा भूमि पर		७२,५००-००	
असुरक्षित		२,०००-००	७४,५००-००
फर्नीचर टाइपरायटर आदि			
शेष १-३-६४ को	१५ ८९९-१६		
इस वर्ष में वृद्धि	२.१८२-८८	१७,०८२-०४	

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा निधि		२२,८०१-८६
हिन्दी निधि		२२६,७३१-१२
हुतात्मा सुमेरसिंह निधि		३०९-५०
अन्य निधियां		
दयानन्द पुरस्कार	४२,५२५-००	
अनुसन्धान	५,००६-८७	
गोरक्षा आन्दोलन	६,८४०-९२	
उपदेशक विद्यालय	१,४११-००	
बंगाल प्रचार	४,१६२-८७	
आर्य नगर गाजियाबाद (सुरक्षित होने वाले)	१२,६४०-२५	
श्री ला बाबूराम शाहदरा स्मारक	३६,५१५-८१	
वसीयत किशोरीलाल	२,६३८-२८	११४,७४१-००
स्टाफ प्रोवीडेन्ट फण्ड		१६,०४८-१५
धरोहरें		
आर्य समाज कराची	११,७१३-१२	
आर्य सभा मौरीशस	२,४९८-८०	
आर्यसभा मौरीशस के आर्य मन्दिरों की मरम्मतार्थ	८५२-००	
दयानन्द विश्व विद्यालय	२,०००-००	
श्री मोहनलालजी मोहित मौरीशस	२,७८९-९५	
किरायेदारों की अमानतें	१२,७५०-००	
विविध	५ ७३३-४७	३८,३३७-५४

न्यून घिसाई		१,७००-००	
		१६,३८२-०४	
बाबूराम औषधालय शाहदरा		४७५-१०	
अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार नि. केन्द्र अलीगढ		२१०-००	१७,०६७-१४
स्थिर पुस्तकालय			
शेष १-६-६४ को	९,११४-८९		
इस वर्ष की वृद्धि	४७२-६४	९,५८७-५३	
न्यून घिसाई		५८५-००	९,००२-५३
बिजली तथा नल फिटिंग			
शेष १-३-६४ को		१,९९९--००	
न्यून घिसाई		१९९-००	१८००-००
डिपोजिट्स			
दिल्ली इलैक्ट्रिक सप्लाई अण्डरटेकिंग		१,१४८-३६	
दिल्ली नगर निगम		४५०-००	
दिल्ली टेलीफोन डिस्ट्रिक्ट मैनेजर		१००-००	
प्रेस क्राइव्ड अथोरिटी रेगुलेटेड एरिया गाजियाबाद		१०,९४७-०६	१२,६४१-४२
प्राप्तव्य किराया तथा ब्याज			
किराया रहन के मकानों से		३२,७०८-००	

देय वेतनादि		
कर्मचारी अराष्ट्रिय ईसाई प्र. नि. संयुक्त समिति	१,२२२-०७	
सभा कर्मचारी व अन्य बिलों के	४,१७०-३१	५,३९२-३८
उचन्ती		
जनरल	५,६१४-५६	
पुस्तकों के कनसाइनमैंट बेसिसपर	११,०८३-३१	
आर्य नगर गाजियाबाद भूमि	२१,२१०-१६	३७,९०८-०३
महानिधि	२५३,५७८-८२	
इस वर्ष का अधिक व्यय	१४,२५२-९७	२३९,३२५-८५

किराया सभा के मकानों से		९,०६७-५९	
किराया साइन बोर्ड के स्थान का		१,५४१-५८	
ब्याज बैंकों तथा अन्यों से		११,३४७-३४	५४,६६४-५१
प्राप्तव्य			
प्रदेशीय सभाओं से			
उत्तर प्रदेश	१,३३६-९८		
अन्यों से	१,२८०-५९	२,६१७-५७	
केशवार्य हाईस्कूल हैदराबाद दक्षिण		२१,००१-००	
अ० भा० स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट		४,६७४-११	
श्री खुशहालचन्द जी कोहली राउरकेला (उड़ीसा)		१,०००-००	
श्री रघुवीरप्रसादजी गुप्त कोषाध्यक्ष आर्य समाज रि० सो० कलकत्ता		१,६६२-६४	
कार्यालय कर्मचारियों को अगाऊ		१,१३१-१८	
अन्यों से			
गत वर्षों के	३,६८४-५८		
इस वर्ष के	३,२७३-२२	६,९५७-८०	४३,१७३-५०
देनदार पुस्तकों के			
गत वर्षों के		२,९८५-६७	
इस वर्ष के		१,१६६-६१	४,१५२-२८

ऋण स्टाफ (प्रोवीडेंट फण्ड)		५६६-००
उचन्ती		
आर्य नगर गाजियाबाद		२१,२१०-१६
स्टाक पुस्तकों का		७५,३७४-७६
स्टाक कागज का		१,८६६-४१
नकद तथा बैंकों में		
इलाहाबाद बैंक लि. दिल्ली से. फ.	७,४५६-७७	
पंजाब नेशनल बैंक लि अजमेरीगेट नई दिल्ली (चलत)	४४४-७१	
पंजाब नेशनल बैंक लि. अजमेरीगेट नई दिल्ली से. फ.	३०५-१०	
(कर्मचारी प्रोवीडेंट फण्ड)		
नक्द कार्यालय में	४-८३	८,२१४-४१

योग १,१४२,८३६-०७   योग १,१४२,८३६-०७

नई दिल्ली
१६-६-१६६५

हमारी आज की पृथक् रिपोर्ट के अनुसार प्रमाणित
(ह०) नारायणदास कपूर
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

(ह०) प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास (ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक (ह०) बालमुकन्द आहूजा (ह०) प्रेमचन्द्र (ह०) रामगोपाल
प्रधान   कार्यालयाध्यक्ष   कोषाध्यक्ष   एकाउन्टेन्ट   मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आय-व्यय १-३-१९६४ से २८-२-१९६५ तक

व्यय

वेतन कर्मचारी कार्यालय	१६,६८९-७८	
न्यून दत्ताश लेखक पुस्तक भण्डार		
व सार्वदेशिक पत्र	१,२००-००	१५,४८९-७८
प्रोवीडेण्ट फण्ड सभा का भाग		९३५-१०
कार्यालय		
मागव्यय	६९३-७२	
स्टेशनरी तथा छपाई	१,५७९-४७	
टेलीफोन व तार	१,१८४-३७	
पानी व बिजली	१,१६४-५०	
डाक	९८२-२४	
विविध	१,७५३-३४	७,३५७-६४
अधिवेशन व्यय		७०४-८७
मार्ग व्यय अन्तरंग सदस्य		१,२०३-१५
मार्ग व्यय विधान उपसमिति सदस्य		१०१-३०
विद्यार्य सभा		
विविध व्यय-लेखक इत्यादि का	९७४-६४	
न्यून आय (परीक्षा शुल्क आदि)	५६-००	९१८-६४

आय

पचमाश (सम्बद्ध प्रदेशीय			
सभाओं से)	४,१११-५८		
दशाश (सम्बद्ध समाजों से)	१०१-००		
प्रतिनिधि (सदस्यता) शुल्क	१७४-००		४,३८६-५८
दान			
आर्य समाज स्थापना दिवस	५७६-५०		
वेद प्रचार	६७४-००		
आदि वासी (वनवासी) उत्थान	२५००-००		
वनवासियों की शिक्षा तथा			
औषधिया वितरणार्थ	२५५-००		
ईसाई प्रचार निरोध			
जनरल	३,४५०-००		
बम्बई ईसाई			
काफ्रेंस प्रचार निरोध			
साहित्य के लिए	१३,३०७-५०	१६,७५७-५०	२०,७६३-००
किराया मकान			
महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली	६१,५००-००		

सभा भवन		
१—महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली		
(क) टैक्स	६,७६८—६२	
ख) मरम्मत	५१७—३०	१०,२८०—६२
२—श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली		
(क) टैक्स	६६६—६४	
(ख) मरम्मत	१,३३६—६६	
(ग) बिजली व पानी	५७—१४	२,३६३—७४
३—सार्वदेशिक भवन दिल्ली (टैक्स)	२३३—००	
४—शाहदरा मकान (टैक्स)	१२—६५	१२,८६०—६१
व्यय आर्य नगर गाजियाबाद		५१६—४७
सार्वदेशिक पत्र		
छपाई कागज आदि	६,११८—७०	
न्यून-आयग्राहक चन्दा आदि	४,७१८—६४	१ ४००—०६
न्याय सभा		३४२—२७
प्रचार		
ईसाई प्रचार निरोध		
सभा द्वारा	७,०१६—२३	

श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली		४,१७२—८८	
सार्वदेशिक भवन, दिल्ली		२,०४०—००	
शाहदरा मकान		९३—००	
किराया अदत्त(रहन के मकान से)		७५६—००	६८,५६१—८८
आर्य वीर दल संगठन			
व्याज रक्षा निधि		७५०—००	
दल सहायता		५०—०	८००—००
व्याज जमीन (रहन) तथा बैंकों से			१३,५०२-०३
विविध आय			
विज्ञापन (साइनबोर्ड) महर्षि दयानन्द भवन			१,५००-००
पुस्तक भण्डार बिक्री			
इस वर्ष की बिक्री	१५,३६७ २०		
शेष स्टाक			
२८-७-६५	७५,३७५-७६	८६,७४१-६६	
गतवर्ष का स्टाक	७५,५५६-४२		
इस वर्ष में खरीद तथा छपाई	१७,१५१-६३	८७,७०८-०५	
		२,०३३-६१	
न्यून व्यय वेतन लेखक, डाक व्ययादि		२,०२६-६७	३-९४
अनुसन्धान निधि से		५,८७३-६२	

अराष्ट्रिय ई० प्र० नि०
संयुक्त समिति को
आधा भाग   ११,२३७-६४
१८,२४४-१७
बम्बई ईसाई कांफ्रेंस के
अवसरपर साहित्य
प्रकाशन व वितरण
द्वारा प्रचार   १४,२६५-०४   ३२,५४९-२१
दक्षिण भारत   ९१-८०
साहित्य प्रचार   ९३४-६५   ३३,५७५-९६

व्यय अभियोग

सभा के कार्यकर्ता का वेतन
तथा मार्ग व्यय   ३,५०६-९६
विविध अभियोगों का   ९,६२९-५५   १३,१३६-५१

व्याज

विविध निधियों को   १३,३८०-००
प्रोवीडेंट फण्ड को   ७९१-३०   १४,१७१-३०

विविध सहायता   २,४७८-८०

आर्य वीर दल संगठन   ४६४-२४

प्रीमियम आग बीमा सभा के भवन   १,३३७-००

विविध व्यय स्थिर पुस्तकालय   ९-७०

व्याज अनुसन्धाननिधि   १५०-००   ६,०२१-६२

पूर्वी बंगाल हिन्दू पीड़ित सहायता निधि

सभा में सीधे प्राप्त   ७८,९७९-६३
श्रीयुत के० नरेन्द्र जी
मालिक 'दैनिक प्रताप'
व 'वीर अर्जुन' नई दिल्ली
द्वारा   ५१,०००-००   १२९,९७९-६३
आर्य समाज रिलीफ
सोसाइटी कलकत्ता ६,६६२-७६
श्री के० नरेन्द्र जी मालिक
दैनिक 'प्रताप व वीर अर्जुन'
नई दिल्ली (आर्य समाज
कलकत्ता द्वारा)   २,५००-००   ९,१६२-७६
आर्य केन्द्रीय समिति मेरठ   ७,२००-००
आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्य दक्षिण   १,३०५-७४   १४७,६४८-१३

श्री ला० बाबूराम आर्य शाहदरा
स्मारक निधि से   १,३५६-४२
व्याज ,, ,, ,,   १,१३५-००   २,४९१-४२

आय से अधिक व्यय (महानिधि से)   १४,२५२-१७

घिसाई (फर्नीचर. स्थिर पुस्तकालय व सभा के भवनों पर		१६,७३४–००
अनुसन्धान निधि		
दक्षिण अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग	६०००–००	
अन्य व्यय (टाइप कराई आदि)	२३–६२	६,०२३–६२
व्यय पूर्वी बंगाल हिन्दू पीड़ित सहायता		
आर्य समाज रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता द्वारा	३३,४७०–१२	
गुरुकुल काउर चण्डी पूर्वी बंगाल पीड़ितों के बच्चों की शिक्षा में	१,५००–००	
हस्तिनापुर केन्द्र में पूर्वी बंगाल से आए पीड़ितों की सहायता में आये केन्द्रीय समिति मेरठ द्वारा	११,२००–००	
नागार्जुन सागर (आन्ध्रप्रदेश) में आये पूर्वी बंगाल पीड़ितों की सहायता में आर्य प्रतिनिधि-सभा मध्य दक्षिण द्वारा	१२,३०५-७४	
सभा कार्यालय द्वारा	७,५२४–५०	६६,०००–३६

शेष बचा हुआ धन—शेष-पत्र मे पृथक निधि को		८१,६५८-७७		
व्यय श्री ला० बाबूराम आर्य शाहदरा स्मारक औषधालय				
वेतनादि वैद्य	१,१४६-६४			
औषधियां तथा अन्य व्यय	१,३४१-४८	२,४९१-४२		
योग		७७६,६३३-५७	योग	७७६,६३३-५७

नई दिल्ली
दिनांक १९-६-६५

हमारी आज की पृथक् रिपोर्ट के अनुसार प्रमाणित
(ह०) नारायणदास कपूर
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट

(ह०) प्रतापसिंह शूरजीवल्लभदास	(ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक	(ह०) बालमुकन्द आहूजा	(ह०) प्रेमचन्द्र	(ह०) रामगोपाल
प्रधान	कार्यालयाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष:	एकाउन्टेन्ट	मन्त्री

परिशिष्ट

(प्रदेशीय सभाओं के वार्षिक संक्षिप्त
विवरण अगले पृष्ठों में पढ़ें)

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर [illegible]

१	ऋग्वेद संहिता सजिल्द	१०)
२	अथर्ववेद संहिता सजिल्द	८)
३	यजुर्वेद संहिता सजिल्द	४)
४	सामवेद संहिता सजिल्द	३)
५	सत्यार्थ प्रकाश	२॥)
६	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७	संस्कार विधि	१)
८	आर्याभिविनय	॥)
९	कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१०	मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
११	पंचमहायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१२	वेदविरुद्ध मत खंडन	)३५
१३	सत्य धर्म विचार	) ५
१४	शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारण	)२५
१५	भ्रमोच्छेदन	)२०
१६	काशी शास्त्रार्थ	)२०
१७	भ्रान्ति निवारण	)३५
१८	सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास	)२५
१९	विवाह पद्धति	)५०
२०	गोकरुणानिधि	)१६
२१	आर्य वीर दल बैजज	)३१ जोडी
२२	आर्य समाज प्रवेश पत्र	१) सै०

ओ३म् ध्वज नैट मूल्य पर

२४	ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०। इंच मूल्य	२)५०
२५	ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच	४)२५
२६	ओ३म् ध्वज४५ इंच × ६७। इंच	६)५०

निम्न प्रकाशन २० प्रतिशत नैट कमीशन पर दिए जायेंगे।

१	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	३)५०
२	वैदिक ज्योति (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)	७)
३	शिक्षण तरंगिणी ,,	५)
४	मसाबीहुल इस्लाम (उर्दू) ,,	मूल्य ५)
५	Wisdom of the Rishis (GuruduttaM A)	४)

निम्न पुस्तकों पर इस प्रकार कमीशन दिया जायगा

१०) से २५) रु० तक १२॥ प्रतिशत,
२६) से ऊपर २५०) तक २० प्रतिशत,
२५०) से ऊपर १०००) तक २५ प्रतिशत,
[illegible] १०००) [illegible] ३० प्रतिशत

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१	यम पितृ परिचय	२)
२	वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३	वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४	अभ्यास और वैराग्य	१)६५
५	बाल संस्कृति सुधा	)५०
६	वैदिक ईशवन्दना	≈)॥
७	वैदिक योगामृत	॥≈)
८	दयानन्द दिग्दर्शन	॥।)
९	वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	।।)
१०	निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
	निज जीवनवृत्त वनिका सजिल्द	)७५
११	बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१२	बालजीवन सोपान	१।
१३	छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३
१४	दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥)
१५	वेदान्त दर्शन (संस्कृत में)	३)
१६	वेदान्त दर्शन भाषा भाष्य	३)५०
१७	वैदिक वन्दन	५)
१८	भ्रम निवारण	)३०
१९	वैशेषिक दर्शनम् अजिल्द	२)
२०	वैशेषिक दर्शनम् सजिल्द	२)५०

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१	कर्मव्यवस्था	४)
२	दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।=)
३	चरित्र निर्माण	१)१५
४	ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	)१५
५	वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	)२५
६	दौलत की मार	।)
७	अनुशासन का विधान	।)
८	धर्म और धन	।)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१	योग रहस्य	१।)
२	मृत्यु और परलोक	१)
३	विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥≈)
४	उपनिषदें — ईश ।≈) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।=) मुण्डक ।≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)	
५	[illegible]	३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

१ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १॥)
आर्योदय काव्यम् उत्तरार्द्ध १॥)
२. वैदिक संस्कृति १।)
३. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।≈)
४. आर्यसमाज और सनातनधर्म ।≈)
५. आर्यसमाज की नीति ।)

श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री कृत

१. दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश २)५०
२. वैदिक युग और आदि मानव ४)
३. वैदिक विज्ञान विमर्श)७५

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

१. आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥≈)
२ कथा माला ॥)
३. सन्तति निग्रह १॥)
४. नया संसार ≈)
५. आदर्श गुरु शिष्य ।)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

१. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)
२. भक्ति कुसुमाञ्जलि ॥)
३. हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

१. आर्यसमाज के महाधन २॥)
२ वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

१. धर्म और उसकी आवश्यकता १)
२. वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप १॥)
३. इजहारे हकीकत (उर्दू में) ॥≈)

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु कृत

१. वेद सन्देश)७५
२ वैदिक सूक्ति सुधा)५०
३. दयानन्द वचनामृत)३०

श्री पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

१. गीता विमर्श ॥)
२. गीता समीक्षा १)
३. गीता की पृष्ठ भूमि)४०

४. ऋषि दयानन्द और गीता)६५
५. आर्यसमाज का नवनिर्माण)१२

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी कृत

१; कांग्रेस का सिर दर्द ॥)
२. आर्य समाज और साम्प्रदायिकता ।-)
३. आर्य वीर दल शिक्षण शिविर ।≈)
४ आर्य वीर दल का स्वरूप और योजना ≈)
५. आर्यवीरदल लेख माला १॥)

अन्य विद्वानों कृत

१ विरजानन्द प्रकाश (प. भीमसेन शास्त्री) २)
२. स्वराज्य दर्शन (श्रीपं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
३. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
४ भूमिका प्रकाश संस्कृत में)
(पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)
५. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥)
६. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर(कृष्णचन्द्र विरमानी)१।)
७. भजन भास्कर
(संग्रहकर्ता डा०हरिशंकर शर्मा कविरत्न) १॥)
६. आर्य डायरेक्टरी (पुरानी) १।)
१०. सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य
विवरण-अजिल्द २)
११. आर्य पर्व पद्धति (प० भवानीप्रसाद कृत) १।)
१२. वैदिक ज्ञान प्रकाश (मास्टर शान्त))३७
१३. सन्ध्या पद्धति)१२
१४ सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
१५. सार्वदेशिक सभा के निर्णय)४५
१६. आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
१७ आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण १)
१८ आर्यसमाज का परिचय १)
१९ साम संगीत)५०
२०. उत्तरा खंड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द
अजिल्द)६२ सजिल्द)७५
२१. भारत में मुस्लिम भावनाओंका एक रूप
(श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी) सजिल्द मूल्य २)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

१. ईसाई षड्यन्त्र ।)
२. ईसाई पादरी उत्तर दें)३

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली-७में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।



श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती के शव को सार्वदेशिक सभा के कर्मचारियों द्वारा
श्रद्धाजलि प्रदान किये जाने की एक झाकी



श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के शव की अन्तिम झांकी
(निगमबोध घाट पर)

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के जीवन का निर्माण तथा निर्वाण

[श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा गौर]

लगभग सन् १९०६ या १० में भरतपुर के प्रमुख डाक्टर श्री सुखदेव जी तथा श्री बाबू महेश प्रसाद जी (सम्भवतः स्टेट में जज थे) दोनों ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज मथुरा के सहयोग से प्रथम आर्य समाज मन्दिर मथुरा में ही श्री विरजानन्द साधु आश्रम की स्थापना कराई थी। यह आश्रम था तो राजस्थान आ० प्र० नि० सभा की ओर से, किन्तु निरीक्षण आ०स० मथुरा का था। उन दिनों आर्य समाज मथुरा के श्री मोहनलाल जी पाण्डे और प० दयाशंकर जी औदीच्य तथा श्री रमणलालजी प्रमुख कार्यकर्ता थे। रमणलाल जी की मथुरा के बड़े बाजार में स्टेशनरी आदि की दुकान थी। श्री पं० सोमदेव चौबे भी थे। आ० स० मन्दिर में ही आश्रम चालू हुआ था उसमें अमृतसर निवासी श्री पं० आर्यव्रत जी (पीछे सन् १९१२ अप्रैल में स्वामी अनुभवानन्द जी (शान्त) कुछ काल संस्कृत पढ़ाते रहे हैं। ये संस्कृत, अरबी, फारसी, अंगरेजी, बंगला आदि अनेक भाषाओं के पण्डित थे।

यमुना के पूर्वी तट पर आश्रम का निर्माण

कुछ काल पश्चात् आर्य समाज मथुरा के मन्दिर से उठ कर आश्रम यमुना के पूर्वी तट पर चला गया। ईशान कोण में एक लाल पत्थर का घाट था (जो टूटी फूटी स्थिति में अब भी विद्यमान है) इस घाट से पूर्व की ओर (घाट से लगा हुआ ही) आश्रम का निर्माण हुआ था। कच्चे कोठे और कोठों के आगे छप्परों के बरामदे थे। ईशान कोण में पाठशाला थी, उसके साथ ही बरामदा था जिसमे बैठ कर छात्र भोजन किया करते थे। आश्रम के आंगन में १ विशाल जामुन का वृक्ष और १ कुआ भी था--जो सम्भवतः अब भी विद्यमान हैं। पश्चिम की ओर—यमुना जलीय तट की ओर आश्रम में चढ़ने उतरने की ५-७ पक्की सीढ़ियां भी थीं। आगे रेतीला तट और वही लाल पत्थर का घाट था। आश्रम के भवन निर्माण काल में ही २० वर्षीय धूलिया बालक भी पहुँच गया।

वृन्दावन से पूर्व की ओर पानी नामक ग्राम निवासी साधारण परिवार का एक ब्राह्मण बालक भी आश्रम के भवन निर्माण काल में जापहुंचा। शरीर सुन्दर, सुडौल, सौम्य-स्वभाव, हृष्ट-पुष्ट २० वर्षीय युवक का नाम 'धूलिया' था।

आश्रम के कच्चे कोठे व छप्पर बन जाने पर मथुरा आश्रम के मन्दिर से उठ कर आश्रम यहीं

स्वामी जी महाराज बड़े क्रियाशील, निःस्वार्थ जनसेवी, कर्मठ, अध्यवसायी, दृढ़ संकल्पी, वैदिक संस्कृति में अटूट आस्थावान् तथा आर्य समाज के मूर्धन्य नेता थे। स्वामी ध्रुवानन्दजी महाराज के चरित्र में ब्रह्मतेज एवं क्षात्र-तेज का अलौकिक सम्मिश्रण था। उनका जीवन 'स्वमेव मृगेन्द्रता" का अनुपम उदाहरण है। इन्हीं कारणों से सर्वत्र उनके लिये विजय-श्री जय-माला लिये खडी रहती थी। जब तक आर्य समाज जीवित रहेगा, इनकी अमल धवल कीर्ति जीवित रहेगी एवं उनका चरित्र प्रकाश स्तम्भ के समान काम करता रहेगा।

आ गया। उस समय आश्रम का निरीक्षण वीतराग श्री १०८ श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ही करते थे। स्वामी जी महाराज की दिव्य दृष्टि ने धूलिया को देखा - पहचाना और आश्रम का भोजन भण्डारी नियुक्त कर दिया। ग्राम्य पाठशाला में सम्भवतः धूलिया ने दर्जा ४-५ तक ही पढ़ा होगा। किन्तु हिन्दी के अक्षर अति सुन्दर लेख के थे। स्वभाव सौम्य था। बोलना बहुत कम, किसी से कुछ कहने सुनने का काम ही न था। भोजन तैयार होने पर घण्टी बजाई और बरामदे में बैठे हुए कुछ रंगे हुए साधु और कुछ श्वेत वस्त्रधारी पंक्ति में बैठे हुए छात्रों को भोजन परोसना, खिलाना। सायं प्रातः का यह दैनिक कार्य था। भोजन अति स्वादिष्ट और सात्विक होता था। कोई मैनेजर, क्लर्क आदि न था। जिस वस्तु की आवश्यकता हुई मथुरा शहर से श्री ला० रमण-लाल जी की दुकान या उनके द्वारा ही आ जाती थी। शुद्ध घी का दौर था, कोई कमी न थी।

शान्त, एकान्त यमुना तट का शुद्ध स्थान था।

प्रातः दिन निकलते २ ही मथुरा शहर से महर्षि दयानन्द जी के सहाध्यायी और दण्डी श्री स्वामी विरजानन्द जी के सुयोग्य शिष्य महान् विद्वान् गुरुवर पूज्य श्री पण्डित बनमाली जी चतुर्वेदी महाराज नाव से यमुना पार करके आश्रम में पढ़ाने आ जाते थे और लगभग १०-१०॥ बजे तक अष्टाध्यायी काशिकादि पढ़ा कर वापिस लौट जाते थे।

धूलिया को धुरेन्द्र बना दिया

भोजन करने के पश्चात् मध्यान्होत्तर छप्पर के बरामदे में तख्त पर बैठकर पूज्यपाद श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी महाराज हमें सत्यार्थप्रकाश में से डिक्टेशन लिखाया करते थे। छोटे छात्रों में हम दो ही थे। स्वामी जी महाराज लेखार्थ हमें ('सुरेन्द्र, आत्माराम और धूलिया) आओ, कुछ लेख लिख लो, बुलाते थे।

स्वामी जी बोलते थे। हम लोग लिखते थे। लेख की अशुद्धियां निकालते और सुन्दर लेख की प्रशंसा भी करते थे।

एक दिन जब स्वामी जी महाराज ने लेखार्थं बुलाया—"सुरेन्द्र, धूलिया आओ, लिखो।"

हम पहुंच गये। तब मैंने (सुरेन्द्र ने) श्री स्वामीजी महाराज से प्रार्थना की कि "महाराज! सुरेन्द्र नाम के साथ धूलिया नाम कुछ अच्छा नहीं लगता।"

यह सुनकर स्वामी जी ने कहा "तो तू क्या चाहता है।"

मैंने 'धू' अक्षर की मूल राशि का ध्यान रखते हुए नम्र निवेदन किया:—

"सुरेन्द्र के साथ तो धुरेन्द्र ही अच्छा लगता है।"

महाराज ने कहा—"अच्छा, तेरी इच्छा यही है तो धुरेन्द्र ही सही।"

यह बात मई सन् १६१२ ई० की है। तब से धूलिया के स्थान में धुरेन्द्र नाम प्रचलित हो गया।

हम दोनों का ही लेख सुलेख था, शरीर का स्वास्थ्य भी सुगठित उत्तम था। स्वामी जी महाराज हम से सदैव सन्तुष्ट और प्रसन्न बने रहे।

मथुरा का आश्रम छिन्न भिन्न कैसे हुआ?

आश्रम में खान-पान रहन-सहन और पठन-पाठन की तो अत्युत्तम ही व्यवस्था थी किन्तु-वहां एक तो यह कमी थी कि प्रबन्धकर्त्ता-अधिष्ठाता कोई न था और दूसरी बात यह थी कि विद्यार्थियों में कुछ साधु और श्वेताम्बर ब्रह्मचारी थे। जो प्रायः सब ही बड़ी २ आयु के थे। जिनमें स्वामी आर्य मुनि, स्वामी परमानन्द पृथु तथा छात्रों में बुद्धदेव (धार वाले)

और विष्णुदत्त (शुद्ध हुआ था) इनका दैनिक पारस्परिक कलह होता रहता था। पं० दयाशंकर जी औदीच्य ब्राह्मण मथुरा समाज के थे तो सदस्य परन्तु जन्मजाति के अभिमानी थे। बड़े अभिमान से कहा करते थे—"स्वामी दयानन्द तो मेरी जाति के थे।"

वे प्राय: ही आश्रम में दैनिक आया करते थे और विष्णुदत्त की ओर संकेत करते हुए कहा करते थे—"इन कटियों का कोई विश्वास नहीं, देखो! वह अब्दुल गफ्फार आया, शुद्ध हुआ, धर्मपाल बना और अब फिर हमारा धर्म-भ्रष्ट करके वापिस चला गया। अतः इनसे सदा सावधान रहना चाहिये।"

परन्तु उनकी बातों का हम लोगों पर कोई प्रभाव न होता था और विष्णुदत्त के साथ इस दृष्टि से कि वह शुद्ध हुआ हुआ है—कभी घृणा का भाव जाग्रत न हुआ, प्रेम पूर्वक ही रहते थे।

किन्तु वह था बड़ा चतुर। कोई दिन ऐसा न जाता था जब कि उसका स्वामी परमानन्द जी व बुद्धदेव जी आदि से संघर्ष न होता हो। विशेषत: भोजन के समय वह कोई न कोई बात ऐसी कह देता था जिससे पृथु महाराज से तो अनिवार्य रूप से वाक् युद्ध छिड़ ही जाता था।

संचालक सज्जन आश्रमस्थ इनकी इस संघर्षमयी स्थिति से परिचित थे, इत्यादि बातों के प्रबन्धार्थ ही उन्होंने एक वृद्ध संन्यासी को प्रबन्धकर्त्ता बनाकर आश्रम में बैठाया।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी औदीच्य का आश्रमाध्यक्ष बनना और आश्रम की इतिश्री होना

पं० दयाशंकर जी ने गुजरात के औदीच्य ब्राह्मण कुलोत्पन्न रिटायर्ड जेलर श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी को लाकर आश्रम का अधिष्ठाता-प्रबन्धकर्ता बना दिया। ये कानों से कुछ बहरे थे। अपने को योगी भी कहते थे। जन्म-जात के अभिमानी भी थे। इन्होंने आश्रम में आते ही प्रत्येक विद्यार्थी की—जेल के कैदी की तरह ही डायरियाँ बना कर सब की दिनचर्या लिखना आरम्भ कर दिया।

अपने पीने का पानी (घड़ा) पृथक् रखा और भोजन भी सब से प्रथम ही रसोई से निकाल कर अपने कमरे में ले जाते थे। इनके कटु व्यवहार से विद्यार्थियों में विद्रोह हो गया। एक दिन इन्होंने जनमेजय के भाई भुल्लनसिंह के चांटा मार दिया। इससे छात्रों में प्रतिक्रिया होने लगी। भुल्लनसिंह ने कहा कि "जब यह साधु जमुना तट पर आसन जमा कर बैठेगा तो मैं इसे उठा कर जमुना में फैंक दूंगा—इसने मेरे चांटा क्यों लगा दिया?" अब तो प्रतिक्रिया रूप विद्रोह होने लगा। साधु और ऐसे कुछ छात्र तो आश्रम से चले ही गये। केवल हम ४ ६ ही शेष इसलिये रह गये कि श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज बिहार के दौरे से लौट आवें तो उनके आदेशानुसार ही हम कार्य करें।

सन् १९१२ की मई मास का उत्तरार्द्ध था। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज कमण्डलु और कम्बल आसन लिये दौरे से लौट कर आश्रम में आ पहुँचे। हम लोग उनके चरणों में प्रणाम कर खड़े हो गये। इतने में ही आश्रम के बने अधिष्ठाता श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी औदीच्य छात्रों के जीवन चर्या के रजिस्टर उठा लाये और स्वामी जी से कहने लगे, छात्रों के नाम ले लेकर—"इसने यह किया, उसने यह किया, आदि।"

स्वामी जी महाराज ने सरल स्वभाव से कहा—"स्वामी जी इन बही खातों का क्या करना है? जिसकी कुछ भूल देखी, उसी को समझा छोड़ा।"

यह सुनते ही स्वामी श्रद्धानन्दजी ने कहा — "बस मैं समझ गया, इन सबको आपने ही बिगाड़ रखा है।"

उनकी यह बात सुनते ही श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज अपना कमण्डलु और आसन उठा कर तत्क्षण ही कड़ी भरी दोपहरी में ही आश्रम से निकल कर पूर्व की ओर रामा लेन पर – एक साधु की बनी हुई बगीची में चले गये। उनके जाते ही शेष हम लोग भी कोई कहीं और कोई कहीं, सब नौ–दो–ग्यारह ही हो गये और इस प्रकार मथुरा से यमुना के पूर्वी तट पर स्थापित विरजानन्द साधु आश्रम भी भूत में विलीन होगया। प्रकरणवश इतना लिखा गया है, पुराना संस्मरण है।

प० आर्यव्रत जी अप्रैल सन् १९१२ ई० में पूज्य श्री स्वामी सर्वदानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर 'अनुभवानन्द सरस्वती' के नाम से चैडोली ग्राम निवासी श्री कर्ण कवि के आग्रह पर भवन गढ़ी के उद्यान में कुछ काल विश्राम करते रहे ! काली नदी के दक्षिणी तट पर यह उद्यान था। भवन गढ़ी के जाट जमींदार का था। आधा-आधा मील दूर ग्राम थे, जंगल ही था।

स्वामी अनुभवानन्द जी के आग्रह पर ही बड़े स्वामी जी महाराज भी इस स्थान को देखने आये और पसन्द भी किया। स्वामी अनुभवानन्द जी तो वहाँ से उटरावली (बुलन्दशहर) जा विराजे—वहाँ कई वर्षों तक रहे थे।

इधर इस भवनगढ़ी के उद्यान में बड़े स्वामी जी महाराज यदा कदा कुछ काल आकर ठहरते रहे इस उद्यान मे एक कच्चा कोठा बना हुआ था। एक कुइया और मार्ग के साथ ही प्याऊ भी बनी हुई थी। अमरूदों का बड़ा उद्यान था, जामुन के वृक्ष भी थे।

यहीं पर मथुरा वाले विद्यार्थियों में से धीरे-धीरे ५ विद्यार्थी क्रमशः विष्णुदत्त, बुद्धदेव, धुरेन्द्र, बाबूराम (शङ्करदेव) और सुरेन्द्रः आ पहुंचे। चारों ओर से खुला एक बड़ा सा छप्पर भी डाला गया। पूज्य श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ही हमें व्याकरण कौमुदी आदि पढ़ा दिया करते थे। वहां स्थायी रूप से ठहरने का तो कोई प्रबन्ध था ही नहीं केवल अस्थायी रूप से ही वहां हम लोग पहुंच गये थे।

चैडोली ग्राम के चौहान राजपूत श्री ठा० चन्दनसिंह जी, उनसे छोटे ठा० रामचन्द्र सिंह जी थे। इन सज्जनों ने ही हमारे भोजन का प्रबन्ध किया हुआ था।

ठाकुर रामचन्द्र सिंह जी के घर से उनका भृत्य दिन के १०, ११ बजे भोजन लेकर बाग में आता था। पतले-पतले फुलके घी में तर-बतर और खिली हुई उड़द की दाल होती थी। छप्पर के नीचे कटोरदान खुला और विष्णुदत्त या धुरेन्द्र के द्वारा ६-७ फुलके और उन पर दाल रखकर सब को बांट दिये जाते थे। कड़-कड़ाती भूख में वह दाल रोटियां तथा कथित इन्द्र के सरस भोजन से कहीं बढ़ कर रसीली और अमृतमय प्रतीत होती थीं। उस आनन्द को सिवाय हम जैसे भुक्तभोगियों के अन्य दूसरा कोई जान ही नहीं सकता है। मैं तो चिर काल तक आने वाले ज्वर से उन्मुक्त हुआ था अतः भूख भी इधर-उधर से सिमट कर मुझे ही अधिक घेरे रहती थी। भला उन पतले-पतले पांच-छः फुलकों से मेरी भूख शान्त भी कैसे हो सकती थी? मेरे लिये तो वह केवल प्रातराश होता था। शेष क्षुधा देवी को बुझाने के लिये अमरूदों का सारा बाग ही था। प्रातः कुछ पढ़ा और पेड़ों पर जा चढ़ा। भरपेट खूब ही अमरूद खा लेता, इसी प्रकार मध्याह्नोत्तर भी अमरूद स्वयं भी खूब खाता और अन्य साथियों के लिये भी इकट्ठे कर देता था। भोजन तो प्रायः एक

ही समय मिलता था। कभी-कभी स्वामी जी महाराज हलुवा भी बना कर खिलाया करते थे। कुछ काल के पश्चात् हम लोगों के लिये भोजन भवन गढ़ी, ग्वालरा आदि अन्य ग्रामों से भिन्न २ व्यक्तियों के घरों से आने लगा। कई बार निर्जला एकादशी भी हो जाती थी। क्या कहें ? वे आनन्द के दिन ५० वर्ष पूर्व के भूत में विलीन हो गये किन्तु मुझे स्मरण अवश्य है और सदैव स्मरण रहेंगे भी।

भोजन की कठिन समस्या के अतिरिक्त एक और बड़ी समस्या खड़ी हो गई जिसके कारण हम सब लोग वहां से भी चले गये। वह विरोधात्मक समस्या यह थी कि जिनके बाग में हम लोग ठहरे हुए थे, वे जाट जमींदार थे। दिवंगत थे। उनके दो पुत्र जगमोहन और महावीर भी बाग में आया करते थे। उन्हें विष्णुदत्त स० प्र० पढ़ाते थे। उधर मैंने चैंडोली ग्राम के मनसीगा (मनीषी) तोता (सुशील) आदि चमारों के १५-१६ बालकों को हिन्दी पढ़ाना शुरू कर रखा था। इसका बड़ा कोलाहल मच गया। जाट, ठाकुर आदि कहने लगे—'महाराज ये चमार लोग पढ़ पढ़ कर हमारे बराबर चारपाई पर बैठने लगे इन्हें क्यों पढ़ा रहे हैं।

हरदुआगंज के कविता कामिनी कान्त श्री शंकर कवि ने तो एक बहुत लम्बी कविता भी आर्यमित्र में छपवा दी थी जिसका तुक नागर बेल के अन्त का वाक्य था—

"चमारन के उद्धारन को उतरे सन्त सर्वदानन्द" आदि उधर जगमोहन महावीर के पुरोहित पं० नरोत्तम ने उनकी माता को जा बहकाया कि—"यह साधु बाग पर कब्जा कर लेगा और तेरे लड़कों को भी भगा ले जायेगा।"

इत्यादि गड़बड़ी के कारण वह अमरूदों का बाग भी सदा के लिये छोड़ना पड़ा।

पांचों छात्र हम भिन्न २ दिशाओं में उड़ गये। यह समय सन् १९१३ का था।

आश्रम का पुनर्जन्म हुआ

भवन गढ़ी के अमरूदों के बाग से जब सब छात्र और स्वामी जी महाराज चले गये तो चैंडोली, बरोठा, औरंगाबाद और छलेसर, सफेदपुरा आदि के ठाकुरों ने अपनी आन्तरिक वेदना के साथ अनुभव किया कि एक सन्त महात्मा विद्या का प्रकाश करनेवाले यहां आये और हम उनको भी न रख सके। यह हमारे लिये बड़ी लज्जा की बात है।

सारांश यह हुआ कि सफेदपुरा के जमीदार ठाकुर कर्णसिंह जी ने अपनी भूमि प्रदान की और शनैः २ आश्रम उन सज्जनों की भावना के गर्भ से बाहर निकल कर अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बवण्डरों के आघात सहते हुए भी इस समय उस बाग से पश्चिम की ओर लगभग ४-५ फर्लांग की दूरी पर काली नदी के तट पर पुल के समीप ही मथुरा वाला वही—श्री विरजानन्द साधु आश्रम अपने यौवन काल के सौन्दर्य से चमक रहा है।

इस समय आश्रम में कई उत्तम पक्के भवन यज्ञशाला, पुस्तकालय, विद्यालय, अतिथि, भवन, गौशाला आदि बने हुए हैं। कई कुए हैं, बिजली है, उद्यान भी है, कृषि भी होती है। किन्तु अब इस आश्रम का नाम श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय हो गया है। इस ब्रह्म-कर्म आश्रम में इस समय संस्कृत की उच्चतम आचार्य परीक्षा तक की पढ़ाई होती है। अनेकशः छात्र शास्त्री आदि में हैं। लगभग ७८-८० ब्रह्मचारी हैं जिन का गुरुकुल प्रणाली पर ही शिक्षण और परिपालन हो रहा है।

हिन्दी का दूसरा विद्यालय भी है जिसकी पढ़ाई राजकीय प्रकार से हो रही है। (क्रमशः)

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज को श्रद्धाञ्जलि

अतरौली

श्री स्वामी जी का निधन, आर्य समाज की वर्तमान गुटबन्दी को देखते हुए, एक महान् क्षति है। आंतरिक सुधार और सुसंगठन के लिये उनकी इस समय बड़ी आवश्यकता थी। आज जहां आर्यसमाज सिद्धांत विमुख होता जा रहा है वहां उसमें गुटबन्दी अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गई है। सार्वदेशिक सभा को जिस योग्यता के साथ उन्होंने पिछले वर्षों में अयोग्य हाथों से निकालकर सुयोग्य हाथों में रखने का प्रयत्न किया है—वह उनकी एक महान् सेवा है।

मेरा परिवार तो उनका चिरऋणी रहेगा। डा० नगेन्द्र से उसके विवाह संस्कार (१९४८) पर नित्य सन्ध्या-हवन करने की जो प्रतिज्ञा ली थी—उसे उसने अनेक वर्षों तक पूर्ण ईश्वर-विश्वासी न होने पर भी निभाया। उस प्रतिज्ञा ने अब उसे पक्का ईश्वर विश्वासी और आर्य वैदिक धर्म श्रद्धालु बना दिया है। हमारा सारा परिवार आर्य समाज के सिद्धांतों से प्रभावित है। यह बात दूसरी है कि डा. नगेन्द्र साहित्यिक होने के कारण आर्यसमाज की गतिविधि में विशेष रुचि नहीं रखता। आज के भौतिक वातावरण में—इतना भी बहुत है—ऐसा मेरा विचार है। इस में श्री स्वामी जी महाराज का एक अदृश्य हाथ है।

धार्मिक दृष्टिकोण उनका बहुत उदार था। गीता सम्बन्धी मेरे विचारों को उन्होंने मनन किया, मुझे साधु आश्रम पर बुलाकर विचार विनिमय भी किया और अन्त में अपनी पूर्ण सहमति प्रकट की।

दुःख है कि आज आ०स० में अनेक विद्वान् ऐसे हठी और दुराग्रही हैं कि सत्य की उपेक्षा करके अपनी हठ को नहीं छोड़ते। श्री स्वा० ध्रुवानन्द जी महाराज में यह बात नहीं थी। वह उदार सत्यान्वेषक थे।

कुछ वर्ष पूर्व हम उनके स्वास्थ्य को देखते हुए—यह आशा करते थे कि वह शतायु होंगे परन्तु ईश्वर की इच्छा बलवान् है। सार्वदेशिक सभा को दृढ़ता के साथ अपने संगठन को वर्तमान विरोधों के होते हुए भी स्वामी जी के बताये मार्ग का अवलम्बन करते रहना चाहिये।

सभा के वार्षिक अधिवेशनों को विभिन्न प्रांतों में करने की जो परम्परा उनके प्रयत्न से डाली गई है—वह आ० स० के हित में है—जिसे स्वार्थी गुटबंद पसन्द नहीं करते। सभा को इस परम्परा पर दृढ़ रहना चाहिये।

मुझे सार्वदेशिक में यह पढ़ कर सन्तोष हुआ कि डा० नगेन्द्र अंत्येष्टि संस्कार के समय निगमबोध घाट पर उपस्थित था। मैं इच्छा होते हुए भी इतने थोड़े समय में अपनी अस्वस्थता के कारण देहली पहुंचने में असमर्थ था।

—राजेन्द्र

मोरीशस

श्री गौतम निलक के द्वारा हमें पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द जी के गो-लोकवासी होने का हृदय विदारक समाचार मिला। सुनकर तो हमें काठ मार गया।

वे एक कर्मठ एवं परम मनीषी तपस्वी साधु थे। उनकी पूर्ति असम्भव है। उन महान् आत्मा को परमात्मा चिर शांति प्रदान करे, यही हमारी कामना है।

आपके साथ हमारी पूरी सहानुभूति एवं सम्वेदना है। आर्य सभा को हमारी अभिकामना पहुंचा देने का अनुग्रह करें।

हमारी सभा से उनका निकटतम सम्बन्ध

था। भारत भ्रमण कराने का उनका निमन्त्रण-पत्र धरा ही रह गया अब। वे मौखिक नहीं सक्रिय सहायक थे। आर्यसमाजी, 'सनातनी' कबीर पंथी क्या किसी सम्प्रदाय को वे हिन्दू धर्मान्तर्गत विभिन्न अवयव बतलाते थे। विशाल वैदिक धर्म की शाखा-प्रशाखा मत-मतांतरों को समझते थे। अतिरिक्त वेदों के पारगामी विद्वान् थे वे। वैदिक धर्म के अनन्य पुजारी होने पर भी उनमें अन्ध कट्टरता नहीं थी।

काल बली है, उसके आगे सब को आत्म-समर्पण करना पड़ता है।

मन्त्री, हिन्दी प्रचारिणी सभा
मोंताई लोंग, मौरिशस

कांठ

श्रीमान् राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री स्वर्गीय स्वामी ध्रुवानन्दजी महाराज आर्यसमाज कांठ जिला मुरादाबाद में सन् १९३४ में निरीक्षणार्थ पधारे। कांठ आर्य समाज की सुव्यवस्थित कार्य प्रणाली एवं मन्दिर की स्वच्छता को देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न तथा प्रभावित हुए। तब से अन्त समय तक उक्त आर्यसमाज पर तथा मुझ पर उनकी विशेष कृपा रही।

सन् १९३५ में मैंने अपने ज्येष्ठ पुत्र परमानन्द का (जो इस समय श्री गोविन्द वल्लभ पन्त पाली टैक्निक नई दिल्ली में सिविल ऐन्जिनियरिंग विभाग का अध्यक्ष है) तथा अपने चचेरे भाई ओमप्रकाश का (जो आजकल गवर्नमेंट इन्टर कालिज पीलीभीत में अध्यापक है) यज्ञोपवीत संस्कार उनसे कराया। मेरी पुत्री, द्वितीय तथा कनिष्ठ पुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार भी यथोचित समय पर करने की उन्होंने महती कृपा की। कांठ आर्यसमाज के पूर्व प्रधान ला० तोतारामजी के पुत्रों, उनके अनुज श्री केशवचन्द्र के पुत्र, श्री बालमुकुन्द उपप्रधान के पुत्र तथा मेरे बहुत से शिष्यों का यज्ञोपवीत संस्कार भी उनके करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। अपने सभी शिष्यों से उनको हार्दिक स्नेह रहता था। वे समय-समय पर उनको पत्र व्यवहार द्वारा वैदिक स्वाध्याय, सन्ध्या-हवन आदि धार्मिक कृत्य नियमित रूप से करने की प्रेरणा करते थे। जुलाई १९५६ में वे विदेश गए। वहां से भी वे समय-समय पर मेरे पास पत्र भेजकर मुझे कृत-कृत्य करते रहे।

विदेश से ऐप्रिल १९६३ में वे स्वदेश लौटकर आए। सौभाग्यवश मेरे द्वितीय पुत्र डा० वेदव्रत, M. B. B. S. M. S (Surgery, M. S. (Orthopaedics) की नियुक्ति १ अक्टूबर १९६१ को इर्विन हस्पताल नई दिल्ली में हो गई। पूज्य स्वामीजी महाराज मौरीशस निवास-काल में हृदय रोग से आक्रान्त हो गए। दिल्ली पधारने पर स्वामी जी दयानन्द भवन में ही ठहरते थे। दिल्ली आने पर वे तुरन्त ही वेदव्रत को औषधोपचार के लिए अपने पास बुलाते थे। इस प्रकार वेदव्रत को उनकी सेवा करने का स्वर्णावसर निरन्तर प्राप्त होता रहा।

जब स्वामी जी महाराज १६ जून १९६५ को प्रातःकाल दिल्ली से वायुयान द्वारा बम्बई जाने की तैयारी कर रहे थे, उस समय उन्होंने वेदव्रत को अपना रक्त चाप आदि देखने के लिए अपने पास बुलाया। मैं भी वेदव्रत के साथ ही उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। बम्बई, पहुँचकर उन्होंने वेदव्रत के नाम १ जून तथा २३ जून को अत्यन्त स्नेह पूर्ण पत्र लिखकर भेजने की कृपा की। २३ जून को लिखित पत्र में उन्होंने २९ जून को अपने दिल्ली पदार्पण एवं कानपुर प्रस्थान का पूरा पुरोगम लिखा था। परन्तु विधाता का विधान विचित्र है। उसके सामने सब को नतमस्तक होना पड़ता है। स्वामीजी के आकस्मिक निधन से हम सब पर सहसा वज्रपात हो गया।

हम लोग तीनवर्ष से उनसे सानुरोध प्रार्थना

सम्पादक की डाक

श्री वैद्यराजबहादुर ग्राम रामपुर पो० सहपऊ (मथुरा) से लिखते हैं

"सम्प्रति आर्यसमाज एवं देश की जो दशा है उसे देखकर बड़ा दुःख होता है, मैं ऐसा देख रहा हूँ कि आर्यसमाज भी कांग्रेस का अनुकरण करने लगा है इसीलिये इसमें दलबन्दी को रोग लग गया और अब यह संस्थावाद और पद लोलुपता का शिकार हो गया और यह भूल गया महर्षि स्वामी दयानन्द के मिशन को सही रूप में चलाने की बात, अब इसे खण्डन-मण्डन बुरा लगता है। वेद प्रचार कितना हो रहा है एवं कहां होना है वह इसके ध्यान में अब नहीं है तथा देश में जो अनैतिकता भ्रष्टाचार नास्तिकता आदि दोष पैदा हो गये हैं। जो मेरे को दुःखी करते हैं उन्हें मैं ठीक नहीं समझता, स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व जितनी आवश्यकता आर्यसमाज के प्रचार की थी वह अब कुछ और अधिक हो गई है। देश में जितने दोष इस समय हैं। स्वराज्य से पूर्व उतने नहीं थे इसे आप भी भली प्रकार जानते हैं।

मैं चाहता हूँ कि सारी आर्य समाजों का दृष्टिकोण हर विषय में एक हो। आर्य समाज में

कर रहे थे कि अपने संदिग्ध स्वास्थ्य को दृष्टिपथ में रखते हुए वे लम्बी लम्बी यात्राएँ बन्द कर दें और पूर्ण रूपेण विश्राम करें, परन्तु उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के प्रति उनकी अलौकिक भक्ति ने उनको यावज्जीवन आर्यसमाज की सेवा में ही सर्वात्मना संलग्न रक्खा।

उनका तपस्वी एवं आदर्श जीवन चिरकाल तक आर्य जनता का मार्ग दर्शन करता रहेगा।

१ जुलाई १९६५ को उनकी शव यात्रा में कांठ आर्यसमाज की ओर से श्री सुरेशचन्द्र मन्त्री, श्री प्यारेलाल कोषाध्यक्ष, वेदव्रत तथा मैं सम्मिलित हुए।

फकीरचन्द
रिटायर्ड वाइस प्रिंसिपल, कांठ।

साधु आश्रम अलीगढ़

सकल सुजन सेव्यः साधुशीलस्तपस्वी,
पटु पटल प्रशंस्यः पूजनीयो यशस्वी।
श्रुति विहित विधीनां तत्ववेत्ता मनस्वी,
क्वनु झटिति गतो हा दृश्यते नो धुरेन्द्रः॥

सुमति जन मानांसि म्लानयन् माननीयः,
सुजन नयन वृन्दं प्लावयन् शोकबाष्पैः।
परिचित तनुव्यूहं तापयन् भूरितापैः,
परभुव मधियातो हा ध्रुवानन्द स्वामी॥

ललित कमल वृन्दं सोच्यतामेति नूनम्,
विगतप्रिय दिनेशे विद्यमानेऽपि तोये।
वयमपि हि प्रयाता सोच्यतामेति नूनम्,
विगतशुचि धुरेन्द्रे स्वामिहीनासमेऽस्मिन्॥

कृत्वा सशोकं खलु कोक लोकं,
यथारविर्याति परोक्ष धाम।
तथा ध्रुवानन्द यतीन्द्रवर्यो,
विधाय चास्माम् क्व गतो न विद्मः॥

आत्मा तपस्यो लभतां सुगतिं,
इत्यं प्रभुं सानुनयं नमामः।
तथा सभक्त्ं प्रति तं शरण्यम्,
श्रद्धाञ्जलिं साधु समर्पयामः॥

आचार्य पं० रामकिशोर शास्त्री
श्री सर्वदानन्द सं० म०वि० साधु आश्रम अलीगढ़

मतदान के आधारपर जो चुनाव पद्धति चल रही है उसे मैं ठीक नहीं मानता उसका परिणाम भी सामने है कि जो मनुष्य उन विषयों में कुछ भी जानकारी नहीं रखते हैं वह भी हाथ मार जाते हैं और एम० एल० ए० एवं एम० पी० बन जाते हैं और यह दलबन्दी एवं पदलोलुपता पैदा करने वाली है। इससे एक दूसरे के प्रति राग द्वेष की भावना पैदा होकर गलत वातावरण बनता है लड़ाई, झगड़े की घटनाएँ घटती हैं। ऐसा रोज देखने व पढ़ने में आता है इसलिये मैं सोचता हू कि आर्य समाज से यह पद्धति हटानी चाहिये और इसका चुनाव इस प्रकार हो कि चुनाव के समय से पूर्व ३ या ५ आदमियों की एकता, समिति बनाकर उसे अधिकार दिया जाना चाहिये और वह समिति विचार कर चुनाव करे और जिस व्यक्ति को चुनना है उससे प्रार्थना की जावे और उसको कार्य-भार सौंपा जावे साथ ही मैं चाहता हूं कि आर्य-संस्थाओं के पदाधिकारी संन्यासी एवं वानप्रस्थी बनाये जावें और यदि गृहस्थ ही बनाया जावे तो या तो वह वैज्ञानिक हो, अथवा धनवान् तथा त्यागी हो।

आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं के संबंध में मै चाहता हूं कि सारे देश और यदि ऐसा उचित न समझा जावे तो प्रदेशवार उनका पाठ्यक्रम व उपाधि एक जैसी होनी चाहिये। इस समय यदि पचास गुरुकुल या महाविद्यालय हैं तो उनकी पाठ्य प्रणाली एवं उपाधि अलग अलग हैं जिनमें कुछ मान्यता प्राप्त हैं और कुछ की मिट्टी खराब है। उनमें विद्यार्थी पढ़ने नहीं जाना चाहते। मै चाहता हूँ कि आगरा या पंजाब यूनीवर्सिटी या इलाहबाद बोर्ड आदि की तरह यहां भी होना चाहिये।

जिस प्रकार सारे प्रदेश का पाठ्यक्रम एक है चाहें विद्यार्थी कहीं पढ़े और उनकी जैसे हाईस्कूल, इन्टर, बी. ए. एम. ए. आदि एक हैं इसी प्रकार आर्य समाज में एक संस्कृत विश्व-विद्यालय हो और सारी शिक्षण संस्थाएं उससे सम्बन्धित हों। उसी से परीक्षा समय प्रश्न पत्र बन जाया करें और वहीं से सबको उपाधि वितरण मिल जाया करे तो यह नाना प्रकार का क्रम एवं उपाधि एवं इनसे होने वाला परिणाम पुनः न होवे विद्यार्थी कहीं भी पढ़ सकता है फिर उसके मन में कोई आशंका किसी प्रकार की न होगी।

भाषा इसके सम्बन्ध में जो कुछ हो रहा है वह भली प्रकार विदित है पंजाब में इसके लिये जो कुछ हुआ उसका भी परिणाम संतोषजनक नहीं निकला और अब तो उर्दू को पुनः व्यवहार में लाने की बात सोची जा रही है, और मुसलमान राजकार्य में लाने का पुनः प्रयत्न कर रहे हैं उधर आसाम में जो कुछ हुआ वह विदित ही है यह सब स्वार्थी लोगों की माया है और अपनी सरकार ऐसे लोगों के हाथ की कठपुतली मालूम होती है जो उनसे डरकर उनकी हां में हां मिलाकर देश के वातावरण को गन्दा बनाती है मै समझता हूं कि भाषा, भ्रष्टाचार, एवं मद्यादि के बढ़ते हुए प्रचार को रोकने के लिये आर्य समाज की ओर से जबर्दस्त आन्दोलन होना आवश्यक है।"

भारत की भाषा समस्या

"समान भाषा के रूप में अंग्रेजी को त्यागने पर, मेरी राय में गैर हिन्दी राज्यों तथा केन्द्रीय कार्यालयों के बीच पत्र-व्यवहार के लिए प्रादेशिक भाषा को तथा हिन्दी का प्रयोग करना सबसे अच्छा रहेगा। केन्द्रीयकार्यालय अपनी बारी पर गैर हिन्दी राज्य को अपने आदेश उसकी प्रादेशिक भाषा में भेज सकते हैं साथ में उसका हिन्दी अनुवाद। इस तरीके में जो अतिरिक्त कठिनाइयां पैदा होंगी उनकी तुलना में इसके फलस्वरूप प्राप्त होने वाला लाभ कहीं अधिक होगा।

—(रूसी विद्वान्) बारान्निको व भारतीय भाषा विद

कानपुर का वार्षिक अधिवेशन

[श्री मिहिरचन्द धीमान, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम]

सार्वदेशिक सभा के प्राण, आर्यसमाज के महान पथ-प्रदर्शक, देश-जाति के परमपूज्य संन्यासी स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का गत २६ जून को स्वर्गवास हो जाने के कारण हमारे हृदय में यह दुविधा थी कि शायद गत ३,४ जुलाई को सार्वदेशिक सभा का कानपुर में होने वाला वार्षिक अधिवेशन कुछ दिनों के लिये स्थगित हो जाय। पर आर्य समाजियों की यह विशेषता है कि वे भीषण कठिनाइयां आने पर भी अपने कार्यों मे अडिग एवं अविचलित रहते हैं। इसीलिये अधिवेशन के कार्यक्रम मे कोई व्यवधान नहीं हुआ।

गत २ जुलाई को कलकत्ते में बड़ी घनघोर वर्षा हुई, जिससे यहां की सड़कों पर बाढ़ का दृश्य उपस्थित हो गया। हावड़ा भी अछूता नहीं था। वहां की स्थिति और खराब थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि कानपुर जाना सम्भव नहीं होगा। परन्तु ईश्वर की कृपा से मै डी० लक्स गाड़ी से ११ बज कर ५ मिनट में दिन को रवाना हुआ और दूसरे दिन सुबह तीन बजे पहुंचा। डी० ए० वी० कालेज के सुपरिण्टेन्डेन्ट श्री विद्याधर जी के नेतृत्व में नवयुवक स्वयं सेवक गण प्रतिनिधियों के स्वागतार्थ उपस्थित थे। डी० ए० वी० कालेज में मेरे रहने का प्रबन्ध किया गया। वहां की व्यवस्था से मै बड़ा प्रभावित हुआ।

नौ बजे दिन में अधिवेशन का कार्य आरम्भ हुआ। स्वामी ध्रुवानन्द जी के निधन से सबों के चेहरे पर विषाद की रेखाएं दृष्टिगोचर हो रही थीं। वातावरण बडा शान्त एवं गम्भीर था। सभी उनकी कमी को अनुभव कर रहे थे और उनके अभाव से बड़े व्यथित थे।

स्वामी ध्रुवानन्द जी आर्यसमाज के जागरूक प्रहरी थे। अहर्निश वे आर्य समाज की उन्नति की चिन्ता में ही डूबे रहते थे। उनके हृदय में आर्यसमाज के लिये बड़ा दर्द था। अपने सिद्धांत पर वे ध्रुव की तरह अटल रहते थे। 'ध्रुवानन्द' उनका नाम बड़ा ही सार्थक था। बम्बई के हृदय रोग के विशेषज्ञ डाक्टर जब स्वामी जी से कानपुर अधिवेशन में भाग लेने के लिये मना कर रहे थे, तो स्वामी जी का अन्तिम वाक्य था—'आखिर मौत ही तो आयेगी।' यह कहते हुए उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री प्रतापसिंह शूर जी बल्लभदास जी के हाथों में खड़े २ प्राण त्यागे।

स्वामी जी के अनन्य शिष्य श्री प्रतापसिंह शूरजी आर्यसमाज एवं सार्वदेशिक सभा के उत्थान हित स्वामी जी की सब से बडी देन है। आप बड़े ही सभ्य, सुसंस्कृत एवं सौम्य प्रकृति के व्यक्ति हैं। नवयुवक होते हुए भी आप बड़े शान्त एवं गम्भीर रहते हैं। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी आप धर्म के सर्वप्रथम लक्षण धैर्य को नहीं खोते। व्यावसायिक जगत् में भी आप तथा आप के परिवार के लोगों ने ख्याति अर्जन की है। आप के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि स्वामीजी की अनुपस्थिति में भी सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन के कार्य निर्विघ्न समाप्त हुए। किसी बात को लेकर आपस में वाद-विवाद या वितण्डा नहीं हुआ। 'समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्त मेषाम्' यही आर्यों का सबसे बड़ा लक्षण है। कलह, वितण्डावाद, वैमनस्य, फूट अनार्यों के ही काम हैं। अतः हमारी सभा-समितियों में ऐसा कोई अशोभनीय कार्य या वार्तालाप

न हो, जिससे बाहर के लोग हमें असभ्य एवं अभद्र समझें और उनकी आस्था आर्यसमाज से उठ जाय।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रामगोपाल जी शालवाले अपनी कर्मठता, कार्यशीलता त्याग एवं उन्नत विचार एवं व्यक्तित्व से अपना गहरा प्रभाव लोगों पर डालते हैं। आप अपने कारबार को छोड़कर आर्यसमाज की सेवा में रत रहते हैं।

मुझे यह प्रसन्नता है कि जिस प्रस्ताव को मैंने गत पन्द्रह वर्ष पूर्व उपस्थित किया था, उसे श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने इस वार्षिक अधिवेशन पर पुनः उपस्थित किया, जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि आगामी दस वर्षों में अर्थात् १९७५ तक, जिस वर्ष कि आर्यसमाज को स्थापित हुए सौ वर्ष हो जायेंगे, प्रतिवर्ष सार्वदेशिक और अखिल भारतवर्षीय आर्य्य महासम्मेलन विभिन्न प्रान्तों में होंगे जिसके अनुसार अखिल भारतीय अथवा अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सर्वप्रथम हैदराबाद में आयोजित होगा, तत्पश्चात् राजस्थान एवं भारत के अन्य प्रान्तो में। सातवें वर्ष पश्चिम बंगाल में होने की बात है। हम लोगों ने पश्चिम बंगाल में अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का आयोजन सन् १९४९ में किया था, जो बड़े सुन्दर रूप में सम्पन्न हुआ था। मुझे आशा है कि जब हम लोगों की बारी आयेगी तो हम लोग अपने आयोजन को उसी रूप में सफल बनायेंगे, जैसा कि हम लोगों ने पूर्व किया था।

आर्य समाज का शताब्दी अधिवेशन सन् १९७५ में बम्बई में मनाया जायगा। इन सौ वर्षों में हमें पाश्चात्य विद्वान् एण्ड्रू जैक्सन की उस उक्ति को यथार्थ रूप में चरितार्थ करना चाहिये, जिसे उन्होंने आज से साठ वर्ष पूर्व कहा था कि आर्य समाज वह आग है, जो तब तक शांत नहीं होगी, जब तक वह मानवता के प्रतिकूल समस्त बुराइयों को जलाकर भस्म न कर डालेगी।

आर्यसमाज को स्थापित हुए प्रायः ९० वर्ष हो गये, फिर भी अब तक गौ हत्या बन्द न हो सकी। इस वर्ष भी ईद के अवसर पर कलकत्ते में प्रायः १०,००० गौएँ कटीं। गौओं की दशा से द्रवीभूत होकर ही स्वामी दयानन्दजी ने गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखी थी। अतः मैंने इस वार्षिक अधिवेशन पर गोहत्या निरोध के सम्बन्ध में प्रस्ताव उपस्थित कर यह कहा कि आर्य समाज के लिये यह बड़ी ही लज्जा की बात होगी कि यदि वह सौ वर्षों में भी पूर्णरूप से गोहत्या भारत में बन्द न करा सके। इसके लिये हमें प्राणोत्सर्ग के लिये भी प्रस्तुत रहना चाहिये।

आजकल भारत की शासन-प्रणाली प्रजातांत्रिक है। अतः आर्य समाज के लिये यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि वह सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के लिए राजनीति में प्रवेश करना उचित न समझे तो कम से कम भारत की राजनीतिक गतिविधियों का पथप्रदर्शन तो अवश्य ही करे।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की उद्देश्य पूर्ति हेतु हमें आर्यसमाज के कार्यों को द्रुतगति से अग्रसर करना चाहिये। केवल शताब्दी तक नहीं बल्कि उसके बाद भी प्रति वर्ष विभिन्न प्रदेशों में आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का ध्येय रखना चाहिये, जिससे हम प्रति वर्ष अपने कार्यों का सिंहावलोकन कर आगामी वर्ष और अधिक उत्साह के साथ कार्य करने के लिए कटिबद्ध हों और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण कर सकें।

१० हजार रुपये का महान् सहयोग

स्व० श्री भवानीलाल गञ्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिञ्जोदेवी-भवानीलाल शर्मा ककुद्दास की पुण्य स्मृति में स्व० श्री भवानीलाल शर्मा (कानपुर वाले) अमरावती (विदर्भ) निवासी ने 'सार्वदेशिक' पत्र के हितार्थ वी० जी शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्नलिखित नियमानुसार कार्तिक सं० २०१३ विक्रमी तदनुसार नवम्बर १९५६ ई० स्थापित की।

नियम—

१—इस मूलधन से प्राप्त वार्षिक व्याज का आधा भाग सार्वदेशिक पत्र को सहायता रूप में मिलता रहेगा। शेष आधा भाग इस निधि में सम्मिलित होता रहेगा।

२—यदि किसी कारणवश पत्र बन्द हो जाय तो उक्त सहायता का मिलना भी बन्द हो जायगा और वार्षिक व्याज की सम्पूर्ण रकम मूलधन में मिलती रहेगी।

३—पत्र यदि पुनः चालू हो जाय तो उक्त सहायता प्राप्ति के लिये वह पूर्ण अधिकारी होगा।

४—पत्र के चालू न होने की पूर्ण निराशा में सार्वदेशिक सभा उक्त योजना का सर्वाधिकार अपने ही किसी अन्य योग्य पत्र को दे सकती है।

५—सभा के निश्चयानुसार उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना सार्वदेशिक पत्र में उत्साहार्थ प्रति तीसरे मास प्रकाशित होती रहेगी।

सार्वदेशिक सभा की ७-१०-५६ की अन्तरंग का तत्सम्बन्धी निश्चय

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह ५०००) का दान सधन्यवाद स्वीकार किया जाय और उक्त योजना भी स्वीकार की जाय। यह सभा श्री भवानीलाल शर्मा को यह आश्वासन देती है कि उपरोक्त योजना सदैव चलती रहेगी।

इसी प्रकार स्व० श्री भवानीलाल शर्मा ने एक और ५०००) की राशि प्रदान करके सत्यार्थप्रकाश के निरन्तर प्रकाशन के लिये सभा में एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिससे सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन होता रहता है।

—मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

विविध समाचार

गया

आर्य समाज, गया के तत्त्वावधान में निम्नलिखित संस्कार सम्पन्न हुआ।

(क) "दि० १०-५-६५ ई० को आर्य समाज गया के तत्त्वावधान में 'सार्वदेशिक सभा' के उपमन्त्री पं० रामनारायण शास्त्री जी के आचार्यत्व में वैदिक रीत्यनुसार गया नगर के रेलवे ठेकेदार श्रीनन्दकिशोर कपूर जी की कन्या सुश्री किरण कुमारी का पाणिग्रहण संस्कार गोरखपुर निवासी श्री डा० आर० गुलाटी के सुपुत्र श्री जगदीश जी के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

(ख) दि० ११-५-६५ ई० को आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान श्री बुलाकचन्द राय जी की कन्या सुश्री शिवरात्रि का पाणिग्रहण संस्कार बनाया (गया) निवासी श्री करण सिंह यादव जी के पुत्र श्री कमल किशोर सिंह यादव के साथ गया में सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री पं० रामनारायण शास्त्री जी इस यज्ञ के आचार्य थे।

उसके अतिरिक्त श्री मिश्रीलाल जी के पुत्र एवं श्री महावीर सिंह जी के पुत्र का भी पाणिग्रहण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार दि० ११-५ ६५ ई० को सम्पन्न हुआ।

अन्त्येष्टि संस्कार

दि० १७-५-६५ ई० को आर्य समाज गया के वृद्ध, कर्मठ एवं दानी सदस्य श्री सत्यपाल साब जी की आकस्मिक मृत्यु हो गई। वैदिकरीत्यानुसार इनका अन्त्येष्टि संस्कार, गया के विष्णुपद श्मशानघाट पर आर्य समाज, गया के तत्त्वावधान में रात्रि के दस बजे सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात् दि० १८-५-६५ ई० से लेकर दि० २०-५-६५ तक लगातार तीन दिनों तक गृहशुद्धि वेद मन्त्रों हवन (यज्ञ) द्वारा हुई।

अपने पीछे श्री सत्यपाल साब जी केवल अपनी पत्नी को छोड़ गये हैं।

दि० २३-५-६५ को आर्य समाज, गया ने निम्न लिखित शोक प्रस्ताव पास किया।

"श्री सत्यपाल साब जी की आकस्मिक मृत्यु से आर्य समाज, गया को गहरा शोक हुआ है, उनके उठ जाने से आर्य समाज गया को जो क्षति हुई है वह असह्य है। सचमुच में श्री सत्यपाल साब जी समाज के एक स्तम्भ थे।

ईश्वर से आर्य समाज, गया प्रार्थना करती है कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति दें और आर्य समाज, गया और उनके परिवार को जो गहरा शोक है, उसे सहन करने की शक्ति और धैर्य दे। जगदम्बा प्रसाद

मन्त्री आर्यसमाज, गया

दिल्ली

३० मईको दिल्ली राज्यकी समस्त आर्यसमाजों तथा विभिन्न आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री देशराज जी चौधरी के दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर एक बधाई समारोह का आयोजन आर्य समाज हनुमान् रोड़, में किया गया। मन्दिर खूब सजाया गया था और नर-नारियों से ठसाठस भरा हुआ था। सर्वश्री स्वामी वेदानन्द जी, बालमुकन्द जी आहूजा, नारायण दास जी कपूर, श्रीमती सावित्री देवी जी, रामनाथ जी

सहगल, प्रिंसिपल रूपलाल जी, बी० पी० जोशी जी, सरदारी लाल जी वर्मा, सोमनाथ श्री मरवाहा, रामलाल जी ठेकेदार तथा मुश्ताक राय जी खन्ना, पार्षद इत्यादि महानुभावों ने विभिन्न आर्य समाजों तथा संस्थाओं की ओर से चौधरी जी को पुष्प मालायें पहिनाईं तत्पश्चात् जलपान हुआ।

नगर निगम के इस उच्च पद पर निर्वाचित होने पर तथा अपने नये कर्त्तव्यों को अच्छी तरह निभाने के लिये आशीर्वाद देते हुए दयानन्द संन्यास आश्रम गाजियाबाद के आचार्य श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी ने कहा कि भगवान् की कृपा से वह ऊपर उठे हैं पर नई परीक्षा में अधिक तप करके दिल्ली की जनता तथा राष्ट्र की खूब सेवा करनी चाहिये। सुप्रीम कोर्ट के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री सोमनाथ जी मरवाहा ने अपने आर्यबन्धु की उन्नति पर प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा कि नगर निगम को उनकी सेवाओं की अधिक आवश्यकता पड़ी है और हमें विश्वास है कि महर्षि दयानन्द के मिशन का एक सिपाही अपने कर्त्तव्य को ईमानदारी से निभायेगा। आर्य केन्द्रीय सभा के कार्य-वाहक प्रधान के नाते उन्होंने चौधरी जी को आश्वासन दिया कि दिल्ली राज्य की समस्त आर्य समाजें इन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी।

श्रीमती ईश्वर देवी जी ने उनकी धर्मपत्नी के साथ कार्य करने के अपने संस्मरण देते हुए कहा कि उन्होंने चौधरी जी को निकट से देखा और उन्हें दृढ़व्रती और अटल निश्चय वाला व्यक्ति पाया है। आर्य समाज रूपी मां की गोद में पले और उसी की कृपा से ऊंचे पद प्राप्त कर रहे हैं। नगर निगम के स्वास्थ्याध्यक्ष श्री कर्नैल राव ने शुद्ध हिन्दी बोलते हुए और वेद-मंत्रों का सरस गान करते हुए चौधरी जी को बधाई दी और आशा प्रगट की कि उनके नेतृत्व में नगर निगम दिल्ली की खूब सेवा करेगा। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पं० सत्यदेव जी विद्या-लंकार और स्थायी समिति के सदस्य श्री मुश्ताक राय जी खन्ना ने भी बधाई दी।

इस समारोह के लिये आर्य केन्द्रीय सभा का आभार प्रगट करते हुए श्री देशराज जी चौधरी ने कहा कि प्रशंसा से व्यक्ति बिगड़ जाया करता है। मुझे तो आपका पथ-प्रदर्शन चाहिये ताकि मैं अपने बढ़े हुए कर्त्तव्य को अच्छी प्रकार निभा सकूं। आपकी सहायता चाहिये ताकि सीधे रास्ते पर चल सकूं। बुजुर्गों का आशीर्वाद चाहिए ताकि अधिक सेवा करने के लिये उत्साह पा सकूं।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "मैं जो कुछ बन पाया हूं आर्य रूपी मां की कृपा से। ८वीं कक्षा में ही मैं आर्य स्कूल लुधियाना में आर्य समाज का सदस्य बना और फिर दिल्ली में आर्य समाज दीवानहाल का। बचपन से ही मैंने महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों से अद्भुत प्रेरणा प्राप्त की आर्यसमाज के प्रचारकों से ही मैंने शुद्ध खादी पहिनना सीखा और देशभक्ति सीखी। उसी से प्रेरणा पाकर मैं कांग्रेस का सदस्य बना। अब भी मेरे जीवन को सुधारने में आर्य समाज की भूत प्रेरणा ही कार्य करती है।

उन्होंने उपस्थित आर्य जनों को विश्वास दिलाया कि वे नये पद को प्राप्त करके आर्य समाज की अधिक से अधिक सेवा करेंगे। नगर निगम में हिन्दी की अधिकाधिक उन्नति होगी साथ ही उन्होंने आर्य समाज में बढ़ रहे पार्टी-बाजी पर दुःख प्रगट करते हुए कहा कि आर्य समाज की नींव में हजारों महापुरुषों का खून व पसीना है। उनको हमें बट्टा नहीं लगाना चाहिए। महर्षि के मिशन के प्रसार के लिए डट कर और झगड़ों से ऊपर उठ कर कार्य करना

चाहिए। राजधानी की आर्य समाजों से अनुरोध किया कि वे अनाथ बच्चों, विधवाओं तथा दुखियों के कार्य को फिर से अपने हाथ में लें।

ओम्प्रकाश मन्त्री

गुरुकुल झज्जर

पिछले पचास वर्षों से महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) आर्य जगत् की सेवा कर रहा है। इस संस्था की आधार-शिला अमर शहीद हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों द्वारा स्थापित हुई थी। गुरुकुल के संस्थापक स्वर्गीय दीवान पं० विशम्भरजी थे। पूज्य स्वामी परमानन्द जी तथा श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्रद्धेय स्वामी आत्मानन्द जी, भक्त मथुराप्रसाद जी जैसे वीतराग संन्यासी एवं विद्वानों ने अपने जीवन से इस गुरुकुल वाटिका को सिञ्चित किया है।

आगामी शिवरात्रि के पुण्य अवसर पर गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती १७–२० फरवरी तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाई जा रही है।

पिछले कुछ वर्षों से अकाल और बाढ़ादि के कारण गुरुकुल की आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य हो गई है। इस अवसर पर संस्था की इस न्यूनता को दूर करने के लिए गुरुकुल की प्रबन्ध-कर्त्री सभा ने ५ लाख रुपये एकत्रित करने की योजना बनाई है। आर्य सज्जन मुक्त-हस्त होकर इसमें दान दें तथा स्वर्ण जयन्ती में सम्मिलित होकर अपने गुरुकुल की प्रगतियों का परिचय भी प्राप्त करें।

ध्यान रहे, गुरुकुल का दान आय कर से (इन्कमटैक्स से) मुक्त है।

दामला

जिला अम्बाला (पंजाब) जिसका पुनर्जन्म ३ वर्ष पूर्व हुआ था, के साप्ताहिक सत्संग नियम पूर्वक लग रहे हैं। इसके अधीन आर्य कन्या पाठशाला भी १॥ वर्ष से निःशुल्क चल रही है। यह समाज ग्रामीण कृषक लोगों की ही है जो केवल ४० गृहस्थियों की बस्ती में स्थापित है। यह लोग पौराणिक अन्ध विश्वासों में ग्रस्त तथा सभ्यता, शिष्टाचार, धर्म, कर्म आदि गुणों से रहित हैं। इस प्रदेश में ईसाई लोगों ने कई वर्षों से अपने अस्पताल और विद्यालय आदि बना कर अपना प्रचार स्थिर बना रखा है। वैदिक प्रकाश और आर्य समाज का सन्देश घर घर में पहुँचाने और इन सीधे सादे मनुष्यों में सत्य सनातन धर्म का ज्ञान देने को यह सम ज पूरे परिश्रम से यत्नशील है। परन्तु आर्थिक अवस्था दरिद्र होने के कारण यथेष्ट कार्य करने में असमर्थ है। आर्य जगत् यदि ग्राम प्रचार की महत्ता को अनुभव कर थोड़ी थोड़ी अर्थ सहायता भी करे तो अति सफलता होने की पूर्ण आशा है।

देहरादून निवासी दो वानप्रस्थी (दम्पति) वृद्धायु सज्जनों ने ३ वर्ष से अवैतनिक सेवा इस समाज को अर्पण कर रखी है। तन और मन तो प्रभु कृपा से प्राप्त हो गये। अब केवल धन का घाटा है। क्या आर्य धनी मानी महानुभाव हमारी यथार्थ पुकार को सुन यश प्राप्त करेंगे?

मन्त्री, आर्यसमाज

बड़ौदा

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में कालेज में संस्कृत के साथ मैट्रिक उत्तीर्ण वा समकक्ष योग्यता रखने वाली पांच कन्याओं को संस्था की स्नातिका श्रेणी के चार वर्ष के कोर्स में निःशुल्क प्रविष्ट किया जायेगा।

प्रवेशार्थी संस्था वा आर्य समाज की सेवा में जीवन अर्पण करने की भावना वाली हो।

प्रवेशार्थियों को भोजन, शिक्षण, रहन-सहन निःशुल्क मिलेगा। उन्हें केवल अन्य खर्च के लिए मासिक दस रुपया देना पड़ेगा।

यशोदा स्नातिका

प्रो० इन्द्र जीवन स्मृति ग्रन्थ

प्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार, हिन्दी सेवी, राष्ट्र-कर्मी और आर्य नेता स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के स्मृति ग्रन्थ के सम्पादन का कार्य बड़े उत्साह से प्रारम्भ कर दिया गया है। ग्रन्थ के प्रकाशन का आनुमानिक व्यय १५ हजार रुपया होगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने ३५००-३५०० रुपये की धन राशि इस कार्य के लिए प्रदान की है। शेष धन राशि आर्य समाजों, गुरुकुल के स्नातकों तथा प्रोफेसर जी के प्रेमियों से संग्रह की जा रही है। प्रोफेसर जी द्वारा सम्पादित दैनिक पत्रों, विजय, दैनिक अर्जुन, तथा वीर अर्जुन और दैनिक जन सभा आदि पत्रों ने पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान की जनता में जन जागरण और चेतना पैदा करने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उसकी दृष्टि से उनकी राष्ट्र सेवा को भुलाया नहीं जा सकता। इसीलिए इन राज्यों की सरकारों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता की प्रार्थना की गई है। हिन्दी के यशस्वी पत्रकार एवं जीवनी साहित्य के विशेषज्ञ श्री स्व० सत्यदेव विद्यालंकार ने पं० सोमदत्तजी विद्यालंकारकी सहायता से इस ग्रन्थके सम्पादन का कार्य प्रारम्भ किया था। अब यह कार्य श्री पं० सत्यकाम जी विद्यालंकार ने अपने हाथ में लिया है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए अखिल भारतीय आधार पर प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्मारक समिति का गठन किया गया है। समिति का कार्यालय ४० ए०, हनुमान लेन, नई दिल्ली में रखा गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

आगामी २, ३, और ४ अक्टूबर १९६५ को राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती (७५ वर्षीय) महोत्सव की तैयारियां जोर शोर से प्रारम्भ हो गई हैं। हीरक जयन्ती समारोह स्थानीय आनासागर तट पर स्थित ऋषि उद्यान के विशाल मैदान में होगा जहां प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी इन्हीं तिथियों में ऋषि-मेला भी भर रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के हीरक जयन्ती समारोह का उद्घाटन केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा द्वारा किये जाने की संभावना है जब कि इस विशाल आयोजन में राजस्थान की समस्त आर्यसमाजों के प्रतिनिधिगण एवं नेताओं के अलावा स्वामी समर्पणानन्द, आर्य सन्यासिनी विद्योतमा यति, संसद सदस्य प्रकाशवीर जी शास्त्री एवं श्री अलगूराय जी शास्त्री, गुजरात के सुप्रसिद्ध आर्य नेता पंडित आनन्दप्रिय जी, आचार्य श्रीकृष्ण जी, आचार्य प्रियव्रत जी संसद सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्दजी, आनन्द भिक्षुजी एवं कई अन्य चोटी के आर्य नेता गण संन्यासी एवं विद्वान् सम्मिलित होंगे।

हीरक जयन्ती समारोह २ अक्टूबर को प्रातःकाल ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में सामवेद परायण महायज्ञ से ही प्रारम्भ हो जायगा। मध्यान्ह में शाहपुराधीश राजा सुदर्शनदेव जी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन होगा तथा हीरक जयन्ती का उद्घाटन समारोह भी उसी दिन सायंकाल भव्यतापूर्ण वातावरण में किया जायगा।

हीरक जयन्ती समारोह के प्रचारमन्त्री श्री श्रीकरण शारदा की एक सूचना के अनुसार आर्य महिला सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से निवेदन किया गया है। आर्य महिला सम्मेलन हीरक जयन्ती समारोह के एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में दिनांक २ अक्टूबर १९६५ को होगा जबकि उसी दिन आयोजित होने वाले राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय रेलमन्त्री श्री एस० के० पाटिल द्वारा किये जाने की सम्भावना है।

दिनांक ४ अक्टूबर १९६५ को वेद सम्मेलन का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द जी करेंगे जब कि वेद सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य प्रियव्रतजी गुरुकुल कांगड़ी करेंगे। ४ अक्टूबर १९६५ को ही राजभाषा सम्मेलन होगा जिसकी अध्यक्षता संसद् सदस्य सेठ गोविन्ददासजी द्वारा किये जानेकी संभावना है। उसी दिन आर्य संस्कृति रक्षा सम्मेलन भी होगा जिसकी अध्यक्षता पोरबंदर के सेठ नानजी भाई कालिदास जी मेहता करेंगे।

आगामी ऋषि मेला ३, ४ और ५ अक्टूबर १९६५ को

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा ने घोषणा की है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आगामी ३,४ और ५ अक्टूबर १९६५ को आनासागर तट स्थित ऋषि उद्यान एव सरस्वती भवन में ऋषि मेला आयोजित होगा। जिसकी तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं। २९ सितम्बर १९६५ को भूमि उद्यान एवं सरस्वती भवन में ऋषि मेला आयोजित होगा जिसकी तैयारियां प्रारम्भ हो गई है। ऋषि मेला २९ सितम्बर १९६५ को ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में यज्ञ के आयोजन के साथ ही भरना शुरू हो जायगा जिसकी पूर्णाहुति ५ अक्टूबर १९६५ को ऋषि मेला के समाधान समारोह के साथ होगी।

अम्बाला

आर्यसमाज के कर्मठ नेता, त्यागी तथा महान् कर्मयोगी सेठ बिहारीलाल बलदवा जी शोलापुर ने डी० ए० वी० कालेज अम्बाला नगर के निर्धन विद्यार्थियों के लिए २५०) की धन राशि दान में दी है तथा साखरपेठ के सूत् के व्यापारियों सेठ मुरलीधर जी, सेठ पल्जी जी, सेठ सांग जी आदि ने भी धन दान दिया है। आर्य समाज के कालेज के लिये यह दान महान है।

अनिलदास. प्रिंसिपल

इन्दौर

मध्य-प्रदेश राज्य आर्य सम्मेलन

प्रथम म० प्र० राज्य आर्य सम्मेलन १ दिसम्बर से ७ दिसम्बर १९६५ तक भारत के विकास तीर्थ ग्राम रगवासा 'इन्दौर के निकट' तह० जिला इन्दौर म० प्र० मे समारोह पूर्वक करने का आयोजन किया जा रहा है।

यह पहिला ही अवसर है जबकि इस प्रकार मध्य-प्रदेश के ४३ जिले के आर्यजन अपनी समस्याओं पर एक साथ बैठकर चर्चाएं करेंगे। इसमें १९७५ मे मनाए जाने वाली आर्यसमाज की शताब्दी के सम्बन्ध में योगदान, सुदृढ़ संगठन प्रचार सम्बन्धी समस्याओं के समाधान की दिशा में विचार होगा।

इस आयोजन में मार्ग दर्शन हेतु भारत की समस्त भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, टंकारा ट्रस्ट गुजरात, परोपकारिणी सभा अजमेर, राजस्थान के नेताओं को आमन्त्रित किया जा रहा है।

राज्यपाल आर्य

आर्य वीर दल

बिहार

आर्य वीर दल दिल्ली के आदेशानुसार प्रादेशिक आर्य वीर दल बिहार के प्रान्तीय समिति, अधिकारियों एवं सदस्यों की १९६५ के लिये नियुक्ति निम्न प्रकार से की गयी।

प्रादेशिक संचालक श्री रामनारायण शास्त्री
सभामन्त्री श्री पं० वासुदेव शर्मा
सभाकोषाध्यक्ष श्री डा० रामप्रसाद लाल

अधिष्ठाता श्री इन्द्रदेव नारायण एडवोकेट,
मन्त्री श्री रामेश्वरप्रसाद गुप्त
उपसंचालक श्री सुरेशचन्द्र शर्मा पटना प्रमंडल
" श्री रामाज्ञा ठाकुर, नेपाल देश
" श्री वीरप्रकाश भागलपुर प्रमंडल
" श्री बालेश्वरसिंह, तिरहुत प्रमंडल
" श्री अमरनाथ शर्मा छोटा नागपुर
" श्री वंशरोपन यादव पटना नगर

गुलबर्गा

शुद्धि व विवाह

आर्यसमाज गुलबर्गा द्वारा दिनांक १८-६-६५ को एक जन्मजात क्रिश्चियन (ईसाई) नवयुवक की शुद्धि कर २०-६-६५ को उसका विवाह कु० यो० जना थहि के साथ पूर्ण वैदिक रीति से श्री पं० गोपालदेव शर्मा ने कराया है। इस अन्तर्जातीय विवाह का प्रभाव नगर में बहुत अच्छा हुआ है। नगर के प्रतिष्ठित तथा माने हुए सज्जनोंने इस विवाह में पधारकर आशीर्वाद दिया है। इस विवाह के लिए आ० प्र० सभा के उपमन्त्री श्री गोपालदेव शर्मा ने बहुत ही प्रयत्न किया है। वधू-वर को आ० स० द्वारा कन्नड सत्यार्थप्रकाश तथा आर्य साहित्य उपहार रूप में दिया गया।

प्रयाग

जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा प्रयाग द्वारा गठित "कुम्भ मेला उपसमिति" की बैठक कल दिनांक १५-७-६५ को ८ बजे रात्रि में आर्यसमाज मन्दिर चौक मे श्री दयास्वरूप जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें वैदिक-धर्म प्रसार सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन तथा वेद सम्मेलन करने का निश्चय किया गया। इस शुभ अवसर पर "वेद प्रदर्शनी" करने की भी योजना बनाई गई।

ऐसी सम्भावना है कि उपरोक्त सम्मेलनों में भारतवर्ष के मूर्धन्य नेता एवं विद्वान् भाग लेंगे।

प्रकाशन मन्त्री

रांची

रांची से ७ मील दूर जगन्नाथपुर में छोटा-नागपुर के ४२ लाख आदिवासियों के सबसे बड़े मेले में गत् ३० जून व ६ जुलाई को आर्य-समाज रांची ने प्रथम बार स्थानीय नागपुरिया भाषा में ५००० ट्रेक्ट "अरजी" शीर्षक से प्रकाशित कर वितरण करते हुए आदिवासियों को वेद का संदेश देते हुए बताया है कि वर्ण-कर्म पर आधारित है जन्म पर नहीं। वेद की शिक्षा मानव मात्र में बिना किसी भेदभाव के ग्रहणीय है। "अरजी" के अन्त में आदि-वासियों से अपने महान् पुरुषों को याद कराते हुए अपने धर्म को पैसा, कौड़ी, अनाज, कपड़ा, दवा-दारू, भूत-प्रेत, लोभ-लालच, बहकावा-फुसलावा में पड़कर न छोड़ने का निवेदन किया गया था। उड़ीसा के स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने ट्रेक्ट की भूरि २ प्रशंसा करते हुए अधिका-धिक वितरण व प्रचार पर बल दिया है। संस्मरणीय हो कि जगन्नाथपुर का मन्दिर २७५ वर्ष पुराना पुरी की वाममार्गी प्रथा के आधार पर स्थापित हुआ था।

दयाराम पोद्दार

मोम्बासा

पूर्वी अफ्रीका की आर्य समाजों में मुम्बासा आर्य समाज का विशेष स्थान है। इस समाज ने विविध प्रवृत्तियों के संचालनार्थ सुन्दर व विशाल प्रार्थना भवन, यज्ञशाला, अतिथिशाला, नर्सरी स्कूल व सेकन्डरी स्कूल के मकान बनवाये हैं। इनेगिने कार्यकर्त्ताओं की कार्यक्षमता व लगन सराहनीय है। इस समाज का ५७ वां वार्षिकोत्सव समारोह धार्मिक मेले के रूप में अप्रैल में मनाया गया ता० २०-४-६५ तक जनता ज्ञान गंगा में गोते लगाती रही। प्रतिदिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में और सायं सन्ध्या के समय यजुर्वेद पारायण यज्ञ के बाद आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वानों की वेद-कथा होती रही। इस महोत्सव

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा की परीक्षाएँ

अप्रैल १९६५

आर्य सिद्धान्त विशारद

जूनियर हायर सेकेण्डरी स्कूल, केसरगंज

द्वितीय श्रेणी

३ वसन्तलाल

तृतीय श्रेणी

१ सुधा कुमारी, २ देशराज सिंह, ५ विन्ध्येश्वरी प्रसाद।

आर्य समाज कोर्श

द्वितीय श्रेणी

११ मोतीलाल आर्य

तृतीय श्रेणी

१२ मिलनराम आर्य, १४ किसनराम आर्य, १५ कार्तिकराम आर्य, १३ बंशीलाल साहू उत्तीर्ण

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास पानपोस, सुन्दरगढ़

तृतीय श्रेणी

१७ सुषमा, १८ विनायक, १९ बालकिशन आर्य, २० बलराम, २१ आनन्द देव आर्य, २२ सनातन आर्य, २३ देशबन्धु, २४ नरदेव आर्य।

आर्य समाज मुबारकपुर (फैजाबाद)

प्रथम श्रेणी

२५ श्रीचन्द्र जायसवाल नाग, ३१ बैजनाथ प्रसाद, ३४ रामउजागर।

द्वितीय श्रेणी

२६ देवनारायण शर्मा, २९ रामलखन।

तृतीय श्रेणी

३० सूर्यलाल !

आर्य समाज, देगलमण्डी

प्रथम श्रेणी

३५ उषा देवी, ४६ चुक्कारकी आर्या।

द्वितीय श्रेणी

३८ नरसिंह, ४५ रामचन्द्र।

तृतीय श्रेणी

४१ भीम सेन।

के अवसर पर श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, प्रधान संचालक, आर्य वीर दल, दिल्ली, श्री दिलीप कुमार वेदालंकार, बड़ोदा, श्री पं० रणधीर वेदालंकार, वैदिक मिशनरी पूर्वी अफ्रीका, श्री वाई कोमोरा, प्रान्तीय विद्याधिकारी, श्री० डी० जे० आर० शर्मा, श्री० डी० आर० सना, श्री बलदेव जी वाधवाणी, श्री० सी० सी० पटेल, श्री० ओ०पी० सचदेव, मेजिस्ट्रेट प्रांतीय कोर्ट, आदि को विशेष रूप में निमंत्रित किया गया था। श्रीमती कौशल्या रानी जी के सभापतित्व में रसदर्शन व मनोरंजन का कार्यक्रम आर्य वीर व वीरांगना दल ने उपस्थित किया। साथ ही राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की प्रचार परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व इनाम बांटे गये। इसी प्रकार श्री ए० एम० दीक्षित वाईस कोन्स्युलेट भारत के सभापतित्व में फोरम और श्री डी० ओकेनो, मुम्बासा नगर विद्याधिकारी के सभापतित्व में इन्टर स्कूल डिबेटिंग कोम्पटीशन, श्री ईश्वरदत्त शर्मा, संगीताचार्य के नेतृत्व में संगीत सम्मेलन रोचक व आकर्षक ढंग से सम्पादित हुए। जिला मेजिस्ट्रेट श्री ओ० पी० सचदेव खेलकूद प्रतिस्पर्धा के विजेताओं को इनाम व 'कप' बांटे। इस महोत्सव की सफलता का श्रेय वैदिक मिशनरी श्री पं० रणधीर जी वेदालंकार और समाज के प्रधान श्री रामकरण जी को है।

हाथी कारीगरान (फुलेरा) जयपुर

प्रथम श्रेणी

६८ गणेशचन्द्र शर्मा, ६९ पन्नालाल शुक्ल, ७२ नवलकिशोर शर्मा, ७५ नन्दकिशोर शर्मा जोशी, ७६ जयनारायण वर्मा।

द्वितीय श्रेणी

६० हरीराम कुम्भावत, ६१ नोरत कुमारी, ६३ रविशचन्द्र दधीच, ६४ सत्यनारायण सिंघानिया, ६५ भंवर लाल आर्गिड, ६७ जयदियाल मदान, ७० वैद्य नानगराम कुम्भावत, ७३ परमानन्द दयाल, ७४ मदन गोपाल शर्मा।

तृतीय श्रेणी

६२ रमेशचन्द्र खन्ना।

सन्त कुटीर सिरतोल बदायूं (उ०प्र०)

तृतीय श्रेणी

७७ चम्पत पुरी, ७८ रामप्रसाद, ७९ चन्द्रपालसिंह, ८० हीरालाल।

आ० स० मोतीहारी (चम्पारन)

द्वितीय श्रेणी

८१ रामकृष्ण प्रसाद गुप्त।

आर्य गर्ल्स हा०सै० स्कूल चावड़ी बाजार दिल्ली

द्वितीय श्रेणी

१०१ सुभद्रा देवी, १०८ सुमन गुप्ता, ११२ स्नेहलता, ११९ कमलेश गुप्ता, १२० मधु, १२२ देव कुमारी, १२५ रंजना गुप्ता, १३४ होकिया महेश्वरी, १४४ पूनम रानी, १५१ उषा रानी।

तृतीय श्रेणी

८२ ऊषा रानी, ८३ मधु शर्मा, ८४ भारत बाला निगम, ८५ स्नेहलता, ८७ रानी गुप्ता, ८८ उर्मिला निगम, ८९ सुशीला, ९१ मधु गुप्ता, ९४ शशी रानी, ९६ मधु, ९७ रूपकमल जैन, ९८ मधुबाला निगम, ९९ पुष्पा मेहरा, १०० राज रानी, १०३ गीताबाली गुप्ता, १०७ इन्द्रा मेहरा, १०९ सुषमा चड्ढा, ११० स्नेहलता ११३ सन्तोष कुमारी, ११४ उर्मिला, ११५ ऊषा देवी, ११६ मधुशर्मा, ११७ मधु राठी, ११९ सन्तोष मान, १२१ शशी बाला, १२४ ऊषा रानी, १२९ पुष्पा उत्तीर्ण, १३५ चित्रा रानी गुप्ता, उत्तीर्ण १३९ कुसुम लता, १४० ऊषा रानी, १४१ लक्ष्मी, १४२ ऊषा रानी गुप्ता, १४५ प्रीतम कौर, १४६ अनीता, १४७ सरोज खण्डेलवाल, १४९ वीणा कपूर, १५० वीणा बहल १५२ ऊषा शर्मा, १५३ रानी देवी, १५५ सुधा खाण्डेलवाल, १५८ सरोज गोयल, १५९ मनमोहिनी ओसवाल, १६२ मञ्जु प्रभा, १६३ कमल कुमारी मित्तल, १६४ राकेश रानी, १६६ अनुराधा खन्ना, १६७ बानू गुप्ता, उत्तीर्ण १६९ सन्तोष कुमारी, १७० मधुबाला जैन, उत्तीर्ण १७२ शशी प्रभा गुप्ता, १७३ आशा, १७४ नीरा, १७५ गार्गी वर्मा, १७६ उषा गुप्ता, १७७ प्रभा, १७८ मधु, १७९ सरोज, १८० सुधा गुप्ता, १८१ कुसुम।

आर्य सिद्धान्त भूषण

मोतीहारी (चम्पारण) नकच्छेदन

तृतीय श्रेणी

१ श्री कृष्ण प्रसाद गुप्ता।

सन्त कुटीर सिरतोल बदायूं

द्वितीय श्रेणी

२ रघुनन्दन प्रसाद त्रिवेदी।

आर्य सिद्धान्त रत्न

हाथी कारीगरान (फुलेरा)

द्वितीय श्रेणी

१ प्रभुदयाल शर्मा।

गुरुकुल वैदिक आश्रम पानपोस (सुन्दरगढ़)

द्वितीय श्रेणी

२ भूपनारायण सिंह।

मोतीहारी (चम्पारण) नकच्छेदन

३ राजेश्वर प्रसाद गुप्त, ४ हरीकृष्ण प्रसाद गुप्त, ५ शैलेन्द्र नाथ वर्मा।

परीक्षा परिणाम छापने पर विशेष ध्यान रखा गया है। फिर भी कोई भूल रह जाय तो सभा कार्यालय को सूचित कर दें।

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास
प्रधान सार्वदेशिक सभा

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
संयोजक विद्यार्य सभा

[illegible] प्रेमी स्वाध्याय शील नर-नारियों
के लिए शुभ सूचना

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

अब तक लगभग १२ संस्करणों मे निकली हुई
अत्यन्त लोक प्रिय

कर्त्तव्य दर्पण

आर्य समाज के मन्तव्यो, उद्देश्यो कार्यों धार्मिक अनुष्ठानो पर्वों तथा व्यक्ति और समाज को [illegible] उठाने वाली मूल्यवान सामग्री से परिपूर्ण

का नया सस्ता संस्करण साईज $\frac{२० \times ३०}{३२}$

पृष्ठ सं० ३८४ सजिल्द

प्रचारार्थ मूल्य ५० पैसे प्रति पैसे

आर्य समाज का इतिहास (सजिल्द)

[illegible] जी विद्यालंकार सम्पादित कृत

प्रथम भाग	मूल्य [illegible])	[illegible] म [illegible] ७)
द्वितीय भाग	मूल्य [illegible])	[illegible] म [illegible] ३)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का यात्रा चित्र

मूल्य [illegible]

महर्षि स्वामी [illegible] नन्द सरस्वती जी महाराज का [illegible] चित्र [illegible] बहुत सुन्दर सार्वदेशिक सभा ने [illegible] किया है। इस [illegible] चित्र [illegible] समान जिसके द्वारा प्रत्येक [illegible] सरलता से यह दृष्टि [illegible] कि महर्षि अपने [illegible] कहां [illegible] गए और क्या [illegible]। किस किसी नगर या जगह [illegible] स्वामी जी [illegible] गए वहां संख्या दी हुई है। [illegible] के [illegible] चित्र भी उसमे है एक खडाऊ पहन और [illegible] पूर्ण वस्त्रो ? [illegible] कि [illegible] मे चलकर परमवि[illegible] अभ्यास के लिए गंगोत्री आदि मे भी ऊपर पर्वत के [illegible] तक पहुंचे वहां एक कुटिया दिखाई गई है। [illegible] अध्ययन के लिये और प्रचार के लिये जिन-जिन स्थान [illegible] पवित्र किया वे सब स्थान दिखाये गए है।

यह चित्र के रूप मे महर्षि का सारा जीवन एक [illegible] है। सार्वदेशिक सभा ने बड़े परिश्रम से इसको [illegible] कराकर तीन रंगो मे छापा। केवल इसीलिये कि [illegible] के पास पहुंच [illegible] सके। नाम मात्र मूल्य [illegible]) रखा है

सार्वदेशिक सभा ने स्वर्ण जयन्ती और नवम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर निम्नलिखित पुस्तके प्रकाशित करके बहुत बडी आवश्यकता और प्रबल मांग की पूर्ति की है

१—सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास—

इस इतिहास मे सभा के स्थापना काल से अब तक की प्रमुख २ प्रगतियो का वर्णन अंकित है जो आर्य समाज के इतिहास को आधार बनाने वाली है। मूल्य) [illegible] नए पसे

२—सार्वदेशिक सभा के निर्णय—

सभा ने स्थापना काल से लेकर अब तक जो नीति सम्बन्धी आवश्यक निर्णय किए है वे सब आर्य जगत् के मार्ग प्रदर्शन के लिए इस पुस्तक मे संगृहीत कर दिए गए हैं। मूल्य)५० नए पैसे

३ आर्य महासम्मेलन के प्रस्ताव।

इस समय तक आर्य महासम्मेलन के नौ अधिवेशन हो चुके है। इस पुस्तक मे प्रारम्भ से लेकर आठवें महासम्मेलन तक के निश्चय अंकित हैं। सम्मेलन के स्थान, तिथि तथा प्रधान आदि के उल्लेख के साथ २ प्रत्येक सम्मेलन के होने के कारणो पर भी प्रकाश डाला गया है मूल्य ६० नए पैसे

४—आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण—

इस संग्रह मे समस्त महासम्मेलनो के अध्यक्षो के भाषण दिए गए है। प्रत्येक अध्यक्ष का चित्र तथा जीवन परिचय भी दिया गया है। पुस्तक मे लगभग ५०० पृष्ठ हैं। मूल्य [illegible] रुपया

५—आर्यसमाज का परिचय—

इस पुस्तक मे आर्यसमाज तथा उससे सम्बद्ध आवश्यक सामग्री के साथ २ अनेक अलभ्य चित्र भी दिए गए हैं इस पुस्तक को पढ़ने पर आर्य समाज विषयक कोई जानकारी शेष नहीं रह जाती। यह भेट करने योग्य अलभ्य प्रकाशन है। समस्त पुस्तक आर्ट पेपर पर छपी है। मूल्य १) रुपया

६—पाथ आव परफैक्शन (अंग्रेजी)—

यह पुस्तक चरित्र निर्माण मे परम सहायक हो सकती है। इसके लेखक है सभाके भूतपूर्व प्रधान श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट। मूल्य) ५० नए पैसे

इन सब प्रकाशनो की छपाई, सफाई गेटअप बडे भव्य और चित्ताकर्षक हैं।

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

१ आर्य समाज के मन्तव्य	)१२	१५ सत्यार्थप्रकाश की रक्षा मे	)०६
२ शंकासमाधान	)०६	१६ मुर्दों को क्यो जलाना चाहिए	)०६
३ पूजा किसकी	)०४	१७ भारत का एक ऋषि	)१२
४ आर्यसमाज	)०५	१८ कैथालिक चच क्या है ?	)१०
५ ऋग्वेद मे देवृकामा या देवकामा	)०६	१९ गोरक्षा गान	)०३
६ गोहत्या क्यो ?	)१२	२० राजनैतिक षडयन्त्र)०५ बढिया सस्करण	)१
७ चमडे के लिए गोवध	)१८	२१ स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	)०
८ मासाहार घोर पाप	)१५	२२ स्वामी दयानन्द और गोरक्षा	)
९ दशनियम व्याख्या	)०९	२३ साप्ताहिक सत्सगो का २ घटे का कार्यक्रम	)
१० भारतवष मे जाति भेद	)०९	२४ अथर्ववेदीय अतिथि सत्कार एव मास शब्द विवेचन	)२०
११ वैदिक राष्ट्र धर्म	)२०	२५ सन्ध्या पद्धति	)१२
१२ आर्य समाज के नियम उपनियम	)१०	२६ आर्य शब्द का महत्व	)१३
१३ प्रजापालन	)०५	२७ वेद और गोमेध	)१२
१४ नारायणस्वामीजी की सक्षिप्त जीवनी	)०६		

ENGLISH PUBLICATIONS

(1) Introduction to the Commentary on Vedas	2-50	(8) Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati)	0 5
(2) Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji M A Rtd Chief Judge)	0-25	(9) Political Science Bound	2 50
3) Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M. A Rtd Chief Judge)	0-25	(10) Elementary Teachings of Hinduism (Ganga Prasad Upadhyaya M A)	0 50
(4) Daya Nand the man & his works By Arvind Ghosh	0-10	(11) Life after Death . "	1-25
(5) Punishment Prescribed for The Unbelievers in the Quran	0 19	(12) Vedic Viwana Sanskar Mantra	0 37
(6) A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra)	1 50	(13) Agnihotra (Dr Satya Prakash)	2-50
(7) In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A)	0-12	(14) Daily Prayer of an Arya (Shri Narain Swami)	0-5
		(15) The Constitution of Arya Samaj	0 2
		(16) Crucifixion by an Eye Witness	1 0
		(17) Principles of Arya Samaj (Chamu Pati M A)	1-50
		(18) Dayanand & Arya Samaj (Romain Rolland)	0 25

मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-१

नोट—(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप में भेजें।
(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें।
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम में आना चाहिये।
(४) जिन पुस्तकों का नेट मूल्य लिखा गया है उनपर कोई कमीशन न दिया जायगा।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली-७में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादजी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-१ मे प्रकाशित।